कुतुबन
कृत
मिरगावती

लेखक की अन्य कृतियाँ

साहित्य

१. कर्णिका (कहानी संग्रह)
२. प्रसाद के नाटक (आलोचना)
३. बिसराम के बिरहे (लोक-साहित्य)
४. चन्दायन (सम्पादित ग्रन्थ)
५. बन्दी की कल्पना (गद्य-काव्य)

पुरातत्व

६. पुरातत्व परिचय
७. भारतीय वास्तुकला

मुद्रातत्व

८. हमारे देश के सिक्के
९. पंचमार्क्ड कायन्स इन आन्ध्रप्रदेश गवर्नमेण्ट म्यूजियम (अंगरेजी)
१०. अमरावती होर्ड आव सिलवर पंचमार्क्ड कायन्स (अंगरेजी)
११. अर्ली कायन्स ऑव केरल (अंगरेजी)
१२. रोमन कायन्स फ्राम आन्ध्र प्रदेश (अंगरेजी)

इतिहास

१३. अग्रवाल जाति का विकास
१४. आजाद हिन्द फौज और उसके तीन अफसरों का मुकदमा

जीवन-वृत्त

१५. कार्ल मार्क्स
१६. शिवप्रसाद गुप्त
१७. जमनालाल बजाज

राजनीति

१८. भारतीय शासन परिचय

समाज-शास्त्र

१९. अपराध और दण्ड

यन्त्रस्थ

२०. द इम्पीरियल गुप्ताज (अंगरेजी)
२१. गुप्तकालीन भारत
२२. यूरोप और अमेरिका में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थ
मुद्रा सम्बन्धी अंगरेजी तथा हिन्दी में चार पुस्तकें

कुतुबन

कृत

मिरगावती

(मूल पाठ, पाठान्तर, टिप्पणी एवं शोध)

सम्पादक
परमेश्वरीलाल गुप्त
एम० ए०, पी-एच० डी०, एफ० आर० एन० एस०
अध्यक्ष, पटना संग्रहालय

वितरक
विश्वविद्यालय प्रकाशन
भैरवनाथ, वाराणसी-१

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल
(१९०४-१९६६ ई०)

सरस्वतीके तपःपूत

दिवंगत डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल

के

श्रीचरणोंमें

जिनसे 'गुरुका आशीर्वाद' और 'भाई साहब कहनेका अधिकार'

प्राप्त था

अनुक्रम

वार्तिक— क

कृतज्ञता ज्ञापन छ

अनुशीलन १–१२

कवि-परिचय १३–२६

नाम १३

पीर १३

मिरगावतीकी रचना १५

शाहेवक्त १८

स्थान और कब्र २५

काव्य परिचय २७–८५

नाम २७

लिपि २८

भाषा ३७

भाषाका स्वरूप ४२

छन्द-योजना ४४

काव्य-स्वरूप ४९

कथा-वस्तु ५२

कथाका मूल-स्त्रोत ६६

वर्णन विधानपर पूरवर्ती प्रभाव ६९

अन्तर्कथाएँ ७३

भौगोलिक परिचय ७७

जीवन चित्रण ७८

रचनाका उद्देश्य ८०

परवर्ती साहित्यपर प्रभाव ८२

सामग्री और सम्पादन ८६–१००

उपलब्ध प्रतियाँ ८६

ग्रन्थका स्वरूप ९१

प्रति परम्परा ९७

पाठ-सम्पादन ९९

पाठोद्धार ९९

सम्पादन-विधि १००

मिरगावती (पाठान्तर सहित मूल पाठ तथा टिप्पणी) १०१–३९९

कड़वक-सूची १०३

काव्य ११३

परिशिष्ट ४०१

प्रक्षेप ४०२

कड़वक—तुलनात्मक सारिणी ४१०

शब्द-सूची ४२६

वार्तिक

ग्रन्थका कार्य समाप्त होनेके पश्चात् और मुद्रण कालके बीच कुछ नये तथ्य सामने आये हैं, उन्हें यहाँ दिया जा रहा है। पाठकोंसे अनुरोध है कि इनका यथा स्थान समावेश कर लें।

कुतुबनकी कब्र

पृष्ठ २५-२६ पर हमने कुतुबनका सम्बन्ध बनारस (वाराणसी)से होनेकी बात कही और वहाँ उनकी कब्र होनेकी सम्भावना प्रकट की है। अभी हालमें काशी विश्वविद्यालयके भारती महाविद्यालयके अध्यापक श्री निसार अहमदसे ज्ञात हुआ कि बनारसमें बिसेसरगंजसे सिटी स्टेशनकी ओर जाने वाली सड़क पर हरतीरथकी जो चौमुहानी है, उससे पूरब, लगभग एक फर्लांगकी दूरी पर **कुतुबन शहीद** नामका एक मुहल्ला है। वहाँ एक मजार है जो कुतुबनकी मजार कही जाती है। कुतुबन, जिनकी वह मजार है और जिनके नामपर वह मुहल्ला है, वे कौन थे और कब हुए, वे शहीद क्यों कहलाये, इस सम्बन्धकी कोई भी जानकारी उस मुहल्लेके बड़े-बूढ़ोंसे प्राप्त न हो सकी। किन्तु असकरीके कथनको, जिसकी चर्चा हमने पृष्ठ २६ पर की है, ध्यानमें रखते हुए इस बातकी ही सम्भावना अधिक है कि इनका सम्बन्ध मिरगावतीके रचयिता कुतुबनसे ही होगा। कदाचित भविष्यमें इस पर कुछ अधिक प्रकाश पड़ सके।

बीकानेर प्रतिकी तिथि

पृष्ठ ८९-९० में हमने बीकानेर प्रतिकी पुष्पिकाके **सुसमती समाये अनम सर्वन वदीय अतीमुखी सोमावसरे** अंशमें उस प्रतिके लिपिकालके होनेकी बात कही है और उसे कैथी लिपि-जनित भ्रष्टतासे पूर्ण बताते हुए **सुसंवते समये अनम श्रावण वदीय अतिमुखी सोमवासरे**के रूपमें स्पष्ट करनेकी चेष्टा की है और **अनम**को वर्षका द्योतक कहा है। किन्तु वह क्या है, यह बताने में हम असमर्थ रहे हैं। अभी हालमें डाक्टर उदयनारायण तिवारीकी कृपासे धरणीदासके **शब्द प्रकाश**की एक प्रति देखनेको मिली जिसे तिवारीजीने किसी प्रतिसे स्वयं तैयार किया है। उसके अन्त में जो पुष्पिका है उसका एक अंश इस प्रकार है—**संवत १८९९ समेनाम माह फागुन बदी पंचमी रोज सनीचर के तैयार भैल**। और तभी डाक्टर शिवगोपाल मिश्र सम्पादित **मधुमालती**का दूसरा संस्करण भी देखनेमें आया। उसमें उन्होंने एकडला प्रतिकी जो पुष्पिका दी है उसका आवश्यक अंश इस प्रकार है—**सम्बत् १७४४ समैनाम जेठ सुदी दूजी को तैयार भई बार बुधवार को**। एकडलासे ही प्राप्त डंगवै कथाकी एक प्रतिकी पुष्पिकाका अंश है—**सं० १७४४**

समेनाम वैसाख सुदी तीज ३, दंगे परगह पूरन भई। इसी प्रकार चक्रव्यूह कथाकी प्रतिकी पुष्पिका है—**आगे सम्वत १७४६ समैनाम पूस सुदी पंचमी कहँ लिखा।** इनका उल्लेख मिश्रजीने अपने सम्पादित ग्रन्थ डंगवै कथा और चक्रव्यूह कथामें किया है। इन पुष्पिकाओंके प्रकाशमें बीकानेर प्रतिकी पुष्पिका देखनेसे स्पष्ट हो जाता है कि वह पुष्पिका भी इसी परम्पराकी है और उसका **समये अनम** और कुछ नहीं, इन पुष्पिकाओंका **समेनाम** (समय नाम) है। इस प्रकार हमने जो **अनम** में वर्ष के छिपे होने का अनुमान किया था वह निर्मूल सिद्ध हो जाता है।

वस्तुतः बीकानेर प्रतिकी पुष्पिकामें **सुसंवते** और **समय नाम**के बीच अंकों में वर्षका उल्लेख होना चाहिये था। किसी प्रमादसे लिपिक अपनी प्रति तैयार करने-का वर्ष भूल गया होगा, ऐसी कल्पना तनिक क्लिष्ट होगी। अतः धारणा यही होती है कि यह लिपिककी अपनी पुष्पिका न होकर उस प्रतिकी पुष्पिका है जिससे उसने यह प्रति तैयार की है। सम्भवतः उसमें वर्षवाला अंश नष्ट होगया रहा होगा इससे उसने उसे नहीं दिया। इस धारणाका समर्थन **सुसमती** और **समये अनम**के बीच दिये गये खड़ी लकीरसे होता है। अतः यह प्रति कब लिखी गयी, इसके जाननेका जो साधन था वह पुष्पिका होते हुए भी अप्राप्य है।

वर्ष बोधक संवत् और समय दोनों का एक साथ प्रयोग उपर्युक्त पुष्पिकाओं के अतिरिक्त बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना में सुरक्षित हलधरदास कृत **सुदामाचरित**-की एक प्रतिमें भी देखने को मिला। वहाँ **सुभसंवत १८३७ साल समय**का प्रयोग हुआ है। इन सभी प्रतियोंका सम्बन्ध उत्तर प्रदेशके पूर्ववर्ती भाग और बिहार-से है। इससे निष्कर्ष निकालना अनुचित न होगा कि बीकानेर प्रति जिस प्रतिसे तैयार की गयी थी, वह इसी प्रदेशकी थी और वह अठारहवीं और उन्नीसवीं शती-में ही, जब इस ढंगसे वर्ष लिखनेका प्रचार था, तैयार की गयी रही होगी। इस प्रकार वह प्रति किसी भी अवस्थामें अठारहवीं शतीसे पूर्वकी नहीं हो सकती। उससे तैयारकी गयी बीकानेर प्रति तो और बादकी होगी। इस प्रकार यद्यपि हम बीकानेर प्रतिका समय निश्चित नहीं कह सकते पर इतना तो निसंदिग्ध रूपसे कह ही सकते हैं कि वह सौ डेढ़ सौ बरससे अधिक पुरानी नहीं है।

बैरागर

कड़वक ६४ की पंक्ति १ में **बैराकर हीरा**का उल्लेख हुआ है। डाक्टर मोती-चन्द्रने उपलब्ध सूत्रोंके आधारपर उसके चाँदा (मध्य प्रदेश) जिलेमें वेनगंगा तट पर स्थित बैरागढ़ होनेका अनुमान किया है। उसे ही हमने अपने टिप्पणी में ग्रहण किया है। अभी हमारा ध्यान पुहकर कृत **रसरतन**की ओर गया। उसकी रचना संवत् १६७३ (१६१५ ई०) में हुई है। उसमें बैरागरका एक राजनगरके रूपमें उल्लेख है। कहा गया है—

सोमबंस सोमेसुर राजा। बैरागर अधिपति छिति छाजा॥
दिसि पूरब प्रतिपालन करई। धर्म राज कलमष हरई॥
उपजहिं जहाँ अमोलक हीरा। सुंडाहल उपजहिं बल बीरा॥

इससे ज्ञात होता है कि वैरागर पूर्वमें स्थित था और वहाँ हीरा और हाथी दोनों पाये जाते थे। इस सूचनाके अनुसार वैरागरके चाँदा जिलेमें होनेका अनुमान ठीक नहीं जान पड़ता। किन्तु हम स्वयं पूर्वमें ऐसा कोई स्थान ढूँढ पानेमें असमर्थ हैं जहाँ हीरा और हाथी दोनों मिलते हों। यदि इसकी पहचान कोई पाठक कर सकें तो बतानेकी कृपा करें।

अँहुट वज्र

कड़वक २८५ की पंक्ति ७ के प्रथम दो शब्दोंको हमने **अबहुत बजर** पढ़ा है। वस्तुत उसका उचित पाठ है **अँहुट वज्र,** जो एकडला प्रतिका पाठ है। **अँहुट वज्र** (साढ़े तीन वज्र) का आशय समझ न पानेके कारणही हमने यह सरल पाठ अपनाया था। अभी शिवगोपाल मिश्र सम्पादित डंगवै कथा देखनेसे ज्ञात हुआ कि कुतबनने यहाँ डंगवै कथाकी ओर संकेत किया है। इस कथाके अनुसार नारदने उर्वशीको दिनमें घोड़ी हो जानेका शाप दिया था। अँहुट (साढ़े तीन) वज्र एकत्र होनेपर ही उसका मोक्ष सम्भव था। अतः कथा प्रसंगमें भीम और कृष्णमें युद्ध होता है और उन दोनोंके वज्रायुध गदा और चक्र टकराते हैं। उस समय दोनोंके बीच-बचाव करनेके निमित्त हनुमान अपना वज्रसम लंगूर फैला देते हैं। इस प्रकार तीन वज्र एकत्र हो जाते हैं। भीमका शरीर आधे वज्रके समान कहा जाता है, इस प्रकार साढ़े तीन वज्रोंका संयोग होता है और उर्वशी बन्धनसे मुक्ति पा जाती है। यहाँ कुतुबन उसीकी ओर संकेतकर कहते हैं—**अहुँट वज्र जो हों इक ठाँ, तो न यह बँदि छूट** (साढ़े तीन वज्र एकत्र हो जाँय तब भी यह बन्दी न छूट पायेगा)।

पाठ-दोष

पुस्तक मुद्रित हो जाने पर ज्ञात हुआ कि प्रेस कापी तैयार करनेमें असावधानी, मुद्राराक्षसोंकी कृपा और प्रूफ देखनेमें चूक हो जानेके कारण काव्य-पाठमें अनेक दोष उत्पन्न हो गये हैं। यथासम्भव उन दोषोंका परिमार्जन यहाँ किया जा रहा है—

पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ	पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ
८।१	बढ़न	बुढ़न	२२।६	मिरिग	मिरिगि
१५।४	व	न	२६।४	दुहुँ	दहुँ
१६।४	ऐको	एको	२९।२	कहहि	कहँहि
१७।६	कौन	कउन	४२।२	तेज	सेज
१९।१	वेग	बेगि	४८।५	घरहिं	धरहिं
१९।७	खेल	खेलि	५२।४	हा	हौं

पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ
५७।४	मैं	मै
७४।२	अछर	अछरि
८०।३	झिरकि	छिरकि
८०।७	नखन	नखत
८६।१	मिरग	मिरिगि
९०।४	आयुम	आयसु
९२।२	उधार	उघार
९६।५	इह कह चाह	इह कँह
९८।२	कुँवरह	कुँवरहि
९८।४	मोइ	सोई
१३३।१	गै	गिय
१३८।४	समाना	ममानी
१४९।६	रमहा	रहसा
१६१।५	आयमु	आयस
१८४।४	तोर	तोरे
२००।३	उपचारा	उपन्नरा
२००।४	मिरगावत	मिरगावति
२०३।१	आहा	अहा
२०७।७	घनि	धनि
२१४।३	आयसु	आयुम
२१४।५	आयसु	आयुस
२१६।६	आयसु	आयुस
२१७।६	आयसु	आयुस
२५४।४	केवल	कँवल
२६२।३	देइ	देई
२६४।५	बरिज	बरजि
२९१।३	धुमकर	मधुकर
३०४।५	बई	वइ
३०५।२	गँवावई	गँवावइ
३१०।२	दसराइह	दरसाइह
३१०।६	ददेरी	दरेरी
३२०।४	नाऊँ	नाँउ
३२३।१	आधर	आँधर
३२९।७	परै	परे
३३२।५	गिार	गिरि
३३५।३	ताहि	तोहि
३३६।३	बरसि	बरिस
३४३।१	मतमाता	मदमाता
३४४।६	उदेक	उदेग
३४४।७	की ह	कीन्ह
३४९।३	करज	करेज
३४९।६	क	के
३४९।७	तोहे	तोही
३५२।१	निस	निसि
३५४।१	चपटी	चटपटी
३५५।१	जा	जो
३५५।२	हा	हौं
३५५।३	हाई	होई
३५५।३	जा	जो
३५५।३	साई	सोई
३५६।६	लाग	लोग
३६१।७	राजुकुँवर	राजकुँवर
३६२।२	ठाउँ	ठाऊँ
३६२।७	पंथहि	पंथिहि
३६३।२	हाडो	हाड़ो
३६७।५	के	कै
३७९।१	साँजैउ	माँजेऊ
३७९।२	दुनिया	दुतिया
३७९।२	रन	रेन
३८१।३	मोहि	मोंही
३८४।२	आई	आइ
३८७।१	कयउ	गयऊ
३८९।२	अहो	उहो
३९०।२	तुम्हुहुँ	तुम्हहुँ
३९२।३	बजाई	बजाइ
३९२।७	कहै	कीन्ह
४००।३	नाउँ	नाऊँ
४०२।७	मेले	मेलै
४०६।६	गरूई	गरुई
४०८।१	यहु	यह
४०९।४	कर	गर

इनके अतिरिक्त भी कुछ अन्य पाठ दोष हो सकते हैं, जो दृष्टि-दोपसे छूट गये हों। पाठक ऐसे दोषोंकी ओर इंगित करनेकी कृपा करें।

शब्द-सूची बनाते समय यह बात भी दृष्टिमें आयी कि एकही शब्द एकसे अधिक रूपोंमें लिखे गये हैं। यह वर्तनी-दोष फारसी लिपिके नुक्तोंके कारण ही मुख्य हैं। उनकी उचित वर्तनी क्या होगी, इस ओर इस अवस्थामें ध्यान देना सम्भव न था। पाठक उनपर स्वयं विचार लें।

कड़वक १११ पंक्ति १ (पृ० १७७) में प्रयुक्त **सींघ सिंदूर** सम्बन्धी टिप्पणी में सिंदूरका तात्पर्य हाथीसे भिन्न है, इसके प्रमाण में **मधुमालती** की पंक्ति १८१।२ उधृतकी गयी है, पर प्रमादवश मधुमालतीके स्थानपर मिरगावती लिख गया है। पाठक इस भूलको सुधार लें। साथ ही इस टिप्पणी में इतना और जोड़ लें कि हाथी और सिन्दूरकी भिन्नता पुहकर कृत **रस रतन**की इस पंक्तिसे भी प्रकट होती है—**सिंह सिंदूर उरग बिग हाथी** (चम्पावती खण्ड, २४)।

कृतज्ञता-ज्ञापन

पटनाके प्रोफेसर सैयद हसन असकरी और भारतीय पुरातत्व विभागके अरबी-फारसी अभिलेखोंके विशेषज्ञ डॉ० जियाउद्दीन अहमद देसाईका मैं आभार मानता हूँ जिन्होंने मिरगावतीकी फारसी प्रति उपलब्ध कर इस कार्यके करनेकी प्रेरणा प्रदान की है। असकरी महोदयका इसलिए भी कृतज्ञ हूँ कि उनकी ही कृपा से चन्दायनकी वह प्रति प्राप्त हुई थी जिसके हाशियेपर मिरगावतीका एक पाठ अंकित है। इसके अतिरिक्त वे निरन्तर मेरे इस सम्पादन कार्यमें रुचि लेते रहे हैं। एकडलावाली प्रतिके उपयोग करने की अनुमति प्रदान कर भारत कला भवन के अध्यक्ष रायकृष्णदास ने तो अपना स्नेह ही व्यक्त किया है, उसके प्रति क्या कहूँ !

डाक्टर शिवगोपाल मिश्रने स्वसम्पादित संस्करणकी प्रति भेंट न की होती तो मैं कदाचित अनेक जानकारी प्राप्त करनेसे वंचित रह जाता और तब शायद पुस्तक में इस रूपमें प्रस्तुत न कर पाता। बीकानेर प्रतिके पृष्ठका फोटोभी उन्हींकी कृपासे प्राप्त हुआ है। भाई कन्हैया सिंहने अनेक स्थलों पर मेरे पाठ-दोषकी ओर संकेत कर मेरी सहायता की है। इन दोनों ही प्रियजनोंका मैं कृतज्ञ हूँ।

श्री जगन मेहताने एकडला प्रतिके फोटो तैयार किये जिनसे मुझे पाठके सम्पादनमें बड़ी सहायता मिली। उन्हें भी इस अवसरपर स्नेहपूर्वक स्मरण करता हूँ।

अन्तमें यह उल्लेख पर्याप्त होगा कि शब्द-सूची तैयार करनेमें मेरी पत्नी अन्नपूर्णा और बेटी उषाने हाथ बटाया है। यदि इस सूचीकी कुछ सार्थकता हो तो उसका श्रेय इन दोनोंको होगा।

अनुशीलन

सतरहवीं शतीके आरम्भमें **बनारसी दास** नामके एक जैन कवि हो गये हैं। उन्होंने बड़ी संख्यामें जैन धर्म सम्बन्धी ग्रन्थोंकी रचना की है। इस कारण उनकी गणना जैन-साहित्यके अग्रणी लेखकोंमें की जाती है। उन्होंने **अर्थ-कथानक** नामसे अपनी एक पद्य-बद्ध आत्म-कथा भी लिखी है। यह सम्भवतः हिन्दीमें लिखी जानेवाली पहली आत्म-कथा है। अपनी इस आत्म-कथामें **बनारसी दासने** जन-जीवनकी चर्चा करते हुए एक स्थान पर कहा है—

> **तब घरमें बैठे रहें, जाहिं न हाट बजार।**
> **मधुमालति मिरगावति पोथी दोइ उदार॥**
> **ते बाँचहि रजनी समै, आवहिं नर दस बीस।**
> **गावैं अरु बातैं करैं, नित उठि देहिं असीस॥**

इससे उनके समयमें **मधुमालती** और **मिरगावती** नामक दो पोथियोंके लोकप्रिय होनेकी सूचना मिलती है। इन काव्योंकी क्या कथा है, इसकी उन्होंने कोई न तो चर्चा की है और न कोई संकेत ही प्रस्तुत किया है। अतः सामान्य धारणा हो सकती है कि जैन होने के कारण **बनारसी दासने** जैन समाजमें प्रचलित किन्हीं कथाओंकी ओर संकेत किया होगा।

काव्यके **मिरगावती** नामसे परिलक्षित होता है कि कथाका सम्बन्ध मृगावती नाम्नी किसी नारीसे होगा। जैन-साहित्यमें कौशाम्बी-नरेश शतानीककी पत्नी मृगावतीकी कथा अति प्रचलित है। वे वैशालीके हैहय-वंशी राजा चेटककी पुत्री और भगवान् महावीर की ममेरी बहन थीं। अतः अनुमान किया जा सकता है कि उन्होंने इन्हीं की कथाकी ओर संकेत किया होगा। उनकी कथा इस प्रकार है—

एक दिन रानी मृगावतीको, जब वे गर्भवती थीं, रक्तसे स्नान करनेका दोहद हुआ। उनकी इस इच्छाकी पूर्तिके निमित्त प्रधानमन्त्री युगन्धरने जल-कुण्डको रक्त-वर्णके जलसे भरवा दिया और उसे रक्त समझ कर रानी मृगावतीने अपनी इच्छापूर्ति की। जैसे ही वे स्नान करके कुण्डसे बाहर आयीं, उन्हें माँस-पिण्ड समझ कर भारण्ड नामक पक्षी अपने पंजेमें दबोच कर उड़ गया। राजा शतानीकने चौदह बरसों तक रानी मृगावतीकी खोज करायी, पर उनका कुछ पता न चला।

एक दिन अचानक एक वणिक एक वनवासीको लेकर उनके सम्मुख उपस्थित हुआ और उनके नामसे अंकित कंकण उपस्थित किया और बताया कि उसे वह वनवासी उसके पास बेंचनेके लिए लाया था। वह चोरीका माल जान पड़ता है अतः

उसे लेकर वह उनके पास आया है। कंकण देखते ही राजाने पहचान लिया कि यह वही कंकण है जिसे रानीने रक्त-स्नानके समय पहन रखा था।

राजाके पूछने पर वनवासीने बताया कि एक दिन जब वह साँप मार रहा था, एक बालकने आकर साँप मारनेसे रोका और साँपको छोड़ देनेके बदले उसने उसे वह कंकण दिया। उसे उसकी पत्नी विगत पाँच बरसोंसे पहनती रही है। उसकी इच्छा अब कंकणके बदले कुण्डल पहननेकी हुई, इसलिए वह उसे बेंचने ले आया था।

यह सुनकर राजा उस वनवासीके साथ मलय पर्वत पर उस जगह गया, जहाँ उस वनवासी को वह कंकण मिला था। वहाँ उसे खोई हुई रानी और पुत्र उदयन, जिसने वनवासीको कंकण दिया था, दोनों मिले। पत्नी पुत्रको लेकर राजा घर आया।

कुछ दिनों पश्चात् राजा शतानीककी राज-सभामें कोई विदेशी आया। उसने राजाके यहाँ उत्कृष्ट चित्रोंके अभाव पर खेद प्रकट किया। विदेशीकी भर्त्सना सुन कर राजाने एक सर्वगुण-सम्पन्न चित्रकारको बुलवाया और उसे उत्कृष्ट चित्र प्रस्तुत करनेका आदेश दिया। चित्रकारको किसी यक्षका वरदान प्राप्त था जिसके कारण वह किसी वस्तुके आंशिक अंशको देख कर ही उसका सर्वांगपूर्ण चित्र बना देता था। एक दिन उसने रानी मृगावतीके पैरका अँगूठा देख कर उनका सर्वांगपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया जिसमें उनके जाँघके तिलका भी अंकन था। उसे देख कर राजाको चित्रकारके चरित्रके प्रति सन्देह हुआ और उसने उसका दाहिना हाथ कटवा कर राज्यसे निष्कासित कर दिया।

चित्रकारने बायें हाथसे रानी मृगावतीका दूसरा चित्र तैयार किया और उसे लेकर उज्जयिनी-नरेश प्रद्योतके पास पहुँचा। चित्र देखते ही प्रद्योत मृगावतीपर मुग्ध हो गया और शतानीकके पास दूत भेजकर मृगावतीकी याचना की। जब वह उसे प्राप्त करनेमें असफल रहा तो उसने कौशाम्बीपर चढ़ाई कर दी। इस युद्धके बीच शतानीकको अतिसार हो गया और उसकी मृत्यु हो गयी। शतानीककी मृत्युके पश्चात् मृगावतीने प्रद्योतके पास कहला भेजा कि यदि बल-प्रयोग किया गया तो मैं जल मरूँगी अन्यथा पति-शोकसे मुक्त होनेपर आपके पास स्वयं आ जाऊँगी। प्रद्योत यह सुनकर लौट गया।

रानी मृगावती अपने पुत्र उदयनको युद्ध शिक्षा देती और प्रद्योतके बुलाओं-की उपेक्षा करती रही। निदान एक दिन फिर प्रद्योतने कौशाम्बीपर चढ़ाई कर दिया। इसी बीच भगवान् महावीर कौशाम्बी पधारे और मृगावतीने उनसे प्रव्रज्या ले ली। और आर्या चन्दनबालाके पास साधना करती हुई चालीस समय उपवास कर मोक्ष प्राप्त किया।

यह कथा प्राचीनतम जैन-ग्रन्थ **एकादश अंग सूत्र**के पाँचवें अंग भगवतीसूत्रके बारहवें शतकके दूसरे उद्देशकमें पायी जाती है।[1] उसके आधारपर तेरहवीं शतीमें **देवप्रभ**

---

१. बौद्ध साहित्यमें भी यह कथा सुधन-मनोहराकी कहानीके रूपमें पायी जाती है (द गिलगिट मैन्युस्क्रिप्ट, सम्पा० नलिनाक्ष दत्त)। कथा सरित्सागरमें भी यह कथा किंचितपरिवर्तनके साथ दूसरे लम्बकमें है।

सूरिने संस्कृतमें **मृगावती चरित** लिखा।[१] इसी कथापर **मृगावती चौपाई** नामसे **विनय समुद्र**ने संवत् १६०२ में[२], **सकलचन्द**ने संवत् १६४३ से पूर्व[३] और **समयसुन्दर**ने संवत् १६६८ में[४] रचना की। ये ग्रन्थ इस बातके द्योतक हैं कि सतरहवीं शतीमें यह कथा काफी प्रचलित थी। अतः **बनारसी दास**ने इसी कथाकी ओर संकेत किया था, ऐसा समझना अनुचित न होगा।

किन्तु द्रष्टव्य यह है कि **बनारसी दास**ने **मिरगावती**के साथ जिस दूसरे लोक-प्रिय काव्य—**मधुमालती**का उल्लेख किया है, उसकी चर्चा जैन-साहित्यमें कहीं नहीं मिलती। जैनेतर साहित्यमें **मधुमालती** नामक एक प्रेमाख्यानक काव्य उपलब्ध है जो **मंझन** कवि कृत सोलहवीं शतीके मध्यकी रचना है। यह इस बातका संकेत है कि **बनारसी दास**ने **मिरगावती** नामसे उसी ढंगके किसी जैनेतर प्रेम-कथाकी ओर संकेत किया है उपर्युक्त जैन-कथाका नहीं। उस समय मृगावती नामक राजकुमारीसे सम्बन्ध रखनेवाली एक प्रेम-कथा लोकमें प्रचलित थी, इसका प्रमाण दो अन्य प्रेमाख्यानक काव्योंमें मिलता है।

चितरावली नामक प्रेमाख्यानमें, जिसकी रचना १६१३ ई० में **उसमान** नामक कविने की थी, लिखा मिलता है—

मिरगावती मुख रूप बसेरा।
राजकुँवर भयउ प्रेम अहेरा॥[५]

इससे एक वर्ष पूर्व १६१२ ई० की एक दूसरी रचना **रूपावती** है, जो अभी तक अप्रकाशित है। उसमें ये पंक्तियाँ हैं—

लोरक चन्दा मैना प्रीतिह को तिरे।
राजकुँवर मिरगावति लिखि लिखि ते धरे॥[६]

इनसे ज्ञात होता है कि **बनारसीदास**के समय राजकुँवर और मृगावती नामक प्रेमी-प्रेमिकाकी कथा लोकमें काफी प्रचलित थी। इस कथाकी जानकारी लोगोंको इससे भी पहले थी, यह **मलिक मुहम्मद जायसी**के **पदमावत**से, जो ९२७ हिजरी (१५२७ ई० के आसपास) की रचना है,[७] प्रकट होता है। उसमें कहा गया है—

---

१. अगरचन्द नाहटा, सती मृगावती, कल्याण (गोरखपुर), नारी-अंक, जनवरी १९४८, पृ० ७१०-७१२।

२. वही।

३. वही।

४. समयसुन्दर कृत कुसुमांजलि, सम्पा० अगरचन्द नाहटा, सं० २०१३, पृ० ४६, भूमिका।

५. चितरावली, कड़वक ३०।

६. चन्दायन, आगरा संस्करण, पृ० ६; विश्वनाथप्रसाद द्वारा उद्धृत।

७. कुछ लोग इसकी रचनाका समय ९४७ हिजरी मानते हैं, किन्तु हमें यह अग्राह्य है। हमारे मतके लिए देखिए 'परिषद पत्रिका', पटना, वर्ष ३, पृ० ७२।

राजकुँवर कंचनपुर गयऊ ॥
मिरगावति कहँ जोगी भयऊ ॥[1]

इससे इस कथाके सम्बन्धमें इतना और ज्ञात होता है कि राजकुँवर मृगावतीके प्रममें जोगी बनकर कंचनपुर गया था।

मृगावतीके प्रेममें राजकुँवरके योगी बनकर कंचनपुर जानेकी कथापर आधारित **मधुमालती**के ढंगके काव्यके अस्तित्वकी बात पहले पहल १९०० ई० में प्रकाश में आयी। उस वर्ष काशी नागरीप्रचारणी सभाकी ओर से **हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थोंके खोजकी जो पहली रिपोर्ट** प्रकाशित हुई, उसमें **मृगावती** नामक काव्यके एक खण्डित प्रति का परिचय दिया गया, जो कैथी-नागरी लिपिमें लिखी हुई थी और खाजियोंको काशीके चौखम्भा-स्थित भारतेन्दु पुस्तकालयमें मिली थी। **रिपोर्ट**के अनुसार इस कथाका सारांश इस प्रकार है—

> चन्द्रगिरिके राजा गनपतदेवका पुत्र कंचननगरके राजा रूपमुरारकी पुत्री मृगावती पर मोहित हो गया। इस राजकुमारीको एक स्थानसे दूसरे स्थान पर चले जानेकी विद्या ज्ञात थी। राजकुमारने उसका पता लगया और उससे उसका विवाह हो गया। विवाहके पश्चात् एक दिन मृगावती राजकुमारको धोखा देकर उसकी अनुपस्थितिमें उड़ भागी। उसके विरहमें राजकुमार भी योगी-वेश धारणकर घरसे निकल पड़ा। पहले वह समुद्रसे घिरे एक पहाड़पर पहुँचा, जहाँ उसने रुकमिन नामकी एक स्त्री को राक्षससे बचाया। प्रत्युपकारमें रुकमिनके पिताने उसका विवाह उससे कर दिया। वहाँ से उस नगरमें पहुँचा, जहाँ मृगावती अपने पिताके मृत्युपरान्त राज्य कर रही थी। वहाँ वह बारह बरस रहा। इधर गनपतदेव अपने पुत्रकी बाट जोहते-जोहते घबड़ा उठा। अन्तमें उसने एक दूत उसे लौटा लानेके लिए भेजा। वह मार्गमें रुकमिनसे मिलता हुआ कंचननगर पहुँचा और राजकुमारसे पिताका सन्देश कह सुनाया। राजकुमार मृगावतीके साथ अपने देशकी ओर लौटा और मार्गमें रुकमिनको भी साथमें ले लिया। घर पर पहुँचने पर आनन्दोत्सव मनाया गया। बरसों तक राजकुमार अपनी रानियोंके साथ आनन्द मनाता हुआ जीवन व्यतीत करता रहा। अन्तमें एक दिन मृगयामें हाथीसे गिरकर उसकी मृत्यु हो गयी और उसकी दोनों ही रानियाँ उसके शवके साथ सती हो गयीं।

खोज रिपोर्टमें इस काव्य ग्रन्थके रचयिताका नाम **मियाँ कुतुबन** और रचना काल ९०९ हिजरी (१५०३ ई०) बताया गया है और यह भी कहा गया है कि **मियाँ कुतुबन शेख बुरहान चिश्ती**के शिष्य और सूरवंशीय नरेश शेरशाहके पिता हुसेन शाहके आश्रित थे। उसमें उपलब्ध प्रतिके सम्बन्धमें कहा गया है कि उसने आरम्भ के चार पत्र नहीं थे। उपलब्ध पत्रोंसे आरम्भके चार और अन्तका एक कड़वक उद्धृत भी किया गया है। ये कड़वक प्रस्तुत संस्करणके क्रमशः कड़वक ७, ८, ९, १३

---

१. पदमावत, सम्पा० वासुदेवशरण अग्रवाल, २३३।५।

और ४२८ हैं। इससे यह प्रकट होता है कि खोजियोंको जो प्रति उपलब्ध थी वह आदि से ही नहीं, अन्तसे भी खण्डित थी।

खोज रिपोर्ट प्रकाशित होनेके उपरान्त शीघ्र ही किसी समय यह प्रति अपने उपलब्धि-स्थानसे गायब हो गयी और आजतक उसका पता नहीं है। इस कारण उक्त प्रति और उसकी सामग्री की जो भी जानकारी आज उपलब्ध है, वह इस **खोज रिपोर्ट**के माध्यमसे ही है। अतः पूर्ण सामग्रीके अभावमें दो महत्वपूर्ण जिज्ञासाएँ उभरकर सामने आती हैं—

१—आरम्भ और अन्तसे प्रति खण्डित थी, ऐसी अवस्थामें स्पष्ट है कि खोजियोंको सिरनामा और पुष्पिका दोनों ही प्राप्त नहीं थे। फिर उन्होंने किस आधारपर ग्रन्थका नाम **मृगावती** बताया और लेखकको **मियाँ कुतुबन** कहा? हो सकता है उपलब्ध पत्रोंके हाशिये पर ग्रन्थका नाम लिखा रहा हो, जैसा कि बहुधा ग्रन्थों में मिलता है; किन्तु रचयिताको **मियाँ कुतुबन** बतानेका कोई आधार जान नहीं पड़ता। रचयिताने अपनी रचनाके बीच यत्र-तत्र अपने नामका उल्लेख किया है, ऐसा पीछे प्राप्त अन्य प्रतियोंसे ज्ञात होता है। किन्तु सर्वत्र लेखकने अपनेको **कुतुबन** कहा है **मियाँ कुतुबन** नहीं। कुतुबनके लिए मियाँकी उपाधि खोजियों को कहाँ से ज्ञात हुई, यह रहस्य है।

२—**खोज रिपोर्ट**में उद्धृत कड़वकके अनुसार कुतुबनके गुरुका नाम **शेख बुढ़न** था। फिर क्योंकर खोज-रिपोर्टके लेखकोंने उनको **शेख बुरहान चिश्ती** कहा?

जो भी हो। **खोज रिपोर्ट**के प्रकाशनके पश्चात् **कुतुबन** और **मृगावती**के सम्बन्धमें कदाचित् बहुत दिनोंतक किसीने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। जब **मिश्रबन्धु**ने **मिश्रबन्धु-विनोद**का पहला खण्ड प्रकाशित किया तो लिखा—**कुतुबन शेखने मृगावती ग्रन्थ संवत् १५६० में बनाया। ये महाशय शेख बुरहानके चेले थे और शेरशाह सूरके पिता हुसैनशाहके यहाँ रहते थे। इन्होंने पद्मावतीका भाँति दोहा चौपाइयोंमें रचना की। इनकी गणना साधारण श्रेणीमें है।**[१] इस प्रकार **मिश्रबन्धु**ने **खोज-रिपोर्ट**के कथनको दुहरा भर दिया। नयी बात यह की कि **कुतुबन**को **मियाँ** से **शेख** बना और ज्ञात मात्र पाँच कड़वकोंके आधार पर उन्हें साधारण श्रेणी का कवि घोषित कर दिया।

इसी प्रकार जब **रामचन्द्र शुक्ल**ने **जायसी ग्रन्थावली** प्रकाशित किया तो उन्होंने इस सम्बन्धमें लिखा—**पूरबमें बंगालके शासक हुसेन शाहके अनुरोधसे, जिसने सत्यपीरकी कथा चलायी थी, कुतुबन मियाँ एक ऐसी कहानी लेकर जनताके सामने आये जिसके द्वारा उन्होंने मुसलमान होते हुए भी अपने मनुष्य होनेका परिचय दिया।**[२] इस प्रकार सूर-वंशके हुसेन शाहको **कुतुबन**का आश्रयदाता न मान कर

---

१. मिश्रबन्धु विनोद, प्रथम भाग, सं० १९८३, पृ० २२९।

२. जायसी ग्रन्थवाली, संवत् २०१३, पृ० ३।

उन्होंने बंगाल-सुलतान हुसेनशाह को उनका आश्रय दाता बताया। पर शीघ्र ही उनके इस मतमें परिवर्तन हुआ और उन्होंने **हिन्दी साहित्य का इतिहास**में बताया कि ये (कुतुबन) चिश्ती वंशके **शेख बुरहान**के शिष्य थे और जौनपुर के बादशाह हुसेन शाहके आश्रित थे।[1]

तदनन्तर **सुकुमार सेन**ने **इसलामी बंगला साहित्य**में **रामचन्द्र शुक्ल**के दोनों मतोंके समन्वय रूपमें अपना यह नया मत प्रकट किया कि—**कवि कुतबन जौनपुरके सुलतान हुसेन शाह का आश्रित था तथा उन्हींके साथ बंगाल चला गया और गौड़के हुसेन शाहके यहाँ उसने आश्रय लिया था। मृगावती काव्य ९०९ हिजरीमें गौड़ देशमें रचा गया।**[2]

लगभग पचास वर्ष तक **कुतुबन** और **मिरगावती**के सम्बन्धकी कोई नयी सामग्री प्रकाशमें नहीं आयी। इस कालके बीच डाक्टरकी डिगरीके निमित्त विभिन्न विश्वविद्यालयोंके सम्मुख हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों पर अनेक शोध-प्रबन्ध उपस्थित किये गये। उन सबमें **कुतुबन** और **मिरगावती**की चर्चाका आधार **खोज-रिपोर्ट** और उपर्युक्त विद्वानोंका कथन ही है। अनुसन्धित्सुओं पर **खोज-रिपोर्ट**का कुछ ऐसा प्रभाव छाया रहा कि नयी जानकारी प्राप्त करने अथवा प्राप्त जानकारी पर ध्यान देने की उन्होंने या तो आवश्यकताका अनुभव नहीं किया या उनकी ओर उनका ध्यान ही नहीं गया।

१९४९ ई० के मार्चमें पहली बार **मिरगावती** सम्बन्धी नयी जानकारी सामने आयी। **दीनानाथ खत्री**ने शार्दूल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेरसे प्रकाशित होने वाली शोधपत्रिका **राजस्थान भारती**में **कुतुबन की मृगावतीकी एक महत्त्वपूर्ण प्रति** शीर्षक लेख प्रकाशित किया।[3] इस लेखमें उन्होंने **मिरगावती**की तीन प्रतियोंका संक्षिप्त परिचय दिया। इनमें एक तो चौखम्भा वाली वह प्रति है, जिसका विवरण **खोज रिपोर्ट**में उपलब्ध है और जिसकी जानकारी सबको रही है। प्रस्तुत परिचय भी उसी रिपोर्टके आधार पर ही दिया गया है। शेष जिन दो प्रतियोंका उल्लेख इस लेखमें हैं वे पहले सर्वथा अज्ञात थीं। इनमेंसे एक प्रतिके नागरीप्रचारणी सभा, काशीमें होनेकी बात कही गयी है और बताया गया है कि उसमें केवल सात पत्र हैं।[4] दूसरी प्रतिके बीकानेरके अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालयमें होनेकी सूचनाके साथ उसका संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

दो वर्ष पश्चात् सं २००७ (१९५१ ई०) में **परशुराम चतुर्वेदी**ने सूफी प्रेम-काव्योंके अवतरणोंका एक संग्रह **सूफी-काव्य संग्रह** नामसे प्रस्तुत किया। इसमें पहली बार **मिरगावती**के ऐसे अवतरण उपस्थित किये जो **खोज रिपोर्ट**में उद्धृत अवतरणोंसे

१. हिन्दी साहित्यका इतिहास, पन्द्रहवीं आवृति, २०२२ वि०, पृ० ९४।
२. इसलामी बंगला साहित्य, १९५० ई०, पृ० ८।
३. राजस्थान भारती, भाग २ अंक ३ (मार्च १९४९), पृ० ३९-४४।
४. सम्भवतः लेखकका तात्पर्य भारत कला भवन, काशी वाली प्रतिसे है।

सर्वथा भिन्न थे। ये अवतरण उन्होंने एक खण्डित प्रतिसे लिये थे, जो उन्हें भारत कला भवन, काशीमें देखनेको मिली थी।[१] **मिरगावती**की किसी प्रकारकी कोई प्रति भारत कला भवनमें है, उस समय तक किसी को पता न था।

अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर और भारत कला भवन, काशी की प्रतियोंके ज्ञात होनेके लगभग तीन वर्ष पश्चात् १९५३ ई० में **कमल कुलश्रेष्ठ**का शोध-प्रबन्ध **हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य** प्रकाशित हुआ। उसमें इन दोनोंमें से किसी भी प्रति की कोई चर्चा नहीं है। उसे देखनेसे ऐसा जान पड़ता है कि उन्होंने इनके बारेमें कुछ सुना भी न था। उन्होंने इस शोध प्रबन्धमें **खोज-रिपोर्ट** वाले अवतरण ही अविकल रूपसे उद्धृत किया और उसमें दिये हुए कथा-सारको ही अंग्रेजोमें अनूदित करके रख दिया है।

१९५४–५५ ई० के आस-पास **मिरगावती**की तीन अन्य प्रतियाँ प्रकाशमें आयीं। इनमेंसे दो प्रतियोंको प्रकाशमें लानेका श्रेय पटना कालेजके प्राध्यापक (अब काशी प्रसाद जायसवाल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पटनाके निदेशक) **सैयद हसन असकरी** को है। वे मध्यकालीन भारतीय इतिहासके विद्वान् तो हैं ही, उर्दू-हिन्दी साहित्यके प्रति भी उनकी रुचि है और प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज उनका व्यसन है। अपने इस व्यसनके परिणामस्वरूप उन्हें अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंको प्रकाशमें लानेका श्रेय प्राप्त है। १९५३–५४ ई० में मनेर शरीफ (पटना) के खानकाहके सज्जादनशीन शाह इनायतउल्लाहके पुराने ग्रन्थों के बस्तोंको टटोलते हुए उन्हें **मौलाना दाऊद** कृत **चन्दायन**की ६४ पृष्ठोंकी एक खण्डित प्रति मिली। इस प्रतिके प्रत्येक पृष्ठके हाशियेपर **कुतुबन** कृत **मिरगावती**के भी एक-एक कड़वक अंकित हैं। इस प्रतिका परिचय देते हुए **असकरी** ने एक लेख प्रकाशित किया और **चन्दायन** और **मिरगावती** दोनोंसे परिचित कराया।[२] यह प्रति फारसी लिपिमें है।

असकरीको जिस दूसरी प्रतिको प्रकाशमें लानेका श्रेय है, वह भी फारसी लिपि में है और वह भारतीय पुरातत्व विभागके अरबी-फारसी अभिलेखोंके विशेषज्ञ **जियाउद्दीन अहमद देसाई**को १९५४ ई० के लगभग दिल्लीमें प्राप्त हुई थी। उन्होंने उसे अध्ययनके निमित्त **असकरी**को दिया और **असकरी**ने लेख द्वारा लोगोंको उस प्रतिसे परिचित कराया।[३] यह प्रति लगभग पूर्ण है केवल आरम्भका एक पत्र नहीं है।

तीसरी प्रति कैथी लिपिमें है और अत्यन्त खण्डित है। यह प्रति मूलतः फतहपुर (उत्तर प्रदेश) जिलेके एकडला ग्राम निवासी ओम्प्रकाश सिंह और राजेन्द्रपाल सिंहके परिवार में थी। उन लोगोंसे यह प्रति अगस्त १९५५ में प्रयाग विश्वविद्यालयके प्राध्यापक **शिवगोपाल मिश्र**को प्राप्त हुई और अब वह भारत कला भवन, काशी में

---

१. सम्भवतः दीनानाथ खत्रीने इसी प्रतिका परिचय दिया है। उनका विवरण इस प्रतिके विवरण से एक दम मिलता है।

२. करेण्ट स्टडीज, पटना कालेज, १९५५ ई०, पृ० १७–२४।

३. जर्नल ऑव बिहार रिसर्च सोसाइटी, भाग ४१ (१९५५ ई०), पृ० ४५३।

है। इस प्रति के प्रकाश में आनेकी सूचना **कैलाश कल्पितने** प्रयागके हिन्दी दैनिक **अमृत पत्रिकाके** ३ सितम्बर १९५५ ई० के अंक में **मृगावती तथा मधुमाल्तीकी प्रतियाँ प्राप्त** शीर्षकसे प्रकाशित किया।

तदनन्तर इस एकडला वाली प्रतिको लेकर उपर्युक्त प्रतियोंकी जानकारीके प्रकाशमें **मिरगावतीके** सम्बन्धमें **उदयशंकर शास्त्री**[1], **रामकुमार वर्मा**[2] और **शिवगोपाल मिश्र**[3] के कई विवादात्मक लेख प्रकाशित हुए। इन लेखोंके माध्यमसे **मिरगावतीकी** थोड़ी-सी चर्चा हुई, पर यह चर्चा केवल सतही ही थी।

इस प्रकार **मिरगावतीकी** अब तक छः प्रतियाँ प्रकाशमें आयी हैं। इनमें चौखम्भा वाली प्रतिका, अनुपलब्ध होनेके कारण, काव्यके सम्पादन-प्रकाशनकी दृष्टिसे कोई महत्त्व नहीं है। **खोज-रिपोर्टमें** उद्धृत पाँच कड़वकोंका उल्लेख मात्र किया जा सकता है। मनेर और काशी प्रतियाँ भी काव्यके अंश मात्र हैं। उनसे भी काव्यका कोई रूप सामने नहीं आता। उनका उपयोग केवल पाठान्तरोंको देखने समझनेके लिए ही किया जा सकता है। केवल एकडला, बीकानेर और दिल्ली प्रतियाँ ही काव्य-सम्पादनकी दृष्टिसे उपयोगी कही जा सकती हैं। किन्तु एकडला और बीकानेर प्रतियाँ, दोनों इस प्रकार खण्डित हैं कि वे बहुलांश उपस्थित करते हुए भी, स्वतन्त्र रूपसे काव्यका रूप सामने रखनेमें असमर्थ हैं। दोनोंको एक दूसरेका पूरक कह सकते हैं। दोनोंको मिलाकर काव्यका एक रूप खड़ा होता है, किन्तु उससे पूरा काव्य प्रस्तुत नहीं हो पाता। दिल्ली प्रति ही एक ऐसी है जो आरम्भके एक पत्रको छोड़कर शेष रूपमें पूर्ण है। सभी प्रतियोंका आधार लेकर काव्यको निखरे रूपमें प्रस्तुत करनेकी सामग्री १९५५ ई० के अन्त तक लोगोंके सामने आ गयी थी। पर उनके उपयोगका प्रयत्न तबसे अबतक किन लोगोंने और किस प्रकार किया, यह जाननेका साधन उपलब्ध नहीं है।

सुना जाता है कि दिल्ली, मनेर, काशी और बीकानेर प्रतियोंके आधार पर **मिरगावतीके** सम्पादनका का कार्य **उदयशंकर शास्त्रीने** अपने हाथोंमें लिया था। कदाचित उन्होंने उसका सम्पादन समाप्त कर प्रेस कापी भी तैयार कर लिया था और

---

१. (क) मृगावतीका रचनाकाल १६ वीं शताब्दी, दैनिक भारत, ७ सितम्बर १९५५।
(ख) मृगावतीकी प्रतियोंकी पूर्णता, दैनिक भारत, ९ सितम्बर १९५५।
(ग) भ्रम फैल ही तो गया, दैनिक भारत, २० नवम्बर १९५५।
(घ) कुतुबनकी मृगावती—एक परिचय, दैनिक नवनीत, ७ फरवरी १९५६; ब्रज भारतीय, वर्ष १३ अंक ३ (सं० २०१३), पृ० २३–२८।
(च) मृगावतीका मर्म, दैनिक भारत, ७ फरवरी १९५६।

२. मृगावतीकी नवीन प्रति, दैनिक भारत, १० तथा १२ सितम्बर १९५५।

३. (क) मृगावतीके प्रतिके सम्बन्धमें, दैनिक भारत, १० सितम्बर १९५५।
(ख) मृगावती, दैनिक नवजीवन, ३० अक्तूबर १९५५; हिन्दी प्रचारक, अक्तूबर १९५५।
(ग) मृगावतीके सम्बन्धमें वितण्डावाद, दैनिक भारत, २० अप्रैल १९५६; नवजीवन ९ सितम्बर १९५६।

दिल्ली प्रति के दो पृष्ठ

एकडला प्रति के दो पृष्ठ

बीकानेर प्रति का एक पृष्ठ

मुद्रणके निमित्त उसे प्रेसमें भेज भी दिया था, ऐसा भी कहा जाता है।[1] किन्तु अभी तक उनका यह कार्य प्रकाशमें नहीं आया है।

एकडला वाली प्रति मिलने पर **शिवगोपाल मिश्रने** उसके आधार पर **मिरगावती**का पाठ तैयार किया और १९५९ ई० के लगभग उसे प्रकाशनार्थ भेज भी दिया। पर एक साल बाद वह बिना प्रकाशित हुए ही उनके पास लौट आयी।[2] तब उन्होंने बीकानेर, मनेर शरीफ और काशी प्रतियोंका उपयोग कर नये सिरेसे एक दूसरा पाठ तैयार किया, जिसे गत वर्ष (शक सं० १८८५) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागने प्रकाशित किया है। अब तक **मिरगावती**का एकमात्र मुद्रित संस्करण यही है।

मिरगावतीके सम्पादन-प्रकाशनका तीसरा प्रयास मेरा अपना है, जो आपके सम्मुख है। सम्मेलन-संस्करण के प्रकाशनसे बहुत पूर्व जब मैं **चन्दायन**का सम्पादन कर रहा था, तभी **असकरी**के लेखके माध्यमसे **मिरगावती**के दिल्ली प्रति की ओर आकृष्ट हुआ था। उस समय तक **मिरगावती**के सम्पादनकी कोई चर्चा नहीं सुनाई पड़ रही थी। **चन्दायन**के माध्यमसे मनेर शरीफ प्रतिका फोटो मेरे पास पहलेसे ही था। अतः इच्छा हुई कि इन दोनों प्रतियोंके आधार पर **मिरगावती** का भी सम्पादन करूँ। **मिरगावती**के अन्य प्रतियोंके अस्तित्वकी बात तब तक मेरे कानों तक नहीं पहुँच पायी थी।

मेरी इस इच्छाके पीछे निहित मेरी यह धारणा रही है कि मुसलमान कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यानक काव्योंके सम्पादनमें फारसी प्रतियों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। वे नागरी-कैथी प्रतियोंकी अपेक्षा अधिक विकृति-मुक्त होती हैं और मूलसे उनका निकटका सम्बन्ध है। किन्तु अरबी-फारसी लिपिमें लिखे हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंको बिना किसी पूर्व अभ्यासके शुद्ध पढ़ना अत्यन्त कठिन है। अतः उसका पाठोद्धार कार्य सुगम और सर्व-सुलभ नहीं है। हिन्दीके विद्वानोंमें ऐसे लोग कम ही हैं जो इस कामको सफलतापूर्वक कर सकें। **चन्दायन**के पाठोद्धारकी सफलतासे मुझे कुछ ऐसा लगा कि दूसरोंकी अपेक्षा मेरे लिए **मिरगावती**का पाठोद्धार अधिक सुगम होगा और मैं उसका उचित पाठ उपस्थित कर सकूँगा। हो सकता है यह मेरा अहं हो। पर मैंने एक बार पुनः अपने क्षेत्र से हट कर पराये क्षेत्रमें उतरनेका दुस्साहस कर ही डाला।

चन्दायनके सम्पादनका कार्य चल ही रहा था, तभी मैंने **मिरगावती**के पाठोद्धारमें हाथ लगा दिया। **जियाउद्दीन अहमद देसाईने** दिल्ली प्रतिके उपयोग करनेकी सहर्ष अनुमति प्रदान की और **असकरीने** उस प्रतिको मेरे पास भेजनेकी उदारता दिखायी। नस्तालीक लिपिमें लिखी होनेके कारण इस प्रतिके पाठोद्धारमें विशेष कठि-

---

१. परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दीके सूफी प्रेमाख्यान काव्य, १९६२ ई० पृ० ४८।
२. कुतुबन कृत मृगावती, पृ० ६५।

नाई नहीं हुई। १९६२ ई० के आरम्भ में यूरोप जानेसे पूर्व इसका प्रथम वाचन समाप्त हो गया था। कदाचित उस समय यदि यूरोप जाना न हुआ होता तो इसका सम्पादन कार्य भी तभी समाप्त हो जाता और हो सकता है कि यह तभी प्रकाशित भी हो जाती। यूरोपसे लौटने पर अन्य कार्योंमें ऐसा व्यस्त हुआ कि इस कार्यको हाथमें लेनेका अवसर न प्राप्त हो सका। तभी १९६३ ई० के जूनमें मैं पटना संग्रहालयका अध्यक्ष होकर चला आया। वह वर्ष उसकी व्यवस्था देखने-समझनेमें ही चला गया। गत वर्ष जब कुछ अवसर मिला तो फरवरीके महीनेमें पुनः इस कार्यमें हाथ लगाया। दिल्ली प्रतिके वाचनको दुहराया और मनेर शरीफ प्रतिके साथ उसकी संगति बैठायी।

सम्मेलन संस्करण के प्रकाशनसे पूर्व बीकानेरके प्रति की मुझे किसी प्रकारकी जानकारी न थी। अतः उस समय उनके उपयोगका कोई प्रश्न मेरे सामने न था। चौखम्भा प्रतिके पाँच कड़वकोंका उपयोग मेरी दृष्टिमें कोई अर्थ नहीं रखता था। काशी वाली प्रतिका मूल भारत कला-भवनमें ढूँढ़नेपर भी न मिल सका। उसकी एक आधुनिक प्रतिलिपि देखनेमें आयी, पर उसे मैंने अपने कामका न माना। बच रही एकडला प्रति। उसका उपयोग मैं केवल पाठान्तरोंके निमित्त करना चाहता था।

एकडला प्रति के फोटो मेरे बम्बई रहते ही प्रिंस ऑव वेल्स संग्रहालयके फोटोग्राफर जगन मेहता काशी जाकर ले आये थे। भारत कलाभवनमें यह प्रति अलग-अलग पत्रों के रूप में उपलब्ध है और उनका वहाँ जो क्रम है, उसका काव्यके कड़वक क्रमसे कोई सम्बन्ध नहीं है। पता नहीं वे मूल रूपमें इसी प्रकार **शिवगोपाल मिश्र** को प्राप्त हुए थे या पीछे से बिखर गये। ऐसी स्थिति में उनका क्रम स्थिर किये बिना उसका उपयोग करना सम्भव न था। पत्रोंपर दिए हुए संख्या-संकेत भी इस कार्यमें सहायक न थे। इस कारण यह कार्य काफी कठिन और श्रम अपेक्षित था। अतः जबतक मैंने फारसी प्रतियोंका पाठ तैयार नहीं कर लिया, इस प्रतिकी उपेक्षा की। तदनन्तर फारसी प्रतियोंके कड़वकोंको आधार बनाकर एकडला प्रतिके पत्रोंको क्रम दिया और तब पाठान्तर तैयार करनेकी ओर बढ़ा।

इस प्रकार एकडला प्रतिसे मैं पाठान्तर तैयार कर ही रहा था तभी सम्मेलन संस्करण प्रकाशमें आया और अप्रैल या मईके महीनेमें **शिवगोपाल मिश्र**ने उसकी एक प्रति भेजनेकी कृपा की। उसे देखनेपर मुझे लगा कि उससे **मिरगावती**की वास्तविक पूर्ति नहीं होती यद्यपि उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उससे मुझे बीकानेर प्रतिका परिचय मिला और यह उचित जान पड़ा कि पाठान्तर रूपमें उसके भी पाठ ग्रहण किये जायँ। इसके निमित्त उसके फोटोप्रिण्ट उपलब्ध कर देनेके लिए **अगरचन्द नाहटा** को लिखा किन्तु उन्होंने उसकी प्रति प्राप्तिमें अनेक कठिनाइयाँ बतायीं। अतः मूल प्रतिसे पाठ ग्रहण करनेका विचार त्यागना पड़ा। यह मानकर कि मुद्रित प्रति उस प्रतिकी सावधानीसे की गयी प्रतिलिपि होगी, मैंने उसे ही बीकानेर प्रतिके पाठका आधार बनाया। और जब मुद्रित प्रतिसे बीकानेर प्रतिके पाठ लिये तो चौखम्भा और काशी

प्रतियों के पाठ ग्रहण करनेमें मेरे लिए आपत्ति जैसी कोई बात नहीं रही। अतः उसके भी पाठ पाठान्तरमें ग्रहण किये। इस प्रकार प्रस्तुत संस्करणमें मैंने अबतक ज्ञात सभी प्रतियोंका उपयोग किया है। फलतः काव्य अपने स्वरूपमें पूर्ण है, आरम्भके केवल तीन कड़वक नहीं हैं।

पाठ-सम्पादन करते समय मैंने संशुद्ध-पाठ (क्रिटिकल टेक्स्ट) प्रस्तुत करने जैसा कोई प्रयास नहीं किया है। दिल्ली प्रतिको पाठका मूल आधार मानकर मैंने अन्य प्रतियोंके पाठान्तर मात्र संकलित कर दिये हैं। ऐसी अवस्थामें यह कार्य कदाचित वैज्ञानिक नहीं कहा जायेगा। किन्तु मेरी निश्चित धारणा है कि मेरे इस कार्यका वैज्ञानिक कथित ढंगपर किये गये कार्यमें कदाचित ही किन्हीं-किन्हीं स्थलोंपर भिन्नता होगी। इस कहनेका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि मेरा कार्य सर्वथा निर्दोष है। मध्यकालीन कवियों और काव्योंसे मेरा परिचय अत्यल्प है। हिन्दी साहित्य मेरी जीविकोपार्जनका साधन नहीं, व्यसन (हाबी) मात्र है। व्यसन (हाबी) के रूपमें ही मैंने इस कार्यको किया है। इस भावसे किया गया कार्य सर्वांगपूर्ण होगा, ऐसा समझना दम्भ होगा।

भाषाके सम्बन्धमें मेरी एक विवशता है। वह यह कि नगर-निवासी होते हुए भी मैं ठेठ गँवार हूँ। जब आठवीं कक्षामें था तभी हिन्दी व्याकरणका साथ छूट गया; भाषा-विज्ञानकी किसी पुस्तकसे आजतक सम्पर्क स्थापित न कर सका। राजनीतिक कार्यकर्ताके रूपमें अवधी-भोजपुरी बोलियोंसे सम्पर्क रखनेवाले गाँवोंमें १९३० और १९४३ के बीच महीनों नहीं, बरसों बीते हैं। अतः नागरक कृत्रिमतासे अछूते रहकर शब्द और व्याकरण जिस रूपमें गाँवोंके स्त्री-पुरुषोंके कण्ठ और जिह्वामें समाए हुए थे, वे रातदिन मेरे कानोंसे टकराते रहे हैं। भाषा-सम्बन्धी मेरा ज्ञान वहींसे संचित है। गाँवोंके लोगोंकी बोल-चाल ही भाषाके सम्बन्धमें मेरी पुस्तकें थीं और गाँवके लोग ही मेरे गुरु थे। लोक-जीवन और लोक-व्यवहार ही मेरा शब्द-कोष है। प्रस्तुत कार्यमें मैं अपने इसी ज्ञानपर निर्भर रहा हूँ। हो सकता है प्रेमाख्यानक काव्योंके सम्पादनमें निष्णात समझे जानेवाले विद्वानों और उनके चारों ओर मँडरानेवाले शिष्योंको, जो पदे-पदे **ग्रियर्सन**को वेद वाक्यकी तरह दुहराते रहते हैं, मेरा यह कार्य व्याकरणकी अज्ञतासे भरा और भाषा-विज्ञानके सिद्धान्तोंसे शून्य जान पड़े, अतः यह बता देना आवश्यक जान पड़ा।

इन दिनों प्रेमाख्यान काव्योंके सम्पादन-प्रकाशनमें पाठ-सम्पादनके साथ-साथ पाठका व्याख्यात्मक अर्थ देनेकी भी परिपाटी चल पड़ी है। किन्तु उस परिपाटीका निर्वाह इस ग्रन्थमें नहीं है। मेरी धारणा है कि इस काव्यमें कुछ ऐसा नहीं है जो पाठकोंके समझके बाहर हो और किसी प्रकारकी व्याख्याकी अपेक्षा रखता हो। व्याख्या करना अनावश्यक श्रम ही नहीं अकारण ही ग्रन्थकी आकार-वृद्धिका प्रयास भी होता, जो मुझे अभीष्ट नहीं। यदि काव्यको किसी प्रकारकी व्याख्याकी आवश्यकता होती भी

तो कदाचित मैं उसका प्रयास न करता। मुझमें वह क्षमता और पाण्डित्य नहीं, जिसके बलपर निष्णात व्याख्याकारोंकी तरह **उसकी साँग इस प्रकार हिलती है जैसे उदास मूस (चूहा) हिलता रहता है** जैसी उत्कृष्ट व्याख्या, टीका और अर्थ कर सकूँ। मुझ द्वारा सम्पादित **चन्दायन**की चर्चा करते हुए एक निष्णात व्याख्याकार प्राध्यापकने मुझे जिस ढंगकी चेतावनी दी है, उससे ध्वनित होता है कि काव्य-ग्रन्थोंके अर्थ और व्याख्या करनेका एकमात्र अधिकार विश्वविद्यालयोंके हिन्दीके प्राध्यापकोंको ही है। किसी अन्यका ऐसा करना उसका दुस्साहस है। इस चेतावनीके बाद धर्म-निरपेक्ष राज्यका नागरिक होनेके कारण इस प्राध्यापक-धर्ममें हस्तक्षेप करनेकी बात सोच भी नहीं पाता। अतः मैंने उन शब्दोंके जो मुझे महत्त्वके लगे, अर्थ अथवा उनके सम्बन्ध-में आवश्यक टिप्पणी देकर ही सन्तोष माना है।

इस ग्रन्थको मैंने जिस रूपमें प्रस्तुत किया है, उसे पाठक किस प्रकार ग्रहण करेंगे, इसकी मैं कल्पना करना नहीं चाहता। मेरे इस कार्यसे यदि किन्हीं पाठकोंको अणुमात्र भी लगे कि मैंने हिन्दी साहित्यकी कुछ सेवा की है तो वही मेरे लिए पर्याप्त आनन्दकी बात होगी।

पटना संग्रहालय,
पटना।
कार्तिक पूर्णिमा, २०२२ वि०।

परमेश्वरीलाल गुप्त

कवि परिचय

नाम

मिरगावतीकी उपलब्ध प्रतियोंमें सिरनामा या पुष्पिकाके रूपमें ऐसी कोई सामग्री उपलब्ध नहीं है जिससे उसके रचयिताके सम्बन्धमें कुछ जाना जा सके। हाँ, काव्यके भीतर पाँच स्थलोंपर[1] **कुतुबन** नामका इस प्रकार प्रयोग हुआ है कि अनुमान किया जा सकता है कि काव्यके रचयिताका नाम अथवा कवि-नाम **कुतुबन** था। **खोज रिपोर्ट**में इन्हें **मियाँ कुतुबन** कहा गया है और **मिश्र-बन्धु**ने अपने **मिश्र-बन्धु-विनोद**में इनका उल्लेख **कुतुबन शेख**के नामसे किया है। इनके आधारपर परवर्ती लेखकोंने जहाँ कहीं **मिरगावती**की चर्चा की है, लेखकका नाम **मियाँ कुतुबन** या **शेख कुतुबन** बताया है। उन्हें **मियाँ** कहनेका क्या आधार है, कहा नहीं जा सकता। हो सकता है मुसलमान होनेका अनुमान कर **खोज रिपोर्ट** के सम्पादकने आदरार्थ **मियाँ** शब्दका प्रयोग किया हो। उनके **शेख** होनेकी कल्पनाका आधार सम्भवतः उनके गुरुका **शेख** होना है।

कुतुबन अपने सम्बन्धमें इतने तटस्थ थे कि उन्होंने **चन्दायन**से प्रारम्भ होनेवाली प्रेमाख्यानक काव्यकी परम्पराका अविकल अनुसरण करते हुए भी अपना किसी प्रकारका वैयक्तिक परिचय देना आवश्यक नहीं माना। हमारे पास यह जाननेका कोई भी साधन नहीं है कि वे कहाँके निवासी थे, कहाँ रहते थे।[2] उनके माता-पिताके सम्बन्धमें भी हम कुछ नहीं जान पाते। उनके सम्बन्धमें हम केवल यहीं जानते हैं कि (१) वे किसके शिष्य थे,(२) उन्होंने **मिरगावती** की कब रचना की और (३) वे किसके आश्रित थे अथवा उनका शाहे-वक्त कौन था।

पीर

चौखम्भा प्रतिमें **कुतुबन**के पीर (गुरु) का नाम **शेख बुढ़न** बताया गया है। एकडला प्रतिमें भी यही नाम दिया हुआ है। पर **खोज रिपोर्ट**में उनका नाम **शेख बुरहान** बताया गया है और कहा गया है कि उनका सम्बन्ध चिश्तिया सम्प्रदायसे था। **खोज रिपोर्ट**के इस कथनको **रामचन्द्र शुक्ल**ने अपने **हिन्दी साहित्य का इतिहास**

---

१. कड़वक ८।२, ११५।६, १२१।६, १९६।६, २८०।६।

२. जिस ढंगसे कुतुबनने रचना-कालकी तिथि गणना की है, उससे सन्देह होता है कि वे दाक्षिणात्य थे अथवा दक्षिणके साथ उनका निकटका सम्बन्ध था। देखिये आगे पृ० १७-१८।

में दुहराया है और उन्हींके कथनको परवर्ती विद्वान् और अनुसन्धित्सु दुहराते चले आ रहे हैं।

शेख बुरहानकी खोज करते हुए लोगोंका ध्यान जायसीकी इन पंक्तियोंकी ओर गया है—

> **गुरु मोहदी खेवक में सेवा।**
> **चलै उताइल जिन्ह कर खेवा॥**
> **अगुआ भयेउ शेख बुरहानू।**
> **पंथ लाइ मोहि दीन्ह गियानू॥**[1]

इस कथन के आधारपर लोगोंने **मोहदी**के गुरु **शेख बुरहान**के साथ, जो कालपी मे रहते थे, **कुतुबन**का सम्बन्ध जोड़नेकी चेष्टा की है। **शेख बुरहान**के **कुतुबन**के पीर होनेकी कल्पना जिस समय की गयी थी, उस समय पाठ-भ्रष्टताके कारण लोगोंके सामने यह तथ्य न आ सका था कि **कुतुबन**के गुरु सुहरवर्दी सम्प्रदाय के थे। नामकी भिन्नताके साथ **शेख बुरहान**का सुहरवर्दी न होना, अपने आपमें इस बातका द्योतक है कि वे **कुतुबन**के पीर नही हो सकते।

जिन लोगोंने काव्यमें दिये नाम **शेख बुढ़न** (बुधन) पर ध्यान दिया उन लोगोंने **शेख बोधन शुत्तारी**को कुतुबनका गुरु बताया है। **शेख बोधन शेख अब्दुल्ला शुत्तारी**के वंशज और सिकन्दर लोदीके समकालिक थे। उनकी चर्चा **अखयार-उल-अखयार**के लेखक **मुहम्मद अब्दुल हक**ने की है। उनका कहना है कि उनके ताऊ (पिताके बड़े भाई) **शेख रिज्कउल्लाह,** जिन्होंने **मुश्ताकी** नामसे फारसीमें **वाकयात-ऐ-मुश्ताकी** और **राजन** उपनामसे हिन्दीमें **प्रेम-बान-जोत निरंजन** लिखा है, **शेख बोधन**-के पास गये थे और उनसे जिक्र (दीक्षा) प्राप्त किया था। **अखयार-उल-अखयार** और **अखबार-उल-असफिया,** दोनोंमें इन पीरका नाम स्पष्टतः **बोधन** (बे, वाव, दाल, हे, नून) दिया हुआ है; **बुढ़न** (या **बुधन**) (बे, दाल, हे, नून) नहीं। **बोधन** नाम और शुत्तारी सम्प्रदाय दोनों ही इस बातके स्पष्ट संकेत हैं कि वे **कुतुबन**के पीरसे सर्वथा भिन्न थे।

वस्तुतः **कुतुबन**के पीरका नाम **शेख बढ़न** था जैसा कि दिल्ली प्रतिमें स्पष्ट है। **शेख बढ़न** नामके कई सन्त हुए हैं। एक **शेख बढ़न मनेरी** थे, जिनकी कुछ रचनाएँ मनेर शरीफमें सुरक्षित बयाजमें प्राप्त हैं। यह किस सम्प्रदायके हैं यह अज्ञात है किन्तु इनके बेटे कुतुबमुवडित बल्खीके सम्बन्धमें निश्चित है कि वे फिरदौसी सम्प्रदायके थे। इस कारण इन्हें भी **कुतुबन**का पीर अनुमान नहीं किया जा सकता। एक दूसरे सन्त **मखदूम शेख बढ़न** हैं। ये सुविख्यात सूफी सन्त **ईसा ताज जौनपुरी**के शिष्य और उत्तराधिकारी थे। वे कस्बा अजौलीके रहने वाले थे और वहीं उनकी समाधि भी है। सतरहवीं शतीमें लिखित **मीरात-उल-असरार**के लेखक **अब्दुर्रहमान चिश्तीने,** जो

---

१. पदमावत, सम्पा० रामचन्द्र शुक्ल, स्तुति खण्ड, कड़वक २०।

अमेठीके रहने वाले थे, उनके अलौकिक गुणोंकी चर्चा की है। सुप्रसिद्ध सूफी सन्त **अब्दुर कुद्दूस गंगोही**ने भी अपने एक पत्रमें, जिसे उन्होंने हैबत खाँ सरवानीके नाम लिखा था, उनका उल्लेख 'शेखुलमशायख अल्लामतुलवरा कुदवतुननुकबा शेख बढ़न'के रूपमें किया है। यह **शेख बढ़न** किस सम्प्रदायके थे यह निश्चित रूपसे ज्ञात नहीं है। उनके गुरु **मुहम्मद ईसा ताज** मूलतः चिश्तिया सम्प्रदायके थे किन्तु उन्होंने सुहरवर्दी आदि कई सिलसिलों (सम्प्रदायों) से भी इजाजत (दीक्षा) प्राप्त की थी। हो सकता है **शेख बढ़न**ने शिष्यके रूपमें उनसे सुहरवर्दी सम्प्रदायकी दीक्षा ली हो। यदि यह अनुमान ठीक है तो ये ही **कुतुबन**के पीर रहे होंगे।

मिरगावतीकी रचना

जायसी कृत **पदमावत**में **मिरगावती**की कथाका सार प्राप्त है। उससे यह अनुमान लगाया जा सकता था कि **मिरगावती पदमावत**से पहलेकी रचना होगी। किन्तु इस प्रकारके किसी अनुमानकी आवश्यकता कभी किसीको नहीं हुई। चौखम्भा प्रतिमें, उसके खोजियोंको एक ऐसा कड़वक उपलब्ध था जिसमें **ना सै नव जब संवत अही** लिखा हुआ था। उससे उन लोगोंने तभी जान लिया था कि **मिरगावती** की रचना ९०९ हिजरीमें की गयी थी। उस समयसे ही लोग इस बातको मानते चले आ रहे हैं। किन्तु ९०९ हिजरी को विक्रमीय संवत्में परिवर्तन करनेमें लोगोंने निरन्तर भूल की है। **रामचन्द्र शुक्ल, कमल कुलश्रेष्ठ** और **हजारीप्रसाद द्विवेदी**ने उसे १५५८ वि० (१५०१ ई०) बताया है। **सत्यजीवन वर्मा**ने **नागरी प्रचारणी पत्रिका**में प्रकाशित अपने एक लेखमें उसे १५६७ वि० (१५१० ई०) ठहराया है। वस्तुत: ९०९ हिजरी २६ जून १५०३ को आरम्भ होकर १४ जून १५०४ को समाप्त हुआ था। अतः चौखम्भा प्रतिसे ज्ञात ९०९ हिजरीके अनुसार **मिरगावती** १५०३–०४ ई० की रचना है।

बीकानेर प्रतिके प्रकाशमें आने पर उसमें चौखम्भा प्रतिसे सर्वथा भिन्न कड़वक ज्ञात हुआ, जिसमें रचना-कालके सम्बन्धमें कहा गया है—

जहिया रहते पन्द्र सै साठी।
तहिया ये रे चौपई गाँठी॥

× × ×

पहिले पाख भादों छठी आही।
सिह रासि सिंघ नीरावही॥

इन पंक्तियोंसे ऐसा जान पड़ता है कि रचयिताने रचना-कालका उल्लेख विक्रमीय संवत्में किया है। अतः रचनाकालके सम्बन्धमें लोगोंके मनमें कुछ सन्देह और भ्रम उत्पन्न होने लगा। इस भ्रान्तिको दूर करनेका प्रयास करते हुए **उदयशंकर शास्त्री**ने अपना यह अनुमान उपस्थित किया कि भादो कृष्ण ६ ग्रन्थके समाप्त होनेकी तिथि है। चौखम्भा प्रतिके कड़वकमें उल्लिखित इस बातकी ओर संकेत करते हुए कि

ग्रन्थकी रचना दो मास दस दिनमें हुई थी, उन्होंने यह भी अनुमान लगाया कि काव्यकी रचनाका आरम्भ ज्येष्ठ शुक्ल ११, संवत् १५६० को हुआ होगा। साथ ही उन्होंने इस बातको भी स्पष्ट किया कि विक्रमीय संवत् १५६० (१५०३ ई०) ९०९ हिजरीमें पड़ता है।[1] इसी बातको **परशुराम चतुर्वेदीने** इस प्रकार व्यक्त किया है—**कुतुबनने मृगावतीकी रचना-कालकी तिथि भी भादो बदी ६ दी है और कहा है कि मैंने दो महीने दस दिनमें पूरा किया। उन्होंने एक स्थान पर इस कालको हिजरी सन् ९०९ अर्थात् सन् १५०३ भी बताया है, जो संवत् १५६० में ही पड़ जाता है।**[2]

शिवगोपाल मिश्रके सम्मुख दिल्ली प्रतिके अतिरिक्त अन्य सभी प्रतियाँ थीं। पर वे यह निश्चय न कर पाये कि चौखम्भा और बीकानेर प्रतियोंके कड़वक किसी एक ही तथ्यको व्यक्त करते हैं या उनका तात्पर्य दो भिन्न तथ्योंसे है। उन्होंने अपना मत इन शब्दोंमें व्यक्त किया है—**चौखम्भा वाली प्रतिमें मुहर्रमकी तिथि भी दी हुई है। दूसरी ओर "पहले पाप भादो छठि"का उल्लेख बीकानेर वाली प्रतिमें है। ऐसी स्थितिमें एक ओर जहाँ यह निश्चित प्रतीत होता है कि मृगावतीका रचनाकाल हिजरी ९०९ तदनुसार सम्वत् १५६० विक्रमी है, वहीं पर अभी यह तय करना शेष रह जाता है कि कुतुबनने इनमें से एक का अथवा दोनोंका उल्लेख किया।**[3]

दिल्ली प्रतिसे ज्ञात होता है कि कुतुबनने काव्यकी रचना-काल के सम्बन्धमें दो भिन्न स्थलोंपर चर्चा की है। एक तो आरम्भमें है। वहाँ **खोज रिपोर्टके** प्रस्तुत-कर्ताओंको प्राप्त कड़वक है। दूसरा अन्तमें है जो चौखम्भा प्रतिके अन्तमें खण्डित होनेके कारण उन्हें न मिल सका था और लोगोंको अब बीकानेर प्रतिमें देखनेको मिला है। बीकानेर प्रति आरम्भसे खण्डित है, इसलिए उसमें चौखम्भा प्रति वाला कड़वक अनुपलब्ध है। सामान्यतः प्रेमाख्यानक काव्योंके मुसलमान रचयिताओंने अपनी रचनाके कालकी चर्चा केवल एक स्थलपर किया है और वह भी हिजरी संवत् में। इस कारण **मिरगावतीमें** विक्रमीय संवत् के उल्लेखसे लोगोंका असमंजसमें पड़ जाना स्वाभाविक था।

इन दोनों ही प्रतियों—चौखम्भा और बीकानेरमें उपलब्ध कड़वक पाठकी दृष्टिसे अशुद्ध हैं। इस कारण भी वास्तविक तथ्य जाननेमें लोगोंको कठिनाई हुई। पहले कड़वक[4]के आवश्यक अंशका शुद्ध पाठ इस प्रकार है—

नौ सौ नौ जौ संवत अही॥
माह मुहर्रम चाँदहि चारी।
भई सपूरन कही निबारी॥
दोइ रे माँस दिन दस महँ, जोरत यह ओरानेउ जाइ।

१. दैनिक भारत, ७ सितम्बर १९५५।
२. सूफी काव्य संग्रह, पृ० ९७।
३. कुतुबन कृत मृगावती, सम्मेलन संस्करण, भूमिका, पृ० १०।
४. प्रस्तुत संस्करण, कड़वक १३

इससे प्रकट होता है कि ९०९ हिजरीके मुहर्रम मासकी चौथी तिथि को इस काव्यकी रचना हुई और इसके पूरा करनेमें दो मास दस दिन लगे। ४ मुहर्रम ९०९ हिजरीको अंग्रेजी तिथि २९ जून १५०३ ई० और भारतीय तिथि आषाढ़ शुक्ल ६, संवत् १५६० वि० थी। दो मास दस दिनमें पुस्तक समाप्त होनेकी बात कही गयी है। अतः उपर्युक्त आरम्भ होने की तिथिके अनुसार पुस्तक समाप्त होनेकी तिथि १४ रबीउस्सानी ९०९ हिजरी अर्थात् भाद्रपद शुक्ल १५ संवत् १५६० वि० (६ सितम्बर १५०३ ई०) होगी।

दूसरे कड़वकका आवश्यक अंश इस प्रकार है।

जहिया पन्द्रह सै हुत साठी।
तहिया इँह चौपाइँह गाँठी॥
बहुल पाख भादों जँह अही।
सिंघ रासि संघ तँह निरबही॥[1]

इन पंक्तियोंसे ऐसा प्रतीत होता है कि वि० संवत् १५६० में जिस दिन भाद्रपदके बहुल (कृष्ण) पक्षका आरम्भ हुआ और सूर्यने सिंह राशिमें जिस समय प्रवेश किया उस समय इन चौपाइयोंकी रचना की गयी। ये चौपाइयाँ ग्रन्थके अन्तमें हैं, अतः यह अनुमान किया जाना स्वाभाविक है कि कवि इन पंक्तियोंमे काव्यके समाप्त होनेका समय बता रहा है।

पूर्व कड़वकके अनुसार गणना कर काव्यके समाप्त होने की जो भारतीय तिथि ऊपर कही गयी है उससे इस दूसरे कड़वकमें दी गयी तिथिसे मेल नहीं बैठ रहा है। किन्तु भारतीय पंचाग पद्धतियोंपर ध्यान देनेपर इस असंगतिका कारण समझमें आ जाता है। उत्तर भारतमें तिथि गणनामें पूर्णिमान्त मासका प्रयोग होता है और वर्षकी गणनामें ११ पूरे और २ आधे मास होते है अर्थात् वर्षका आरम्भ चैत्र शुक्ल १ से होता है और अन्त चैत्र कृष्ण १५ को होता है। इस प्रकार आधा मास आरम्भमें और आधा अन्तमें गिना जाता है। दक्षिण भारतकी तिथि गणनामें आमान्त मासका प्रयोग होता है और वर्ष गणनामें पूरे १२ मास होते हैं। वहाँ भी वर्षका आरम्भ चैत्र शुक्ल १ से ही होता है और नियमित चलकर चैत्र कृष्ण १५ को समाप्त होता है। इस प्रकार पूर्णिमान्त और आमान्त गणना दोनोंमें वर्ष का आरम्भ और अन्त समान रूपसे होता है केवल मासके गणनामें भेद होता है। मासोंमें भी यह भेद शुक्ल पक्षमे परिलक्षित नहीं होता, केवल कृष्ण पक्षकी गणनामें अन्तर होता है और यह अन्तर पूरे एक मासका होता है। दूसरे कड़वकमें दी गई तिथिको यदि हम आमान्त गणनाकी तिथि मान लें तो, वह पूर्णिमान्त गणनाके अनुसार आश्विन कृष्ण १ की तिथि होगी। इस तिथिमें और पहले कड़वकके आधारपर काव्यके समाप्त होनेकी जो तिथि—भाद्रपद शुक्ल

---

१. प्रस्तुत संस्करण, कड़वक ४३१।

१५—कही गयी है, उसमें केवल एक दिनका अन्तर है। और यह अन्तर भी केवल गणना सम्बन्धी है। संवत् १५६० वि० में आमान्त भाद्रपदके बहुल (कृष्ण) पक्षका आरम्भ ६ सितम्बरको ही, जो पूर्णिमान्त भाद्रपद शुक्ल १५ की अंग्रेजी तिथि है, सायंकाल ६ बजे हुआ था। स्पष्ट है कि कवि ने ग्रन्थ समाप्त होनेकी तिथि आमान्त गणनाके अनुसार दी है।

उत्तर भारतीय तिथि गणनामें आमान्त तिथियोंका प्रयोग प्रायः नहीं पाया जाता। कवि द्वारा तिथिका इस प्रकार उल्लेख इस बातका द्योतक है कि वह उत्तर भारतकी पूर्णिमान्त तिथि गणना पद्धतिकी अपेक्षा दक्षिण भारतकी आमान्त तिथि गणना पद्धतिसे परिचित था। इससे इस बातका भी संकेत मिलता है कि उसका किसी-न-किसी प्रकार दक्षिण भारतसे सम्बन्ध था।

कुतुबनने उपर्युक्त कड़वकमें ग्रन्थ समाप्तिके समय सूर्यके सिंह राशिमें होनेकी बात कही है। यह घटना पञ्चाङ्गके अनुसार उक्त दिन रात्रिमें ३ और ५ बजेके बीच घटी थी। इस प्रकार कविने अत्यन्त सूक्ष्म रूपसे बताया है कि काव्यकी समाप्ति उषा-कालमें हुई थी। निष्कर्ष यह कि काव्यका आरम्भ ४ मुहर्रम ९०९ हिजरी अर्थात् आषाढ़ शुक्ल ६ संवत् १५६० वि० (२९ जून १५०३ ई०) को और अन्त १५ रबी-उस्सानी ९०९ हिजरी अर्थात् आश्विन कृष्ण १ (आमान्त भाद्रपद कृष्ण १) संवत् १५६० वि० (७ सितम्बर १९०३ ई०) को हुआ।

शाहे-वक्त

कुतुबनने चन्दायनकी परम्पराका पालन करते हुए शाहे वक्तकी भी चर्चा की है। **मौलाना दाऊदने** इसके लिए केवल एक कड़वक का उपयोग किया है; **कुतुबनने** इसके लिए चार कड़वक व्यय किये हैं और दो स्थलोंपर उनके नामका उल्लेख किया है और उनका नाम हुसेन शाह बताया है।[1] पर दो स्थलोंमेंसे किसी जगह भी **दाऊद** और **जायसीकी** तरह उन्होंने यह नहीं बताया कि वे कहाँके शाह या सुल्तान थे। जिस ढंगसे उन्होंने हुसेन शाहकी प्रशंसा की है, उससे ऐसा आभास होता है कि **कुतुबनको** हुसेन शाहकी विशेष कृपा प्राप्त थी। हो सकता है वे उनके आश्रित भी रहे हों।

राज्यका नामोल्लेख न होनेके कारण हुसेन शाह कौन थे, निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता; केवल अनुमान ही किया जा सकता है। **खोज-रिपोर्टमें** हुसेन शाह को सूरवंशके शेरशाहका पिता बताया गया है। किन्तु शेरशाहके पिताका नाम हसन खाँ था हुसेन शाह नहीं और वे एक सरदार मात्र थे, शाह या सुल्तान नहीं। सलतनत तो उसके बेटे शेरशाहने अपने बल और पौरुषसे प्राप्त की थी, दाय रूपमें नहीं। अतः यह निश्चित है कि **कुतुबनने** जो कुछ कहा है, उसका सम्बन्ध इनसे तनिक भी नहीं है।

---

१. प्रस्तुत संस्करण, कड़वक ९–१२।

रामचन्द्र शुक्लने पहले हुसेन शाहको बंगालका सुल्तान अनुमान किया था; पीछे उन्होंने उन्हें जौनपुरके शर्कीवंशका सुल्तान बताया। कुछ लोग **कुतुबनको** बंगाल और जौनपुर दोनोंके सुल्तानोंका आश्रित मानते हैं। उनके ऐसा कहनेका आधार यह है कि बंगाल सुल्तान अलाउद्दीन हुसेन शाह और जौनपुरके शर्की सुल्तान हुसेन शाह दोनों परस्पर सम्बन्धी थे। शर्की हुसेन शाहके बेटे जलालुद्दीनका विवाह बंगाल सुल्तान हुसेन शाहकी पौत्रीसे हुआ था। जब सिकन्दर लोदीने शर्की सुल्तानकी जौनपुरकी सलतनत छीन ली तो वे अपने सम्बन्धी अलाउद्दीन हुसेन शाहके राज्यमें कहलगाँव (जिला भागलपुर, बिहार)में जाकर रहने लगे थे। किन्तु दोनोंके आश्रित होनेकी बातका मेल नहीं बैठता। शर्की हुसेन शाहके कहलगाँव जाकर रहने मात्रसे मान लेना कि कुतुबनने शर्की हुसेन शाहका आश्रय छोड़कर अलाउद्दीन हुसेन शाहका आश्रय ग्रहण कर लिया, अनुचित है। यदि वह सत्य भी हो तो भी यह तो मानना ही होगा कि **कुतुबनने** उस शाहकी प्रशंसा की है जिसके आश्रयमें वे **मिरगावती** की रचनाके समय थे, दोनोंकी नहीं। अतः हमें यही देखना चाहिए कि उन्होंने किस हुसेन शाहकी प्रशंसा की है।

इन दोनों हुसेन शाहोंमें से **कुतुबनका** तात्पर्य किससे था, इस पर विचार करनेके निमित्त उचित होगा कि प्रासंगिक कड़वकोंको सामने रख लिया जाय। वे कड़वक निम्नलिखित हैं—

शाह हुसेन आह बड़ राजा। छात सिंघासन उन्ह पै छाजा॥
पण्डित औ बुधवन्त सयाना। पोथा बाँच अरथ सब जाना॥
धरम दुधिस्टिल वँह कँह छाजा। हम सिर छाँह जियउ जुग राजा॥
दान देइ बहु गिनत न आवा। बलि औ करन न सरबरि पावा॥
राइ जहाँ लहि गँधरप अहई। सेवा करहिं बारि सब चहई॥

चतुर सुजान भाखा सब जानाँ, अइस न देखेंउ कोइ।
सभा सुनहु सब कान दइ, फुनि र बखानों सोइ॥ ९

अगिनित ठाट गिनत न आवा। खरदम खेह गगन सब छावा॥
अपुनहि सँझर आगे कर पावा। पाछे परै सो धूरि फकावा॥
मेघडम्बर छाया बहु ताने। सेवा करहिं राजु औ रानें॥
तुरिय टाप अस खेह उड़ानी। आथि अम्बर भव पुहुमि जिंह जानी॥
गज गवन जग सासों होई। बासुकि इन्द्र दुहो बुधि खोई॥

जिय दान जो चाहे, दिन दस सेवा करो सौ बार।
जाकहँ भौंह होइ चख मैली, सो र होइ जरि छार॥ १०

डाँड इन्द्र बासुकि सेंउ लेई। अउर डाँड लंकेसर देई॥
ईंह बड़ न कोई गुनी सयाना। देवतहिं आयसु ईंह कर माना॥
जासों हँसि कै बात एक कहिहैं। दुख दारिद औ पाप न रहिहैं॥

पिरिथि म अइस भयउ न कोई । सर तो दैंउ सुनेउ जो होई ॥
पाप पुन्न लेउ जरमहि काऊ । धरम करत कछु कहि जाऊ ॥

अधरम कियउ न जग मँह काऊ, धरम करहिं बहु भाँत ।
निसि बासर बिबि तैसहि चितहिं, बुधि परसहिं तो साँत ॥ ११

पढ़हि पुरान कठिन जो होई । अरथ कहहिं समुझावत सोई ॥
एक-एक बोल क दस-दस भावा । पंडितहिं अचकर बकति न आवा ॥
अउर बहुत उन्ह केरि बड़ाई । हमरें कहे कहाँ कहि जाई ॥
मुँह मँह जीभ सहस जो होई । तोर बड़ाई करै जो कोई ॥
जब लग अस्थिर रहे सुमेरू । हर भारजा बहै जमु नेरू ॥

सवन सुनहु चित लाइ कर, कहौं बात हौं एक ।
आउ बढ़ा हुसन साह कै, आह जगत के टेक ॥ १२

यदि इन पंक्तियोंकी तुलना **जायसी** और **मंझन** द्वारा शाहे-वक़्तकी प्रशंसामें कही गयी पंक्तियोंसे की जाय तो स्पष्ट जान पड़ता है कि कुतुबनने अपने शाहे-वक़्तके शासन और सेना, दान और न्यायके सम्बन्धमें जो कुछ कहा है, उसमें कोई मौलिकता नहीं है। तीनों ही कवियोंका वर्णन प्रायः एक-सा है और सम्भवतः परिपाटीका अनुसरणमात्र है। किन्तु यदि यह वर्णन परिपाटीजनित होते हुए भी किसीका वास्तविक चित्रण है तो वह ऐसे प्रतापी शासकका चित्र है जिसका सम्राट्के समान व्यापक प्रभाव था। इस रूपमें यह प्रशंसा शर्की हुसेन शाहपर ही लागू होती है, बंगालके अलाउद्दीन हुसेन शाहपर नहीं।

बंगालका हुसेन शाह मूलतः मुजफ़्फ़रशाहका प्रधान मन्त्री था और अपने शासकके विरुद्ध विद्रोह कर उसने शासनाधिकार प्राप्त किया था। उसका अधिकांश समय अपनी स्थिति संतुलित करनेमें ही बीता। १४९९ ई० तक अर्थात् कुतुबनके **मिरगावती**की रचना करने से चार बरस पूर्वतक, उसका राज्य बंगाल के बाहर दक्षिण बिहार में मुँगेरतक ही सीमित था। इस अवधिमें उसे केवल एक बार १४९५ ई० (९०१ हिजरी)में अपनी सेनाको सिकन्दर लोदीके मुकाबले भेजना पड़ा था। पर बिना किसी विशेष शक्ति-प्रदर्शनके ही दोनों पक्षोंमें सन्धि हो गयी थी। १४९९ ई०में पहली बार हुसेन शाह किसी सैनिक अभियानके लिए निकला और कामता-कामरूपको अपना लक्ष्य बनाया। उस क्षेत्रपर अधिकार करनेमें हुसेन शाहको लगभग चार बरस लगे; अर्थात् **मिरगावती**की रचनासे कुल एक बरस पहले वह १५०२ ई० में कामरूप विजय कर पाया। उसने दूसरा अभियान जाज-नगर उड़ीसाके विरुद्ध किया था और वह **मिरगावती** की रचनासे कई वर्ष पश्चात् १५०८-९ ई० में। इस प्रकार कुतुबनने जो कुछ कहा है वह बंगालके हुसेन शाहपर घटित नहीं होता।

दूसरी ओर शर्की सल्तनतका इतिहास निरन्तर सैनिक अभियान और युद्धोंका इतिहास है। जौनपुर सल्तनतकी स्थापना करते ही शर्की सुलतान दिल्लीपर अधिकार

करनेका स्वप्न देखने लगे थे। दिल्ली सुलतान भी शर्की सुलतानोंको अपना प्रबल प्रतिद्वन्द्वी समझते रहे। बंगालके सुलतान शर्की सलतनतके आरम्भिक दिनोंमें ही खिराजदार थे। जहाँतक हुसेन शाहका सम्बन्ध है, उसकी सेना और शासनका अत्यधिक विस्तार था। पूर्वमें तिरहुत और उड़ीसा उसके खिराजदार थे। इनके विरुद्ध उसने अपने शासनके आरम्भिक दिनोंमें ही अभियान किया था। ग्वालियर नरेशको उसने परास्त कर अपना अत्यन्त हितैषी मित्र बना रखा था। इटावा, कोल और बयाना के सूबेदार लोदियोंका साथ छोड़कर हुसेन शाहसे आ मिले थे। बघेल-खण्ड के हिन्दू राजाओंपर उसका प्रभुत्व था। इस प्रकार हुसेनशाहके शासनका विस्तार पूर्वमें बिहारसे लेकर पश्चिममें दिल्ली सलतनत की सीमातक था जो युद्ध-क्रमसे घटता-बढ़ता रहता था और यह विस्तार दिल्ली सलतनतसे किसी प्रकार कम न था। दिल्ली सलतनतके साथ तो उसकी मुठभेड़ निरन्तर चलती रहती ही रही। परिस्थितियाँ ऐसी आयीं जब दिल्ली सुलतान हुसेन शाहकी आधीनता स्वीकार करनेको तैयार हुआ; पर हुसेन शाहने अपनी शक्तिके अभिमानमें उसकी शर्तोंको ठुकरा दिया। हुसेन शाहकी सैनिक-शक्तिका अनुमान इस बातसे किया जा सकता है कि उसने बहलोल लोदीके विरुद्ध एक लाख घुड़सवार और एक हजार गज-सेनाके साथ अभियान किया था। इन सब बातोंको देखते हुए लगता है कि **कुतुबन** ने बिना किसी अत्युक्तिके शर्की हुसेन शाहका ही उल्लेख किया है।

उल्लेखनीय बात यह है कि **कुतुबन** हुसेन शाहकी विद्वत्ताकी प्रशंसा करते हुए थकता नहीं। इस ढंगसे **जायसी** या **मंझनने** अपने शाहे-वक्तकी प्रशंसा नहीं की है। इससे यह निसंदिग्ध जान पड़ता है कि **कुतुबन**का शाहे-वक्त वस्तुतः विद्वान् और कलाका प्रेमी था। बंगालका हुसेन शाह किस कोटिका विद्वान् था, इसके सम्बन्धमें कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। केवल इतना ही ज्ञात है कि उससे बंगला साहित्यको प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था। उसने किसी अन्य भाषाके साहित्यको प्रोत्साहित किया हो, इसका प्रमाण किसी सूत्रसे नहीं मिलता। शर्की हुसेन शाहकी ख्याति कवि और संगीतज्ञके रूपमें सर्व विदित है। संगीतमें जौनपुर काँगड़ा (खयाल) उसीकी देन बतायी जाती है। विद्वानों और गुणीजनोंका वह बड़ा आदर करता था। अतः **कुतुबनने** जिस रूपमें प्रशंसा की है, उसका पात्र शर्की हुसेन शाह ही हो सकता है। उसका उन्हें प्रश्रय सरलतासे प्राप्त रहा होगा। यदि **कुतुबन**के पीर **शेख बढन, मुहम्मद ईसा ताजके** शिष्य थे, तो निश्चय ही उनका सम्बन्ध जौनपुरके शर्की सुल्तानके साथ रहा होगा। उनके माध्यमसे **कुतुबन**का हुसेन शाहके सम्पर्कमें आना सहज हुआ होगा और उनको उनसे प्रोत्साहन अथवा आश्रय प्राप्त करनेमें कोई कठिनाई नहीं हुई होगी।

सर्वोपरि, एक बात, जिससे यह निश्चित हो जाता है कि **कुतुबन**का तात्पर्य बंगालके हुसेन शाहसे नहीं था, वह यह है कि बंगालके हुसेन शाहकी ख्याति इस बातके लिए विशेष है कि उसने सत्यपीर नामसे अपना एक स्वतन्त्र धार्मिक मत चलाया था। यदि **कुतुबन**का उद्देश्य इस हुसेन शाहकी प्रशंसा करना रहा होता तो

उनका ध्यान उसकी इस धर्माचार्यताकी ओर अवश्य जाता और उसकी प्रशंसा करते हुए इस तथ्यकी अवश्य चर्चा करते। किन्तु ऐसी कोई बात **कुतुबन**ने संकेत रूपमें भी नहीं कही है।

सभी बातोंपर विचार करनेपर यह निश्चित जान पड़ता है कि बंगालके हुसेन शाह **कुतुबन**के हुसेन शाह नहीं हैं। किन्तु इतिहासकारोंकी धारणा है कि शर्की हुसेन शाहकी मृत्यु ९०५ हिजरीमें ही हो गयी थी; और **कुतुबन**का कहना है कि **मिरगावती**की रचना उन्होंने ९०९ हिजरीमें हुसेन शाहके जीवन-कालमें और उनके शासनारूढ़ रहते की थी।[१] उन्होंने छत्रछायाके रूपमें उसके युग-युग तक जीनेकी[२] और दीर्घायु होनेकी भी कामना की है।[३] इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हुसेन शाह कमसे कम ९०९ हिजरी तक जीवित थे। यदि इतिहासकारोंका कथन ठीक है तो उपर्युक्त सारी सम्भावनाओंके बावजूद **कुतुबन**के हुसेन शाहको शर्की हुसेन शाह कदापि नहीं कहा जा सकता। अतः अन्तिम निश्चय करनेसे पूर्व इस सम्बन्धमें भी उहापोहकी आवश्यकता है।

शर्की हुसेन शाह कब मरा, इसकी चर्चा समसामयिक किसी भी इतिहासकारने नहीं की है। घटनाओं आदिको ध्यानमें रखकर ही आधुनिक इतिहासकारों ने उसके ९०५ हिजरीमें मरनेका अनुमान किया है। उसे प्रामाणिक नहीं माना जा सकता। इस तथ्यपर प्रकाश डालनेवाले सबसे प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण हुसेन शाहके अपने सिक्के हैं, जिनकी इसिहासकारोंने उपेक्षा की है। ये सिक्के हमें उसके शासनारुढ़ होनेके दिनसे ९१० हिजरी तक निर्बाध रूपसे, प्रत्येक वर्षके प्राप्त होते है। कलकत्ता संग्रहालयके मुद्रा संग्रहमें कथित मृत्यु-वर्ष ९०५ हिजरीके बादके सिक्कोंमें ९०६, ९०७ और ९१० हिजरीके सिक्के हैं।[४] एच० एम० ह्विटेलने जौनपुर सुल्तानोंके सिक्कोंकी एक सूची प्रकाशित की है।[५] उसके अनुसार ९०५, ९०६ और ९०९ हिजरीके सिक्के ब्रिटिश संग्राहलय (लन्दन) में हैं। ९०८ हिजरीका सिक्का ह्विटेलके अपने संग्रहमें था। ९११ हिजरीका सिक्का लाहौर संग्राहलयमें होनेकी बात भी उन्होंने कही है। हमने स्वयं अभी हालमें लखनऊ संग्राहलयके शर्की सिक्कोंका परीक्षण किया था। वहाँ हमें हुसेन शाहके उपर्युक्त प्रत्येक वर्षके सिक्के बड़ी मात्रामें मिले। वहाँ ८९१ से ९१० हिजरी तकके प्रत्येक वर्षके सिक्के एक ऐसे दफीनेसे प्राप्त हैं जिसका प्राप्ति स्थान, खेद है वहाँके रजिस्टरोंमें अंकित नहीं है। एक दूसरे दफीनेमें, जो जालौनसे प्राप्त हुआ था, ८९४ से ९१० हिजरी तकके सिक्के हैं। बाँदा जिलेसे प्राप्त एक अन्य दफीने में भी ९१० हिजरीके सिक्के प्राप्त हुए हैं।

---

१. उन्हके राज यह र हम कहा। १३।१

२. हम फिर छाँह जियउ जुग राजा। ९।३

३. आउ बढ़ो हुसेन शाहकै, आह जगतकै टेक। १२।७

४. कैटलाग ऑव द क्वायन्स इन दि इण्डियन म्यूजियम, कलकत्ता, खण्ड २, पृ० २१८–१९।

५. न्यूमिस्मेटिक सप्लीमेण्ट, सं० ३६, पृ० ३२–३४।

इतिहासकारोंकी यह धारणा रही है कि ये सिक्के हुसेन शाहके मृत्यूपरान्त किसीने प्रचलित किये होंगे। किन्तु ऐसा कहना और सोचना अत्यन्त हास्यास्पद है। इस तथ्यको न भुला दिया जाना चाहिए कि भारतीय इतिहासमें किसी शासकके मृत्यूपरान्त उसके नामसे इस प्रकार सिक्के जारी करनेका एक भी उदाहरण प्राप्त नहीं है। मुसलमान शासकोंमें सिक्के जारी करनेका विशेष महत्त्व था और वह उनका एक अत्यन्त सुरक्षित अधिकार था। वह राज्याधिकारका सबसे बड़ा प्रमाण समझा जाता था। कोई भी व्यक्ति, चाहे वह राजगद्दीका वैध उत्तराधिकारी रहा हो या दावेदार मात्र, अपना अधिकार प्रकट करनेके लिए सबसे पहले अपने नामका सिक्का ढलवाता और मसजिदमें खुतबा पढ़वाता था। ऐसी अवस्थामें कल्पना नहीं की जा सकती कि कोई हुसेन शाहकी मृत्युके पश्चात् अथवा उसके निर्वासन कालमें उसके नामसे सिक्के जारी करेगा। कहा जा सकता है कि मुगल शासनके ह्रास कालमें लोगोंने मुगल शासकोंके नामपर सिक्कोंके ढाले थे; पर उन सिक्कोंके साथ हुसेन शाहके सिक्कोंकी तुलना नहीं की जा सकती। मुगल शासकोंके नामसे सिक्के ढालनेवाले अपना चिह्न विशेष अंकित कर दिया करते थे, जिनसे उन सिक्कोंकी राजकीय तथा अन्य लोगोंके सिक्कोंसे भिन्नता स्पष्ट रूपसे प्रकट होती थी। हुसेन शाहके सिक्कोंमें ऐसा कोई चिह्न प्राप्त नहीं होता जिससे उन्हें उसके शासन काल, निर्वासन काल अथवा मृत्यू-परान्तके सिक्के कह कर बिलगाव किया जा सके। उसके सारे सिक्के समान लिपिमें अंकित और एक ही शैलीके हैं।

इस सम्बन्धमें विचारणीय यह भी है कि हुसेन शाहके मृत्यूपरान्त उसके नामके सिक्के ढालनेमें किसीका क्या स्वार्थ हो सकता था; विशेषतः ऐसी स्थितिमें जब कि वह निर्वासित रहा हो और उसके उत्तराधिकारियोंमें अधिकारारूढ़ होनेकी क्षमता न रही हो। यह भी ध्यान देनेकी बात है कि लेन-देन लोक-व्यवहारमें शासकके नामके छापका, उन दिनों आज जैसा कोई महत्त्व न था। धातु और तौल ठीक होनेपर किसी शासककी छापका सिक्का कहीं भी ग्राह्य था। इस दृष्टिसे भी हुसेन शाहके नाम-की सिक्कोंपर कोई आवश्यकता न थी। अतः यह निर्भ्रान्त है कि हुसेन शाहने स्वयं और अपने जीवन-कालमें ही ये सिक्के जारी किये होंगे। वे इस बातके अकाट्य प्रमाण हैं कि हुसेन शाह ९१० हिजरी तक तो निसन्दिग्ध रूपसे जीवित था। सम्भावना उसके ९११ हिजरी तक जीवित रहने की भी है।

अतः **कुतुबन**के इस कथनमें तनिक भी सन्देह नहीं किया जा सकता कि उसने **मिरगावती**की रचना हुसेन शाहके जीवन-कालमें ९०९ हिजरीमें की थी और उसने उसके दीर्घजीवनकी कामना स्वाभाविक रूपसे की है। किन्तु उसके कथनकी यह ध्वनि कि उस समय हुसेन शाह सत्तारूढ़ भी था, ऐतिहासिक घटनाओंके विश्लेषण-की अपेक्षा रखता है।

इस बातसे किसी प्रकार भी इनकार नहीं किया जा सकता कि बहलोल लोदीने ९०१ हिजरी (१४९५ ई०) में हुसेन साहसे उसके सलतनतका इंच-इंच छीनकर अपने

सल्तनतमें मिला लिया था और हुसेन शाहको बंगाल सुलतान अलाउद्दीन हुसेन शाहके राज्यमें जाकर शरण लेनी पड़ी थी। वह कहलगाँव (जिला भागलपुर, बिहार) में रहने लगा था। इससे आधुनिक इतिहासकारोंकी कल्पना है कि वह बंगाल सुलतानका आश्रित हो गया था अर्थात् उसे बंगाल सुलतानकी ओरसे नियमित निर्वाह व्यय मिलता था। वस्तुतः हुसेन शाह कहलगाँव निराश्रितके रूपमें नहीं गया था। उसकी स्थिति बहुत कुछ निर्वासित राज्य (स्टेट इन एक्जाइल) की-सी थी। राज्य खोकर हुसेन शाह पंगु होकर बैठ नहीं गया; वह अपना शासन प्राप्त करनेका निरन्तर प्रयत्न करता रहा।

रिज्कउल्लाहने अपने **वाकयात-ए-मुश्ताकी**में लिखा है कि बिहार खोनेके कुछ ही दिन बाद हुसेनशाहने उसे पुनः प्राप्त करनेका प्रयत्न किया। उसने बिहारपर आक्रमण किया। दरिया खाँ (सिकन्दर लोदीका बिहार स्थित सूबेदार) ने किलेसे निकलकर उसका मुकाबिला किया। वह दो मास तक हुसेन शाहको रोके रखकर किलेकी रक्षा करता रहा। जब सिकन्दर लोदीकी सेना आ गयी तो हुसेन शाहको लौट जाना पड़ा। **मुहम्मद कबीर**ने भी अपने **अफसान-ए-बादशाहान**में लिखा है कि जब हुसेन शाह गौड़ (बंगाल) पहुँचा तो वहाँके शासकने उसे आश्वासन दिया और कहा कि अभी कुछ दिन सब्र करो और आक्रमणके लिए उपयुक्त अवसर आने दो। इस तरह अवसरकी प्रतीक्षा करते-करते जब कई बरस बीत गये और बंगाल सुलतानने कुछ नहीं किया, तब हुसेन शाहने उसे पत्र लिखा। अलाउद्दीन हुसेन शाहने पुनः ठहरनेके लिए कहा। पर हुसेन शाह रुका नहीं। अकेले ही अपनी सेना लेकर उसने बिहारपर आक्रमण कर दिया और किलेको घेर लिया। उसके साथी रूही चौधरीने किलेकी खाईके पानीको निकाल बाहर करनेके लिए नहर खोद डाला। इस बीच अफगान सेना आ पहुँची और हुसेन शाहको किलेपर अधिकार किये बिना ही लौट आना पड़ा।

दोनों सूत्र हुसेन शाहके निर्वासनके पश्चात बिहार पर आक्रमणकी बात कहते हैं। वे एक आक्रमणकी या दो भिन्न आक्रमणोंकी बात कहते हैं, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। **रिज्कउल्लाह**ने अपने उल्लेखमें 'कुछ ही दिनों बाद'का प्रयोग किया है और **मुहम्मद कबीर**ने 'कुछ वर्ष बीतने'की बात कही है। इससे ऐसा आभास होता है कि दोनों दो आक्रमणोंकी चर्चा कर रहे हैं। वस्तुस्थिति जो भी हो, इनके कथनसे यह निश्चित है कि हुसेन शाह कहलगाँवमें कभी निष्क्रिय बैठा नहीं रहा; अपना राज्य वापस लेनेके लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील था।

सिक्कोंके प्रमाणसे यह भी निश्चित है कि हुसेन शाह सल्तनत खोकर भी अपनेको सुलतान मानता और समझता रहा और उसी अधिकारसे अपने सिक्के ढालता रहा। इस कालके सिक्के बिहारमें उपलब्ध हैं या नहीं, इसकी खोज अभी तक नहीं की गयी है। किन्तु जो सिक्के मिले हैं वे सब उत्तर प्रदेशमें ही मिले हैं। अतः यह मानना गलत है कि वह अपना सारा निर्वासित जीवन कहलगाँवमें ही बिताता रहा।

इस सम्बन्धमें एक बात और द्रष्टव्य है। जौनपुरमें हुसेन शाहकी कब्र है, यह वहाँकी परम्परागत जनश्रुति है और इस सम्बन्धमें लोग एक कब्रकी ओर इंगित भी करते हैं। यह जनश्रुति कोरी कल्पना नहीं कही जा सकती। यदि वस्तुतः जौनपुरमें हुसेन शाह की कब्र है तो यह स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि कहलगाँवमें रहने और मरने पर उसकी लाश क्यों और कैसे जौनपुर आयी। जौनपुरसे सम्पर्क बनाये रखनेका हुसेन शाहके पास न तो साधन था और न अवसर। सिकन्दर लोदी हुसेन शाहका इस सीमा तक कट्टर शत्रु बन गया था कि उसने जौनपुर पर अधिकार करनेके बाद तत्काल आदेश दिया कि हुसेन शाह निर्मित सारी इमारतें ढाह दी जाँय। यहाँ तक कि अटाला मसजिद और राजी बीबोकी मसजिद भी उसके क्रोधके लपेटमें आ गये थे। यदि कुछ मुल्लाओंने धर्मके नाम पर दुहाई न दी होती तो वे भी आज अस्तित्वमें न होते। ऐसी अवस्थामें कल्पना करना कठिन है कि सिकन्दर लोदी और उसके अनुचरोंने हुसेन शाहकी लाशको जौनपुर लाकर दफनानेकी अनुमति दी होगी। यदि वस्तुतः वहाँ उसकी कब्र है तो इसका अर्थ यह है कि हुसेन शाह अपने अन्तिम दिनों में जौनपुर पहुँचनेमें समर्थ हो गया था।

इन बातोंको ध्यानमें रखने पर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि **कुतबन** एकनिष्ठ आश्रितकी तरह अपनेको हुसेनके राज और छत्र-छायामें ही सुरक्षित समझते रहे। हुसेन शाहका निर्वासन सम्भवतः उनकी दृष्टिमें सैनिक अभियानका अंग मात्र था। अतः बिना किसी अत्युक्ति या तोड़-मरोड़के उन्होंने अपने आश्रयदाताके सम्बन्धमें अपने हृदयके भाव व्यक्त किये हैं। यह बात नहीं कि उन्हें हुसेन शाहके सलतनत-विहीन होनेका ज्ञान न रहा हो। वे उसके प्रति सजग थे इसीलिए उन्होंने **दाऊद** या **जायसी**की तरह उन्हें स्थान विशेषका शासक बतानेकी अपेक्षा मौन रहना उचित समझा।

प्रस्तुत विवेचनके पश्चात् हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिये कि **कुतबन**का सम्बन्ध हुसेन शाह शर्कीसे था। इतिहासकारोंके लिए, जो अब तक हुसेन शाहके निर्वासित जीवनकी कल्पना करते रहे हैं, उचित होगा कि वे सिक्कों और **कुतुबन**के कथनके प्रकाशमें तथ्योंको जाँचें, परखें और हुसेन शाहके सम्बन्धमें उचित निष्कर्ष पर पहुँचें।

स्थान और कब्र

सूफी प्रेमाख्यानकोंसे सम्बन्ध रखनेवाली किसी पुस्तकमें, जिसे मैं इस समय स्मरण नहीं कर पा रहा हूँ, **सैयद हसन असकरी**का नाम लेकर कहा गया है कि उन्होंने **कुतुबन**की कब्रका पता लगा लिया है। यह सूचना अपनेमें महत्त्व की है किन्तु **असकरी**के **कुतुबन** और **मिरगावती** सम्बन्धी लेखोंमें इस प्रकारकी चर्चा मेरे देखनेमें नहीं आयी। अतः मैंने स्वयं **असकरी**से इस सम्बन्धमें जानकारी चाही। उन्होंने बताया कि **कुतुबन**की कब्रकी न तो उनको जानकारी है और न इस ढंगकी कोई बात उन्होंने

कहीं लिखा है या किसीसे कहा है। किन्तु यह अवश्य बताया कि बहुत दिन हुए जब वे जौनपुर सल्तनतके इतिहासके सम्बन्धमें काम कर रहे थे, **कुतुबन** नामके किसी व्यक्ति अथवा विद्वान्‌के बनारसमें रहने और सुलतानको आशीर्वाद देनेकी बात उन्होंने किसी ग्रन्थमें पढ़ा था। किन्तु उस समय उसका कोई विवरण उन्होंने नोट नहीं किया। इसलिए अब उनके लिए यह बता सकना सम्भव नहीं है कि किस ग्रन्थमें और किस प्रसंगमें यह बात कही गयी है। उन्होंने यह भी बताया कि यह बात उन्होंने **नर्मदेश्वर चतुर्वेदी**को बताया था। हो सकता है, किसी भ्रमसे उन्होंने ही कब्र वाली बात कह दी हो।

जिस **कुतुबन**की बात **असकरी**ने पढ़ी थी, वह यदि **मिरगावती**के रचयिता **कुतुबन** ही हैं तो उनके कथनसे यह तो निश्चित हो ही जाता है कि उनका सम्बन्ध बनारससे था। ग्रन्थका नाम और सन्दर्भ ज्ञात होने पर यह बात अधिक प्रामाणिकता-के साथ कही जा सकेगी। यदि **कुतुबन**का सम्बन्ध बनारससे था तो हो सकता है उनकी कब्र भी वहीं हो। काशीके साहित्य-प्रेमी अन्वेषी, यदि इस दिशामें प्रयत्न करें तो कदाचित कुछ पता चल सके।

काव्य-परिचय

नाम

भारतीय प्रबन्ध-काव्योंके रचयिताओंने प्रायः अपनी रचनाका नाम अपनी नायिकाके नामपर रखा है। संस्कृत साहित्यमें **सुबन्धुकी वासवदत्ता, श्रीहर्षकी रत्नावली, बाणकी कादम्बरी** इस ढंगके कुछ उदाहरण हैं। इसी प्रकार प्राकृत काव्योंमें **लीलावती कथा, मलयसुन्दरी कथा, सुरसुन्दरी चरित्रम्** आदिका नाम लिया जा सकता है। हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके सूफी रचयिताओंने भी इसी परम्पराका अनुसरण किया है। **जायसीने** अपनी नायिका पद्मावतीके नामपर अपने काव्यका नाम **पदमावत** रखा है। नायिकाके नामपर ही **मंझनके** काव्यका नाम **मधुमालती** है। **मौलाना दाऊदने** भी अपनी नायिकाके नामपर ही अपने काव्यको **चन्दायन** नाम दिया है, यद्यपि उनकी नामकरण शैली परम्परासे कुछ हटकर है। अतः यह अनुमान करना स्वाभाविक है कि **कुतुबनने** भी अपनी नायिकाके नामपर ही अपने काव्यका नामकरण किया होगा।

अभी हालमें एक नवोदित विद्वानने **मौलाना दाऊदकी** रचनाके नाम **चन्दायन** को गलत सिद्ध करनेकी चेष्टा करते हुए यह मत प्रतिपादित किया है कि सूफी प्रेमाख्यानोंके नाम त-अन्त हैं। प्रमाणके लिए उन्होंने **पदमावत, इन्द्रावत** आदिका नाम लिया है। यदि उनके इस मतको स्वीकार किया जाय तो कहना होगा कि **कुतबनने** अपनी रचनाका नाम **मिरगावत** रखा होगा। किन्तु इन प्रेमाख्यानक काव्योंकी सूचीपर दृष्टि डालनेसे त-अन्त नामोंकी अनिवार्य परम्परा हो ही, ऐसी बात सामने नहीं आती। कोई कारण नहीं जान पड़ता कि कवियोंने अपनी नायिकाके ईकारान्त नामोंको अकारान्त करनेकी अनिवार्य आवश्यकताका अनुभव किया हो। **मधु-मालतीका** नाम कहीं **मधु-मालत** देखनेमें नहीं आता। छन्दानुरोधके कारण कवियोंने ईकारान्त नामोंका इकारान्त रूपमें प्रयोग किया है, इसलिए अधिक-से-अधिक कल्पना यही की जा सकती है कि कवियोंने अपने काव्योंका नाम इकारान्त रखा होगा, अकारान्त नहीं। इस धारणाके अनुसार **कुतुबनके** काव्यका नाम **मिरगावति** सम्भव है। **बनारसी दासने** अपने **अर्धकथानकमें मिरगावति** नाम दिया भी है।

खोज रिपोर्टमें खोजियोंने **कुतुबनके** काव्यका नाम **मृगावती** बताया है। उनके **मृगावती** नाम देनेका आधार क्या है, यह अज्ञात है। उसके आधारपर ही लोग इस ग्रन्थकी चर्चा करते हुए उसका उल्लेख **मृगावती** नामसे किया करते हैं। उपलब्ध प्रतियोंमें केवल बीकानेर प्रतिमें पुष्पिका उपलब्ध है। उसमें इसे **म्रिगावती कथा** कहा गया है। दिल्ली प्रतिके उपलब्ध आरम्भिक पृष्ठके ऊपर बायें कोनेमें ग्रन्थकी लिपिसे

भिन्न लिपिमें किसीने ग्रन्थका नाम लिखा है; किन्तु उसके आरम्भके कुछ अक्षर अस्पष्ट हैं, पढ़े नहीं जा सकते। पठनीय केवल **म मिरगावती** (मीम; मीम रे, गाफ, अलिफ, वाव, ते, बड़ी ये) हैं। **जियाउद्दीन अहमद देसाईने** अनुमानसे इसे **किस्सा पेम मिरगावती** पढ़नेकी चेष्टा की है। पर उनका यह अनुमान सन्दिग्ध है। ऐसी स्थितिमें यह निश्चय करना कठिन है कि ग्रन्थका मूल नाम केवल **मिरगावती** है अथवा **मृगावती कथा** या **किस्सा पेम मिरगावती**।

ऐसी स्थितिमें हमने सीधे-सादे ढंगपर इसका नाम **मिरगावती** स्वीकार किया है। जब तक कोई अन्य नाम निश्चित रूपसे ज्ञात न हो, यही नाम विवाद रहित प्रतीत होता है।

लिपि

मुसलमान कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यान काव्योंके सम्बन्धमें सामान्य कल्पनाके विरुद्ध हिन्दी साहित्यके विद्वानोंके एक वर्गकी धारणा है कि उनकी मूल प्रति नागरी लिपिमें अंकित की गयी रही होंगी। इस मान्यताको अस्वीकार करते हुए हमने **चन्दायन**के परिचयमें निम्नलिखित तथ्योंकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है—

(१) ये कवि न केवल स्वयं मुसलमान थे, वरन् उनके गुरु भी मुसलमान थे। उनके आश्रयदाता भी मुसलमान ही थे और उनके शिष्य भी मुसलमान थे। सूफी मतका हिन्दुओंमें प्रचार हुआ हो, इसका भी कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। अतः इनके ग्रन्थ मूलतः अरबी-फारसी लिपिके अतिरिक्त किसी अन्य लिपिमें कदापि न लिखे गये होंगे।

(२) नागरी लिपिको मुसलमानी शासन कालमें कभी प्रश्रय प्राप्त नहीं हुआ।[1] अभी पचास वर्ष पूर्वतक, अधिकांश कायस्थ परिवारोंमें रामायण, भगवद्गीता आदिका

१. हमारे इस कथनके विरुद्ध माताप्रसाद गुप्तने हमारा ध्यान इस तथ्यकी ओर दिलानेकी कृपा की है कि मुसलमानी शासनके अनेक सिक्के मिले हैं, जिनपर नागरी लिपिका भी प्रयोग हुआ है। (भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ८७)। वस्तुतः स्थिति यह है कि न तो किसी मुगल शासकने अपने किसी सिक्केपर नागरी लिपिका प्रयोग किया और न जौनपुर, गुजरात, बंगालके सुलतानोंके किसी सिक्केपर नागरी है। दक्षिणके बहमनी, कुतुबशाही, आदिलशाही और निजामशाही सुलतानोंने भी नागरीका प्रयोग कभी नहीं किया। इन सबके सिक्कोंपर विशुद्ध नस्ख अथवा नस्तालीक लिपिमें लेख अंकित किये गये हैं। रही बात दिल्ली सुलतानोंकी। उनके भी किसी सोने या चाँदीके सिक्केपर नागरी लेख नहीं है। केवल दरब (चाँदी-ताँबाका मिश्रण) और ताँबेके कुछ सिक्कोंपर नागरी लिपिमें बादशाहका नाम अंकित पाया जाता है। इसे नागरीके प्रश्रयका प्रमाण माताप्रसाद गुप्त जैसे विद्वान् ही कह सकते हैं, इतिहास और पुरातत्वका विद्वान् नहीं। जो लोग प्राचीन मुद्राओंकी परम्परासे परिचित हैं, उनकी दृष्टिमें वह परम्पराका निर्वाह मात्र है। यह वह परम्परा है जिसका अनुसरण करते हुए मुहम्मद गोरीको अपने सिक्कोंपर लक्ष्मीका अंकन करना पड़ा था। यदि उसके इन सिक्कोंको प्रमाण माना जाय तो कहना होगा कि मुहम्मद गोरी मूर्तिपूजक था; उसे मूर्तिभंजक कहा जाता है, वह सर्वथा असत्य है। मुसलमानी शासनमें नागरीको प्रश्रय प्राप्त होनेकी बात हम तब स्वीकार करते जब

पाठ उर्दू-फारसीमें लिखी गयी कापियोंसे होता था और लोग शुद्ध उच्चारणके साथ उनका पाठ किया करते थे। इंगलैण्ड और फ्रांसके पुस्तकालयोंमें न केवल सूरसागर आदि धार्मिक ग्रन्थोंकी, वरन् हिन्दू कवियों द्वारा रचित अनेक शृंगार काव्यों, यथा—**केशवदासकी रसिक प्रिया, बिहारी सतसई** आदिकी भी फारसी लिपिमें लिखी प्राचीन प्रतियाँ सुरक्षित हैं। वे इस बातके द्योतक हैं कि जिस समय प्रेमाख्यानक काव्य रचे गये, देशमे अरबी-फारसी लिपिकी ही प्रधानता थी। ऐसी अवस्थामे कल्पना नहीं की जा सकती कि प्रेमाख्यानक काव्योंके मुसलमान रचयिताओंने अपने काव्यकी मूल प्रति नागराक्षरोंमे लिखी होगी।[1]

(३) मुसलमान कवियों द्वारा रचित किसी काव्यकी अबतक कोई भी नागरी-कैथीमें लिखित प्रति ऐसी नही मिली है जिसे सतरहवीं शतीसे पूर्वकी कहा जा सके। और इन काव्योंकी नागरी-कैथीमें लिखी जो भी प्रतियाँ उपलब्ध है, उनमे कोई भी ऐसी नही है, जिसमें फारसी लिपि जनित विकृतियोंकी भरमार न हो। ये विकृतियाँ

हमे मुसलमान बादशाहों और उनके अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों के नागरी लिपिमें लिखे राजकीय पत्र और फरमान प्राप्त होते।

१. हमारे इस कथनका यह अर्थ लगा कर कि कायस्थों तकका सम्बन्ध नागरी लिपिसे नाम मात्रका रह गया था, माताप्रसाद गुप्तने हमें यह जतानेकी कृपा की है कि 'हिन्दी ग्रन्थोंकी नागरीमें जो प्रतिलिपियाँ मिलती है, उनमेंसे एक बहुत बड़ी संख्या कायस्थ लिपिकों द्वारा लिखी हुई प्रतियोंकी है। मध्य युगके हिन्दीके कवियोंमे भी कायस्थोंकी संख्या नगण्य नहीं थी भले ही वे शीर्षस्थ नहीं थे'; और कहा है कि 'इस तर्कके आधारपर यह नहीं माना जा सकता कि इन मुसलमान कवियोकी रचनाओंकी आदि लिपि, हो न हो, फारसी लिपि रही होगी।' (भारतीय साहित्य, वर्ष ८ अंक ३, पृ॰ ८७)।

मध्ययुगमे कितने कायस्थ नागरीके लिपिक अथवा हिन्दीके कवि थे, यह प्रश्न प्रस्तुत प्रसंगसे तनिक भी सम्बन्ध नहीं रखता। प्रश्न यह है कि तत्कालीन पढ़ी-लिखी हिन्दू जनताके बीच हिन्दी अथवा नागरी लिपिका किस सीमातक प्रचार था। आजकी तरह उस समय आकलनकी व्यवस्था नहीं थी। इस कारण कदाचित् माताप्रसाद गुप्तको इस प्रश्नका उत्तर देनेमें कठिनाई हो; अतः दूर अतीतके आँकड़ोंके उलझनमें उन्हे न डालकर उनसे दो निवेदन करना चाहूँगा—

एक तो यह कि जिन दिनों वे तीसरी-चौथी कक्षामें पढ़ा करते थे, उन दिनोंकी अपनी कक्षाओंपर दृष्टिपात करें और देखें कि उनके साथ पढ़नेवाले कितने विद्यार्थी हिन्दीके थे और कितने उर्दूके। उन्हें अपने आप याद आ जायेगा कि पैंतीस विद्यार्थियोंकी कक्षामें हिन्दी पढ़नेवालोंकी संख्या आठ-दससे अधिक नहीं थी और उनमें एक भी मुसलमान नहीं था। यह स्थिति उस समय थी जब अंग्रेजी शासनकी छत्रछायामें कहा जाता था कि हिन्दी-उर्दूका स्थान समान है। इस तथ्यके प्रकाशमें कल्पना करें कि मुसलमानी शासन कालमें जब अरबी-फारसीका बोलबाला था, हिन्दी या नागरी जाननेवालों संख्या क्या रही होगी!

दूसरा निवेदन यह होगा कि वे आगरा विश्वविद्यालयके प्रांगणमें रहते है। समय निकाल कर वे उन सभी कायस्थ प्राध्यापकोंसे मिलनेका कष्ट करें जिनकी आयु इस समय पचास वर्षसे अधिक है। हर एकसे पूछें कि उनके पितामह किस लिपिसे परिचित थे। उन्हें स्वतः ज्ञात हो जायगा कि हमारे कथनमें कितना तथ्य और तर्कमें कितना बल है।

इस बातका स्पष्ट संकेत देती हैं कि उनकी पूर्वज प्रतियाँ अरबी-फारसी लिपिमें थीं। इसके विपरीत इन काव्योंकी जो प्रतियाँ अरबी-फारसी लिपिमें उपलब्ध हैं, उनमेंसे अनेक उपलब्ध नागरी-कैथी प्रतियोंसे प्राचीन हैं और उनके पाठ अधिक संगत, स्पष्ट और प्रामाणिक जान पड़ते हैं। ये तथ्य अपने आपमें इस बातके प्रमाण हैं कि इन काव्योंकी मूल प्रतियाँ अरबी-फारसी लिपिमें रही होंगी, नागरी लिपिमें नहीं।

हमने अपनी समझमें उपर्युक्त बातें अत्यन्त गम्भीरताके साथ और तर्कपूर्ण ढंगसे कही हैं। किन्तु हमारी ये बातें **माताप्रसाद गुप्तको**, जो मूल प्रतिके नागरी लिपिमें लिखे होनेकी बात माननेवालोंमें अग्रणी और दृढ़ आग्रही हैं, आवश्यक प्रमाणसे रहित जान पड़ी हैं और उन्होंने यह मान लिया है कि हमने दूसरोंके प्रमाणपूर्ण बातोंकी हँसी उड़ायी है।[१] अतः **मिरगावतीके** प्रसंगसे हमारे लिए आवश्यक हो गया है कि इस प्रश्न-पर फिरसे विस्तारके साथ विचार किया जाय।

मुसलमान कवियोंके प्रेमाख्यानक काव्योंकी आदि प्रति नागरी लिपिमें लिखी गयी थी, यह कहनेवाले विद्वानोंने अपने पक्षमें जो तर्क दिये हैं, वे उन विकृतियोंकी कल्पनापर आधारित हैं जो उनके मतानुसार नागरी लिपिके लेखन या पाठ प्रमादसे सम्भव हैं। **माताप्रसाद गुप्त**का कहना है—**कैथी में र और न, क और फ, व और ब के बहुत-कुछ मिलते-जुलते रूप होते थे जब कि फारसी-अरबी लिपिमें वे एक दूसरेसे सर्वथा भिन्न थे। कल्पना कीजिये कि इन कवियोंकी फारसी-अरबी लिपिमें लिखी गयी प्रतियोंमें अनेक स्थलोंपर ऐसे पाठ मिलते हैं जिनमें र के स्थानपर न या न के स्थानपर र, क के स्थानपर फ या फ के स्थानपर क और व के स्थानपर ब अथवा ब के स्थान-पर व आता है, ऐसी दशामें क्या यह स्वतः प्रमाणित न माना जायगा कि इन प्रतियों-का कोई पूर्वज नागरी लिपिमें था? पुनः यदि इस प्रकारकी पाठ विकृतियाँ रचना-की प्रायः समस्त प्रतियोंमें मिलती हैं तो विरोधी प्रमाणोंके अभावमें यह क्यों न माना जायेगा कि इसकी आदि प्रति नागरी लिपिमें थी?**[२]

जहाँतक **माताप्रसाद गुप्त**के इस तर्कका सम्बन्ध है, सरसरी तौरपर देखनेसे अकाट्य लगता है। यदि वस्तुतः ऐसी बातें जिसकी कल्पना **माताप्रसाद गुप्त**ने की हैं, फारसी प्रतियोंमें पायी जाती हैं तो निसन्देह कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह माननेमें संकोच न करेगा कि इन फारसी प्रतियोंकी मूल प्रति नागरी लिपिमें थी। किन्तु गम्भीर विश्लेषण करनेपर उनकी बातोंका खोखलापन अपने आप प्रकट हो जाता है।

क का **फ** और **व** का **ब** अथवा उसका विपर्यय नागरी और कैथी दोनों लिपियोंमें लिखित पाठमें सम्भव है; किन्तु **र** का **न** और **न** का **र** पढ़े जानेकी सम्भावनाकी कल्पना केवल कैथी लिपिमें लिखित प्रतियोंमें ही की जा सकती है। इस

---

१. भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ८७।

२. वही।

सम्भावनाके साथ **माताप्रसाद गुप्त**के कथनसे यह झलकता है कि वे यह मानते हैं कि इन ग्रन्थोंकी मूल प्रति कैथी लिपिमें थी। उनकी मान्यताके प्रति इस अनुमानकी पुष्टि उनके इस कथनमें उपलब्ध है—**जिस युगमें दाऊद, कुतुबन और मंझन आदि की रचनाएँ प्रस्तुत हुईं थीं, उसी युगमें नागरीका एक ऐसा रूप प्रचारमें आया जो कैथी कहा गया है।**[1] इस प्रकार **माताप्रसाद गुप्त** अपनी विचारधाराके विद्वानोंसे एक कदम आगे हैं।

यदि **माताप्रसाद गुप्त**की यह बात स्वीकार कर ली जाय तो इसका अर्थ यह होगा कि चौदहवीं शताब्दीके उत्तरार्धमें, जब **मौलाना दाऊदने चन्दायन**की रचनाकी थी, कैथी लिपिका प्रचलन हो गया था। किन्तु इस सम्बन्धमें ध्यान देनेकी बात यह है कि कैथी लिपि एक सीमित क्षेत्रकी लिपि रही है और उस लिपिमें लिखे पत्र, दस्तावेज आदि केवल पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहारके कुछ भागोंमें ही मिलते हैं और उनमेंसे कोई भी दो ढाई सौ बरससे पुराने नहीं हैं। कैथी लिपिमें लिखी पुस्तकोंकी प्रतियाँ भी इसी क्षेत्रमें लिखी गयी हैं और इसी क्षेत्रमें बड़ी संख्यामें उपलब्ध होती हैं। अन्यत्र-से इस लिपिमें लिखी पुस्तकें इनी-गिनी ही मिलती हैं और वे इन्हीं क्षेत्रोंसे गयी प्रतीत होती हैं। कैथी लिपिमें लिखी किसी ग्रन्थकी कोई भी प्रति सतरहवीं शतीके पूर्वकी नहीं है। ये तथ्य इस बातके अकाट्य प्रमाण हैं कि कैथी लिपीका प्रचलन सतरहवीं शतीसे पूर्व न था। उसका विकास सतरहवीं शतीमें किसी समय हुआ होगा। ऐसी अवस्थामें सोचना कि किसीने चौदहवीं या पन्द्रहवीं शतीमें कैथी लिपिमें कुछ लिखा होगा, नितान्त हास्यास्पद है।

माताप्रसाद गुप्तने जो कुछ कहा है, उसपर व्यावहारिक ढंगसे भी देख लेना उचित होगा। व्यावहारिक ढंगसे हमारा तात्पर्य यह है कि फारसी लिपिकी प्रतियोंमें कैथी-नागरी जनित जिन विकृतियोंको देखा जाता है, उनको देखा जाय कि क्या वे सचमुच कैथी-नागरी लिपि जनित विकृतियाँ हैं ! इस विश्लेषणके लिए **माताप्रसाद गुप्त** सम्पादित **पदमावत**का ही परीक्षण उपयुक्त होगा। यह **पदमावत**का अबतक सबसे प्रामाणिक संस्करण माना जाता है और **माताप्रसाद गुप्त**को इस बातके लिए ख्याति प्राप्त है कि उन्होंने **पदमावत**की भाषा पर जमी काई हटानेमें सफलता पायी है।

पदमावतका यह प्रामाणिक संस्करण उपस्थित करते हुए **माताप्रसाद गुप्त**ने अपनी भूमिकामें ऐसी पाठ विकृतियोंकी एक तालिका उपस्थित की है जो उनकी दृष्टिमें फारसी प्रतियोंमें नागरी लिपि जनित हो सकती हैं।[2] उन्हें **पदमावत**के ९ पंक्तियोंवाले ६५३ कड़वकोंमें केवल ६६ स्थलोंपर ऐसी ही विकृतियाँ दिखायी पड़ी हैं; किन्तु इन ६६ विकृतियोंमें उन्होंने एक भी ऐसी विकृति नहीं बतायी है जो **क** के **फ** या **फ** के **क** तथा **र** के **न** या **न** के **र** पढ़ने से उत्पन्न हुई हो। अतः स्पष्ट है कि इन अक्षरोंसे जनित

---

१. भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ८७।

२. पद्मावत, सम्पा० माताप्रसाद गुप्त, भूमिका, पृ० २४–२९।

विकृतियोंकी कल्पना उनके मस्तिष्कतक ही सीमित है। **र** के **न** और **न** के **र** पढ़नेसे उत्पन्न विकृतियोंका अभाव इस बातका स्पष्ट प्रमाण है कि फारसी प्रतियोंकी आदि प्रति कदापि कैथी लिपिमें नहीं थी।

रही बात फारसी प्रतियोंके मूलमें नागरी प्रति होनेकी। **माताप्रसाद गुप्तने** **पद्मावतमें** इस प्रकारकी जो विकृतियाँ बतायी हैं, वे निम्नलिखित हैं—

ब का व पाठ	५८ स्थल
व का ब पाठ	१ स्थल
म का भ पाठ	३ स्थल
ग का क पाठ	१ स्थल
इ का द पाठ	१ स्थल
छ का थ या ठ पाठ	१ स्थल

इन विकृतियोंकी कल्पना करते समय जान पड़ता है **माताप्रसाद गुप्तके** ध्यानमें ऐसी हस्तलिखित प्रतियाँ रही हैं जो सतरहवीं-अठारहवी शतीमें तैयार की गयी थीं। फारसी प्रतियोंके मूलमें यदि कोई नागरी प्रति रही होगी तो निसंदिग्ध रूपसे वह सोलहवीं शतीकी होगी; वह तभी **जायसीके** हाथकी कही जा सकती है। उस शताब्दीके और उससे पहलेके नागरी लिपिमें लिखे हिन्दी ग्रन्थोंकी प्रतियाँ नहींके बराबर उपलब्ध हैं; किन्तु चौदहवीं, पन्द्रहवीं और सोलहवीं शतीकी नागरी लिपिमें लिखी संस्कृत और अपभ्रंशके ग्रन्थोंकी अनेक प्रतियाँ उपलब्ध हैं। उनके देखनेसे यह स्पष्ट अनुभव होगा कि तत्कालीन लिपिक लिपि सौन्दर्यका बड़ा ध्यान रखते थे। तत्कालीन एक भी प्रति शिरोरेखा विहीन न मिलेगी। उनके अक्षर सुडौल, गोलाई, लम्बाई आदि सबमें अनुपात युक्त होंगे; और लिखावटमें आतुरता न होकर धैर्य और सावधानी होगी। अतः तत्कालीन लिखित किसी नागरी प्रतिसे फारसी लिपिमें लिखनेवाला कभी इस प्रकारके भ्रममें नहीं पड़ सकता। वह कभी भी **म** को **भ**, **ग** को **क**, **इ** को **द**, **छ** को **थ** या **त**, नहीं पढ़ेगा। अतः तत्कालीन लिपि-स्वरूपोंको ध्यानमें रखते हुए कल्पना ही नहीं की जा सकती कि फारसी प्रतियोंमें ये विकृतियाँ मूल नागरी प्रतिसे आयी होंगी।

जहाँतक **व** के **ब** या **ब** के **व** पढ़नेकी बात है, प्राचीन कालमें **ब** और **व** के रूपोंमें लिपिकारोंने कभी कोई अन्तर नहीं माना। गुप्त-कालीन अनेक अभिलेखोंमें **ब** **व** रूपमें लिखा मिलेगा। गुप्त-कालके बादके अधिकांश अभिलेखों, ताम्रपत्रोंमें **व** के रूपमें **ब** लिखा मिलेगा। इसलिए चौदहवीं, पन्द्रहवीं या सोलहवीं शतीमें तैयार की गयी किसी भी ग्रन्थके नागरी प्रतियोंमें **ब** के लिए **व** का प्रयोग हुआ हो तो कोई आश्चर्य नहीं। किन्तु ऐसी स्थितिमें यह ध्यान रखना होगा कि **ब** को **व** के रूपमें लिखनेवाला लिपिक अपने अभ्यासगत स्वभावसे सर्वत्र **ब** को **व** ही लिखेगा। क्योंकि **ब** और **व** की यह एकरूपता हजार बरसोंके व्यवहारके परिणामस्वरूप लोक-जीवनके लिए इतनी स्वाभाविक बन गयी थी कि पढ़ते समय पाठकके लिए **व** और **ब**का भेद करनेमें कोई कठिनाई न होती रही होगी। इस स्वभावसे नागरीको फारसी लिपिमें लिखनेवाला

अनभिज्ञ रहा हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। यदि अनभिज्ञ होता तो वह **व** के रूपमें लिखे **ब** को सर्वत्र **व** ही पढ़ता; ५८७७ पंक्तियोंके **पदमावतमें**, केवल ५८ स्थलोंपर **ब** को **व** न लिखता या एक स्थलपर **व** को **ब** लिखनेकी भूल न करता।

ये तथ्य अपने आपमें इस बातको स्पष्ट करनेमें सक्षम हैं कि इन विकृतियोंके आधारपर किसी फारसीके प्रतिके मूलमें नागरी प्रतिके होनेकी कल्पना नहीं की जा सकती। फिर भी **माताप्रसाद गुप्त** द्वारा बतायी इन विकृतियोंका अलगसे परीक्षण कर लेना उचित होगा।

माताप्रसाद गुप्तके कथनानुसार **ब** को **व** पढ़े जानेकी निम्नलिखित विकृतियाँ **पदमावतमें** हैं—

(१) **पब्बेके** स्थानपर **पुवे** या **पवे** ४ स्थल
(२) **बानिके** स्थानपर **वानि** १ स्थल
(३) **अनबनके** स्थानपर **अनवन** ४ स्थल
(४) **जबके** स्थानपर **जौ**
तबके स्थानपर **तौ**
कबके स्थानपर **कौ** } ४९ स्थल
अबके स्थानपर **औ**
सबके स्थानपर **सौ**

(१) **माताप्रसाद गुप्तने** जिन चार स्थलोंपर **पब्बैका पुवे** या **पवै** पाठ देखा है वे सबके सब एक ही प्रति (प्रति तृ० ३) में हैं; और यह प्रति फारसीकी नहीं नागरीकी है। **ब व** का भेद लिपि प्राचीन कालसे ही नहीं करते रहे हैं। अतः यह कहना कि लिपिकने गलत लिखा है, उसके प्रति अन्याय होगा। **माताप्रसाद गुप्तको** इस विकृत-पाठका भ्रम स्वयं अपने पाठसे ही उत्पन्न हुआ है। यदि यह विकृत हो भी तो इसका सम्बन्ध किसी प्रकार भी फारसी प्रतियोंसे नहीं जोड़ा जा सकता।

(२) **वानि** पाठ एक मात्र ऐसी प्रति (प्रति द्वि ४)में मिलता है जो मुद्रित है और उसको मुद्रित हुए केवल ६० वर्ष हुए हैं। वह १३२३ हिजरीका प्रकाशन है। इस प्रतिको तीन सौ वर्ष पूर्वकी किसी प्रतिके मूलके निर्धारणके लिए किसी प्रकारका प्रमाण माननेको कदाचित् ही कोई तैयार होगा। इस अवधिके बीच उसमें न जाने कितने साधनोंसे विकृतियाँ आयी होंगी। किन्तु यदि उसे प्रमाण माना भी जाय तो भी किसी प्रकार निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि वह **बानिसे** विकृत होकर ही किसी प्रतिमें गया है। जिस प्रसंगमें यह शब्द प्रयुक्त हुआ है (३११२) उसके अनुसार **बानि** के मूलमें **वर्ण** शब्द जान पड़ता है। **वर्णसे** पहले **वानि** होगा तब पीछे **बानि** (स० वर्ण> प्रा० वण्ण> वान (वानि)> बान (बानि)। हो सकता है कविने मूलतः **वानि** शब्दका ही प्रयोग किया हो, पीछे लोगोंने उसका बानिके रूपमें सरलीकरण कर लिया हो। इस शब्दके अनेक पाठान्तर विभिन्न प्रतियोंमें मिलते हैं जो साधारणीकरण और सरलीकरणके निसंदिग्ध प्रयास हैं।

(३) जिस शब्दको **माताप्रसाद गुप्तने** **अनवनके** रूपमें ग्रहण किया है और **अनबनका** विकृत रूप माना है, वह अकेले **पदमावतमें** ही नहीं, वरन् **मिरगावती, चन्दायन** और **मधुमालतीमें** भी अनेक स्थलोंपर प्राप्त है और वह इन चारों काव्योंकी सभी फारसी प्रतियोंमें अलिफ, नून, वाव, नूनके रूपमें लिखा मिलता है। यह बात तो सभी स्वीकार करेंगे कि ये चारों काव्य न तो एक समयमें लिखे गये और न उनकी प्रतियाँ एक लिपिक द्वारा तैयार की गयी हैं। ऐसी अवस्थामें यह सोचना नितान्त हास्यास्पद होगा कि सभी लिपिक समान रूपसे प्रमादी थे और सबने **अनबनको** **अनवन** पढ़ लिया। कोई तो किसी प्रतिमें उसका शुद्ध पाठ **अनबन** लिखता। अतः सभी काव्यों-में और उनकी सभी प्रतियोंमें एक समान अलिफ, नून, वाव, नूनका लिखा होना यह प्रमाणित करता है कि मूल पाठ अलिफ, नून, वाव, नूनसे ही बना हुआ कोई शब्द है जिसे कैथी-नागरी प्रतियोंके लिपिकोंने इन अक्षरोंके ध्वनि रूपको ग्रहणकर **अनवन** पढ़ा है और **माताप्रसाद गुप्तने** भी उसे अविकल रूपसे ग्रहणकर लिया है। इसे **ब** के **व** पढ़े जानेके प्रमाणमें उपस्थित नहीं किया जा सकता।

अनवनको **अनबनका** रूप कल्पित कर **माताप्रसाद गुप्तने** उसके मूलमें **अन्य वर्णको** देखनेकी चेष्टा की है। यदि **अनवन** पाठ ठीक है और उसके मूलमें **अन्य वर्ण** है, तो भी उसे **अनबनका** विकृत रूप कहना कठिन है। **अन्य वर्णसे** पहले **अनवन** होगा और बादमें **अनबन**। कविके लिए **अनबन** लिखनेकी आवश्यकता नहीं होगी। किन्तु **अन्य वर्णके** अर्थ या भावमें **अनबन** या **अनवन**, दोनों रूपोंमें से कोई भी, न तो अवधीमें और न किसी इतर लोक-भाषामें व्यवहृत पाया जाता है। **अनवन** पाठ ही काल्पनिक है। वस्तुतः अलिफ, नून, वाव, नूनके रूपमें लिखा गया शब्द सीधा-सादा **अनों** या **आनों** है जो **नाना** प्रकारके, **भाँति-भाँतिके**, **तरह-तरहके** अर्थमें नित्य भोजपुरी बोलनेवालोंके बीच व्यवहारमें आता है।

(५) **जौ तौको** **माताप्रसाद गुप्तने** **जब तबका** विकृत रूप कहा है। **जब तब** ऐसे शब्द हैं जिन्हें लोग बात-बातमें प्रयोग करते हैं। लोगोंकी जिह्वापर वे इस प्रकार चढ़े रहते हैं कि नागरी लिपिमें **जब तबके** रूपमें लिखे होनेपर भी कोई लिपिक उसे भूले भी फारसी लिपिमें जीम वावसे नहीं लिखेगा। **जौ** और **तौ** का प्रयोग **पदमावतकी** एक आध प्रतिमें नहीं, अधिकांशमें पाया जाता है। और उनका प्रयोग **पदमावततक** ही सीमित नहीं है। वे समान रूपसे अन्य प्रेमा-ख्यानोंमें भी पाये जाते हैं। यह तथ्य इस बातका द्योतक है कि **जौ तौ** का व्यवहार निरन्तर **जब तबके** अर्थमें होता रहा है, वह **जब तबका** विकृत रूप नहीं है। यदि हम लोक-भाषाओंकी ओर ध्यान दें तो आज भी हमें **जौ** और **तौ** का प्रयोग भोजपुरी बोलनेवालोंके मुखसे बराबर सुननेको मिलेगा। अतः **जौ** और **तौ** ही मूल प्रतियोंका प्रयोग है। सम्भवतः **माताप्रसाद गुप्तको** भी यह बात समझमें आ गयी है। उन्होंने अपने **मधुमालतीके** संस्करणमें इनका उल्लेख विकृतियोंके उदाहरणमें नहीं किया

है और अपनी शब्द सूचीमें उन्हें **यदा** (जौ <जऊ <यदा) तथा **तदा** (तौ <तऊ < तदा)का रूप कहकर उनका **जब** और **तब** अर्थ ग्रहण किया है।

इसी प्रकार **कबका कौ, सबका सौ** और **अबका औ** प्रयोग **जौ** और **तौ**के अनुकरणपर होते रहे होंगे, यह उपर्युक्त प्रकाशमें हम आसानीसे समझ सकते हैं। असाधारण प्रयोग और क्लिष्ट-कल्पना होनेके कारण लोगोंने **कब, सब, अब**के रूपमें उनका सरलीकरण कर लिया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि **ब** के **व** पढ़े जानेका ऐसा कोई उदाहरण **पदमावत**में उपलब्ध नहीं है जिसे फारसी प्रतियोंमें नागरी लिपि जनित विकृतका निसंदिग्ध प्रमाण कहा जा सके।

व के **ब** पाठके उदाहरणमें **माताप्रसाद गुप्त**ने केवल एक उदाहरण कड़वक ४५ की पंक्ति १ से **घूँबिय** शब्दका दिया है। यह शब्द इसी रूपमें सब प्रतियोंमें मिलता है, यह उनका स्वयंका कथन है। किस आधारपर वे इस शब्दका मूल पाठ **घूँविय** होनेकी कल्पना करते हैं, यह उन्होंने नहीं बताया है। **वासुदेवशरण अग्रवाल**ने अपने संस्करणमें **घूँबिय** पाठको स्वीकार किया है और उसका अर्थ किया है **घूमनेपर**।[1] **घूमने**के अर्थमें **घूँबि** भोजपुरीका बहु प्रचलित शब्द है। उसके **घूँवि** होनेका कोई कारण नहीं जान पड़ता। इस प्रकार **व** के **ब** पाठका भी कोई प्रामाणिक उदाहरण **पदमावत**में नहीं है।

माताप्रसाद गुप्तने **म** के **भ** पाठके उदाहरणमें **कुरुँभ** शब्दको पेश किया है। जहाँतक शब्दका सम्बन्ध है इस बातसे किसीको इनकार न होगा कि **कुरुँभ**के मूलमें **कुरुम** (कूर्म) है। किन्तु पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंसे परिचित व्यक्ति यह कभी स्वीकार न करेगा कि नागरीमें लिखे तत्कालीन **म** को कोई **भ** पढ़ेगा। इस प्रकारकी कल्पना आजकलके **म** और **भ** के रूपोंको लेकर ही करना सम्भव है। **कुरुँभ** पाठ नागरी लिपि जनित विकृतिके कारण नहीं है, यह बात इस बातसे भी स्पष्ट है कि यह पाठ **पदमावत**के फारसी-नागरी सभी प्रतियोंमें समान रूपसे प्राप्त है। फिर **म** के स्थानपर **भ** का यह अकेला प्रयोग नहीं है। स्वयं **माताप्रसाद गुप्त**को **कुसुम**के अर्थमें **कुसुँभ** पाठ **मधुमालती**में मिला है।[2] **चन्दायन**में भी कई स्थलोंपर **कुसुँभ** और **कुसुँभी** पाठ है।[3] इस प्रकार **म** के स्थानपर **भ** का प्रयोग न केवल **पदमावत**में है वरन् **मधुमालती** और **चन्दायन**में भी है। अतः मानना होगा कि पूर्वाक्षरको अनुनासिक कर **म** के स्थानपर **भ** का प्रयोग उन दिनों मान्य था। आज भी **कुसुम**को गाँवोंमें **कुसुँभ** बोलते हुए सुना जाता है। अतः कुरुँभके प्रयोगको भी लिपि जनित विकृति नहीं कह सकते। **माताप्रसाद गुप्त** भी इस तथ्यको स्वीकार करते जान

---

१. पदमावत, द्वितीयावृत्ति, पृ० ५३।

२. २०४।३; ४१०।३।

३. १५६।७; ४३।२; ९४।४।

पड़ते हैं; उन्होंने **मधुमालती**में फारसी लिपियोंमें नागरी लिपि जनित विकृतियोंकी सूचीमें इसका उल्लेख नहीं किया है।

ग के **क** पाठके उदाहरणमें **माताप्रसाद गुप्त**ने कड़वक १०५ की पंक्ति ५ — **पुहुप सुगन्ध करहि सब आसा। मकु हिरगाइ लेइ हम बासा** ।।—के **हिरगाइ** शब्दको दिया है। नागरी लिपिमें लिखित **ग** किस कल्पनासे **क** पढ़ा जा सकता है, यह **माताप्रसाद गुप्त** ही बता सकते हैं। इन दोनों अक्षरोंके स्वरूपोंसे परिचित कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति कभी यह सोच भी नहीं सकता है कि **ग** कभी किसी तर्कसे **क** पढ़ा जा सकता है। **हिरकाइ** या **हिरिकाइ** पाठ लिपि विकृतिके परिणामस्वरूप नहीं है, यह तो समस्त प्रतियोंमें प्राप्त समान पाठसे ही स्पष्ट है। जो लोग भोजपुरीसे परिचित हैं उन्हें यह भली-ज्ञात है कि **अत्यन्त निकट लाने**के अर्थमें **हिरकाना** शब्दका ही व्यवहार होता है **हिरगाना**का नहीं। अतः **हिरकाना** या **हिरिकाना** पाठ ही शुद्ध है। उसमें किसी प्रकारकी विकृतिकी कल्पना नहीं की जा सकती। यदि **हिरगाना** पाठको ही शुद्ध मानें तो कहना होगा कि **हिरकाना** पाठ फारसी लिपि जनित है, नागरी लिपि जनित नहीं। यह बतानेकी आवश्यकता नहीं कि मध्यकालीन फारसी लिपिमें **गाफ**के लिए अतिरिक्त मरकजका प्रयोग नहीं होता था। **काफ** ही **गाफ**का भी काम देता था और प्रसंगानुसार **क** या **ग** पढ़ा जाता था। अतः फारसी प्रतियोंमें **हिरगाइ** सदैव **हिरकाइ**के रूपमें ही लिखा मिलेगा।

इ का **द** पाठ **माताप्रसाद गुप्त**को कड़वक ३५१ की पंक्ति २ में दिखाई पड़ा है। वहाँ उन्हें एक प्रति (प्रति प्र० २)में **रुई**के स्थान पर **रूद** पाठ मिला। इस सम्बन्धमें केवल इतना ही द्रष्टव्य है कि यह प्रति फारसीकी नहीं, नागरीकी है। उसमें आयी विकृतिका सम्बन्ध किस प्रकार फारसी प्रतियोंमें नागरी लिपि जनित विकृतियोंसे है, यह **माताप्रसाद गुप्त** बतानेकी कृपा करें, तभी उसपर कुछ विचार सम्भव है।

छ का **थ** या **ठ** पाठ **माताप्रसाद गुप्त**ने कड़वक ३५२ की पंक्ति ७ में देखा है। पंक्ति है—**लागों कन्त छार जेंऊँ तोरे**। उनके कथनानुसार एक प्रति (प्रति पं०)में **ठार** पाठ है, अन्य सभी प्रतियोंमें पाठ **थार** है। **छार**के शुद्ध पाठ होनेमें **माताप्रसाद गुप्त**को स्वयं सन्देह है। उन्होंने **छार**के आगे प्रश्नवाचक चिह्नका प्रयोग किया है। जबतक पाठका निश्चय न हो, किसी बहुमान्य पाठको विकृत कहना अनुचित है। दूसरी बात **छ** का साम्य न तो **थ** से है और न **ठ** से; ऐसी अवस्थामें कोई लिपिक क्योंकर **छ** को **थ** या **ठ** पढ़ लेगा, यह समझमें आनेवाली बात नहीं है। यदि अधिकांश प्रतियोंमें **थार** पाठ है तो यह स्वीकार करना होगा कि मूल पाठ **छार** कदापि न रहा होगा। **वासुदेवशरण अग्रवाल**ने **थार** पाठको समीचीन ठहराया है।[1] उनकी मान्यताके प्रकाशमें किसी प्रकारकी विकृतिकी बात उठती ही नहीं।

---

१. द्वितीय संस्करण, पृ० ४२७।

पदमावतके फारसी प्रतियोंमें **माताप्रसाद गुप्तने** नागरी लिपि जनित विकृतियों-की जो कल्पनाकी है और उसके प्रमाणमें जितने भी उदाहरण उपस्थित किये हैं, उनमें एक भी परीक्षण करनेपर खरा नहीं उतरता। उनसे यह सिद्ध नहीं होता कि **पदमावत**-के उपलब्ध फारसी प्रतियों के मूलमें किसी भी अवस्थामें कोई नागरी लिपिकी प्रति थी जिससे कहा जा सके कि आदि प्रति नागरीमें थी।

जो लोग आदि प्रतिके नागरीमें होनेकी कल्पना करते हैं, उन्हें फारसी लिपि-की प्रतियोंमें नागरी लिपि जनित विकृतियाँ खोजनेके स्थानपर नागरी लिपिमें लिखी ऐसी प्रतियोंका प्रमाण उपस्थित करना चाहिए जिसमें एक भी फारसी लिपि जनित विकृतियाँ न हों। जबतक ऐसी कोई नागरी प्रति सामने नहीं आती, यह माननेका कोई आधार नहीं कि मुसलमान कवियों द्वारा लिखे काव्योंकी आदि प्रति नागरीमें थी। **चन्दायन**में हमने जो तर्क उपस्थित किये हैं और जिन्हें ऊपर उधृत भी किया है, उन्हें दृष्टिमें रखना ही होगा और मानना होगा कि इन काव्योंकी मूल प्रतियाँ फारसी लिपिमें लिखी गयी थीं; और इस कारण फारसी प्रतियोंको नागरी-कैथीकी प्रतियोंकी अपेक्षा प्रामाणिक स्वीकार करना होगा।

भाषा

लिपिके समान ही मुसलमान कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यान काव्योंकी भाषा के सम्बन्धमें **माताप्रसाद गुप्त** प्रभृत विद्वानोंका आत्म-विश्वासके साथ कथन है कि वह अवधी है। उनके इस विश्वासके मूलमें **रामचन्द्र शुक्ल**का यह कथन है—**ये सब प्रेम कहानियाँ पूर्वी हिन्दी अर्थात् अवधी भाषामें एक नियत क्रमके साथ केवल चौपाई-दोहेमें लिखी गयी हैं।**[1] इस सम्बन्धमें हमने **चन्दायन**के परिचयमें इस तथ्य-की ओर ध्यान आकृष्ट किया था कि **अब्दुर्कादिर बदायूनी**ने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि—

> **चन्दायन** दिल्ली सल्तनतके प्रधान मन्त्री जौनाशाहके सम्मानमें रचा गया था और दिल्लीमें मखदूम शेख तकीउद्दीन रब्बानी जन-समाजके बीच उसका पाठ किया करते थे। यह कथन इस बातकी ओर संकेत करता है कि **चन्दायन**की भाषा वह भाषा है जिसे दिल्लीके प्रधान मन्त्री जौनाशाहसे लेकर दिल्लीकी सामान्य जनतातक पढ़ और समझ सकती थी। **अब्दुर्कादिर बदायूनीने** इस भाषाके सम्बन्धमें हमें अपनी कल्पनाका कोई अवसर नहीं दिया है। उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें बता दिया है कि इस मसनवी (**चन्दायन**)की भाषा **हिन्दवी** है। यह **हिन्दवी** निश्चय ही वह **हिन्दवी** होगी, जिसका प्रयोग चिश्ती सन्त **शेख फरीदुद्दीन गंजशकर** और **ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया** अपने मुरीदोंसे बातचीत करते समय किया करते थे। उसी **हिन्दवी**को जो दिल्लीके सूफी सम्प्रदायके सन्तों द्वारा व्यवहृत होती थी और राजसभासे लेकर जन-साधारणमें समझी जाती अथवा जा सकती थी, **दाऊदने** अपने काव्य **चन्दायन** के लिए अपनाया होगा और उसीमें उसकी रचना की होगी।

---

१. जायसी ग्रन्थावली, सं० २०१७, भूमिका, पृ० ४।

अतः **चन्दायनकी** भाषाको अवधके सीमित प्रदेशमें ही बोली और समझी जानेवाली भाषा **अवधीका** नाम नहीं दिया जा सकता। **चन्दायनमें** प्रयुक्त भाषा निसन्देह ऐसी भाषाका स्वरूप है, जिसका देशमें काफी विस्तार और विकास रहा होगा।[1]

यही बातें **मिरगावतीकी** भाषाके सम्बन्धमें भी दुहरायी जा सकती हैं। किन्तु न जाने क्यों कर **माताप्रसाद गुप्तने** कल्पना कर ली है कि हमने इन पंक्तियोंमें **चन्दायनकी** भाषाको दिल्लीकी भाषा कहनेकी धृष्टताकी है।[2] ऐसा कहनेकी धृष्टता कदाचित् कोई मूर्ख ही करेगा। यदि **माताप्रसाद गुप्तने** तनिक धैर्यके साथ उपर्युक्त अवतरणपर ध्यान दिया होता तो उन्हें न तो ऐसी कल्पनाकी आवश्यकता होती और न हमें यहाँ अपनी बातको विस्तारके साथ दुहरानेकी।

मध्यकालीन दिल्लीका निवासी दिल्लीकी अपनी ही बोली या भाषा समझता रहा होगा, अन्य भाषा उसके लिए कुरानकी भाषाके समान रही होगी, ऐसा **माताप्रसाद गुप्त** किस प्रमाण और तर्कसे मानते हैं, यह तो वही बता सकते हैं। जहाँतक सामान्य बुद्धिकी बात है, जन-साधारण किसी दूसरी भाषाको, यदि वह विस्तृत प्रदेशमें प्रचलित है तो, अपनी स्थानीय बोली या भाषाके होते हुए भी समझ तो लेती ही है, बोल भले ही न सके। इस बातको हम हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओंकी आजको स्थितिको सामने रखकर आसानीसे समझ सकते हैं। ऐसी अवस्थामें हमारे कथनसे यह कहाँ ध्वनित होता है कि **चन्दायनकी** भाषा दिल्लीकी भाषा है? हमारे कहनेका तात्पर्य इतना ही रहा है कि **चन्दायनमें** प्रयुक्त भाषा, ऐसी भाषाका स्वरूप है जिसका देशमें काफी विस्तार और विकास रहा होगा और वह दिल्लीकी राजसभासे लेकर जन-साधारणमें समझी जाती अथवा जा सकती थी। दूसरे शब्दोंमें वह ऐसी भाषा है जिसे भारतीय इतिहासपर सम्यक् दृष्टि रखनेवाला देश-भाषा ही कहेगा, किसी अकेले एक प्रदेशमें बोली जानेवाली भाषा नहीं। **अब्दुर्कादिर बदायूनीने चन्दायनकी** भाषाको हिन्दवी कहकर यही भाव व्यक्त किया है।

माताप्रसाद गुप्तने इस सम्बन्धमें जो कुछ कहा है उससे यह भी ध्वनित होता है कि तत्कालीन शासक और राजदरबारी फारसीके अतिरिक्त और कुछ जानते ही न थे। उन्हें कदाचित् यह याद दिलाना अनुचित न होगा कि मुगल सम्राटोंमेंसे अनेककी हिन्दी रचनाएँ उपलब्ध हैं। वे स्वयं इस बातके प्रमाण हैं कि फारसीके अतिरिक्त उन्हें अन्य भाषाका भी परिचय था। मुगल शासकोंसे पूर्वके शासकोंके राजदरबारमें ही नहीं हरमतक हिन्दी पहुँच चुकी थी, यह तत्कालीन इतिहासकारोंके लेखोंमें एक नहीं अनेक स्थलोंमें लिखा मिलेगा। जिस प्रकारकी तद्भव प्रचुर हिन्दी में **मौलाना दाऊद** या तत्प्रभृत कवियोंने रचनाएँ की हैं, उस हिन्दीको मुसलमान शासक कदापि न समझते रहे होंगे, ऐसा **माताप्रसाद गुप्तका** विश्वास सा जान पड़ता है। इस सम्बन्धमें अपनी ओर से कुछ न कहकर जहाँगीरकालीन इतिहासकार **मुहम्मद कबीरने** अपने **अफसाना-**

---

१. चन्दायन, पृ० ३२।

२. भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ८७-८८।

ए-बादशाहानमें **मधुमालती**के रचयिता **मंझन**के आश्रयदाता इसलाम शाहके सम्बन्धमें जो कुछ कहा है, उसे ही उधृत करना पर्याप्त होगा।

इसलाम शाहके चरित्रका उल्लेख करते हुए **मुहम्मद कबीर**ने लिखा है कि—

उसके (इसलाम शाहके) साथ धर्माचार्य (उलमा), विद्वान् (फुजलः) और कवि (शुअरा) रहा करते थे। जिस जगह वह खुद रहते थे, उसके इर्दगिर्द ही उनके भी शामियाने (कोशख) खड़े किये जाते थे। और उन सबमें पान, सुगन्धि आदिकी व्यवस्था रहती थी। उनमें **मधुमालती**के रचयिता **मीर सैयद मंझन, शाह मुहम्मद फरमूली,** उनके छोटे भाई **मूसन** और **सूरदास** प्रभृति विद्वान् रहा करते थे। और उनमें अरबी, फारसी और **हिन्दवी**की कविताएँ पढ़ी जातीं। इसलाम शाहने कह रखा था कि जब मैं वहाँ आऊँ तो कोई मेरी अभ्यर्थना (ताजीम)के लिए न उठे। जो जैसे बैठा हो बैठा रहे, यदि लेटा हो तो लेटा रहे। इस प्रकार बेतकल्लुफीके साथ आनन्द उठाया जाय।[1]

उपर्युक्त अवतरणमें **मंझन, मूसन** और **सूरदास** तीन नाम ऐसे हैं जो निसन्देह हिन्दीके कवि थे। **मंझन**की **मधुमालती**से हिन्दी संसार परिचित ही है। **मूसन**की रचनाएँ भी अभी हालमें प्रकाशमें आयी हैं। वे कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी विद्यापीठ (आगरा विश्वविद्यालय)के **उदयशंकर शास्त्री**को प्राप्त हुई हैं।[2] **सूरदास** निश्चय ही **सूरसागर**के रचयिता न होकर कोई दूसरे **सूरदास** होंगे। उनके सम्बन्धमें जानकारी अपेक्षित है फिर भी इतना तो अनुमान किया जा ही सकता है कि वे अरबी-फारसीके कवि न रहे होंगे। ये कवि जिस **हिन्दवी**में कविता-पाठ करते रहे होंगे उसका अनुमान **मधुमालती**की भाषासे किया जा सकता है। यदि इसलाम शाह **मंझन**की भाषा समझ सकते थे तो कोई कारण नहीं कि जौनाशाह **मौलाना दाऊद**के **चन्दायन**की भाषा न समझते रहे हों। इस बातमें सन्देह करनेकी कोई गुंजाइश ही नहीं है कि इन मुसलमान कवियोंने जिस भाषाका प्रयोग किया है वह दिल्लीके शासकों और उनके दरबारियोंमें समझी जाती थी।

---

१. दर ऐश व जश्न नशतन्द। वह हमः वक्त उलमा व फुजलः व शुअरः हमराह मी बूदन्द। व दरजाए कि खुद मी बूदन्द गिर्द ब गिर्दआँ कोशखः बरपा साख्तः बूदन्द व दराँ कोशखः पान व गालिया हर किस्म निहादा बूदन्द। व आँजा बमिस्ल मीर सैयद मंझन मुसन्निफ मधुमालती व शाह मुहम्मद फरमूली, व मूसन बिरादरे खुर्द शाह मुहम्मद व सूरदास वगैरह उलमा व फुजलः व शुअरः दराँ कोशखः मी बूदन्द। व शेरे अरबी व पारसी व हिन्दवी मी गुफ्तन्द। इसलाम शाह फरमूद कि चूँ मनइजा बेयायम कसे अज शुमायानताजिमे मन न खाहेद कर। अगर कसे निशस्त; बाशद उ हम चुना निशस्तः बाशद व अगर खुस्पीदा बाशद हम चुना बाशद। (ब्रिटिश संग्रहालयकी हस्तलिखित प्रति। इस प्रतिकी एक फोटो-स्टाट प्रति काशीप्रसाद जायसवाल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पटनामें उपलब्ध है।)।

२. सैयद हसन अकसरीसे यह बात ज्ञात हुई है।

उपर्युक्त अवतरणसे अयाचित् ढंगसे हिन्दी जगतके सम्मुख यह बात भी पहली बार आ रही है कि **मधुमालती**के रचयिताका नाम **मीर सैयद मंझन** था। अबतक हम उन्हें **शेख मंझन** समझते रहे वह गलत है। नामके साथ **मीर**का प्रयोग इस बातका संकेत करता है कि वे कोरे कवि न थे, शासनमें एक अधिकारी, सम्भवतः न्यायाधीश भी थे। **अफसाना-ए-बादशाहान**में, जिस ग्रन्थसे यह अवतरण उद्धृत है, अनेक प्रसंगोंमें **मीर सैयद मंझन राजगिरी**का उल्लेख हुआ है, जिससे अनुमान होता है कि **मंझन** राजगृहके निवासी थे। यदि यह अनुमान ठीक है तो कहना होगा कि जिस भाषामें **मधुमालती** लिखी गयी है, उसे न केवल दिल्लीके लोग समझते थे, वरन् उससे अवधके बाहर बहुत दूर पूर्वके निवासी भी परिचित थे और निरायास उस भाषामें रचना कर सकते थे।[1]

ये तथ्य हमारे कथनका समर्थन ही नहीं करते, वरन् उसे पुष्ट भी करते हैं। हमने जो कुछ कहा है, बहुत कुछ वही बात, दबी जबानसे, भाषाको अवधी नाम देनेवाले कुछ लोग भी कहते हैं। **मिरगावती**की भूमिकामें **शिवगोपाल मिश्र**ने कहा है—**अवधीके विकास कालमें जौनपुरसे दिल्लीतक (ईश्वरदासकी रचनामें बादशाह सिकन्दर शाहका वर्णन है) की भाषामें एकरूपता थी। अभीतक कुतबन अथवा ईश्वरदासके निवास स्थानोंका ठीकसे पता नहीं चल पाया किन्तु जायसी तथा शेख निसारके जन्मस्थान क्रमशः जायस तथा शेखपुर (फैजाबादके पास) सिद्ध हो चुके हैं। यदि इन सबकी भाषाओंका तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो पता चलेगा कि सबोंने समान रूपसे एक ही भाषाका प्रयोग किया है जो अत्यन्त ठेठ शब्दोंको प्रश्रय देती है। इस प्रकार पूर्वमें गाजीपुर तथा जौनपुरसे पश्चिममें दिल्ली, उत्तरमें पूरा अवध प्रान्त तथा दक्षिणमें मध्य-प्रदेशतकमें अवधीका यही रूप बोला और समझा जाता था। यही अवधी उस कालकी जनताकी भाषा थी।**[2] इस प्रकार **शिवगोपाल मिश्र** भी स्वीकार करते हैं कि यह भाषा अवधकी सीमामें ही सीमित न थी और तत्कालीन जनताकी भाषा थी।

हमारी बातोंका समर्थन **विश्वनाथ प्रसाद**ने स्वसम्पादित **चन्दायन**की प्रस्तावनामें इन शब्दोंमें किया है—**चन्दायनकी भाषा हिन्दीके विकासका वह प्रारम्भिक रूप है, जिसमें उसके किसी एक स्थानीय स्वरूपको लेकर और उसमें अन्यान्य कई बोलियोंके प्रचलित प्रयोगोंका मिश्रण करके उसे अधिक व्यापक बनानेकी प्रवृत्ति पायी जाती है। भाषाका एक सर्व जन-सुलभ और सुबोध रूप खड़ा करनेके लिए इसमें विभिन्न भाषा क्षेत्रोंमें प्रचलित रूपोंके मिश्रणका कुछ ऐसा ही आदर्श अपनाया**

---

१. कुतुबनने तिथि गणनाकी जो दाक्षिणात्य पद्धति अपनायी है, उसके आधारपर हमारी धारणा है कि वे दाक्षिणात्य थे अथवा दक्षिणसे उनका निकटका सम्बन्ध है। यदि हमारी धारणा ठीक है तो यह भी कहा जा सकता है कि सुदूर दक्षिणके लोगोंके लिए भी यह भाषा अपरिचित नहीं थी।

२. कुतुबन कृत मृगावती, भूमिका, पृ० ३५।

गया है, जैसा कि कबीर आदि सन्त कवियोंकी परम्परामें हमें मिलता है। क्योंकि उनका भी उद्देश्य अपने सिद्धान्तोंको अधिक-से-अधिक लोगोंको हृदयंगम कराना था।[1]

मिरगावतीकी भाषाके सम्बन्धमें **कुतुबन**ने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है—

शास्त्री आखर बहु आये।
औ देसी चुनि चुनि सब लाये॥१३।४
खट भाका जो इंहहिं बाँचा।
पण्डित बिनु पूछत हो साँचा॥४३१।४

इस प्रकार **कुतुबन**ने अपनी भाषाके सम्बन्धमें स्पष्ट कहा है कि तत्सम **शब्दों** (**शास्त्री आखर**—संस्कृत)के साथ-साथ देशी शब्दोंका प्रयोग उन्होंने किया है। इस प्रकार उनकी भाषा अनेक भाषाओंका मिश्रण है। यदि **मिरगावती**को भाषाके साथ **चन्दायन, पदमावत** और **मधुमालती**की भाषाकी तुलना करके देखा जाय तो ज्ञात होगा कि सबकी भाषा प्रायः एक-सी है, अर्थात् उनकी रचना **मिरगावती**की भाषा (**कुतुबन** के शब्दोंमें मिश्रित भाषा)में हुई है। भाषाओं या बोलियोंके मिश्रणसे बनी भाषा किसी प्रदेश विशेषकी भाषा न हो सकती है और न कही जा सकती है। ऐसी भाषाका प्रयोग सदैव विस्तृत क्षेत्रमें बोलने अथवा समझनेके लिए ही किया जायगा। ऐसी भाषाको सर्वदेशीय या राष्ट्रीय भाषा कहना उचित होगा। इस तथ्यको आजकी हिन्दीको सामने रखकर सरलतासे समझा जा सकता है। हिन्दीके मूलमें भाषाविद् मेरठ प्रदेशमें बोली जानेवाली खड़ी बोलीको मानते हैं; किन्तु आजकी हिन्दी-को, जो सारे देशमें समझी या बोली जाती है अथवा जिसका प्रयोग लेखनमें होता है, कदापि मेरठ प्रदेशके लोक-जीवन में सीमित बोली नहीं कह सकते। उसने अपने मूल स्वरूपको बहुत पीछे छोड़ दिया है।

इसी बातको अत्यन्त सीधे-सादे और सुलझे हुए रूपमें **अबदुर्कादिर बदायूनी**ने **चन्दायन**के और **मुहम्मद कबीर**ने **मंझन** और **मधुमालती** के प्रसंगसे **हिन्दवी** शब्द द्वारा व्यक्त किया है। **कुतुबन**की अपनी तथा पूर्ववर्ती इतिहासकारोंकी जानी-समझी बातकी उपेक्षा कर मुसलमान कवियोंके प्रेमाख्यानक काव्योंकी भाषाको अवधीके रूपमें प्रादेशिक भाषा कहना निराधार दुराग्रहके अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता। जो तथ्य उपलब्ध हैं उनके प्रकाशमें इन काव्योंकी भाषाको हमें व्यापक क्षेत्रमें समझी जानेवाली भाषाके रूपमें देखना चाहिए। **हिन्दवी** नामको ध्यानमें रखते हुए उसे आरम्भिक हिन्दी, मध्यकालीन हिन्दी या उत्तर भारतीय हिन्दी जैसे किसी व्यापक नामसे पुकारना ही समीचीन होगा।

---

१. पृ० १४।

भाषाका स्वरूप

मिरगावती अथवा उसके समान मुसलमान कवियों द्वारा लिखे गये अन्य काव्योंकी भाषाके सम्बन्धमें तर्क करनेकी अपेक्षा उनकी भाषाके स्वरूपका विश्लेषण करना अधिक व्यावहारिक होगा और वह उचित निर्णयपर पहुँचनेमें सहायक होगा। किन्तु यह कार्य अपनेमें काफी विशद है। उसको यहाँ उठाना हमारे लिए अपनी सीमाओंको देखते हुए सम्भव नहीं है। यदि कोई तटस्थ भावसे इन ग्रन्थोंकी भाषाका परीक्षण और विश्लेषण करे तो उसे यह जाननेमें तनिक भी कठिनाई न होगी कि उनकी भाषापर अनेक बोलियों और भाषाओंकी छाप है। उनमें उसे अपभ्रंशके शब्द मिलेंगे; **विद्यापतिकी कीर्तिलतामें** प्रयुक्त विभक्तियों और परसर्गोंकी बहुत बड़ी संख्या दिखायी पड़ेगी; भोजपुरी प्रदेशकी शब्दावली, खड़ीबोलीके प्रयोग प्राप्त होंगे और ज्ञात होगा कि क्रिया-प्रयोग अकेले अवधीके नहीं हैं।

भाषा सम्बन्धी परीक्षणके निमित्त तटस्थ भाव बनाये रखनेके लिए यह बात ध्यानमें रखना आवश्यक है कि इन काव्योंकी जो प्रतियाँ उपलब्ध हैं, उनमें भाषा सम्बन्धी एकरूपता नहीं पायी जाती। उनके नागरी और कैथी प्रतियोंके लिपिकोंने भाषाके साथ अपनी पूरी मनमानी की है। उनके सामने फारसी लिपिके पाठको पढ़नेकी जो कठिनाई रही है उसके कारण अज्ञानसे उत्पन्न पाठ दोष तो हैं ही; जान-बूझकर उनका प्रयास ग्रन्थकी भाषाको अपनी भाषाकी ओर खींचने का भी रहा है। ऐसा कदाचित् उन लोगोंने काव्यकी भाषाको अपनी बोलचालकी भाषाकी दृष्टिसे अटपटी या अजनबी पाकर ही किया है। लोगोंने उनके इस प्रयासको साधारणीकरण या सरलीकरणकी संज्ञा दी है। पाठ-स्वरूपोंकी यह भिन्नता किस सीमातक है, यह **मिरगावतीके** एकडला और बीकानेर प्रतियोंके पाठोंमें आये शब्दोंकी तुलनासे जाना जा सकता है। उदाहरणके लिए इन दोनों प्रतियोंसे कुछ शब्द दिये जा रहे हैं[१]—

एकडला प्रति	बीकानेर प्रति
अगम	बहुत
भोरा	सूधा
मन्दिर	महल
साथ	संग
काह	कवन
अजगुत	अचम्भो
राउ	राजा
साजा	रचावा

१. ये उदाहरण शिवगोपाल मिश्रने अपनी भूमिकामें दिये हैं। हमने इन्हें वहींसे ग्रहण किया है। इसके लिए हम उनके ऋणी हैं।

इसी प्रकार दोनों प्रतियोंमें सर्वनामके प्रयोगोंमें भी भिन्नता देखनेमें आती है। यथा—

एकडला प्रति	बीकानेर प्रति
तोहार	तुम्हार
तोह	तैं, तुम, तो

दोनों प्रतियोंके क्रिया रूपोंमें भी काफी भेद देखनेमें आता है। यथा—

एकडला प्रति	बीकानेर प्रति
लीतिन्ह	लिहिस
दीतिसि	दिहिस
कहेउ	कहउ
बसेउ	बसउ

ये उदाहरण इस बातके प्रमाण हैं कि दोनों प्रतियोंके लिपिकोंने एक दूसरेसे सर्वथा भिन्न शब्द रूपों अथवा भाषाको ग्रहण किया है। इनमें कौन-सा रूप लेखककी भाषाका रूप है, यह सुगमता या सरलतासे नहीं बताया जा सकता। अतः आजका सम्पादक अपने विवेकके अनुसार दो में से किसी एक पाठको स्वीकारकर दूसरेको गलत मानकर अपना सम्पादन कार्य करता है। मूल भाषाका पूरी तरह समाधान प्रति-परम्पराओंपर विचार करनेपर भी नहीं हो पाता।

भाषाके मूल रूपमें सुरक्षित होनेकी सम्भावना फारसी लिपिमें लिखी प्रतियोंमें ही हो सकती है। इसके दो कारण हैं—(१) मूल प्रतियाँ इसी लिपिमें लिखी गयी थीं और आज जो फारसी प्रतियाँ उपलब्ध होती हैं वे नागरी-कैथी प्रतियोंसे अधिक पुरानी हैं। (२) फारसी लिपिमें लिपिकके लिए स्वेच्छा बरतनेकी कम गुंजाइश थी। प्रतिलिपिकारके रूपमें पाठकी कठिनाईका अनुभव करते हुए भी उसे अपनी कल्पनासे नये शब्द गढ़नेका श्रम करनेकी आवश्यकता न थी; उसका काम बिना किसी प्रकारकी माथापच्ची किये ही, जैसा देखा वैसा ही मक्षिका स्थाने मक्षिका नकलकर देना भर था। इन ग्रन्थोंके सम्पादक भी यह बात स्वीकार करते हैं कि फारसी प्रतियाँ नागरी-कैथी प्रतियोंसे कहीं अधिक शुद्ध हैं। फारसी प्रतियोंके आधारपर तैयार किये गये पाठका उपयोग करनेपर ही भाषा सम्बन्धी उहापोहके लिए अपेक्षित तटस्थता सम्भव है।

फारसी प्रतियोंसे पाठ उपस्थित करते समय आवश्यक है कि सम्पादकके सम्मुख अपना किसी प्रकारका पूर्व आग्रह न हो। पूर्व आग्रह रहनेपर पाठका शुद्ध रूपान्तर कदापि सम्भव नहीं है। उसमें वैसी ही भ्रष्टता आ जायगी जैसी कि नागरी-कैथी प्रतियोंमें पायी जाती है। यथा—**माता प्रसाद गुप्त**की दृढ़ धारणा है कि इन काव्योंकी भाषा ठेठ अवधी है। अपनी इस धारणाको लेकर ही उन्होंने **पदमावत**का सम्पादन किया है। फलस्वरूप वे फारसी प्रतियोंके पाठोंको तटस्थ भावसे नहीं देख सके हैं। पाठशोध

करते समय उन्होंने उसे सर्वत्र अवधीकी दृष्टिसे देखने और अवधी रूप प्रयोग करनेका प्रयत्न किया है। इस कारण भाषा सम्बन्धी शोधके लिए तटस्थ अनुसन्धित्सु उनके संस्करणपर निर्भर नहीं कर सकता। ऐसी ही बात उनके **मधुमालती**के सम्बन्धमें भी कही जा सकती है।

भाषापर विचार करनेकी दृष्टिसे प्रेमाख्यानोंका कोई भी तटस्थ पाठ अभी सामने नहीं है। **चन्दायन**का हमारा पाठ फारसी प्रतियोंपर ही आधारित है; उसमें हमारा पूर्व-आग्रह भी नहीं है। वह सुगमतासे भाषा-शोधका साधन बनाया जा सकता है; पर हम उसे भी इसके लिए पर्याप्त नहीं समझते। **मिरगावती**का प्रस्तुत संस्करण भी **चन्दायन**की तरह ही फारसी प्रतियोंपर आधारित है। इसके लिए जिन दो प्रतियोंका उपयोग किया गया है, वे दोनों ही—दिल्ली और मनेरशरीफ प्रतियाँ—पाठकी दृष्टिसे प्रायः एक समान हैं। उनमें पाठका अन्तर नाम मात्र है। अतः उनके आधारपर जो पाठ प्रस्तुत किया गया है, वह मूलके अत्यन्त निकट है, यह हमारा विश्वास है। यह भाषा-शोधकी दृष्टिसे अधिक उपयोगी हो सकता है, ऐसी हम आशा करते हैं।

छन्द-योजना

मिरगावतीमें आदिसे अन्ततक एक ही छन्द-व्यवस्था है। उसमें सात-सात पंक्तियोंका काव्यांश है। प्रत्येक काव्यांशमें दो प्रकारके छन्दोंका प्रयोग है। आरम्भकी पाँच पंक्तियाँ एक छन्दमें हैं और शेष दो दूसरे छन्दमें। यही छन्द-व्यवस्था पूर्ववर्ती काव्य **चन्दायन**में भी है। परवर्ती काव्य **मधुमालती**में **मंझन**ने भी इसी छन्द-व्यवस्थाको अपनाया है। **जायसी**ने भी **पदमावत**में इसी व्यवस्थाको स्वीकार किया है किन्तु उसके काव्यांश नौ पंक्तियोंके हैं और पाँचके स्थानपर सात पंक्तियाँ एक छन्दमें, शेष दो दूसरे छन्दमें हैं। छन्द-योजनाकी इस परम्पराको प्रेमाख्यानक काव्योंमें तो अपनाया ही गया है, **तुलसीदास**ने भी **रामचरितमानस**में ग्रहण किया है।

इन काव्योंमें प्रयुक्त छन्दोंके सम्बन्धमें लोगोंकी सामान्यतः धारणा है कि वे चौपाई और दोहे हैं। और इसी धारणाके आधार पर लोगोंने उनके सम्बन्धमें अपने-अपने विचार प्रकट किये हैं। किन्तु किसीने भी यह बतानेकी आवश्यकता नहीं समझी कि चौपाई और दोहोंसे युक्त काव्यांशोंकी यह परम्परा कब और कहाँसे आरम्भ हुई। उनकी बातोंसे ऐसा झलकता है कि यह छन्द-योजना हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंका ही निजस्व है।

इस प्रकारकी छन्द-योजना अकस्मात् हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके साथ उद्भूत हुई हो, वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। उसकी अपनी प्राचीन परम्परा है जो अपभ्रंश काव्योंमें सुगमताके साथ देखी जा सकती है। वहाँ ये काव्यांश 'कड़वक' नामसे पुकारे गये हैं और अपभ्रंशके पिंगल ग्रन्थोंमें उनकी विस्तृत विवेचना है। हमने इसकी ओर **चन्दायन**में ध्यान आकृष्ट करनेकी चेष्टा की है। उसकी ओर विद्वानोंका ध्यान अधिकाधिक जाना चाहिए। इस दृष्टिसे इस बातको यहाँ दुहराना अनुचित न होगा।

स्वयंभूके कथनानुसार प्रत्येक कड़वकमें आठ यमक और अन्तमें एक घत्ता होता है, जिसे ध्रुवा, ध्रुवक अथवा छड़निका भी कहते हैं। प्रत्येक यमक में १६–१६ मात्राओंवाले दो पद होते हैं। किन्तु सोलह मात्राओं वाले पदोंकी बात केवल सिद्धान्त रूप है। अपभ्रंशके कवियोंने १६ मात्रा वाले पदोंके अतिरिक्त पन्द्रह मात्राओंवाले पदोंका यमकमें प्रयोग प्रचुर मात्रामें किया है। अतः कड़वकोंमें प्रयुक्त यमक साधारणतः तीन रूपोंमें पाये जाते हैं—

१. पद्धडिका—सोलह मात्राओंका पद। इसमें अन्तिम चार मात्राओंका रूप लघु गुरु लघु (जगण) होता है।

२. वदनक—सोलह मात्राओंका पद। इसमें अन्तिम चार मात्राएँ गुरु लघु लघु (भगण) होती हैं। कहीं-कहीं यह दो गुरु रूपमे भी पाया जाता है।

३. पारणक—पन्द्रह मात्राओंका पद। इसमें अन्तिम तीन मात्राएँ लघु होती हैं। कहीं-कहीं लघु गुरु रूप भी मिलता है।

आठ यमकोंवाली बात भी केवल सिद्धान्त रूप है। अपभ्रंशके जो काव्य आज उपलब्ध हैं, उनके कड़वकोंमे ६ से लेकर २०–२५ तक यमक पाये जाते हैं। वे इस बातके द्योतक हैं कि आठ यमकोंवाला नियम कभी भी कठोरताके साथ पालन नहीं किया गया।

घत्ताके द्विपदी, चतुष्पदी अथवा षट्पदी होनेका विधान है; पर अधिकांशतः घत्ता चतुष्पदी ही पाये जाते है। घत्ताके पद सात मात्राओंसे लेकर सत्तरह मात्राओं-वाले बताये गये हैं। पदोंकी व्यवस्थाके अनुसार घत्ताके तीन रूप कहे गये हैं:

१. सर्वसम—इस घत्तामें चारों पदोंकी मात्राएँ समान होती हैं। मात्राओंकी संख्याके अनुसार सर्वसम घत्ताके नौ रूप होते हैं।

२. अर्धसम—इस प्रकारके घत्तामें प्रथम दो पदोंकी मात्राएँ एक समान और अन्तिम दो पदोंकी मात्राएँ पहले दो पदोंसे भिन्न किन्तु परस्पर समान होती हैं। मात्राओंकी गणनाके अनुसार अर्धसम घत्ताके ११० रूप कहे गये हैं।

३. अन्तरसम—इस प्रकारके घत्तामें प्रथम और तृतीय पदोंकी और द्वितीय और चतुर्थ पदोंकी मात्राएँ समान होती हैं और वह प्रसादबद्ध होता है। मात्राओंके भेदसे इसके भी ११० भेद बताये गये हैं।

यदि उपर्युक्त तथ्यके प्रकाशमें हिन्दीके प्रेमाख्यानक काव्योंको ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यह बात प्रत्यक्ष सामने आती है कि इनके रचयिताओंके सामने कभी भी १६ मात्राओंकी चौपाई और २३ मात्राओंके दोहेका आदर्श नहीं रहा। जिन लोगोंने चौपाई और दोहोंको इन काव्योंका छन्द समझा है, उन्हें उनका समाधान करनेमें सदैव कठिनाई रही है। इन काव्योंके छन्दोंमें चौपाई और दोहोंकी मात्राओंसे न्यून या अधिक मात्राएँ निरन्तर पायी जाती हैं। ये इस बातके स्पष्ट संकेत हैं कि उनकी रचना अनिवार्य रूपसे चौपाई और दोहेमें नहीं हुई है। यदि कड़वकके सम्बन्धमें कही गयी उपर्युक्त बातोंपर ध्यान दिया जाय तो इसका अपने आप सन्तोष-

जनक समाधान हो जाता है। इन सब काव्योंकी रचना अपभ्रंश के कड़वक पद्धतिपर हुई है और उनके रचयिताओंने यमक और घत्ताके लिए विभिन्न मात्राओंवाले छन्दोंका स्वतन्त्रताके साथ यथेच्छा उपयोग किया है। **चन्दायन**के परिचयमें हमने यथेष्ठ उदाहरण दिये हैं जिनसे प्रकट होता है कि उसके यमक चौपाईतक ही सीमित नहीं हैं और घत्तेके रूपमें दोहोंकी संख्या इनी-गिनी ही है।

जहाँतक **मिरगावती**की बात है, **कुतुबन**ने तो स्पष्ट शब्दोंमें कह भी दिया है कि उन्होंने चौपाई और दोहेके अतिरिक्त अन्य छन्दोंका भी प्रयोग किया है। उनके शब्द हैं—

गाथा दोहा अरिला रचा।
सोरठा चौपाइन्ह कै सजा॥ १३।३

उन्होंने यहाँ पाँच छन्दोंके नाम लिये हैं। इनमें दो—चौपाई और अरिल्लका यमकके रूपमें और तीन—गाथा, दोहा और सोरठाका घत्ताके रूपमें ही प्रयोग सम्भव है।

चौपाई और अरिल्ल दोनों ही १६ मात्राओंवाले छन्द हैं। चौपाईके सम्बन्धमें विधान है कि उसके पदोंकी अन्तिम मात्राएँ जगण (लघु, गुरु, लघु) होनी चाहिए। इस प्रकार यह अपभ्रंश पिंगलका पद्धडिका छन्द है। इसमें तगण (गुरु, गुरु, लघु) का निषेध भी बताया गया है। अरिल्लमें अन्तिम मात्राओंके यगण (लघु, गुरु, गुरु) होनेका विधान है। इस दृष्टिसे **मिरगावती**के यमकोंका परीक्षण करनेपर ज्ञात होता है कि **कुतुबन**ने चौपाइयोंकी अपेक्षा अरिल्लका उपयोग अधिक किया है। किन्तु उनके सभी यमक १६ मात्राओंवाले नहीं हैं। यत्र-तत्र १५ मात्राओंवाले यमक भी देखनेको मिलते हैं। यथा—

एक बात अब कहउँ रसाल।
रतन मोंति आनों भरि बाल॥ ५१।१
बेगर बेगर सउजहिं साथ।
सारि क बान फोंक ले हाथ॥ २१।१
हरियर बिरिख दीख एक महा।
मानसरोदक तिह तर बहा॥ २३।३
कुँवर संगति कुरंगिनी डरी।
मानसरोदक भीतर परी॥ २३।४
बिखम भुअंगम बेनी भये।
मारग वहे सीस केर गहे॥ ६८।५

इनके अतिरिक्त **मिरगावती**में यत्र-तत्र ऐसे भी यमक हैं जिनमें दोनों पदोंकी मात्राएँ समान नहीं हैं, या उनमें १५ से कम या १६ से अधिक मात्राएँ हैं। ऐसी पंक्तियोंको पाठ दोष कहकर टाला नहीं जा सकता क्योंकि उनमें किसी प्रकारकी कमी या आधिक्य परिलक्षित नहीं होता। इस प्रकारके कुछ उदाहरण हैं—

राजकुँवर फुान बेगर पड़ा। (१५ मात्राएँ)
निरखसि साउज जे र जिय घिरा ॥ (१६ मात्राएँ) २१।२

राउ अकेल मिरिगि है जहाँ। (१५ मात्राएँ)
तीसर अउर न अहै तहाँ ॥ (१४ मात्राएँ) २३।१

तेहि मँह मिरिगी छपानेउ आई। (१९ मात्राएँ)
बहुरि न निकसा गयउ हिराई ॥ (१६ मात्राएँ) २३।५

ढूँढ़े लाग न पायसु चाहा। (१६ मात्राएँ)
बिसरा सबै जो मन मँह आहा ॥ (१७ मात्राएँ) २४।२

सुधि बिसरी बुधि गई हेरानी। (१७ मात्राएँ)
चित मँह गड़ी सो पिरम कहानी ॥ (१७ मात्राएँ) २४।३

खिन खिन पेम अधिक चित चढ़ा। (१५ मात्राएँ)
दुइज चँदरमाँ जनु गहन सो कढ़ा ॥ (१८ मात्राएँ) २४।५

खटरितु देखत अइस गयी। (१४ मात्राएँ)
बहु उपकार कथा बहु भयी ॥ (१५ मात्राएँ) ४५।३

कुतुबनने घत्ताके लिए तीन छन्दों--गाथा, दोहा और सोरठाका नाम लिया है। ये तीनों ही छन्द चतुष्पदी हैं। गाथा प्राकृत और अपभ्रंशका छन्द है। इसके प्रथम चरणमें १२, दूसरेमें १८, तीसरेमें १२ और चौथेमें १५ मात्राएँ होती हैं। इस प्रकार यह विषम छन्द है। दोहा और सोरठा दोनों ही हिन्दीके बहु प्रचलित छन्द हैं। दोहेमें क्रमशः १३, ११। १३, ११ और सोरठामें ११, १३। ११, १३ मात्राएँ होती हैं। इस प्रकार ये अर्धसम घत्ताके छन्द हैं। दोहेमें दूसरे और चौथे पदोंके तुक परस्पर मिलते हैं, सारठेमें प्रथम और तृतीय पदों के। दोहेके अन्तमें लघु आवश्यक है।

मिरगावतीके घत्तोंके परीक्षणसे ज्ञात होता है कि निम्नलिखित एक घत्तेको छोड़कर सभी घत्ते तुकान्त हैं—

पदम पत्र बिसाल अछै, गजकुम्भ पयोहरी।
हिरदे बसत मोतिह, साखा बिलोचन यथा ॥ २४०

इस घत्तेके पदोंकी मात्राएँ क्रमशः १३, ११; ११, १२ हैं; इसके किसी पदमें तुक नहीं है। इस प्रकार सोरठेके लक्षणोंका इसमें सर्वथा अभाव है। इस प्रकार कुतुबनके कथनके बावजूद मिरगावतीमें एक भी सोरठा नहीं है। इसी प्रकार आरम्भिक १०० घत्तोंका परीक्षण करनेपर उनमें हमें एक भी घत्ता दोहेके लक्षणोंसे युक्त नहीं मिला। हाँ, कुछ घत्ते ऐसे अवश्य हैं, जिनके प्रथम दो पदोंमें १३ और ११ मात्राएँ हैं, पर उनके तीसरे चौथे पद दोहेके लक्षणकी पूर्ति नहीं करते। ऐसे घत्तोंके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

मात्राएँ	कड़वक
१३,११ । १५,११	४, १२
१३,११ । १६,११	२१, ५५
१३,११ । १७,११	४३
१३,११ । १६,१२	९६
१३,११ । १३,१२	९०
१३,११ । ११,१०	५४

गाथाके लक्षणोंकी पूर्ति करनेवाले अर्थात् १२, १८, १३, १५ मात्राओंवाले घत्ता भी **मिरगावतीमें** एक भी नहीं मिले। हाँ, कुछ घत्तोंको छोड़कर प्रायः सभी घत्ते विषमपदीय हैं। वे निम्नलिखित रूपोंमें मिलते हैं—

मात्राएँ	कड़वक	मात्राएँ	कड़वक
११,११ । १५,११	७५	११,१२ । ११,१३	९४
११,१३ । १६,११	९४	११,१६ । १६,११	१०
१२, ८ । १३,१३	६६	१२,११ । १२,१०	६१,७०
१२,११ । १४,११	६५	१२,११ । १६,११	२८,२९,४८
१२,११ । १७,११	५१	१२,१४ । १३,१४	७८
१२,१५ । १२,१२	६९	१२,१५ । १३,१५	४१
१२,१५ । १६,११	४९	१२,१६ । ९,१०	४६
१२,१६ । १४,१०	५४	१३,१० । १५,११	२५
१३,१२ । १२,११	८०	१३,१३ । १३,११	५९
१३,१५ । १२,१५	२३	१३,१५ । १३,१०	४२
१४, ८ । १४,१२	८५	१४,११ । १०,१०	६३
१४,१६ । १४,११	१३	१५,११ । ११,११	८८
१५,११ । १२,१२	५६	१५,११ । १६,११	१४,४४,९२
१५,११ । १७,११	३९	१५,१२ । १३,१२	५०
१५,१२ । १६,१२	२७	१६, ९ । १२,१४	९१
१६, ९ । १६,११	६७	१६,१० । १६,११	९९
१६,१६ । १६,१२	७१	१६,११ । १२,११	९८
१६,११ । १३,११	७३,९५	१६,११ । १३,१३	६
१६,११ । १४,११	११,५३	१६,११ । १४,१५	६२
१६,११ । १५,१०	५७	१६,११ । १५,११	१५,३२,३३
१६,११ । १६,१०	३१,९७		६८,७६,७९
१६,११ । १६,१२	५,४७	१६,११ । १७,११	१८,८७
१६,१२ । १२,१५	८६	१६,१२ । १३,१३	१००

मात्राएँ	कड़वक	मात्राएँ	कड़वक
१६,१२ । १६,११	२२,२६,३८	१६,१२ । १६,१३	८३
१६,१२ । १८,११	३६	१६,१३ । १६,११	५२
१७,११ । १३,१४	६०	१७,११ । १५,११	८
१७,११ । १६,११	१९,२०,३०,	१७,१२ । १३,११	९
	४५	१७,१२ । १५,११	७
१७,१२ । १७,१०	८४	१७,१४ । १३,१६	८२
१७,१५ । १८,१२	१६	१८,११ । १७,११	६४

घत्तोंके इसी प्रकारके कुछ अन्य रूप शेष कड़वकोंके विश्लेषणसे मिलें तो आश्चर्य नहीं। इन रूपों में कुछ पाठ-दोष जनित हो सकते हैं किन्तु सबको पाठ-दोष जनित कहकर टाला नहीं जा सकता। घत्ताके इन रूपोंपर विचार करना ही होगा। **चन्दायनका** सम्पादन करते समय हमें उसमें भी ऐसे घत्ते मिले थे जिनके चारों पदोंकी मात्राओंमें भिन्नता है। ऐसा एक घत्ता हमने उसके परिचयमें उधृत भी किया है। वहाँ इस ढंगके घत्ते अपवाद स्वरूप हैं; यहाँ उनका बाहुल्य है। हो सकता है **कुतुबनने** इन विषम मात्राओंवाले घत्तोंके लिए ही गाथा शब्दका व्यवहार किया हो।

यदि उनकी बातोंसे हटकर घत्तोंका विश्लेषण किया जाय तो यत्र-तत्र अर्ध-सम अथवा अन्तर-सम घत्ते देखनेको मिल जाते हैं। प्रथम सौ घत्तोंमें केवल एक घत्ता अर्ध-सम है। उसकी मात्राएँ हैं—१४, १४ । ११, ११ (कड़वक ९३)। अन्तरसम घत्ताके दो रूप अबतक हम ढूँढ़ पाये हैं। वे हैं—

१२, ११। १२, ११ कड़वक ३५
१६, ११। १६, ११ कड़वक २४, ४०, ७२, ७४, ७७, ८१, ८९।

छन्दोंके सम्बन्धमें इस प्रकारकी जो स्वच्छन्दता **मिरगावतीमें** देखनेमें आती है वह आश्चर्यजनक है। उन्हें देखकर यही लगता है कि **कुतुबनने** यद्यपि कतिपय छन्दोंके प्रयोगकी बात कही है, उन्हें छन्द-शास्त्रके नियमोंमें बँधकर चलना अभीष्ट न था।

काव्य-स्वरूप

मिरगावतीका आरम्भ ईश्वरकी स्तुतिसे होता है। ईश्वरकी स्तुतिके बाद क्रमशः पैगम्बरकी वन्दना, चार यारोंका उल्लेख, गुरुकी स्तुति, शाहे-वक्तकी प्रशंसा और रचनाका परिचय है। तदनन्तर कथाका आरम्भ होता है। **मौलाना दाऊद** रचित पूर्ववर्ती प्रेमाख्यानक काव्य **चन्दायनका** भी ठीक यही स्वरूप है। उसमें भी आरम्भमें ईश्वर स्तुति, पैगम्बरकी वन्दना, चार यारोंका उल्लेख, शाहे-वक्तकी प्रशंसा, गुरु-स्तुति, आश्रयदाताका परिचय और ग्रन्थ परिचय है। परवर्ती **मलिक मुहम्मद जायसी** रचित **पदमावत** और **मंझन** कृत **मधुमालतीके** भी आरम्भमें ये सभी बातें लगभग इसी क्रमसे पायी जाती हैं। यों कहना चाहिये कि मुसलमान कवियोंके प्रेमाख्यानक

काव्योंका जो यह स्वरूप **चन्दायनसे** आरम्भ हुआ वह अन्ततक कायम रहा। सभीने उसे आदर्श स्वरूप ग्रहण किया।

फारसी मसनवियोंमें भी आरम्भमें अल्लाह (ईश्वर) और रसूलकी वन्दना, मेराजका उल्लेख, समसामयिक शासक अथवा किसी अन्य महापुरुषकी प्रशंसा पायी जाती है; तदनन्तर रचनाके उद्देश्यपर प्रकाश डालते हुए कवि मूल विषयपर आता है, हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यों और फारसी मसनवियोंके स्वरूपमें जो यह समानता दिखाई देती है, उसे देखकर **रामचन्द्र शुक्लने** अपना अभिमत प्रकट किया था कि—**इनकी** (हिन्दी प्रेमाख्यानोंकी) **रचना भारतीय चरित काव्योंकी सर्गबद्ध शैलीपर न होकर फारसी मसनवियोंके ढंगपर हुई है, जिसमें कथा सर्गों या अध्यायोंमें विस्तारके हिसाबसे विभक्त नहीं होतीं, बराबर चलती हैं, केवल स्थान-स्थानपर घटनाओं या प्रसंगोंका उल्लेख शीर्षक रूपमें रहता है।** उनके इस मतको बिना किसी उहापोहके सत्य और प्रमाण मान लिया गया है; और इन प्रेमाख्यानोंपर लिखनेवाले विद्वानों और अनुसन्धित्सुओं द्वारा ये वाक्य प्रायः आँख मूँदकर दुहरा दिये जाते हैं।

वस्तुतः मसनवी फारसी साहित्यके किसी काव्य-शैलीका नाम नहीं है, वह काव्य-रूप मात्र है। इसमें रमले-मुसम्मने-महधूम कहा जानेवाला छन्द प्रयुक्त होता है, जिसमें बैत (पद) फायलातुनके वजनपर होता है। फायलातुनको छ बार दुहराते हैं; प्रत्येक मिसरेके अन्तमें फायलातका वजन होता है। दो मिसरोंके तुक परस्पर मिलते हैं।[१] इसमें केवल आख्यान या लम्बे क्रमबद्ध काव्य ही नहीं, अन्य प्रकारकी भी रचनाएँ हुई हैं। इस देशमें भी बाबर, हुमायूँ, अकबरके समयमें मसनवी छन्द विशेष ही माना-समझा जाता था। **फरिश्ताने** अपने इतिहासके प्रथम खण्डमें हुमायूँका एक पत्र उधृत किया है जो इसी छन्दमें है। उसे उसने अपनी कन्दहार विजयोपरान्त बैरम खाँको लिखा था और विजयके आनन्दका वर्णन किया है। अकबरके लिखे मसनवी छन्दोंके कुछ नमूने रामपुरके पुस्तकालयमें सुरक्षित हैं। उनमेंसे दोको **अब्दुल गनीने** अपनी पुस्तकमें उद्धृत किया है। एकमें साकीकी प्रशंसा है, दूसरेमें बसन्त ऋतुका वर्णन है।[२]

पुनः हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके प्रसंगमें जिस ढंगसे मसनवीकी चर्चा की जाती है, उससे ऐसा भासित होता है कि वह प्रेम-काव्य है और उसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सूफी मतका प्रचार किया गया है। किन्तु यह धारणा नितान्त भ्रामक है। यदि **अमीर खुसरोकी** मसनवियोंपर ध्यान दिया जाय तो इस भ्रान्तिका स्वतः निराकरण हो जाता है।

मसनवीकी जो लाक्षणिक परिभाषा है उसके अन्तर्गत हिन्दीके प्रेमाख्यान काव्य नहीं आते, यह उपर्युक्त कथनसे स्पष्ट हो जाता है। यदि उन समानताओंपर विचार किया जाय, जिन्हें देखकर हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके फारसी मसनवियोंका

१. ब्राउन, लिटरेरी हिस्ट्री आव परशिया, खण्ड २, पृ० १८–२४।

२. अब्दुल **गनी**, अ हिस्ट्री आव परशियन लैंग्युएज एण्ड लिटरेचर ऐट द मुगल कोर्ट, पृ० २०७-२०८।

अनुकरण होनेका भ्रम होता है तो, जैसा कि हमने चन्दायनका परिचय देते हुए कहा है, स्पष्ट ज्ञात होगा कि ये विशेषताएँ अरबी-फारसी मसनवियोंकी एकमात्र अपनी नहीं हैं। भारतीय काव्य-परम्परा इन बातोंसे बहुत दिनों पहलेसे परिचित रहा है। अरबी-फारसी मसनवियों और हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंकी उपर्युक्त लगभग सभी बातें जैन अपभ्रंश काव्योंमें पायी जाती हैं। प्रायः सभी जैन काव्योंका आरम्भ जिनकी वन्दनासे होता है। किन्हीं-किन्हीं काव्योंमें जिनकी वन्दनाके बाद सरस्वतीकी भी वन्दना होती है। तदनन्दर समकालिक शासकका उल्लेख, कविका आत्म-परिचय, आश्रयदाताकी चर्चा, रचनाका उद्देश्य आदि रहता है। उदाहरणस्वरूप **पुष्पदन्त** कृत **महापुराण**, **स्वयंभू** कृत **पउमचरित**, **श्रीधर** कृत **पासनाह चरिउ**, **लक्खन** कृत **जिणदत्त चरिउ** आदि महाकाव्योंको देखा जा सकता है।

संस्कृत काव्योंकी तरह सर्गबद्ध न होनेके कारण भी हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके सम्बन्धमें धारणा बना ली गयी है कि वे फारसी मसनवियोंके अनुकरणपर रचे गये हैं, जहाँ सर्ग जैसा कोई विभाजन नहीं है। ऐसी धारणा बनाते समय अपभ्रंश काव्यों-को सर्वथा भुला दिया गया है। यदि उन्हें देखा जाय तो ज्ञात होगा कि उसमें सर्गहीन काव्य भरे पड़े हैं।

फारसी मसनवियोंसे समता रखनेवाली हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंकी अन्य जिस विशेषताओंकी ओर लोगोंका ध्यान गया है, वह है उनमें पायी जानेवाली प्रसंगोंकी सुर्खियाँ (शीर्षक)। खुसरो, जामी, फैजी आदिकी मसनवियोंके प्रसंग शीर्षकोंकी तरह **चन्दायन**, **पदमावत** आदि प्रेमाख्यानक काव्योंकी अनेक प्रतियोंमें भी शीर्षक देखने-में आते हैं। पर इस प्रकारके शीर्षक अपभ्रंश काव्योमें भी पाये जाते हैं। जहाँतक **मिरगावती**का सम्बन्ध है, इसकी तीन प्रमुख प्रतियों—दिल्ली, मनेरशरीफ और बीकानेर—में प्रसंग-शीर्षक जैसी कोई वस्तु है ही नहीं। सम्भवतः इस ढंगके शीर्षक काशी और चौखम्भा प्रतिमें भी नहीं हैं। एकडला प्रतिमें कुछ कड़वकोंके ऊपर शीर्षक प्राप्त होते हैं। अकेले इसके आधारपर अनुमान करना कठिन है कि कविकी मूल प्रतिमें इस प्रकारके शीर्षक रहे होंगे। यदि रहे भी हों तो उससे स्थितिमें अन्तर नहीं पड़ता।

फारसी मसनवियोंके साथ हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंका किसी प्रकारका सम्बन्ध जोड़नेसे पूर्व यह भी देखना उचित होगा कि अपने इन बाह्य उपकरणोंके अतिरिक्त, जो उनके अपने निजस्व नहीं हैं और अपभ्रंश काव्योंमें भी समान रूपसे उपलब्ध हैं, आन्तरिक सामग्रीमें वे कितने अभारतीय हैं। जहाँतक छन्द योजनाका सम्बन्ध है, वह पूर्णतः भारतीय है, यह हम ऊपर देख चुके हैं। जहाँतक कथावस्तु और कथा सम्बन्धी अभिप्रायों और रूढ़ियोंका सम्बन्ध है, उनमें भी कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिन्हें अभारतीय कहा जा सके, यह हम आगे देखेंगे।

अतः अन्त और बाह्य दोनों दृष्टियोंसे हिन्दी प्रेमाख्यानोंको फारसी मसनवियों-के साथ नहीं रखा जा सकता। वे सर्वांशमें भारतीय हैं। उनके सम्बन्धमें केवल इतना

ही कहा जा सकता है कि उनके रचयिता एक ऐसे धर्मको माननेवाले थे जिसका विकास भारतके बाहर हुआ था। किन्तु अभारतीय धर्मके माननेवाले होते हुए भी इन कवियोंकी भावनाएँ भारतीय चिन्तन-धारासे अनुप्राणित रही हैं, यह काव्यमें व्यक्त विचारोंसे स्पष्ट है।

कथा-वस्तु

मिरगावतीकी कथाका रूप इस प्रकार है—

१—एक अत्यन्त प्रतापी और धार्मिक राजा था। उसके पास पुत्रके अतिरिक्त सब कुछ था। ईश्वरसे उसने पुत्रकी याचना की और भण्डार खोलकर दान देने लगा। ईश्वरने उसकी प्रार्थना स्वीकार की, उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ पण्डित और ज्योतिषी बुलाये गये। उनसे ग्रह-नक्षत्र देखकर नाम रखनेको कहा गया। तुला राशिकी गणना कर उन्होंने उसका नाम राजकुँवर रखा और बताया कि वह बहुत बड़ा राजा होगा और उसके समान दूसरा कोई न होगा। किन्तु उसे "तिय वियोग कर कछु दुःख होई।" राजाने धाई बुलाकर उसके लालन-पालन करनेकी आज्ञा दी। राजकुँवर एक वर्षमें बोलने लगा। जब वह पाँच वर्षका हुआ तो राजाने पण्डितोंसे उसे सारी विद्याएँ सिखानेको कहा। दस वर्षमें ही वह पण्डित और हेंगुरि खेलनेमें दक्ष हो गया। (कड़वक १५–१९)

२—राजकुँवरको आखेट विशेष प्रिय था। एक दिन वह बहुतसे रावतोंको साथ लेकर जंगलमें आखेट खेलने गया। आखेट खेलते-खेलते वह साथियोंसे अलग हो गया। वहाँ उसे एक सतरंगी मृगी दिखायी पड़ी। वह आश्चर्य चकित रह गया। सोचा—यह आभूषण धारण करनेवाली जन्म-जात मृगी नहीं हो सकती। उसने उसे जीवित पकड़नेका निश्चय किया और उसके पीछे अपना घोड़ा छोड़ दिया। पीछा करते-करते वह सात योजनतक चला गया। तब उसे एक हरे वृक्षके नीचे मानसरोवर दिखायी पड़ा। राजकुँवरके डरसे मृगी उस सरोवरमें कूद पड़ी और अन्तर्धान हो गयी। राजकुँवर भी अपने कपड़े उतारकर सरोवरमें घुस गया और मृगीको ढूँढ़ने लगा। खोजते-खोजते जब वह थक गया और वह न मिली तब वह बाहर निकला और रोने लगा। उसे अपने तन-बदनकी सुधि जाती रही। वह घर-द्वार लोग कुटुम्ब सबको बिसार बैठा। (कड़वक २०–२५)

जब साथियोंको राजकुमार दिखायी न पड़ा तो वे उसे ढूँढ़ने लगे। जो मिलता उससे पूछते जाते। लोगोंने बताया कि वह एक मृगीके पीछे गया है। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे लोग भी वृक्षके नीचे मानसरोवरके पास पहुँचे। वहाँ उन्हें राजकुँवर बैठा दिखायी पड़ा। वे लोग घोड़ेसे उतरकर उसके निकट आये और उससे उसका हाल पूछने लगे। पर उसने उनके प्रश्नोंका कोई उत्तर नहीं दिया। जब उसके साथियोंने उसकी इच्छा-पूर्तिका वचन दिया तो उसने सतरंगी मृगीकी बात कह सुनायी। साथियोंने कहा

ऐसी कोई मृगी नहीं हो सकती। वह इन्द्रकी अप्सरा रही होगी। तुम घर चलो। पर उसने जानेसे इनकार कर दिया। (कड़वक २६–३०)

तब सब चिन्तित हुए और आपसमें परामर्श करने लगे। उन्होंने राजकुँवरको बहुत समझाया पर उसकी समझमें कुछ भी नहीं आया। उसने उनसे मृगीको ढूँढ़नेको कहा। उसके कहनेपर उन लोगोंने सरोवरमें घुस-पैठकर देखा पर वहाँ कुछ भी न था। तब फिर समझाया। पर राजकुँवरकी समझमें कोई बात आयी ही नहीं। निदान उन लोगोंने पत्र लिखकर इसकी सूचना राजाको दी। राजाने सुना; वह बहुत दुःखी हुआ। नगरके सभी लोगोंको लेकर राजकुँवरके पास आया। राजाने राजकुँवरसे जो कुछ उसने देखा था सब बतानेको कहा। राजकुँवर सब बता गया। उसकी बातें सुनकर राजाने कहा यह सब बातें मूर्खताकी हैं। पानीमें मृगी नहीं खोयी। तुमने स्वप्नको प्रत्यक्ष समझ लिया है। घर चलो नहीं तो मैं भी तुम्हारे साथ मर जाऊँगा। राजाने राजकुँवरको हर तरफसे मनाया। (कड़वक ३१-३५)

राजाकी बातें सुनकर राजकुँवरने उससे अनुरोध किया कि मुझे यहीं रहने दें। आपके साथ जानेमें मुझे दुःख ही होगा। मेरा हृदय विदीर्ण हो जायेगा और मैं मर जाऊँगा। मेरी आपसे एक ही प्रार्थना है कि यहाँ एक भवन बनवा दें। राजाने तत्काल भवन बनानेका आदेश दिया और सतखण्डा प्रासाद बनकर तैयार हो गया जिसमें चित्र भी उकेरे गये। उसमें राजकुँवर मृगीका स्मरण करते हुए एक वर्ष रहा। (कड़वक ३६-४५)

एक दिन उसने बवण्डर उठते देखा। फिर उसे इन्द्रकी अप्सराएँ जैसी कोई चीज दिखाई पड़ी और वह देखते ही मूर्च्छित हो गया। फिर वह सँभलकर उठा तो देखा कि वे सब अप्सराएँ सरोवरमें क्रीड़ा कर रही हैं। वे संख्यामें सात थीं और एक ही पिताकी जन्मी-सी जान पड़ती थीं। उन सबका रंग एक-सा था। किन्तु उनमें भी एक अपूर्व थी। वह राजकुँवरके मनमें बस गयी। (कड़वक ४६)

खेलते-खेलते सहेलियोंकी दृष्टि भवनपर गयी और उसे देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। वे सब आपसमें कहने लगीं कि हम यहाँ वर्षमें एक बार आती हैं। पर अभी-तक हमें यहाँ किसी मनुष्यके होनेकी आहट नहीं मिली थी। सो यह क्या है? किसीने कोई प्रपंच तो नहीं रचा है? हम सबको सचेत रहना चाहिए। सो चलो चलें। कहीं कुछ हो गया तो क्या किया जायेगा? उन सबमें जो सबसे अधिक सुन्दरी थी, उसने कहा—भला मनुष्य हमें क्या पायेगा। हम जहाँ चाहें उड़ जायँ। फिर मनुष्य जैसा उत्तम कोई नहीं है। यह तो हमी लोग हैं जो जब जैसा चाहते हैं वेश बना लेते हैं। हमें भला कोई क्या पायेगा। इस तरह वे बातें करती सरोवरसे बाहर निकलीं और अपने कपड़े पहनने और माँग सँवारने लगीं। राजकुँवर उनकी ओर लपका और चाहा कि उनके पावोंपर गिर पड़े। पर उसको आते देख वे सातो उड़ चलीं। (कड़वक ४७–४९)

उनके उड़ जानेपर राजकुँवर मूर्च्छित हो गया। धाईने पास आकर देखा और अमृत छिड़ककर उसे होशमें ले आयी। राजकुँवरने उसे सातो अप्सराओंके आनेकी बात बतायी और उनमें जो सर्वसुन्दरी थी उसका रूप वर्णन किया। (यहाँ उसका आद्यन्त नख-शिख वर्णन है)। सुनकर धाईने कहा कि यह कोई कठिन कार्य नहीं है। तुम तनिक भी चिन्ता न करो। जैसा मैं कहती हूँ करो। एक बुधवन्त गुनीसे जो बात मैंने सुनी है वह तुमको बताती हूँ। वह मिरगावती रानी है जो यहाँ निर्जला एकादशी करने आयी थी। जिस जगह वह अन्तर्ध्यान हुई वहाँ वह हर पर्वको आती है। वह उसके हाथ आयेगी जो किसी प्रकार उसका चीर पा ले। (कड़वक ५०-७८)

धाईकी बात उसके मनमें बस गयी। उसने सरोवरके किनारे एक कूप बनवाया और निर्जला एकादशीके दिन उसमें जा छिपा। मिरगावतीने निर्जला एकादशीके दिन अपनी सखियोंसे सरोवरमें स्नान करने चलनेको कहा। पर उन्हें यह नहीं बताया कि उसका मन राजकुँवरपर अनुरक्त है। निदान सब साथ हो लीं और सरोवरके किनारे आयीं। अपने वस्त्राभूषण उतारकर वे सरोवरमें घुस गयीं और क्रीड़ा करने लगीं। ईश्वरका स्मरणकर राजकुँवर बाहर निकला और जाकर मिरगावतीका चीर उठा लिया। जैसे ही उन्हें आहट मिली कि कोई चीर लेने आया है, वे सब अपना-अपना वस्त्र लेने भागीं। सबने तो अपना-अपना वस्त्र उठा लिया पर मिरगावतीको अपना वस्त्र नहीं मिला। यह देखकर सखियाँ बोलीं—हमने तो तुमसे उसी दिन कहा था पर तुमने कहा कि कोई नहीं है। इतना कहकर वे सब उड़ गयीं। (कड़वक ७९-८२)

३—जब मिरगावतीको अपना चीर नहीं मिला तो वह फिर पानीमें घुस गयी। देखा तीरपर राजकुँवर खड़ा है। उसे देखकर बोली—तुमने यह अच्छा काम नहीं किया। मुझे अपनी सखियोंसे बिछुड़ा दिया। कुँवरने उत्तर दिया—तुम्हारी चाहमें मेरा यह दूसरा वर्ष है। जिस दिन तुम मृगी बनकर आयी थी उसी दिनसे मैं तुम्हारे लिये पागल हो रहा हूँ। यहाँ रहते अब यह तीसरा वर्ष हो रहा है। और वह अपनी सारी कथा सुना गया। यह सुनकर मिरगावतीने बताया कि मैंने भी तुम्हारे लिए ही मृगीका रूप धारण किया था। दुबारा भी तुम्हारे लिए ही आयी थी और सखियोंको बातोंमें भुलावा दिया था। फिर एकादशीके बहाने यहाँ आयी। तुमने मेरा चीर छिपा कर सहेलियोंका साथ छुड़ा दिया। मेरा चीर दे दो। जो तुम कहोगे, मैं करूँगी।

राजकुँवरने कहा—धाईने मुझे सब बात बता दी है। सो तुम्हारा चीर तो नहीं दूँगा। हाँ, यदि दूसरा चीर चाहो तो एक क्या मैं सात सौ ला दूँ। यह सुनकर मिरगावती ऊपरसे तो बहुत बिगड़ी और धाईको गालियाँ देने लगी पर मन-ही-मन प्रसन्न हुई कि उसने उसे उचित उपाय बताया। अन्तमें हारकर बोली—अच्छा अपना ही चीर लाकर दो। उसे पहनकर वह बाहर आयी। फिर दोनों भवनमें आये और सुवर्ण-सिंहासनपर बैठे। राजकुँवरने मिरगावतीके गलेमें हाथ डालकर उरकी ओर हाथ बढ़ाया। तब मिरगावतीने कहा—जरा सँभालो। यदि मेरी मानो तो एक बात कहूँ। तुम राजपुत्र हो और मैं भी कुलवती हूँ। मैं तुम्हारी हूँ, इसमें सन्देह नहीं

पर सहेलियोंको आने दो। विवाहके पश्चात् रस-बात करना। राजकुँवरने उसकी बात मान ली और दोनों परस्पर प्रतिज्ञाबद्ध हुए। राजकुँवरने पिताको अपनी आकांक्षा पूरी होनेकी सूचना दी। (कड़वक ८३-९२)

पत्र पाकर राजा प्रसन्न हुआ और साज-बाजके साथ राजकुँवरसे मिलने आया और पुत्रवधूसे मिलकर बहुत कुछ न्योछावरमें बाँटा। पश्चात् दो-चार दिन रहकर अपने नगर लौट गया। (कड़वक ९३-९६)

४—राजकुँवर और मिरगावती सारसके जोड़ेके समान एक जगह रह कर हँसते खेलते रहे। एक दिन मिरगावतीके मनमें आया कि किसी प्रकार चीर मिल जाय तो मैं यहाँसे उड़ जाऊँ। अगर राजकुँवरको मेरी चाह होगी तो वह ढूँढ़ता हुआ मेरे नगर आयेगा।

इसी बीच एक दिन राजाको राजकुँवरकी याद आयी और उसने उसे बुलानेके लिए दूत भेजा। पिताका सन्देश पाते ही शकुन-अपशकुनका विचार न कर राजकुँवर चल पड़ा। इधर मिरगावतीने धाईको मीठी बातोंमें फुसला लिया और कामके बहाने अन्यत्र भेज दिया। जब तक धाई लौटे-लौटे, उसने अपना चीर ढूँढ़ निकाला और पहन कर उड़ गयी। धाई लौट कर आयी तो उसे मिरगावती नहीं दिखाई पड़ी। वह उसे इधर-उधर ढूँढ़ने लगी। बाहर आकर भवनके ऊपर देखा तो वह वहाँ बैठी हुई थी। धाई उससे लौट आनेके लिए अनुनय-विनय करने लगी। मिरगावतीने कहा—राजकुँवर आये तो कह देना कि निसंदिग्ध रूपसे मेरा मन उनमें अनुरक्त है किन्तु जो वस्तु मुफ्त प्राप्त होती है, लोग उसका मूल्य नहीं आँकते। इसलिए मैं उड़ कर जा रही हूँ। कुँवरसे कहना कि वह तत्काल मेरे पास आये। कंचननगर मेरा स्थान है और मेरे पिताका नाम रूपमुरारि है। इतना कह कर मिरगावती उड़ गयी। (कड़वक ९७–१०१)

५—उधर हँसते हुए राजकुँवरके हृदयमें अचानक खलबली मची और वह पितासे बिदा लेकर अपने भवन लौटा। कुँवरको आया देख धाई रोने चिल्लाने लगी और मिरगावतीके उड़ जानेका हाल कह सुनाया। सुनते ही राजकुँवर पछाड़ खाकर गिर पड़ा और आत्यहत्याकी चेष्टा करने लगा। लोगोंने उसे समझानेकी चेष्टा की और किसी-किसी तरह उसे आत्महत्या करनेसे रोका। वह रोता विलाप करता रहा। उसकी स्थिति पागलोंकी-सी हो गयी। अन्ततोगत्वा वह योगीका साज मँगा कर मिरगावतीकी खोजमें निकल पड़ा। बिना किसी डर भयके रोता बिसूरता किंगरी बजाता चलता गया और जाकर एक नगरमें पहुँचा। वहाँ रुक कर उसने मिरगावतीकी टोह लेनेकी चेष्टाकी। वह न कहीं जाता और न आता, रोता और प्रेमकी किंगरी बजाता रहता। लोगोंने जाकर राजासे कहा कि योगीके वेशमें एक राजकुमार आया हुआ है। राजाको उसे देखनेकी उत्सुकता हुई। आकर उसे देखा, बातें की। राजकुँवरने अपनी प्रेमगाथा कह सुनायी। उसकी बातें सुनकर राजाको दया आयी। उसने उसे समझानेकी चेष्टा की, पद्मिनी देनेकी बात कही किन्तु उसने कुछ भी सुनने-लेनेसे इनकार किया

और बोला--किसी ऐसे आदमीको ढूँढ़ कर बुला दीजिये जो कंचनपुरका रास्ता जानता हो। इतनी ही दया काफी है। पता लगा कि उस नगरमें एक जंगम है जो देश-विदेश बहुत घूमा हुआ है। वह बुलाया गया। आकर उसने कंचनपुरके मार्गकी दुर्गमताकी बात कही। पर उससे राजकुमार तनिक भी विचलित नहीं हुआ। निदान जंगम उसे मार्ग बताने चला और सागर-तट पर आकर कहा कि कंचनपुरको यही मार्ग जाता है। वहाँ एक नाव थी। उसी पर सवार होकर राजकुँवर चल पड़ा। (कड़वक १०२-१२०)

६--एक मास तक समुद्रके लहरोंके बीच रहनेके बाद उसे किनारा दिखाई पड़ा। किनारे गिरि-पर्वत पर उसे दो आदमी दिखाई पड़े। उन्होंने बताया कि जिस मार्गसे तुम आये, उसी मार्गसे हम भी आये हैं। पर्वत देखकर हमने समझा कि हम किनारे पहुँच गये हैं पर यहाँ तो लोगोंके उतरनेका कोई घाट ही नहीं है। उन्होंने यह भी बताया कि हमारे साथ अनेक नावें थीं पर सभी डूब गयीं। खोजा पर उनका कहीं पता नहीं लगा। एक आश्चर्य यह भी देखा कि एक असाधारण साँप यहाँ है जो नित्य एक आदमी खाता है। हमारे नावमें बहुतसे आदमी थे। उन सबको वह खा गया। अब हम केवल दो ही व्यक्ति बच रहे हैं।

उनकी बात समाप्त हो भी न पायी थी कि सर्प आ पहुँचा और उनमेंसे एक-को पकड़ ले गया। दुबारा आकर सर्प दूसरे आदमीको भी ले गया। यह देखकर राजकुँवर रोने और ईश्वरसे प्रार्थना करने लगा। इतनेमें फिर सर्प आया और राज-कुँवर अपने जीवनके प्रति निराश होने लगा। तभी एक दूसरा सर्प दिखाई पड़ा। दोनों सर्प आपसमें लड़ने लगे और लहरके साथ बह गये। लहरके साथ नाव भी किनारे आ लगी और कुँवरके जानमें जान आयी। (कड़वक १२१-१२६)

७--नावसे उतर कर राजकुँवर चला। मार्गमें उसे एक आम्राराम दिखाई पड़ा। उसके भीतर जाकर वह बैठ गया। फिर घूम फिर कर उसे देखने लगा। उसे एक भवन दिखाई पड़ा। उत्सुकतावश वह उसके भीतर घुसा। वहाँ उसे पलंग पर बैठी हुई एक राजकुमारी दिखाई पड़ी। वह रो रही थी। राजकुँवरने उससे रोनेका कारण पूछा तो उसने बताया--उस नगरका नाम सुबुद्धया है। वहाँके राजा अयोध्या के सुप्रसिद्ध राघव वंशके हैं। उनका नाम देवराय है। मैं उसकी कन्या हूँ। मेरा नाम रुपमनि (रूपमणि) (बीकानेर और चौखम्भा प्रतिके अनुसार--रुकमिनि) है। यहाँ एक राक्षस रहता है जो वर्षमें एक आदमी लेता है। इस वर्ष मेरी बारी आयी है। इसलिए उन्होंने मुझे दिया है।[1] आप यहाँसे चले जाइये।

---

१. शिवगोपाल मिश्रने सम्मेलन संस्करणमें कथा-सार देते हुए रूपमनिके एक वर्ष पूर्व राक्षस द्वारा हर लानेकी बात कही है। एकडला प्रतिमें उन्हें वह कड़वक उपलब्ध था जिसमें स्पष्ट कहा गया है--राकस एक रहत है पंथा, बरिस देवस एक लेइ। यहि र बरिस ओसरी हम आई, तो उन्ह हम कँह देइ॥ (कड़वक ९, पृष्ठ ९६)। फिर क्यों और किस आधार पर उन्होंने ऐसा कहा है, कहना कठिन है।

यह सुनकर राजकुँवरने कहा कि मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा सकता। आज मैं उस राक्षसको किसी-न-किसी उपायसे अवश्य मार डालूँगा। तब उस राजकुमारीने कहा—यदि नहीं जाते हो तो मेरे पास आकर बैठो। राजकुँवरने कहा—मैं वचनबद्ध हूँ, इस कारण किसी स्त्रीके पास नहीं बैठता। जीवित रहते इस प्रतिज्ञाका पूर्णतः पालन करूँगा।[1]

यह बातें हो ही रही थी कि राक्षस आ पहुँचा। उसके सात सीस और चौदह भूदण्ड थे। उसे देख कर रूपमणि घबराई पर राजकुँवर ने उसे आश्वस्त किया और अपने चक्रसे राक्षसको मार डाला। यह देखकर राजकुमारी मूर्छित हो गयी। राजकुँवर उसे होशमें ले आया। राजकुमारी उसकी वीरता पर मोहित हो गयी और उससे अपने निकट बैठनेका अनुरोध करने लगी। राजकुमार भी, यह सोच कर कि मन शुद्ध हो तो निकट बैठनेमें कोई हर्ज नहीं, जाकर उसके सेज पर बैठ गया।

तब राजकुमारीने कहा—तुम योगी नहीं जान पड़ते। शपथ देकर वह उसका नाम-धाम पूछने लगी। राजकुँवरने बताया—मैं सूर्यवंशी प्रतापी राजा गनपतदेवका पुत्र हूँ, चन्द्रागिरि उनका विशाल गढ़ है। कंचनपुर निवासिनी मिरगावती रानीको देख कर अपनेको भूल बैठा हूँ। तब राजकुमारीने पूछा—तुमने उसे कहाँ देखा? उत्तरमें राजकुँवर आखेटके समय मृगी देखनेसे लेकर चीर-हरणके पश्चात पाँच मास साथ रहकर मिरगावतीके उड़ जाने तककी सारी घटना सुना गया। (कड़वक १२७–१३८)

८—प्रातःकाल होने पर लोग रूपमणिकी खोजमें निकले। उसकी हड्डियोंको एकत्र कर चिता पर जलानेके निमित्त रोता हुआ राजा आया। यहाँ आकर उसने रूपमणिको जीवित पाया और उसके पास एक अन्य व्यक्तिको बैठा देखा। राजाको देख कर रूपमणि घबराई और तत्काल सेजसे उठ खड़ी हुई। राजाने उसे गलेसे लगाया और पूछा कि वह किस प्रकार बच निकली। तब राजकुमारीने राजकुँवरको दिखा कर सारी बात कह सुनाई और कहा कि यह कुलमें हमसे उच्च है। इनके पिता सूर्यवंशी चन्द्रागिरिपति हैं।

यह सुनकर देवरायने सोचा कि इसे यहाँसे जाने न दूँगा। मेरे कोई पुत्र नहीं है अतः बेटीके बदले उसे प्राप्त करूँगा। यह सोच कर वह राजकुँवरसे बोला—योगी वेशका परित्याग करो। मैं तुम्हें अपना आधा राज-पाट देकर अपनी बेटी ब्याह दूँगा। राजकुँवरने उत्तर दिया—मैं योगी हूँ। राज-पाटसे मुझे क्या प्रयोजन! राजाने उसे फुसलानेकी बहुत चेष्टा की। जब वह किसी प्रकार न माना तो उसे बन्दीगृहमें डाल देनेकी धमकी दी। धमकीके बाद राजकुँवर कुछ सोच-समझ कर राजाकी बात मानने-

---

१. इस स्थल पर शिवगोपाल मिश्रने लिखा है कि रूपमनिके गिड़गिड़ाने पर राजकुँवर उसकी सेज पर बैठ गया (सम्मेलन संस्करण, पृ० १९)। किन्तु यह गलत है, ऐसी बात राक्षस-वधके पश्चात् हुई, पूर्व नहीं।

को तैयार हो गया। योगीका वेश उतार कर उसने श्वेतवस्त्र धारण किया। तब राजाने उसे हाथी पर सवार कराया।

नगरके लोग उसे देखने आये और उस पर फूल बरसाये। घर घर सब लोगोंने रूपमणिके पुनर्जीवन पर प्रसन्नता प्रकट किया और न्योछावर बाँटा। (कड़वक १३९–१४६)

९—राजा प्रसन्न हुआ; पर राजकुँवर ऊपरसे तो हँसता पर मनमें दुःखी रहने लगा। राजाने उसके गुणोंकी परीक्षा लेनेका निश्चय किया। फलतः उसने दिखाया कि वह सभी तरहका जुआ खेलनेमें दक्ष है; उसे हेंगुरि और आखेट खेलना भली प्रकार आता है; वह सब विद्याओंसे भी परिचित है। इस प्रकार उसके सब प्रकारसे कुलवन्त होनेके प्रति आश्वस्त होकर राजाने विवाहका निश्चय किया। उधर राजकुँवर भागनेका उपाय सोचने लगा। वह अपने मनकी बात किसीसे न कहता और योगी-जंगमकी टोह लेता रहता। (कड़वक १४७-१५२)

विवाहका आयोजन हुआ, लोगोंने ज्योनार किया और कुल-रीतिके अनुसार विवाह-कार्य सम्पन्न हुआ। विवाहके पश्चात् जब राजकुँवर रूपमणिके साथ सेजपर बैठा तो उसे उसकी याद आयी जिसे वह खो बैठा था। उसने सोचा—भोग-विलासमें रत होना उचित नहीं है। अतः रूपमणिको बातोंमें ही भुलाये रखना ठीक होगा। वह उसे बातोंमें बहलाये मन ही-मन मिरगावतीका चिन्तन करता रहा। (कड़वक १५२-१५६)

प्रातःकाल जब राजकुँवर राजसभामें गया तो उसने एक धर्मशाला बनवानेका प्रस्ताव रखा। धर्मशाला बना। धर्मशालामें जो भी जोगी, जंगम, पंथी आता, उसे भोजन दिया जाता। राजकुँवर उनके पास बैठता, उनसे देश-लोककी बात पूछता और कंचनपुरके सम्बन्धमें जिज्ञासा करता। रूपमणिने ताड़ लिया कि राजकुँवर मुझमें अनुरक्त नहीं है। वह रूठकर खट्वाट् लेकर पड़ रही। राजकुँवर जब सभासे लौटा तो उसने यह अवस्था देखी और यह विश्वास दिलानेकी चेष्टा की मैं तुम्हींसे प्रेम करता हूँ, अन्य किसीसे नहीं। राजकुमारी बोली—मैं तुम्हारी सब धूर्ताचार समझती हूँ। तुम्हारा शरीर तो यहाँ पर मन कहीं और है। राजकुँवरने उसे बहुत तरहसे समझा बुझाकर मनाया और हृदयसे लगाया।

राजकुमारीको मनाकर जब राजकुँवर बाहर निकला तो एक योगीको बैठा पाया। उससे हाल-चाल पूछा। उसने कंचनपुरके सम्बन्धमें जानकारी दी। जानकारी प्राप्त कर राजकुँवरने उस योगीसे उसका कन्था ले लिया और आखेटके बहाने घरसे निकल पड़ा। आखेट खेलते-खेलते जब वह अकेला हो गया तब वे अपने कपड़े उतार कर योगी वेश धारण किया और घोड़ेको वहीं छोड़कर सागर तटपर पहुँचा, जहाँ घाटपर नाव चलती थी। केवटको पैसे देकर वह उस पार जा पहुँचा। (कड़वक १५७-१६४)

जो लोग कुँवरके साथ थे, वे ढूँढ़ते हुए वहाँ आये जहाँ राजकुँवर अपना घोड़ा छोड़ गया था। उन लोगोंने कुँवरको ढूँढ़ा पर जब वह न मिला तो उन लोगोंने सोच लिया कि उसे बाघ खा गया है। वे लोग दुःखी होते हुए घर लौटे। जब यह समाचार रूपमणिको मिला तो वह एकदम कुम्हला गयी और अपने भाग्यपर पश्चाताप करने लगी। (कडवक १६५-१६७)

१०—उस पार पहुँचकर राजकुँवर बनमें घूमता फिरा। तीस दिन चलनेके पश्चात् बनका अन्त हुआ। बनसे बाहर आनेपर उसे कुछ बकरियाँ चरती दिखाई पड़ीं और एक चरवाहा गड़ेरिया मिला। राजकुँवरको देखते ही गड़रिया उसके पास आया और अतिथि कहकर उसका स्वागत किया तथा घर चलनेका अनुरोध किया। राजकुँवरने प्रसन्नतापूर्वक उसका आतिथ्य स्वीकार कर लिया और उसके साथ चल पड़ा। गड़ेरिया उसे लेकर एक खोहमें घुसा और उसे भीतर कर आप द्वार बन्दकर बाहर बैठ गया। यह देख राजकुँवर आश्चर्यचकित रह गया। उसने उलटकर देखा तो वहाँ उसे अनेक व्यक्ति असाधारण रूपसे मोटे दिखाई पड़े। उसने उनसे उनके सम्बन्धमें पूछा और उनकी असाधारण मुटाईका कारण जानना चाहा। उन लोगोंने बताया कि गड़ेरिया उन लोगोंको भुलावा देकर ले आया है और उन्हें कोई ऐसी औषधिमूल खिला दिया है जिसके कारण वे लोग चलने-फिरनेमें असमर्थ हो गये हैं।

यह सुनते ही राजकुँवरकी जान सूख गयी। अच्छा आतिथ्य करने आया! खाना खिलानेको कौन कहे, यह स्वयं मुझे खाना चाहता है। इसने मुझे जैसा रास्ता दिखाया है वैसा ही मैं भी कुछ करूँ जिससे यह आकाश चला जाय। और वह उससे छुटकारा पानेका उपाय सोचने और मन-ही-मन दुःखी होने लगा। जब उसकी समझमें कोई भी उपाय नहीं आया तो जो लोग भीतर थे, उन लोगोंने उसे उपाय सुझाया। जबतक वह तुम्हें औषधिमूल नहीं खिलाता, उस बीच जो हम कहते हैं करो। वह अभी आकर हममेंसे एकको भूनकर खायेगा और फिर पड़कर सो रहेगा। जब वह सोता रहे तभी सँडसी दग्धकर उसकी आँखमें घुसेड़ दो। राजकुँवरकी समझमें यह उपाय आ गया और उसने वैसा ही किया और गड़ेरियाकी आँखें फोड़ दीं।

गड़रिया क्रुद्ध होकर उठा और राजकुँवरको पकड़ना चाहा पर वह भाग गया। गड़ेरिया उसको चारों कोने टटोलने लगा पर वह हाथ न आया। तब वह द्वारपर जा बैठा और द्वारको इस प्रकार बन्द कर दिया कि कोई बाहर निकल न सके। यह देख राजकुँवर पुनः चिन्तित हुआ। तीन दिन तक ऐसी ही स्थिति रही। फिर गड़ेरियाके मनमें आया कि बकरियोंको निकाल दूँ, वे चर आयें। वह एक-एक बकरी निकालने लगा। इसे निकलनेका अच्छा अवसर देखकर राजकुँवरने एक बकरीको मार डाला। और उसका चमड़ा निकालकर ओढ़ लिया और बकरियोंके साथ निकलने लगा। निकलते समय जब गड़ेरियेने उसे टटोला तो उसे लगा कि वह बकरी नहीं है। लेकिन जब तक उसे पकड़नेकी कोशिश करे, राजकुँवर बाहर निकल गया। (कड़वक १६८-१८६)

११—वहाँसे राजकुँवर आगे बढ़ा। चलते-चलते उसे एक भवन दिखाई पड़ा। तब तक शाम हो गयी। उसने वहीं रात बितानेका निश्चय किया। जब वह भवनके निकट पहुँचा तो उसे एकदम निर्जन पाया। उसे आश्चर्य हुआ और लगा कि वह कोई कौतुकपूर्ण जगह है। वहाँ वह छिपकर बैठ गया। इतनेमें चार अपूर्व कबूतर आये और आकर उन्होंने नारी रूप धारण किया। फिर उन्होंने मन्त्र पढ़ा; बिछी हुई सेज आ गयी। पुनः मन्त्र पढ़ा तो चार मोर आये और आकर वे चार पुरुष बन गये। और तब सब सेजपर बैठकर केलि करने लगे। इस प्रकार हँसते खेलते रात बीत गयी। जब सुबह हुई तो दूतने आकर उन्हें सूचना दी कि किसीने गड़रियेको अन्धा कर दिया है। इतना सुनते ही वे सब उड़ गये। यह देखकर राजकुँवर डरा और वहाँ-से भागा। जब बहुत दूर भाग आया और धूपसे परेशान हो गया तो एक पेड़के नीचे जा बैठा। (कड़वक १८७-१९१)

१२—उधर मिरगावती जब राजकुँवरके महलसे उड़कर आयी तो सहेलियाँ उससे चीर-हरण की बात पूछने लगीं। कहने लगीं कि कोई बिना किसी सम्बन्धके किसीका चीर नहीं लिया करता। तब मिरगावतीने उन्हें बताया कि जिस दिन मैं तुम्हारे साथ स्नान करने गयी थी और तुम लोग मुझे छोड़ कर चली आयी थी, उस दिन रास्तेमें मैंने एक राजकुमारको देखा। उसे देखते ही सुधि-बुधि खो बैठी और मृगीका रूप धारण कर उसे निहारने लगी। उसे अपनी ओर आकृष्ट कर मैं भागी। उसने मेरा पीछा किया पर मैं उसकी पकड़में नहीं आयी और जिस सरोवरमें तुम नहाने गयी थीं, उसमें विलीन हो गयी। फिर दुबारा जब जी नहीं माना तो बहाना करके तुम्हें साथ ले गयी। तुमने सरोवरके निकट जो मन्दिर देखा, वह उसी राजकुमार-ने बनवाया है। वहाँ वह बैठकर मेरी प्रतीक्षा करता रहा। पुनः जब हम तीसरी बार गयीं तो उसने धाईकी सीखपर मेरा चीर ले लिया और अपना चीर लाकर दिया। उसने मेरा चीर ऐसी जगह छिपा दिया कि वह मिल न सके। उसने जब मुझसे रस-रंग की बात कही तो मैंने कहा कि सहेलियोंको आने दो। उनसे माँग कर मेरे साथ सेज-रमण करना। वह मेरी बात मान गया। फिर एक दिन जब मुझे अवसर मिला तो मैंने धाईको भुलावा देकर अन्यत्र भेज दिया और चीर पहनकर भाग निकली। आते समय अपना पता दे आयी और कह आयी कि यदि वह मुझपर अनुरक्त है तो कंचनपुर आये। कहकर तो चली आयी पर यहाँ मन नहीं लग रहा है। तब सहेलियाँ उससे प्रेमकी बातें करने लगीं। (कड़वक १९२–२००)

१३—मिरगावतीके पिता स्वर्गवासी हुए, राजकर्मचारियोंने पुत्रके अभावमें मिरगावतीको राजगद्दीपर बैठाया। वह धार्मिक ढंगसे शासन करने लगी। उसने एक धर्मशाला बनवाया और आदेश दिया कि जो भी योगी-जंगम आये उसे भोजन-पानी दिया जाय। जो भी यात्री आये वह मुझसे बिना मिले न जाय। इस प्रकार जो भी योगी-यती आता, उसे वह अपने पास बुलाती और इधर-उधरकी बातोंके बाद चन्द्रा-गिरिकी बात पूछती। (कड़वक २०१-२०२)

१४—राजकुँवर वृक्षके नीचे आकर बैठा। उसकी दृष्टि ऊपर गयी। वहाँ दो पक्षी बैठे परस्पर प्रेम-कथा कह रहे थे। वह ध्यान देकर उनकी बातें सुनने लगा। वे कह रहे थे कि एक राजकुमार मिरगावतीके प्रेममें अनुरक्त है। उसने अबतक बहुत कष्ट सहे हैं पर अब उसके दुःखके दिन थोड़े ही रहे, वह शीघ्र ही सुख प्राप्त करेगा। यह कहकर वे दोनों उड़ चले। कुँवरने जो यह बात सुनी तो जिस ओर वे गये थे, उसी ओर वह भागता चला। जाते-जाते एक मार्ग मिला। आगे जानेपर उसे एक लक्षाराम मिला। उसे लगा कदाचित् यही कंचनपुर है। वह लक्षाराममें घुस गया और उसे देखता हुआ आगे बढ़ा और कुएँके निकट आया। वहाँ उसे पनिहारिनें दिखाई पड़ीं। उनसे पूछनेपर ज्ञात हुआ कि वही कंचनपुर है और वहाँ मिरगावतीका राज है। जो योगी-यती वहाँ आते है, उनका वहाँ बड़ा मान होता है। (कड़वक २०३-२१४)

राजकुँवरने नगरमें प्रवेश किया। राजद्वारतक पहुँचा। आगे प्रवेश करना सहज न पाकर वह किंगरीपर वियोग बजाने लगा। उसके वियोगकी बात नगरमें फैल गयी। मिरगावतीने सुना और उसे बुला भेजा। सात द्वार पार कर जब राजकुँवर भीतर पहुँचा तो उसने मिरगावतीको सुवर्ण-सिंहासनपर बैठे पाया। उसे देखते ही वह मूर्छित हो गया। (कड़वक–२१५)

उसे मूर्छित होते ही वह भाँप गयी कि यह जोगी नहीं, राजकुँवर है। उसने सहेलियों से उसे होशमें लानेको कहा। वे उसे होशमें ले आयीं और उससे मूर्च्छित होनेका कारण पूछने लगीं। फिर उन्होंने अनुमान लगाया कि कदाचित् यह वही है जिसकी बात मिरगावती कहा करती है। जब मिरगावतीको भी निश्चय हो गया कि वह वही राजकुँवर है तो उसे निकट बुलाया और अपनी सहेलियोंको यह बात बतायी, तब सहेलियोंने मिरगावतीसे राजकुँवरकी परीक्षा लेनेको कहा। परीक्षामें राजकुँवर खरा उतरा। तब मिरगावतीने दासियोंको उसे स्नान करानेका आदेश दिया। (कड़वक २१६–२२१)

१५—मिरगावतीने शृङ्गार किया और सेज सँवरवाया और उसपर जा बैठी। बैठकर राजकुँवरको बुलवाया। राजकुँवरके आते ही सेजसे उतरकर उसने उसका स्वागत किया। फिर दोनों सेजपर जा बैठे। मिरगावतीने बताया कि क्रोधमें यहाँ आनेको तो आ गयी पर आनेपर पश्चाताप हुआ। मैं दिन-रात तुमको याद करती रही। राजकुँवरने भी अपना सारा दुःख कह सुनाया—किस प्रकार उसने योग-पंथ धारण किया, बनमें खोया, समुद्रमें गया, सर्प-भक्षणसे बचा, राजकुमारीके भक्षणके लिए आये राक्षसको मारा, राजकुमारीसे विवाह किया, वहाँसे भागा, गड़ेरियाके चंगुलमें पड़ा, उसका आँख फोड़ा, यह सब उसने सविस्तार सुनाया। यह सुनकर मिरगावती व्याकुल हुई और उसे कण्ठसे लगा लिया। पश्चात् दोनों आलिंगन-परिरम्भणमें रत हो गये। (कड़वक २३२–२४४)

१६—प्रातःकाल राजकर्मचारियोंने सुना और वे मिरगावतीके पतिको जुहार करने आये। राजकुँवरने उन्हें धन्य-धान्यसे सम्मानित किया। फिर राज-सभामें

बैठा। वहाँ नृत्य-संगीत हुआ। राजकुँवरके सभामें जाने पर मिरगावतीने सखियोंको बुलवाया। वे सब आकर रातकी बात पूछने लगीं। मिरगावती पहले तो चुप रही पीछे उसने राजकुँवरकी प्रशंसा की। सखियाँ अपने घरसे निछावर लायीं। मिरगावतीने उसे ग्रहण किया और उन्हें वस्त्राभूषण भेंटमें दिये। (कड़वक २४५–२६१)

१७—एक दिन किसी सखीके यहाँ कुछ मंगलाचार था। वह मिरगावतीको बुलाने आयी। मिरगावती राजकुँवरसे पूछ कर उसके घर गयी और जाते समय राज-कुँवरको मना करती गयी कि घरमें जो ओबरी है, उसे मत खोलना। उसके चले जाने पर राजकुँवरको जाननेकी जिज्ञासा हुई कि ओबरीमें क्या है। उसने जाकर ओबरी खोला। वहाँ उसने कटघरेमें एक आदमीको बन्द देखा। राजकुँवरको देखते ही वह आदमी गुहार करने लगा। राजकुँवरके पूछने पर उसने बताया कि मैं मिरगावतीके पिताका एक कर्मचारी हूँ। मैं उनका विश्वासपात्र था। अर्थ-भण्डार सब कुछ मेरे हाथमें था। स्वामीका प्रियपात्र होनेके कारण अनेक लोग मेरे शत्रु थे। रूपमुरारिके मरते ही लोगोंने मुझे बन्दी कर दिया है। उसने राजकुँवरसे तरह-तरहकी बातें की। उन्हें दया आ गयी और उसने कटघरा खोल दिया।

कटघरा खुलते ही उसमेंसे एक विशालकाय दैत्य निकल पड़ा और निकलते ही वह कुँवरको कन्धे पर रख कर आकाशमें उड़ गया। कुँवरको अपने किये पर पछतावा होने लगा। दैत्य उसे उड़ाकर सौ योजन दूर ले गया और वहाँ कुँवरसे बोला—मेरी प्रियतमाके साथ तुम सुख भोग कर रहे हो और मुझे सताते हो। मैं मिरगावतीका प्रेमी हूँ और वह तुम पर अनुरक्त हो गयी है। एक वर्ष तक मैं उसकी प्रतीक्षा करता रहा पर वह हाथ न आयी। उसे तुम मुफ्तमें ही पा गये अब मैं तुम्हें पृथ्वी पर पटकूँगा। सो कहो तुम्हें पर्वत पर गिराऊँ या समुद्रमें। कुँवरने मनमें सोचा कि इससे उलटी ही बात कहनी चाहिये और उसने उससे पर्वत पर गिरानेको कहा। दैत्यने कहा—नहीं, तुझे पानीमें गिराऊँगा और उसे समुद्रमें डाल दिया। ईश्वरकी कृपासे वह उथले पानीमें गिरा।

इधर राजकुँवरके सिर यह विपत्ति आयी, उधर मिरगावतीके हृदयमें खलबली मची और उसे शंका होने लगी कि पुरुष जाति मना की गयी बातको नहीं मानती। कहीं उन्होंने ओबरी तो नहीं खोल दिया! वह सखीसे घर जानेके लिए अनुमति माँग ही रही थी कि दासी रोती चिल्लाती आयी। और दैत्य द्वारा राजकुँवरके उड़ा ले जाये जानेका समाचार दिया। यह सुनते ही मिरगावती अवाक् रह गयी। एक घड़ी-के पश्चात् जब उसे कुछ चेतना आयी तो वह विलाप करने लगी। सहेलियाँ उसे समझाने लगीं। नगरमें समाचारसे खलबली मच गयी।

सखियोंके समझाने बुझाने पर उसने सेवकोंको राजकुँवरको ढूँढ़नेका आदेश दिया। स्वयं भी राजकुँवरको ढूँढ़नेका तरह-तरहसे यत्न करने लगी। तब एक आदमी ने आकर राक्षसके गिरफ्तार किये जानेका समाचार दिया। तत्काल उसे सामने लाये जानेका आदेश हुआ। उससे राजकुँवरके सम्बन्धमें पूछा जाने लगा पर वह मौन

रहा। उसे तरह-तरहके त्रास दिये गये पर उसने कुछ नहीं बताया। अन्तमें उसे कोठरीमें बन्द कर दिया गया। (कड़वक २६२–२८९)

मिरगावतीकी समझमें कुछ नहीं आ रहा था कि राजकुँवरका पता पानेके लिए क्या किया जाय। इतनेमें असाढ़ आ पहुँचा। पवनके द्वारा उसने सन्देश भेजा। पवनने जाकर राजकुँवरसे मिरगावतीकी अवस्था कही। राजकुँवरने भी उससे अपनी अवस्था मिरगावतीसे जाकर कहनेको कहा। पवनने आकर मिरगावतीको राजकुँवरका समाचार दिया। समाचार पाते ही मिरगावती पवनके साथ राजकुँवरके पास पहुँची और उसे ले आयी। नगरमें प्रसन्नताकी लहर छा गयी। तदन्तर दोनों आनन्दपूर्वक रहने लगे। (कड़वक २९०–३०४)

१८—इधर ये लोग रस-भोगमें लीन थे उधर रूपमणिके दिन दुःखमें बीत रहे थे। वह सूखकर पीली हो गयी। दिन-रात पन्थ जोहती रहती। एक दिन भवन-पर चढ़कर वह मार्ग जोह रही थी कि एक बनजारा आता दिखाई दिया। वह आकर सरोवरके किनारे रुका। रूपमणिने यह जाननेके लिए कि वह कहाँसे आ रहा है, आदमी भेजा। आदमीके पूछनेपर बनजारेने बताया कि वह चन्द्रागिरिसे आ रहा है और कंचनपुर जायगा। वह गनपतदेवका ब्राह्मण पुरोहित है और उनका सन्देश लेकर जा रहा है। कंचनपुरका नाम सुनते ही धावनने उससे रूपमणिके पास चलनेको कहा कि वह भी अपना कुछ सन्देश भेजना चाहती हैं। वह रूपमणिके पास आया और बताया कि मेरा नाम दूँलभ है। जिस देशमें राजकुँवर लुभाया हुआ है, वहीं जा रहा हूँ। यह सुनकर रूपमणि रोने लगी और रो-रो कर अपना सारा दुःख कह सुनाया (कविने यहाँ बारहमासाका उपयोग किया है)। (कड़वक ३०५–३३६)

१९—दूँलभ रूपमणिकी दुःख-कहानी सुनकर उसका सन्देश लेकर चला। रास्तेमें उसे अन्धा गड़ेरिया मिला। उससे वह कंचनपुरका रास्ता पूछकर आगे बढ़ा और कंचनपुर पहुँचा। कंचनपुरमें व्यापारियोंने बनजारेके आनेकी बात सुनी तो उसके पास वणिज खरीदने आये। उसने कहा कि यह वणिज तुम्हारे लिए नहीं है। राजा खरीदने आयेगा तो उसके हाथ बेचूँगा। यह बात फैलते-फैलते राजातक पहुँची। राजा (राजकुँवर) को भी उत्सुकता हुई कि उसके पास क्या ऐसी वस्तु है जो केवल हमारे ही हाथ बेचना चाहता है। राजाने उसे बुला भेजा।

ब्राह्मणने आकर राजा (राजकुँवर) को जब आशीष दिया तब उसने उसे पहचान लिया कि यह तो हमारे घरका पुरोहित है। निश्चय करनेके लिए नाम-धाम पूछा। ब्राह्मणने अपना नाम-धाम बताया और पिता-माता तथा रूपमणिका सन्देश कहा—और कहा कि जो उचित हो कीजिए। राजकुँवरने कहा—यहाँकी व्यवस्था कर लूँ तबतक अगस्त उग आयेगा और पानी भी घट जायेगा। तब चला जाय।

ब्राह्मणके सन्देशसे राजकुँवर व्याकुल हुआ, उसे पिताकी स्मृति आयी, रूप-मणिका प्रेम जागा। उसने मिरगावतीसे जाकर कहा कि आज पिताके घरसे आदमी आया है। वे अब अत्यन्त वृद्ध हो गये हैं। उन्होंने बुलाया है। तुम जैसा कहो किया

जाय। मिरगावतीने कहा---आप जो कहेंगे वह शिरोधार्य है। आप रायभानको राज सौंप दें और राजकर्मचारियोंसे कहें कि जबतक रायभान अबोध है, वे लोग समुचित ढंगसे राजका काम सँभालें। (कड़वक ३३७–३५५)

२०—राजकुँवरने कंचनपुरमें सुखसे चार वर्ष व्यतीत किये। मिरगावतीने दो पुत्रोंको जन्म दिया। बड़ेका नाम रायभान और छोटेका नाम करनराय था। रायभानको राजतिलक दिया गया। अगस्त उगा, पानी घटा तो राज्कुँवरने चलने की तैयारी की और सुदिन पूछकर चल पड़ा।

चलते-चलते एक नदी मिली। उसके किनारे एक दिन रुक कर आगे बढ़ा और वहाँ जाकर ठहरा जहाँ उसने गड़ेरियेका आतिथ्य किया था। वहाँ वह गड़ेरियेको देखने गया और लोगोंको उसके छलकी बात बतायी। फिर प्रातःकाल वहाँसे रवाना हुआ। जब सुबुद्ध्या नगर तीस कोस रह गया तो उसने सूचना देनेके लिए दूँलभको आगे भेजा।

उधर रूपमणिने स्वप्न देखा और सखियोंसे उसका अर्थ पूछा। उन्होंने बताया कि तुम्हारा प्रियतम सौत लेकर आ रहा है। यह बातें हो ही रही थीं कि ब्राह्मण आ पहुँचा और प्रतिहारसे अपने आनेकी सूचना देनेको कहा। उधर राज-कुमारीने काग उड़ाया। कागका उड़ना था कि समाचार लेकर प्रतिहारी आ गया। समाचार सुनते ही वह उछाहसे भर गयी। उसने दूँलभसे जाकर पिताको सन्देश सुनानेको कहा। दूँलभने राजाको राजकुँवरके आनेकी सूचना दी। राजा तत्काल उसके स्वागतके लिए चल पड़ा। उधर राजकुँवरने मिरगावतीको रूपमणिके सम्बन्धमें सारी बात बता दी और कहा कि ब्याही हुई स्त्री छोड़ी नहीं जा सकती। मिरगावतीने उसकी बात मान ली। (कड़वक ३५६–३७५)

राजा स्वागत कर राजकुँवरको घर ले आया। रूपमणिकी आकांक्षा पूरी हुई। राजकुँवर और रूपमणि मिले और परस्पर केलि क्रीड़ा करने लगे। यह देखकर द्वन्द्व, उद्वेग, उचाट और वियोगको बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने मिरगावतीके पास जाने-का निश्चय किया। वहाँ आकर उन्होंने सुख और आनन्दको मार भगाया। इन लोगोंने राजकुँवरके पास जाकर गुहार लगायी। रूपमणिके साथ रात बिताकर जब प्रातःकाल राजकुँवर मिरगावतीके पास गया तो वह पीठ देकर बैठ रही। तब राजकुँवरने उसे समझाया और प्रेमकी बातें की। उसने अपनी दोनों पत्नियोंको इस तरह रखा कि दोनोंने अनुभव किया कि मुझसे ही प्रेम करते हैं। (कड़वक ३७६–३८९)

२१—एक दिन राजकुँवरने दूँलभको बुलाकर राजाके पास भेजा और कह-लाया कि कि आज्ञा दें तो पिताके पास जाऊँ। उसने जाकर राजासे निवेदन किया और रूपमणि को बिदा कराकर राजकुँवरके पास ले आया। और वे लोग वहाँसे रवाना हुए। जब चन्द्रागिरि निकट आया तो राजकुँवरने दूँलभको अपने पिताके पास भेजा। उसका पिता प्रतीक्षा कर ही रहा था। दूँलभने जाकर बताया कि राजकुँवर दस योजन

पर आ गया है और एक गाँवमें ठहरा हुआ है। मुझे उन्होंने आपके पास भेजा है। फिर उसने राजकुँवरका सारा हाल कह सुनाया—किस प्रकार देवरायने उसके साथ अपनी बेटी ब्याही, कैसे उसका मिरगावतीसे मिलन हुआ। सुनकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और ठाट-बाटके साथ उसे जाकर लिवा लाया। सब लोग दुःख भूल कर आनन्दसे रहने लगे। (कड़वक ३९०–३९८)

एक दिन जब राजकुँवर आखेटको गया हुआ था, मिरगावतीकी ननद उसके पास आयी और रूपमणिकी चुगली की। बोली—रूपमणि कह रही थी कि विवाहिता तो मैं हूँ मिरगावती तो उढ़री (अपहृता) है; फिर भी वह मुझे कुछ नहीं समझती। यह सुनकर मिरगावती बहुत क्रुद्ध हुई। रूपमणिकी दासी यह सब बात सुन रही थी। थी। उसने जाकर रूपमणिसे कहा। रूपमणि गाली-गलोज करने लगी। मिरगावतीने जब यह बात सुना तो वह भी बोलने लगी। दोनों अपनी बड़ाई और दूसरेकी निन्दा करने लगीं। झगड़ेकी बात जब सासके कानमे पड़ी तो वह गरजती हुई आयी। उसे देखकर दोनों चुप हो गयीं। सासने आकर इस तरह लड़ने-झगड़नेके लिए उनकी भर्त्सना की। दोनों कुपित होकर अपने-अपने घरमें पड़ी रहीं।

जब राजकुँवर आखेटसे लौटा तो देखा कि दोनों रानियाँ खट्वाट् लेकर पड़ी हैं। वह ताड़ गया कि दोनोंने परस्पर लड़ाई की है। वह तत्काल माँके पास पहुँचा और कहा कि चलकर दोनोंको मनाओ। सास ननद सब मिल कर पहले मिरगावतीके पास आयीं और उसे समझाया। उसे समझा बुझाकर वे रूपमणिके पास आयीं और उसके क्रोधको भी शान्त किया। (कड़वक ३९९-४०९)

२२—राजकुँवरको आखेट बहुत प्रिय था। बिना आखेट खेले उसे नींद न आती थी। वह स्वप्नमें भी आखेट खेलता रहता। एक दिन प्रातःकाल एक शिकारी-ने आकर सूचना दी कि वनमें एक ऐसा सिंह आया है जिससे सभी पशु त्रस्त हैं। कल मैं शिकार खेलने गया था तो देखा कि वहाँ असंख्य मैमन्त गज मरे पड़े हैं। पास आकर देखा तो पाया कि उनके मस्तक में तनिक भी गूदा नहीं है। किन्तु उनके शरीर पर एक भी नख नहीं लगा है। जंगलके अन्य जितने जानवर हैं, वे भी मरे पड़े हैं। लगता है कि वे उसके डर मात्रसे मर गये हैं। यह देख डर के मारे मैं वहाँ से भाग आया।

यह सुन कर राजकुँवर हँसा और तत्काल सिंहको मार डालनेका निश्चय किया। और सारी तैयारी कर उस पारधीको लेकर वनमें पहुँचा। वनमें पहुँच कर उसने पारधीसे पेड़ पर चढ़ कर सिंहको देखनेको कहा और स्वयं वनमें घुस गया। वनके भीतर जाकर देखा कि सिंह निःशंक सो रहा है। उसे देख कर उसने सोचा कि सोते मारना पुरुषार्थ नहीं है। उसे जगा कर मारना ही उचित होगा। इतनेमें घोड़ेकी आवाज सुनकर सिंह जाग पड़ा। दोनोंकी आँखें चार हुई। सिंह पूँछ पटक कर गरजा और तड़प कर घोड़ेके सिर पर धावा किया। तब तक राजकुँवरने खाँडा निकाल कर उस पर वार कर दिया। उसका सर धड़से अलग हो गया; धड़से पाँव टूट गये। साथ

ही साथका बाण तड़क कर राजकुँवरके हृदयमें आ लगा।[१] उसी समय हाथियोंका समूह आया और उसे पकड़ना चाहा। राजकुँवरने उन पर बाण छोड़ा। वह हाथीके मस्तकमें आ लगा और चिग्घाड़ता हुआ भागा।

दोनों ही सिंह जमसे भी विकराल थे। दोनोंको कालने कालसे ही मारा। सिंह और राजकुँवर दोनों ही मर गये। कुँवरके गिरते ही पारधी पेड़से उतरा। देखा कि वह निर्जीव पड़ा है।

किसीने जाकर राजाको इसकी सूचना दी। सुनते ही राजा जो उठ कर भागा तो ठोकर खाकर गिर पड़ा और वहीं उसकी साँस निकल गयी। करनराय तत्काल जंगलमें पहुँचा। पारधीको जब उसके आनेकी आहट मिली तो वह भूमि पर लोट कर रोने लगा। करनरायने भी आत्महत्या करनी चाही। लोगोंने उसकी कटार थाम ली और समझा बुझा कर अन्त्येष्टि-क्रिया करनेके लिये तैयार किया। लोग राजकुँवरके शवको लेकर नगरमें आये। गंगा-तट पर चिता रची गयी। शवके साथ मिरगावती और रूपमणि सती हो गयीं। उनके साथ राजकुँवरके कर्मचारी और नगरके बहुतसे लोग भी जल मरे। (कड़वक ४१०–४२९)

पश्चात् राजकर्मचारियोंने करनरायको घर लाकर राजगद्दी पर बैठाया। (कड़वक ४३०)

कथाका मूल-स्रोत

मिरगावतीकी यह कथा कुतुबनकी अपनी मौलिक कल्पना नहीं है, यह उन्होंने स्पष्ट रूपसे स्वीकार किया है। उनका कहना है—

पहिलैं हिन्दुई कथा अही।
फुनि र काँहि तुरकी लै कही॥
फुनि हम खोलि अरथ सब कहा।
जोग सिंगार बीर रस अहा॥ ४३१।१–२

उनके इस कथनसे जान पड़ता है कि मूलतः यह कोई भारतीय कथा थी जिसे किसीने अरबी या फारसी (तुर्की) में रूपान्तरित किया था। उस रूपान्तरित कथाको लेकर उन्होंने योग, शृंगार और वीर रससे युक्त यह कथा कही है।

मध्यकालमें भारतीय कथाओंमें बहुतोंके अनुवाद अरबी-फारसीमें हुए थे और उन्होंने लोक-ख्याति प्राप्त की है। अतः प्रस्तुत कथाके मूलतः भारतीय भाषामें प्रचलित रहने और उसके अरबी-फारसी अनुवाद होनेकी बातमें कोई असाधारणता नहीं है। किन्तु हमें किसी भारतीय साहित्य अथवा लोकमें प्रचलित ऐसी कथाका ज्ञान नहीं

१. खोज रिपोर्टमें राजकुँवरके हाथीसे गिरकर मरने की बात कही गयी है। रामचन्द्र शुक्लने भी इसी बातको दुहराया है। शिवगोपाल मिश्रने लिखा है कि जगनेपर सिंह बिजलीकी भाँति राजकुँवरपर टूट पड़ा और उसे मार डाला। (सम्मेलन संस्करण, पृ० २३)

हो पाया जिसमें हम **मिरगावती**की इस कथाको झाँक सकें। न कोई अरबी-फारसीमें अनूदित कथा-साहित्यकी जानकारी हो पायी है जिसमें यह कथा उपलब्ध हो। भारतीय कथा साहित्य अगाध है। हो सकता है किसी अज्ञात कोनेमें यह कथा छिपी पड़ी हो। यह कथा **कुतुबन**के समयमें लोक-प्रचलित थी तो निसन्देह वह अपभ्रंश साहित्यमें ही कहीं प्राप्त होगी।[१] वहींसे वह अन्यत्र गयी होगी।

मूल रूपमें **मिरगावती**की कथा भले ही उपलब्ध न हो, उसमें कोई ऐसा अभिप्राय नहीं है जो भारतीय साहित्यका जाना पहचाना न हो। **हजारीप्रसाद द्विवेदी**ने इस कथाके दो अभिप्रायोंको विदेशी बताया है। उनका कहना है कि पुरुषका एकान्तिक प्रेम और प्रियाको प्राप्त करनेके लिए कठिन साधना तथा प्रियाका धोखा देकर उड़ जाना और दूसरे देशमें राज्य करना, ये दोनों ही कथानक रूढ़ियाँ इस देशके लिये नयी हैं।[२] किन्तु अपभ्रंश काव्योंके देखनेसे ज्ञात होता है कि **हजारीप्रसाद द्विवेदी**की यह धारणा भ्रान्तिपूर्ण है। ये दोनों ही रूढ़ियाँ इस देशके लिए नयी नहीं हैं।

मुनि कनकामर (१०६५ ई०) रचित **करकण्ड-चरिउ**में करकण्डुके पत्नी-वियोग और उसकी व्याकुलताका राजकुँवरकी व्याकुलताके सदृश ही वर्णन है। करकण्डु उसी व्याकुलतामें नाना विपत्तियोंको झेलता हुआ सिंहलद्वीप पहुँचता है। इसी प्रकार पन्द्रहवीं शतीकी रचना **रयणसेहरी-कहा**में भी रत्नशेखर सिंहल द्वीपकी राजकुमारी रत्नवतीके प्रति आकृष्ट होकर विकल होता है और उसी विकलतामें सिंहलकी यात्रा करता है। इस प्रकारके अन्य अनेक कथा प्रसंग हैं जिनमें नायक नायिकाकी प्राप्तिके लिये कष्ट सहन करता है। राजकुँवरका मिरगावतीके प्रति विकलता और उसकी खोजके लिए यात्राको इन कथाओंसे किसी प्रकार भिन्न नहीं कहा जा सकता।[३]

इसी प्रकार मिरगावतीके अपने पिताके राज्यपर शासन करनेवाली बातमें भी कोई अनोखापन नहीं है। भारतीय साहित्यमें स्त्री-राज्य और त्रिया-देश सम्बन्धी अनेक कहानियाँ उपलब्ध हैं। मत्स्येन्द्रनाथके प्रसंगमें त्रिया देशकी रानीकी चर्चा तो अति प्रसिद्ध है ही। दिल्लीकी सल्तनतपर कुछ ही सौ बरस पहले रजिया अपने पिताके उत्तराधिकारिणीके रूपमें शासन कर चुकी थी। उसका आदर्श **कुतुबन**के सामने रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

मिरगावतीकी अन्य रूढ़ियों और अभिप्रायोंको भी भारतीय कथा-साहित्यमें सरलतासे ढूँढ़ा जा सकता है। पर सबकी विशद चर्चा न कर हम केवल कुछ रूढ़ियोंकी ओर ही ध्यान आकृष्ट करना चाहेंगे।

---

१. परशुराम चतुर्वेदीका भी मत है कि मृगावतीकी कथा, सम्भवतः किसी प्राचीन अपभ्रंश रचनासे ली गयी है। भारतीय प्रेमाख्यानकी परम्परा, १९५६ ई०, पृ० १२०।

२. हिन्दी-साहित्य, १९५२ ई०, पृ० २६५।

३. रामका सीताके वियोगमें वन-वन भटकते फिरनेका भी इसी प्रसंगमें उल्लेख किया जा सकता है।

१. पशु-पक्षीका रूप धारण करनेका अभिप्राय तो भारतीय साहित्यमें अत्यन्त प्राचीन है। उसका उल्लेख रामायण महाभारतमें भी उपलब्ध है। जैन कथा-साहित्य तो उससे भरा पड़ा है। मिरगावतीका मृगी रूप धारण कर राजकुँवरको अपनी ओर आकृष्ट करनेका प्रयास बरबस रामायणकी ओर ध्यान आकृष्ट करता है और मारीचिके सुवर्ण मृग बनकर सीताका ध्यान आकृष्ट करनेकी घटनाकी याद दिलाता है। उपवन-में कबूतरों और मोरोंका मानव रूप धारण कर केलि-क्रीड़ा करना, महाभारतकी उस कथाका याद दिलाता है जिसमें कमन्द ऋषि और उनकी पत्नीके मृग रूप धारण कर केलि करनेका उल्लेख है।[1]

२. मानसरोदकमे मिरगावती और उनकी सखियोंकी जलक्रीड़ा तथा राज-कुँवर द्वारा मिरगावतका चीरहरण, भागवत वर्णित कृष्ण द्वारा गोपियोंके चीरहरणकी याद दिलाता है।

३. राक्षसके भोजनके निमित्त पारी बाँधनेकी बात भी कथा-साहित्यका एक अत्यन्त जाना-पहिचाना अभिप्राय है। **पंचतन्त्र**की एक कथामें जगलके पशुओं द्वारा सिंहराजके भाजनके लिए आपसमें पारी बाँधकर एक पशु नियमित रूपसे भेजने का उल्लेख है। महाभारतमें भी इसी प्रकारको एक कथा है। राक्षसके भोजनके निमित्त एक ब्राह्मणकी पारी थी। दैवयोगसे उस दिन उसके घर भीम अतिथि रूपमे पहुँच गये थे। वे उस ब्राह्मणके स्थान पर राक्षसके पास गये और राक्षसको मार डाला। इस ढंगकी एक पौराणिक कथा भी है। इस कथाके अनुसार सर्पराज वासुकि और गरुड़के बीच एक समझौता हुआ था। जिस दिन शंखचूड़ नामक सर्पकी बारी थी, उस दिन जीमूतवाहन उसके स्थान पर गया।[2]

४. पक्षियोंके परस्पर वार्तालाप द्वारा सूचना पानेका अभिप्राय भी कथा-साहित्यमें बहुत प्रसिद्ध है। **नेमिचन्दको** *लीलावती* कथामें चूतप्रिय और बसन्तदोहला नामक शुक-दम्पतीकी चर्चा है जो वृक्ष पर बैठे परस्पर कुसुमपुरीकी राजकुमारी वासव-दत्ताकी चर्चा कर रहे थे। उनकी बातोंसे कन्दर्पको वासवदत्ताका परिचय उसी प्रकार मिला जिस प्रकार प्रस्तुत कथामें राजकुँवरको कंचनपुरके निकट होनेकी सूचना वृक्ष पर बैठे पक्षियोंकी बातचीतसे मिलती है। **कथासरित्सागर**में भी इस ढंगका अभिप्राय है। वहाँ शक्तिदेव नामक व्यक्तिको पक्षियोंकी बातचीतसे कनकपुरीका पता लगनेकी बात कही गयी है।[3]

इसी प्रकार **मिरगावती**के अन्य अभिप्रायों और रूढ़ियोंको भारतीय कथा-साहित्यमें ढूँढ़ा और पहचाना जा सकता है। गुप्तोत्तरकालमें समुद्रयात्रा कर भारतीय सार्थवाह दूरस्थ द्वीप-द्वीपान्तरों तक जाने लगे थे। लौट कर उनका मार्गकी कठिनाइयों, समुद्री तूफानों, तूफानसे नावोंके फट जानेकी घटनाओं, समुद्री जीवोंके आक्रमणों, वह

१. इस कथाका उल्लेख कथासरित्सागरके चौथे लम्बकमें भी है।

२. यह कथा कथासरित्सागरके चौथे लम्बकमें भी प्राप्त है।

३. पाँचवा लम्बक, विद्याधर शक्तिवेगकी कथा।

कर अज्ञात किनारों पर पहुँच जाने और दस्युओं तथा नर-भक्षियों आदिके हाथ पड़ जानेकी घटनाओंका अतिरंजित वर्णन करना स्वाभाविक था। सार्थवाहोंकी इन सच्ची तथा मनगढन्त कहानियोंने तत्कालीन कथा-साहित्यमें स्थान प्राप्त कर लिया था। उन्होंने कथाकारोंको मौलिक कल्पनाएँ करनेकी सामग्री प्रस्तुत कर दी थी। दूसरी ओर अरब और फारसके सम्बन्धसे सहस्ररजनी (अलिफ लैला) जैसी कथाओंसे भी भारतीय परिचित होने लगे थे। अतः इन सबसे प्राप्त सूत्रोंसे कथा-साहित्यमें साहसिकता और मार्गकी दुर्गमताके वर्णन समाविष्ट हो गये थे। फलतः **मिरगावतीमें** जिस ढंगकी साहसिकता और मार्गकी दुर्गमताकी बात कही गयी है, उस ढंगकी कथा-रूढ़ियाँ खोज करने पर भारतीय कथाओंमें अनेक मिल जायेंगी।

वर्णन-विधान पर पूर्ववर्ती प्रभाव

कथा-अभिप्रायों और रूढ़ियोंके साथ-साथ मिरगावतीकी वर्णन शैली पर भी पूर्ववर्ती कथा-साहित्यका पूर्ण और स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। पूर्ववर्ती संस्कृत या अपभ्रंश साहित्यसे **कुतुबनने** कितना ग्रहण किया है, यह अपने-आपमें अनुसन्धानका विषय है। अतः इस सम्बन्धमें यहाँ सांगोपांग रूपसे तो कुछ कहा नहीं जा सकता। हाँ, कुछ बातोंकी ओर इंगित किया जा सकता है। यथा—

राजकुँवरके विरह-वर्णनमें ऋतु-वर्णन और रूपमणिके विरह-वर्णनमें जिस प्रकार मास-वर्णन किया गया है, वह भारतीय साहित्यके लिए जाना पहचाना है। आरम्भसे ही ऋतु-वर्णन कवियोंका प्रिय विषय रहा है। वे उसका वर्णन प्रसंगानुसार अथवा केवल वर्णनके लिए ही करते रहे हैं। इस दृष्टिसे **कालिदासका ऋतुसंहार** तो प्रसिद्ध है ही। पीछे चल कर नायिकाओंके विरह वर्णनके लिए कवियोंने ऋतुओं और महीनोंको माध्यम बनाया, बारहमासे लिखे। **अद्दहमाण** (अब्दुल रहमान)ने **सन्देश रासकमें** विरहणीके भावोंको व्यक्त करनेके लिए ऋतु-वर्णनका सहारा लिया है। जैन साहित्यमें बारहमासेका प्रयोग तेरहवीं शताब्दीसे ही हो गया था। **विनयचन्द्र सूरि** कृत **नेमिनाथ चतुष्पदिकामें** राजमति (राजुल)के विरहकी अभिव्यक्ति बारहमासेके रूपमें किया गया है। राजमतिका विवाह नेमिनाथ (बाइसवें तीर्थंकर) से होनेकी बात थी। इसी बीच बलि-पशुओंको देखकर नेमिनाथको वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे तपस्याके निमित्त गिरिनार पर्वत चले गये और विवाह न हो सका। राजमति (राजुल)ने विरहका अनुभव किया। उसका वर्णन कविने बारह मासेके रूपमें किया है जो श्रावणसे आरम्भ होकर आषाढ़ पर समाप्त होता है। प्रतिमास राजमति अपनी विरहावस्था व्यक्त करती है और सखियाँ उसे सांत्वना देती हैं। हिन्दी काव्योंमें **बीसलदेव रासो, चन्दायन** और **मैना-सतमें** भी बारहमासेका इसी रूपमें प्रयोग हुआ है।

सौन्दर्य वर्णनके लिए नख-शिख वर्णन भी अपभ्रंश साहित्यमें प्रचुर परिमाणमें उपलब्ध है। उनके अनुकरणपर **मौलाना दाऊदने चन्दायनमें** चाँदका रूप-सौन्दर्य वर्णन किया है। उसी ढंगपर मिरगावतीका रूप वर्णन **मिरगावतीमें** किया गया है।

अपभ्रंश काव्योंमें वृक्षों, फूलों, फलों और वस्तुओंके नाम गिनानेकी प्रवृत्ति काफी देखनेमें आती है। तत्कालीन कवि मौके-बेमौके वृक्षों और फूलों आदिका उल्लेख करते रहे हैं। **अद्दहमाण** (अब्दुल रहमान) ने **सन्देश रासक**में इसी तरह फूलोंके नाम गिनाये हैं। **चन्दायन**में **दाऊद**ने गोवर नगरके वर्णनमें, भोजके उल्लेखमें, युद्धकी तैयारी-में विविध वस्तुओंकी लम्बी सूचियाँ प्रस्तुत की हैं। **कुतुबन**ने भी उनका अनुकरण किया है किन्तु वे इस प्रकारकी सूची प्रस्तुत करनेमें संयत रहे हैं। उन्होंने एक स्थलपर कुछ घोड़ोंके नाम गिनाये हैं (कड़वक ९३) और दूसरे स्थलपर फूलोंके (कड़वक २०६-२०७)।[1]

नैसर्गिक वस्तुओंको विरहणियोंका सन्देशवाहक बनाकर भेजना संस्कृत काव्यका एक अत्यन्त प्रसिद्ध विषय है। **कालिदास**का **मेघदूत** इसका एक अनुपम उदाहरण है। **कुतुबन**ने भी **मिरगावती**में पवन-दूतकी कल्पना की है जो मिरगावतीके कहनेपर दैत्य द्वारा अपहृत राजकुँवरको ढूँढ़ने जाता है और लौटकर मिरगावतीको उसका पता बताता है।

इन बहुप्रचलित काव्य विधानोंके अतिरिक्त, **मिरगावती**के रचना-विधानमें ऐसे बहुतसे तत्त्व हैं जो **चन्दायन**से अपनाये गये जान पड़ते हैं। यथा—

१—राजकुँवरके जन्मपर ज्योतिषियोंका आना और भविष्य कहना, चाँदके जन्मपर ज्योतिषियोंके आने और भविष्य कहनेके साथ समानता रखता है।

२—राजकुँवर जिस प्रकार मिरगावतीका नख-शिख वर्णन धाईसे करता है, उसी प्रकार बाजिरने चाँदका रूप-वर्णन राजासे किया है।

३—जिस प्रकार **चन्दायन**में चाँदके धौराहरमें चित्रकारीका वर्णन है। उसी प्रकार **मिरगावती**में राजकुँवरके धौराहरके चित्रकारीका वर्णन है।

४—जिस प्रकार **चन्दायन**में चाँद लोरकपर मुग्ध होकर अचेत होती है और बृहस्पति उसे होशमें लाती है, उसी प्रकार मिरगावतीके रूपपर मुग्ध होकर राजकुँवर अचेत होता है और धाई उसे होशमें लाती है।

५—जिस प्रकार **चन्दायन**में नागरिक बाजिरसे उसके अचेत होनेका कारण पूछते हैं, लगभग उसी प्रकार **मिरगावती**में वनवाले भवनमें धाई और मिरगावतीके राजप्रासादमें मिरगावतीकी सहेलियाँ राजकुँवरसे उसके अचेत होनेका कारण पूछती हैं।

६—जिस ढंगसे **चन्दायन**में चाँदके साँप डँसनेपर लोरकको विलाप करते पाते हैं, उसी ढंगसे **मिरगावती**में राजकुँवर मिरगावतीके उड़ जानेपर विलाप करता है।

७—जिस ढंगसे **चन्दायन**में पूजाके निमित्त जाती चाँदकी सखियोंका वर्णन किया गया है, उसी तरहका वर्णन **मिरगावती**में मिरगावतीके सखियोंका वर्णन है (कड़वक ८०)।

८—घोड़ोंकी सूची, गोरखपन्थी योगीका वेश-वर्णन **चन्दायन** और **मिरगावती**में प्रायः एक समान है।

---

१. बीकानेर प्रतिमें इस प्रकारके अनेक स्थल हैं पर हमने उन्हें प्रक्षिप्त माना है।

९—जिस ढंगसे **चन्दायनमें** लोरकने न्याय सभा में अपना परिचय दिया था उसी ढंगपर **मिरगावतीमें** राजकुँवर राजाके यहाँ अपना परिचय देता है।

१०—**चन्दायनमें** युद्ध-विजयके पश्चात् लोरक हाथीपर बैठाया गया और राज-नारियाँ उसे देखने आयीं। उसी तरह **मिरगावतीमें** राक्षस-वधके पश्चात् राजकुँवर हाथीपर बैठाया गया और नागरिक उसे देखने आये।

११—**चन्दायनमें** जिस तरह चाँद-बावनके विवाह और उससे सम्बद्ध ज्योनार-की चर्चा है, उसी तरहका वर्णन **मिरगावतीमें** राजकुँवर-रूपमणिके विवाह और ज्योनारका है।

१२—कंचननगर पहुँचनेपर राजप्रासादमें मिरगावती राजकुँवरको पहचानते हुए भी न पहचाननेका बहाना करके अनजान ढंगसे प्रश्न करती है, धमकाती है और राजकुँवर उसका जिस ढंगसे उत्तर देता है वह **चन्दायन** वर्णित चाँदके धौराहरपर लोरकके पहुँचनेपर चाँदके व्यवहारके समान ही है।

१३—मिरगावतीके अन्तःपुरमें सुगन्धियोंका वर्णन और मिरगावती-राजकुँवर तथा रूपमणि-राजकुँवरका केलि-वर्णन **चन्दायनके** चाँदके धौराहरके सुगन्धि-वर्णन और चाँद-लोरकके रति वर्णनके समान है।

१४—जिस प्रकार चाँदके ससुरालसे वापस आनेपर उसकी सहेलियोंने उससे रति-सुखके सम्बन्धमें जिज्ञासा की थी, उसी प्रकारकी जिज्ञासा **मिरगावतीमें** हम मिर-गावती-राजकुँवर-समागमके पश्चात् मिरगावतीकी सहेलियोंको करते पाते हैं।

१५—**चन्दायनके** मैनाके समान ही **मिरगावतीमें** रूपमणि अपने पतिके वियोगमें विसूरती है और टाँडके आने पर उसके माध्यमसे सन्देश भेजती है और बारहमासेमें अपनी विरह-वेदना व्यक्त करती है।

१६—**मौलाना दाऊदने** मैनाके विरहका टाँड लाद कर चलने पर, उसके झारसे मार्गके वस्तुओंके जलने और काले होनेकी जो कल्पनाकी है, उसी कल्पनाको **कुतुबनने** भी रूपमणिके विरहके टाँडके प्रसंगमें अपनाया है।

१७—दोनों ही काव्योंमें विरहणियोंके सन्देश-वाहक ब्राह्मणके रूपमें उपस्थित होते हैं और दोनोंके वेशका एक-सा ही वर्णन है। दोनों ही समान ढंगसे सन्देश प्रस्तुत करते हैं।

१८—**चन्दायनमें** जिस तरह लोरकके दल-बल सहित वापस लौटने पर गोबरमें खलबली मचती है, वैसी ही खलबली मचने की बात **कुतुबन** ने राजकुँवरके सुबुद्धया लौटने पर कही है।

१९—जिस तरह **चन्दायनमें** लोरकके गोबर पहुँचनेके एक दिन पूर्व मैनाका मन उल्लसित हुआ और उसने रातको स्वप्न देखा और उसकी सासने उसका फल विचारा, उसी तरह हम **मिरगावतीमें** रूपमणिको राजकुँवरके आनेसे पूर्व उल्लसित होते और स्वप्न देखते पाते हैं और सखी स्वप्नका विचार करती है।

२०—**मिरगावतीमें** रूपमणि और मिरगावतीकी कहा-सुनीका रूप बहुत कुछ वैसा ही है जैसा कि **चन्दायनमें** चाँद और मैंनाके बीच मन्दिरमें हुई कहा-सुनीका है।

२१—जिस तरह **चन्दायनमें** लोरक और मैंनाके बीच कहासुनी होने पर खोलिन आकर दोनोंको शान्त करती है और मैंनाको समझाती है, उसी तरह मिरगावतीमें हम सासको दोनों बहुओंकी कहा-सुनीको शान्त करते और समझाते पाते हैं।

इस प्रकार **मिरगावतीकी** कथा **चन्दायनकी** कथासे सर्वथा भिन्न होते हुए भी **चन्दायनके** उपादानोंसे अत्यधिक प्रभावित ज्ञात होता है। **चन्दायनका** प्रभाव **मिरगावती** पर यहीं तक सीमित नहीं है। अनेक स्थलों पर **चन्दायन** के भाव और कहीं कहीं तो वाक्य और शब्दावली भी **मिरगावतीमें** अविकल रूपमें प्राप्त होते हैं। ऐसे कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं जो अनायास दृष्टिमें आ गये हैं—

मिरगावती[1]	चन्दायन[2]
राजा पूत मँदिर औतरा। १७।१	**सहदेव मँदिर चाँद औतरी। ३३।१**
सरवर तीर बरिस दिन रहा।	**एक बरिस लोरक मढ़ि सेवा।**
चाह कुरंगिनि मगको गहा॥ ४५।१	**चाँद सनेह मनायसि देवा। १७५।१**
संगि न साथी मीत न आहा। ५१।१	**संगि न साथी मीत न धाई। १८२।२**
माई मोर तुम धाइ न होहू। ५२।१	**माइ मोर तुम सास न होहू। २३८।१**
सास न होहु माइ तुम्ह मोरी। ४०८।१	
चगत सवन माँझ तिल भया। ५९।१	**नैन सवन बिच तिल एक परा। ८५।१**
विध सर कमल भुजंग निरमया। ५९।१	**पदम पुहुप सिर बैठ भुजंगू। ८५।२**
सो तिल मुखका भयउ सिंगारू। ५९।४	**मुख क सोहाग भयउ तिल संगू। ८५।२**
तिलक फूल जस ऊपम दीजै। ६२।२	**तिलक फूल जस फूल सुहावा। ८०।४**
देव सराइहिं तैसो गोरी। ६२।३	**देव सराहहिं तैसो गोरी। ८६।३**
जीभ जानु मुँह कँवल अमोला।	**बानि जैसि मुख जीभ अमोला।**
फूल झरहिं जो हँसि हँसि बोला। ६५।५	**फूल झरहिं जो हँसि हँसि बोला। ८३।५**
देखत रूप विमोहहि देवा। ६९।५	**देखत रूप विमोहे देवा। ९४।७**
पूरी जानु गुनवार पकाये। ७२।३	**जानु सुहारी घिरत पकाये। ८९।३**
काहे बरजा मोर सँघाती। १०६।१	**काहे देखी तैं मोर सँघाती। ३४९।२**
धन सो जननि जैं यह जाना। १४५ ४	**धन सो जननि अइस जैं जना। १४५।४**
छींपर नेत पटोर बिछाई। १५२।४	**छीपर नेत पटोर बिछाई। ४३।२**
मारग नेत पटोर बिछाये। ३७६।१	
सिखर ऊँच बड़ तरुवर, औ फल लाग अकास। २२१।६	**बिरिख ऊँच फल लाग अकासा। ६८।२**

१. प्रस्तुत संस्करण।
२. बम्बई संस्करण।

मिरगावती	चन्दायन
डंडाकारन बीछ बन'हाँ। २८३।३	डंडाकारन बीजु बनाहाँ।[1] १९६।२
दूसर समो आइ अब लागा। ३२१।५	दूसर समो आइ अब लागा। ४०१।५
मैं तुम्ह आगे सब दुख टेरा। ३३४।१	मैं सब दुख तुम्ह आगे रोवा। ४१२।१
दन्द उदेग उचाट लदावा। ३३५।१	दन्द उदेग उचाट बिसाहा। ४१७।२
बिरह वियोग संताप जो लीन्हा। ३३५।२	सोंक संताप बिरह दुख लीन्हा। ४१७
खरभर सुन सासु गंगा,	सुन खरभर खोलिन तस धाई।
आई उन्ह ठाँ धाइ। ४०३।६	जस भगिरथ यह लागिन आई। २४५।१
एक एक बोल मोंति जस पिरवा,	एक एक बोल मोंति जस पिरवा,
बकता चित मन लाइ। १३।७	कहउ जो हीरा तोर[2]। ३०६।७

इस प्रकारके भाव और शब्दावलीकी समानता खोज करनेपर बड़ी संख्यामें मिल सकती है। इन सबको मात्र आकस्मिक, संस्कारजन्य अथवा अविछिन्न विचार परम्पराका परिणाम नहीं कहा जा सकता। यह स्वीकार करना ही होगा कि **कुतुबन**के सामने **चन्दायन** रहा है और उससे उन्होंने बहुत कुछ ग्रहण किया है।

अन्तर्कथाएँ

कुतुबनने कथा-वस्तु और रचना विधानमें पूर्वानुकरणके साथ-साथ लोक-प्रचलित अनेक कथाओंका उपयोग अपने काव्यके सँवारनेमें किया है। इन कथाओंका उपयोग उन्होंने मुख्यतः उपमा, उत्प्रेक्षा या रूपकके रूपमें किया है और सर्वत्र उनका संकेत मात्र दिया है। उनका कथाओंका इस रूपमें प्रयोग, इस बातका द्योतक है कि ये कथाएँ लोक-जीवनमें उस समय इस प्रकार व्याप्त थीं कि उनका संकेत मात्र उनके जानने समझनेके लिए पर्याप्त था।

इन कथाओंमें **कुतुबन**ने सबसे अधिक उल्लेख **रामायण**की घटनाओंका किया है। इनसे पूर्व **मौलाना दाऊद**ने भी **चन्दायन**में रामायणकी घटनाओंकी चर्चा की है। इन दोनोंने रामायणकी घटनाओंको जिस प्रकार ग्रहण किया है, उससे ऐसा ज्ञात होता है कि **तुलसीदास** द्वारा **रामचरित मानस**की रचना किये जानेसे बहुत पूर्व भारतीय लोक-जीवनमें राम-कथा व्याप्त हो चुकी थी। यही नहीं, उनके समयमें लोग **राम-कथा** पर आधारित **रामायण** नामक किसी ग्रन्थसे भी परिचित थे। **चन्दायन**के अनुसार तो लोग उसका पाठ भी किया करते थे (परवा राम रमायन कहहीं[3])। **कुतुबन**ने भी राम रमायनका उल्लेख किया है (भारत राम रमायन चीता)।[4]

---

१. यह पंक्ति पद्मावतमें भी है। वहाँ वासुदेवशरण अग्रवालका पाठ है—डंडक आरन बींझ बनाहाँ। (१३७।४)।

२. मनेर प्रतिमें उपलब्ध पाठ। इसकी ओर हसन असकरीने अपने लेखमें ध्यान आकृष्ट किया है।

३. चन्दायन, बम्बई संस्करण, २९।२।

४. प्रस्तुत संस्करण, ३९।४।

मिरगावतीमें रामायणके निम्नलिखित व्यक्तियों और घटनाओंका उल्लेख है :—

१. राम	आन भई जस राम कली का। २५६।४
	राघो बंस राम औतारा॥ ३५६।५
२. राम-लक्ष्मण	राम लखन जस सीता ठाऊँ। १७६।४
३. सीता	कहाँ सो तिरिया सीता सती। ४११।२
४. हनुमान	वे हनिवन्त छुड़ाये कर पर। १७६।६
	जस हनिवन्त सामि के काजा। २६६।५
	पिय बियोग भो सकती बान, जो लागेउ मुहि र अपूर।
	को आने हनिवन्त जिउ, सजन सजीवन मूर॥ २८१।६-७
	कोर र राम मिरवइ सिय आनी। २८२।१
	हनिवन्त जैस करो उपकारा। २९०।३
	हनिवन्त मूर सकती कहँ आनी। ३००।५
५. दशरथ सुत-वियोग	सुत वियोग दसरथ जस कीन्हा। ११०।२
६. सीता-हरण	रावन हरी राम घर सीता। ३९।४
	रावन सिय हरी जो आयी। १०२।५
	सिय रावन जो लंका हरी। १७६।५
७. राम-वियोग	राम बियोग भयउ जिहि कारन। १०२।७
८. सीता-वियोग	जस र सिय कहँ दिन दस दुआपर,
	राम क भयउ बियोग। २७९।६
९. बाली-वध	यहै राम जैं मारेउ बारी (बाली)। १४५।९
१०. लंका-दहन	हनिवन्त सिय लगि जारस लंका। १०५।३
	यहिया हनिवन्त लक गढ़ दहा। २१८।४
११. सेतु-बन्धन	रामा सेत बाँधेउ सिय लागी। १०५।२
१२. लंका में अंगद	अंगद जाँव लंका मँह रोपी। ३९।५
१३. रावण-वध	को राम जें रावण मारा, सिय लाग हन जिय। १४०
	रावन मार सिय लै आवा। १४५।१
	इहे राम जै रावण मारा। १४५।३

रामायणकी तरह ही महाभारतकी कथासे भी जनमानसका परिचय था, ऐसा **कुतुबनके भारत राम रमायन चीता** (३९।४) कथनसे भासित होता है। उन्होंने महाभारतके कुछ पात्रों और घटनाओंका भी उल्लेख किया है :

१. युधिष्ठिर	धरम दुधिस्टिल उह कहँ छाजा। ९।३
	चेरी कहा दुदिस्टिल हरा।
	कबिरा दानों कर अपकारा। २७८।४

२. अर्जुन	अरजुन राहु बेध जस कीता ।
	कौरो मार दुरपदी जीता ॥ ४०।३
	करन अरजुन भै जस खेता । ५७।४
	जस अरजुन अहिबर्न के मारे । ११०।२
	जो पण्डो कौरो दर जीता ।
	यहै धनुक अरजुन कर लीता ॥ २१८।१
	कित अरजुन बाना उर सन्धी । ४१९।१
३. भीम	भीम उरेह कीचक मार ।
	लिहा दुसासन भुएँ उपार ॥ ४०।१
	इहै भीम कर कीचक मारी ।
	इहै दुसासन भुजा उपारी ॥ १४५।४
	कौरा दानो पण्डो हरी ।
	उनकहँ जाइ भीउ उपकरी ॥ १७७।५
४. सहदेव	पण्डित सहदेव लिहा सयाना । ४०।४
५. द्रौपदी	कहाँ दुरपती पाँचों रती । ४१९।२
६. कर्ण	भारत जीत करन सर भेजी । ५७।३
	बलि औ करन न सरभरि पावा । ९।४
७. जनमेजय	जस र जलमदेव बरज न कीन्हा । २६९।२
	जस र जलमदेव साँप बिपारी ।
	सबै आन हुतासन जारी ॥ २८६।३

कृष्ण-कथाका प्रचार कुतुबनके समय हो चला था, ऐसा मिरगावतीसे प्रकट होता है। उसमें तीन स्थलोंपर कृष्णसे सम्बन्धी घटनाओंका उल्लेख है—

कान्ह सहित सोलह सौ गोपी । ३९।५
इहै कन्ह जैं नाथसि कारी । १४५।२
इहै कन्ह जैं कंस बितारा । १४५।३

पौराणिक कथाओंकी ओर भी कुतुबनका ध्यान गया है और उन्होंने उनका उल्लेख **मिरगावती**में किया है।

१. सागरमंथन	कहाँ सो बल जिह सायर मथा । ४१८।५
२. नृसिंह	इहै सिंह हरनाकुस हना । १४५।५
३. वामन	जस बलि बावन बाँध अडारा । २८६।१
४. बलि	बलि औ करन न सरभरि पावा । ९।४
५. हरिश्चन्द्र	हरिचन्द परहि भुलाई । ४१९।६
६. श्रवण	जस अन्धा अन्धी बिनु सरवन,
	फेकरि मुए चिल्लाय । ११०।६

७. परशुराम	पारुधि परसुराम कलजुग मँह । ५६।६
	सोइ जावस परसुराम कर, सोइ पारुध सोइ बान । २१८।६
८. धुन्धमाल	कहाँ सो धुन्धमाल कै कथा । ४१८।५

कुतुबनका ध्यान ऐसी ऐतिहासिक घटनाओंकी ओर भी गया है जो उस समय-तक कथा-साहित्यमें प्रवेश पा चुकी थीं।

१. विक्रम-बैताल	जइसे सेउ विक्रम कै, जिय सेंउ किय बैताल । २६६।६
२. विक्रम-भोज	जस भोज विक्रम पछिताना ।
	जस भैरोनन्द हुत सयाना ॥ २६९।४
३. विक्रम	जस विक्रम राउ उबारा । २७५।२
	कहाँ सूर विक्रम सकबन्धी । ४१९।१
	सुवा मारि राजा पछताना । २६९।३
४. भोज	चौदह विद्या भोज निदाना ।
	वररुचि एक अधिक यह जानाँ ।
	राज हार धरैं कहँ दीन्हा ।
	लैं र छुपायसि दइ न चीन्हा ॥ २८९।१-२
	कहाँ भोज दस चारि निदाना ।
	परकाया परवेस जो जाना ॥
	संकर बचा सिध जो करता ।
	कर पसारि जिंह के सिर धरता ॥ ४१९।३-४
५. जलन्धर	जस र जलन्धर कुएँ अडारा । २७५।३
६. दंगवै-भीम	जस दंगवै भीम परगाही । १३३।५

कुतुबन प्रेम-काव्यकी रचना कर रहे थे। उनका ध्यान प्रेम-कथाओंकी ओर स्वाभाविक रूपसे जाना चाहिए था। पर आश्चर्यकी बात है कि उन्होंने अपने समूचे काव्यमें केवल तीन ही प्रेम-कथाओंका उल्लेख किया है—

१. नल-दमयन्ती	नल जानौं भेंटी दमावती । २११।२
	हंस दमावति सेंउ मिरवहि । २४०।७
	को नल आनि दमावति पास । २८२।२
२. भर्तृहरि-पिंगला	लिहा भरथरी औ पिंगला । ४०।२
	जस भरथरी भयउ पंथ जोगी, रस पिंगला बियोग । १०५।७
	सुनतहि जइस रे पिंगलहि कीन्हा । २७८।३
३. माधवानल-कामकन्दला	कामाँ जनु माधोनल आई । २११।१
	माधोनल तों रावसि कामा । २७१।२

मिरगावतीमें उन प्रेम-कथाओंमें से एकका भी उल्लेख नहीं है, जो परवर्ती काव्योंके विषय हैं।

भौगोलिक परिचय

कथा-साहित्यमें उपलब्ध सामग्रीको सँजोकर कुतुबनने **मिरगावती**की जो कथा उपस्थित की है, उसमें कोई तत्त्व ऐसा नहीं है जिससे किसी प्रकार भी कल्पना की जा सके कि **पदमावत**की तरह इस कथाकी कोई ऐतिहासिक अथवा अर्ध-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रही होगी। किन्तु प्रायः कथाकारोंने अपनी कहानियोंमें भौगोलिक तत्त्व निरोपित करनेकी चेष्टा की है और अपने समयके प्रसिद्ध स्थानोंके साथ अपने कथाके पात्रोंका सम्बन्ध जोड़ा है। इस प्रकारकी सम्भावनाकी कल्पना **मिरगावती**में भी की जा सकती है।

इस दृष्टिसे देखनेमें ज्ञात होता है कि मिरगावतीकी घटनाएँ केवल तीन स्थानोंतक सीमित हैं—

१—राजकुँवरकी पितृभूमि—चन्द्रागिरि

२—रूपमणिकी पितृमिभू—सुबुद्ध्या

३—मिरगावतीकी पितृभूमि—कचननगर, जिसे कंचनपुर या कनकनगर भी कहा गया है।

ये नाम तत्कालीन किन्हीं स्थानोंके हैं या काल्पनिक, कहना कठिन है। इन नामोंसे प्रसिद्ध किसी स्थानका उल्लेख, जहाँतक हमारी जानकारी है, अन्यत्र कहीं प्राप्त नहीं हैं। कुतुबनने इन नगरोंकी दूरी दिशा आदिका कोई संकेत नहीं किया है जिससे इनकी वास्तविक या काल्पनिक स्थिति ढूँढ़ी जा सके। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि चन्द्रागिरि एक ओर था और सुबुद्धया तथा कंचनपुर दूसरी ओर। इनके बीच समुद्र था। वहाँतक पहुँचनेके लिए अगम बन और पर्वत भी पार करने पड़ते थे। ऐसा जान पड़ता है कि नौकानयन करनेवाले तत्कालीन साहसिक सार्थवाहोंकी कहानियोंसे प्रेरणा लेकर इन स्थानोंकी कल्पनी की गयी है। कवि कल्पनामें या तो सुदूरपूर्वके वे द्वीप रहे हैं जो गुप्तोत्तर कालमें भारतीय सम्पर्कमें थे या फिर अरब आदि देश, जिनके साथ मध्य-युगमें भारतका व्यापारिक सम्बन्ध था।

मानसरोदक और कदलीवन दो अन्य भौगोलिक नाम हैं जिनका उल्लेख कुतुबनने किया है। ये नाम अन्य काव्योंमें भी पाये जाते है। मानसरोवर हिमालय स्थित सुप्रसिद्ध झीलका नाम है और **महाभारत**में ऋषिकेशसे बद्रिकाश्रमतकके वन-प्रदेशको कदलीवन कहा गया है।[1] किन्तु इन भौगोलिक नामोंका प्रयोग इन प्रेमाख्यानक काव्योंमें वास्तविक भौगोलिक स्थानोंके रूपमें हुआ नहीं जान पड़ता। मानसरोदकका उल्लेख इन काव्योंमें सर्वत्र स्वच्छ और सुन्दर तालाबोंके लिए ही पाया जाता है। **मिरगावती**में उल्लिखित मानसरोदक चन्द्रागिरिसे केवल सात योजन दूर था। **पदमावत**में जिस मानसरोदककी चर्चा है वह सिंहल द्वीपमें स्थित था। इसी प्रकार कदलीवन भी किसी वन्य प्रदेश विशेषके लिए प्रयुक्त नहीं जान पड़ता। सम्भ-

---

१. वनपर्व, १४६।७५-७९।

वतः ऐसे वनोंके लिए, जिनमें सघनताके कारण प्रकाश कठिनतासे या बिलकुल नहीं पहुँच पाता था, कवियोंने कदलीवन या कजरीवनका नाम दिया है। **मिरगावती** वर्णित कदलीवन समुद्र पार कंचनपुरके मार्गमें कहीं था।

इस काव्यमें प्रासंगिक रूपसे तीन अन्य भौगोलिक नाम आये हैं।

१. नगर बहुत देखेहु बहु गाऊँ।
राजस्थान औ आनौं टाऊँ॥ ११७।२
२. राघो बंस जो आहे अयोध्या। १३५।४
३. पुरुखनाथ गुरु आह हमारेउ, गोरखपुर सेंउ खेल। १६१।७

राघव वंशकी राजधानीके रूपमें अयोध्याकी ख्याति सर्व विदित है। नाथपंथियोंके पीठके रूपमें गोरखपुरको प्रसिद्धि है ही। अतः इन दोनोंका प्रसंगानुसार उल्लेख स्वाभाविक ही है। उनके सम्बन्धमें कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं।

राजस्थान शब्दका प्रयोग **कुतुबन**ने राजधानी सदृश बड़े नगरोंके लिए किया है या उनका तात्पर्य किसी प्रदेश विशेषसे रहा है यह बहुत स्पष्ट नहीं है। दोनों ही सम्भावनाएँ अनुमान की जा सकती हैं। यदि उनका तात्पर्य किसी प्रदेश विशेष और उस प्रदेशसे था जिसे हमने स्वतन्त्रता उपरान्त राजस्थान नाम दिया है, तो यह उल्लेख ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्त्वका है। इस नामका इतना प्राचीन उल्लेख सम्भवतः अन्यत्र नहीं है।

जीवन-चित्रण

कहानी और कथाओंके आवरणमें कथाकार जो चित्र उपस्थित करता है, उसमें-से यदि अलौकिकता और असाधारणताके तत्त्वोंको अलग और वर्णनकी अतिशयोक्तियों-की उपेक्षा कर दी जाय तो कथाका जो स्वरूप बच रहता है, उसे बहुत कुछ रचना-कारके सम-सामयिक समाजका चित्र समझा जा सकता है; क्योंकि कथाकार अपनी कथाको अपने चारों ओरके जीवनसे ही सजाता सँवारता है। **कुतुबन**को राजाश्रित होनेके कारण तत्कालीन सामन्तवादी जीवनको अत्यन्त निकटसे देखने-सुननेका अवसर मिला होगा और उन्होंने उन्हींको अपनी कथाका उपादान बनाया होगा। इस दृष्टिसे **मिरगावती**को देखा जाय तो उसमें आरम्भिक सोलहवीं शतीके सामन्तवादी जीवनकी झलक देखनेको मिलती है।

पुत्राकांक्षा भारतीय जीवनमें अति प्राचीन कालसे रहा है। भारतीय समाजमें मोक्ष प्राप्तिके लिए सन्तानका होना आवश्यक समझा जाता था। इस कारण राजा-रंक सभी सन्तानके लिए लालायित रहते थे। कोई भी निःसन्तान नहीं रहना चाहता था और वह पुत्र प्राप्तिके लिए नाना प्रकारके उपाय करता था। प्रस्तुत कथा-में पुत्र-प्राप्तिके निमित्त उदारतापूर्वक दान दिये जानेकी चर्चा है। इससे ऐसा अनुमान सहज है कि उन दिनों दानका महत्व अत्यधिक माना जाता था।

बच्चोंके जन्मपर ज्योतिषी आवश्यक रूपसे बुलाये जाते थे, यह भी इस कथासे प्रकट होता है। वे राशि-नक्षत्र आदिकी गणना कर नवजात शिशुका भविष्य कथन करते और नक्षत्र-राशिके आधारपर ही शिशुका नामकरण किया करते थे। सम्भवतः यह सब शिशुके जन्मके तत्काल बाद होता था।

बच्चोंके लालन-पालनके लिए धाईका रखना आज भी उच्चवर्गीय समाजमें आवश्यक समझा जाता है। तत्कालीन सामन्तवादी युगमें तो यह और भी अनिवार्य रहा होगा। अतः कुतुबनने धाईकी चर्चा स्वाभाविक रूपसे ही राजकुँवरके लालन-पालनके निमित्त किया है। बच्चेका एक वर्षमें बोलना नैसर्गिक है। पाँच वर्षकी आयुमें शिक्षारम्भ इस देशकी अति प्राचीन परिपाटी है। प्राचीन कालमें पच्चीस वर्ष-की अवस्थातक ब्रह्मचर्य काल माना जाता था और वह शिक्षाका काल होता था। किन्तु कुतुबनने केवल दस वर्ष अर्थात् पन्द्रह वर्षकी अवस्थामें ही शिक्षा समाप्त हो जाने-की बात कही है। सम्भवतः इस कालमें शिक्षाके लिए दस वर्षकी अवधि पर्याप्त समझी जाने लगी थी।

मिरगावतीके अनुसार सामन्तवादी जीवनमें राजकुमारोंके लिए धनुर्विद्या (युद्ध-शास्त्र)के अतिरिक्त काव्य, काव्यशास्त्र, संगीत, शालहोत्र, ज्योतिष, धर्म-ग्रन्थ और काम-विज्ञानका अध्ययन आवश्यक था। आखेट, हेंगुरि और जुआ तत्कालीन उच्चवर्गके आमोदके साधन थे।

सम्भवतः तत्कालीन समाजमें युवक-युवतियोंका स्वच्छन्द मिलन बुरा नहीं माना जाता था। कदाचित् अविवाहितोंके बीच आलिंगन-चुम्बनकी भी छूट थी। हम रूपमणिको निःसंकोच राजकुँवरको अपने सेजपर बैठनेके लिए आमन्त्रित करते पाते हैं। मिरगावती भी सुरतिके अतिरिक्त सब कुछ करनेकी छूट राजकुँवरको देती है (**अउर भाउ सब मानहु मोसों, एक भाउ न होइ।** ९१।६)। फिर भी विवाहका उत्तर-दायित्व पितापर था। इसके निमित्त कन्याके पिता अपनेसे उत्तम कुलकी बात सोचते थे और वरके गुण शिक्षा आदिके सम्बन्धमें उहापोह किया करते थे।

उन दिनों विवाहसे पूर्व सार्वजनिक भोज देनेकी प्रथा थी, ऐसा जान पड़ता है। भोजके पश्चात् ब्राह्मण मण्डपमें आते थे और कुल-रीति आरम्भ होता था। वर मुकुट पहनकर बैठता था और कन्या उसके गलेमें जयमाला पहनाती थी। पश्चात् ब्राह्मण लोग जन्मपत्री देखकर भविष्य विचार करते थे; फिर विवाह होता था। वर-वधू गाँठ जोड़कर भाँवर देते थे। तदनन्तर कुलके अन्य रीति-आचार होते थे। विवाह आदि हर्षके अवसरोंपर नेग देने और धन लुटाने (न्योछवर करने) की प्रथा काफी प्रचलित थी। कन्या पक्ष द्वारा विवाहमें दहेज देनेका भी प्रचलन उस समय था और लोग उत्साहपूर्वक दहेज दिया करते थे।

पारिवारिक जीवनमें एकसे अधिक पत्नी रखना बुरा नहीं माना जाता था। किन्तु सौतोंके बीच परस्पर कलह होता रहता था। पति और परिवारके लोग कलह शान्त रखनेकी चेष्टा करते रहते थे।

पतिकी मृत्युके पश्चात् पत्नियोंके चितापर जलकर सती हो जानेकी प्रथा प्रचलित थी। यह प्रथा इस देशमें गुप्त कालसे ही देखनेमें आती है। किन्तु इस सम्बन्धमें कुतुबनने अत्यन्त आश्चर्यजनक बात यह कही है कि राजकुँवरके साथ, उसकी पत्नियोंके अतिरिक्त उसके निजी सेवक-सेविकाएँ तथा कुछ अन्य नागरिक भी जल मरे। सेवक-सेविकाओं और प्रजाके इस प्रकार स्वामीके शवके साथ जल मरनेकी प्रथा इस देशमें अन्यत्र अज्ञात है। इसकी चर्चा कुतुबनने किस आधारपर किया है, यह इतिहास और समाजशास्त्र की दृष्टिसे शोधकी अपेक्षा रखता है।

सामाजिक और नागरिक जीवनके चित्रणमें सामान्य जनताका चित्र अत्यल्प है। जोगी, यती आदिकी चर्चा और उनकी वेश-भूषाका उल्लेखमात्र किया गया है। गोरखपन्थका सम्भवतः उन दिनों अधिक प्रचार था। शाही शान-शौकतका यत्र-तत्र चित्रण हुआ है। छत्रपति राजा, राजा-रावोंका संघटन, युद्धकी तैयारी, जंगलमें शिकार, हाथियोंका जलूस, राज-सभामें नृत्य-संगीत, अल्प समयमें प्रासादका निर्माण, दूतों द्वारा सन्देश प्रेषण आदि सामन्ती जीवनकी रूपरेखा उपस्थित करते हैं।

नियतिवाद और ईश्वरमें अटूट विश्वास इस देशमें अनन्त कालसे चला आ रहा है। कुतुबनने भी सर्वत्र ईश्वरेच्छाको सर्वोपरि बताते हुए मनुष्यको उसके सहारेपर चलनेवाला चित्रित किया है। उन्होंने विश्वास प्रकट किया है कि काल बलवान है। उससे कोई बच नहीं सकता। ईश्वरके प्रति उन्होंने अटूट श्रद्धा प्रकट की है और अपने पात्रोंको लक्ष्य-पूर्तिके लिए उसकी शरणमें जाते दिखाया है! फल प्राप्तिके पश्चात् उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

इस प्रकार मध्यकालीन सांस्कृति और जीवनके अध्ययनके लिए मिरगावतीमें प्रचुर सामग्री है।

रचनाका उद्देश्य

मिरगावतीकी रचनाके पीछे कुतुबनका क्या उद्देश्य था, यह उन्होंने कहीं स्पष्ट नहीं कहा है। इस सम्बन्धमें शिवगोपाल मिश्रने निम्नलिखित पंक्तियोंकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है—

मैं रस बात कही रस तोसों, जो रस कीजइ बात।
सो रस रहे दुहूँ जग ताकर, जो रस सौं रँगरात॥ ८९।६-७

और कहा कि उपर्युक्त पंक्तियोंसे यह ध्वनित होता है कि कुतुबनका उद्देश्य रसबात या प्रेमकी कथा कहना मात्र था। किन्तु जिस स्थलसे यह उद्धृत किया गया है, वह प्रेम-रससे सम्बन्ध अवश्य रखता है पर ऐसा स्थल नहीं है जो कुतुबनका प्रयोजन व्यक्त करता हो। कुतुबनसे अपेक्षा थी कि वह अपना उद्देश्य या तो आरम्भमें कहेंगे या फिर अन्तमें। आरम्भमें उन्होंने केवल इतना ही कहा है—

एक बात अब कहउँ रसाल।
रतन मोंति आनउँ भर थाल॥ १५।१
पढ़त सुहावन दे जै कानू।
यहि कै सुनत न भावइ आनू॥ १२।५

अन्तमें कहा है—

बहुत अरथ हहिं इहँ महँ, जो सुधि से काहू बूझ।
कहेउ जहाँ लग पारेउ, जो कछु बहै हियैं मैं सूझ॥ ४३१।६-७

इससे इतना ही जान पड़ता है कि उन्होंने अपने काव्यमें रसभरी बात कही है जो पढ़ने-सुननेमें भली है। इस काव्यमें बहुतसे अर्थ भरे हैं। उनका समझना-बूझना उन्होंने पाठकोंपर छोड़ दिया है। उनके कहनेसे इतना अवश्य जान पड़ता है कि उन्होंने अपनी कथाके माध्यमसे कुछ रहस्य भरी बातें कही हैं।

यह रहस्य भरी और गूढ़ बातें क्या हैं, इसका हमें अनुमान करना होगा। सामान्य ढंगसे पढ़नेपर **मिरगावती** प्रेम कहानीसे अधिक कुछ नहीं है। किन्तु **कुतुबन**-का सम्बन्ध सूफी सम्प्रदायके साधकोंसे था। सूफी साधक प्रेमके माध्यमसे परमात्माका **नैकट्य प्राप्त** करते हैं। उनका प्रेम निराकार ईश्वरके प्रति होता है, इस कारण उनके लिए उनका वर्णन प्रतीक द्वारा ही सम्भव हो पाता है। वे अपने इस प्रेमका वर्णन लौकिक प्रेम-प्रदर्शनके प्रतीकों द्वारा किया करते हैं। वे अपने इस आदर्श प्रेमके वर्णनमें ईश्वरको नारी रूपमें स्वीकार करते हैं और लौकिक प्रेमके वर्णनमें वे अलौकिक प्रेमकी झलक देखते हैं। सम्भवतः **कुतुबनने** अपने उपर्युक्त शब्दोंमें इसी दिशाकी ओर इंगित किया है और यह कहना चाहा है कि उन्होंने अपने इस प्रेमाख्यानके रूपमें सूफियोंकी प्रेममूलक साधनाका स्वरूप उपस्थित किया है। दूसरे शब्दोंमें लौकिक प्रेमके आवरणमें उन्होंने अलौकिक प्रेमको व्यक्त करनेकी चेष्टा की है।

इस दृष्टिसे **मिरगावतीको** देखा जा सकता है। **मिरगावतीको** ब्रह्मका, राजकुँवर-को भक्तात्माका और दूतको गुरुका प्रतीक कहकर सूफी प्रेम-साधनाकी व्याख्या की जा सकती है। किन्तु राजकुँवरका द्विपत्नीत्व इस कल्पनाको खण्डित कर देता है।

कंचनपुर पहुँचनेके बाद मिरगावतीके निकट पहुँचनेके मार्गमें राजकुँवरको सात प्रतोलियोंको पार करनेकी बात **कुतुबनने** कही है—

सातों पँवरि नाँधि जो आवा।
बेगर बेगर सातउ भावा। २१५।२

रामपूजन तिवारीने इस पंक्तिमें सूफी-मार्गके सात मंजिलों (लबूदियत, इश्क, जुहूद, मारिफत, वज्द, हकीकत और वस्ल) को देखनेकी चेष्टा की है।[1] पर हमें इसमें वैसा कुछ नहीं जान पड़ता।

---

१. हिन्दी सूफी काव्यकी भूमिका पृ० १७२।

जो भी हो। कुतुबनने मानवकी शृंगार और वियोगकी अनुभूतियोंका सहज और स्वाभाविक चित्रण किया है। उसीमें कविकी सफलता निहित है। कदाचित् उनका अभिप्राय भी यही था—

जोग सिंगार बीर रस अहा। ४३१।२

परवर्ती साहित्यपर प्रभाव

कुतुबनकी मिरगावतीका परवर्ती साहित्यपर क्या और किस प्रकार प्रभाव पड़ा, कहना कठिन है। परवर्ती मुसलमान कवियोंमें **मंझनने** अपनी **मधुमालतीमें मिरगावतीके** पाँच यमक और एक घत्तावाला कड़वक अपनाया है। किन्तु यह **मिरगावतीका** अपना निजस्व नहीं है। वह इसे **चन्दायनसे** प्राप्त हुआ है। परवर्ती काव्योंके आरम्भमें ईश्वर, पैगम्बर, चार यार, गुरु, शाहेवक्त आदिकी जो प्रशंसा की परिपाटी पायी जाती है, वह भी **मिरगावतीमें चन्दायनसे** ही आया था। इसी प्रकार नायक अथवा नायिकाके जन्मके पश्चात् ज्योतिषियोंका आना, भविष्य बताना, नायकोंका नायिकाके विरहमें योगी वेश धारण करना, उनके मार्गमें कठिनाइयोंका आना आदि भी ऐसी घटनाएँ हैं जो **चन्दायनमें** उपलब्ध हैं, वहाँसे **मिरगावतीमें** आयी हैं। नख-शिख वर्णन और विरह-विदग्ध बारहमासा भी **चन्दायनमें** प्राप्त हैं। इन्हें परवर्ती कवियोंने **मिरगावतीसे** ग्रहण किया होगा, ऐसा मानना क्लिष्ट कल्पना होगी। **जायसीने पद्मावतकी** रचनाका आरम्भ **मिरगावतीकी** रचनाके केवल १८ वर्ष पश्चात् (९२७ हिजरीमें) किया था; **मंझनकी मधुमालतीकी** रचना भी **मिरगावतीसे** केवल ४४ वर्ष पश्चात् (९५२ हिजरीमें) हुई थी। इस अल्प अवधिमें **मिरगावती** इतनी ख्याति प्राप्त कर सकी होगी कि लोग उसे अपना आदर्श बनायें, मानना तनिक कठिन है। किन्तु इनकी कहानियोंका जो स्वरूप है वह **चन्दायनकी** कहानीकी अपेक्षा **मिरगावतीके** अधिक निकट है, यह स्वीकार करना होगा।

जहाँतक **मिरगावतीकी** कथाका सम्बन्ध है, उससे मिलती-जुलती कथासे युक्त कुछ परवर्ती काव्य देखनेमें आते हैं। संवत् १७२३ (१६५५ ई०)में **मेघराज कविने** ओड़छा नरेश सुजान सिंहके आदेशसे **मिरगावती कथा** नामक काव्यकी रचना की थी। इस रचनामें **मेघराजने कुतुबनके मिरगावतीका** आश्रय लिया है ऐसा स्पष्ट झलकता है। दोनोंकी घटनाओंमें अत्यधिक साम्य है। इस काव्यकी कथा इस प्रकार है—

कर्णाटक देशके राजाका पुत्र जब वयस्क हुआ तो राजाने अपने मन्त्रीसे कहा कि राजकुमार पूर्व दिशाके अतिरिक्त किसी भी दिशामें आखेट खेलने जा सकता है। जब राजकुमारको यह बात ज्ञात हुई तो उसने पूर्व दिशामें जानेसे वर्जित किये जानेका रहस्य जाननेका निश्चय किया और लोगोंके मना करनेपर भी वह पूर्व दिशाकी ओर चल पड़ा। कुछ दूर जानेपर एक सुवर्ण मृगी दिखाई पड़ी। उसे राजकुमार और उसके

साथियोंने पकड़नेकी चेष्टा की तो वह पासके एक सरोवरमें कूद कर अन्तर्ध्यान हो गयी। बहुत ढूँढनेपर भी जब वह न मिली तो राजकुमारने निश्चय किया कि या तो वह उस मृगीको प्राप्त करेगा या फिर वह न मिलनेपर प्राण त्याग देगा। इस निश्चयके साथ वह वहीं रह गया। उसके साथी उसको इस निश्चयसे न डिगा सके, निदान हारकर लौट आये।

राजाको जब इसकी सूचना मिली तो पण्डितको बुलाकर इसका रहस्य पूछा। पण्डितने बताया कि यह मृगी इन्द्रसभाकी अप्सरा है। एक समय वह उक्त सरोवरमें स्नान करने आयी थी। वहाँ वह मृगोंकी क्रीड़ा देखनेमें इतनी मग्न हो गयी कि उसे समयसे इन्द्रसभामें पहुँचनेका ध्यान ही न रहा। देरसे पहुँचनेके कारण इन्द्रने उसे मृगी हो जानेका शाप दे दिया जिससे वह मृगी हो गयी। अब वह प्रत्येक एकादशीको नारी रूप धारणकर उस सरोवरमें स्नान करने आती है। यदि उस समय उसके वस्त्र चुरा लिये जायँ तो वह वशमें आ सकती है।

यह सुनकर राजाने उसी सरोवरके किनारे राजकुमारके लिए एक महल बनवा दिया। राजकुमार वहीं रहने लगा और एक दिन पिताकी बतायी हुई विधिसे उसने उस अप्सराको प्राप्त भी कर लिया। उसे लेकर वह कर्णाटक लौटा। राज्य भरमें आनन्द मनाया गया।

उसी समय एक शिकारीने आकर सूचना दी कि जिस सरोवरके किनारे राजकुमार रहता था, वहाँ एक विशाल वराह सो रहा है। यह सूचना पाते ही राजकुमार अप्सराको रसोई बनानेवाली ब्राह्मणीकी देख-रेखमें छोड़कर आखेटके लिए चल पड़ा। जब ब्राह्मणी रसोईमें व्यस्त थी, मृगावतीने अपना वस्त्र ढूँढ निकाला और पहनकर लुप्त हो गयी। उसके लुप्त हो जानेपर ब्राह्मणी बिलखने लगी। लौटकर राजकुमारने जब उसे बिलखते देखा तो समझ गया कि मिरगावती गायब हो गयी। तत्काल वह राजकुमार योगी बनकर मृगावतीकी खोज में निकल पड़ा।

मार्गमें उसे एक युवती मिली। वह नाना प्रकारके व्यंजन लेकर राक्षसके आनेकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह स्वयं भी राक्षसकी भक्ष होने वाली थी। योगी राजकुमारने उस राक्षसका वधकर युवतीको मृत्युके मुखसे बचा लिया। कृतज्ञतायापन स्वरूप उस युवतीके पिताने उस युवतीके साथ राजकुमारका विवाह कर दिया। कुछ दिनोंतक वहाँ रहकर राजकुमार कंचनपुरकी ओर चल पड़ा। रास्तेमें समुद्र मिला जिसे उसने एक सेमलके वृक्षके सहारे पार किया। कंचनपुरके निकट उसका एक दैत्यसे सामना हुआ। उसने पहले तो योगी राजकुमारका स्वागत् किया फिर उसे ले जाकर एक गुफामें बन्द कर दिया। युक्तिपूर्वक राजकुमारने दैत्यकी आँखोंमें लोहेकी गरम सलाख घुसेड़ दी जिससे वह अन्धा हो गया। उसे अन्धाकर वह निकल भागा और कंचनपुर पहुँचा। वहाँ उसे एक दासीने देखा और मृगावतीको सूचना दी। मृगावतीने उस योगीको बुलवाया और उसके साथ विवाह कर लिया। दोनों सुखपूर्वक रहने लगे।

एक दिन राजकुमारने उस कोठरीको खोल दिया जिसे मृगावतीने खोलनेसे मना किया था। उसमें बन्द दैत्य निकल पड़ा और राजकुमारके प्राण संकटमें पड़ गये। किसी-किसी प्रकार उसकी जान बची। तदनन्तर वह मृगावतीको लेकर अपने देशको चल पड़ा। मार्गमें अपनी दूसरी पत्नीको लिया। पुत्र और वधुओंको देख कर माता-पिता अत्यन्त प्रसन्न हुए।

सतरहवीं शतीके अन्तिम चरणमें **द्विज पशुपति** नामक बंगला कविने भी मिरगावतीकी कथाको किंचित परिवर्तनके साथ **चन्द्रावली** नामसे प्रस्तुत किया है।[१] इसकी कथा इस प्रकार है—

रत्नपुरके राजा चन्द्रसेनके पाँच कन्याएँ थीं जो इन्द्रकी सभामें नृत्य किया करती थीं। उनमें सबसे छोटीका नाम चन्द्रावली था। वह इन्द्रसे प्रेम करने लगी। फल स्वरूप इन्द्रने उसे शाप दे दिया कि वह बारह वर्षतक हिरणी बनकर रहे। तदनन्तर वनके बीच काम सरोवरमें डूबनेसे उसकी मुक्ति होगी।

पश्चिममें स्थित कनकापुरके राजा सत्यकेतुकी पत्नी सुलक्षणीसे विश्वकेतु नामक पुत्र हुआ। उसने सभी विद्याएँ सीखकर बयालीस सुरों वाला गीत सीखा। एक दिन आखेटके लिए बनमें गया तो उसे एक हिरणी दिखाई दी। उसने उसका पीछा किया। वह भागती-भागती काम सरोवरमें जाकर डूब गयी और अपने पूर्व रूपको प्राप्त हो गयी। पश्चात् राजकुमारको अपना परिचय देकर अन्तर्ध्यान हो गयी। राजकुमार उसके लिए उसी सरोवरके किनारे बैठा रहा और किसी प्रकार भी घर आनेको तैयार नहीं हुआ। तब राजाने उसके निवासके लिए वहीं महल बनवा दिया और सुमति नामक धाईको नियुक्त कर दिया। सुमतिकी देख-रेखमें राजकुमार वहाँ रहने लगा।

चन्द्रावली अप्सरा रूपमें एकादशीके दिन काम सरोवरमें स्नानार्थ आयी तो विश्वकेतुने उसके कपड़े चुरा लिये। फलतः वह उसके हाथ आ गयी और वह उसे लेकर राजधानी लौट आया और उससे विवाह कर लिया। किन्तु एक दिन चन्द्रावलीने अपने कपड़े प्राप्त कर लिये और उड़ गयी। जाते समय वह सुमतिसे कहती गयी कि यदि राजकुमार मुझे प्राप्त करना चाहे तो रत्नपुर आये। तदनुसार विश्वकेतु कालिकाकी पूजा कर योगी बनकर निकल पड़ा। मार्गमें उसे एक वृक्षके नीचे एक व्यक्ति मिला जिसके अनुरोधपर उसने कपूरनगरके वसुदत्तसे युद्ध किया और उसे मार डाला। कुछ दिनों वहाँ रहकर वह आगे बढ़ा।

एक वनमें राजकुमारकी भेंट चित्रमाला नामक युवतीसे हुई जिसे एक राक्षसने बन्दी कर रखा था। राजकुमारने समस्यापूर्ति द्वारा राक्षसको पराजित किया फिर उसे अन्धा बनाकर मार डाला। इससे प्रसन्न होकर युवतीके पिता उदयचन्द्रने उस युवतीका विवाह राजकुमारसे कर दिया।

---

१. इसलामी बंगला साहित्य, पृ० ३४-४०।

आगे बढ़नेपर उसकी भेंट एक गड़रियेसे हुई जो अपनेको मेषाम्बर कहा करता था। उसने अनेक राजकुमारोंको बन्दी कर रखा था। विश्वकेतुने उसका आतिथ्य स्वीकार किया फिर उसे अन्धा बनाकर आगे चला और कंचननगर पहुँचा। वहाँ रुद्रभर्ता नामक योगीसे उसने दीक्षा ली फिर अनेक कष्टोंपर विजय प्राप्त करता हुआ मणि प्राप्त कर चन्द्रावलीके पास पहुँचा। दासियोंने उसके आनेकी सूचना दी। उसने पहले उसकी परीक्षा ली फिर उसका स्वागत् किया कुछ दिनों पश्चात् वह चन्द्रावली और रूपमालाको लेकर अपने देश लौट आया।

असमी कवि **द्विजरामने** भी कामरूपकी बोलीमें इस कथाकी रचना **मृगावती चरित** नामसे की है।[1] उसकी कथा भी **कुतुबनकी मिरगावतीसे** मिलती-जुलती है।

मृगावती नामसे एक अन्य रचना बंगलामें प्राप्त है, जिसकी रचना उन्नीसवीं शतीके मध्यमें **मुहम्मद खातिर** नामक कविने की है। नाम साम्यके कारण लोगोंका अनुमान है कि इसकी कथा भी **कुतुबनके मिरगावतीके** अनुसरणपर लिखी गयी होगी। किन्तु यह कथा हमें उपलब्ध नहीं हो सकी। अतः नहीं कहा जा सकता कि इसकी कथा भी वही है अथवा उससे सर्वथा भिन्न है।

१. हेमचन्द्र गोस्वामी, असमीय पुथीर विवरण, १९३० ई०, पृ० १५२–१५३।

सामग्री और सम्पादन

उपलब्ध प्रतियाँ

मिरगावतीकी अबतक निम्नलिखित छः प्रतियाँ प्रकाशमें आयी हैं और ये सभी किसी-न-किसी रूपमें खण्डित हैं :—

दिल्ली प्रति—यह प्रति फारसी लिपिकी नस्तालीक शैलीमें देशी कागज़पर लिखी हुई है। इसमें ९० पत्र थे जिसमेंसे आरम्भका एक पत्र अनुपलब्ध है। इस प्रकार ज्ञात प्रतियोंमें यह सबसे कम खण्डित है। इसके प्रत्येक पृष्ठपर १६ से १९ पंक्तियाँ हैं। इस प्रतिमें ४३० कड़वक रहे होंगे जिनमेंसे ४२६ उपलब्ध हैं। इस प्रतिके हाशियेपर यत्र-तत्र मूल लिखावटसे भिन्न लिखावटमें पाठान्तर अंकित हैं। कहीं शब्द मात्र हैं, कहीं पंक्तियाँ हैं और एक-आध स्थल पर पूरे कड़वक भी हैं। अनुमान होता है कि प्रति तैयार होनेके बाद किसी समय किसी व्यक्तिने किसी अन्य प्रतिसे इसका पाठ मिलाया है और जो अन्तर उसकी दृष्टिमें आये, उन्हें उसने अंकित कर दिया। इस प्रकार यह प्रति दो प्रतियोंका पाठ प्रस्तुत करती है। हाशियेवाले पाठ इस संस्करणमें जहाँ भी ग्रहण किये गये हैं, वहाँ उनका उल्लेख **दिल्ली मार्जिनके** रूपमें किया गया है।

इस प्रतिमें आरम्भिक पत्र न होनेसे सिरनामा अज्ञात है। अन्तमें भी लिपिकारने कोई पुष्पिका नहीं दी है। इससे ग्रन्थका नाम, लिपिकाल, लिपिक आदिका कुछ भी परिचय नहीं मिलता। हाँ, अन्तिम पत्रके पीठवाले पृष्ठपर यह महत्त्वपूर्ण सूचना फारसी लिपिमें अंकित है कि 'यह प्रति अकबराबाद (आगरा) निवासी मोमिन सह्हाफ (जिल्दबन्द)से आठ आनेमें क्रय की गयी। क्रय अधिकारसे इसके स्वामी सन् ११२१ हिजरी (१७०९–१० ई०)में काज़ी मुहम्मद आरिफके पुत्र अजीज़ुल्लाह हैं।'[1] इसी आशयकी पंक्ति उपलब्ध आरम्भके पृष्ठके ऊपरी कोनेपर भी लिखी हुई है किन्तु उसका कुछ अंश खण्डित है।[2] इन वाक्योंमें इतना तो निश्चित रूपसे

---

१. मूल लेख है—खरीदः शुद ब हस्त आनः अज़ मोमिन सहाफ अकबराबादी मालिकः बा लबीअ अजीज़ुद्दीन बिन काज़ी मुहम्मद आरिफ दर सनः ११२१ हिजरी। इसमें जो तिथि दी है उसके अन्तिम दो अंकोंके कुछ अंश नष्ट हो गये हैं। सैयद हसन अस्करीने उसे १११९ पढ़ा है (जर्नल आव बिहार रिसर्च सोसाइटी, खण्ड ४१, पृ० ४५३) किन्तु अन्यत्र यह तिथि स्पष्ट ११२१ है।

२. उपलब्ध अंश है—………किताब यक खरीदः शुद अज़ मोमिन शहाफ अकबराबादी………दर सनः ११२१।

ज्ञात हो ही जाता है कि यह प्रति अठारहवीं शताब्दीके प्रथम दशकसे बहुत पहले की है। लेखन शैलीके आधारपर **सैयद हसन असकरी**का अनुमान है कि यह प्रति सोलहवीं शतीके प्रारम्भमें तैयार की गयी होगी।[१] यदि उनका यह अनुमान ठीक है तो यह प्रति काव्य रचनाके दस-बीस वर्षके भीतर ही तैयारकी गयी होगी। इतनी प्राचीनता न स्वीकार करते हुए भी कागजकी बदरंग स्थिति और लिपि दोनोंको दृष्टिमें रखकर हमारी धारणा है कि यह प्रति सोलहवीं शतीके अन्त अथवा सतरवीं शतीके प्रारम्भकी है।

यह प्रति भारतीय पुरातत्व विभागके अरबी-फारसी अभिलेखोंके विशेषज्ञ **जिआउद्दीन अहमद देसाई**के पास है। उन्हें यह प्रति १९५४ ई० में दिल्लीके किताब-घर नामक पुस्तक संस्थानके रहमत कुतुबीसे प्राप्त हुई थी। ऐसा कहा जाता है कि उनके पास आनेसे पहले यह प्रति दिल्लीके सुप्रसिद्ध राजनीतिक नेता हकीम अजमल खाँके निजी पुस्तकालयमें थी। इस प्रतिको प्रकाशमें लानेका श्रेय पटना कालेजके इतिहासके भूतपूर्व प्राध्यापक (अब काशीप्रसाद जायसवाल शोध संस्थानके निदेशक) **सैयद हसन असकरी**को है। उन्होंने इसके आधारपर एक लेख **जर्नल आव बिहार रिसर्च सोसाइटी**में प्रकाशित किया है।[२]

मनेरशरीफ प्रति—यह प्रति फारसी लिपिकी नस्तालीक शैलीकी ओर झुकती हुई नस्ख शैलीमें लिखी हुई है। लिपि शैलीसे अनुमान होता है कि यह प्रति सोलहवीं शतीमें किसी समय तैयार की गयी होगी। इस प्रतिके कुल ३२ पत्र (६४ पृष्ठ) उपलब्ध हैं। यह मूलतः **मौलाना दाऊद** कृत **चन्दायन**की प्रति है। उसके प्रत्येक पृष्ठके हाशियेपर **मिरगावती**के कड़वक लिखे गये हैं। ये कडवक भी उसी हस्तलिपिमें हैं जिसमें **चन्दायन**की प्रति तैयार की गयी है। उपलब्ध पृष्ठोंमेंसे एक पृष्ठका हाशिया रिक्त है जिसके कारण इसमें केवल ६३ कड़वक प्राप्त हैं। उपलब्ध पत्रोंमेंसे कुछके बायें हाशियेके ऊपर पत्र संख्या अंकित हैं। ये पत्र संख्या १४८, १४९, १५२-१५७, १५९-१६१ हैं: शेषपर कोई संख्या नहीं है। इन रिक्त पत्रों पर **असकरी**ने अपने अनुमानके आधार-पर कहीं अँगरेजी और कहीं फारसी अंकोंमें पत्र संख्या अंकित कर दिये हैं; किन्तु उनके अनुमानित ये पत्रांक भ्रामक हैं। अन्य सूत्रोंके साक्ष्यसे ज्ञात होता है कि उपलब्ध पत्रोंकी वास्तविक संख्या १४४-१४९, १५२-१५७, १५९-१६४, १६८-१७४, १७६-१८१ है।

यह प्रति मनेरशरीफ (जिला पटना)के खानकाहके सज्जादनशीन शाह इनायतउल्लाहके संग्रहमें है। उनके भाई मौलवी मुरादुल्लाहकी कृपासे वह **सैयद हसन असकरी**को प्राप्त हुई थी और उसके आधार पर उन्होंने **चन्दायन** और **मिरगावती**के सम्बन्धमें एक लेख प्रकाशित किया था।[३]

---

१. जर्नल आफ बिहार रिसर्च सोसाइटी, खण्ड ४१, पृ० ४५४।

२. वही, पृ० ४५२–४८७।

३. करेण्ट स्टडीज, पटना कालेज, १९५५ ई०, पृ० १६–२३।

एकडला प्रति—यह प्रति सचित्र और कैथी लिपिमें लिखी हुई है। इसके प्रत्येक पत्र पर एक ओर **मिरगावतीका** एक कड़वक अर्थात् सात पंक्तियाँ हैं; दूसरी ओर उसी कड़वकके आधार पर अपभ्रंश शैलीमें अंकित चित्र है। इन चित्रोंकी शैलीके आधारपर अनुमान किया जाता है कि यह प्रति सतरहवीं शतीके आरम्भमें किसी समय तैयार की गयी होगी। किन्तु इस प्रतिका जो पाठ आज उपलब्ध है, वह इतना प्राचीन नहीं है। वह उन्नीसवीं शताब्दीके पूर्वार्द्धका है। एकडला (जिला फतहपुर, उत्तर-प्रदेश)के मनसबदार हनुमानदीनने, जिनके वंशधरोंसे यह प्रति प्राप्त हुई है, संवत् १८९० (१८२८ ई०)के आस पास अपने संग्रहके हस्तलिखित ग्रन्थोंका पुनर्निरीक्षण कराया था। उस समयतक कदाचित् यह प्रति जीर्ण हो चुकी थी। अतः चित्रोंकी रक्षाके निमित्त उन्हें उस समय मोटे खुरदुरे कागजपर चिपका दिया गया। फलस्वरूप उसपर लिखा पाठ छिप गया। तो उन्होंने इस नयी पीठपर नये सिरेसे **मिरगावती**-का पाठ अंकित कराया। पूर्ववर्ती पाठके सम्बन्धमें इस कारण अधिक जानकारी नहीं प्राप्त की जा सकती। उत्तरवर्ती प्रति पूर्ववर्ती प्रतिसे ही तैयार की गयी है या किसी अन्य प्रतिसे इसके जाननेका भी कोई साधन नहीं है। उत्तरवर्ती प्रति दो व्यक्तियों द्वारा तैयार की गयी जान पड़ती है। ये लिपिक सम्भवतः अधिक पढ़े लिखे और सतर्क नहीं थे। इस कारण इस प्रतिमें पाठ-दोष तो अधिक हैं ही, अनेक स्थलोंपर पंक्तियाँ रिक्त हैं, जो इस बातकी द्योतक हैं कि वे या तो अपने आदर्श प्रतिको पढ़ न सके या फिर आदर्श प्रति ही उसी रूपमें खण्डित अथवा भ्रष्ट थी।

यह प्रति १९५४ ई०के अगस्तमें प्रयाग विश्वविद्यालयके प्राध्यापक **शिवगोपाल मिश्र**को मूल स्वामीके वंशधर ओमप्रकाश सिंह और राजेन्द्रपाल सिंहसे प्राप्त हुई थी और अब यह काशी विश्वविद्यालयके भारत कला भवनमें है। मूल रूपमें इस प्रतिके २५३ पत्र **शिवगोपाल मिश्र**को मिले थे। भारत कला भवनमें केवल २५० पत्र हैं।[1] कहा जाता है कि **शिवगोपाल मिश्र**ने शेष तीन पत्र अपने किसी कलाप्रेमी मित्रको दे दिये। भारत कला भवनमें उपलब्ध पत्रोंमें तीनमें केवल चित्र हैं और उनके पृष्ठ भाग रिक्त हैं।[2] शेषमेंसे एकपर केवल एक अस्पष्ट पंक्ति अंकित है।[3] इसके अतिरिक्त एक ही कड़वक (कड़वक १८७) दो पत्रोंपर अंकित है।[4] इस प्रकार भारत कला भवनमें उपलब्ध पत्रोंसे इस प्रतिके २४५ कड़वक ज्ञात होते हैं। अनुपलब्ध तीनों पृष्ठ सम्भवतः लेखांकित थे। इस प्रकार इस प्रतिसे उपलब्ध कड़वकोंकी संख्या २४८ है।[5]

---

१. भारत कला भवनकी आगत पंजिका संख्या ७७४२–७९९१।

२. वही, संख्या ७८६५, ७८६८, ७८७४।

३. वही, संख्या ७९५६।

४. वही, संख्या ७८४६, ७९३६।

५. सम्मेलन संस्करणमें शिवगोपाल मिश्रने जो पाठ प्रस्तुत किया है, उससे ऐसा जान पड़ता है कि उन्होंने इस प्रतिसे २५१ कड़वक दिये हैं। वस्तुतः उसमें एकडला प्रति कथित तीन कड़वक (सम्मेलन संस्करण, कड़वक ७२, ८५ और ११०) बीकानेर प्रतिके हैं; और एक कड़वक (वही,

इस प्रतिके ज्ञात होनेकी सर्व प्रथम सूचना **कैलाश कल्पितने** प्रयागसे प्रकाशित दैनिक **अमृत पत्रिका** (३ सितम्बर १९५५) में दी थी। तदनन्तर **शिवगोपाल मिश्रने** इस प्रतिके आधारपर कई लेख प्रकाशित किये।

बीकानेर प्रति—यह प्रति मटमैले रंगके कागजपर कैथी लिपिमें लिखी गयी है। इसके लिखनेमें काली और लाल दोनों प्रकारकी स्याहियोंका प्रयोग किया गया है। आरम्भके एक और बीचके तीन-चार पत्रोंको छोड़कर सर्वत्र घत्ता लिखनेके लिए लाल स्याहीका प्रयोग हुआ है। इस प्रतिमें मूलत: ८६ पत्र हैं; किन्तु **मिरगावती** ७७ पत्रोंमें समाप्त हो जाती है। तदनन्तर **गंग** कृत **बारहमासा** प्रारम्भ होता है जिससे हमें कोई प्रयोजन नहीं है। इस प्रतिके प्रत्येक पृष्ठपर २१ पंक्तियाँ अर्थात् तीन कड़वक हैं। अन्तिम पृष्ठ पर केवल एक कड़वक है। इस प्रकार इस प्रतिके अनुसार **मिरगावतीमें** ४५७ कड़वक हैं। किन्तु इस प्रतिके केवल ५९ पत्र उपलब्ध हैं। पत्र १-५, १६, १८, २०, २४-२७, ५६[1], ५७ तथा ६२ नहीं हैं। इस कारण इस प्रतिके केवल ३१३ कड़वक अर्थात् कड़वक ३१-३६, ९७-१२२, १०९-११४, १२१-१३८, १६३-३१२, ३१९-३३६, ३४३-३६६ और ३७३-४५७ उपलब्ध हैं।

शिवगोपाल मिश्रकी धारणा है कि यह प्रति प्राचीन है। उनका यह भी कहना है कि प्रति अन्तसे पूर्ण है फिर भी उसमें लेखक (सम्भवतः उनका तात्पर्य लिपिकसे है)का नाम एवं लेखन काल नहीं पाया जाता।[2] किन्तु वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। अन्तमें पुष्पिका उपलब्ध है, जिसे **शिवगोपाल मिश्रने** स्वयं दो स्थलोंपर उधृत किया है।[3] भूमिकामें उधृत पाठके अनुसार पुष्पिका इस प्रकार है—**एती मृगावती कथा समए समांपती सुभ असुभ सी गुरु प्रसाद म सुसमती । समयेअ नम सर्वन बदीय ।**

कड़वक ९०), जिसे उन्होंने बीकानेर प्रतिका बताया है, एकडला प्रतिका है। इस प्रकार उक्त संस्करणमें एकडला प्रतिके २४९ कड़वक ज्ञात होने हैं। सम्मेलन संस्करणमें एकडला प्रतिके कहे गये कड़वकोंकी भारत कला भवनमें उपलब्ध सामग्रीसे तुलना करनेपर ज्ञात होता है कि भारत कला भवनकी सामग्रीके अतिरिक्त संस्करणमें चार कड़वक (प्रस्तुत संस्करणके कडवक ७, ८, ९ और ६४) ऐसे हैं जो भारत कला भवनमें उपलब्ध नहीं हैं। इनमेंसे तीन कड़वक तो उन पत्रोंके हो सकते है जिन्हें शिवगोपाल मिश्रने अपने मित्रको दे दिये हैं। शेष एक कड़वक उन्हें कहाँसे मिला या उन्हें एकडला प्रतिका कहनेका क्या कारण है, यह उन्होंने कहीं नहीं बताया है। हो सकता है उन्हे इस प्रतिके २५४ पत्र मिले हों और किसी भूलके कारण वे २५३ होनेकी बात कहते हों। अपने मित्रको तीनके स्थानपर चार पत्र दिये हों। इस प्रकार एकडला प्रतिसे उपलब्ध कड़वकोंकी संख्या २४९ है।

१. शिवगोपाल मिश्र और दीनानाथ खत्री, दोनोंने पृष्ठ ५३ के लुप्त होनेकी बात कही है। किन्तु वस्तुतः पत्र ५६ लुप्त है। प्रतिमें जो पत्र, पत्र ५६ के स्थानपर उपलब्ध है वह वस्तुतः पत्र ५३ है और किसीके प्रमादसे पत्र ५६ के स्थानपर रख गया है। यह काव्य प्रवाह और दिल्ली प्रतिके देखनेसे प्रकट होता है।

२. कुतुबन कृत मृगावती, पृ० २।

३. वही, पृ० ३ तथा २०४।

अती मुखी सोमावसरे।[1] अन्तमें उन्होंने इससे तनिक भिन्न पाठ दिया है—**ऐती म्रिगा-वती कथा समऐ समापतिः सुभ असुभ सी गुरु प्रसादम सुसमती । समांऐअनम सर्वन वदीय । अतीसुखी सोमावसरे ।**[2] **दीनानाथ खत्री**ने भी इस पुष्पिकाको अपने लेखमें उद्धृत किया है। वहाँ इन दोनोंसे कुछ भिन्न पाठ है—**एती मृगावत्ती कथ समए संमापती सुभ असुसी गुरु प्रसादम सुसमती । ममाये अनम सर्वन वदीय ।। अतीसुखी सोमावसरे ।।**[3] हमें मूल प्रति देखनेको न मिल सकी, इसलिए हम कहनेमें असमर्थ हैं कि वस्तुतः पाठ क्या है। किन्तु इन पाठोंपर तनिक ध्यान देनेपर स्पष्ट हो जाता है कि वे अत्यन्त भ्रष्ट हैं। यह भ्रष्टता कैथीलिपि जनित और लिपिक-जनित दोनों ही हो सकती है। इन पंक्तियोंमें वस्तुतः क्या लिखा है, इसे जानने समझनेकी किसीने भी चेष्टा नहीं की। इन पंक्तियोंमें तीन बातें कही गयी हैं—

(१) अति मृगावती (म्रिगावती) कथ (कथा) समए ममापतिः (समां-पती, संमापती) अर्थात् इति मृगावती (म्रिगावती) कथा समय समाप्तिः ।

(२) सुभअसुसी (असुभसी) गुरुप्रसादम (गुरु प्रसादम) अर्थात् शुभ आशीशे गुरु प्रसादम् (गुरुके प्रसादरूपी शुभ आशीशसे)

(३) सुसमती (सुसमती) समाये (समांए) अनम सर्वन वदीय अतिमुखी मोमावसरे ।

यही अन्तिम पंक्ति सबसे महत्त्वकी है और इसमें लिपि-काल अंकित है। किन्तु इसका पाठ समुचित रूपसे स्पष्ट नहीं है। पहला शब्द **सुसंवते** जान पड़ता है। दूसरा शब्द सम्भवतः **समये** है जिसका अर्थ होता है **वर्ष**। तीसरे शब्द **अनम**का पाठ शुद्ध है अथवा वह किसी शब्दका विकृत रूप है, कहना कठिन है; किन्तु इतना तो निसं-दिग्ध है कि वह वर्षका द्योतक है। हो सकता है यहाँ अंक रहा हो जो न पढ़ा जा सका हो; यह भी सम्भव है कि अक्षर संकेतसे वर्षका बोध कराया गया हो। तीसरी सम्भावना यह भी है कि गौरव (बार्हस्पत्य) वर्षके नामोंमेंसे कोई नाम हो। किन्तु तीनों ही दृष्टिसे हम किसी वर्षका अनुमान कर पानेमें असमर्थ रहे हैं। आगे **सर्वन** स्पष्टतः श्रावण है, वदीयके सम्बन्धमें कुछ कहना ही नहीं, वह **कृष्णपक्ष**का पर्याय है। **अतिमुखी** शब्दका प्रयोग **तृतीया**के लिए हुआ जान पड़ता है। तदनन्तर **सोमवासरे** स्पष्ट है। इस प्रकार इस पुष्पिकाके अनुसार **अनम** (?) वर्षके **श्रावण कृष्ण तृतीया**को यह प्रति लिपिबद्ध हुई थी। अनम वर्ष क्या है यह अधिक ऊहापोहकी अपेक्षा रखता है। **शिवगोपाल मिश्र** इस प्रतिको जितना प्राचीन समझते हैं, यह नहीं है। हमारी धारणा है कि यह किसी भी अवस्थामें अठारहवीं शतीसे पूर्वकी प्रति नहीं है।

यह प्रति बीकानेरके अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालयके हिन्दी विभागमें है। वहाँ यह हस्तलिखित प्रति संख्या ११२ के रूपमें अंकित है। इसकी ओर ध्यान आकृष्ट

---

१. वही, पृ० ३।

२. वही, पृ० २०४।

३. राजस्थान भारती, वर्ष २, अंक २ (१९४९) पृ० ४४।

करनेका श्रेय **दीनानाथ खत्रीको** है। उन्होंने **कुतुबनकी मृगावतीकी एक महत्त्वपूर्ण प्रति** शीर्षकसे इसका परिचय १९४९ ई० में **राजस्थान भारती**में प्रकाशित किया था।[१]

काशी प्रति—यह प्रति कैथी लिपिमें काली स्याहीसे ४½" × ६" आकारके कागजपर केवल एक ओर लिखी गयी बतायी जाती है। इसके केवल ७ पत्र उपलब्ध कहे जाते हैं जिनपर पत्रांक १४६ से १५२ तक अंकित है। इनमें २५ कड़वक (प्रस्तुत संस्करणके कडवक २११ से २३५ तक उपलब्ध हैं। यह प्रति भारत कला भवन, काशीमें सुरक्षित कही जाती है किन्तु चेष्टा करनेपर भी हमें वह देखनेको प्राप्त न हो सकी। इस प्रतिको **परशुराम चतुर्वेदी**ने देखा था। सम्भवतः **शिवगोपाल मिश्र**ने भी इस प्रतिको देखा है। उनका कहना है कि यह प्रति अत्यन्त असावधानीसे तैयार की गयी है और उसमें अनेक पंक्तियाँ छूटी हुई हैं।

इसकी दो आधुनिक प्रतिलिपियाँ उपलब्ध हैं। एक प्रति तो भारत कला भवन-में ही है। सम्भवतः यह प्रतिलिपि पहले नागरी प्रचारणी सभाके पास थी। दूसरी प्रति अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालय बीकानेरमें है।

इस प्रतिसे दस कड़वक **परशुराम चतुर्वेदी**ने अपने **सूफी काव्य संग्रह**में उधृत किये हैं।[२] उन्हें इस प्रतिकी जानकारी देनेके साथ-साथ **मिरगावती**के अंश प्रकाशमें लानेका भी श्रेय प्राप्त है।

चौखम्भा प्रति—यह प्रति एकडला प्रतिकी तरह ही सचित्र और कैथी लिपिमें लिखी हुई थी। यह प्रति १९०० ई० के आस-पास चौखम्भा (काशी) स्थित **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**के निजी पुस्तकालयमें थी। वहीं उस समय नागरी प्रचारणी सभाकी ओरसे हस्तलिखित ग्रन्थकी खोज करनेवाले लोगोंने देखा था और उसका विवरण तैयार किया था जो उस वर्षके **खोज रिपोर्ट**में प्रकाशित है। इस रिपोर्टके प्रकाशनके पश्चात् वहाँसे यह प्रति किसी समय गायब हो गयी और अब उसके अस्तित्वका कोई पता नहीं है। आज इसकी जानकारीका साधन एकमात्र **खोज रिपोर्ट**में दिया गया विवरण ही है।

इस विवरणके अनुसार इसमें ८" × ६" के ३५० पत्र थे और प्रत्येक पत्र पर १८ पंक्तियाँ थीं। उसमें चित्र और काव्यका अंकन किस ढंगसे हुआ था इसका कोई उल्लेख नहीं है। **रिपोर्ट**में आदि-अन्तसे ५ कड़वक (प्रस्तुत संस्करणके कड़वक ७, ८, ९, १३ और ४२८) उधृत किये गये है। उसके देखनेसे अनुमान होता है कि (प्रस्तुत संस्करणके अनुसार) आरम्भके ६ और अन्तके ४ कड़वक नहीं थे।

ग्रन्थका स्वरूप

बीकानेर प्रतिमें काव्य ७७ पत्रोंमें समाप्त हुआ है। प्रत्येक पत्रपर समान रूपसे छः कड़वक लिखे गये हैं। अन्तिम पत्रपर केवल एक कड़वक है। इस प्रकार इस

१. वर्ष २, अंक २ (मार्च १९४९), पृ० ३९-४४।

२. सूफी काव्य संग्रह, संवत् २००७, पृ० ११०-११७।

प्रतिके अनुसार काव्यमें ४५७ (७६ × ६ + १) कड़वक थे। मनेर प्रतिका उपलब्ध अंश १४४ पत्रसे आरम्भ होता है। प्रत्येक पत्रपर दोनों ओर एक-एक कड़वक लिखा गया है। इसके अनुसार १४४वें पत्रके पृष्ठपर कड़वक २८७ होना चाहिये। और वस्तुतः हम पाते हैं कि बीकानेर प्रतिका २८७वाँ कड़वक और मनेर प्रतिके पृष्ठ १४४अ का कड़वक एक ही है। इस समताको देखते हुए अनुमान किया जा सकता है कि मनेर प्रतिमें भी बीकानेर प्रतिके समान ही ४५७ कड़वक रहे होंगे। किन्तु मनेर प्रति-की उपलब्ध सामग्रीमें एक पृष्ठ रिक्त है और एक कड़वक ऐसा है जो बीकानेर प्रतिमें नहीं है। इस तथ्यके प्रकाशमें अनुमान करनेकी गुंजाइश है इस तरहके अन्तर मनेर प्रतिमें आगे पीछे भी रहे होंगे। अतः निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि मनेर प्रतिमें बीकानेर प्रतिके समान ही कड़वक रहे होंगे।

दिल्ली प्रतिमें क्रमबद्ध पाठके रूपमें ४२६ कड़वक हैं; आरम्भका अंश खण्डित है। बीकानेर प्रतिमें आरम्भिक पत्रोंमें पत्र ६ उपलब्ध है। पत्र ६ का पहला कड़वक उक्त प्रतिकी गणनाके अनुसार ३१वाँ कड़वक है। इस आधारपर बीकानेर प्रतिके ३१वें कड़वकके साथ दिल्ली प्रतिके समान कड़वक को सन्तुलित करनेसे ज्ञात होता है कि दिल्ली प्रतिका उपलब्ध आरम्भिक पृष्ठ बीकानेर प्रतिके अनुसार चौथे कड़वककी अन्तिम दो पंक्तियोंके साथ आरम्भ होता है। इससे ज्ञात होता है कि दिल्ली प्रतिमें आरम्भके चार कड़वक नहीं हैं और दिल्ली प्रतिके अनुसार काव्यमें केवल ४३० कड़वक थे।

इस प्रकार बीकानेर और दिल्ली प्रतियोंमें काव्यके आकारमें २७ कड़वकोंका अन्तर है। अतः विचारणीय हो जाता है कि दिल्ली प्रतिमें इन कड़वकोंकी छूट है या बीकानेर प्रतिके अधिक कड़वक अतिरिक्त और प्रक्षिप्त हैं।

प्रथम तीस कड़वक बीकानेर प्रतिमें नहीं हैं और इस अंशके २६ कड़वक दिल्ली प्रतिमें उपलब्ध हैं। आरम्भका एक पत्र अप्राप्य है। इस अप्राप्य पत्रमें बीकानेर प्रतिके अनुसार चार कड़वक रहे होंगे यह हमने ऊपर मान लिया है। इस प्रकार यहाँ-तक दोनों प्रतियाँ समान हैं। आगे यह समानता ३४वें कड़वकतक चलती है। दिल्ली प्रतिका ३५वाँ कड़वक बीकानेर प्रतिमें दो कड़वकों (कड़वक ३५-३६)[१] में विभक्त मिलता है। कड़वक ३५ में आरम्भकी चार और कड़वक ३६ में अन्तिम तीन पंक्तियाँ हैं। विषय और कथा प्रवाहको देखते हुए जान पड़ता है कि इस स्थलपर मूलतः बीकानेर प्रतिके ही दोनों कड़वक रहे होंगे। अनुमान होता है कि दिल्ली प्रतिकी आदर्श कोई ऐसी प्रति थी जिसके प्रत्येक पृष्ठपर एक ही कड़वक था। इस कारण लिपिककी दृष्टि एक पृष्ठसे दूसरे पृष्ठपर फिसल गयी और उसने केवल पंक्तियोंका ध्यान कर अगले कड़वककी तीन पंक्तियाँ पहले कड़वककी लिख चुकी चार पंक्तियोंके नीचे लिख दिया। इस प्रकार वह एक कड़वक चूक गया। अतः हमारी धारणा है कि इस स्थलपर बीकानेर प्रतिके दोनों कड़वक ग्रहण किये जाने चाहिये।

---

१. सम्मेलन संस्करण, कड़वक २३-२२।

आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक ३७ से ९६ तक अनुपलब्ध हैं। इस अंशके रूपमें दिल्ली प्रतिमें केवल कड़वक ३६-८४ हैं। यहाँ यह बात सामने आती है कि बीकानेर प्रतिमें अनुपलब्ध ११ कड़वक दिल्ली प्रतिमें भी नहीं हैं। ये अनुपलब्ध कड़वक, कड़वक ३७ और ९६ के बीच किन स्थलोंके थे और वे दिल्ली प्रतिमें छूट गये हैं या बीकानेर प्रतिमें अतिरिक्त और प्रक्षिप्त थे, कहा नहीं जा सकता। जहाँतक पाठ प्रवाहका सम्बन्ध है दिल्ली प्रतिमें किसी प्रकारका कोई अभाव लक्षित नहीं होता। ऐसी अवस्थामें यही अनुमान होता है कि बीकानेर प्रतिके ये अनुपलब्ध कड़वक अतिरिक्त और प्रक्षिप्त रहे होंगे।

पुनः दिल्ली प्रतिके कड़वक ८५-१०९ बीकानेर प्रतिके कड़वक ९७-१२२[१] के समानान्तर चलते हैं और बीकानेर प्रतिके अनुपलब्ध कड़वकोंकी पूर्ति बिना किसी प्रकारकी कमी-बेशीके करते हैं। किन्तु बीकानेर प्रतिका कड़वक १०९[२] दिल्ली प्रतिमें नियमित क्रममें न होकर मार्जिनमें प्रथम पंक्ति विहीन अंकित है। सूक्ष्म परीक्षणसे प्रकट होता है कि दिल्ली प्रतिका कड़वक ९७ बीकानेर प्रतिमें दो कड़वकों (कड़वक १०९-११०)[३] में विभक्त है। कड़वक १०९ में दिल्ली प्रतिकी पंक्ति १ के साथ ६ नयी पंक्तियाँ हैं और कड़वक ११० में पहली पंक्ति नयी है और शेष दिल्ली प्रतिकी पक्तियाँ २-७ हैं। अतः स्पष्ट है कि दिल्ली प्रतिके मार्जिनमें कड़वक ९७ के पाठान्तर स्वरूप बीकानेर प्रतिके कड़वक १०९ की पंक्ति २-७ हैं। दिल्ली प्रतिके कड़वक ९७ की पंक्तियाँ जिस रूपमें दो कड़वकोंमें विभक्त हैं, उनसे लक्षित होता है कि विस्तारके निमित्त उन्हें यह रूप दिया गया है। बीकानेर प्रतिके कड़वक ११० में दिल्ली प्रतिके कड़वक ९७ के प्रथम पंक्तिके स्थानपर जो पंक्ति जोड़ी गयी है, वह इस बातको स्पष्ट रूपसे व्यक्त करती है। दिल्ली प्रतिका कड़वक ९७ अपने आपमें पूर्ण है और बीकानेर प्रतिकी पंक्तियोंके अभावमें काव्यप्रवाहमें कोई कमी नहीं आती। अतः हमारी धारणा है कि बीकानेर प्रतिका यह अंश प्रक्षिप्त है और मूल पाठमें अग्राह्य है।

आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक १२३-१२९[४] के बीचके कड़वकोंमें केवल दो कड़वक (कड़वक १२४ और १२७)[५] दिल्ली प्रतिमें कड़वक ११० और १११ के रूपमें उपलब्ध हैं। बीकानेर प्रतिके कड़वक १२३, १२५, १२६[६] दिल्ली प्रतिमें हैं ही नहीं। कड़वक १२८[७] की प्रथम दो पंक्तियों और कड़वक १२९[८] की पंक्ति १,४ ५,६ और ७

---

१. सम्मेलन संस्करण, कड़वक ४४-६९।

२. वही, कड़वक ५६।

३. सम्मेलन संस्करण कड़वक ५६-५७।

४. वही, कड़वक ७०-७६।

५. वही, कड़वक ७१-७४।

६. वही, कड़वक ७०,७२,७३।

७. वही, कड़वक ७५।

८. वही कड़वक ७६।

को मिलाकर एक पूर्ण कड़वक दिल्ली प्रतिके मार्जिनपर अंकित है समूचे अंशके परीक्षणसे प्रकट होता है कि बीकानेर प्रतिके कड़वक १२३, १२५ और १२६ प्रसंगानुरूप अनावश्यक हैं। दिल्ली प्रतिके मार्जिनमें जो कड़वक अंकित है वह अपने आपमें पूर्ण है, उसे बीकानेर प्रतिमें दो कड़वकोंमें बाँटकर अनावश्यक विस्तार किया गया है। अतः कड़वक १२३, १२५, १२६ और कड़वक १२८ की पंक्ति ३-७ और कड़वक १२९ की पंक्ति २-३ हमारी सम्मतिमें प्रक्षित हैं और मूल पाठमें अग्राह्य हैं। दिल्ली प्रतिके मार्जिनवाला कड़वक दिल्ली प्रतिमें छूट है। उसे कड़वक १११ के बाद मूल पाठमें ग्रहण किया गया है।

तदनन्तर बीकानेर प्रतिके कड़वक १३०-२११[1] दिल्ली प्रतिके कड़वक ११२-१९३ के साथ समान रूपसे चलते हैं और बीकानेर प्रतिमें अनुपलब्ध कड़वकोंकी पूर्ति विना किसी कमी-वेशीके करते हैं। इनके आगे दिल्ली प्रतिमें तीन कड़वक (कड़वक १९४-१९६) ऐसे हैं जो बीकानेर प्रतिमें नहीं हैं। ये कड़वक काव्य प्रवाहकी दृष्टिसे मूल काव्यके अंग जान पड़ते हैं। सम्भवतः वे लिपिकके प्रमादसे बीकानेर प्रतिमें छूट गये हैं। अतः वे प्रस्तुत संस्करणमें मूल पाठके रूपमें स्वीकार किये गये हैं। पुनः बीकानेर प्रतिके कड़वक २१२-२१८[2] दिल्ली प्रतिके कड़वक १९७-२०३ के साथ समान रूपसे चलते हैं। आगे दिल्ली प्रतिके कड़वक २०४ की प्रथम दो पंक्ति तथा पाँच नयी पंक्तियोंके योगसे बना बीकानेर प्रतिका कड़वक २१९[3] है। और उसके बादका कड़वक २२०[4] दिल्ली प्रतिमें नहीं है। किन्तु उसके मार्जिनमें बीकानेर प्रतिके कड़वक २१९ की पंक्ति ३-७ और कड़वक २२० अंकित हैं। ऐसा जान पड़ता है कि ये किसी अन्य प्रतिसे दिल्ली प्रतिके मार्जिन पाठान्तरके रूपमें लिखे गये हैं। ध्यानसे देखनेपर प्रकट होता है कि बीकानेर प्रति और दिल्ली प्रतिके मार्जिनमें अंकित ये अंश विस्तारके निमित्त जोड़े गये हैं। वे प्रक्षित हैं और मूल पाठमें अग्राह्य हैं।

आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक २२१-२५९[5] दिल्ली प्रतिके कड़वक २०५-२४३ के साथ समान रूपसे चलते हैं। फिर दिल्ली प्रतिका कड़वक २४४ बीकानेर प्रतिके दो कड़वकों (२६०-२६१)के रूप में बँटा है। कड़वक २६० में दिल्ली प्रतिके कड़वक २४४ की प्रथम दो पंक्तियोंके साथ पाँच नयी पंक्तियाँ हैं; और कड़वक २६१ में दिल्ली प्रतिके कड़वककी पंक्तियाँ ३-५ हैं उसके बाद दो पंक्ति रिक्त है और अन्तमें पंक्ति ६-७ है।[6] बीकानेर प्रतिके कड़वक २६० की नयी पंक्तियोंका अन्य पंक्तियोंके

---

१. सम्मेलन संस्करण, कड़वक ७७-८५; १०९-१५७।

२. वही, कड़वक १५८-१६४।

३. वही, कड़यक १६५।

४. वही, कड़वक १६६।

५. वही, कड़वक १६७-२०५।

६. वही, पृ० १३७, पाद टिप्पणी।

साथ कोई संगति नहीं बैठती। इसी कारण **शिवगोपाल मिश्रने** उन्हें मूलमें न ग्रहण कर पादमें दिया है। यह अंश स्पष्टतः प्रक्षिप्त और अग्राह्य है।

इसके बाद बीकानेर प्रतिका कड़वक २६२[1] दिल्ली प्रतिके कड़वक २४५ के समान है। आगे दिल्ली प्रतिका कड़वक २४६ बीकानेर प्रतिमें दो कड़वकों (२६३-२६४) में बँटा है। कड़वक २६३ में दिल्ली प्रतिके कड़वककी पंक्ति १-३ के बाद चार नयी पंक्तियाँ हैं और अन्तमें पुनः पंक्ति ६-७ हैं।[2] इन पंक्तियोंमें अनावश्यक रूपसे पानके गुण गिनाये गये हैं जो काव्यको बोझिल बनाते हैं। पाठकी असंगति देखकर **शिवगोपाल मिश्रने** बीकानेर प्रतिके अतिरिक्त पाठको पादमें दिया है। एकडला प्रतिके पाठको देखनेसे भी यह अंश प्रक्षित और अग्राह्य जान पड़ता है। उसमें दिल्ली प्रतिवाला पाठ है।

पुनः बीकानेर प्रतिके कड़वक २६५-२६६[3] दिल्ली प्रतिके कड़वक २४७-२४८ के समान हैं। आगे बीकानेर प्रतिका कड़वक २६७[4] दिल्ली प्रतिमें नहीं है परीक्षणसे प्रकट होता है कि विस्तारके निमित्त वह पीछेसे जोड़ा गया है। इसलिए वह मूल पाठमें अग्राह्य है। तदनन्तर बीकानेरके प्रतिके कड़वक २६८-२७४[5] दिल्ली प्रतिके कड़वक २४९-२५५ के समान हैं। आगे दिल्ली प्रतिका कड़वक २५६ बीकानेर प्रतिमें कड़वक २७५-२७७ में विभक्त है। कड़वक २७५ में दिल्ली प्रतिकी प्रथम चार पंक्तियोंके बाद तीन नयी पंक्तियाँ और कड़वक २७६ के रूपमें एक नया कड़वक, तदनन्तर कड़वक २७७ में दिल्ली प्रतिकी पंक्ति ५ को पंक्ति २ के रूपमें दिया गया है। उसकी पंक्ति १, ३-५ नयी हैं। अन्तमें पंक्ति ६-७ दिल्ली प्रतिके कड़वककी है।[6] सखियोंके उल्लेखके बीच इन पंक्तियों द्वारा नायिका भेदका वर्णन अनावश्यक रूपसे ठूसा गया है। **शिवगोपाल मिश्रने** भी इन्हें पादमें दिया है। ये अंश मूल पाठमें अग्राह्य हैं।

आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक २७८-३९८[7] दिल्ली प्रतिके कड़वक २५७-३७६ के साथ समान रूपसे चलते हैं और बीकानेर प्रतिके अनुपलब्ध कड़वकोंकी पूर्ति बिना किसी कमी-बेशीके करते हैं। तदनन्तर बीकानेर प्रतिका कड़वक ३९९[8] दिल्ली प्रतिमें नहीं है। परीक्षणसे ज्ञात होता है कि यह कड़वक विस्तारके लिए पीछेसे जोड़ा गया है और अनावश्यक है। अतः मूल पाठमें अग्राह्य है।

---

१. सम्मेलन संस्करण कड़वक २७७।
२. वही, पृ० १३८, पाद-टिप्पणी।
३. वही, कड़वक २०९-२१०।
४. वही, कड़वक २११।
५. वही, कड़वक २१२-२१८।
६. वही, पृ० १४२, पादटिप्पणी।
७. वही, २२०-३३१।
८. वही, कड़वक ३३२।

तदनन्तर बीकानेर प्रतिके कड़वक ४००-४१२[1] दिल्ली प्रतिके कड़वक ३७७-३८९ के साथ समान रूपसे चलते हैं। आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक ४१३-४१७[2] के स्थानपर दिल्ली प्रतिमें केवल एक कड़वक (कड़वक ३९०) है। उसकी प्रथम पंक्तिके साथ ६ नयी पंक्तियाँ कड़वक ४१३ में हैं। उसके आगे कड़वक ४१४ सर्वथा नवीन है। तब कड़वक ४१५ के आरम्भमें दिल्ली प्रतिके कड़वककी पंक्ति २-३ हैं तदनन्तर कड़वककी शेष पंक्तियाँ सर्वथा नवीन हैं। फिर कड़वक ४१६ एकदम नया है। अन्तमें कड़वक ४१७ के आरम्भमें दिल्ली कड़वककी पंक्ति ४-५ हैं, शेष पंक्तियाँ नयी हैं। दिल्ली प्रतिके कड़वककी पंक्ति ६-७ एक दम छोड़ दी गयी है। पंक्तियोंका विभिन्न कड़वकोंमें इस प्रकार विभाजन स्वतः इस बातका द्योतक है कि इन कड़वकोंका संयोजन विस्तारके निमित्त ही किया गया है। अतः बीकानेर प्रतिके ये सभी कड़वक मूल पाठके रूपमें अग्राह्य हैं।

अन्तमें बीकानेर प्रतिके कड़वक ४१८-४५७[3] दिल्ली प्रतिके कडवक ३९१-४३० के समान हैं।

इस प्रकार दिल्ली और बीकानेर प्रतियोंके तुलनात्मक परीक्षणसे प्रकट होता है कि दिल्ली प्रति मूलके निकट है और बीकानेर प्रतिमें काफी अंश प्रक्षिप्त हैं। बीकानेर प्रतिके उपलब्ध ३१३[4] कड़वकोंमेंसे केवल २८८ दिल्ली प्रतिसे समता रखते हैं। बीकानेर प्रतिमें आठ कड़वक (१२३, १२५, १२६, २६७, २९६, ४१४, ४१६) एकदम नये हैं। एक कड़वक (२२०) पाठान्तरके रूपमें दिल्ली प्रतिके मार्जिनमें है। एक कड़वक (२१९) दिल्ली प्रतिमें आंशिक भिन्नताके साथ उपलब्ध है। दिल्ली प्रतिके पाँच कड़वकों (३५, ९७, २४४, २४६, २५६) को बीकानेर प्रतिमें दो-दो कड़वकोंमें (३५-३६ : १०९-११० : २६०-२६१ : २६३-२६४ : २७५-२७७) और एक (३९० कड़वकों) को तीन कड़वकों (४१३, ४१५, ४१७) में बाँट दिया गया है। इनके अतिरिक्त बीकानेर प्रतिके कड़वक १२८-१२९ भी दिल्ली प्रतिके मूल पाठके अन्तर्गत नहीं हैं। वे पाटान्तरके रूपमें मार्जिनमें हैं। इन अतिरिक्त कड़वकोंमें दिल्ली प्रतिके कड़वक ३५ के स्थानपर बीकानेर प्रतिके कड़वक ३५-३६ मूल पाठके जान पड़ते हैं, जैसा कि ऊपर कहा गया है। शेष सब अनावश्यक विस्तारके लिए बादमें जोड़े गये हैं और प्रक्षिप्त हैं। दूसरी ओर दिल्ली प्रतिमें तीन कड़वक (१९४-१९६) ऐसे हैं जो बीकानेर प्रतिमें लिपिकके प्रमादसे छूट गये हैं।

---

१. सम्मेलन संस्करण, कड़वक ३३३-३४५।

२. वही, कड़वक ३४६-३५०।

३. वही, कड़वक ३५१-३९०।

४. सम्मेलन संस्करणकी भूमिकामें बीकानेर प्रतिसे केवल ३०७ कड़वक प्राप्त होनेका उल्लेख है (पृ० ६१)। उक्त संस्करणमें मुद्रित कड़वक ७२, ८५ और ११० को एकडला प्रतिका बताया गया है। वस्तुतः वे बीकानेर प्रतिके हैं। इस प्रकार तीन कड़वकोंकी भूल तो स्पष्ट है। शेष तीन कड़वकोंकी भूलका कोई कारण नहीं जान पड़ता क्योंकि उक्त संस्करणमें ही सभी ३१३ कड़वक उपलब्ध है।

शेष प्रतियोंमेंसे एकडला प्रतिमें एक कड़वक[1] के अतिरिक्त सभी कड़वक दिल्ली प्रतिमें उपलब्ध हैं। उसमें एक भी कड़वक ऐसा नहीं है जो दिल्ली प्रतिमें न हो और बीकानेर प्रतिमें हो। खण्डित होते हुए भी एकडला प्रतिकी दिल्ली प्रतिके साथ यह समानता बीकानेर प्रतिके अतिरिक्त कड़वकोंके प्रक्षिप्त होनेकी बातको पुष्ट करती है। एकडला प्रतिमें एक कड़वक ऐसा है जो किसी अन्य प्रतिमें उपलब्ध नहीं है, वह काव्यके आरम्भका है और दिल्ली प्रतिमें अनुपलब्ध चार कड़वकोंमेंसे एक है। इसलिए उससे एक कड़वकके अभावकी पूर्ति होती है।

मनेर शरीफके ६३[2] कड़वकोंमेंसे ६२ दिल्ली प्रतिमें प्राप्त हैं। दिल्ली प्रतिकी अनुपस्थितिमें उनमेंसे सात (१६८अ-१७१अ) बीकानेर प्रतिके अनुपलब्ध अंशकी किंचित पूर्तिमें सहायक होते हैं। शेष एक कड़वक (१६०अ) न तो दिल्ली प्रतिमें है और न बीकानेर प्रतिमें। जिस स्थानपर वह है, उस स्थानपर उसकी संगति समझ पानेमें हम असमर्थ रहे। अतः हमने उसे मूल पाठमें स्थान नहीं दिया है। अन्य दो प्रतियोंमें ऐसी कोई सामग्री नहीं है जो उपर्युक्त प्रतियोंमें न हो।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करणमें दिल्ली प्रतिके ४२६ कड़वकोंमेंसे एक (कड़वक ३५) को छोड़कर सब स्वीकार किये गये हैं। दिल्ली प्रतिके कड़वक ३५ के स्थानपर बीकानेर प्रतिके दो कड़वक (३५-३६) ग्रहण किये गये हैं। इसके अतिरिक्त दिल्ली प्रतिके कड़वक १११ के बाद, उसके मार्जिनमें अंकित कड़वकको मूल पाठमें सम्मिलित किया गया है। एकडला प्रतिके एक कड़वकसे आरम्भके अनुपलब्ध अंशकी पूर्ति होती है। इस प्रकार इस संस्करणमें मूलपाठके रूपमें कुल ४२९ कड़वक दिये जा रहे हैं। तीन कड़वक अनुपलब्ध रह जाते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण काव्यमें ४३२ कड़वक होनेका अनुमान है।

बीकानेर और मनेर प्रतिके जो अंश मूल पाठमें ग्रहण नहीं किये गये हैं, उन्हें प्रक्षिप्त कह कर अलग परिशिष्ट १ में संकलित कर दिया गया है।

विभिन्न प्रतियों में उपलब्ध कड़वकोंकी समताको स्पष्ट करनेके लिए उनकी भी एक तालिका परिशिष्ट २ के रूपमें दी जा रही है।

प्रति परम्परा

मिरगावतीकी उपलब्ध प्रतियोंमें दो परम्पराओंके होनेकी बात अनायास सामने आती है। कुछ प्रतियोंमें सुबुद्धयाकी राजकुमारीका नाम **रुपमनि** (रूपमणि) और कुछ प्रतियोंमें **रुकमिन** (रुक्मिणी) मिलता है। निसन्देह इन दो नामोंमेंसे एक नाम मूल परम्पराका नाम होगा और दूसरा नाम बादमें किसी प्रकार काव्यमें प्रविष्ट हो गया होगा। इस दृष्टिसे दिल्ली, मनेरशरीफ और एकडला प्रतियाँ एक परम्पराकी हैं। इनमें सर्वत्र **रुपमनि** नाम मिलता है। दूसरी परम्पराकी प्रतियाँ बीकानेर और चौखम्भा प्रतियाँ हैं। उनमें **रुकमिन** नाम मिलता है। काशी प्रतिमें जो अंश उपलब्ध हैं उनमें

१. सम्मेलन संस्करण, कड़वक ८।
२. इस प्रतिमें ६४ पृष्ठ उपलब्ध हैं जिनमें एक पृष्ठ रिक्त है।

शब्दके आरम्भमें आये **वाव** को सर्वत्र **व** और अन्तमें आये **वाव** को प्रायः **उ** के रूपमें लिया गया है।

शब्दके आरम्भमें आये अलिफको **अ**, **आ**, **इ** और उ के रूपमें और **ये** को य के रूपमें लिया गया है।

शब्दके आरम्भमें **अलिफ** और **वाव** के संयुक्त प्रयोगको **ऊ**, **ओ**, **औ** अथवा **अउ** पढ़ा गया है। शब्दके अन्तमें उसे **आउ** माना गया है।

संज्ञा आदि शब्दोंके अन्तमें **वाव** और **ये** के संयुक्त प्रयोगको प्रसंगानुसार **वे** अथवा **वै** पढ़ा गया है, किन्तु क्रियाओंमें हमें **वै** की अपेक्षा **वइ** पाठ अधिक संयत और उचित जान पड़ा है।

सम्पादन-विधि

प्रस्तुत सम्पादन कार्यमें प्रत्येक कड़वकको अंक-बद्ध कर पाठ-क्रम निर्धारित किया गया है; और प्रत्येक कड़वक संख्याके नीचे प्रति अथवा प्रतियोंका नाम दिया गया है जिनमें वह उपलब्ध है। दिल्ली प्रतिसे पाठ लिया गया है, इसलिए उसका नाम पहले रखा गया है तदनन्तर अन्य प्रतियोंका। उसके नीचे कड़वकका पाठ है और उसकी प्रत्येक पंक्तिको अंक-बद्ध कर दिया गया है जिससे निर्देशमें सुविधा हो।

यदि गृहीत पाठमें कोई छूट या अभाव है तो वह दूसरी प्रतिसे लेकर पूरा किया गया है। इस प्रकार दूसरी प्रतिसे लिये पाठको बड़े कोष्ठक [ ] में दिया गया है। यदि छूटे हुए पाठकी पूर्ति अनुमानसे की गयी है तो उसे बड़े कोष्ठक [ ] में रखकर तारां-कित कर दिया गया है। यदि छूटे हुए पाठकी पूर्ति किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सका तो वहाँ बड़े कोष्ठकके भीतर मात्राओंका अनुमान कर डैश रख दिया गया है।

यदि कहीं लिपिकने प्रमादवश किसी शब्दको दुहरा दिया है तो उस शब्दको तारांकित कर दिया गया है। यदि उसने कोई अनपेक्षित अतिरिक्त शब्द रख दिया है तो उस शब्दको पाठसे निकाल दिया गया है और अलग उसका निर्देश कर दिया गया है। इसी प्रकार दिल्ली प्रतिका यदि कोई शब्द स्पष्ट रूपसे अशुद्ध जान पड़ा है तो वहाँ दूसरी प्रतिके पाठको स्वीकार किया गया है और दिल्ली प्रतिके पाठको पाठान्तरके रूपमें दिया गया है। यदि दूसरी प्रतिमें पाठ नहीं है तो अनुमानित पाठ ग्रहण कर मूल पाठको अलग दे दिया गया है। दोनों ही अवस्थाओंमें इस प्रकार गृहीत शब्दोंको छोटे कोष्ठक ( ) में रख दिया गया है।

ऐसे शब्दोंको जिनका समुचित पाठोद्धार करनेमें हम असमर्थ रहे अथवा जिनके सम्बन्धमें हमें किसी प्रकारका सन्देह है, पाठके अन्तर्गत भिन्न टाइप में दे दिया है।

मि र गा व ती

(पाठान्तर सहित मूल पाठ तथा टिप्पणी)

कड़वक सूची

[उपलब्ध प्रतियोंमेंसे किसीमें न तो कथाका विषयानुसार कोई विभाजन है और न अन्य प्रेमाख्यानक काव्योंकी तरह कड़वकोंके शीर्षक उपलब्ध हैं। अतः पाठकोंकी सुविधाके निमित्त यहाँ प्रत्येक कड़वकोंका संक्षिप्त आशय देकर उनका विषयानुसार विभाजन कर दिया गया है। इससे अपेक्षित कड़वक ढूँढ़नेमें सरलता होगी।]

स्तुति—

१-५–ईश्वर स्तुति (केवल दो कड़वक उपलब्ध); ६–मुहम्मद स्तुति; ७–चार मीतोंका वर्णन; ८–पीरकी प्रशंसा; ९-१२–शाहेवक्त हुसेन शाहकी प्रशंसा; १३-१४ ग्रन्थ परिचय।

राजकुँवरका जन्म और शिक्षा—

१५–राजाकी संतति आकांक्षा; १६–दान-वितरण; १७–पुत्र-जन्म; १८–भाग्य गणना; १९–पालन-पोषण और शिक्षा।

मिरगावती दर्शन—

२०–आखेट; २१–सतरंगी मृगी; २२–मृगी पकड़नेका प्रयत्न; २३–मृगीका मानसरोदक-प्रवेश; २४–मृगीकी खोज; २५–मृगी-वियोग।

राजकुँवरकी खोज—

२६–राजकुँवरकी खोज; २७–मानसरोदक वर्णन; २८–राजकुँवरका मिलना; २९–राजकुँवरकी अवस्था; ३०–मिरगावतीका रूप; ३१–साथियोंकी चिन्ता; ३२–राजाको सूचना।

राजाका आगमन और भवन-निर्माण—

३३–राजाका आगमन; ३४–राजकुँवरकी अवस्था; ३५–राजाका समझाना; ३६–राजकुँवरका अनुरोध; ३७–मन्दिर बनानेका आदेश; ३८–स्थपितोंका आगमन; ३९–भवन-निर्माण; ४०–चित्रांकन; ४१–धाईका समझाना; ४२–वर्षा ऋतुकी अवस्था; ४३–जाड़ेकी अवस्था; ४४–गरमीकी अवस्था।

मिरगावतीका पुनरागमन—

४५–तीन वर्ष पश्चात् रूपवतियोंका आगमन; ४६–उन्हें देखनेपर राजकुँवरकी अवस्था; ४७–सहेलियोंका सशंक होना; ४८–मिरगावतीका समाधान; ४९–राज-

कुँवर द्वारा रूपसियोंको पकड़नेकी चेष्टा, उनका पलायन; ५०–राजकुँवरका मूर्च्छित होना; ५१–धाईका मूर्च्छाका कारण जानना।

मिरगावतीका रूप वर्णन—

५२– राजकुँवर द्वारा मिरगावतीका रूप वर्णन; ५३–माँग; ५४–केश; ५५–ललाट; ५६–भौंह; ५७–बरौनी; ५८–नेत्र; ५९–तिल; ६०–कान; ६१–कपोल; ६२–नाक; ६३–अधर; ६४–दाँत; ६५–जीभ; ६६–ग्रीवा; ६७–कर; ६८–पीठ; ६९–कमर; ७०–कुच; ७१–रोमावली; ७२–पेट; ७३–जाँघ; ७४–वर्ण; ७५–आकार; ७६–बारह अभरण; ७७–गीत आदि।

मिरगावतीका चीर-हरण—

७८–धाईका मिरगावतीके पानेका उपाय बताना; ७९–मिरगावतीका सहेलियोंको बुलाना; ८०–सहेलियोंके साथ मिरगावतीका सरोवरमें स्नान; ८१–जल-क्रीड़ा। ८२–राजकुँवरका चीर-हरण; सहेलियोंका उड़ जाना; ८३–मिरगावतीका साड़ी न पाना और राजकुँवरको देखना; ८४-८५–राजकुँवरका अपनी कष्ट कथा कहना; ८६–मिरगावतीका चीरकी याचना करना; ८७–राजकुँवरका दूसरी साड़ी देना।

राजकुँवर-मिरगावती मिलन—

८८–राजकुँवर-मिरगावतीका भवनमें आना; ८९–मिरगावतीका राजकुँवरसे कहना; ९०–राजकुँवरका उसकी बात मानना; ९१–मिरगावतीका राजकुँवरको पत्नी होनेका वचन देना; ९२–राजकुँवरका पिताको सूचना; ९३–राजाका राजकुमार-के पास जानेकी तैयारी करना; ९४–अश्ववर्णन; ९५–पिता-पुत्र मिलन।

मिरगावतीका पलायन—

९६–मिरगावतीके मनमें राजकुँवरकी प्रेम-परीक्षाका विचार आना; ९७–राजाका राजकुमारको बुलावा; ९८–राजकुँवरका राजाके पास जाना; ९९–धाईको भुलावा देकर मिरगावतीका उड़ जाना; १००–धाईका मिरगावतीको ढूँढ़ना और छतपर बैठा देखना; १०१–मिरगावतीका राजकुँवरको सन्देश; १०२–राजकुँवरका वापस आना और धाईका मिरगावतीके उड़ जानेकी बात कहना; १०३–सुनते ही राजकुँवरका बेहोश होना; १०४-१०७–राजकुँवरका विलाप।

राजकुँवरका जोगी होना—

१०८–राजकुँवरका जोगी होनेका निश्चय; १०९–जोगी वेश धारण; ११०–राजाका पुत्रके लिए विलाप; १११–राजकुँवरका मिरगावतीके खोजमें चलते जाना; ११२–एक नगरमें पहुँचना; राजाको सूचना; ११३–बतीसो राजलक्षण होनेकी बात; ११४–राजाका आकर जोगी होनेका कारण पूछना; ११५–राजकुँवरका अपनी

प्रेम कहानी बताना; ११६–राजाका जंगमको बुलवाना; ११७–जंगमका कंचनपुरके मार्गकी दुर्गमता कहना; ११८–राजकुँवरका दुर्गमताकी बातसे भय न खाना; ११९–राजाका समझाना और राजकुँवरका कुछ न सुनना; १२०–जंगमका मार्ग बताना और राजकुँवरका नावपर सवार होना।

समुद्रमें राजकुँवर—

१२१–समुद्रके लहरमें नावकी अवस्था; १२२–एक मास बाद किनारे लगना; दो आदमियोंका मिलना; १२३–उनका मनुष्य-भक्षी सर्पकी बात बताना; १२४–मनुष्य-भक्षी सर्पको देखकर राजकुँवरका परेशान होना १२५–ईश्वर स्मरण; १२६–सर्पका राजकुँवरको खानेकी चेष्टा; दूसरे सर्पका आना और परस्पर लड़ मरना।

राक्षस-वध—

१२७–राजकुँवरका आमके बगीचेमें प्रवेश; १२८–भवनके भीतर एक राजकुमारीको बैठकर रोते देखना; १२९–राजकुँवरका रोनेका कारण पूछना; १३०–कुमारीका राक्षस द्वारा अपने खाये जानेकी बात बताना; १३१–राजकुँवरका राक्षसको मारनेका निश्चय; १३२–राक्षसका वध; १३३–राजकुमारीका दृश्य देखकर मूर्च्छित होना; १३४–राजकुमारीका आत्म-समर्पण; १३५–राजकुमारीका राजकुँवरसे परिचय पूछना; १३६–राजकुँवरका आत्म परिचय देना; १३७–मिरगावतीको देखने और चीर-हरणकी बात बताना; १३८–बातों बातमें सूर्योदय होना; १३९–रूपमणि (राजकुमारी)की खोजमें राजाका आना और उसका एक अन्य व्यक्तिके साथ जीवित देखना; १४०–राजाका राजकुमारीका कण्ठसे लगाना और जीवित रहनेकी बात पूछना; १४१–राजकुमारीका राजकुँवरका परिचय देना; १४२–राजाका राजकुँवरको जोगी वेश त्यागनेको कहना। १४३–राजाका बात न माननेपर बन्दी बनानेका भय दिखाना; १४३–राजकुँवरका सोच-विचारकर राजाकी बात मानना १४४–राजकुँवरका जोग उतारना और हाथीपर सवार होना; १४५–लोगोंका राजकुमारी और राजकुँवरको देखने आना; १४६–परिवारके लोगोंका निछावर बाँटना।

राजकुँवर-रूपमणि विवाह—

१४७–राजकुँवरका चिन्तित होना; १४८–राजाका राजकुँवरकी गुणोंकी परीक्षा करना; १४९–राजकुँवरका हेंगुरि और आखेट खेलना; १५०–राजकुँवरकी विद्वत्ता; १५१–राजाका राजकुँवरसे रूपमणिके विवाहका निश्चय; १५२–ज्योनार; १५३-१५४–विवाह; १५५–राजकुँवरका रमणके प्रति विरक्ति; १५६–रूपमणिको भुलावा देनेका प्रयत्न; १५७–राजकुँवरका धर्मशाला बनवानेका निश्चय; १५८–धर्मशालामें आनेवाले जोगी जातियोंसे कनकनगरके समाचार पूछना; १५९–रूपमणिका भाँप लेना कि राजकुमार अनुरक्त नहीं है। १६०–राजकुँवरका रूपमणिको

मनाना; १६१–मनाकर बाहर आनेपर एक साधूको बैठा देखना; १६२–उससे कंचनपुरका मार्ग जानना।

रूपमणिका परित्याग—

१६३–आखेटके बहाने घरसे निकलना और योगी वेश धारण करना; १६४–नदी पार होना; १६५–साथियोंका राजकुँवरको न पाना और मान लेना कि हिंस्रजन्तुने खा लिया; १६६-१६७ रूपमणिका समाचार सुनकर दुखी होना और पश्चाताप करना।

मनुष्य-भक्षी गड़ेरिया—

१६८–राजकुँवरके चलते-चलते शाम होना; १६९–वनमें भ्रमित होना; १७०–वनमें तीस दिनतक चलते रहना; १७१–वनका अन्त और गड़ेरियासे भेंट; १७२–गड़ेरियाका अतिथिके रूपमें निमंत्रित करना; १७३–राजकुँवरको ले जाकर गड़ेरिया-का खोहमें बन्द करना; १७४–यह देखकर राजकुँवरका जी सूखना और गड़ेरियाको मारनेकी सोचना; १७५-१७८ राजकुँवरका अपनी स्थितिसे परेशान होना; १७९–भीतर बन्द मनुष्योंका गड़ेरियासे छुटकारा पानेका उपाय बताना; १८०–गड़ेरियाका आना और एक आदमीको खाकर सो रहना; १८१–राजकुँवरका संड़सी दग्धकर गड़ेरिया-का आँख फोड़ देना; १८२–गड़ेरियाका राजकुँवरको पकड़ न पाना; १८३–उसका द्वार अवरुद्ध कर बैठना; १८४–राजकुँवरका पुनः चिन्तित होना; १८५–चौथे दिन गड़ेरियाका बकरियोंको बाहर निकालना; १८६–बकरियोंके साथ कुँवरका बाहर निकल जाना।

निर्जन भवनमें अद्भुत दृश्य—

१८७–राजकुँवरका आगे जाना; १८८–भवन दिखाई पड़ना और शाम होना; १८९–चार कबूतरोंका आना और स्त्रीरूप धारण करना; १९०–चार मोरोंका आना और पुरुष वेश धारण करना; और परस्पर केलि करना; १९१–प्रातः होते ही उनका उड़ जाना और राजकुँवरका डरकर भागना; भागकर एक वृक्षके नीचे आराम करना।

सहेलियोंके बीच मिरगावती—

१९२–मिरगावतीके आनेपर सहेलियोंका हाल-चाल पूछना और उसका बताना। १९३–राजकुँवरपर मोहित होनेकी बात कहना; १९४–चीर-हरणकी बात बताना; १९५–प्रणयमें रोकनेकी बात कहना; १९६–अवसर पाकर भाग निकलनेकी बात कहना; १९७-१९९–एक सहेलीका प्रेमकी कठिनता बताना; २००–सहेलियोंका मिरगावतीसे धैर्य रखनेको कहना; २०१–मिरगावतीके पिताका स्वर्गवास और मिर-गावतीका सिंहासनारोहण; २०२–मिरगावती द्वारा धर्मशालाका निर्माण; और यात्रियोंसे चन्द्रागिरि (राजकुँवरके नगर)की बात पूछना।

पक्षी-संवाद—

२०३–पेड़पर बैठे दो पक्षियोंका राजकुँवर और मिरगावतीके प्रेमकी चर्चा करना और राजकुँवरके दुखके अन्त होनेकी बात कहना। २०४–राजकुँवरका यह सब सुनना और उनके पीछे दौड़ना।

कंचननगर-प्रवेश—

२०५–राजकुँवरका मार्ग पाना और एक बगीचेमें पहुँचना; २०६-२०८–बगीचेका वर्णन; २०९–नगर जाननेकी जिज्ञासा; २१०–पनिहारियोंसे कंचनपुर होनेका ज्ञान; २११–नगरमें प्रवेश; २१२–राजद्वार; २१३–भीतर प्रवेशकी चिन्ता और वियोगालाप; २१४–मिरगावतीको योगीके आनेकी सूचना और उसको बुलानेका आदेश।

राजदरबार—

२१५–राजदरबारमें प्रवेश और मिरगावतीको देखकर मूर्च्छा; २१६–मिरगावतीका सशंक होना और दासियोंसे उसकी मूर्च्छा दूर करनेको कहना; २१७–दासियोंका मूर्च्छाका कारण पूछना; २१८–राजकुँवरका उत्तर; २१९–दासियोंका राजकुमारकी भर्त्सना; २२०–राजकुँवरका उत्तर; २२१–दासियोंका परस्पर विचार विमर्श; २२२–मिरगावतीको राजकुँवरके होनेका निश्चय और पास बुलाकर पूछना; २२३–राजकुँवरका उत्तर; २२४–मिरगावतीका सहेलियोंको राजकुँवर होनेकी बात बताना; २२५–मिरगावती द्वारा राजकुँवरकी परीक्षाके निमित्त प्रश्न; २२६–राजकुँवरका उत्तर; २२७–मिरगावतीका क्रोध दिखाना; २२८–मिरगावतीको दया आना; २२९–राजकुँवरका उत्तर; २३०–मिरगावतीका ढिठाई देखकर जानेको कहना और राजकुँवरका उत्तर; २३१–दासियोंको बुलाकर राजकुँवर को नहलानेका आदेश।

राजकुँवर-मिरगावती मिलन—

२३२–मिरगावतीका शृंगार; २३३–शृंगारकर राजकुँवरको बुलानेका आदेश; २३४–राजकुँवरका स्वागत; २३५–मिरगावतीका उसकी अवस्था पूछना; २३६–राजकुँवरका अपनी विरह अवस्था बताना; २३७–सर्पवाली घटना बताना; २३८–राक्षस मारनेकी घटना सुनाना; २३९–चरवाहेवाली घटना कहना; २४०–आँख फोड़कर निकल भागनेकी बात बताना; २४१–मिरगावतीका यह सब सुनकर घबराना और गले लगाना; २४२–२४४ रति वर्णन।

राजकुँवरका दरबार—

२४५–प्रातःकाल लोगोंका राजकुँवरको भेंट; २४६–मिरगावतीका सभा आयोजन करनेको कहना; २४७–राजकुँवरका लोगोंको भेंट देना; २४८–राजकुँवरका पान भेंट करना; २४९–सभाका वर्णन; २५०–नृत्य-संगीतका आयोजन; २५१–२५४–संगीत वर्णन; २५५–२५६–नृत्य वर्णन; २५७ नर्तकीको भेंट।

सहेलियोंके बीच मिरगावती—

२५८—सहेलियोंका आगमन; २५९—सहेलियोंका पूछना और मिरगावतीका बताना; २६०—मिरगावतीका राजकुँवरकी प्रशंसा; २६१—सखियोंका न्योछावर लाना ।

राजकुँवरका अपहरण—

२६२—मिरगावतीको सखीका निमन्त्रण; २६३—मिरगावतीको राजकुँवरकी अनुमति प्राप्ति; २६४—मिरगावतीका राजकुँवरसे ओबरी खोलनेका निषेध; २६५—मिरगावतीका सखीके घर जाना; २६६—जिज्ञासावश राजकुँवरका ओबरी खोलना और कटघरेमें बन्द व्यक्तिकी गुहार; २६७—राजकुँवरका उससे बन्दी होनेका कारण पूछना और उसका बताना; २६८—कुँवरका कटघरा खोल देना और उसमेंसे राक्षसका निकलकर कुँवरको कंधेपर रख आकाशमें उड़ जाना; २६९—कुँवरका पश्चाताप; २७०—ईश्वरसे प्रार्थना; २७१—राक्षसका अपहरणका कारण बताना; २७२—कुँवरका राक्षससे कहना; २७३—राक्षसका कुँवरसे पूछना किस ढंगसे तुम्हें मारूँ; २७४—राक्षसका राजकुँवरको समुद्रमें फेंकना; २७५—राजकुँवरका थोड़े पानीवाले स्थानमें गिरना; २७६—राजकुँवरका भयभीत होना ।

राजकुँवरकी खोज—

२७७—सखीके घरपर मिरगावतिके मनमें शंका उठना; २७८—चेरीका आकर राजकुँवरके अपहरणका सूचना देना; २७९–२८०—मिरगावतीका विलाप; २८१—राजकुँवरके अपहरणके समाचारसे नगरमें खलबली; २८२—सखीका मिरगावतीको समझाना; २८३—रानीका राजकुँवरके ढूँढ़नेका यत्न करना; २८४—एक व्यक्तिका आकर राक्षसके पकड़े जानेकी सूचना देना; २८५-२८९—राक्षसको यातना देकर राजकुँवरका पता पूछना; २९०—मिरगावतीका विलाप ।

पवन-सन्देश—

२९१—मिरगावतीका पवन द्वारा सन्देश भेजना; २९२—पवनका सन्देश लेकर जाना; २९३—राजकुँवरको ढूँढ़कर सन्देश कहना; २९४—सन्देश सुनकर राजकुँवरका अपनी अवस्था कहना; २९५—पवनका लौटकर मिरगावतीको सूचित करना; २९६—पवनका मिरगावतीको साथ लेकर जाना; २९७—दोनोंका घर लौटना; २९८—नगरमें आनन्द ।

मान-भाव—

२९९—मिरगावतीका कथन; ३००—राजकुँवरका उत्तर; ३०१—मिरगावतीका प्रत्युत्तर; ३०२—राजकुँवरका रुष्ट होना, मिरगावतीका मनाना; ३०३ मिरगावतीका प्रसन्न होना; ३०४—प्रेमके गाढ़ेपनका वर्णन ।

रूपमणिकी अवस्था—

३०५–रूपमणिका राजकुँवरकी प्रतीक्षामें समय बिताना; ३०६-३१०–सखियोंसे अपनी विरहावस्था कहना; ३११–नित्य बाट जोहना; ३१२-३१३ वियोगका दुःख; ३१७–ऊँचे भवनपर चढ़कर मार्ग देखना—३१८–चाँदको देखना; ३१९–बनजारेका आगमन। ३२०–बनजारेका रूपमणिके पास आना।

रूपमणिका विरह-विलाप—

३२१–रूपमणिका रुदन और बनजारेसे अपनी अवस्था कहना; ३२२–सावन मासकी अवस्था, ३२३–भादों मासकी अवस्था; ३२४–आश्विन मासकी अवस्था; ३२५–कार्तिक मासकी अवस्था; ३२६–अगहन मासकी अवस्था; ३२७–पूस मासकी अवस्था; ३२८–माघ मासकी अवस्था; ३२९–फागुन मासकी अवस्था; ३३०–चैत मासकी अवस्था; ३३१–बैसाख मासकी अवस्था; ३३२–जेठ मासकी अवस्था; ३३३–असाढ़ मासकी अवस्था; ३३४–अपनी अवस्थाकी तुलना बिना खेवकके नावसे करना; ३३५–मिरगावतीको सन्देश; ३३६–अपनी अवस्था दुहराना।

बनजारेका राजकुँवरसे भेंट—

३३७–बनजारेका प्रस्थान; ३३८–विरहाग्निसे मार्गकी वस्तुओंका जलना; ३३९–गड़ेरियाका अपनी आँख फोड़नेकी बात बताना; ३४०–बनजारेका कंचनपुर पहुँचना; २४१–कंचनपुर पहुँचकर आश्वस्त होना; ३४२–वणिकोंका माल खरीदने आना और बनजारेका केवल राजाके हाथ माल बेचनेकी बात कहना; ३४३–बनजारे की बात फैलते-फैलते राजकुँवरतक पहुँचना; ३४४–राजकुँवरका नायकको बुलवाना; ३४५–राजकुँवरका ब्राह्मणको पहचानना; ३४६–उससे पारिवारिक कुशल पूछना; ३४७-३४८–ब्राह्मणका पिताका सन्देश कहना; ३४९ माताका सन्देश और रूपमणिकी अवस्था कहना; ३५०-३५३–रूपमणिकी अवस्था बताना; ३५४–ब्राह्मणकी बात सुनकर राजकुँवरका घबराना और मिरगावतीसे कहना; ३५५–मिरगावतीका रायभानको राज देनेकी बात कहना।

प्रस्थान—

३५६–रायभानका राजतिलक; ३५७–सुदिन देखकर प्रस्थान की तैयारी; ३५८–मिरगावतीका सखियोंसे विदा लेना; ३५९–प्रस्थान; ३६०-३६०–कर्मचारियोंको समझाना; ३६१–मार्गकी व्यवस्था; ३६२–गड़ेरियाके घरके पास पड़ाव; ३६३–कुँवरका लोगोंको गड़ेरियाका दुर्गुण बताना; ३६४–कुँवरका जाकर खोह देखना; ३६५–वहाँसे प्रस्थान।

सुबुध्यामें राजकुँवरका आगमन—

३६६–राजकुँवरको आते देख सुबुध्यामें खलबली; ३६७–रूपमणिके मनमें हुलास; ३६८-३६९–रातमें स्वप्न; ३७०–स्वप्न-विचार; ३७१–ब्राह्मणका द्वारपर आना;

३७२–रूपमणिका काग उड़ाना; ३७३–दूलभका आकर रूपमणिको सन्देश कहना; ३७४–दूलभका राजाको सन्देश; ३७५–स्वागतके लिए राजाका जाना; ३७६–राजकुँवरका आगमन।

रूपमणि-राजकुँवर—

३७७–रूपमणिका कुँवरके पास आना और मान करना; ३७८–कुँवरका रूपमणिको सेजपर बैठाना; ३७९–३८१–परस्पर मान-भाव; ३८२–संभोग; ३८३–इच्छाकी पूर्ति; ३८४–बीती बात भुलाना।

राजकुँवर-मिरगावती—

३८५–द्वन्द, उद्वेग और उचाटका मिरगावतीके पास जाना; ३८६–सुख आनन्दकी राजकुँवरसे गुहार; ३८७–राजकुँवरको देखकर मिरगावतीका पीठ फेर लेना; ३८८–राजकुँवरका समझाना।

सुबुध्यासे प्रस्थान—

३८९–राजकुँवरका दूलभको राजासे विदा माँगनेके लिए भेजना; ३९०–दूलभका आकर रायसे कहना: ३९१–रूपमनिकी माँका दूलभसे अनुरोध; ३९२–विदाई।

चन्द्रागिरि-आगमन—

३९३–चन्द्रागिरि निकट आनेपर दूलभको पहले भेजना; ३९४–राजाको सूचना; ३९५–राजकुँवरके भाग्योदयका वर्णन; ३९६–पिताका आगमन सुनकर राजकुँवर अपने आदमियोंको आदेश; ३९७–पिता-पुत्रका मिलना; ३९८–दोनों रानियोंका राजमहलमें प्रवेश।

मिरगावती-रूपमणि कलह—

३९९–राजकुँवरकी अनुपस्थितिमें ननदका आकार मिरगावतीसे रूपमणिकी चुगली; ४००–रूपमणिकी चेरीका बात सुनकर जाकर कहना; ४०१–मिरगावतीका रूपमणिकी निन्दा करना; ४०२–रूपमणिका उत्तर; ४०३–लड़ाई सुनकर सासका आना; ४०४-सासका दोनोंकी भर्त्सना करना; ४०५–दोनोंका रूठना और राजकुँवरका परिवारके साथ आकर मनाना; ४०६–मिरगावतीको समझाना; ४०७–मिरगावतीकी सफाई; ४०८–सासका रूपमणिको समझाना; ४०९–दोनोंमें मेल-मिलाप कराना।

राजकुँवरकी मृत्यु—

४१०–पारधीका वनमें सिंहके आनेकी सूचना देना; ४११–सिंह द्वारा गजमस्तक खानेकी बात कहना; ४१२–राजकुँवरका उसे मारनेका निश्चय करना; ४१३–पारधीके साथ राजकुँवरका वनमें जाना; ४१४–सिंहको सोते देखना; ४१५–सिंहका

जागना और गरजना; ४१६–सिंहका खण्ड-खण्ड होना और बाणका कुँवरके हृदयमें लगना; ४१७–हाथीका राजाको पकड़नेकी चेष्टा और बाण खाकर भागना; ४१८–सिंह और राजकुँवरकी मृत्यु; ४१९–मृत्युकी निश्चिततापर कविकी उक्ति; ४२०–पारधी-का पेड़से उतरना; ४२१–जाकर राजाको सूचना देना; ४२२–राजाकी मृत्यु; ४२३–पारधीका करनरायसे गुहार; ४२४–करनरायकी आत्महत्याकी चेष्टा; ४२५–लोगोंका करनरायको समझाना; ४२६–लोगोंका रोते-पीटते जाना; ४२७–मिरगावतीको राज-कुँवरके मृत्युकी सूचना; ४२८–मिरगावती और रूपमणिका शवके साथ सती होना; ४२९–सेवकोंका साथमें जल मरना।

राज्यभिषेक—

४३०–करनरायको राजतिलक।

उपसंहार—

४३१–रचनाके सम्बन्धमें कवि-वचन; ४३२–ईश्वरोपासनाकी प्रेरणा।

१–३
(एकडला)

[-------] अलख करतारू। रमि कै रहेउ[1] सवै (सयँसारू)[2] ॥१
[अलख*] निरंजन लखै न (काई[3])। जोति सरूप जो लखत भुलाई ॥२
[-----] मन्द सिध परमेसा। ना उहि तिरी न (पुरुख[4]) क भेसा ॥३
माता पिता बन्धु नहिं कोई। एक अकेल न (दूसर[5]) होई ॥४
[दोइ*] कहै सो नरकहि जाई। एक एक विहंगम चिल्लाई ॥५
एक अकेल सो रे वह करता, (दूसर[6]) करै न कोय ।६
गनि गुन देखा पण्डितहिं, वह सो (आन[7]) न होय ॥७

मूल पाठ—१–रहेव। २–संसारू। ३–कोई। ४–पुरुष। ५–दोसर। ६–दोसर। ७–चैन।

४
(दिल्ली)

[-----------------]। [-----------------] ॥१
[-----------------]। [-----------------] ॥२
[-----------------]। [-----------------] ॥३
[-----------------]। [-----------------] ॥४
[-----------------]। [-----] मो लछ देइ सब ठाँई ॥५
कहू विध करै सयानाँ, पंछी विनहि परान ॥६
मन चंचल अस्थिर जनु इहै, निस्चल कै अस जान ॥७

५
(दिल्ली)

[जो यह*] रचि के चरित पसारा। सो घट महिं जो [---] सँहारा ॥१
[चित्र*] देखि के खोज चितेरा। खोज करहु तो मिलै सो नेरा ॥२
[अपनी*] दिस्टि जाइ जिह केरी। सोइ ठैं वह जोत सौतेरी ॥३
[परम*] तत्त सेउ लागै तारी। सहज रहै मन पिरत सँभारी ॥४
[-----] म जब लग दिन धावा। रैन भयें पाछैं पछतावा ॥५

काँम कोह तिस्ना मन माया, पंच बियापहि कत ॥६
पावक पवन धूर औ पानी, जबलग हम्ह सँग सत्थ ॥७

टिप्पणी—(२) नेरा–निकट।

६

(दिल्ली; एकडला[१])

पहिलें नूर मुहम्मद[१] कीन्हाँ[२]। पाछे तेहि क (जात)[३] सब (चीन्हा)[४] ॥१
[औ तेहि] लग आपुहि परगटा[५]। सिव सकति[६] कीर्तास[७] दोइ[८] घटा ॥२
[जेहि] रसनाँ वहि[९] नाँउ न आवा। पावक जरें मोंख नहि पावा ॥३
[वहे] नाँउ कै[१०] बकति सुनावहु। मुकति होइ इँदरासन[११] पावहु ॥४
[भ्र]रम छाड़ि कै होहु सयाने। नाँउँ भरम कस फिरहु भुलाने ॥५
जिह लग सब सयँसार रचाया[१२], बहुत भावला भाउ।६
पंछी पन्थ पुरान लै, सो राना लो राउ[१३] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–मोहमद। २–कीन्हीं। ३–जत; (दि०) चिन्ता। ४–चीन्हीं; (दि०) लीन्हा।
५–परगटी। ६–सकती। ७–कीतिसि। ८–दुइ। ९–उवहि। १०–हियै नाव लै।
११–इन्द्रासन। १२–ही लगि ऐ' 'र रचाया। १३–पूरी पंक्ति रिक्त।

टिप्पणी—(१) नूर–ज्योति। हदीसके अनुसार ईश्वरने सर्वप्रथम नूर अर्थात् ज्योतिको उत्पन्न किया था। वही ज्योति मुहम्मद साहबके रूपमें प्रकट हुई। जात–जाति, वर्ण, रूप। चीन्हा–अंकित किया; चित्रित किया।
(२) सिव सकति–शिव और शक्ति।
(३) बकति–उक्ति, बोल, कथन। इँदरासन–स्वर्ग।

७

(दिल्ली, एकडला;[२] चौखम्भा)

चार मीत कर[१] सुनहु बखाना। [अबा बकर सों सुध कै[२] जाना] ॥१
उमर उन्ह सेउँ दूसर[३] ठाँऊँ। जिहकै[४] अदल क आहै नाऊँ ॥२
उसमन बचन[५] दई[६] कै लिखे। जे[७] रे मुहम्मद अरहे[८] सिखे ॥३
अली सिंघ बुधि आपुन गहा[९]। दूलम गढ़ इन्ह सेउ न [रहा][१०] ॥४
अस्टधातु कै पँवर उपारे[११]। कर सेउ[१२] उलटि पुहुमि धर[१३] मारे[१४] ॥५
चारेउ[१५] मीत आह बड़ पण्डित[१६], औ चारेउ[१७] समतूल।६
जिंह पन्थ दिखराय दीन्हीं[१८], तिंह कँह[१९] जरम न भूल[२०] ॥७

---

१. इस प्रतिमें पंक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ है।
२. यह पृष्ठ भारत कला भवनमें प्राप्त नहीं है। सम्मेलन संस्करणपर आश्रित।

पाठान्तर—एकडला और चौखम्भा प्रतियाँ।

१–(ए०)···जोत कै। २–(चौ०) बकर मुधि कै। ३–(ए०) उनसौं दूसर; (चौ०) उहि सौं दूसरि। ४–(ए०) जेहिके। ५–(चौ०) राजचर्न। ६–(ए०) दैइय; (चौ०) दीन। ७–(ए०) जो। ८–(ए०) मोहंमद अधरहु; (चौ०) महमद अढ़ये। ९–(ए०) अली सिंह विधि आपन कीन्हा; (चौ०) अली सेर विधि आपन कहा। १०–(ए०) दुगम गढ़ उन्ह सौं नहिं दीन्हा; (चौ०) अगमगढ़ उन सौं कर रहा। ११–(ए०) असट धातुकी पौरि उपारी; (चौ०) असत धातुकी पवर उपारे। १२–(ए०) करसौं; (चौ०) गढ़ सौं। १३–(ए०) पुहुमी धर; (चौ०) पोहमी दै। १४–(ए०, चौ०) मारी। १५–(ए०) ×। १६–(चौ०) चार मीत बड़ पण्डित चारौ हैं। १७–(ए०) चारौं १८–(ए०) हाथ देखाये दीन हैं। १९–(ए०) ताकहँ। २०–(चौ०) मानसरोदक अमल, भरे कवँल कर फूल।

टिप्पणी—(१) **चार मीत**–मुहम्मद साहबके पश्चात् होनेवाले चार उत्तराधिकारी खलीफा–अबूबक्र (६३२–६३४ ई०), उमर (६३४–६४४ ई०), उसमान (६४४–६५६ ई०), अली (५५६–६६ ई०)। **अबा बकर**–अबूबक्र। **सुध**–शुद्ध (अबूबक्र सिद्दीक कहे जाते हैं और उनकी ख्याति सत्यवादीके रूपमें है। उसीकी अभिव्यक्ति इस शब्द में है)। **कै**–कौन।

(२) **उमर**–उमर फारुख कहे जाते हैं; सत्-असत्‌का विवेक उनका गुण था। निष्पक्ष न्यायके लिए इनकी ख्याति है। **अदल**–न्याय।

(३) **उसमन**–उसमान। इन्होंने कुरानको अन्तिम रूपसे लिखित रूप दिया था। **अरहे**–(क्रि०–अढवना) किसी कामको समझाकर उत्तरदायित्वके साथ किसीको सौंपना।

(४) **अली**–ये असद अर्थात् सिंह कहे जाते हैं। **दूखम गढ़**–दुर्गम गढ़; यहाँ शाम (सीरिया)के निकट खैबर नामक यहूदी राज्यके कामूस नामक किलेसे तात्पर्य है।

(५) **अस्टधातुका पँवर**–कामूसके किलेका प्रवेश द्वार। (अलीने शाम (सीरिया)के सीमाके निकट यहूदियोंके राज्य खैबरपर विजय प्राप्त की थी और उसके दुर्ग कामूसके प्रवेश द्वारको ढाह दिया था)।

८

(दिल्ली; एकडला; चौखम्भा)

सेख बढ़न[१] जग साँचा पीर[२]। नाउँ[३] लेत सुध होइ [सरीर][४] ॥१
कुतुबन नाउँ[५] लै र[६] पा धरे। सुहरवर्दी[७] दुँहु जग निरमरे ॥२

---

१. यह पृष्ठ भारत कला भवनमें नहीं है। सम्मेलन संस्करणपर आश्रित।

पछिले[8] पाप धोइ सब गये। जो र पुराने औ[9] सब नये ॥३
नौ कै आज भयउ[10] अउतारा[11]। सव सेंउ[12] बड़ा जो[13] पीर हमारा ॥४
जिह कह[14] बाट देखाये[15] होई। एक निमिख मँह पहुँचै सोई[16] ॥५
जो यह[17] पन्थ दिखाइ[18] दीन्हि[19] है, जो चलि जानै कोइ ।६
एक निमिख महँ पहुँचै[20] तिह ठाँ[21], जो सत भावइ सोइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और चौखम्भा प्रतियाँ।

१–(ए०, चौ०) बुढ़न। २–(ए०) पीरू। ३–(ए०) नाँव; (चौ०) नाम। ४–(ए०) सरीरू। ५–(ए०) नाँव; (चौ०) नाम। ६–(ए०) रे; (चौ०) लेइ। ७–(ए०) सरवरदी; (चौ०) सहरवरद। ८–(चौ०) पछले। ९–(ए०) झरहि पुरान और; (चौ०) झरहिं पुराने और। १०–(ए०) भये। ११–(चौ०) नै कै भया आज औतारा। १२–(ए०) सौं; (चौ०) सों। १३–(चौ०) सो। १४–(ए०) जा कहँ; (चौ०) जिह को। १५–(ए०) देखाई; (चौ०) दिखाई। १६–(चौ०) पोहचे एक निमक महँ सोई। १७–(ए०) गुरू; (चौ०) जो उन्ह। १८–(ए०, चौ०) देखाय। १९–(चौ०) दीन। २०–(चौ०) निमिक एक महँ पोहचे। २१–(ए०, चौ०) ×। २२–(ए०) जो सत भाव सै होय; (चौ०) जो सत भाव सो होय।

टिप्पणी—(१) **शेख बढ़न**—कवि-परिचय (पृ० १४) में हमने अजौली निवासी मखदूम शेख बढ़नके, जो ईसा ताज जौनपुरीके शिष्य थे, कुतुबनके गुरू होने की सम्भावना प्रकट की है; किन्तु किसी सूत्रसे उनके सुहरवर्दी सम्प्रदायसे सम्बद्ध होने की बात ज्ञात न होनेके कारण, उसके सम्बन्धमें कोरे अनुमानका सहारा लिया है। उक्त अंशके छप जानेके पश्चात् हमें ज्ञात हुआ कि सुहरवर्दी सम्प्रदायसे सम्बन्ध रखनेवाले वस्तुतः शेख बुढ़न नामक एक सन्त हुए हैं जो जौनपुरसे लगे हुए कस्बे जफराबादके निवासी थे। विगत शताब्दीके आरम्भमें वहाँके निवासी नूरुद्दीन जैदीने फारसीमें तजल्लिये-नूर नामसे तीन भागोंमें जौनपुरका विस्तृत इतिहास लिखा था। उनके हाथ की लिखी इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण मूल प्रति जौनपुरके खानकाहमें सुरक्षित है। इस ग्रन्थमें उन्होंने उक्त शेख बुढ़नका उल्लेख किया है। उसके अनुसार शेख बुढ़नका वास्तविक नाम शम्सुद्दीन था, वे रुक्नुद्दीनके पुत्र और सदरुद्दीन चिरागे-हिन्दके पौत्र थे। उसी सूत्रसे यह भी ज्ञात होता है कि बिहारके मुक्ती (शासक) मलिक इब्राहीम बयाँ उनकी दादीके पिता थे; और उनकी दादी उनके पितामह की दूसरी पत्नी थीं। सदरुद्दीनके सम्बन्धमें यह भी बताया गया है कि ७९५ हिजरीमें उनकी मृत्यु हुई। ऐतिहासिक सूत्रोंसे मलिक बयाँ की निधन तिथि ७५३ हिजरी ज्ञात होती है। उनके पुत्र मलिक मुबारिक ७८१ हिजरीमें दलमऊके मीर थे; यह मौलाना दाऊद कृत चन्दायनसे ज्ञात

होता है। इन तिथियोंके प्रकाशमें कहा जा सकता है कि शेख बुढ़नकी दादीका जन्म ७५३ हिजरीसे पूर्व और विवाह ७९५ हिजरीसे पूर्व किसी समय हुआ होगा और वे निसन्देह मलिक मुबारिकसे छोटी रही होंगी। इस प्रकार यदि अनुमान करें कि शेख बुढ़न की दादी का जन्म अपने पिता की मृत्युसे दो तीन वर्ष पूर्व ७५० हिजरीके आस-पास हुआ तो उनके पिताके सम्बन्धमें कह जा सकता है कि उनका जन्म ७७० हिजरी या उसके बाद, ७९५ हिजरीसे पूर्व, किसी समय हुआ; और इसी प्रकार शेख बुढ़न का जन्म ७९० हिजरीके बाद ही किसी समय होनेकी बात कही जा सकती है। इन सम्भावनाओंके प्रकाशमें सुगमताके साथ यह भी अनुमान किया जा सकता है कि यही शेख बुढ़न कुतुबनके पीर रहे होंगे। उनसे कुतबनने अपनी युवावस्थामें ८५०–६० हिजरीके आस-पास किसी समय दीक्षा ली होगी। अतः अब मखदूम शेख बढ़नके कुतुबनके गुरू होनेकी क्लिष्ट कल्पना करनेकी आवश्यकता नहीं रह जाती। इस नये तथ्यकी जानकारीके प्रकाशमें बढ़नके स्थानपर बुढ़न पाठ को ही, जो बीकानेर और चौखम्भा प्रतियोंका पाठ है, स्वीकार करना उचित होगा। उसे हमने दिल्ली प्रतिमें उकारात्मक चिह्नके अभावमें बढ़नके रूपमें स्वीकार किया था। **पीर**–गुरू।

(२) **सुहरवर्दी**–एक सूफी सम्प्रदाय जिसे शेख जुनेदके शिष्य शेख शिहाबुद्दीन सुहरवर्दीने तेरहवीं शताब्दीमें आरम्भ किया था। इन्होंने मक्कामें अवारि-कुल-मारूफ (ईश्वरीय-ज्ञानका प्रसाद) नामक पुस्तक लिखी जो सूफी सम्प्रदायमें प्रमाण-ग्रन्थ माना जाता है। शिहाबुद्दीनके शिष्योंने बगदादसे आकर भारतमें इस सम्प्रदायका प्रचार किया।

(३) **निमिख**–निमिष; क्षण; पल।

(४) **तिह**–उस। **ठाँ**–स्थान।

९

(दिल्ली; एकडला;[१] चौखम्भा)

साह हुसैन आह बड़ राजा। छात सिंघासन उन्ह पै[१] छा[जा] ॥१
पण्डित औ बुधवन्त सयानाँ। पोथा बाँच[२] अरथ सब जानाँ ॥२
धरम दुधिस्टिल उँह कहँ[३] छाजा। हम सिर छाँह जियउ[४] जुग राजा ॥३
दान देइ[५] बहु गिनति[६] न आवा[७]। बलि औ करन न सरवरि पावा[८] ॥४
राइ[९] जहाँ लहि[१०] गँधरप अहइँ[११]। सेवा करहिं बारि[१२] सब चहइँ[१३] ॥५

---

१. यह पृष्ट भारत कला भवनमें नहीं है। सम्मेलन संस्करणपर आश्रित।

चतुर सुजान[14] भाखा[15] सब जानाँ[16], अइस न देखेंउ[17] कोइ ।६
सभा[18] सुनउ[19] सब कान दइ[20], फुनि र बखानौं[21] सोइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और चौखम्भा प्रतियाँ ।

१-(ए०) छत पत सब उनहीं पै; (चौ०) छत्र सिंहासन उनको । २-(चौ०) पढ़ै पुरान । ३-(चौ०) उनको । ४-(ए०) जीउ; (चौ०) जियो । ५-(ए०) देय । ६-(ए०) गनत । ७-(ए०) आवै । ८-(ए०) पावै । ९-(ए०) राय । १०-(चौ०) लौं । ११-(ए०) गंध्रप अहहीं । १२-(ए०, चौ०) वार । १३-(ए०) चहहीं; (चौ०) रहहीं । १४-(चौ०) महाजन । १५-(ए०) भाषा । १६-(ए०) जानै । १७-(ए०) ऐस न देखै; (चौ०) ऐस न देखूँ । १८-(चौ०) सबा । १९-(ए०) सुनहु । २०-(ए०) दै । २१-(ए०) रे बखानैं; (चौ०) रे दिखावहु ।

टिप्पणी—(१) **शाह हुसेन**—देखिये परिचय पृ० १८-२५ । **छात**—छत्र । **छाजा**—(प्रा० धात्वादेश छज्ज) सुशोभित होना ।

(२) **पोथा**—ग्रन्थ ।

(३) **दुधिस्टिल**—युधिष्ठिर ।

(४) **बलि**—सुप्रसिद्ध पौराणिक दानी जिससे वामन रूप धारणकर विष्णुने तीन पग भूमिकी याचनाकर सारा विश्व नाप लिया था । **करन**—कर्ण: महाभारतका प्रसिद्ध वीर, कुन्तीका पुत्र, जो अपने दानके लिए प्रख्यात है । रणभूमिमें आहत पड़े रहनेपर भी छद्मवेशधारी कृष्ण और अर्जुनको उसने अपना दाँत तोड़कर उसमें लगे सुवर्णका दान दिया था । **सरबरि**—सरभरि, बराबरी ।

(५) **राइ**—राजा । **गँधरप**—गन्धर्व । **अहई**—हैं । **बारि**—अवसर । **चहई**—चाहते हैं ।

१०

(दिल्ली; एकडला)

अगिनित[1] ठाट गिनत[2] न आवा । खरदस खेह गगन सब छावा[3] ॥१
अपुनहि सँझर आगें कर पावा[4] । पाछें परै सो धूरि (फकावा)[5] ॥२
मेघडम्बर छाता बहु[6] तानै । सेवा करहि राउ[7] औ रानैं ॥३
तुरिय टाप अस खेह उड़ानी । आधिअम्दर भव पुहुमि जिह जानी[8] ॥४
गज गवन[9] जग साँसो होई । वासुकि इन्द्र दुहौ[10] बुधि खोई ॥५
जिय[11] दान जो चाहै, दिन दस[12] सेवा करो[13] सौ[14] बार ।६
जाकहँ भौंह होइ चख[15] मैली, सो र होइ[16] जरि छार ॥७

मूल पाट—(२) पकावा ।

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-अंगत । २-बहु गनत । ३-अमिय सुझर आगे कर पावा । ४-पाछे परै जो बंक बुकावै । ५-घोर महि गगन खेह सब छावै । ६-सब । ७-राव । ८-आँधि-

यसर मै पुहुमी छपानी । ९–राजा गौने १०–दुहूँ । ११–जीउ । १२–X।१३–करै । १४–सो । १५–होय चुख । १६–रे होय ।

टिप्पणी—(१) **ठाट**–सेना । **खरदम**–(स० कर्दम): कीचड़, काँदो । **खेह**–धूल ।

(२) **अपुनहि**–स्वयं ।

(३) **मेघडम्बर छाता**–काला रेशमी छत्र ।

(४) **तुरिय**–घोड़ा ।

११

(दिल्ली)

डाँड़ इन्द्र वासुकि सेंउ लेई । अउर डाँड़ लंकेसर देई ॥१
इँह बड़ न कोई गुनी सयानाँ । देवतहिं आयसु इँह कर मानाँ ॥२
जासों हँसि कै बात एक कहिहैं । दुख दारिद औ पाप न रहिहैं ॥३
पिरिथ म अइस भयउ न कोई । सर तो देउँ सुनेउ जो होई ॥४
पाप पुन्न लेउँ जरमहिं काऊ । धरम करत कछु कहि जाऊ ॥५
अधरम कियउ न जग महँ काउ, धरम करहिं बहु भाँत ।६
निस बासर बिबि तैसहिं चितहिं, बुधि परसहिं तो साँत ॥७

टिप्पणी—(१) **डाँड़**–दण्ड, कर ।

(२) **आयसु**–आदेश ।

(३) **जासों**–जिससे ।

(४) **अइस**–ऐसा

(७) **निस बासर**–दिन-रात । **बिबि**–द्वय, दोनों ।

१२

(दिल्ली; एकडला)

पढ़हिं[1] पुरान कठिन जो होई । अरथ [कहहिं] समुझावइ [सोई] ॥१
एक एक[2] बोल क दस दस भावा । पंडितहिं अचकर[3] बकति[4] न आवा ॥२
अउर[5] बहुत उन्ह केरि बड़ाई । हमरें कहे कहाँ कहि जाई ॥३
मुँह महँ[6] जीभ सहस जो होई । तोर[7] बड़ाई करै जो कोई ॥४
जब[8] लगि अस्थिर[9] रहे सुमेरू । हरि-भारजा बहै जमु नेरू[10] ॥५
सबन[11] सुनहु चित लाइ कर[12], कहों बात हों[13] एक ।६
आउ बढ़ौ हुसेनसाह कै[14], आह जगत कै टेक ॥७

पाठन्तर—एकडला प्रति ।

१–कथा । २–पण्डित क । ३–अजगुति । ४–बकत । ५–सीर । ६–X। ७–तौरे । ८–X। ९–असथिर। १०–जम नीरू । ११–स्रवन । १२–लाय कै । १३–मैं । १४–जाउ बढ़ो जस मैं कही ।

टिप्पणी—(१) **पुरान**–धर्मग्रन्थ

(२) **अचकर**–चकित। **वकति**–(उक्ति) बोल, वचन।

(३) **उन्ह केरि**–उनकी। **हमरें**–मेरे।

(४) **तोर**–तुम्हारा।

(५) **अस्थिर**–स्थिर, दृढ़। **सुमेरु**–सुमेरु पर्वत। **हर-भारजा**–गंगा। **जमु**–यमुना। **नेरू**–निकट।

(६) **सवन**–श्रवण। **हौं**–मैं।

(७) **आउ**–आयु।

१३

(दिल्ली; चौखम्भा)

उन्ह के राज यह र हम कही[१]। नौ सै नौ[२] जौ[३] संवत अही ॥१
माह मुहर्रम चाँदहि चारी[४]। भई सपूरन कही निबारी[५] ॥२
गाथा[६] दोहा अरिला रचा[७]। सोरठा चौपाइन्ह[८] कै सजा[९] ॥३
साखी आखर वहु आये[१०]। औ देसी चुनिचुनि सब[११] लाये ॥४
पढ़त सुहावन दे जै[१२] कानूँ। यहि[१३] कै सुनत न भावइ[१४] आनू ॥५
दोइ[१५] रे माँस दिन दस मँह[१६], जोरत यह ओरानेउ जाइ[१७] ।६
एक बोल मोति[१८] जस पिरवा,[१९] बकता चित मन लाइ[२०] ॥७

पाठान्तर—चौखम्भा प्रति।

१–पूरी पंक्ति अनुपलब्ध। २–नव। ३–जब ४–रे अ मोहर्रम चाँद उजियारी। ५–यह कवि कही पूरी सँवारी। ६–गाहा। ७–अरैल अरज। ८–चौपाई। ९–सरज १०–सास्तर अपिर बहुतै आये। ११–कछु। १२–दीजै। १३–इह। १४–भावै। १५–दोय। १६–माहीं। १७–यह रे दौराये आये। १८–मोती। १९–पुरवा। २०–इकठा मन चित लाये।

टिप्पणी—(१) **जौ**–जब। **अही**–थी।

(२) **माह**–मास, महीना। **मुहर्रम**–इस्लामी गणनाके अनुसार पहला महीना। **चारी**–चतुर्थी, चौथ। **सपूरन**–सपूर्ण।

(३) **गाथा**–प्राकृत और अपभ्रंश साहित्यमें प्रयुक्त विषम छन्द जिसके प्रथम चरणमें १२, दूसरेमें १८, तीसरेमें १३ और चौथेमें १५ मात्राएँ होती हैं। **दोहा**–२४ मात्राओंका छन्द जिसमें १३ और ११ पर विराम होता है। यह तुकान्त होता है। **अरिला**–अरिल्ल, १६ मात्राओंका छन्द जिसके अन्तमें यगण(लघु, गुरु, गुरु) होता है। **सोरठा**–२४ मात्राओंका छन्द जो दोहेका ठीक उल्टा है अर्थात् ११,१३ मात्राओं पर विराम होता है और इसमें पहले

और तीसरे पदके तुक मिलते हैं। **चौपाइन्ह**–चौपाई। १६ मात्राओंका छन्द जिसकी अन्तिम मात्राएँ जगण (लघु, गुरु, लघु) होती हैं।

(४) **साखी**–शास्त्रीय, यहाँ तात्पर्य संस्कृतसे है। **आखर**–अक्षर।

(५) **जै**–जो। **भावइ**–भाता है, सुहाता है। **आनू**–अन्य, दूसरा कुछ।

(६) **दोइ**–दो। **जोरत**–जोड़ते हुए। **ओरानेउ**–समाप्त हुआ।

(७) **बकता**–वचन।

१४

(दिल्ली)

तौ हम एक कथा यह कही। जो हमरे सेउ सवनीं आही ॥१
वात नरिन्द कही अनुसारी। सुनहु कान दै कहौं सँवारी ॥२
औ सब कथा न आहहिं पहिले। कुछ र पहिलैं कुछ जैसन चले ॥३
रस क लंक निरमर बड़ आही। दूसर ओर दिखावहु ताही ॥४
यह कर विलग न मानै कोई। लेहु सँवार को टूटत होई ॥५
जे करतार बड़कर सरजी, ते र छिपाव न दोख।६
जो न कहा पुरखहँ कर मानै, तिहँ कँह आह न मोख ॥७

टिप्पणी—(१) **हमरे सेंउ**–मुझसे। **सवनीं**–सुनी। **आही**–थी।

(२) **आहहिं**– थे। **जैसन**–जिस प्रकार।

(७) **पुरखहँ**–पूर्वज (बहुवचन)। **आह**–है। **मोख**–मोक्ष।

१५

(दिल्ली; एकडला)

एक बात अब कहउँ रसाल[१]। रतन मोंति[२] आनउँ भरि थाल[३] ॥१
राजा एक सँवन[४] हम सुना। अति र दानि[५] लोना बहु गुना ॥२
बहुत कटक अगनित असवारा। धरम पन्थ वह दई[६] सँवारा ॥३
एकौ राउ व वहि सौं[७] पारइँ[८]। जो र[९] जूझ सो ततखन[१०] हारइ[११] ॥४
जो कछु चाहे[१२] सो सब आहा[१३]। एक न पूत नाँउ जिह[१४] रहा ॥५
अरथ दरब हाथी बहु[१५] घोरा, गिनत न आउ भँडार[१६]।६
माँगै पूत दुउ[१७] कर जोरी[१८], वेगि देहु[१९] करतार ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–कहौं रिसाला। २–मोती। ३–थाला। ४–सौन। ५–दानी। ६–उन्ह दैअ। ७–सौं। ८–पारहिं। ९–रे। १०–ततिखन। ११–हारहि। १२–कुछु चाहिअ। १३–अही। १४–नाव जेहि। १५–औ। १६–भँडारा। १७–दुहुँ। १८–जोरे। १९–देहि।

टिप्पणी—(१) आनउँ–लाऊँ।

(२) **सँवन**–श्रवण, कान। **लोना**–(लवणयुक्त) रूपवान।

(३) **कटक**–सेना। **दई**–ईश्वर। **असवारा**–सवार।

(४) **वहि सों**–उससे। **पारइँ**–जीत सकते हैं। **जूझ**–जूझते हैं। **ततखन**–तत्क्षण; तत्काल।

(६) **अरथ**–अर्थ, धन। **दरब**–द्रव्य। **घोरा**– घोड़ा।

(७) **दुउ**–दोनों।

१६

(दिल्ली; एकडला)

खोलि भँडार देइ[1] सब लागा। जिन्ह[2] पावा तिह[3] दारिद भागा॥१
भूखहि[4] भुगुति पियासहि[5] पानी। नाँगहि कापर दीन्ही[6] आनी॥२
मन कामना जो पुरवइ[7] आसा। मरम जानि नहिं करै निरासा॥३
जो विधि सों मन ईछा माँगी[8]। पाइ सबै न केको खाँगी॥४
अस माँगा[9] विधि हम कों देहू। अरथ दरब धन पूत सनेहू॥५
जो माँगेसि सो पायसि विधि[10] सों[11], आसा[12] रही न एको खाँग।६
एक न पूत तिह[13] आहा घर वहि[14] कैं, सो विधि सों लइ[15] माँग॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–देय। २–जे। ३–तेहि। ४–भूखेहि। ५–पियासे। ६–दीतिन्हि। ७–पुरवै।
८–माँगा। ९–आसा मा। १०–१२×। १३–×। १४–उहि। १५–लीहु।

टिप्पणी—(१) **दारिद**—दरिद्रता।

(२) **भुगुति**–(भुक्ति) भोजन। **नाँगहि**-नंगों को। **कापर**–कपड़ा। **आनी**-लाकर।

(३) **पुरवइ**–पूरा करे। **मरम**–(मर्म) मन की बात।

(४) **ईछा**–इच्छा, मनोकामना। **खाँगी**–खण्डित, अधूरी; व्यर्थ गयी।

(६) **खाँग**–खण्डित।

१७

(दिल्ली, एकडला)

राजा[1] पूत मँदिर औतारा। अति सरूप धनि [सिरजनहारा]॥१
ससिहर जनु[2] पूनिउँ कर[3] आहा। भरि उँजियार जगत महँ रहा॥२
राजैं पूत दिस्टि भरि देखा। भा आनन्द अस आउ[4] न लेखा॥३
करम जोति मनि दियै लिलारा। लखन बतीसौं राजकुवाँरा[5]॥४
पण्डित औ बुधवन्त हँकारे। रासि गुनहु[6] औ नखत उन्हारे॥५
गुनि गुनि पतरा देखु[7], कौन गरह दहिनों[8] सुद्ध[9]।६
नाउ[10] धरहु निरमल उत्तिम[11] कै, लखन देखि सब बुद्ध[12]॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–जामा दिन पूत औतारा । २–जनि । ३–कै । ४– आव । ५–राजकुमार । ६–गनहु । ७–गनि गुनि देखहु पंडितहु । ८–दहु । ९–सुध । १०–नाव । ११–X। १२–औ बुध ।

टिप्पणी—(१) **सिरजनहारा**–सृष्टिकर्ता, ईश्वर ।

(२) **ससिहर** (शशधर) चन्द्रमा । **पूनिउँ**–पूर्णिमा । **कर**–का ।

(३) **दिस्टि**–दृष्टि ।

(४) **मनि**–मणि । **दिपै**–दीप्तिमान हो ।

(५) **हँकारे**–बुला भेजा । **उन्हारे**–उच्च ।

(६) **पतरा**–पत्र, ज्योतिष ग्रन्थ । **गरह**–ग्रह ।

(७) **नाँउ**–नाम । **धरहु**–रक्खो । **लखन**–लक्षण ।

१८

(दिल्ली; एकडला)

बाँभन बैठि गुनै[1] सब लागे । रासि गुनहिं[2] (उन्ह)[3] करम सुभागे[4] ॥१
गुनी[5] रासि बड़ राजा[6] होई । यहिं[7] सरि अउर[8] न पूजै[9] कोई ॥२
तुला[10] रासि गुनि[11] नाउ[12] सो राखा । राजकुँवर सब पँडितहि सुभागा[13] ॥३
बहुत गरह उन्ह उत्तिम गुने[14] । कछु रे गरह आहहिं [सामने] ॥४
तिहिं[15] गुनि गुनि पंडितँहि कहिं[16] सोई । तिय वियोग[17] कर[18] कछु दुख[19] होई ॥५
दइ रे[19] असीस जोतिखी[20] बहुरे, पायँहि बहुत बिसाउ[21] ।६
धन परिवार कुटुँब सेउँ समेंत[22], जुग जुग जीवउ[23] राउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–गनै । २–गनहिं । ३–(दि०) दुहुँउँ । ४–सभागे । ५–गनि । ६–राज जो । ७–एहि । ८–और । ९–मुला । १०–गनि । ११–नाव । १२–पण्डितन्ह भाखा । १३–गने । १४–X। १५–कहा पुनि । १६–बिऊग । १७–आगे । १८–X। १९–X। २०–जोतिषी । २१–पसाउ । २२–कुटुँब सौं । २३–जीओ ।

टिप्पणी—(१) **बाँभन**–ब्राह्मण ।

(२) **सरि**–समान ।

(६) **जोतिखी**–ज्योतिषी । **बहुरे**–लौटे; वापस गये । **बिसाउ**–सामग्री ।

१९

(दिल्ली; एकडला[1])

राजैं धाइँहि आयसु दीन्हा[1] । पालहु वेग जो हमकहँ चीन्हाँ ॥१
धाइहिं अस कै खीर पियावा । बरिस देवस मँह बचन सुनावा ॥२

१. इस प्रति में पंक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ है ।

[बरिस] पाँच मँह भयउ[2] सवाई। राजैं पँडितहिं कहा बुलाई[4] ॥३
तुम्ह[5] सब यह[6] कँह गुन सिखरावहु। पढ़ ओराइ तो बान बुझावहु[7] ॥४
पंडित आइ[8] पढ़ावइ लागे। जो कछु गुन तेहि[9] चित मँह जागे ॥५
दस रे बरिस महँ पण्डित[10] अस भा, पोथा बाँच पुरान।६
हेंगुरि खेल बेझ भल मारै, नागर चतुर सुजान।७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१—दीन्ही। २–हमकहु चीन्ही। ३–भयेव। ४–बोलाई। ५–एह। ६–उन्ह। ७–भेजावहु। ८–उन्हहि। ९–थे। १०–×।

टिप्पणी—(१) **आयसु**–आदेश। **हमकहँ**–हमको, मुझको। **चीन्हाँ**–पहचाने।

(२) **खीर**—(क्षीर) दूध।

(३) **ओराइ**—समाप्त कर चुके। **बान**–बाण। **बुझावहु**–शिक्षा दो।

(७) **हेंगुरि**—चौगान; आधुनिक पोलो से मिलता-जुलता खेल है जिसमें अनेक घुड़सवार खिलाड़ी मैदान में गेंद डालकर मुड़ी हुई छड़ी से खेलते हैं। वासुदेवशरण अग्रवाल का अनुमान है कि इस शब्द की व्युत्पत्ति हय + अर्गल (घोड़े पर चढ़कर खेलने का डण्डा) से होगी। **बेझ**–(सं० वेध्य) निशाना, लक्ष्य। **नागर**–नगरनिवासी, सभ्य।

२०

(दिल्ली; एकडला)

अति बुधवन्त अथा[1] भल नाऊँ। सब देखहि[2] आवहिं वहि[3] ठाऊँ ॥१
करै अहेरा[4] साउज मार। रात देवस वहि यहै[5] धमार ॥२
एक दे[व]स जो अहेरैं[6] जाई। जन राउत संग लिहसि तुलाई[7] ॥३
सब कहँ बेरहन दीनिहिं[8] आनी। पीठ घालि पाखर सुनवानी[9] ॥४
चढ़[10] असवार साथ सब चले। राजपूत रुपवन्त[11] जो भले ॥५
रहसत चले जो साथ कुँवर के, खेलै लाग अहेर।६
साउज बहुत अहे तिंह[12] वन महँ, होइ लाग भट भेर ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–उठा। २–देखै। ३–उहि। ४–अहेर। ५–उहाँ अहि। ६–अहेर। ७–लीन्हि बोलाई। ८–दीतन्हि। ९–सोनवानी। १०–भै। ११–रूपवन्त। १२–सावज उठै बहुत तेहि।

टिप्पणी—(१) ठाँऊ–स्थान।

(२) **अहेरा**–आखेट, मृगया, शिकार। **साउज**–(सं० श्वापद>साउज्ज> साउज) जंगली जानवर।

(३) **राउत**–(सं० राजपुत्र> राअउत्त> राउत)—सामन्त, सरदार। **तुलाई**–
निकट बुलाया।

(४) **बेरहन** (?) सवारी। **वालि**–रखकर। **पाखर**–पक्खर; अश्व कवच; जीन।
सुनवानी–(स्वर्णवर्णी) सुनहला।

(६) **रहसत**–हर्षित होकर।

(७) **अहे**–थे।

२१

(दिल्ली)

बेगर बेगर सउजँहि साथ। सारि क बान फोंक लै हाथ ॥१
राजकुँवर फुनि बेगर परा। निरखसि साउज जे र जिय धिरा ॥२
बरन सात एक मिरगी देखी। अपनै जरम न कहियउ पेखी ॥३
कहसि कुरंगिन जरम न होई। [चूरा नेउर पहिरीं सोई*] ॥४
जो सब अभरन पहिरे सामाँ। [रँगत चली*] जानौं भल रामाँ ॥५
देख अचम्भो राउ रहि, फुनि र चलानसि घोर ।६
कहसि बान हौं का यह मारौं, उतर धरौं हथजोर ॥७

टिप्पणी—(१) **बेगर बेगर**–अलग-अलग। **फोंक**–नुकीला।

(२) **फुनि**–पुनः। **बेगर**–अकेला। **निरखसि**- देखा।

(३) **बरन**–वर्ण, रंग। **जरम**–जन्म। **कहियउ**–कभी। **पेखी**–देखा।

(४) **कुरंगिन**–हिरणी। **जरम**–जन्म। **चूरा**–चूड़ा, पैर का आभूषण। **नेउर**–
पायजेब।

(५) **चलानसि**–चलाया। **घोर**–घोड़ा।

(७) **बान**–बाण। **हौं**–मैं। **का**–क्या। **धरौं**–पकड़ूँ।

२२

(दिल्ली)

छाड़सि घोड़ धरै वहि चहा। देखत रूप पेम चित गहा ॥१
मन महँ कहिसि नियर होइ धरौं। हाथ न आउ तोहि पै मरौं ॥२
कहि धरौं नियर अब आई। तरक कुरंगिनि चली पराई ॥३
हाथ मलै औ जिय पछताई। चली कुरंगिनि चित एक लाई ॥४
चढ़ा तुरंग साथ वह लागा। केसर रूप मिरिगि फुनि भागा ॥५
जोजन सात मिरिग के पछयें, परा जाई जो अकेल ।६
बेगर परा साथ सेउँ कुँवर, लोग जान सब खेल ॥७

टिप्पणी—(१) धरै–पकड़ना। वहि–उसको। पेम–प्रेम। गहा–धारण किया।
(२) महँ–में। नियर–निकट। धरौं–पकड़ूँ।
(३) तरक–तड़क, छिटककर। पराई–भाग।
(४) तुरंग–घोड़ा।
(५) जोजन–योजन। पछवें–पीछे।

२३

(दिल्ली; एकडला)

राउ[1] अकेल मिरिगि[2] है जहाँ। तीसर अउर[3] न अहै[4] तहाँ ॥१
लुबुधा पेम कुरंगिनि केरा[5]। बुधि बिसरी सुधि गई सवेरा[6] ॥२
हरियर[7] बिरिख दीख[8] एक महा। मानसरोदक तिंहि तर वहा[9] ॥३
कुँवर संगति[10] कुरंगिनि डरी। मानसरोदक भीतर परी ॥४
तेहि महँ मिरिगी छपानेउ[11] आई। बहुरि न निकला गयउ हिराई[12] ॥५
तुरिय बाँधि तरुवरि सेंउ[13], ततखन[14] कापर धरसि[15] उतारि ।६
बेगि पइठ[16] सरवर महँ, डुबि डुबि[17] ढूँढ़े लागि निहारि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।
१–राव। २–मिरिग। ३–तेसर और। ४–कोई। ५–केरी। ६–सवेरी। ७–हरिनी। ८–देख। ९–तोहितर मानसरोदक व[हा]। १०–संगीत ११–छपानेव। १२–निकसी गई हेराई। १३–सौं। १४–×। १५–धरिसि। १६–पैस। १७–×।

टिप्पणी—(१) अउर–और। अहै–था। तहाँ–उस जगह।
(२) लुबुधा–लोभी। केरा–का।
(३) हरियर–हरा। बिरिख–वृक्ष। मानसरोदक–मानसरोवर।
(५) छपानेउ–छिपी। बहुरि–लौटकर; फिर। निकला–निकला। हिराई–खो।
(७) पइठ–घुसकर। निहारि–(क्रि० निहारना) देखकर।

२४

(दिल्ली; एकडला)

ढूँढ़ै[1] लागि न पायसु चाहा। बिसरा सबै जो मन महँ आहा ॥१
जव लगि हौं न कुरंगिनि पावँउँ[2]। मरौं न जीवन इहँ जिउ ला[वउँ][3] ॥२
सुधि बिसरी बुधि गई हेरानी। चित महँ गड़ी सो[4] पिरम कहा[नी] ॥३
बिसरि न जाइ[5] चित्र चित लहई[6]। पाथर माँझ कीर जनु गहई[7] ॥४
खिन खिन[8] पेम अधिक चित चढ़ा। दुइज चन्द्रमाँ जनु गहन सौं कढ़ा[9] ॥५
चाहिसि बहुत न पाइसि वह[10] कहँ,[11] निकसि ठाढ़ भा तीर ।६
रोवइ[12] बहुत आँसु पर आँसू, कुछउ[13] न सँमुझ सरीर ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१—आपु । २—पावों । ३—मरों इहा पै चित न डोलावों । ४—जो । ५—जाऐ । ६—चित र चित लीही । ७—जनि कीसी । ८—खन खन । ९—दूज चन्द्र मान सो गढ़ा । १०-११—× । १२—रोवै । १३—कुलौ ।

टिप्पणी—(३) हेरानी—खो ।

(४) **माझ**—मध्य, बीच । **कीर**—कील । **गहई**—गड़ी हो ।

(५) **गहन**—ग्रहण । **कढ़ा**—निकला ।

(६) **भा**—हुआ ।

२५

(दिल्ली; एकडला)

पेम चखाइ[1] गई तिह जोवइ[2] । लंक टेकि कर ठाढ़ वहु रोवइ[3] ॥१
जस[4] भादों वरिसै अतिवानी । सब जग भरा नैन कै पानी ॥२
सलिला सबै सरग कै वहई[5] । लघु दीरघ जहवाँ लह अहई[6] ॥३
जस पावस वरिसै गरलाई[7] । खिनखिन[8] अधिक न उघरहिं[9] जाई ॥४
कहे पंखि विधि देइ उड़ावों[10] । सवन सुनो हों तिह ठाँ जावों[11] ॥५
झुरवइ वैठि ठाढ़ [हाय, कछु न आउ विचार] ।६
लोग कुटुंव घरवार तिह[12] लग, विसग [सव सँयसार] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—सिखाइ । २—तेहि जोवों । ३—ठाढ़ रोवै । ४—अस । ५—सरिल गै भई । ६—लघु दीरिघ जग मह भरि गई । ७—वहराई । ८—खन खन । ९—उघरै । १०—देहि उड़ाऊँ । ११—माँन सुनौ जाव तेहि ठाऊँ । १२—तोह ।

टिप्पणी—(१) **जोवइ**—प्रतीक्षा करता है । **लंक**—कमर । **ठाढ़**—खड़ा ।

(२) आतिवानी—अत्यधिक ।

(३) **सलिला**—सरिता, नदी । **सबै**—सभी । **जहवाँ**—जहाँ । **लह**—तक ।

(४) **झुरवइ**—(सं० स्मृ धातुका प्रा० धात्वादेश झूरइ) याद करना, चिन्तन करना । ठाढ़—खड़ा ।

२६

(दिल्ली; एकडला)

खेलत सवै[1] अहेरा जहाँ । राजकुँवर न देखहिं[2] तहाँ ॥१
एक एक कहँ पूछइ[3] वात । काहू देखा[4] जोजन सात ॥२
कहिसि मिरिगि कै पाछे जाई । तुम तिह चलहु[5] जनि परै भुलाई ॥३
हूँढत चला साथ[6] सव कोई । राजकुँवर दुहुँ किह[7] ठाँ होई ॥४
दीखि[8] एक विरिख अति हरा । मानसरोदक तिंहि [तर[9] भरा ॥५

परस घाट सब बाँधे[१०] रचि रचि,[११] ईंगुर बहुत क रसाइ[१२] ।६
कौसीसा रावटि फुनि लागा,[१३] देखि[१४] पाप झरि जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–कुवरा सबौ । २–नहिं देख । ३–पूछहिं । ४–देखी । ५–तोहहु जाहु । ६–साथ चला । ७–केहि । ८–देखिन्हि बिरिख एक । ९–तिंहि तर मानसरोदक । १०–कनक घाट सब बिधि । ११–×। १२–जरी रतन बहुलाय । १३–सरवर बिरिख बखानौं । १४–सुनत ।

टिप्पणी—(२) कहँ–से । काहूँ–कोई । जोजन–योजन ।

(४) दहुँ–न जाने; कदाचित् ।

(५) तर–नीचे ।

(६) **परस**–पारस पत्थर । ईंगुर–सिन्दूर से बना लाल रंग ।

(७) **कौसीसा**–(कपि-शीर्ष) कँगूरा । रावटि–छोटा मण्डप; लाजवर्द पत्थर ।

२७

(दिल्ली; एकडला)

सुझर पानि दीखत[१] अति चोखा । पियत जो[२] रहै न[३] एको दोखा ॥१
बेना बास पियत अति मीठा । अँवरित अइस न जग महँ दीठा[४]॥२
सीतल सेत अम्भु[५] कर रूपा[६] । पंक[७] कपूर सुनहु सो अनूपा[८] ॥३
फूले बहुत[९] कँवल तिंह आहा[१०] । लुबुधा भँवर पेम कर गहा[११] ॥४
फूली कुमुदिनी[१२] सघन सोहाई । ससि पुरइन जासों गर[१३] लाई ॥५
चकई चकवा हँस केलि कर, देखत अति रे सुहाउ[१४] ।६
बिरिख अपूरब कहा[१५] सराहौं, कै भगवन्त सो लाउ[१६] ॥७

पाठान्तर—एकडल प्रति ।

१–पानी देखत । २–×। ३–नहिं । ४–अम्रित अैस तै चमकै दीठा । ५–अम्बु । ६–रूप । ७–ऐक । ८–जो सुनहु अनूप । ९–पुहुप । १०–तहँ अही । ११–गही । १२–मोदिनी । १३–ससि पिरीति जासों गहि । १४–सुहाव । १५–काह । १६–लाव ।

टिप्पणी—(१) **सुझर** (शुद्ध > सुज्झ > सुझ > सुझर) निर्मल । **चोखा**–उत्तम, श्रेष्ठ, खरा । **दोखा**–(दूखा) कष्ट, रोग ।

(२) **बेना**–(सं० वीरण) खस । **अँवरित**–अमृत । **दीठा**–देखा ।

(३) **सेत**–(श्वेत) सफेद । **अम्भु**–जल, पानी । **पंक**–कीचड़ ।

(४) **कँवल**–कमल ।

(५) **पुरइन**–(सं० पुटकिनी) कमलकी बेल । **जासों**–जिससे । **गर लाई**–गले लगाया ।

२८

(दिल्ली; एकडला)

कदलि[1] पेड़ डारैं छतनारीं[2] । अँबरित सींचि कै र[3] सवारीं ॥१
हरे पात सब कोंपल नयें । अति चिकनें आरसी सों भयें ॥२
जनु[4] राजा पर डम्बर तानाँ । तिंह[5] तर बैठि देखि[6] उन्ह रानाँ ॥३
उतरि[7] सबै नियर चलि आये । कै जुहार[8] सिर भुइँ लै लाये ॥४
आइ बैठि सब पूछहिं बाता । साँवर बरन भयउ किंह[9] राता ॥५
कँवल भाँति दिन बिगसत, जस निसि उवइ[10] मयंक ।६
रोवइ चेत न चीतै तन[11] सुधि,[12] दब्ब गयें[13] जिमि रंक ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–केदली । २–डारि छतनारी । ३–अँब्रित सीचें के रे । ४–जनि । ५–तेहि । ६–बैठ देख । ७–उतरे । ८–जोहारि । ९–भयेव कहा । १०–उवै । ११-१२–× । १३–द्रब गये ।

टिप्पणी—(१) **कदलि**–कदली, केला । **डारैं**–डालें । **छतनारी**–फैली हुई । **अँबरित**–अमृत । **सवाँरी**–सजायी ।
(२) **आरसी**–दर्पण ।
(३) **डम्बर**–छत्र । **उन्ह**–उन्होंने ।
(४) **नियर**–निकट । **जुहार**–अभिवादन, प्रणाम । **भुँइ**–भूमि ।
(५) **साँवर**–श्यामल । **बरन**–वर्ण, रंग । **राता**–(रक्त) अनुरक्त ।
(६) **बिगसत**–विकसित होता है । **उवइ**–उगता है । **मयंक**–चन्द्रमा ।
(७) **चेत**–स्मृति । **चीतै**–धारण करे । **दब्ब**–(द्रव्य) धन । **रंक**–निर्धन ।

२९

(दिल्ली; एकडला)

उतर[1] न देइ[2] पेम गढ़[3] लीता । स्रवन[4] न सुनैं नेह पर चीता ॥१
फुनि र कहहि हम आयसु[5] होई । जो मनसा चित पुरवहिं सोई ॥२
कहिसि मिरिगि[6] हम आगैं आवा । बरन सात इक भाइँ[7] देखावा ॥३
सींग जरी का[8] कहौं सवाँगा । गले हार गजमोतिंह माँगा ॥४
[नेउर पाउँ*] घुँघरू आहे[9] । नैन सरूप जाँहि नहि कहे ॥५
चंचल चपल चलत खिन, [जानहु चले उड़ाइ[10]] ।६
देखत (बिनु वह)[11] कहै न आवै, इँह[12] महँ गई बिलाइ[13] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–कुँवर । २-देअ । ३–गहि । ४–सौ । ५–आऐस । ६–मिरग । ७–मिरिग । ८–मिरिग जरे का । ९–चुरचुरा घुँवरू अहे । १०–उड़ाय । ११–पैवन (दिल्ली

प्रति में भी 'पैबन' पाठ है; किन्तु वहाँ 'पै' काट दिया गया है और 'बन' के बाद 'वह' लिखा गया है। साथ ही मार्जिन में एक इतर पाठ भी है जो 'पर वै' पढ़ा जा सकता है। १२—ओहि। १३—हेराय।

टिप्पणी—(२) **मनसा**—मनोकामना। **पुरवहिं**—पूरा करेंगे। **सोई**—उसे।

(४) **सवाँग**—सर्वांग। **माँगा**—माँग; केश के बीच विभाजक पतली रेखा जिसमें स्त्रियाँ सिन्दूर भरती हैं। इस स्थान पर स्त्रियाँ मोतियों का बना आभूषण-विशेष भी पहनती रही हैं।

(५) **जाँहि**—जाय।

(७) **बिलाइ**—लुप्त।

३०

(दिल्ली)

किहिस सिंगार सपूरन गही। बहुतै छवि रूप बहु लही ॥१
बारह अभरन पहिर सँवारी। अति सरूप भर जोबन बारी ॥२
सो हम देखत यहि कहँ गयी। अइस न जाने वँह का भयी ॥३
यह अस बात जाइ न कही। वह अपछरा इन्द्र कै अही ॥४
उठहु चलहु घर खेलत जाहीं। पिता पाछु तुम्ह जीयहिं नाहीं ॥५
कहा तुम्हार न बारों मन्तैं, जो घट महँ जिउ होय ।६
जिउ लै गई कया पै देखी, नैन रहे पँथ जोय ॥७

टिप्पणी—(१) **अभरन**—आभरण, जेवर, गहना, आभूषण।

(३) **अइस**—ऐसा। **का**—क्या। **भयी**—हुई।

(४) **अपछरा**—अप्सरा।

(५) **पाछु**—परोक्ष।

(६) **बारौं**—वर्जित करूँ; टालूँ। **मन्तैं**—मन्त्रणा देनेवाले लोग; मित्र।

(७) **जोय**—जोह, प्रतीक्षा।

३१

(दिल्ली: एकडला; बीकानेर)

कुँवर बात उन्ह सों[१] अस कही। सकलहिं[२] कै जियँ चिन्ता गही ॥१
सब आपुन[३] मँह मँता कराहीं। कुँवरहि[४] छाड़ि कहाँ हम जाहीं ॥२
कुँवरहि बहुरि लागि[५] समुझावइ[६]। पेम[७] गहा वहिं[८] चित न डुलावइ[९] ॥३
कहसि चाउ[१०] जो तुम्ह हिय[११] मोरीं। पैठहु[१२] ढूँढइ[१३] कापर[१४] छोरी ॥४
ढूँढइ पइठ[१५] कुँवर जो कहा। निकस[१६] बइठ[१७] कुछउ[१८] न[१९] अहा ॥५
बहुरि लागि समुझावइ[२०], सब मिलि[२१] बैठि कुँवर के पास ।६
कउनउ[२२] भाँति न समुझइ[२३] लुबुधा[२४], लै[२५] ऊपर[२६] कै साँस ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) सै। २–(ए०) सगलेन्ह; (बी०) सगलेहु। ३–(ए०) आपन। ४–(ए०) कुँअरहि। ५–(ए०) लाग; (बी०) लाग बहुरि। (६) (ए०) समुझावै। ७–(बी०) पैम। ८–(ए०) उवह; (बी०) पै। ९–(ए०) डोलावै; (बी०) डुलावै। १०–(ए०) चाँड़ि; (बी०) चाँड। ११–(ए०) तोहि है; (बी०) तोहि आहे। १२–(बी०) पैसहु। १३–(ए०) हूँढै; (बी०) हूँढहु एहि महि। १४–(ए०) कपरा। १५–(ए०) हूँढै पैठि; (बी०) हूँढै पैसि। १६–(बी०) निसे। १७–(ए०, बी०) हूँढ़ि। १८–(ए०) कुछु; (बी०) किछु। १९–(ए०) नहीं। २०–(ए०, बी०) लगे समुझावैं। २१–(ए०) ×। २२–(ए०) कौनउ; (बी०) कौनहु। २३–(ए०, बी०) समुझै। २४–(ए०) ×। २५–(ए०) लेय; (बी०) लेइ। २६–ऊभि।

टिप्पणी—(१) **सकलहिं**–सब लोगोंको।

(२) **आपुन**–अपनेमें। **मँता**–सलाह, परामर्श। **छड़ि**–छोड़कर। **जाहीं**–जायँ।

(३) **बहुरि**–पुनः।

(३) **चाउ**–चाव, स्नेह। **हिय**–हृदय। **पैठहु**–घुसो। **कापर**–कपड़ा। **छोरी**–छोड़कर, उतार कर।

(७) **कउनउ**–किसी भी।

३२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहा तिहार आह अनभला।[१] [बिनु] जिउ[२] कहहु जाइ[३] केउँ[४] चला ॥१
रोवइ बहुत सरिल[५] सब लोहू। जो र[६] देखहि तिह[७] उठै मरोहू[८] ॥२
जब लगि चाह न वहि कै पावउँ[९]। मरौं इँहाँ पै चित न डुलावउँ[१०] ॥३
कहहि[११] काह कम[१२] कीजइ[१३] तासू[१४]। धावन पठये[१५] राजा पासू[१६] ॥४
कागल लिहि[१७] दई[१८] बातो[१९] औ[२०] कही। जो सब बात इँहा कै[२१] अही ॥५
चला[२२] बेगि[२३] तिंह जाइ[२४] तुलाना, कहि[२५] राजा सों[२६] बात।६
कहहु[२७] कहाँ अहै[२८] किह[२९] ठाँई[३०], उँह हुत[३१] जोजन सात ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कहहु तुम्हारा न अहै भला; (बी०) कहा तोहार तो अहै भला। २–(बी०) जिव। ३–(ए०) जो जाय। ४–(ए०) केंव; (बी) किमि। ५–(ए०) सलिल। ६–(बी) जो रे; (ए०) जो। ७–(ए०) देखै तोहि। ८–(ए०)मोरोहू। ९–(ए०) उहि की पावौं; (बी०) वोही की पाऊँ। १०–(ए०) डुलावौं; (बी०) डुलाऊँ। ११–(ए०) कहिसि; (बी०) कहिन्हि। १२–(बी०) ×। १३–(ए०, बी०) कीजै। १४–(बी०) तासौ। १४–(ए०) पठइय। १६–(बी०) पासा। १७–(बी०) लिखि। १८–(ए०) दै; (बी०) दुइ। १९–(ए०)

बातैं; (बी०) बात जु। २०–(ए० बी०) × । २१– (ए०) की। २२–(बी०) चलेउ। २३–(ए०) बेगी; (बी०) × । २४–(ए०) तहँ जाय। २५–(ए०) कह; (बी०) कही। २६–(ए०) सौं; (बी०) सउँ। २७–(बी०) कहिन्हि। २८–(ए०) × ; (बी०) हैं। २९–(ए०, बी०) केहिं। ३०–(बी०) ठाउँ। ३१–(ए०) हुतै; (बी०) हतै।

टिप्पणी—(१) तिहार–तुम्हारा। अनभला–अहितकर।

(२) **सरिल**–सलिल, जल। **मरोहू**–करुणा; दुःखी के प्रति आत्मीय सहानुभूति।

(४) **धावन**–सन्देशवाहक। **पठये**–भेजे।

(५) **कागल**–कागज। **लिहि**–लिखकर।

(६) **तुलाना**–निकट पहुँचना।

(७) **हुत**–से।

३३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुनी बात दुख भा सुख[१] भागा। राजैं तुरय[२] बेगि कै माँगा ॥१
नगर जहाँ लहि[३] मानुस[४] आहा[५]। चला[६] सबै एको नहिं रहा ॥२
भये असवार राउ[७] औ राना। पहर एक माँह आइ[८] तुलाना ॥३
राजा देखि अचम्भो रहा। बदन चाँद जनुँ[९] गहन जो[१०] गहा ॥४
मूरत भरम[११] छया[१२] पै रही। कया अनल[१३] बिरहानल[१४] दही[१५] ॥५
कहहि[१६] काह कस देखु[१७] अपूरब[१८], जो चित रहा न जाइ[१९] ॥६
रोवइ[२०] बहुत बात न आवइ[२१], सँवरि सँवरि पछताइ[२२] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) सख। २–(बी०) त्रिया। ३–(बी०) लहु। ४–(बी०) मानस। ५–(ए०, बी०) अहा। ६–(बी०) चलेउ। ७–(ए०) राव; (बी०) राइ। ८–(ए०) जाय। ९–(बी०) जनौं। १०–(ए०) गहनें। ११–(ए०) मरत भुवन; (बी०) मूरति भरम। १२–(ए०) छाय; (बी०) छाया। १३–(बी०) अनिल। १४–(ए०) बिरहे तन। १५–(ए०, बी०) डही। १६–(ए०) कहिसि; (बी०) कहहु। १७–(ए०) देखे। १८–ए० × । १९–(ए०) जाय। २०–(ए०) रोवै। २१–(ए०) नहि आवै। २२–(ए०) सौरि सौरि। २३–(ए०) पछताय।

टिप्पणी—(७) सँवरि सँवरि–स्मरण कर करके।

३४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

[राजा पू]छहि[१] कहहु[२] हम[३] बाता। देखहु[४] काह काहु[५] जिउ[६] राता ॥१
देखेउ सोइ जाइ न[७] कही। उहैं[८] बात गहि[९] चित मँह[१०] रही ॥२

देखउँ एक कुरंगिनि म[ही][11]। [सवन न सुनउ[12] कहौं दहुँ कही]॥३
जो जिउ[13] लेगई कया भुलानी। अन[14] न रूच[15] भावइ[16] नहिं पानी॥४
दिस्टि रही तिंह[17] मारग लागी। जिंह[18] मारग वह[19] गयी सुभागी[20]॥५
पन्थ निहारत तिहि[21] कर, लोयन[22] खीन[23] जोति।६
जेउँ[24] जल चाहै स्वाँति को[25], सायर[26] सीपिंह[27] मोंति॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) पूछ; (बी०) पूछै। २–(ए०) कहउ। ३-४–(बी०) न। (ए०) देखेहु; (बी०) देखिहु। ५–(बी०) काहि। ६–(ए०; बी०) चित। ७–(ए०) नहिं। ८–(बी०) येहइ। ९–(ए०) गड़ि। १०–(बी०) चित महँ गड़ि। ११–(बी०) माह। १२–(ए०) सौनन सुनेव; (बी०) सर्वनन सुनौं। १३– (बी०) जो जी। १४–(ए०) अन्न। १५–(ए०) रुच; (बी०) रुचै। १६–(ए०) भावै। १७–(ए०) तेहि। १८–(ए०) जहि। १९–(ए०) उवह। २०–(ए०) सभागी। २१–(ए०) तह; (बी०) ताहि। २२–(ए०) लेयेन; (बी०) लोइन। २३–(ए०) खीन भै; (बी०) खोनी। २४–(ए०) जेंव, (बी०) ज्यौं। २५–(ए०) स्वातिक। (बी०) स्वाती। २६–(ए०) सायेर; (बी०) साइर। २७–(ए०) सीपन्ह; (बी०) सीपन्हि।

टिप्पणी—(६) निहारत–देखते-देखते।

(७) सायर–सागर।

३५

(बीकानेर; दिल्ली[1])

राजैं कहा[1] बात सुनु मोरी। यहि र[2] बात अहै बुधि थोरी॥१
मिरिग[3] न पानी माँझ[4] हेराई। सपन क सौतुक देखिह[5] आई॥२
उठि घर चलहु[6] साथ होइ मोरें[7]। नाहुत[8] हमहुँ मरब संग तोरें[9]॥३
कहा तुम्हार कहु[10] सो मानउँ। जो कछु[11] कहहु सो सब परवानउँ॥४
[दिस कोस औ (विरथ*)[12] भँडारा। सब विसरौ घर भा अँधियारा॥५
(स्रवन*)[13] नहिं सुनै कहा नहिं मानै, धरसि तासों चित लाइ।६
पाइ लागि कै राजा, कुँवरहिं रहा मनाइ]॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–राजा कहै। २–यह रे। ३–म्रिगा। ४–माँहि। ५–सपनै कै सौतुख देखेहु। ६–उठहु चलहु घर। ७–मोरे। ८–नहिं तो। ९–तोरे। १०–कहौ। ११–जो किछु कहौ। १२–वर्थ। १३–सर्वन।

---

१. दिल्ली प्रति में पंक्ति ५, ६, ७ के स्थान पर कड़वक ३६ की पंक्ति ५, ६, ७ है।

टिप्पणी—(२) **माँझ**—मध्य, बीच । **क**—का । **सौतुक**—साक्षात घटना; प्रत्यक्ष ।
(३) **मोरे**—मेरे । **नाहुत**—नहीं तो । **हमहुँ**—मैं भी । **मरब**—मरूँगा ।
(४) **परवानौं**—प्रमाणित करूँ; पूरा करूँ ।
(५) **देस**—देश, राज्य । **कोस**—कोष । **बिरथ**—व्यर्थ ।

३६

(बीकानेर; दिल्ली[1])

[(चरन)[1] लागि (माँगउँ)[2] कर जोरी । सुनहु पिता यह बिनती मोरी ॥१
बिनु(जिउ)[3] कहहु कया (किंह)[4]जाई । जिउ तेहि पहँ गयउ(जु गई लुकाई)[5]॥२
साथ गये तुम्हरे दुख पइहों । (हिउ)[6] फाटी ततखन मरि जइहौं ॥३
छाड़ि देहु हौं रहौं (उहि)[7] आसा । घट महँ जीउ रहै(उहि)[8] आसा] ॥४
हम बिनु खाँग न राज तुम्हारें[9] । जुग राजा सिर छाँह हमारें[10] ॥५
अति बुधवन्त सभै गुन जानहु, तुम्ह अस पिता न आन ।६
सो उपकार कहौं हौं तुमहिं सेंउ[11], जिंह[12] घट रहै परान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।
१—चर्न । २—माँगों । ३—जिव । ४—कहँ । ५—गयो गई लखाई । ६—हिव । ७—वोहि । ८—वोहि । ९—हम बिनु राज न खँगे तुम्हारा । १०—हमारा । ११—कहौं तुम सेती । १२—जिहि ।

टिप्पणी—(२) **लुकाई**-छिप ।
(३) **हिउ**—हृदय । **फाटी**—फट जायेगा । **ततखन**—तत्क्षण ।
(४) **खाँग**—खण्डित ।

३७

(दिल्ली; एकडला)

माँगों यहै[1] बात सुनि लेहू । मंदिर उचाइ मान पर देहू ॥१
कहहुँ भाँति अस मंदिर उचावइ[2] । मानसरोदक जिंह[3] मँह आवइ ॥२
राजा[4] नेगिन्हि कहा बुलाई[5] । भवन[6] अपूरब देहु [उचाई] ॥३
यहै रजायसु[7] कुँवरहि केरा । जो र कहँहु तिह लागि[8] न बेरा ॥४
जिंह[9] लग हम आयसु[10] परवानाँ । पाती लिखी देस भुइ जानाँ[11] ॥५
बार बूढ़ सब आयसु[12] लीन्हें, रहि न कोई जाइ[13] ।६
राजा चला नगर कहँ बहुरि[14] कै[15], नेगिन्हि चिन्ता लाइ ॥७

---

१. दिल्ली प्रति में केवल पंक्ति ५,६,७ है, जो कड़वक ३५ के प्रथम चार पंक्तियों के साथ है ।

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–यह रे। २–उचावै। ३–जेहि। ४–राजैं। ५–बोलाई। ६–भौन। ७–किही रजाऐस। ८–तेहि लाग। ९–जह। १०–आयसु हम। ११–देस होई आना। १२–×। १३–रहे न कोई सब जाइ। १४–१५ ×।

टिप्पणी—(१) **उचाइ**–उठाकर, निर्माण कराकर।

(२) **नेगिन्ह**–दास; कर्मचारी।

(४) **केरा**–का। **बेरा**–देर।

(५) **जिंह लग**–जहाँ तक। **आयसु**–आदेश। **परवाना**–प्रमाण। **पाती**–पत्र। **भुइ**–भूमि।

(६) **बार**–युवक।

(७) **बहुरि**–लौटकर।

३८

(दिल्ली; एकडला)

देस[१] लोग कहँ पठये[२] पाती। बेगि आउ[३] कोउ रहै न राती ॥१
बार बूढ़ जेहवाँ लहि आहा। बेगि आउ[४] घर कोउ[५] न रहा ॥२
थवई बढ़ई अउर[६] लोहारू[७]। आइ[८] पथेरिया[९] औ चुनहारू[१०] ॥३
आये सुनार जो ढारइ[११] पानी। चतुर चितेरा अति र बिनानी[१२] ॥४
करवतिया बहु आये कुँदेरा। मँदिर उचावत लाग न बेरा ॥५
सतयें पवन खाल **दिखराई[१३], मंदिर उठये[१४] बहु भाँत ।६**
आपुन आपुन[१५] काज सँवारहि, बइठ[१६] पाँतहि पाँत ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–सी। २–पठई। ३–आव। ४–आव। ५–कोइ। ६–और। ७–लोहारा। ८–आव। ९–पथरिया। १०–चुनहारा। ११–ढारहिं। १२–रे। १३–सोनन्हि नेउ देखाए दे। १४–उठे। १५–आपन आपन। १६–बैसे।

टिप्पणी—(१) **पठये**–भेजा।

(२) **जेहवाँ**–जहाँ। **लहि**–तक।

(३) **थवई**–(स० स्थपित), भवन बनानेवाला कारीगर।

(४) **पथेरिया**–पत्थर का काम करनेवाले। **चुनहारू**–चूना तैयार करने वाले।

(५) **ढारइ**–ढालते हैं। **चितेरा**–चित्रकार। **बिनानी**–(विज्ञानी) कुशल।

(६) **करवतिया**–(करपात्र = आरा) लकड़ी चीरनेवाले।

(७) **कुँदेरा**–कुन्दकार; खरादनेवाला।

(८)–**बेरा**–विलम्ब, देर।

३९

(दिल्ली; एकडला)

खँड[1] ऊपर खँड सात उचाई। धरे झरोखा अति र सोहाई ॥१
चार पँवरि[2] चतुरंग सँवारीं। जानु[3] चहूँ दिसि सजीं अटारीं ॥२
तिहिं[4] ऊपर चौखण्डी सँवारी। कनक पानि औ ईंगुर ढारी[5] ॥३
भारत[6] राम रमायन चीता। रावन हरी राम घर सीता ॥४
कन्ह[7] (सहित) सोलह सों[8] गोपी। अंगद जाँघ लंका महँ रोपी ॥५
कथा इँह[9] सब झा[रि उरेही[10]], एक एक आनों[11] [भाँत]।६
सिंघ म्रिग कस्तूरी उरेहे, साउज पातहिं पाँत[12] ॥७

मूल पाठ—५-(दोनों प्रतियों में) सहस।

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१-मंड। २-कोठरी पौरी। ३-मान। ४-गढ़ि। ५-कनक पानि तेहि ऊपर ढारी। ६-अरथ। ७-लीहिन्हि। ८-से। ९-नेह। १०-उरेहिन्हि। ११-अनबन भाँति। १२-भातिन्ह भाँति।

टिप्पणी—(१) **खँड**-खण्ड; मंजिल। **झरोखा**-गवाक्ष; खिड़की।
(२) **पँवरि**-प्रवेश द्वार। **अटारी**-अट्टालिका।
(३) **चौखण्डी**-चार खण्ड की बुर्जी। **कनकपानि**-सोने के पानी की स्याही। हस्तलिखित सुवर्णाक्षरी जैन ग्रन्थोंके देखनेसे पता लगता है कि इसका प्रचलन पन्द्रहवीं शतीमें हो गया था।
(४) **भारत**-महाभारत। **चीता**-चित्रित किया।
(५) **कन्ह**-कृष्ण।
(६) **आनों**-अनेक, अन्यान्य। **भाँत**-भाँति, प्रकार।
(७) **सिंघ**-सिंह।

४०

(दिल्ली; एकडला)

भींउ[1] उरेहा कीचक मार[2]। लिहा दुसासन भुएँ उपार[3] ॥१
लिहा भरथरी औ पिंगला। जिह बियोग जोगी संग चला ॥२
अरजुन राहु बेध जस कीता। कौरों मारि दुरपदी[4] जीता ॥३
रिग जुग साम अथरबन आना। पण्डित सहदेव लिहा सयाना ॥४
जिंह[5] लहि नाँच पेखना अहीं[6]। बिनु देखें मुँहि जाँहि[7] न कही ॥५
उहै कुरंगिनि चित्र उरेही, जै[8] अति किय अपकार[9]।६
देखि देखि तिह रोवइ संभरे, जीवन उहै अहार ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–भीम । २–मारा । ३–भुजा उपारा । ४–दुरपती । ५-कह । ६–आही । ७–मोहि जाए । ८–जेंहि एत किअ । ९–उपकार ।

टिप्पणी—(१) **भींउ**–भीम, पंच-पाण्डवमेंसे एक । **उरेहा**–(सं० उल्लेखन) चित्र बनाया । **लिहा**–लिखा । **भुएँ**–भुजाएँ । **उपार**–उखाड़ा ।

(२) **भरथरी**–भर्तृहरि । उज्जैननरेश जो अपनी रानी के कारण वैरागी हो गये थे । **पिंगला**–भर्तृहरि की पत्नी ।

(३) **अर्जुन**–पंच-पाण्डवमेंसे एक जो अपने अचूक बाणके लिए प्रसिद्ध थे । **राहु**–रोहू मछली । **बेध**–निशाना । **कीता**–किया । (यहाँ द्रौपदीके स्वयंवरमें मत्स्य-वेधकी ओर संकेत है ।

(४) **कौरों**--कौरव । **दुरपदी**–द्रौपदी ।

(५) **रिग**–ऋगवेद । **जुग**–यजुर्वेद । **साम**–सामवेद । **अथरवन**–अथर्ववेद । **सहदेव**–पंच-पाण्डवमेंसे एक जो अपने पाण्डित्यके लिए विख्यात थे ।

(५) **पेखना**–(सं० प्रेक्षण) तमाशा, नाटक । **मुँहि**–मुझे । **जाहिं**–जाय ।

४१

(दिल्ली; एकडला)

सँवरे[१] ताहि जो देखसि[२] अहा । रोउ बहुत संग कोउ[३] न रहा ॥१
धाइ[४] एक आछी तिह[५] ठाँई । खीर मोह कछु कहै बुझाइ ॥२
खिन[६] एक धाइ बात चुप[७] लावइ । फुनि जिउ जाइ जहाँ वहि पावइ[८] ॥३
सूनी कया न जीउ घट तहाँ[९] । पौन कुरंगिनि देखसि[१०] जहाँ ॥४
काम बान बेधौं न सँभारे । जपै कुरंगिनि खिन[११] [न बिसारे] ॥५
निसि बासर बिब तैसहिं[१२], खिन एक[१३] दूसर चित न कराइ ।६
चतुर (महावत[१४]) गयन्द जिउँ[१५], कैसेहु उतरि न जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडल प्रति ।

१–सारे । २–देखिसि । ३–कोइ । ४–धाए । ५–आछे तेहि । ६–खन । ७–चित लावै । ८–पूनि जिउ जाही उही पावै । ९–यहाँ । १०–देखिसि । ११–खिनु । १२–तैसे । १३– X । १४–चित महुत (दि०) महत । १५–जंव ।

टिप्पणी—(१) **आछी**–थी । **खीर**–(स० क्षीर) दूध । **बुझाई**–समझकर ।

(६) **बिब**–दो, दोनों ।

(७) **महाउत**–महावत । **गयन्द**–हाथी । **जेंउँ**–जिस प्रकार ।

४२

(दिल्ली; एकडला[1])

भादों[1] मेघा नैन बरिसाई। बिनु[2] जलहर भरि पूर[3] रहाई ॥१
निसि अँधियारी तेहि बिनु लागै। तेज न भाउ[4] रैनि सब जागै ॥२
दामिनि छया रैन तर आवइ[5]। धरै चाह धौं कहु कित पावइ[6] ॥३
मँदिर सून संगि साथि[7] न कोई। दादुर संख **ररहँ[8] पै सोई ॥४**
चातक[9] पिउ पिउ चलहि पुकारी[10]। वह[11] बियोग बिधा[12] न सभाँरी[13] ॥५
लाइ[14] नैन दोइ[15] बरखा, अखरहि[16] बरिसै गहर[17] गँभीर ।६
नैन सलिल मन डुबोवइ[18], दई लावइ तीर[19] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–भौदों। २–बन। ३–पूरि। ४–भावै। ५–आवै। ६–धोखे कत पावै। ७–संग साथ। ८–सघन रै। ९–चातिक। १०–जलहि पुकारै। ११–तेहि। १२–विउग बेधा। १३–सँभारे। १४–लाए। १५–दुइ। १६–× । १७-गहिल। १८–नेह सलिल मस डुबो। १९- दैअ लाव पै तीर।

टिप्पणी—(१) **जलहर**–जलाशय।

(२) **दामिनि**–बिजली। **छया**–कौंधा। **धरै**–पकड़ना। **धौं**–किन्तु।

(४) **दादुर**–मेढ़क।

४३

(दिल्ली; एकडला[1])

माँह तुसार[1] न लागै देहा। विरह आगि जर भयउ[2] सो खेहा ॥१
निसि नरिन्द सब ठाढि पुकारै। लोयन लाउ[3] न रसना हारै ॥२
काम आगि उपजै[4] तन सेतीं। कहँ तुसार किह चूकत[5] एतीं ॥३
कोस बीस[6] एक तहि सों भागै। रहै त जरै भसम होइ लागै[7] ॥४
विरह आग ऐसी परजरै[8]। सीउ[9] परान पुहुमि सब हरै[10] ॥५
रावन लंका जरि बुझी, यह कैसँहि[11] न बुझाइ ।६
जिह[12] कारन यह लागी सीसीवा[13], **तिहि[14] भेटैं तो जाइ ॥७**

---

१. सम्मेलन संस्करण में इस कडवकका उल्लेख कड़वक ३२३ (स० स० २७९) के पाठान्तरके रूपमें पादटिप्पणीमें हुआ है।

१. सम्मेलन संस्करणमें इस कडवकका उल्लेख कड़वक ३२८ (सं० सं० २८४) के पाठान्तरके रूपमें पाद टिप्पणीमें हुआ है।

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१—तोसार। २—भएेव। ३—लवै। ४—उपजी। ५—तोसार केहि जोगत। ६—कस तीस। ७—भागै। ८—ऐसो ही परजरी। ९—सेत। १०—हरी। ११—अहे कैसोहूं। १२—जेहि। १३—×। १४—तेहि।

टिप्पणी—(१) **माँह**—माघ। **तुसार**—(तुषार) शीत। **खेहा**—राख।

(२) **ठाढ़ि**—खड़ा। **लोयन**—लोचन। **रसना**—जीभ।

(५) **परजरे**—(सं० प्रज्वल > प्रा० पज्जल > पर्जल > पर्जर > परजरना) जलती है।

सीउ—शीत। **परान**—भागा। **पुहुमि**—पृथिवी। (७) **भेंटै**—भेंट हो; मिलै।

४४

(दिल्ली)

[तन*] तपै जनु बरसि अंगारा। चन्दन देह न लाउ न सँभारा ॥१
कै खँडवानि न काउ पिया। दई जानि कैसहिं कै जिया ॥२
लोयन लौटहि वहु कामिनि बानी। नैन लाइ वहु ठाँउँ हिरानी ॥३
जाड़ धूप तिह लागै देहा। जाकर होइ सरीर एहाँ ॥४
सिसिर उखम तो लागै कोई। जो सरीर भीतर जिउ होई ॥५
जिउ लै गई गहि कैं आगें, कया न आह परान।६
खटरितु वारह मास वरस दिन, यहो आइ ओरान ॥७

टिप्पणी—(२) **खँडवानि**—खाँडका पानी, शरबत।

(४) **जाकर**—जिसका। **एहाँ**—यहाँ।

(५) **उखम**—(ऊष्म) गर्मी।

(६) **परान**—प्राण।

(७) **खटरितु**—षट् ऋतु। **यहो**—यह भी। **ओरान**—समाप्त हुआ।

४५

(दिल्ली)

सरवर तीर वरस दिन रहा। चाह कुरंगिन मग को गहा ॥१
सिसिर हेंव औ सरद बसन्ता। ग्रिहम उखम न जानै मन्ता ॥२
खटरितु देखत अइस गई। वहु अपकार कथा वहु भई ॥३
दिन एक मारग जुवत अहा। उठा बवँडरा देखत रहा ॥४
फुनि आँखिंह तर अस कछु आवा। आइ इन्द्र अपछरहि दिखरावा ॥५
देखत परा मुरछि कै उन्ह कहँ, फुनि उठि पन्थ सँभार।६
कोड़ करहिं रहसहिं सरवर महँ, खेलइ सबै धमार ॥७

टिप्पणी—(२) **सिसिर**-शिशिर; माघ और फाल्गुन का महीना। **हेंव**–हेमन्त; अगहन और पौषका महीना। **सरद**–शरद; आश्विन और कार्तिकका महीना। **बसन्ता**–बसन्त; चैत्र और वैशाखका महीना। **ग्रिहम**–ग्रीष्म; ज्येष्ठ और असाढ़का महीना। **उखम** (ऊष्म) गर्मी।

(३) **अइस**–इस प्रकार।

(४) **जुवत**–(जोवत) प्रतीक्षा करते। **बवँडरा**–बगूला, अन्धड़।

(५) **तर**–नीचे, सामने। **अस**–ऐसा। **कछु**–कुछ।

(७) **कोड़**–कौतुक; खेल। **रहसहि**–आनन्दित होती हैं। **धमार**–धमाचौकड़ी।

४६

(दिल्ली)

सात जनीं सातो अति लोनीं। चाँद चौदस आइ सपूनी ॥१
सातों एक पिता कै जरमीं। रंग एक सेंउ [लावहिं मरमीं*] ॥२
उन्ह महँ एक अपूरब अही। कहा बरन कों जाइ [न कही*] ॥३
जानु अकास चाँद परगसा। वे सब नखत चहूँ दिसि [रसा*] ॥४
राजकुँवर मन अस होइ लागा। कण्ठन लाग सेत रंग भागा ॥५
मन उनिया निसि सौतुख **सर** लागेउ, कहब **वह** सुहाइ ॥६
जो सोंकहि कढ़ै, कैसहि कढ़ि न जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) **जनीं**–व्यक्ति (स्त्री भावमें)। **लोनीं**–लावण्यमयी। **सपूनी**–सम्पूर्ण हुई।

(२) **जरमीं**-जन्मीं।

४७

(दिल्ली)

सबै सहेलीं खेलत आहीं। देखतहिं मँदिर अचम्भो रहीं ॥१
उन महँ एक सयानी अही। मन सँकाइ वैं बात जो कही ॥२
बरिस देवस एक बार हम आवहिं। कबहूँ चाह न मनुसैं पावहिं ॥३
अबलहि अइस न सो यह काही। हमलग चरित कीन्ह कछु आही ॥४
सजग होहु छाड़हु बौराई। जा कछु होइ घात रुक जाई ॥५
कै गियान मन बूझहु सँभलहु, उठहु चलहु संग साथ।६
जो कछु होइ कहा तो कीजइ, कुछहू न लागै हाथ ॥७

टिप्पणी—(१) **आहीं**–थीं।

(२) **सयानी**–चतुर। **सँकाइ**–शंकित होकर।

(४) **अबलहि**–अब तक। **अइस**–ऐसा। **सो**–वह।

(५) **बौराई**–पागलपन।

४८

(दिल्ली; एकडला)

तारहिं[1] माँझ चाँद जो आही। तैं एक बात आपु सौं कही ॥१
मानुस हमहिं पाउ[2] दहुँ कहाँ। जाहहिं उड़ि चाहहिं[3] चित जहाँ ॥२
मनुसै सेउँ[4] अस होइ[5] न काऊ। उत्तिम जाति जग[6] आह सुभाऊ ॥३
ये[7] सब चरित हमहिं पै आवहिं। खिन[8] बिलाइ खिन उड़हि[9] दिखावहिं[10] ॥४
औ फुनि भेस धरहिं जस भावइ[11]। चाह त हमहिं कहाँ कोइ पावइ[12] ॥५
अस बर आहै आपुन,[13], चाह त[14] जाहिं बिलाइ[15] ।६
लाग बिवान सरग धरि[16] आई,[17] चाह त[18] जाहिं उड़ाइ[19] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१—तारेन्हि। २—पाव। ३—चाहहि उड़हि जाहि। ४—सौं। ५—आह। ६—कुल। ७—ए। ८—खन। ९—खन। १०—देखावहिं। ११—भावे। १२—चाह तौ हमहिं कहीं कोइ पावै। १३—हम कहँ अस बर आहै। १४—तौ। १५—बिलाए। १६—धर। १७—×। १८—तो। १९—उड़ाए।

टिप्पणी—(१) माँझ—मध्य। आही—थी।
(४) बिलाइ—लुप्त।
(५) फुनि—पुनः। भावइ—अच्छा लगे।
(६) अस—ऐसा।
(७) बिवान—विमान। धरि—धरती।

४९

(दिल्ली; एकडला)

कहत[1] बात सब बाहर भई। चीर सँवारि[2] पहिरि[3] लई ॥१
राजकुँवर वहिं देखत [लाँगा[4]]। पहिरहिं चीर सँवारहिं माँगा ॥२
कँवल बदन अब अहीं सोनारी। रूप सरूप सोहाग सँवारी ॥३
अमिय सिराइ[5] बदन जो अही। राइ[6] देखि चित चेत न रही ॥४
जिहके[7] नेह लागि[8] अति कया। देखसि वहै चाह तिह लिया[9] ॥५
चला धाइ तिह ठाँईं[10], मन महँ[11] कहिसि परों लै पाइ[12] ।६
राजकुँवर कहँ आवत देखत[13], सातों चलीं उड़ाइ[14] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१—कहहि। २—सँवारि सो। ३—पहिरन (?) ४—राजकुँवर उठि देखै लागा। ५—अमिअ सरा। ६—राए। ७—जेहिके। ८—लाग। ९—देखसि सोए ताहि चित

लिया। १०–चला पाए तजइ। ११–X। १२–पाए। १३–देखिन्ह। १४–उड़ाए।

टिप्पणी—(३) कँवल–कमल।

५०

(दिल्ली)

तव लग वैं देखीं अपछरा। [- -] नत परान मुरझि कै परा ॥१
भौं धनुक गुन वान विसारीं। चतुर सयानीं हनाँ कटारीं ॥२
[परि*]हरन्हि औ परगट घाऊ। हियैं साल सुधि गये अगाऊ ॥३
डसत वान न चूकै जानी। जस र वरस पारधी विनानी ॥४
चखत वान चूक न आहा। हियैं लाग निकसि न चाहा ॥५
जस मँवा उठैं कहँ दीजइ, **औ** हनैं खर जिउ **जात।६**
छाड़ चलैं धरा दहन्त, पारुधि हनै सो घात ॥७

टिप्पणी—(२) भौं–भौंह। धनुक–धनुप। गुन–रस्सी; तन्तु। बिसारी–विषयुक्त। हनाँ–हनन किया।
(५) चखत- नयन।

५१

(दिल्ली; एकडला)

संगि[१] न साथी मीत न आहा। को र[२] संदेस पिता सँउ[३] कहा ॥१
तिह ठाइ न[४] आह सयाँना[५]। को र सींच को पानि जो आना ॥२
को उचाइ[६] रस वचन सुनावइ[७]। पेम कथा कहि को र जगावइ[८] ॥३
धाइ आइ[९] जो देखी[१०] पासा। मुख फेंफर[११] तन आह न साँसा ॥४
अमिय[१२] सींच वैटार[१३] सँभारी। काह देखि [१४]तूँ गा विंसभारी ॥५
कै सपना कै सैतुख,[१५] कै झँरका तूँ[१६] आहि।६
रोगिया वेदन कहै वैद सो, औखद लावइ[१७] ताहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।
१–संग। २–रे। ३–सौं। ४–नहा। ५–सेआना। ६–उचाए। ७–सुनावै। ८–रे जगावै। ९–धाए आए। १०–देखै। ११–भेभंर। १२–अमिअ। १३–वैठाल। १४–तैं। १५–सैतुख। १६–कै तै छेरगा। १७–लावइ।

टिप्पणी (२) आनाँ–लाये।
(३) उचाइ–उठाकर।
(४) **फेंफर**–सूखा हुआ।
(५) **बिंसभारी**–बदहोश।

(६) सौतुख–प्रत्यक्ष। झँरका–भूत-प्रेतसे अभिभूत।

(७) बेदन–बेदना।

५२

(दिल्ली; एकडला)

माई मोरि तुम्ह धाइ[1] न होहू। तुम्ह छाड़ें किह उठै मरोहू[3] ॥१
देखौं सोइ जाइ न[3] कही। चित चिन्ता[4] मन[5] भीतर रही ॥२
सात जनीं[6] आईं अपछरा। तिह[7] महँ एक सहस दस कराँ ॥३
ताकर रूप कहौं हौं[8] तोही। बैठौं[9] समुझ टेक दइ[10] मोही ॥४
भानु उदय उदयागिरि कीन्हा[11]। झार लागि सिर पाउ न चीन्हा[12] ॥५
बीजु चमक बड़[13] चमकी चौंदीं,[14] तेहीं हौं गा बिसँभार[15]।६
माँग पयोहर गर[16] पा[17] कर[18] नख,[19] एक एक कहउँ[20] सिंगार ॥७

पठान्तर—एकडला प्रति।

१–तोहि धाए। २–तोहि छाड़ि एहि उठे मोरोहू।३–सोए जाए नहिं। ४–चित। ५–×। ६–खनी। ७–तिन्हि। ८–मैं। ९–बैठे। १०–देहु। ११–भानु उदै उदयाकर कोन्ह। १२–चोन्ह। १३–चमकी पर। १४–×। १५– बेसभाँर। १६–कर। १७–पाए। १८–×। १९–×। २०–कहौं।

टिप्पणी–(१) माइ–माँ, माता। धाई–दूध पिलाकर शिशुका लालन पालन करने-वाली। किन्ह–किसको। मरोहू–छोह, आत्मिक स्नेह।

(३) सहस दस कराँ–दसहजार किरण अथवा कलाएँ।

(४) ताकर–उसका। तोही–तुझसे। टेक–सहारा।

(५) उदयागिरि–पुराणोंके अनुसार पूर्व दिशाका एक पर्वत जहाँसे सूर्य उदय होते हैं। झार–अग्निकी लपट।

(६) गा–गया।

(७) पयोहर–पयोधर। गर–गला। पा–पैर।

५३

(दिल्ली; एकडला)

कर सौं कुरिल सवारसि[1] बारा। देखेउ माँग बहुत जिय[2] मारा ॥१
माँग सेत चन्दन जस भरे[3]। कै र[4] पाँति मौतिह कै धरे[5] ॥२
[वग क][6] पाँति जस आह सुहाई। बादर घन कारे महँ आई ॥३
माँग जोति अस भौ अजियारा[7]। निसि अँधियार टूटि जस[8] तारा ॥४
खरगधार भर[9] माँग सराहे। लागहिं[10] दुइ र[11] टूक होइ[12] चाहे ॥५
हम सिर लाग भयउ[13] दस खाँडा[14], कर बेगर सर पाउ[15]। ६
हौं जिय डर भय कर सेऊँ,[16] कहउँ पावक सुभाउ[17] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–सँवारिसि। २–देखै माँग पुहुप जस। ३–धस भरी। ४–रे। ५–धरी। ६–बगै। ७–अस आह अपारा। ८–जनि। ९–जस। १०–लागै। ११–रे। १२–होए। १३–भऽव। १४–जीटी। १५–पाव। १६–(दि० मार्जिन) अम्रित सींचि उचायहु धाई। १७–अम्रित सीचि जिआए, तोहि हौं कहो सो भाव।

टिप्पणी—(१) **कुरिल**–कुटिल, घुँघराले। **बारा**–बाल, केश।

(२) **सेत**–श्वेत।

(३) **बग**–बक; बगुला। **बादर**–बादल। **कारे**–काले।

५४

(दिल्ली)

भँवर बरन अति जिह र सुहाई। चन्दन बास कैं नाक रिसाई॥१
जोर छोर मुकरावइ सोई। [वैसहि छवि न पायेउँ कोई*]॥२
लट जो लटक गाल पर परै। जस र पदम नागिन बस निकरै॥३
जो र देख विस लागै ताही। औखद मूर न कारा आही॥४
सर बालहि आइ घुँघरार। लहर न लहरै भुअंगम कारे॥५
सो विस हमको चढ़ि गा, सरलहि परेउ लहर मुरझाइ।६
परन बोल तुम नहि बूछा, कौन निरत लिखाइ॥७

५५

(दिल्ली; एकडला)

दीख[१] ललाट[२] दुइज[३] ससि रेखा। उयेउ[४] मयंक मैं न जग देखा॥१
देखत नैनहिं दिस्टि घटाई[५]। भानु सरग[६] जनु उदिनल आई॥२
बदन पसीज बूंद जनु[७] तारा। चाँद नखत लै उयेउ[८] अँगारा[९]॥३
मनु[१०] दामिनि कोंधा लौकाई। चलेउ[११] धाइ हौं परेउ[१२] भुलाई॥४
जोति लिलार भयउ[१३] उजियारा। चौंधि परेउँ हौं कछु[१४] न सँभारा॥५
देखि लिलार विमोहेउ[१५], कछु न समझेउ[१६] धाइ।६
टूटि करेज लोहु भा पानी[१७], औखद कहु कछु पाइ[१८]॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–बिंदु। २–लिलार। ३–दूज। ४–उयेव। ५–खुटाई। ६–सरग भानु। ७–जनि। ८–उएव। ९–अकारा। १०–मन। ११–चलेव। १२–परेंव। १३–भएव। १४–परेंव मैं। १५–विमोहेवों। १६–समझेव। १७–X। १८–कह कुछु माऐ।

टिप्पणी—(१) **मयंक**–चन्द्रमा।

(२) **उदिनल**–उदित।

५६

(दिल्ली; एकडला)

भौंह धनुक जनु[1] अरजुन केरा। बान मार जासौं फिरि हेरा ॥१
काल कस्ट गुन दैंउ[2] बिसेखा। पंचबान[3] लागत खर देखा ॥२
करन बान इहँ कहिं[4] सों पाये। बिसहिं बुझाये साल खर[5] लाये ॥३
भौंह फिराइ[6] मार सर जाही। तन्त न मन्त न औखद आही ॥४
हों रे मिरिग[7] वह पारुधि[8] भई। बान बिसार मारि हन गयी ॥५
पारुधि[9] परसुराम[10] कलिजुग महँ,[11] कामिनि भौंह गुनीज[12] ॥६
रुहिर न ऊपर पेखी[13], हिये साल जो कींज[14] ॥७

पाठान्तर–एकडला प्रति।

१–जस। २–काल कुष्ट कंडों। ३–पनच नाहिं। ४–अं केहि। ५–(दि०) खर सान। ६–बिसार। ७–मिरगा। ८–उवह पारुध। ९–पारुध। १०–परसराम। ११–×। १२–गनीज। १३–रुधिर न आव घाव नहिं पेखी। १४–गनीज।

टिप्पणी—(१) **पंचबान**–कामदेव।

(२) **करन**–कर्ण; महाभारत का एक वीर। **खर**–तेज।

(५) **पारुधि**–शिकारी। **बिसार**–विषैला। **हन**–मार।

(७) **रुहिर**–रुधिर। **पेखी**–देखी।

५७

(दिल्ली)

बरुनि बात कहों सुनु भई। देखत तन छहर कै गई ॥१
रोंम रोंम वेधा न सँभारों। इह कहों औ कही न पारों ॥२
वरुनि सघन न पारों [सेजी*]। भारत जीत करन सर भेजी ॥३
करन अरजुन मैं जस खेता। हौं वह करन वह रोवहु बैठा ॥४
सहज बरुनि जनु काजर दिया। यहै सिंगार पिउ आरस किया ॥५
चौदह भुवन प्रिथमी आहै, सात दीप नौ खण्ड ॥६
सरग पतार बरुनि सर बेधा, जियउ पाहन गण्ड ॥७

टिप्पणी—(१) **बरुनि**–भौंह।

(३) **भारत**–महाभारत। **करन**–कर्ण; महाभारतका एक वीर।

(५) **खेता**–युद्ध।

५८

(दिल्ली)

लोयन सेत बरन रतनारी। कँवलपत्र पर भँवर सँवारी ॥१
चपल बलोल ते थिर न रहाहीं। जनौं गजमोती थाल भराहीं ॥२

बाँती बरहि अइस मैं देखी। उलटि रहे तिंह सँमुद बिसेखी ॥३
मदन-दीप पदुमनि चख बारी। कहो मँह सहज पवन अधारी ॥४
गये संग बहिर कुरंगिन परी। भूले पन्थ न हारी घरी ॥५
आइ तम्वै मै दप्प घन, चंचल चपल बिसाल।६
धाइ त चुकत अतुल बल, भये हम तन काल ॥७

टिप्पणी—(१) लोयन-लोचन, नेत्र। सेत-श्वेत। बरन-वर्ण। रतनारी-लाल।
(२) बाँती-बत्ती; दीपक।

५९

(दिल्ली)

चुगत स्रवन माँझ तिल भया। बिध सर कमल भुजंग निरमया ॥१
बास लुबुध तिंह उड़त न देखा। पेम गहा का करहि सरेखा ॥२
जस मोइ बिरह टूटि तिल परा। जग मोहै कारन जस धरा ॥३
सो तिल मुँह क भयउ सिंगारू। मुँह नखोर न खेलो सँयसारू ॥४
तिह तिल साथ लागि जिउ गया। देखहु धाइ स्रवन हिय किया ॥५
तिल र सुहाउ न कहि सकों, राखों अपूरन छाइ।६
कनक सपन जम हिय खरग, सो महिं कही न जाइ ॥७

६०

(दिल्ली)

स्रवन सोमेल छोट न लाँबी। सीप सँवार कंचन जस आँपी ॥१
झरकहिं दुहु दिसि दामिनि लवई। कै र अगिनमुख कुन्दन तवई ॥२
ओ तर तपा खूँहीं सुहानी। दुइ उगसत ससि साथ जो आनी ॥३
एक उगसत जो सरग उआई। दूसर इँहाँ कहा सों आई ॥४
एकहिं कहतैं आवें चुक बानी। इहै र समुँद सूख पलानी ॥५
बरजत दिस्टि परी हों सो कहौ, रकत न रहा सरीर।६
दिनयर दहा कँवल जेउँ, बिनीत न पल न घटै नीर ॥७

टिप्पणी—(१) स्रवन-(श्रवण) कान। सोमेल-सन्तुलित।
(२) लवई-कौंधती है। कुन्दन-विशुद्ध सोना। तवई-तपै।
(३) खूँहीं-(खूँटी) कानमें पहननेका एक आभूषण। उगसत-उगता हुआ।
(४) उआई-उगती है।
(५) बरजत-मना करते हुए।

६१

(दिल्ली)

गाल सुभर पातर न मोटी। जानु कपोल कनक दइ घोटी ॥१
जनु गौरा पावसि चिकनाई। कै र काज गालहिं लै आई ॥२
कै घट पड़ पाहन बैसावा। धाई रूप सुन बकति न आवा ॥३
हौं कपोल धर रहेऊँ तवाई। घूम परेउ ताँवर न जाई ॥४
बिरह कपोल पर धरब कपोला। सुर नर नाग सेस फुनि डोला ॥५
जोगी जंगम तपसी, जती सन्यासी सब।६
देखि कपोल नारि कै, एकहु रहा न कब ॥७

टिप्पणी—(१) पातर–पतली।

६२

(दिल्ली)

नाँक सोमेल सुनहु यह वानी। इसवर कर कहँ धरेउ बिनानी ॥१
कै पथ और दुहों धर रहा। सपूती सपनैं महँ कहा ॥२
कहँ न ऊँच भौ वहु मुँह जोरी। देव सराहहिं तैंसो गोरी ॥३
कों कह अँमरित सान सँवारी। तिह न सराहहिं जिनैं औतारी ॥४
तिलक फूल जस ऊपम दीजै। और क जग मँह शोभह कीजइ ॥५
पुहुप सभै परिमल कै लेई, बास परसि सव खान।६
परिमल लीन्ह हमारेउ, दीखत बिन परिमल कै जान[१] ॥७

पाठान्तर—मार्जिन में—

१–परिमल बास लेइ वह जाई, खटरस बन्द गुनार।
करहि चन्दन सोंहागी मत सो, दै दीजै जो सँवार ॥

६३

(दिल्ली)

अधर सुरंगी पान जनु खाई। कै र घोर ईंगुर कै लाई ॥१
हाट चीर निहसत सों कीन्हा। अमिय आन तिह ऊपर दीन्हा ॥२
कुहकन लीकें अधर सुहाई। चाँट जानु अमिय रस आई ॥३
यह रंग अधर न देखेउ धाई। सँरग पँवार आन धर लाई ॥४
रकत हमार अधर सेंउ पिया। जासेंउ बकत सो कइसइ जिया ॥५
असकै जो हँस अधर सेंउ, पियर भयउ जस आँव।६
झँकि बिरह पौन मिस, रस हमारे लाँव ॥७

टिप्पणी—(१) घोर–घोल।
(३) चाँट–चींटा।
(६) आँव–आम।

६४

(दिल्ली; एकडला[1])

चौक जोत[1] बैरागर हीरा। दामिनि चमके रैन गँभीरा ॥१
अन्त न देख रहे चख भामिनि[2]। जनु[3] काजर चख[4] देउ[5] सो[6] कामिनि ॥२
कंचन गोर[7] भँवर भर[8] राखै[9]। दारिउ[10] दन्त काहु[11] नहि चाखै[12] ॥३
दसन मकोइ तँबोलहिं[13] पाके। हँसत सहेलिन्ह सेउ[14] हम ताके ॥४
ऊँच न नीच बराबर[15] पाँती। देखत दसन होइ[16] मन साँती ॥५
चौक चंचल बरु चमकत देखेउ[17], जुगत भुलाएउ जोति[18] ।६
कह वियोग धाई सेउ आपन,[19] नैन बरहि गजमोति ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—
१–दाँत क जोत। २–अति रेख देख रही चखु भामिनी। ३–जनि। ४–चखु। ५-६–×। ७–कोर। ८–भर। ९–राखो। १०–दारिव। ११–काहू। १२–चाखो। १३–मकोउ बोलह्। १४–सौं। १५–बरावरि। १६–होय। १७–चंचल पर चमकत देखौं। १८–चखु भुलाने जोति। १९–कहै वियोग धाइसौं।

टिप्पणी—(१) **चौक**–दाँतोंकी पंक्ति। **वैरागर**–मध्यकालीन हीरेकी प्रसिद्ध खान। हीरेके खान के रूपमें इसका उल्लेल सोमेश्वर देव (बारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध) ने मानसोल्लासके रत्न-प्रकरणमें किया है। इस नामके मूलमें संस्कृत वज्राकर (हीरेकी खान) शब्द जान पड़ता है। प्राचीन और मध्यकालीन साहित्यमें उल्लिखित हीरेकी खानोंकी पहचान कर सकना आज सुगम नहीं है, क्योंकि बहुत ही कम ऐसे प्राचीन खान बच रहे हैं जहाँसे हीरे निकाले जाते हों। फिर भी मोतीचन्द्रका अनुमान है कि चाँदा (मध्य-प्रदेश) जिलेमें वेनगंगाके तटपर स्थित वैरागढ़का ही प्राचीन नाम वैरागर है। वहाँ आज भी हीरे प्राप्त होते हैं। उनके इस अनुमानके मूलमें नाम साम्यके अतिरिक्त यह तथ्य भी है कि हीरेकी खानोंकी सूचीमें बुद्धभट्टने वैण्यातट, वराह-मिहिरने वेणातट और अगस्तिमतने वेणुका उल्लेख किया है और वेण अथवा वेणु आधुनिक वेनगंगाका प्राचीन नाम है। **दामिनि**–बिजली।
(२) **भामिनि**–नारी।
(३) **मकोइ**–एक फल, खुशबरी।

---

१. यह पृष्ट भारत कला भवन में नहीं है। सम्मेलन संस्करण पर आश्रित।

६५

(दिल्ली)

अति रसाल रसना मुख ताही। बोलत बोल लाग चित जाही ॥१
बोल सुहाउ सो कोकिल बानी। काकल माँझ लख सों आनी ॥२
कुरला रितु बोलै भिनुसारी। पेम खटारस कहै सँभारी ॥३
अमिय वचन वासुकि सन पाई। सीतल चन्दन साल सुहाई ॥४
जीभ जानु मुख कँवल अमोला। फूल झँरहि जो हँस हँस बोला ॥५
वह र हँसत हम देखी, हौं रोवइ तिह लाग।६
अस धनि जाइ हाथ मिलाइ, इह लिलार नहिं भाग ॥७

टिप्पणी—(३) कुरला—एक पक्षी; कुररी, टिटिहरी।
(७) लिलार—ललाट।

६६

(दिल्ली)

गिय अनूप कहौं सुनु धाई। जानु कुँदेरैं कुन्द भवाई ॥१
गिय मजूरि कै बिरत परेवा। कहिसैं कै आह सहज वह मेवा ॥२
गिय न लाँव न पातर छोट। गढी बनाई अधिक न मोट ॥३
देखत भूल रहेउँ मुरझाई। टग लाडू महँ दिहसि लखाई ॥४
तीन रेख जाँह कँठमाला। वह अभरन मों किहसि जिय लाला ॥५
फाँस भई वहि रेखैं, परी हम आइ।६
सरभहि खाल तिह गोरी, जीउ ले गई सो धाइ ॥७

टिप्पणी—(१) गिय—गला। कुँदेरैं—कुन्दीगर, खरादनेवाला। कुन्द—खराद। भवाई—घुमाया।
(२) मजूरि—मयूर, मोर। परेवा—कबूतर।
(५) जिय लाला—जीनेमें कठिनाई।

६७

(दिल्ली)

भूपर आन मरताल सँवारी। सुभर पेड़ पालो टटकारी ॥१
अइस न देखेउ काहु कलाईं। बिरियाँ चरचर चरहिं सुहाईं ॥२
तो वह जान रकत का आही। कै मँहदी र सुहागिन लाई ॥३
करपालो जनु मूँग क छही। नखँ जोत सत अधिक न कही ॥४
छीता निहसत लोग सराहा। करवारी नख और न बराहा ॥५
हमैं लाग वह निहसत चूकै, भल होइ न घाव।६
हरक घाव जस उपजै सरभहि, दन्द न होइ पियाव ॥७

टिप्पणी—

(१) **मरताल**—मृणाल, कमलनाल।

(४) **करपालो**—कर-पल्लव, हथेली। **मूँग**—मूँगा। **छही**—छवि, छाया।

६८

(दिल्ली)

साँख घोटि कै पीठ सँवारी। कै र मैन साँचे मँह ढारी ॥१
साँचहि अइसी ढार न जाई। विध अपनैं उर चित उपनाई ॥२
पीठ दीपै जानु झरकै दहा। देखेउ पीठ जहाँ लय रहा ॥३
बासुकि पूर गाँठि तर देखा। कै बोलिन गुन सरग बिसेखा ॥४
बिखम भुअंगम बेनी भये। मारग वहैं सीस केर गहै ॥५
चतुर सुजान का कहउँ सोई, जैं पीठ रची सँयसार[1] ।६
नख सिख बनै निपट निरासी, सिरजन हार मुरारि ॥७

पाठान्तर—मार्जिन में—

१–जैं य रची सवाँर।

टिप्पणी—(१) **साँख**—संख।

(५) **भुअंगम**—सर्प।

६९

(दिल्ली)

लंक चहैं किह लाओं जोरी। जनु केहरि सेउ किहिसि उ चोरी ॥१
चलत डोल जनु बेगर अहा। लागत पवन टूट न रहा ॥२
कर कर बारक मूठ समाई। बिसा लंक किहिस बौराई ॥३
भरम चीर मँह बार विसेखी। अमर ऊपनह सुँरग न देखी ॥४
देखत लंक बिमोहहि देवा। गन गन्धरप औ नर महदेवा ॥५
उतर न देइ न लहकँह, किहँ पँह हों बैरागू आह ।६
लंक टेक कर रोवइ, यह दुख बकतेंउ काह ॥७

टिप्पणी—(१) **केहरि**—केसरी; सिंह। **किहिसि**—किया। **उ**—वह; उसने।

७०

(दिल्ली)

गहन कठोर पयोहर नारी। जनु कुँभस्थल सरल सुहारी ॥१
कँवल वरन कुच उठै अमोला। तिंह पर वइठ भँवर एक भूला ॥२
तरल तीख उर लागहिं जाके। छाती फूट पीठ मँह ताकें ॥३
तिंह डर नियर न आवइ कोई। देखत मरै बेर न होई ॥४
भूल परै चख जाइ समानीं। सर धुन मरों न आवै तानीं ॥५

कनक कलस उर कामिनि, रस भर धरे अनन्त ।६
देखै छुवै न पाईह, कुँभस्तल मैमन्त ॥७

टिप्पणी—(१) पयोहर–पयोधर, स्तन। कुँभस्थल–हाथीका गण्डस्थल। (कवियों-ने प्रायः स्तनोंकी उपमा कुँभस्थल से दी है)।
(४) बेर–देर।
(७) मैमन्त–मदमस्त हाथी।

७१

(दिल्ली)

स्याही काली रोमावली। कै कालिन्दी विरहैं जली ॥१
कनक सिखर दुँह बीच वहाई। नाभी माँग चलि कहँ आई ॥२
तिह ठाँ तीरथ भयउ पयागू। बेनी झार जिय कर लागू ॥३
मन कामना जो कन्त को कीन्हा। औ बहुतहि करवत सर दीन्हा ॥४
ऊ कहँ करसि अगिन जो खाई। कया काटि के तुरत बिलाई ॥५
मन कामनाँ न पूजै काहु क, बहुतै किय निरास ।६
करवत देत सरहिं मैं अपनै, धाई सुनहु वह आस ॥७

टिप्पणी—(१) कालिन्दी–यमुना।
(३) पयागू–प्रयाग। बेनी–त्रिवेणी।
(४) करवत–(करपात्र) आरा।

७२

(दिल्ली)

नैंनूँ मथि कै पेट कमावा। कै जनु पाट पछिउँ सेंउ आवा ॥१
आँत काढ़ि कै जान पियावइ। सेतहि चार कै जींउ बहावइ ॥२
पातर पेट कहाँ बिछराई। पूरी जानु गुनवार पकाई ॥३
नाभी देखत जाइ न छाड़ी। कनक कोंह जनु आँगुरि काढ़ी ॥४
कै र भँवर जस नीर बहिराई। जो र परै उठि निकसि न जाई ॥५
डूबि रहा जिउ नाभीं कुण्ड, र गयेउ निकसि न धाइ ।६
जाकर नाभि देख जिउ दीने, और बात कहि जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) नैंनू–मक्खन।

७३

(दिल्ली)

कदलि खम्भ दोइ जगत सुहाई। दखिन क चीर आन पहिराई ॥१
देखेउ जंघ पार न पावा। कनक हीर सेंदुर जनु लावा ॥२
कै मलयागिर केर सँवारी। सुहर पेड़ पालो सतकारी ॥३

चलत अन्त तरुवह कै पावा। जानहु घोर महावर लावा ॥४
मन मँह अस भा सर मुइँ लागेउ। पाउ धरे सिंह रंग चाखों ॥५
कहों सिंगार सहज कै सोलह, रहौं न कितहुँ भुलाइ ॥६
सरसेउ लखन सपूरन दरद देखा वहि पाइ ॥७

टिप्पणी—(३) केर–का। सुहर–सुघर। पेड़-पालो–पल्लवयुक्त वृक्ष। भोजपुरी में पेड़-पालो मुहावरे के रूप में पेड़-पौधों के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

(४) तरुवह–तालुओंका।

७४

(दिल्ली)

बरन सुनहु औ कहउँ गुनाई। कुंदन कै जनु देय झरकाई ॥१
कौंख बरन चिनिया कै कली। अछर आउ इँदरासन चली ॥२
काँचे कँवल कंकर रस पिया। अइस बरन विध वहि कहँ दिया ॥३
पुहुप जहाँ लह अँग गँधाई। कँवल कहाँ मुख सपूरन चाहीं ॥४
वड़ हन लोन बरन कों काहा। अति सरूप तिहु भुवनों आहा ॥५
ससहर जस र सरद रितु नरमैं, सोरह करॉं मयंक ।६
वहि क करन अमिय न पियइ कहूँ, हों चकोर जस रंक ॥७

७५

(दिल्ली)

सकलेउ गात लाँब न छोटी। पातर तन न अधिक न मोटी ॥१
मेल सोमेल बरन को काहा। जस जिय चाहै तस तिंह आहा ॥२
नौ व सात जो कहिउ सिंगारा। ते वहिकँह दीन्हेउ करतारा ॥३
सेत चार कीसन चारी। खीन चार औ चार जो भारी ॥४
सेत माँग चख चौक जो नखा। कुच औ दसन केस औ चखा ॥५
नाँक अधर कटि कहौं, करपल्लो सब खीन ।६
गाल कलाई भौं कुच, कदलि पेड़ नहिं छीन ॥७

टिप्पणी—(३) नौ व सात—सोलह

(४) सेत—श्वेत। कीसन—कृष्ण; काला। खीन—क्षीण। सोलह शृंगारके रूपमें कुतुबनने शरीरके अवयवोंका वर्गीकरण चार श्वेत, चार कृष्ण, चार पृथुल और चार क्षीणके रूपमें किया है। जायसीने भी पदमावतमें इसी प्रकारका वर्गीकरण किया है किन्तु उन्होंने श्वेत और कृष्णके स्थानपर लघु और दीर्घका उल्लेख किया है।

(५) श्वेतके रूपमें यहाँ माँग, चख (नेत्र), चौक (दाँत) और नखका और कृष्णके रूपमें कुच, दसन (दाँत), केश और चख (नेत्र) का उल्लेख है।

इसमें दाँत और नेत्रको दोनों वर्गोंमें गिनाया गया है। जायसीने दीर्घ के रूपमें केश, अँगुली, नयन और ग्रीवा तथा लघुके रूपमें दशन, कुच, ललाट और नाभिको बताया है।

(६) क्षीणके रूपमें नाक, अधर, कटि और करपल्लव (हथेली) का उल्लेख यहाँ है। जायसीने इस वर्गमें करपल्लवके स्थानपर पेटको रखा है।

(७) पृथुलके रूपमें गाल, कलाई, भौं और कुचका यहाँ उल्लेख है। गाल और कलाईका उल्लेख जायसीने भी किया है। उनके अनुसार अन्य दो नितम्ब और जाँघ हैं।

७६

(दिल्ली)

बारह अभरन जग मँह कहे। एक एक कहउँ सँभ जे आहे ॥१
पहिरसि दखिन क चीर सँवारी। तरुनी जनमीं अपछारी ॥२
कै माँजन सर सेंदुर दीन्हा। मुख तँबोल चख काजर कीन्हा ॥३
कुसुँभ पहिर कै चन्दन घोला। रितु बसन्त बिदराई बोला ॥४
जो डर नाँ कहे कर सोई। बिम्ब बराबर और न होई ॥५
सीस कण्ठ कर लंका, जाँपैं बाँच सुनहु अइ धाइ ।६
सात पाँच ई अभरन बारह, एक एक कहिउ बुझाइ ॥७

टिप्पणी—(१) माँजन–मंजन।

७७

(दिल्ली)

दइ सिंगार ईंह अभरन राती। एक हनुवन्त औ पौन संघाती ॥१
कली बीरा अतै सुहाई। बीरी पान खाँड कै खाई ॥२
पान खाइ जो घोंटसि पीका। गिय आगैं अरु देखेउ लीका ॥३
गवन करै जनु समुँद हिलोरे। गज मराल सेंउ लिहिसि अजोरै ॥४
अति सुबुधि गुन गरब कै माँती। मिरगि सुरंगिन पाँतहि पाँती ॥५
पाँव परै कहँ धायेउँ बहिकै, देखत चली उड़ाइ ।६
भा झनकार चमक कै गवनै, तिह परेउ मुरझाइ ॥७

७८

(दिल्ली एकडला)

धाइ[१] कहा यह कार न बहुता[२]। समुझ कुँवर सुनु[३] [राजैं कै पूता]॥१
यह र[४] बात कै चिन्ता[५] न कीजइ[६]। हौं बुधि कहों स्र[वन[७] सुनि लीजइ][८] ॥२
अहा[९] एक बुधवन्त जो गुनी। यह र बात हम वहि सों सुनी[१०] ॥३

तो हम बात सीख कै लिही[११] । हौं बुधि कहौं जाइ[१२] जो कही ॥४
मिरगावति रानी है भावा । करै एकादसि निरजल आवा ॥५
वह लुकाई[१३] तिह ठाईं, जिह[१४] ठाँ[१५] फुनि[१६] परब कहँ आउ[१७] ।६
तिह कहँ[१८] हाथ आउ वह,[१९] कैसँहि[२०] चीर लै[२१] जो पाउ[२२] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—यहि कारन भूता । २—सुन । ३—रान । ४—एहि रे । ५—चिन्त । ६- कीजै । ७—सौं । ८-लीजै । ९-आह । १०—हमरे बात उहि सों अस सुनी । ११—तो हम सौन सीखि कै दिही । १२—जाय । १३—लुकाए । १४-१५—× । १६—फुनि रे । १७—आए । १८—तेहि के । १९—वह आवै । २०—× ; (दि० मार्जिन) तोरें । २१—लिए । २२—पाए ।

टिप्पणी—(१) **कार**—कार्य । **बहूता**—बहुत बड़ा । **पूता**—पुत्र ।

(३) **वहि सों**—उससे ।

(४) **लिही**—लिया ।

(६) **लुकाई**—छिपी । **ठाईं**—स्थान । **ठाँ**—स्थान । **फुनि**—पुनः । **परब**—पर्व ।

(७) **आउ**—आयेगी । **कैसहिं**—किसी प्रकार । **पाउ**—पावे ।

७२

(दिल्ली; एकडला)

धाइ क मन्त्र स्रवन[१] चित छावा । सरवर तीरहिं कूप रिसावा[२] ॥१
जो निरजला एकादसि[३] आई । तिह[४] ठाँ छुपि[५] के रहा लुकाई ॥२
मिरगावति[६] सब सखीं बुलाईं[७] । अहीं सहेलीं तैं सब आईं ॥३
आपुन[८] बात सखिन्ह[९] सों कहा । अउर[१०] बात जहवाँ[११] लहि अहा ॥४
यह[१२] पै एक न बकती[१३] बाता । जो जिउ राजकुँवर सों राता ॥५
सेज गवेंझ[१४] चटपटी लागी,[१५] कहि[१६] न काहु[१७] सों बात ।६
यही बात पै माँगहि विधि सों,[१८] जो र[१९] कुँवर चित रात ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—सौन । २—गोंफा सरवर तीर रसावा । ३—एकादसी । ४—तेहि । ५. छपि । ६—मिरगावती । ७-बोलाई । ८—अपनी । ९—सखिन्हि । १०—और । ११—जहमा । १२—एह । १३—बकतै । १४—कवेछ । १५—× । १६—कह । १७—काफू । १८—एहरे बात न कहै काह सौं । १९.—रे ।

टिप्पणी—(१) **रिसावा**—खुदवाया ।

(३) **अहीं**—थीं ।

(४) **आपुन**—अपनी । **अउर**—और । **जहवाँ लहि**—जहाँतक ।

(५) **पै**—किन्तु । **बकती**—कहा ।

(६) **गवेंझ**—आकुलता । **चटपटी**—छटपटी ।

८०

(दिल्ली; एकडला)

जिय कै बात न आपुन कहा[1]। जानु[2] गूँग खाइ[3] मिठाई रहा[4] ॥१
कहिसि बिहान चलै नहाई। करै एकादसि[5] निरजला आई ॥२
सब सिंगार कै गोहन भई। चन्दन झिरकि फूल बहु लई[6] ॥३
रूप सरूप सुभाग सँवारी[7]। झमकि चलीं सब जोवन बारीं ॥४
कोड[8] करहि वै[9] सबद सोहाई। सरवर तीर निमिख महँ आई ॥५
अभरन चीर उतारि धरि,[10] पैठी सबै अन्हाइ[11] ।६
ससि र[12] नखन लै तारे,[13] सरवर खेलै आइ[14] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–अपनी कही। २–जनि। ३–खाए। ४–रही। ५–कहै एकादसी। ६–फूल सब गई। ७–सोहाग सोनारी। ८–गवन। ९–उवै। १०–उतारि जो रखिन्ह। ११–नहाए। १२–रे। १३–तारा। १४–जाए; (दि० मार्जिन) चाँद नखत ले तारा, सरवर आइ नहाइ।

टिप्पणी—(१) जानु–मानों। गूँग–गूँगा।
(२) बिहान–प्रातःकाल।
(३) गोहन–साथ।
(४) कोड़–क्रीड़ा। निमिख–क्षणभर।
(६) अभरन–आभरण, आभूषण। धरि–रखकर। पैठी–पानी में घुसीं। अन्हाइ–स्नानके निमित्त।

८१

(दिल्ली; एकडला)

चंचल चपल सुजान सुनारी[1]। मिलि सहेलिन्हि खेलि धमारी[2] ॥१
कोड़ करहिं कुमुदिनि सब तोरहि। बिहँसहि हँसहिं कँवलघट तोरहिं[3] ॥२
राजकुँवर जिह हतो[4] लुकानाँ। देखिसि कँवल भाँति बिगसाना ॥३
जेंउ[5] ससि देखि कुमुद बिगसाई। पावस चन्द चकोर मिलाई ॥४
जिह लग ईत किहौ अपकारा[6]। सो अब आइ मिलेउ[7] करतारा ॥५
जिय धुकचुकी आउ[8] मन भीतर, कहिसि[9] चीर अब लेउँ[10] ।६
चीर न आउ[11] हाथ जो मोरें, तो इहँ ठाँउ मरेउँ[12] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–सोजान सोनारी। २–मिली सहेली खेल धमारी। ३–कौंल गहि मोरहिं; (दि० मार्जिन) कवँल मुख मोरहिं। ४–जहँ हुता। ५–जेंव। ६–जेहि लगि एत किएव उपकारा। ७–आए मेरवो। ८–जिअ धुकुचुकी और। ९–कहै। १०–लेंव। ११–आव। १२–तो एहि ठाँव जिउ देव।

टिप्पणी—(२) कँवलघट–कमलगट्टेका छत्ता।
(३) हतो–था। लुकाना–छिपा। बिगसाना–विकसित हुआ।
(५) ईत–इतना। किहौं–किया।
(६) धुकधुकी–धड़कन।
(७) ठाँउ–जगह।

८२

(दिल्ली; एकडला[1])

दई[1] सँभरि कै निकसा धाई। चीर ताहि कर लीनसि[2] जाई ॥१
सँवरसि[3] सो बुधि धाई जो कही। चीर लिहसि[4] मिरगावत र[5] गही[6] ॥२
उन्ह आरो मनुसहिं कर[7] पावा। चीर लये कों मकु कोउ[8] आवा ॥३
सब आपुन आपुन कों[9] धाई। चीर लये कों[10] बाहर आई ॥४
आपुन आपुन लीन्ही[11] चीरू। मिरगावत कर कहुँ रहहिं न खीरू[12] ॥५
हम जो कहा तुम्ह सेंउ[13] तिह[14] दिन,[15] तुम्ह[16] जो कहा कोउ[17] नाहिं।६
ईत बोलि कह उन्ह सों,[18] तुर[19] गई[20] उड़ र पवन[21] पर जाहिं ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–दैय। २–लीतिसि। ३–सौरिसि। ४–लिहिसि। ५–×। ६–रही। ७–उन्ह मनुसे कर आरो। ८–चीर लेय कहँ मकु कोइ। ९–आपन आपन कहँ। १०–लेय कहँ। ११–आपन आपन लीनिन्हि। १२–मिरगावती कै गहेव उन्ह खीरु। १३–तोह सेती। १४-१५–×। १६–तोह। १७–कोई। १८–एता बोल का कहि उहि सों। १९-२०–×। २१–रे पौन।

टिप्पणी—(१) दई–ईश्वर। सँभरि–स्मरण करके। धाई–दौड़कर। लीनसि–लिया।
(२) गही–पकड़।
(३) उन्ह–उन लोगोंने। आरो–आहट। लये कों-लेनेके लिए। मकु–कदाचित्। कोउ–कोई।
(५) कहुँ–कही।
(७) ईत–इतना। तुर–तत्काल।

८३

(दिल्ली; एकडला)

मिरगावति[1] नहिं सागी पाई। धाइ[2] वहुरि पानी मँह आई ॥१
देखिसि कुँवर तीर हैं ठाढ़ा। मिरगावतीं वचन[3] मुँह काढ़ा ॥२
कहिसि[4] कुँवर तुम्ह[5] नीक न कीन्हा। हमहिं विछोह सखीं सों दीन्हा ॥३
कुँवर कहा सुन बातिक मोरी। दूसरि[6] बरिस चाह मुहि[7] तोरी ॥४
बहि[8] दिन सँवरि[9] मिरिगि[10] होइ[11] आई। चित हमार लीन्हि[12] बउराई ॥५

१. इस कड़वकके पृष्ठका फोटो हमें उपलब्ध न हो सका। सम्मेलन–संस्करणपर आश्रित।

वह[१३] दिन हुतै[१४] भई[१५] जिउ[१६] मोरा, चित मन लागेउ[१७] तोहि ।६
दूसर[१८] बरिस्न समो यह तीसर[१९], येहि ठाँ भयउ[२०] जो मोहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१—मिरगावती । २—धाए । ३—चकत । ४—कहेसि । ५—तुह । ६—दोसर । ७—मोहि । ८—उवह । ९—सौंर । १०—मिरिग । ११—मै । १२—लीन्हेव । १३—तेहि । १४—उते । १५—भएव । १६—जिअ । १७—लागा । १८—दोसर । १९—एह तेसर । २०—भएव ।

टिप्पणी—(१) सारी—साड़ी । धाइ—दौड़कर । बहुरि—लौटकर ।
(२) ठाढ़ा—खड़ा । काढा—निकाला ।
(३) नीक—अच्छा । कीन्हा—किया । दीन्हा—दिया ।
(४) बातिक—बात इक । मोरी—मेरी ।
(५) मिरिगि—मृगी । हमार—मेरा । बउराई—पागल ।
(६) हुतै—से । तोहि—तुमको; तुममें ।
(७) समो- समाप्त हुआ ।

८४

(दिल्ली; एकडला)

अउर[१] बहुत दुख तो लगि देखउँ[२] । कही[३] न जाइ[४] अधिक अति लेखेउँ[५] ॥१
जो तुम्ह सुनहु[६] तो सब दुख कहउँ । हियें पीर कैसें कै रहउँ[७] ॥२
जिह[८] दिन मिरिगि छया दिखराई[९] । पेंम फाँद पाछैं[१०] संग आई ॥३
तूँ तो यहि मँह[११] गइसि बिलाई । हों यहि ठाउँ परेउँ[१२] मुरुझाई ॥४
हाथ पाँउ मैं[१३] सिर न सँभारा । अउर[१४] बहुत दुख गहेउ[१५] अपारा ॥५
पितैं आइ समुझायेउ[१६] बहु विध,[१७] गयेउ न तिह लग[१८] साथ ।६
मँदिर उचाइ रहेउँ यहि[१९] ठाँई, कैसहिं आउ[२०] हाथ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—और । २—तोहि लगि देखौ । ३—गनै । ४—जाए । ५—पेखौ । ६—जो रे उनउ । ७—सहँउ । ८—जेहि । ९—देखराई । १०—आदँ बाछें । ११—तोहि तौ उन्ह संग । १२—एहि ठावों परेव । १३—पान हम । १४—और । १५—कहौं । १६—आए समोझाएव । १७—× । १८—गएव न तेहि के । १९—उचाए रहे व एहि । २०—कैसे आवहु ।

टिप्पणी—(३) छया—छाया; रूप । पेंम—प्रेम । फाँद—फन्दा । पाछैं—पीछे ।
(४) गइसि—गयी । बिलाई—लुप्त । हौं—मैं ।
(५) गहेउ—ग्रहण किया ।
(७) मँदिर—भवन । उचाइ—उठाकर; निर्माण कराकर । आउ—आओ ।

८५

(दिल्ली)

पुनि तैं दुसर दीन्हि दिखाई । सखिह साथ लै सरवर आई ॥१
देखेंउ तोहि दौरि कै आयउँ । जिय सेंउ पाउ परै कहँ धायउ ॥२
हम देखत तूँ गई बिलाई । हौं खसि परेउँ भुईं मुरझाई ॥३
धाई अँबरित सींचि जियायउँ । जियउ पाछु जिय बिसरायउँ ॥४
परिमल फूल तँबोल बिसारा । माता-पिता कुटुँब सँयसारा ॥५
अन न खायेउ तिह दिन सेउ, (पियेउ न जल)[१] पानि ।६
अउर बहुत दुख आहहि महिं, बहुतै कहे सो जानि ॥७

मूलपाठ—६-परेउ जस ।

टिप्पणी—(१) **दुसरैं**–दूसरी बार; दुवारा ।

(२) **दौरि**–दौड़कर । **पाउ**–पैर । **परै**–पड़ना । **कहँ**–के लिए । **धायउ**–दौड़ा ।

(३) **बिलाई**–लुप्त । **खसि**–गिर । **भुईं**–भूमि ।

(४) **धाई**–सेविका; दूध पिलानेवाली । **अँबरित**–अमृत । **पाछु**–पीछे । **बिसरायउँ**–भुलाया ।

(५) **परिमल**–सुगन्धि । **तँबोल**–पान ।

(६) **अन**–अन्न ।

८६

(दिल्ली; बीकानेर)

मिरगावती कहा सुनु राया[१] । तुम्ह लग[२] मिरग धरी [हम] छाया ॥१
दुसरैं[३] ताहि लागि हौं आयउँ[४] । सखी सहेलिह बात लगायेउँ[५] ॥२
पुनि मिस किहेउ[६] एकादसि[७] केरा । आयउ[८] बेगि न लायउँ[९] बेरा ॥३
किह[१०] कारन कहु चीर लुकायहु[११] । सखी सहेली[१२] साथ छुड़ायहु[१३] ॥४
चीर हमार देहु तुम्ह[१४] आनीं । जिह आयसु तिह को तूँ सामी[१५] ॥१५
तोर चीर हौं देइ न पारौं, कही धाई हम बात ।६
तन मन जीउ हमारेउ,[१६] अरु पै देउ चीर[१७] सै सात ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–राजा । २–तुम लगि । ३–हौं पुनि । ४–आई । ५–सखी सहेलि हौं साथ लगाई । ६–[...] स धरउँ । ७–एकादसी । ८–आवउँ । ९–लावउँ । १०–× । ११–लुकावहु । १२–सहेलिहु । १३–छुड़ावहु । १४–तुम । १५–जहँ आइस तहँ गव न मानी । १६–हमारा । १७–और चीर देउँ ।

टिप्पणी—(१) **राया**–राजा । **लग**–लिए । **छाया**–छद्मरूप ।

(३) **मिस**–बहाना । **बेरा**–विलम्ब; देर ।

(४) लुकायहु–छिपाया ।

(५) **हमार**–मेरा । **आनी**–लाकर । **आयसु**–आदेश ।

(६) **तोर**–तुम्हारा । **हौं**–मैं ।

८७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चीर हमार देहु[१] कस नाहीं । अउर[२] चीर हम पहिरि न चाही[३] ॥१
तोर चीर सौं[४] उत्तम[५] चीरू[६] । आनि देउँ तिह आपन खीरू[७] ॥२
मरो सोइ जें तिह[८] सिखरावा[९] । इह[१०] गियान तैं[११] जिह सौं[१२] पावा ॥३
कहसि देइ आपुन अब[१३] आनीं । मन महँ कहसि[१४] भलै बुधि[१५] जानी ॥४
कुँवर चीर भल[१६] दीन्हे[१७] ऊन्हीं[१८] । निकसी पहिरि चौदस[१९] जोन्ही[२०] ॥५
निकसत यहि र[२१] कुमुँद जस बिगसा, ससिबदनी[२२] मुख देखि[२३] ।६
दिनयर उदो[२४] कीन्हि परभातहिं, कँवल बिगस उहि[२५] देखि[२६] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए) देउ । २–(ए०, बी०) और । ३–(ए०) पहिरि न जाही; (बी०) पहिरहिं नाहीं । ४–(बी०) से । ५–(ए०) उतिम । ६–(बी०) चीरा । ७–(ए०) आपन आनि देव एक खीरू; (बी०) अनि देहुँ अब आपन खीरा । ८–(ए०) सोए जे तोहि; (बी०) जिहि तोहिं । ९–(बी०) सीखाव । १०–(ए०) एह गेआन; (बी०) यह गेआन । ११–(ए०) तोह । १२–(ए०) जासौं; (बी०) जेहि से । १३–(ए०, बी०) कहिसि देहु अब आपन । १४–(ए०) कहेसि; (बी०) कहिसि । १५–(ए०, बी०) भली । १६–(ए०) एक । १७–(ए०) दीन्हेव । १८–(बी०) उन्हई । १९-(ए०) चौदसि । २०–(बी०) जोन्हाई । २१–(ए०) अहरे; (बी०) एहरे । २२–(बी०) बँदन । २३–(बी०) पेखि । २४–(ए०) उदै । २५–(ए०) वै; (बी०) तेहि । २६–(ए०) पेखि ।

टिप्पणी—(१) **कस**–कैसे ।

(३) **सिखरावा**–सीख दिया; सिखाया । **गियान**–ज्ञान । **सौं**–से ।

(५) **चौदस**–चतुर्दशीका चन्द्रमा । चतुर्दशीतक चौदह कलाओंसे चन्द्रमाका स्वरूप बनता है । इस्लामकी धारणाके अनुसार चौदसको चाँद अपनी समग्र पूर्णताको प्राप्त होता है । अतः उनके यहाँ चौदसके चाँदकी ही उपमा दी जाती है । **जोन्ही**–प्रकाशमान हुई ।

(६) **निकसत**–निकलते ही । **बिगसा**–विकसित हुआ ।

(७) **दिनयर**–दिनकर; सूर्य । **उदो**–उदय । **परभातहिं**–प्रभातके समय । **कँवल**–कमल ।

८८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आगें कुँवर चली उहि[१] पाछैं। गजमैंमत आवइ जनु[२] काछैं ॥१
हँस रँग परसत जग मेखा[३]। कै सुकुवार मेघ जनु पेंखा[४] ॥२
तुला[५] रासि ससि जनम जो आवइ[६]। बहु परकार[७] कहि ताप बढ़ावइ[८] ॥३
रहसत कुँवर मँदिर मँह पैठा। सोन सिंघासन ऊपर[९] बैठा ॥४
धाइहि कहसि[१०] देखु इह ओही[११]। जिहि[१२] क पेम[१३] चित छायउ[१४] मोही ॥५
बैठि सिंघासन ऊपर[१५] दोउ[१६], जनु[१७] सारद[१८] संग साथ।६
मिरगावति गिंय हार,[१९] कुँवर मेलि उर[२०] हाथ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) उवह; (बी०) है। २-(ए०) जनि; (बी०) बन। ३-(ए०) बरिसत जल मेघा; (बी०) रेगै जस बरिसत मेघा। ४-(ए०) पेंच जनु पेंघा; (बी०) कैसु कुवँर पींघ जनौ पींघा। ५-(ए०) तोला। ६-(ए०) आवै; (बी०) आवा। ७-(बी०) परिकर। ८-(ए०) जीअ बहु भावै; (बी०) जीवन बहु भावा। ९-(बी०) परगै। १०-(ए०) कहिसि; (बी०) कहा। ११-(ए०) उही; (बी०) वोही। १२-(ए०, बी०) जेहि १३-(बी०) के। १४-(ए०) छायेव; (बी०) छायेउ। १५-(बी०) पर। १६-(ए०) दुइ जन। १७-(ए०) जनि; (बी०) जनौ। १८-(बी०) सार। १९-(ए०, बी०) के हार महँ (महिं)। २०-(ए०) मेल उर; (बी०) उर मेलेउ।

टिप्पणी—(१) पाछे–पीछे। **गजमैंमत**–मदमत्त हाथी।
(५) **ओही**–वही।
(७) **गिंय**–गला, कण्ठ। **मेलि**–डाला। **उर**–छाती।

८९

(दिल्ली: एकडला: बीकानेर)

मिरगावति[१] कहि[२] कुँवर मँभारहु। कहों वात[३] एक जो पतिपारहु[४] ॥१
तूँ र[५] पूत राजा का[६] आही। हों[७] कुलवन्ति[८] आहि[९] तिह[१०] चाही ॥२
हों तुम्ह[११] कहों सोन[१२] सुनि लेहू। आवइ[१३] हमरीं[१४] सहेलिह[१५] देहू ॥३
वर न होइ[१६] रस सेंउँ[१७] रस[१८] कीजइ[१९]। तौ र[२०] चहूँ[२१] जग पिरत[२२] कीजइ[२३] ॥४
रस कै[२४] बात बिरसों[२५] न[२६] होई। रस जो आह रस सेउ भल सोई[२७] ॥५
मैं रस वात कही रस तोसों,[२८] जो रस कीजइ बात।६
सो रस रहै दुहूँ जग[२९] ताकर,[३०] जो रस सों[३१] रंगरात[३२] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर प्रतियाँ।

१-(ए०) मिरगावती; (बी०) म्रिगावती। २-(ए०) कह। ३-(बी०) बोल। ४-(बी०) प्रतिपारहु। ५-(ए०) तोहरे; (बी०) तुम्हरे। ६-(ए०) कर; (बी०) के।

७–(बी०) हौं रे। ८–(ए०) कलवन्ती; (बी०) कुलवन्ती। ९–(बी०) अही। १०–(ए०, बी०) तोहि। ११–(ए०) तोहि; (बी०) तुम। १२–(बी०) स्रवन। १३–(ए०, बी०) आवै। १४–(बी०) हमरि। १५–(बी०) सहेलिहु। १६–(ए०) होए। १७–(ए०) सौ; (बी०) मेंड। १८-१९–(ए०, बी०) नहिं होई। २०–(ए०) ×। २१–(बी०) दुहूँ। २२-२३–(बी०) रहै रस लीजै; (ए०) रस रह रस लीजै। २४–(ए०) क। २५–(ए०) बरसौं; (बी०) बर मेंड। २६–नहिं। २७–(ए०, बी०) रस सों रस होई। २८–(बी०) तोही। २९-३०–(बी०) जगत कर। ३०–(ए०) ×। ३१–(बी०) सै। ३२–(बी०) रस रात।

टिप्पणी—(१) **पति पारहु**–विश्वास करो।

(२) **हौं**–मैं। **कुलवन्ति**–कुलवती।

(३) **सौंन**–श्रवण। **हमरीं**–मेरी।

(६) **तोसों**–तुमसे।

(७) **ताकर**–उसका।

९०

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

कुँवर कहा[१] कस तोर न मानों। तोह जीउ हौं आपुन[२] जानों[३] ॥१
तूँ[४] जिय मोर[५] कया हौं आही। जो जिउ[६] कहै कया कै[७] जाही[८] ॥२
जिउ[९] प्रभुता[१०] कया है नेगी[११]। ठाकुर अढ़उँ[१२] करै वह[१३] वेगी[१४] ॥३
नेगिन्ह[१५] आयुस[१६] मनतें[१७] पारा[१८]। कहि[१९] प्रभुता सो[२०] धाइ[२१] सँवारा[२२] ॥४
बैद क कहा[२३] न मानै रोगी। गोरखपन्थ रँग वहि[२४] जोगी ॥५
तूँ[२५] र[२६] वैद हौं रोगिया,[२७] तूँ[२८] गोरख हौं चेल[२९]।६
सो रोगिया दुख[३०] पावइ,[३१] बैद क कहा[३२] जो[३३] बेल[३४] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कुँअरि कही; (बी०) कुँवर कहा कह। २–(ए०, बी०) तोर जीअ आपन कै। ३–(ए०) मानों। ४–(ए०) तोह। ५–(ए०) मोरी। ६–(ए०) जीअ; (बी०) जिय। ७–(ए०) कर; (बी०) करै। ८–(बी०) जाही। ९–(ए०) जिअ; (बी०) जी। १०–(ए०) परभता; (बी०) परभुता। ११–(ए०) बेगी। १२–(ए०) अढ़ौ; (बी०) अढ़वै। १३–(ए०) उवह। १४–(ए०) नेगी। १५–(ए०) नेगिन। १६–(ए०) आएस। १७–(ए०) मेंटै। १८–(ए०) बारा, (बी०) पारे। १९–(ए०, बी०) कह। २०–(ए०) तौ। २१–(ए०) धाए। २२–(बी०) सँवारे। २३–(ए०) कही। २४–(ए०) रेंगसि; (बी०) रेंग वह। २५–(ए०) तोह। २६–(ए०, बी०) रे। २७–(बी०) रोगिअ असधि। २८–(ए०) तोह। २९–(ए० बी०) चेला। ३०–(बी०) दुखु। ३१–(ए०, बी०) पावै। ३२–(ए०) कहीअ। ३३–(ए०) ×। ३४–(ए०)–बेला, (बी०) ठेला।

टिप्पणी—(१) **कस**–कैसे ।

(३) **जिउ**–जीव । **प्रभुता**–स्वामी । **कया**–काया, शरीर । **नेगी**–सेवक । **ठाकुर**–स्वामी । **अइउ**–काम करने का आदेश । **बेगी**–शीघ्रता से ।

(४) **पारा**–(पार) सकना; करने में समर्थ होना ।

९१

(दिल्ली; बीकानेर)

जो तैं बात सुनैं यह मोरी[1] । सेवा करउँ दासि होइ तोरी[2] ॥१
[जो] न सुनउँ सुनतहिं[3] हम कहा । जींभ दसन सेंउ खाँडेउ[4] अहा ॥२
तुम्ह र[5] बात जो सुनीं[6] हमारी । तूँ र[7] पुरुख हौं नारि तुम्हारी ॥३
ब्रह्मा रुद्र औ सिउ कै[8] वाचा । मोर जिउ[9] आहै तिह पै[10] राचा ॥४
तौलहि[11] तुम्ह[12] रे सभारहु[13] नाहाँ । अइहहिं[14] सखीं अलप दिन माँहाँ॥५
अउर[15] भाउ[16] सब मानहु मोसों,[17] एक भाउ न[18] होइ ।६
आवइ[19] देहु सहेलिहि,[20] जो जिउ मानो करहु[21] सोइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–सुनसि हमारी । २–करों भै दासि तुम्हारी । ३-जौ न सुवन सुन तेहु । ४–से खंडित । ५–तुम्हरे । ६–सुनिसि । ७–रे । ८–की । ९–जीय । १०–तुम । ११–तौ लगि । १२–तुह । १३–सँहारहु । १४–आइहिं । १५–अवर । १६–भाव । १७–मोहिं सैं । १८–एक सुरति नहिं । १९–आवैं । २०–सेहेलिहु । २१–जो मन कीरहहु ।

टिप्पणी—(४) **वाचा**–वचन ।

(५) **तौलहि**–तवतक । **नाहाँ**–नाथ; स्वामी; पति । **अइहहि**–आयेंगे । **अलप**–अल्प; थोड़ा । **माँहा**–में ।

(६) **भाउ**–भाव । **मोसों**–मुझसे ।

(७) **मानों**–स्वीकार करे ।

९२

(दिल्ली; एकडला)

बाचा आवधि[1] दुहूँ सेउँ[2] भई । पाती लिखी पिता कहँ गई[3] ॥१
राजा[4] देखि[5] कुँवर कै[6] पाती । बाँचे लाग उधार जो[7] छाती ॥२
पाती बाँच[8] सभा सेउँ[9] कहा । पाती माँझ लिखा अस अहा ॥३
पिता मोर तुम[10] जुग जुग राजा । धरम दुदिस्टिल तुम्ह[11] कहँ छाजा॥४
बरिस सँहस दस तुम[12] कहँ आऊ । सेवा बहुत लिखी बहु भाऊ ॥५
धरम लाग मैं तुमरैं पूतँ,[13] पायउँ चाहिउँ[14] जाहि ।६
मन मनसा चित पूजी मोरी,[15] पुन तुम्हारे[16] आहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–औधि। २–सौं। ३–दई। ४–राजै। ५–देखिसि। ६–की। ७–×। ८–बाचैं लाग। ९–सौं। १०–तोह। ११–तोह। १२–तोह। १३–धरम तोहारे राजा। १४–पाऐव चाहिव। १५–×। १६–तोहरे।

टिप्पणी—(१) **बाचा**–वचन; प्रतिज्ञा। **आवधि**–आबद्ध। **दुहूँ**–दोनों। **सेउँ**–से। **भई**–हुई। **पाती**–पत्र।

(२) **बाँचै**–पढ़ने। **लाग**–लगा। **उघार**–खोलकर।

(३) **माँझ**–मध्य; में। **अस**–ऐसा।

(४) **मोर**–मेरा। **दुदिस्टिल**–युधिष्ठिर।

(५) **आऊ**–आयु।

(७) **पुन**–पुण्य।

९३

(दिल्ली; एकडला)

पाती सवकहँ[१] बाँचि सुनाई। रहसा राउ[२] न अंग अमाई॥१
कुँवरहिं कहा[३] होहु असवारू[४]। राउत पाइक[५] सब परिवारू[६]॥२
पाँयड छूट[७] तुरंगम आये। देखत हरे सुबर्न[८] सुहाये॥३
हँसला[९] कार कयाह[१०] पलाने। साँवरकरन औ महोजू[११] आने॥४
आये गरँया औ सरवाहा[१२]। पँचकल्यान सराहों काहा[१३]॥५
उन्दिर[१४] बुलाह[१५] ककाह[१६] सँमुद, भल भल आए तुखार।६
बरन कही तुरिंह कै,[१७] अब इह[१८] सुनहु बिचार॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–सब क। २–राव। ३–कुवरन कहै। ४–असवारा। ५–पायेक। ६–परिवारा। ७–पाऐउ छोरि। ८–तेवरान। ९–हंसा। १०–केआहु; (दि० मार्जिन) हंसकया कुमेत। ११–सावकरन ते अच्छे १२–गररिया और सराही; (दि० मार्जिन) और सराहा। १३–कहे। १४–इन्द्र। १५–बलाह। १६–गोगह। १७–कहे तुरियनके जानत। १८–(ए०, दि० मार्जिन) गुन।

टिप्पणी—(१) **रहसा**–हर्षित हुआ। **अमाई**–समायी।

(२) **होहु**–हो। **असवारू**–सवार। **राउत**–(स० राजपुत्र>राअउत्त>राउत्त> राउत) यहाँ तात्पर्य सामन्तोंसे है। **पाइक**–(सं० पदातिक) पैदल सैनिक।

(३) **पाँयड**–घोड़े के पिछले पैरमें बाँधनेकी रस्सी; पिछाड़ी। **तुरंगम**–घोड़े। **हरे**–हरे रंगका घोड़ा; सब्जा। **सुबर्न**–सुवर्ण; सुनहले रंगका घोड़ा; इसे जर्दा, समन्द और शुतुरी भी कहते हैं।

(४) **हँसला**–ऐसा घोड़ा जिसका शरीर मेंहदीके रंगका और चारों पैर कुछ कालापन लिये हो; कुम्मैत हिनाई। **कार**–काले रंगका घोड़ा। **कयाह**–पके

ताड़के फलके रंगका घोड़ा (पक्वतालनिभो वाजी कयाह परिकीर्तितः—जयदत्त कृत अश्ववैद्यक)। **पलाने**–जीन कसे हुए। **साँवरकरन**–श्यामकर्ण। **महोजू**–अश्वोंकी सूचीमें यह नाम हमें नहीं मिला। हो सकता है यह वही हो जिसे जायसीने महुअ लिखा है (पदमावत ४६।३)। वासुदेव शरण अग्रवालने महुअ को महुए के रंगका हलका पीला घोड़ा बताया है।

(५) **गर्रया**–(गर्र, गर्रा) श्वेत और लाल रंगकी खिचड़ी बालोंवाला घोड़ा। **सरवाहा**–अश्वोंकी सूचीमें यह नाम हमें नहीं मिला। एकडला प्रतिमें सराही पाठ है जो सेराह के अत्यन्त निकट है। हेमचन्द्रने पीयूष या दूधके रंगके घोड़को सेराह कहा है (अभिधान चिन्तामणि ४।३०४)। सोमेश्वर ने काँचनाभ रंगके घोड़ेको सेराह कहा है (केशैस्तनुरुहैर्बालैः कांचनाभैस्तुरंगमः। सेराह इति विख्यातः वैश्यजाति समुद्भवः—मानसोल्लास ४।६८७)। यह नाम फारसकी खाड़ीके सेराफ बन्दरके नामपर पड़ा है। **पंचकल्यान**–वह घोड़ा जिसके घुटनोंतक चारों पैरोंपर और मुखपर सफेदी हो, शरीरका रंग चाहे जो भी हो (येन केनापि वर्णेन मुखे पादेषु पाण्डरः। पंचकल्याण नामायं भाषितः सोमभूभुजा—मानसोल्लास ४।६९५)। **सराहों**–सराहना करूँ। **काहा**-क्या।

(६) **उन्दिर**–(उन्दीर) जंगली चूहे और लोमड़ीके रंगसे मिलता हुआ घोड़ा (उन्दुरेण समच्छायः सतिरुन्दीर उच्यते—मानसोल्लास ४।६९२)। इसे संजाब भी कहते हैं। **बुलाह**–(बोल्लाह) वह घोड़ा जिसके गर्दन और पूँछ के बाल पीले रंगके होते हैं। इस नामका प्रयोग फारसकी खाड़ीमें तिग्रा नदीके मुहानेपर स्थित उबुल्लाह नामक बन्दगाहसे आनेवाले घोड़ोंके लिए किया जाता था। **ककाह**–(कोकाह) सफेद रंगका घोड़ा (श्वेतः कोकाह इत्युक्तः—जयदित्य कृत अश्ववैद्यक)। सम्भवतः इसे शीराजी भी कहते थे। **सँमुद**–(समन्द) बादामी रंगका घोड़ा; वह घोड़ा जिसका रंग सोनेके रंगके समान हो (फरहंग इस्तहालात पृ० २३); इसे शुतुरी भी कहते हैं। **तुखार**–(सं० तुषार) मध्येशियामें शकोंके एक कबीले और उनके मूल निवास स्थानकी संज्ञा थी। कुषाण और गुप्त काल (२री-६ठी ई०) में आनेवाले घोड़े तुषार कहलाते थे।

(७) **बरन**–वर्ण; जात। **तुरिंह**–घोड़ोंके।

९४

(दिल्ली; एकडला)

चंचल चपल मिरघ[1] सँह सीखे। बहु भोजन देखत अति तीखे ॥१
लेत साँस औ ससथ[2] ते **कानाँ।** दहा ताड़ जग जित हो **रानाँ[3] ॥२**
पौन पाइ[4] सों आहि[5] पिरीती। ताजन देखि उड़हि वह[6] रीती ॥३

भाँजत[७] पूँछ चँवर जनु[८] आही। चँवरधार जनु धारहिं[९] ताही ॥४
कान ककनिया अहहिं[१०] सुहानीं। जानु[११] कतरनी कतरि बिनानी[१२] ॥५
चाकर खुर अरु मोंट, तज ताजी कुँडवानी[१३]।
आनि ठाढ़ि कै[१४] घालि, पीठि पाखर सुनवानी[१५] ॥६

पाठान्तर—प्रति—

१—सरो। २—उ ससही। ३—ठाढ़ा हुजग जनेव कर जाना। ४—पाव। ५—आह। ६—उन्ह। ७—भाँजहि। ८—चौंर जनि। ९—चौरकार जनि ढारहि। १०—कान क गोपी कियाह सोहाये। ११—जानि। १२—जो लाये। १३—पूरी पंक्ति का अभाव। १४—ठाढ़ किय। १५—वाखर सोनवानी।

टिप्पणी—(१) **मिरध**—मृग। **सँह**—समान

(३) **पाइ**—पाँव, पैर। **आहि**—है। **पिरीती**—प्रीति। **ताजन**—(फा० ताजियानः) चाबुक, कोड़ा।

(४) **भाँजत**—हिलाते हैं। **चँवर**—चामर। **जनु**—मानो। **चँवरधार**—चमर डुलानेवाले सेवक।

(५) **कतरनी**—कैंची। **बिनानी**—विज्ञानी; कारीगर।

(६) **चाकर**—चौड़ा। **मोंट**—मोटा। **ताजी**—अरबदेशका प्राचीन कालमें प्रचलित नाम ताजिक था। इस कारण अरबी घोड़ोंको ताजी कहते थे। शाहनामें (दसवीं शती) में ताजी अस्प (अश्व) का अनेक स्थलोंपर उल्लेख है। ग्यारहवीं शतीमें रचित भोजकृत युक्तिकल्पतरुमें भी ताजिक घोड़ोंका उल्लेख है।

(७) **आनि**—लाकर। **ठाढ़ि**—खड़ा। **कै**—कर। **घालि**—डालकर। **पीठि**—पीठ। **पाखर**—(स० पक्खर) जीन; अश्व-कवच। **सुनवानी**—(स० स्वर्णवर्णी) सोनेके वर्णवाला, सुनहला।

९५

(दिल्ली; एकडला[१])

राजा बीरहिं पाती[१] देई। आपुन आपुन[२] सब कोउ[३] लेई ॥१
भये[४] असवार राउ[५] औ राने। छाता मेघडम्बर बहु ताने ॥२
बाजन अहे जहाँ लहि तूरा। बाजत चले[६] सबद सब पूरा ॥३
दरब कोरि[७] एक साथ लिवावा[८]। करै पतोहु[९] निछावरि आवा ॥४
राजा आवत कुँवर जो सुनाँ। भा असवार आइ अगुमना ॥५
उतरा कुँवर जुहारी राजा, राइ उतरि गिंय लाइ[१०]।६
भये[११] अँसवार दोउ[१२] जन, हसत मँदिर महँ आइ[१३] ॥७

---

१. सम्मेलन संस्करणमें इस कड़वकका उल्लेख कड़वक ३९६ (सं० स० ३५४) के पाठान्तरकेरूपमें पादटिप्पणीमें हुआ है।

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–बेरहन वारे । २–आपन आपन । ३–कोइ । ४–भै । ५–राऐ । ६–चला । ७–कोटि । ८–लेवावा । ९–पुतोह । १०–उतरा कुँवर तोरै सै, राजा कुँवरहि गिय लाए । ११–भै । १२–दुऔ । १३–आए ।

टिप्पणी—(३) **बाजन**–बाजा । **अहे**–थे । **लहि**–तक । **तूरा**–तूर, मुँहसे फूँककर बजाये जानेवाले वाद्य ।

(४) **दरब**–(द्रव्य) सिक्का, धन । **कोरि**–कोटि, करोड़ । **पतोहु**–पुत्र-वधू । **निछावर**–न्योछावर ।

(५)**असवार**–सवार । **अगुमना**–स्वागत के निमित्त आगे पहुँचा ।

९६

(दिल्ली; एकडला)

राजैं अधिक निछावर किही[१] । बहू बधाइ भेंट कै लिही[२] ॥१
दिन दोइ[३] चारि रहेउ[४] इहँ आई । नगर कै अग्या कै घर[५] जाई ॥२
राजकुँवर मिरगावति रानी । सारस जोरी दयी जो आनी[८] ॥३
खेलतहिं हँसत[७] रहहिं एक ठाईं[६] । दिन दिन अवधि आउ नियराईं ॥४
मिरगावति मन महँ अस कहा[९] । इह कँह चाह मोर चाह जो अहा[१०] ॥५

जो रे मोइ यहि[११] चाहा, आई हमरहिं गाँउ[१२] ।६
कहसि चीर कैसहु[१३] कै पाओं, उड़ि रे इहाँ हुत जाउँ[१४] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–नेवछावरि दीही । २–बहू बधाई बहुत कै कीही । ३–दुइ । ४–भए; (दि० मार्जिन) भयेउ । ५–अगआ के के । ६–दिन दिन औधी आए निरानी । ७–खेलहिं हँसहिं । ८–सारस जोरी देअ मिलाई । ९–मिरगावती चित अपने कहा । १०–ऐहि कह चाडि मोरि जौ अहा । ११–जो रे मोरी होइ एहि । १२–आइह हमरे गाँव । १३–कैसेहु । १४–इहँ सौं जावँ ।

टिप्पणी—(१) **किही**–किया । **लिही**–लिया ।

(२) **कै**–को । **अग्या**–आज्ञा । **कै**–करके ।

(४) **आउ**–आया । **नियराईं**–निकट ।

(५) **अस**–ऐसा । **मोर**–मेरा ।

(६) **मोइ**–मुझे । **आई**–आवेगा । **हमरहिं**–मेरे । **गाँउ**–गाँव ।

(७) **कैसहु**–किस प्रकार ।

९७

(दिल्ली; एकडला)

दिन एक राइ[१] मोह मन आवा । मानुस कुँवर के ठाँउ[२] पठावा ॥१
कुँवर राइ तौं राइ हँकारेउ[३] । कहँहि मोह तुम्ह[४] नाँहि हमारेउ[५] ॥२

बहु दिन भये न भेटइ[8] आवा। तुम्ह[9] जिउ मिरगावति कहँ[6] लावा ॥३
इहइ[1] बोल कुँवर जो सुनाँ। तुरिय पलान[10] माँग बहु गुना ॥४
कहसि जोहारि पिता कै जाऊँ। धाइ[11] रहहु मिरगावति ठाँऊँ ॥५
स्रवन[12] लागि क[13] धाइहि हरवैं,[14] रहहु सजग[15] भलि भाँति[16] ।६
चीर लुकाइ[17] धरहु तिह[18] ठाइँ, जिंह[19] न पावइ रात[20] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–राऐ। २–पास। ३–राऐ तोह बेगि हकाँरेव। ४–तोहि। ५–हमारेव। ६–भेंटै। ७–तो हौं जीउ। ८–×। ९–एहइ। १०–तुरीअ पलानि। ११–धाए। १२–सौन। १३–कह। १४–×। १५–सुजग। १६–भाँति। १७–लुकाए। १८–तेंहि। १९–जहाँ। २०–पावै राति।

टिप्पणी—(१) **राइ**–राज।

(२) **हँकारे**–पुकारा है; बुलाया है। **मोह**–ममता। **हमारेउ**–हमारा; मेरा।

(३) **भेटइ**–मिलने। **आवा**–आया।

(४) **इहइ**–यही। **बोल**–बात। **तुरिय**–घोड़ा। **पलान**–जीन कसा हुआ।

(५) **जोहारि**–अभ्यर्थना।

(६) **हरवै**–चेतावनी देता है।

(७) **लुकाइ**–छिपाकर।

९८

(दिल्ली; बीकानेर)

ईत बोलि कह तुरिय चलावा। भा अपमंगल सगुन न पावा[1] ॥१
लोगहि[2] कहा कुँवरहूँ न जाई[3]। वैठि कहौं एक दिनहिं गँवाई[4] ॥२
कहिसि पिता कर मानुस आवा। कइसैं[5] रहौं जाइ जो पावा ॥३
जो बिधि लिखा होइ पै सोइ। असगुन सगुन काह कर होई[6] ॥४
चला बेगि तिंह जाइ[7] तुलाई। राजैं[8] देखि कुँवर गा आई ॥५
रहसि उठा बहु राजा देखत,[9] बैठि दुवउ इक[10] ठाइँ ।६
राजकुँवर धर इहँवा,[11] जिउ मिरगावत ठाइँ[12] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–म्रिगा नाँधि पुनि पंथ फिराई। दहिनै तै बाईं दिसि जाई। २–लोगहु। ३–कुँअर नहिं जइयै। ४–बहुरियै दिना दुइ फिरि अइयै। ५–कैसे। ६–का करै कोई। ७–तहँ आइ। ८–राजा। ९–×। १०–दुवौ एक। ११–धरा इहँ माटी। १२–जीउ म्रिगावती ठाऊँ।

टिप्पणी—(१) **ईत**–इतना। **बोलिकै**–कहकर। **अपमंगल**–अशुभ।

(२) **कहौं**–कहीं पर।

(३) **कइसैं**–कैसे। **रहौं**–रहूँ।

(७) **धर**–धड़, शरीर। **इहँवा**–यहाँ।

९९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति[१] घर बैठी आही[२]। धाइ सँउ[३] रस बात जो कही ॥१
धाइहिं[४] रस[५] बातहिं[६] बोरायसि[७]। काज करै को[८] अनत पठायसि[९] ॥२
जौलहि[१०] धाइ काज कै आई। सारी ढूँढ़ि लइ जिह र लुकाई[११] ॥३
चीर पहिरि कै वह रे उड़ानी[१२]। धाइहि अचकर[१३] कित गइ[१४] रानी ॥४
कहिसि[१५] काह मैं मुख[१६] देखराउब। खिन[१७] एक माँझ[१८] कुँवर अब[१९] आउब॥५
रोवइ[२०] धाइ चहूँ दिसि ढूँढै, कतहू वह न पाउ[२१]।६
काह कहौं किह[२२] आगे यह दुख,[२३] कुछउ[२४] न बकतै आउ[२५] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) मिरगावती। २–(ए०, बी०) अही। ३–(ए०) सौं; (बी०) से। ४–(ए०) धाई कहँ। ५–(ए०) ×। ६–(ए०) बातन; (बी०) बातन्ह। ७–(ए०, बी०) बोराइसि। ८–(ए०, बी०) कहँ। ९–(बी०) पइसि। १०–(ए०) जौलै। ११–(ए०) सारी ढूँढ़लै जहाँ छपाई; (बी०) सारी ढूँढ़ लिही जहाँ छपाई। १२–(बी०) चीर लेइकै पहिरि उड़ानी। १३–(ए०) अजगुत; (बी०) अचंभौ। १४–(ए०) कतगै। १५–(ए०) कहै। १६–(बी०) मह। १७–(ए०) खन। १८–(ए०) माँह। १९–(बी) जो। २०–(ए०) रोवै। २१–(ए०) कतहू न वहि कहँ पाव; (बी०) कतहू न वहि कहँ पावै। २२–(बी०) केहि। २३–(बी०, ए०) काह कहौं कहिये तो। २४–(ए०) कुछौ; (बी०) ×। २५–(ए०) आव; (बी०) बकत न आवै।

टिप्पणी—(१) आही–थी।

(२) **बोरायसि**–भुलावा दिया। **काज**–काम। **करै को**–करनेके लिए। **अनत**–अन्यत्र। **पठायसि**–भेजा।

(३) **जौलहि**–जब तक। **काज**–कार्य। **कै**–करके।

(४) **अचकर**–चकित। **कित**–किधर, कहाँ।

(५) **काह**–क्या। **देखराउ**–दिखाऊँगी। **खिन**–क्षण। **माँझ**–में। **आउब**–आवेगा।

(६) **कतहू**–कहीं भी।

(७) **बकतै**–वचन।

१००

(दिल्ली; बीकानेर[१])

मँदिर ढूँढि जो बाहर आई। धाइ क[१] दिस्टि भवन[२] पर जाई ॥१
देखिसि बैठि[३] मँदिर पर आहा[४]। मिरगावति[५] यह कीनहु काहा[६] ॥२
हम सँउ कछू[७] मँदाई जानहु। तोर पलक[८] अपनैं जियँ मानहु[९] ॥३

१. बीकानेर प्रति में पंक्ति ५ की अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

हम सेंउ कछु न आह मँदाई[10] । किह[11] कारन तुम्ह चलहु[12] कुहाई[13] ॥४
का उतर हम कुँवरहि देबा[14] । सुनतहि मरिह काह तू लेबा[15] ॥५
आवहु उतर सुहागिन[16] तै पत[17], होइ हमरें[18] मन साँत ।६
तोह[19] न मोह मन आवइ,[20] जियत[21] कुँवर जिय[22] किंह[23] भाँत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–×। २–मँदिर। ३–वैठी। ४–अहा। ५–म्रिगावती। ६–कीने कहा। ७–से किछु। ८–तो रे विलग। ९–×। १०–हम सै किछु मँदाइन अहई। ११–किहि। १२–तुम चली। १३–×। १४–×। १५–सुनते हि मरव कह तो लावा। १६–सोहागिनि। १७–पियवती। १८–हो मो। १९–तुम्ह। २०–आवै। २१–जिय विनु। २२–जिये। २३–केहि।

टिप्पणी—(१) दिस्टि–दृष्टि।

(२) **कीनहु**–किया। **काहा**–क्या।

(४) **कुहाई**–रुटकर।

(५) **का**–क्या। **देबा**–दूँगी। **लेबा**–लोगी, पावोगी।

१०१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

धाई न दोखँ[1] आहै[2] तोरा। कहहु जोहार[3] कुँवर सेंउ[4] मोरा ॥१
औ अस कहहु[5] कुँवर सों[6] बाता। मोर जीउ[7] आहै[8] तिह[9] राता ॥२
सेंतीं[10] जो पावइ[11] सो न कहैं[12] मोला। ताकर मोल[13] न जानै भोला ॥३
इह[14] कारन हों जाउँ उड़ाई। कहहु[15] कुँवर सों[16] आवइ धाई[17] ॥४
कंचननगर हमारो[18] ठाऊँ। रूपमुरारि पिता कर[19] नाँऊँ ॥५
यह र[20] वात कह धाई[21] आपुन, फुन[22] वह [23]चली उड़ाइ[24] ।६
धाई रोइ पुकारा,[25] वह[26] रे इहाँहुत[27] जाइ[28] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) दोखन। २–(ए०) अहै, (बी०) अहै किछु। ३–(ए०, बी०) कहेहु। ४–(ए०) जोहारि; (बी०) जहार। ५–(ए०) सै; (बी०) से। ६–(ए०, बी०) कहेहु। ७–(ए०) सै; (बी०) से। ८–(बी०) जीव। ९–(बी०) है। १०–(ए०, बी०) तोहि। ११–(बी०) बस्त। १२–(ए०) पावै; (बी०) पाईऐ। १३–(ए०) सौधे। १४–(बी०) मर्म। १५–(ए०, बी०) एहि। १६–(बी०) कहेउ। १७–(बी०) सेंउ। १८–(ए०) आवै धाई; (बी०) जब आवै ठाई। १९–(ए०) हमारेव; (बी०) हमारा। २०–(बी०) का। २१–(ए०) एह रे; (बी०) येहि रे। २२–(ए०) कहि धाइहि; (बी०) कहि धाइ सेउँ। २३–(ए०)×। २४–(ए०, बी०)×। २५–उड़ाए। २६–(ए०) रोव पुकारे; (बी०) पुकारि कै। २७–(बी०) यह। २८–(बी०) हुतै। २९–(ए०) कर मलि मलि पछिताइ।

टिप्पणी—(३) **सेंतीं**–बिना मूल्य; मुफ्त। **मोला**–मूल्य। **ताकर**–उसका।
(७) **इहाँहुत**–यहाँसे।

१०२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

हँसत कुँवर कँह भयउ[1] अगाहू[2]। खरभरि परेउ[3] हिये उर दाहू[4] ॥१
कहसि पिता सेंउ[5] हों घर जाऊँ। धाइ अकेलि आह[6] वहि[7] ठाऊँ ॥२
राजें[8] बान[9] दीन्हि[10] पहिराई[11]। पिताहिं[12] जुहारि[13] मँदिर कहँ आई[14] ॥३
धाई देखि[15] कुँवर जो आवा। हाक[16] डफार रोउ[17] गुहरावा[18] ॥४
कुँवर कहा कछु[19] आह[20] मँदाई। रावन सिय[21] हरी (जनु)[22] आई ॥५
कहसि[23] काह किहि[24] कारन रोवहु[25], सौं कहु[26] हम बात।६
राम बियोग[27] भयउ[28] जिहि[29] कारन, सो हमकों सँसात[30] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) भव। २–(बी०) अगाहा। ३–(बी०) परी; (ए०) परेव। ४–(ए०) डाहू; (बी०) डाहा। ५–(ए०) सौं। ६–(बी०) अहै। ७–(ए०) उहि। ८–(बी०) राजा। ९–(ए०, बी०) पान। १०–(ए०) दीन्ह; (बी०) दीन्हें। ११–(ए०) बरहे; (बी०) वहुराई। १२–(ए०, बी) पिता। १३–(ए०, बी०) जोहारि। १४–(ए०) आए; (बी०) जाई। १५–(ए०) देख; (बी०) देखा। १६–(ए०, बी०) घालि। १७–(ए०) रोव; (बी०) रोइ। १८–(ए०) गोहरावा। १९–(ए०) कुछु; (बी०) किछु। २०–(बी०) आहि। २१–(ए०) सीअ; (बी०) सीय। २२–(ए०) जनि; (बी०) जनौं; (दि०) जो; (दि० मार्जिन) जनु। २३–(ए०, बी०) कहिसि। २४–(ए०) केहि। २५–(ए०)×। २६–(ए०, बी०) सो न कहहु। २७–(बी०) बियोग; (ए०) बिऊग। २८–(ए०) भये; (बी०) भयेउ। २९–(ए०) जेहि। ३०–(ए०) सो तोह क सीअ सात; (बी०) सो तुम कहु सै सात।

टिप्पणी—(१) **अगाहू**–(अगाह; फा० आगाह) चेतावनी; यहाँ तात्पर्य अचानक मनमें उठनेवाली आशंकासे है। **खरभरि**–हल-चल। **दाहू**–(दाह) जलन।
(३) **बान**–वस्त्र।
(४) **हाक**–जोर-जोरसे पुकारका। **डफार**–(क्रि० डफारना) दहाड़ मारना; चीख मारना। **गुहरावा**–पुकार लगायी।

१०३

(दिल्ली; एकडला)

सुवन[1] बोल इँह परेउ[2] जो धाई। कुँवर पछार तुरियँ सेंउ[3] खाई ॥१
पाग मार भुइँ कापर फारा। उर मारै कहँ लिहिसि[4] कटारा ॥२

लोगहि[1] करहुत लीन्हि अजोरी । मरै देहु गइ[6] सारस जोरी ॥३
कहै देहु बिस खाँवँ अघाई । मरउँ बेगि मोहि जिय[7] न जाई ॥४
जिय बिनु जिय[8] न जाइ[9] अकेलैं । जीउ जम लेउ कया[10] पर हेलैं ॥५
मरै देहु मोहि लोगहि[11] बिस भखि, जीउ[12] न केउनहि[13] भाँत ।६
जिर[14] बिन कया काह ले कीजै, तिह[15] बिनु होइ न साँत ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–सौन । २–उन परेव । ३–सौ । ४–लीन । ५–लोगन्ह । ६–कै । ७–जिऐ । ८–जैए । ९–जहे । १०–जीउत जि गऐव कये (?) । ११–× । १२–जिअन । १३–कौनौ । १४–जिअ । १५–तेहि ।

टिप्पणी—(१) **सुवन**–श्रवण, कान । **पछार**–पछाड़ । **तुरियाँ**–घोड़ा ।
(२) **पाग**–पगड़ी; यह तात्पर्य सिरसे है । **भुइँ**–पृथ्वी । **कापर**–कपड़ा । **फारा**–फाड़ा । **उर**–छाती । **कटारा**–कटार ।
(३) **करहु**–हाथसे । **देहु**–दो । **सारस जोरी**–सारसकी जोड़के सम्बन्धमें प्रवाद है कि एकके अभावमें दूसरा जीवित नहीं रहता ।
(४) **बिस**–विष । **अघाई**–तृप्त होकर । **मोहि**–मुझे ।
(५) **जम**–यमराज । **हेलै**–ठेलना; डालना ।
(६) **भखि**–खाकर । **केउनहिं**–किसी भी ।
(७) **काह**–क्या । **साँत**–शान्त ।

१०४

(दिल्ली; एकडला)

सान्ति गई मन परेउ[1] खभारू । दंद उदेग उचाट अधारू[2] ॥१
दई[3] काह मैं अउगुन कीन्हा । जिन्ह र[4] सँताप बिरह फुनि[5] दीन्हा ॥२
पेम घाइ दुख कै सिर हाई[6] । फुनि[7] बिस बान हियें महँ खाई ॥३
अब न मोर अ(ो)खद[8] कै आसा । अति र[9] कठिन घट जो रहे[10] साँसा ॥४
जे जन जिये बियोग कै मारी[11] । ते तन काल पाँच सर पारी[12] ॥५
सँवर सँवर[13] मन झुरवइ,[14] रोइ रोइ मिलै धाहि ।६
सो उपकार करौं अपनैं जिय, जिह पायउँ[15] वहि चाहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–सती गे हम परेव । २–अहारू । ३–दैअ । ४–जेहि रे । ५–दुख । ६–आई । ७–सुनी । ८–बोखदि । ९–अब रे । १०–घट रहै न । ११–मारे । १२–कला पंच बस मरे; (दि० मार्जिन) मारी । १३–सौंरि सौंरि । १४–झुरव । १५–जे पावौ ।

टिप्पणी—(१) **सान्ति**–शान्ति । **खभारू**–खलबली । **दन्द**–द्वन्द । **उदेग**–उद्वेग । **उचाट**–खिन्नता । **अधारू**–आधार ।

(२) **काह**–क्या । **अउगुन**–अवगुण; बुरा कार्य । **सँताप**–सन्ताप ।

(३) **घाइ**–घाव । **हाई**–आई । **बिस बान**–विष बाण । **हियें**–हृदय । **महँ**–में ।

१०५

(दिल्ली; एकडला[1])

जो कोइ चाह कहै धस लेऊँ । जो जिउ माँग[1] काढ़ि कै देऊँ ॥१
राम सेतु बाँधेउ[2] सिय[3] लागी । हौं वहि[4] लागि परौं मँझ आगी ॥२
हनिवँत सिय[5] लगि जारसि[6] लंका । हौं र[7] बिधाँसौं जाइ[8] पलंका ॥३
सात सरग चढ़ धाँवौं जाऊँ । जहाँ सुनौं हौं[9] मिरगावति नाऊँ ॥४
निसिरह[10] सिय लगि मारि बिधाँसा । हौं वहि[11] लगि जारौं कविलासा ॥५
जस भरथरी[12] भयउ[13] पँथ जोगी, रस पिंगला वियोग ।६
रोइ[14] लंक दुहूँ कर टेकै, कहै हौं[15] पँथ जोग ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–चाह । २–बंधौ । ३–सीअ । ४–उहि । ५–सीअ । ६–जाए । ७–रे । ८–जाए । ९–X । १०–निसिअर । ११–उहि । १२–भरथहरी । १३–भये । १४–रोवै । १५–होउँ ।

टिप्पणी—(१) **धस**–घुसकर । **काढि**–निकालकर ।

(२) **सेतु**–पुल । **सिय**–सीता । **लागी**–निमित्त । **मँझ**–मध्य । **आगी**–अग्नि ।

(३) **हँनिवँत**–हनुमान । **जारसि**–जलाया । **बिधाँसो**–विध्वंस करूँ । **पलंका**–(सं० पाताल लंका>पायाल लंका>पाया लंका >पालंका>पलंका) इस नामसे ऐसा ध्वनित होता है कि लंका की तरह यह कोई अति दूरवर्ती द्वीप था । हो सकता है द्वीपान्तर (हिन्द-एशियाके द्वीप समूहों)के किसी द्वीपको पलंका कहते रहे हों । मलय स्थिति पेनांगका भी नाम पलंका हो सकता है । मौलाना दाऊदने चन्दायनमें (३५१।५) और जायसीने पद्मावतमें (२०६।३; ३५५।३) में 'लंका छाड़ि पलंका' जानेकी बात कही है । यह प्रयोग मुहावरे जैसा है । इससे जान पड़ता है कि लंका जाना तो सुगम था ही नहीं; पलंका कोई ऐसी जगह थी जहाँ पहुँचना सामान्यतः असम्भव समझा जाता था । जायसीने पलंकामें शिवका निवास बताया है (पदमावत २०६।३-४) । सम्भव है शिवके निवास स्थान कैलासको पलंका कहते रहे हों । इस सम्बन्धमें द्रष्टव्य है कि एलोराके कैलास मंदिरके दोनों ओर जो गुफा मण्डप हैं, उनमें से एकको लंका और दूसरेको पलंका कहते हैं ।

(४) **धावों**–दौड़ूँ ।

---

१. इस प्रतिमें पंक्ति ४-५ क्रमशः ५ और ४ है ।

(५) **निसिरह**–निशाचर; राक्षस। **विधाँसा**–विध्वंस किया। **कबिलासा**–(कैलास >कइलास>कविलास> (वकारका प्रश्लेष >कविलास) स्वर्ग।

(६) **भरथरी**–भर्तृहरि; उज्जैन नरेश।

१०६

(दिल्ली; एकडला)

रोवइ[1] सँभरे कहै विधाता। काहे वरजा[2] मोर संघाता ॥१
मैं तो वहि[3] लगि वहु दुख देखा। औ [अ]पनै जिय कुछउ[4] न लेखा ॥२
धाइहि पूछि[5] विरह दुख माँता। चलत[6] कहसि तुम्हसेंउ[7] कछु बाता॥३
धा[इ] कहा तुम्ह कहसि[8] जुहारू। भेंटघाँट कहँ वहुत[9] अपारू ॥४
औरु नगर कर लीहिसि[10] नाऊँ। कंचननगर हमारेउ[11] ठाऊँ ॥५
कहिसि सँदेस कहु जो कुँवर सो,[12] बिलम्व न लावइ आउ[13] ।६
वहुत देखि दुख आवै मारग[14], तो हमकहँ वह[15] पाउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–रोवै। २–बिरुजा। ३–उहि। ४–कुछौ। ५–पूछ। ६–जात। ७–तोह सै। ८–तोह कहै जोहारु। ९–आव। १०–लीन्हिसि। ११–हमारेव। १२–कहेसि सँदेसा कुँवर सो। १३–आव। १४–×। १५–सो।

टिप्पणी—(१) **सँभरे**–सँभले। **विधाता**–ईश्वर। **बरजा**–वर्जित किया। **संघाता**–साथी।

(२) **लेखा**–लिखा; समझा।

(३) **माँता**–ग्रस्त।

(४) **भेंट-घाँट**–मिलना-जुलना। भोजपुरी में यह सामान्य रूपसे प्रयोगमें आता है।

(७) **हमकँह**–मुझको।

१०७

(दिल्ली; एकडला)

सुनि सँदेस सिर भुँइ धर[1] मारा। धरा न रहे तोरै[2] कर बारा ॥१
लोग धाइ सब कोउ समुझावइ[3]। कुँवर समुँझि पुनि देइ मरावइ[4] ॥२
जो अँजुरी पानीं विन मराई। मुए सो गागरि सो का[5] कराई ॥३
कोउ[6] पिसुन मिस होइ कर[7] आवा। कै सुरजन[8] रिपु होइ बउरावा[9] ॥४
को र दूत[10] मिस वैठउ आई। पवन पैठि[11] वादर बहिराई ॥५
कै सुरजन[12] कै दुरजन[13], कै[14] हम दियउ वियोग ।६
को अरि भयउ हमारेउ[15], जिह वरजेउ हम[16] जोग ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति–

१–दै । २–तोर । ३–कोइ समुआवै । ४–फुनि दैव मेरावइ । ५–× । ६–कोरे । ७–हो कै । ८–दुरजन । ९–हौ बौरावा । १०–को रे रावन । ११–पंथ । १२–सुरजनि । १३–दुरजनि । १४–को । १५–भएउ हमारो । १६–जो उपजो एह ।

टिप्पणी—(१) **धरा**–पकड़ने पर । **तोरै**–तोड़े । **कर**–हाथ । **बारा**–बाल; केश ।

(३) **अँजुरी**–अँजलि । **मराई**–मरे । **गागरि**–घड़ा ।

(४) **पिसुन** (पिशुन)–छिपे छिपे दो व्यक्तियों में विरोध उत्पन्न करनेवाला व्यक्ति । **मिसि**–बहाना; व्याज । **सुरजन**–देवता । **बउराना**–पागल बनाना ।

(७) **अरि**–शत्रु । **बरजेउ**–वर्जित किया । **जोग**–योग; मिलन ।

१०८

(दिल्ली; एकडला)

लोगहिं[१] बैठि कुँवर समुझावा । मन समुझा लोगहि बउरावा[२] ॥१
बिरह[३] लागि भरथरी[४] वियोगी । हौं वहि लागि होउँ[५] अब जोगी ॥२
चिन्ता[६] जोग तन्त कैं[७] लागा । सुनि कै भोग जो आगैं भागा[८] ॥३
माता पिता कोउ न[९] जानाँ । जोगी [के]र साज सब आनाँ ॥४
छाड़सि लोग कुटुब घर बारू । छाड़सि पिता मोह सँयसारू[१०] ॥५
मिरगावति[११] कैं पेम रस बिंधा[१२] कैंसहि उतरि[१३] न जाइ ।६
चित गयन्दँहि पंक जेंउ, खिन खिन अधिक समाय[१४] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–लोगन । २–लोगन बौरावा । ३–जुध । ४–भरथहरी । ५–होंउ । ६–चितु । ७–के । ८–सुनि के जोग भूख जनि भागा । ९–कोई नहिं । १०–संसारू । ११–मिरगावती । १२–बँधा । १३–कैसेउ निकसि । १४–सोहाइ ।

टिप्पणी—(३) **तन्त**–तन्त्र ।

(४) **साज**–वेश-भूषा । **आनाँ**–ले आया ।

(५) **छाड़सि**–छोड़ा । **घरबारू**–घर-द्वार । **सँयसारू**–संसार ।

(७) **गयन्दँहि**–हाथी । **पंक**–कीचड़ । **जेंउ**–जिस प्रकार ।

१०९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[१])

केस उदिआनी[२] गोरखपन्था । पाँय[३] पाँवरी मेखलि[३] कंथा ॥१
जटा चक्र मुद्रा[४] जपमाला । डण्डा खपर केसरि[५] छाला ॥२
जोगौटा[६] रुद्राख[७] अधारी । भसम लेउ[८] तिरसूल सँवारी ॥३

---

१. इस प्रति में पंक्ति ४-५ क्रमशः ५-४ हैं ।

सिंगी पूरै पन्थ[९] सँभारा[१०]। जपै सुरंगिनि[११] भई अधारा[१२] ॥४
कर किंगरी धँढोर[१३] मन मेला। तार[१४] बजावइ[१५] रैनि अकेला ॥५
जोग जुगुति होइ[१६] खेलेउ[१७] मारग[१८] सिध[१९] होइ कह जाइ ।६
भुगुति मोर[२०] मिरगावति[२१] जौंउ[२२], भीख देइ को[२३] राइ[२४] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कसि उडियानी; (बी०) कसि उडानी। २–(ए०) पाये; (बी०) पावँ। ३–(ए०) मेखरी; (बी०) मेखली। ४–(बी०) ×। ५–(ए०) केसरी; (बी०) केहरी। ६–(बी०) जोगटा। ७–(ए०) रुद्राख; (बी०) रुद्राक्ष औ। ८–(ए०) किएव; (बी०) किहेसि। ९–(ए०, बी०) नेह। १०–(बी०) संभारै। ११–(बी०) कुरंगिनि। १२–(ए०) खन न बिसारा; (बी०) खिन न बिसारै। १३–(ए०) ठिठोर; (बी०) धँधरी। १४–(ए०, बी०) बार। १५–(ए०) बजावै। १६–(ए०) मै। १७–(ए०) खेलेसि; (बी०) खेलौं। १८–(ए०) ×। १९–(बी०) सिधि। २०–(ए०) मूर। २१–(ए०) मिरगावती। २२–(ए०) ×; (बी०) जाँचौं। २३–(ए०) कोइ। २४–(बी०) आय।

टिप्पणी—(१) **उदियानी**–बिखराये। **पाँय**–पाँव, पैर। **पाँवरी**–(सं० पादपट्ट > पा० पाय वह > पावड़ > पावड़ा > पावड़ा > पाँवरि) खड़ाऊँ। **मेखलि**–मेखला। **कंथा**–कथरी; गुदड़ी; फटे पुराने कपड़ोंसे बनाया गया वस्त्र।

(२) **चक्र**–सम्भवतः छोटी गोल अँगूठी जिसे पवित्री कहते हैं (वासुदेव शरण अग्रवाल)। **मुद्रा**–कानमें पहननेका कुण्डल। **जपमाला**–जाप करनेकी माला। **खपर**–खप्पर; भिक्षा पात्र। **केसरि छाला**–बाघम्बर।

(३) **जोगौटा**–(सं० योगपट्ट) वह वस्त्र जिसे जोगी ध्यान करते समय सिरसे पैरोंतक डाल लेते हैं। अन्य अवस्थामें यह कन्धेपर रहता है। **रुदराख**–रुद्राक्षकी माला। **अधारी**–वासुदेव शरण अग्रवालने पदमावत (१२६।४) में लकड़ीका बना सहारा बताया है जिसको टेककर योगी बैठते और सोते हैं। किन्तु इस ग्रन्थ (१६४।१) के अन्यत्र उल्लेखसे ज्ञात होता है कि उनका यह अनुमान ठीक नहीं है। इसका तात्पर्य झोलीसे है। **भसम**–भस्म; भभूत। **तिरसुल**–त्रिशूल।

(४) **सिंगी**–सींघका बना मुँहसे फूँककर बजानेका बाजा। **पूरै**–बजाये। **सुरंगिनि**–सुन्दर रंगवाली।

(५) **किंगरी**–छोटा चिकारा या सारंगी, जिसे बजाकर जोगी भीख माँगते हैं। **धँढोर**–धँधारी; गोरखाधन्धा; तारके छल्लोंका बना उलझन जिसे जोगी लोग सुलझाते हैं। **मेला**–लगाया।

(६) **जुगुति**–युक्ति। **सिध**–सिद्धि।

(७) **भुगुति**–भोजन। **राइ**–राजा।

११०

(दिल्ली; बीकानेर)

निकसि कुँवर जोगी मिस चला। राजैं सुनाँ आगि उर जरा[१] ॥१
सुत वियोग[२] दसरथ[३] अस कीन्हा। राइ[४] चाहि ततखन जिउ दीन्हा ॥२
जस[५] अरजुन[६] अहिबर्न कै मारे। तस राजा बहु[७] रोउ[८] पुकारे ॥३
सिर धुन धुन[९] कै कारुन करई[१०]। आउ घटै[११] विनु जाइ[१२] न मरई[१३] ॥४
पाछो कोइ न देखै आगे। मरै न जाइ जियव[१४] किंह[१५] लागे ॥५
जस अन्धा अन्धी विनु सरवन[१६], फेकरि[१७] मुए चिल्लाइ[१८]। ६
मुयहु सरग[१९] पछिताव न जहियें[२०], जो न[२१] जियत मिलाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–जला। २–वियोग। ३–जसरथ। ४–येहउ। ५–जसरे। ६–अर्जुन। ७–बहु-राजा। ८–रोवै। ९–धुनि-धुनि। १०–कर मलई। ११–आव घटई। १२–कोउ। १३–×। १४–जिए। १५–केहि। १६–जस अन्धी अन्धा सर्वन बिनु। १७–फिकरि। १८–चितलाइ। १९–मुयेहु पाछु। २०–जाइहि। २१–जौ नहिं।

टिप्पणी—(१) **मिस**–बहाना; रूपमें।

(२) **ततखन**–तत्क्षण।

(३) **अहिबर्न**-अभिमन्यु। **तस**–तैसा।

(४) **कारुन**–करुणा। **आउ**–आयु।

(५) **पाछो**–पीछे। **जियब**–जीऊँगा। **किंह लागे**–किसके लिए।

(६) **सरवन**–श्रवण। **फेंकरि**–दहाड़ मारकर रोना।

१११

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

चला कुँवर मिरगावति जहाँ। सींघ सँदूर[१] अगम बन तहाँ ॥१
डर भौ एको[२] आह न करई[३]। किंगरी पेम बजावइ झुरई[४] ॥२
मग अमग[५] न जाने भोला। विरह भाक[६] पै अउर[७] न बोला ॥३
तब[८] लग मग अमग[९] गुनीजइ[१०]। जब[११] लग मोह मया मन[१२] कीजइ[१३] ॥४
ताम लगन कुल मेल रहे जे[१४]। **वन क पंखी पर न परिचै[१५] ॥५**
ताम सेयाँप[१६] ताम गुन,[१७] **जप तप संजम ताग[१८]। ६**
वंक घटै **लोयना,[१९] पर न पूजैं जाम[२०] ॥७**

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) सीह सेदुर; (बी०) सिह सेंदूर। २–(बी०) एक। ३–(ए०) तेही; (बी०) न लागै तेही। ४–(ए०) बस भौ नेही; (बी०) बजावै नेही। ५–(बी०) मगु औ अमगु। ६–(ए०, बी०) भाख। ७–(बी०) और। ८–(बी०) तव। ९–(बी०,

ए०) मगु अमगु। १०-(बी०) न गनीजे। ११-(बी०) तब। १२-(बी०) नहिं। १३-(बी०, ए०) कीजै। १४-(बी०) तब लगि कुल सील रहीजे; (ए०) उत्तम लगे कुल सील रहीजे। १५-(ए०) वंक कह खे पीर न परीजे; (बी०) बांके कटाखे पीर न परिजे। १६-(ए०) सेआनप। १७-(बी०) ताम समनपता गुन। १८-(बी०) जपत सपत जम ताम। १९-(ए०) बंक कटखे लोऐना (बी०) बांके कटखे लोयन्ह। २०-(ए०) परीजे जाम; (बी०) पीर न परीजे जाम।

टिप्पणी—(१) **सींघ सिंदूर**—इस शब्द-युग्म का प्रयोग मौलाना दाऊद ने चन्दायन में तीन स्थलों (१२८।५;१९६।३;२९५।६) पर किया है। जायसी के पदमावतमें यह दो बार आया है (१४४।६;६३६।९)। वहाँ माताप्रसाद गुप्तका पाठ है—सिंघ सदूरा और सिंह सदूरहि। वासुदेव शरण अग्रवालने भी यह पाठ स्वीकार किया है। मधुमालती में भी यह शब्द-युग्म आया है। वहाँ माताप्रसाद गुप्तने सीह सेदूर (१००।२; १८१।२) पाठ दिया है। वासुदेव शरण अग्रवाल ने इसका अर्थ सिंह और शार्दूल किया है। यही अर्थ माताप्रसाद गुप्तने भी मधुमालतीमें स्वीकार किया है। सदूर पाठ से शार्दूल (सदूर <सादूर <सारदूल <शार्दूल) की कल्पना की जा सकती है। किन्तु चन्दायनके फारसी प्रतिमें यह शब्द सर्वत्र सीन, नून, दाल, वाव, रे बहुत स्पष्ट रूपसे लिखा है। अतः इसका पाठ सन्दूर, सँदूर, सिन्दूर ही हो सकता है। मिरगावतीके फारसी प्रतिमें सीनके बाद ये है और वहाँ पाठ सेदूर या सीदूर होगा। इसके प्रकाशमें सदूर अपपाठ जान पड़ता है। इस कारण चन्दायनमें हमने इसका वास्तविक पाठ सिंदूर अथवा सेंदुर माना था और उसके मूलमें सिन्धुर शब्द स्वीकार किया था जिसका अर्थ हाथी होता है। मध्यकालीन कलामें सिंह-हस्ति एक प्रसिद्ध अभिप्रायः रहा भी है। किन्तु पदमावत के कड़वक ६३६ की पंक्ति ९ को उसी कड़वककी पंक्ति २ के प्रकाशमें देखनेसे इस शब्दके मूलमें शार्दूल ही होनेका भान होता है। और मिरगावतीकी पंक्ति—सींह सेदूर चिंघरहि हाथी—से स्पष्ट है कि सेंदूरका तात्पर्य हाथीसे भिन्न है। ऐसी अवस्थामें सेंदूरसे शार्दूल अर्थात् बाघका ही तात्पर्य ग्रहण करना उचित होगा। शेर-बाघका युग्म बोलचालमें प्रचलित भी है। **अगम**—(सं० अगम्य) दुर्गम, जहाँ प्रवेश सुगम न हो।

(२) **भौ**—भय। **एकौ**—एक भी।

(३) **भोला**—अज्ञान, सरल। **भाक**—भाषा, बोली। **पै**—पर; किन्तु। **अउर**—और।

(४) **लग**—तक। **गुनीजइ**—तर्क-वितर्कके भाव उठते हैं। **मया**—ममता। **कीजइ**—करे।

(५) **पंखी**—पक्षी। **परिचै**—नैकट्य अथवा आत्मीयता प्राप्त करता है।

११२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

एक वन छाड़ि आन वन जाई। आगे चाह नगर कै[१] पाई ॥१

नगर सुहावन उत्तम[2] ठाँऊ। धरमसाल[3] बहु धरम कै[4] नाँऊँ ॥२
कहिसि आजु यहि नगर गवाँवउँ[5]। मकुहिं[6] चाह मिरगावति पावउँ[7]॥३
भिखा[8] माँगै जाइ[9] न आवइ[10]। रोवइ किंगरी नेंह[11] बजावइ[12] ॥४
लोगहिं राजहिं जाइ जनावा। कुँवर एक जोगी जस आवा ॥५
अति रुपवन्त सुलाखन,[13] मुखहिं बतीसी भीन।६
करम जोति मनि माँथें चमकै,[14] एको लखन न खीन ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) की। २– (बी०) उतिम। ३– (ए०) धरमसार। ४–(बी०) क। ५–(ए०, बी०) गँवावौं। ६–(बी०) मकहुँ। ७–(ए०, बी०) पावौं। ८–(ए०) भिखेया; (बी०) भिछ्या। ९–(ए०, बी०) जाय। १०–(ए०, बी०) आवै। ११–(ए०) पेम। १२–(ए०) बजावै; (बी०) रोइ रोइ किंगरी बियोग बजावै। १३–(ए०) सुलखन; (बी०) सुलच्छिन। १४–(ए०) ×।

टिप्पणी—(१) छाड़ि–छोड़कर। **आन**–अन्य, दूसरा। **चाह**–आहट।
(२) **धरमसाल**–धर्मशाला। यात्रियोंके ठहरनेका स्थान।
(३) **गवाँवउँ**–बिताऊँ। **मकुहिं**–कदाचित्।
(५) **जनावा**–सूचित किया।
(६) **सुलाखन**–सुलक्षण।
(७) **करम**–भाग्य। **जोति**–ज्योति। **मनि**–मणि। **माँथैं**–सिरपर। **लखन**–लक्षण। **खीन**–क्षीण।

११३

(दिल्ली; बीकानेर[1])

लखन बतीसा आहे भोगी। जानि न जाइ कवन गुन जोगी ॥१
सीस ललाट[1] उर चाकर ताही[2]। राजबंसी बिनु अउर[3] न आही ॥२
अउर[4] लिलार तीनि हँहि[5] रेखा। अस भगवन्त जोगी न[6] देखा ॥३
औ[7] तिरसूल आहै[8] रुदरेखा। तुरिय नहीं पा चलि कवन बिसेखा[9] ॥४
राजा देखु आन[10] बुलाई। कलजुग आउ ते उलटी[11] रीति चलाई ॥५
देखि सुबुद्ध्येहि[12] अइस मन दरसा[13], संग समोइ[14] मिलाउ।६
जिह जिह[15] मारग पग धरै[16], तिह तिह[17] सीस धराउ ॥७

पाठान्तर : बीकानेर प्रति—

१–लिलाट। २–चक्र जाही। ३–और। ४–औ। ५–हैं। ६–नहिं। ७–कर। ८–अहै,–तुरियन अहि पाँ चल किहे बिसेखा। १०–देखिये आनन। ११–कल-

---

१. इस प्रतिमें यह दो कड़वकोंमें बँटा है। प्रथम दो पंक्तियाँ ५ अन्य पंक्तियोंके साथ एक कड़वकमें और शेष पंक्तियाँ २ अन्य पंक्तियोंके साथ दूसरे कड़वकमें है। वे पंक्तियाँ हमारी दृष्टिमें प्रक्षिप्त हैं अतः परिशिष्ट १ में दी गयी हैं।

जुग उलटी। १२–सुबुद्ध्या। १३–दरस। १४–मुँह। १५–जेहि जेहि। १६–धरा। १७–तेहि तेहि।

टिप्पणी—(१) **लखन**–लक्षण। **भोगी**–भोग करनेवाला; ऐश्वर्यवान। **जानि**–जाना। **कवन**–किस। **गुन**–गुण; कारण।

(२) **चाकर**–चौड़ा। **ताही**–उसका।

(३) **लिलार**–ललाट। **हँहि**–हैं।

(४) **रुदरेखा**–रुद्राक्षकी माला। **पा**–पाव; पैदल।

(५) **आन**–लाकर। **कलजुग**–कलियुग। **ते**–इस कारण।

११४

(दिल्ली; एकडला[1]; बीकानेर)

राजैं[1] कहा चलहु[2] हौं जाऊँ। पूछउँ जाइ[3] मरम[4] वहि[5] ठाँऊँ ॥१
राजा आइ[6] जो देखी ताही। अति रुपवन्त सुलाखन[8] आही ॥२
पूँछी[9] जोग[10] कौन गुन बाढ़ा[11]। उतर न[12] देइ[13] पेम[14] दुख डाढ़ा[15] ॥३
कहहु न किह[16] कारन तुम्ह[17] जोगी[18]। किह[19] र[20] लागि तू[21] भयसि[22] वियोगी[23] ॥४
तिह[24] कह जोग न आहै सोभा। कउन[25] कुँवरि जिउ[26] किह सेंउ[27] लोभा ॥५
यह अस[28] बात न जाइ[29] कहि[30], (जनि)[31] पूछहु हम राइ[32] ।६
यह दुख कहौं न काहु सेंउ[33], कहत सुनत जरि जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) राजा। २–(बी०) चला। ३–(ए०, बी०) पूछौं जाय। ४–(बी०) मर्म। ५–(ए०) उहि; (बी०) वोहि। ६–(ए०) आये; (बी०) आय। ७–(ए०, बी०) देखै। ८–(बी०) सुलखन। ९–(ए०) पूछै; (बी०) पूछिसि। १०–(बी०) जोगु। ११–(ए०, बी०) साधा। १२–(ए०) ×। १३–(ए०) देये; (बी०) देय। १४–(ए०) जेम। १५–(ए०, बी०) दाधा। १६–(बी०) वोहि। १७–(बी०) तैं। १८–(ए०) केहि कारन तोह भयेसि जो जोगी। १९–(ए०, बी०) केहि। २०–(बी०) ×। २१–(ए०) तोह; (बी०) तैं। २२–(ए०) भयेहु; (बी०) भयेसि। २३–(ए०) बीऊगी; (बी०) बिवोगी। २४–(ए०) तोहि; (बी०) तुम्ह। २५–(ए०, बी०) कौन। २६–(बी०) जिय। २७–(ए०) जहि सौं; (बी०) केहि सें। २८–(बी०) असि। २९–(ए०) न जाये; (बी०) जाइ नहि। ३०–(बी०) कही। ३१ (दि०) जैं। ३२–(ए०) राये; (बी०) राय। ३३–(ए०) सौं।

टिप्पणी—(१) **मरम**–मर्म; भेद।

(२) **ताही**–उसको।

(३) **बाढ़ा**–बढ़ा, उत्पन्न हुआ। **डाढ़ा**–जला हुआ।

(७) **जरि**–जल।

१. इस प्रतिमें पंक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ हैं।

११५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बिरह वियोग[1] पेम दुख कहई। जो र[2] सुनै तिह[3] चेत न रहई ॥१
बकती[4] पेम रसाल कहानी। सुनत राउ[5] चित चेत भुलानी[6] ॥२
कहत बिरह जैं सुना सो रोवा। नैन सलिल (मुख)[7] मलि मलि धोवा ॥३
दन्द उदेग उचाट बिरोधा[8]। जैं र सुनाँ सो सुनत लुबोधा[10] ॥४
अउर[11] कथा वहि कहै न जानाँ। मिरगावति[12] कर[13] पेम बखाना ॥५
कुतुबन सात समुँद दधि[14], अउर[15] सलिल को जान ।६
धार सिवाती[16] मन[17] बसे[18], चातक[19] चीत[20] नदान[21] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) बिऊग; (बी०) बिवोग। २–(ए०, बी०) रे। ३–(ए०, बी०) तेहि। ४–(ए०, बी०) बकतै। ५–(ए०) राये; (बी०) राय। ६–(ए०) गवाँनी। ७–(बी०, दि०) कर। ८–(ए०, बी०) बिरूधा। ९–(ए०) जैं रे; (बी०) जो रे। १०–(ए०, बी०) लुबुधा। ११–(ए०, बी०) और। १२–(ए०, बी०) मिरगावती। १३–(बी०) का। १४–(ए०, बी०) हहिं। १५–(ए०, बी०) उदधि। १६–(ए०, बी०) सेवाती। १७–(बी०) जो मन। १८–(बी०) बसी। १९–(ए०) चातिक; (बी०) चातिग। २०–(ए०, बी०) चित। २१–(ए०) न आन; (बी०) निदान।

टिप्पणी—(१) **चेत**–होश; स्मृति।

(२) **बकती**–कहा। **रसाल**–सरस।

(७) **सिवाती**–स्वाती। **चीत**–चित्त। **नदान**–मूर्ख।

११६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुना राइ[1] बहु[2] उठा मरोहू[3]। रोवइ[4] लाग भयउ[5] मन छोहू ॥१
कहिसि देउँ[6] पदुमिनी अमोला। बहु परसाद राइ[7] मुँह[8] बोला ॥२
कहिसि राइ[9] हम अउर[10] न काजा। माँगिउँ इहै भीखि[11] तुम्ह[12] राजा ॥३
कंचनपुर कै बाट जो[13] जानै[14]। नगर ढुँढाइ कहहु तिह[15] आनै[16] ॥४
जंगम एक आह[17] हम गाऊँ। देखिसि[18] बहुत फिरा बहु ठाँऊँ[19] ॥५
राजैं[20] जन दौराए ततखन[21], जंगम आनहु धाइ[22] ।६
कंचननगर कहाँ है कहु[23] तहाँ[24], जानत कहु किह जाइ[25] ॥७

पाठान्तर–एकडला और बीकानेर प्रतियाँ–

१–(ए०) राए। २–(ए०) एंह। ३–(ए०) मुरोहू। ४–(ए०, बी०) रोवै। ५–(ए०) भएव; (बी०) भवा। ६–(ए०) देवों; (बी०) देंउ तोहि। ७–(ए०) राए। ८–(बी०) मोंह। ९–(ए०) राए; (बी०) राउ। १०–(ए०) आव; (बी०) आवै।

११-(ए०) अहै; (बी०) यहइ। १२-(ए०) तोह। १३-(ए०) कोइ। १४-(बी०) जाना। १५-(ए०) ताहि कह; (बी०) देहु तुम। १६-(बी०) आना। १७-(बी०) अहै। १८-(बी०) देखत। १९-(ए०) गाँऊ। २०-(बी०) राजा। २१-(ए०) ततखन जन दौराए। २२-(ए०) आनिन्हि राओ; (बी०) आन हँकराइ। २३-(बी०) केहि ठाऊँ। २४-(ए०) ×। २५-(ए०) बाट देखावहु जाए; (बी०) चाह कहसि यह जाइ; (दि० मार्जिन) चाह ओहर कह जाय।

टिप्पणी—(१) **मरोहू**–मरोह; करुणा; दुःख जनित ममता। **लाग**–लगा। **छोहू**–स्नेह; आत्मीयता।

(२) **पदुमिनी**–पद्मिनी जातिकी नारी। **अमोला**–अमूल्य। **परसाद**–(स० प्रसाद) अनुग्रह; प्रसन्नतापूर्वक दी गयी वस्तु।

(३) **काजा**–कार्य।

(४) **बाट**–मार्ग।

(५) **जंगम**–वसव द्वारा स्थापित लिंगायत शैव-सम्प्रदाय। यहाँ उसके माननेवाले-से तात्पर्य है।

(६) **दौराए**–दौड़ाये। **ततखन**–तत्क्षण। **आनहु**–लाओ। **धाइ**–दौड़कर।

११७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

धाइ[1] जन जंगम लइ[2] आये। कुँवर नैन जंगम मुख[3] लाये ॥१
पूछै लाग कहहु हम चाहा। कंचनपुर तुम्ह[4] देखौ[5] आहा ॥२
नगर बहुत देखेहु[6] बहु[7] गाऊँ[8]। राजस्थान[9] औ आनौं[10] ठाऊँ ॥३
कंचननगर उहो[11] हम देखा। मारग कठिन न ओकै[12] लेखा ॥४
परबत[13] समुन्द अगम[14] बन भूता। मानुस भेस[15] जो राकस दूता[16] ॥५
भूत परेत[17] भुअंगम, मारग पैंग[18] जैं तर[19] जाइ ।६
अति[20] दुख बहुत[21] पन्थ महँ दूगम[22], तो रे[23] कंचनपुर जाइ[24] ॥७

पाठान्तर–एकडला और बीकानेर प्रतियाँ–

१-(ए०, बी०) धाये। २-(ए०, बी०) लै। ३-(ए०) मुहँ। ४-(ए०) तोह। ५-(ए०,बी०) देखेहु। ६-(ए०) देखौं। ७-(बी०) बहु देखेउँ। ८-(बी०) ठाँऊँ। ९-(ए०,बी०) राजअस्थान। १०-(ए०) अनवन; (बी०) अनिर्वान। ११-(ए०) वहै; (बी०) वह। १२-(ए०) आव, (बी०) आँव। १३-(बी०) सायर। १४-(बी०) अम। १५-(बी०, ए०) भखहिं। १६-(ए०) धूता। १७-(बी०) परीत। १८-(बी०, ए०) पैग। १९-(ए०) न हीठै; (बी०) न हेटै। २०-(ए०) एत। २१-(ए०) अगम। २२-(ए०,बी) ×। २३-(ए०) तेहि; (बी०) तौ। २४-(ए०) राइ।

टिप्पणी—(३) **आनौं**–अन्यान्य।

(४) **उहो**–वह भी। **ओकै**–उसका। **लेखा**–गणना, गिनती।

(५) **परबत**–पर्वत। **समुन्द**–समुद्र।

(६) **भुअंगम**–भुजंगम; सर्प।

(७) **दूगम**–दुर्गम।

११८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूत[1] भुअंगम हौं न डरावौं[2]। कया होइ[3] जिउ तो भरमाओं[4] ॥१
राकस भूत जो र मँहि[5] खाही। तो मारग सिध नीक[6] लगाही ॥२
बस्ती[7] बन प्रीतम बिनु लागें[8]। भाव पन्थ बन रहे तिह आगे[9] ॥३
प्रीतम लाग[10] बहुत[11] दुख सहई[12]। दुख के मिले तो र[13] सुख रहई[14] ॥४
दस नख कुँवर दसन[15] मँह[16] मेला। उहै[17] पन्थ दिखराउ[18] दुहेला ॥५
वह[19] लग[20] जीउ सँकलपेउँ आपन[21], जो भावइ सो होइ[22]। ६
जो जिउ दुख ना दीजइ काहू[23], ताकर[24] कौन मरोह[25] ॥७

पाठान्तर–एकडला और बीकानेर प्रतियाँ–

१–(ए०) धूत; (बी०) भूत। २–(ए०, बी०) डरॉऊँ। ३–(बी०) होय। ४–(ए०) भरमाँऊ। ५–(ए० बी०) रे मोहिं। ६–(ए०) सुध नेग; (बी०) सिर नेग। ७–(ए०) बासते; (बी०) बसतै। ८–(ए०) लागी। ९–(ए०) भाव पंथ बिन रहै न मागी; (बी०) भव पंथ रहै नाव न लागे। १०–(ए०) लागि। ११–(ए०, बी०) जोरि। १२–(बी०) प्रीतम पंथ सहा होई। १३–(ए०) रे; (बी०) ×। १४–(ए०) लहई; (बी०) होई। १५–(बी०) दसौं। १६–(ए०) मुँह; (बी०) मुख। १७–(ए०) वोहै; (बी०) वहइ। १८–(ए०) देखराउ; (बी०) दिखावहु। १९–(ए०) तेहिं; (बी०) वोहि। २०–(ए०,बी०) लगि। २१–(ए०) ×। २२–(ए०,बी०) जो भावे सो होउ। २३–(ए०) जो जिउ दीजा दखि न; (बी०) पोजि दखिना दै पै कहूँ। २४–(बी०) कह ताकर। २५–(ए०,बी०) मुरोउ।

टिप्पणी—(१)**भरमाओं**–भ्रमित होऊँ।

(२) **मँहि**–मुझको। **खाही**–खायेगा। **मारक सिध**–सिद्धि-मार्ग। **नीक**–अच्छा; भला।

(३) **बस्ती**–नगर।

(५) **उहै**–वही। **दिखराउ**–दिखलाओ। **दुहेला**–कठिनकार्य; कष्ट साध्य; दुखपूर्ण। वासुदेव शरण अग्रवालने इसकी तुलना सुखकेलि> सुहेल्लि (देशीनाम माला ८।३६; पाइसद्द महार्णव ११।६५) से करके इसके मूल में दुःखकेलि-(दुःख केलि > दुहेल्लि) अनुमान किया है और अर्थ कठिन खेल, कठिन क्रीड़ा बताया है।

(६) **सँकलपेउँ**–संकल्प कर दिया। **आपन**–अपना। **भावइ**–अच्छा लगे।

११९

(दिल्ली; एकडला: बीकानेर)

राजा यहि[1] रे चलै न[2] देई। बहु समुझाउ[3] कान न सेई[4] ॥१
राइ[5] न घट मँह आहे जीऊ। बिनु[6] जिउ[7] डर भौ कित कर[8] सीऊ ॥२
जीउ मिरगावति हरि लै गयी। बिनु जीउ कया रकत बिनु[9] भयी ॥३
बिसमौ लाज हरख नहिं रहा। पेम आइ[10] चित चिन्ता[11] दहा[12] ॥४
दौरि जो[13] जंगम पाँयहि[14] लागा। हम कहिं[15] पंथ दिखाउ[16] सुभागा[17] ॥५
पेम सुरा जिन्ह अँचयेउ[18], तिहाँ[19] कुछौ न[20] सुधि।६
चित चिन्ता लज्या न भौ[21], बिसमौ हरख न बुधि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) एहि: (बी०) वोहि। २–(ए०) नहिं; (बी०) ना। ३–(ए०) समुझावो; (बी०) समुझान। ४–(ए०) मान नहिं सेई; (बी०) न मानै सेई। ५–(ए०) राए; (बी०) राय। ६–(बी०) ×। ७–(ए०) जिअ। ८–(बी०) काकर। ९–(ए०) सूनि हम। १०–(ए०) आए; (बी०) आय। ११–(बी०) चंपित। १२–(ए०, बी०) गहा। १३–(ए०, बी०) ×। १४–(बी०) पाँइ। १५–(बी०) बहई। १६–(ए०, बी०) देखाव। १७–(बी०) सभागा; (ए०) सभाखा। १८–(बी०) जिन अँचइय। १९–(बी०) तिन्हैं। २०–(बी०) ना। २१–(बी०) ना चित चिन्त न लाज भौ।

टिप्पणी—(१) **सेई**–वह।

(२) **बिसमौ**–विस्मय।

(३) **दौरि**–दौड़कर।

(५) **अँचयेउ**–आचमन किया; पिया। **तिहाँ**–उसको। **कुछौ**–कुछ भी।

(७) **भौ**–भय।

१२०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

जंगम मोह मया मन आई। मगु देखावइ[1] कँह लेजाई ॥१
जंगम साथ लिहा यह[2] लाई[3]। सायर नियर[4] ठाढ़ भा[5] जाई ॥२
कंचननगर कै[6] इहवै[7] बाटा। यहि र[8] समुन्द कै[9] इहवै[10] घाटा ॥३
दई[11] विधाता सँवरत[12] जाहु। तो सिध पावहु जो न डराहु[13] ॥४
सायर तीर अहा एक डेंगा[14]। वहि चढ़ा आपुन[15] घर रेंगा ॥५
कहिया प्रीतम पेखिहौं, दुहु लोयन विहसन्त[16]।६
कंज सरोवर नीर जिमि[17], सर पंकहि[18] पसरन्त[19] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) देखावै; (बी०) दिखावै। २–(ए०) लिहा ओहि; (बी०) लीन्हिसि। ३–(बी०) लाइ। ४–(ए०, बी०) तीर। ५–(बी०) भवा। ६–(ए०) क; (बी०) कर। ७–(ए०) एहइ; (बी०) यह है। ८–(ए०, बी०) रे। ९–(बी०) कर। १०–(ए०) एहवै; (बी०) यहवै। ११–(ए०) दैअ; (बी०) दइव। १२–(ए०, बी०) सौंरत। १३–(ए०, बी०) डराहू। १४–(बी०) डोंगा। १५–(ए०) एह रे चढाए आपन; (बी०) बोहि चढ़ाय आपु। १६–(बी०) बिहसन्ति। १७–(ए०) कंच सरेवा तीर जेव; (बी०) कंच सरवर निरज्यौं। १८–(ए०) सर बंगह; (बी०) सरब आगे। १९–(बी०) पसरन्ति।

टिप्पणी—(१) **मगु**–मार्ग।

(२) **लिहा**–लिया। **सायर**–सागर। **नियर**–निकट। **ठाढ**–खड़ा। **भा**–हुआ।

(३) **इहवै**–यही। **बाटा**–बाट, मार्ग। **समुन्द**–समुद्र। **घाटा**–घाट।

(४) **सँवरत**–स्मरण करते हुए।

(५) **डेंगा**–नाव। **रेंगा** (क्रि० रेंगना) गया।

(६) **कहिया**–कब। **पेखिहौं**–देखूँगा।

(७) **कंज**–कमल। **पंकहि**–कीचड़में। **पसरन्त**–फैलता है।

१२१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बोहित बहा चला वह जाई[1]। परा जाइ[2] जिंह[3] लहर[4] उठाई ॥१
लहर आइ यह[5] देखत भूला। जानु[6] हिलोरें[7] पर[8] सेंउ[9] झूला ॥२
तर उपर आवइ[10] औ जाई[11]। बोहित[12] चारेउ[13] दिसि बउराई[14] ॥३
कबहूँ पुरुब पछिउँ[15] कँह आवइ[16]। कबहूँ उतर दखिन कहँ धावइ[17] ॥४
हौं अपने[18] जियैं डर न[19] डेराऊँ। जो र[20] मरौं तो वहि न[21] मिलाऊँ ॥५
कुतुबन प्रीतम अगम भुइं, तिह वै[22] बसहि निचिंत।६
हम बीलोचन[23] डार जिमि, हियें खुरकहि[24] नित ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) बोहितो बहुरि चाह वह पाई। २–(ए०) जाए; (बी०) जाय। ३–(ए०) जह; (बी०) जहाँ। ४–(ए०, बी०) लहरि। ५–(ए०) लहरि आये अस; (बी०) लहरि अडावहिं। ६–(बी०) जानौ। ७–(ए०, बी०) हिहोलैं। ८–(बी०) बन। ९–(ए०, बी०) सौं। १०–(ए०, बी०) धावै। ११–(बी०) औमाई। १२–बोहिथ। १३–(ए०) चारों; (बी०) चारिहुँ। १४–(ए०, बी०) बौराई। १५–(ए०) पछूँ; (बी०) पछिम। १६–(बी०) कहुँ धावै। १७–(बी०) फिरि आवै। १८–(ए०) जिअ; (बी०) जिव कै। १९–(ए०) अव। २०–(ए०, बी०)

रे। २१-(ए०) उहि, (बी०) वोहि। २२-(ए०) उए उहँ, (बी०) वै उहँ। २३-(ए०) वैलोचन; (बी०) बए लोचन। २४-(ए०) खुरुकहिं; (बी०) खरकहिं।

टिप्पणी—(१) **बोहित**—नाव।

(३) **तर**—नीचे।

(४) **पछिउँ**—पच्छिम।

(६) **निचिंत**—निश्चिन्त।

(७) **बीलोचन**—वैरोचन; नन्द नामक राजाका अमात्य। **खुरकहिं**—खटकता है। यह पंक्ति जैन साहित्यमें वर्णित इस कथाकी ओर संकेत करती है—नन्द नामक राजा वैरोचन नामक एक अमात्य था। वैरोचनकी पत्नी पद्मिनी जातिकी थी जिसके कारण उसके वस्त्र पद्म गन्धसे सुवासित रहते थे। एक दिन राजा नगर-भ्रमणके लिए निकला तो एक जगह सूखते हुए धुले कपड़ों-से उसे पद्मकी गन्ध मिली। धोबीसे पूछने पर ज्ञात हुआ कि वे वस्त्र वैरोचन-की पत्नीके हैं। राजा उससे मिलनेको उत्सुक हो उठा। उसने किसी बहाने वैरोचनको बाहर भेज दिया और स्वयं वैरोचनके घर पहुँचकर उसकी पत्नीसे काम-प्रस्ताव किया। स्त्रीने राजाको समझाया कि वह उसके पिताके समान है अतः इस प्रकारके भाव उचित नहीं है। राजाकी बुद्धिमें बात आ गयी और वह लौट गया। जल्दीमें वह अपने जूते वैरोचनके घर ही छोड़ आया।

जब वैरोचन लौटकर आया तो द्वार पर उसे राजाके जूते दिखाई पड़े। वह बात ताड़ गया और राजाके वध करनेका निश्चय किया। एक दिन वह राजाको आखेटके बहाने नगरसे दूर ले गया और जब वह थककर पेड़के नीचे सो गया तो उसका वध कर डाला। और नगर लौटकर प्रसिद्ध कर दिया कि जंगलमें राजाको जन्तुओंने खा डाला।

जिस समय वैरोचन राजाकी हत्या कर रहा था उसी समय पासके पेड़की डालसे कुछ खटका हुआ। वैरोचनको सन्देह हो गया कि किसीने उसे कुकृत्य करते हुए देख लिया है। और यह बात उसे सदैव खटकती रही। वस्तुतः उस समय राजकीय उपवनका माली वहाँ काम कर रहा था। उसने अमात्यकी कुचेष्टाएँ भाँप लीं और छिपकर एक पेड़पर जा बैठा। उसके पेड़की डाली खटक उठी। इससे माली भयभीत हुआ और नगर छोड़कर भाग गया। कुछ दिनों बाद जब वह घर लौटकर आया तो उसकी पत्नीने उससे गायब रहनेका कारण पूछा। एकान्तमें मालीने उसे सारी बात बता दी। राजाके गुप्तचरोंने यह बात सुन ली और नये राजाको इसकी सूचना दे दी। राजाने वैरोचनको बुला भेजा। जब उसे ज्ञात हो गया कि अब उसके प्राण नहीं बचेंगे तो उसने अपने पुत्र द्वारा अपनी हत्या करा ली। (हिन्दी अनुशीलन, वर्ष १०, अंक २ में माताप्रसाद गुप्त लिखित नंद-बतीसी शीर्षक लेख)

१२२

(दिल्ली; बीकानेर)

एक माँस लहरहिं[1] मँह रहा। भँवइ लागि दइ[2] सेउ कहा ॥१
बिबि कर वन्दों[3] तोसेंउ[4] माँगों। मोंख देहु हों लहरहिं[5] खाँगों ॥२
लहरैं नरिन्दें रहीं[6] गँभीरा। दइय मया करि[7] पायसु[8] तीरा ॥३
गिरि परवत एक[9] देखिसि[10] तहाँ। दोइ[11] जन आइ[12] जुहारे[13] जहाँ ॥४
पूछसि[14] कवन रहहु तुम्ह[15] कहाँ। यह ठाँ और न कोई जहाँ[16] ॥५
जिंह[17] र बाट तुम[18] आयउ भूली[19], हम[20] आये तिंह[21] बाट।६
परवत देख तीर हम जाना, इहाँ न आहै घाट ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–लहरि। २–बिनवै लाग दइय। ३–जोर। ४–दइय सै। ५–लहरिहु। ६–लहरि नरिंद उठी। ७–पाव किहि। ८–पाइसि। ९–×। १०–दुइ। ११–आये। १२–जोहारे। १३–कहाँ। १४–पूछी। १५–तुम। १६–तेहि ठाँऊँ रहै न मानुस जहाँ। १७–जेहि रे। १८–तुम। १९–आयेहु भूले। २०–हमहु। २१–तेहि।

टिप्पणी—(१) **भँवइ**–चक्कर लगाते।
(२) **बिबि**–दोनों। **मोंख**–मोक्ष।
(३) **मया**–दया।

१२३

(दिल्ली; एकडला)

बोहित बहुत हमरि संग आवा[1]। बूड़े सबै खोज न पावा[2] ॥१
अउर[3] एक जो अचम्भो देखा। इहाँ भुअँगम बिपिरित पेखा ॥२
एक एक मानुस दिन दिन लेई। लेतै[4] खाइ न हाड़ो देई ॥३
माँनुस बहुतै बोहित आहे[5]। लइ[6] कै खायसि हम दोइ[7] रहे ॥४
अबँहि क घरी हमहि लै जायसि[8]। लइकै[9] फारि तोरि कै खायसि[10] ॥५
निघटै बात न पाइ उन्हकै[11], ततखन बिसँहर आइ[12]।६
ईंह[13] मँह एक[14] लेतसि[15] धरिकै[16], लै अपना कहँ जाइ[17] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–हमरे संग आये। २–नहि पाये। ३–और। ४–लेइ कै। ५–बोहित म अहे। ६–लेइ। ७–दुइ। ८–अबही घरी हमें ले जाइह। ९–लै के फारि। १०–खाइह। ११–उनकी। १२–आए। १३–दुहुँ। १४–एकै। १५–लीतिमि। १६–×। १७–लै इहवाँ हुते जाए।

टिप्पणी—(२) **भुअंगम**–सर्प। **बिपरित**–विपरीत; असाधारण (३) **लेई**–लेता है। **हाड़ो**–हाड़ भी; हड्डी भी। **देई**–देता है; छोड़ता है।

(५) **अबहिं**—इस। **घरी**—घड़ी। **फारि**—फाड़। **तोरि**—तोड़।

(६) **निघटै**—समाप्त। **बिसँहर**—विषधर; सर्प।

(७) **धरिके**—पकड़कर। **कहँ**—के पास।

१२४

(दिल्ली; एकडला)

पुनि[1] जो उहै भुअंगम आवा। दुसरहि लइगा[2] खोज न पावा ॥१
देखि कुँवर यहि रोवइ[3] लागा। करम हमार बाउ[4] हम भागा ॥२
संगी साथ न कोऊ[5] कीन्हेउँ[6]। बनखँड सायर मँह धँस लीन्हेउँ[7] ॥३
हम डर अपनै जिय क न आही। को सुधि कहइ हमरेउ[8] ताही ॥४
जो रे भुअंगम हम कहँ खाई। मिरगावति सेउँ[9] को कहि[10] जाई ॥५
यह चिन्ता चित सालै मोरे[11], वह न जान[12] हम सुख।६
को र[13] सुनै किह पठवउँ[14] यह[15], को र[16] कहै हम दुख ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–फुनि। २–दोसरेहि लैगा। ३–अेह रोवै। ४–बाँव। ५–कोई। ६–कीन्हेव। ७–दीन्हेव। ८–कहै हमारी। ९–मिरगावती सों। १०–कह। ११–मोरेउ। १२–उह जानै। १३–रे। १४- केहि पठवौ। १५–×। १६–रे।

टिप्पणी—(२) **करम**–कर्म, भाग्य। **हमार**–मेरा। **बाउ**–बाम। **भागा**–भाग्य।

(३) **धँस**–घुस पैठ।

(६) **सालै**–(क्रि० सालना) काँटेकी तरह चुभना।

१२५

(दिल्ली; एकडला)

दई[1] बिधाता तूँ पै आही। तोहि छाड़ि कै बिनवौ काही ॥१
तोहि छाड़ि जो औरहि धावइ[2]। करमहीन मग[3] जनम न पावइ[4] ॥२
फुन र[5] भुअंगम आयउ ओही[6]। घन गज घटा उठे लग तोही[7] ॥३
आयउ[8] मीचु जाइ नहिं फेरी। कुँवर आस छाड़ी जिय केरी ॥४
जो पै आउ घटी हुत मोरी। जो घर मरतेउँ[9] लागत खोरी ॥५
यहि[10] अनन्द जिय[11] मोरैं वारे[12], मुयेउ पेम उहि लागि।६
जो पै काल घट न हुत मोरा, ना र उबरतेउ[13] भागि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–दैअ। २–मगु धावै। ३–मगु। ४–पावै। ५–बहुरि। ६–आए उही। ७–मोही। ८–आई। ९–मरतेंव। १०–ओहि। ११–जिअ। १२–नाहि उबरतेव।

टिप्पणी—(१) **विनवौ**–विनय करूँ।

(३) **ओही**–वही।

(४) **मीचु**–मृत्यु । **फेरी**–लौटाई । **आस**–आशा । **छाड़ी**–छोड़ी । **केरी**–का ।
(५) **आउ**–आयु ।
(६) **बारे**–लेकिन । **मुयेउ**–मरा । **उहि**–उसके । **लागि**–के लिए ।
(७) **काल**–मृत्यु । **घट**–घटा; कम हुआ । **ना**–नहीं । **उबरतेउ**–उद्धार पाता ।

१२६

(दिल्ली; एकडला)

फुनि जो सरप नियर वहि[१] आवा । राजकुँवर कँह चाहसि[२] खावा ॥१
दई[३] क मया कुँवर कँह आई । दूसर[४] भुअंगम दीन्हि दिखाई ॥२
दूनो[५] आपुन[६] मँह अस लरे । भा अकूत[७] सायर मँह परे ॥३
दोऊ लहर परे पराई[८] । लहर[९] साथ बोहित[१०] वहिराई[११] ॥४
बोहित[१२] आइ तीर होइ[१३] परा । कुसल भई[१४] कुँवर उबरा ॥५
रहसा पायउ[१५] तीर देखि कै, घट मँह आई साँस ।६
जो उबरेउ[१६] यह काल जम सेउँ[१७], अहै[१८] मिले कै[१९] आस ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—
१–मैं । २–चाहै । ३–दैअ । ४–दोसर । ५–दोनों । ६–आपु । ७–भै अकूति । ८–दुहुँ क परत लहरि बड़ि आई । ९–लहरि । १०–बोहिथ । ११–विहराई । १२–बोहिथ । १३–होए । १४–भएेव । १५–पाइसि । १६–उबरेव । १७–सों । १८–आहि । १९–की ।

टिप्पणी—(१) **सरप**–सर्प । **चाहसि**–चाहा ।
(३) **दूनों**–दोनों । **अस**–ऐसा । **लरे**–लड़े । **अकूत**-पाठ अकूट है या अकूत यह स्वतः निश्चय करना कठिन है। किन्तु पदमावत-(बाजन बाजहिं होइ अकूता । दुओ कन्त लै चाहहिं सूता ॥ ४९५।५) और चितरावली (गेरुआ वस्त्र चढ़ाइ विभूता । शिव शिव बोलहिं उठै अकूता ॥ २७०।३)से निश्चित हो जाता है कि शब्द अकूत है । वासुदेव शरण अग्रवालने इसका अर्थ दिया है दिव्य ध्वनि । किन्तु यह अनुमान मात्र और कल्पना जनित है । इसका अर्थ है—शोरगुल; हल्ला; असाधारण ध्वनि ।
(४) **पराई**–भाग । **बहिराई**–बाहर हुई । **उबरा**–उद्धार हुआ ।
(६) **रहसा**–हर्षित हुआ । **घट**–शरीर ।
(७) **जम**–यम । **अहै**–है । **मिले कै**–मिलनेका । **आस**–आशा ।

१२७

(दिल्ली; एकडला)

बोहित[१] छाड़ि चला[२] जो[३] जाई । देखिसि[४] एक अँवराउँ सुहाई[५] ॥१
कहसि पैठि देखउँ[६] अँवराई । वइठों जहाँ[७] निमिख एक जाई[८] ॥२
आइ बैठि[९] जो देखी काहा[१०] । वहु फुलवारि अमिय फर आहा[११] ॥३

जानहु यह कबिलास कै[१२] बारी । कै र[१३] इन्द्र आपु लागि[१४] सँवारी ॥४
फिरि कै नगर क पूछउँ[१५] नाऊँ । कउन नाउँ[१६] आहै यह[१७] गाँऊँ ॥५
फुनि जो देखसि फिरि कै चलि कै[१८], भवन[१९] अपूरव[२०] एक ।६
कहिसि जाइ यहि[२१] भीतर देखउँ[२२], दहुँ का आहै नेक ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–बोहिथ । २–चल । ३–× । ४–देखै । ५–अवरांव सोहाई । ६–देखौं । ६–बैठौं जाए । ८–छाई । ९–आए बैठ । १०–देखै अँबराई । ११–आही । १२–क । १३–रे । १४–लगि । १५–पूछौं । १६–कौन नाव । १७–एहि । १८–× । १९–भौन । २०–अपुरुब । २१–जाए एहि । २२–देखौं ।

टिप्पणी—(१) अँबराउँ–(सं० आम्राराम) आमका बगीचा ।
(२) अँबराइ–(सं० आम्राराम) आमका बगीचा । **बइठौं**–बैठौं ।
(३) **कहा**–क्या । **अमिय**–अमृत । **फर**–फल ।
(४) **कबिलास**–कैलास; स्वर्ग । **बारी**–बाटिका; बगीचा । **लागि**–के लिए; निमित्त ।
(५) **फिरिकै**–घूमकर ।
(७) **नेक**–अच्छा ।

१२८

(दिल्ली; एकडला)

पँवरि नाँघि जो भीतर आवा । कछु आरो मनुसै कै पावा ॥१
आगैं आइ[१] जो देखी भोला । कुँवरि सेज एक बैठि अमोला ॥२
फुनि[२] जो[३] अचम्भो देखी काहा । बदन चाँद जनु[४] उदिनल आहा ॥३
एकसर चाँद कवन[५] गुन आही । नखत न आवइ[६] बारँहि ताही ॥४
कँवल अमोलक इकसर काहा । भँवर आइ कै कीन्ह न चाहा[७] ॥५
अमिय सरँ अध कँवल गहि, जिमि पावस घन मेह ।६
अबला सरल[८] जो सलिल भई[९], किमि कारन किंह एह[१०] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–जाइ । २–पेखै । ३–बहुरि । ३–× । ४-जनि । ५–कौन । ६–उऐ न । ७–भौंर न आये काह नहि चाहा । ८–सलिल । ९–भै । १०–कह एह ।

टिप्पणी—**पँवरि**–ड्योढ़ी; प्रवेश द्वार । **नाँघि**–लाँघकर; पार करके । **आरो**–आहट ।
(३) **अचम्भो**–आश्चर्य । **बदन**–मुख । **उदिनल**–उदित ।
(४) **एकसर**–अकेला । **कवन**–किस । **गुन**–गुण; कारण । **नखत**–नक्षत्र; तारे । **बारहिं**–निकट ।
(५) **अमोलक**–अमूल्य ।
(७) **किमि**–किस । **किंह**–क्यों । **एह**–यहाँ ।

१२९

(दिल्ली)

सूर पूछ ससि किह गुन रोवा । गहन लाग कै र कछु खोवा ॥१
खोयउँ कछु न हौं जिय खोई । लागहि गहन कहसि मैं सोई ॥२
गहन लाग फुनि छाड़ी जानाँ । यह राकस कैसहिं न मानाँ ॥३
हमकहँ दई लिखा सो होई । तौं र चाह फुनि आयहु सोई ॥४
राकस कँह हौं दुख ना दीन्ही । मार्टी तैं मोह न कीन्हीं ॥५
तौं र जाहु यहि ठाँउ जरी सेंउ, मोहि आवइ तुर मोह ।६
केदा देख रूप तरुनापा, हम आवइ जिय मोह ॥७

टिप्पणी—(१) सूर—सूर्य । गहन—ग्रहण ।
(२) राकस—राक्षस ।
(५) मार्टी—मिट्टी; शरीर ।
(६) जरी—जल्दी । मोहि—मुझे । तुर—(तोर) तुम्हारा ।
(७) तरुनापा—तरुणाई ।

१३०

(दिल्ली; एकडला)

तूँ र तिरि आछहि[१] यहि[२] ठाऊँ । छाड़ों तोहि भागि कँह[३] जाऊँ ॥१
यह र[४] बात पूछउँ[५] कहु[६] मोही । राकस कहुँ[७] कस दीठि न[८] तोही ॥२
तोरहि पितहि नाँउ[९] है काहा । नगर कवन तहाँ पति आहा[१०] ॥३
देवराइ पति नगर सुबुद्ध्या[११] । राघोवंस जो आहै अजोध्या[१२] ॥४
पिता हमार हौं र तिह[१३] धिया । नाँव हमार रुपमनि उन्ह[१४] किया ॥५
राकस एक रहत है पंथा[१५], बरिस देवस एक लेइ[१६] ।६
यहि र[१७] बरिस ओसरी[१८] हम आई, तो उन्ह हम कँह देइ[१९] ॥७

पाठान्तर —एकडला प्रति—
१—आछसि । २—एहि । ३—के । ४—रे । ५—पूछौं । ६—× । ७—कह । ८—दीन्हि नहि । ९—नाव । १०—नगर कौन अेहको पति आहा । ११—सुबुधेया । १२—आह अजोधेया । १३—रे उन्ह । १४—नाँव मोर उन्ह रुपिमनि । १५—रहत यहि ठाईं । १६—लेए । १७—एहि रे । १८—उसरी । १९—देए ।

टिप्पणी—(१) तिरि—(त्रिया) स्त्री । आछहि—हो । छाड़ों—छोड़ूँ ।
(४) देवराइ—देवराय । पति नगर—नगर पति । राघोबंस—राघव वंश ।
(५) धिया—पुत्री । नाँव—नाम ।
(७) ओसरी—बारी ।

१३१

(दिल्ली; एकडला)

जो तिह[1] बाट सो मोरिउ आई। तोहि छाड़ि मोहि जाइ न जाई ॥१
तोहि छाड़ि कै जो हौं जाओं[2]। बरिस लाख दस[3] हौं न जियाओं[4] ॥२
मारौं आजु बिधाँसों सोई। राकस छाड़ि[5] जो भोकस होई ॥३
कुँवर बात निरभौ अनुसारी। खतरी[6] कुँवर[7] कहा मन नारी ॥४
कुँवरि कहा जो जातसि[8] नाहीं। बैठु आइ[9] मोरी परछाहीं ॥५
कहसि[10] औंधि अहै मोहि[11] जब[12] सेउँ[13], बैठउँ[14] तिरी न पास।६
औंधि बचा पतिपारौं, जब लगि है तन साँस ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–तोरी। २–जाऊँ। ३–एक। ४–जिअउँ। ५–छोड़ि। ६–खतिरि। ७–कोइ। ८–जातेसि। ९–आए। १०–कहिंसि। ११–हम आहे। १२–१३–×। १४–बैठौं।

टिप्पणी—(१) तिह–तुम्हारी। **मोरिउ**–मेरी भी।

(३) बिधाँ सों–विधिसे, तरकीबसे; अथवा **बिधाँसों**–विध्वंस करूँ। **सोई**–उसे। भोकस–(सं० पुल्कस > पुक्कस > पोकस > भोकस) भूत।

(४) **निरभौ**–निर्भय होकर। **अनुसारी**–कही। **खतरी**–क्षत्रिय।

(५) **जातसि**–जाते हो। **परछाहीं**–छाया; यह निकट से तात्पर्य है।

(६) **औंधि**–प्रतिज्ञा। **तिरी**–स्त्री।

(७) **बचा**–वचन। **पतिपारौं**–(सं० प्रतिपालन) रक्षण; पालन।

१३२

(दिल्ली; एकडला)

बात कहत हा[1] सो न घटानी[2]। वह[3] आयउ जाकहि[4] यह आनी ॥१
सात सीस चउदह[5] भूदण्डा। जनु[6] रावन आयउ[7] बरिवण्डा ॥२
रुपमनि[8] कहि यह राकस सोई। लेइ आउ घबरि[9] कै रोई ॥३
कुँवर कहा सरन गहु[10] मोरी। हौं मारौं यहि मस्तक तोरी ॥४
कुँवर फिराइ चक्र सेउँ[11] मारा। सीस टूटि एक[12] बहुरि सँभारा ॥५
सात सीस सों आयउ बिपरित[13], उन्हें र[14] हनेउ सत बार।६
जनु सुमेरु गिरि फाटेउ[15] पिरथीं[16], खरभर परेउ अकार[17] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–ए। २–खुरानी। ३–उवह। ४–जेहि कह। ५–चौदह। ६–जनि। ७–अहेउ। ८–रुपिमिनि। ९–लए आवा गहबरिके रोई; (दि० मार्जिन)–ले उसास हिए भर रोई। १०–कहा तू सरनहि। ११–सौं। १२–फुनि। १३–×। १४–ए रे। १५–फूटेव। १६–×। १७–(दि० मार्जिन) हकार।

टिप्पणी—(१) **घटानी**–समाप्त हुई ।

(२) **चउदह**–चौदह । **भूदण्डा**-भूदण्ड; हाथ । **रावन**–रावण । **बखिण्डा**–(अप० बलिवण्ड; सं० वलिवृन्द) बलवान ।

(३) **घबरि**–घबड़ा ।

(४) **सरन**–शरण । **गहु**–पकड़ो ।

(५) **फिराइ**–घुमाकर । **बहुरि**–पुनः ।

(६) **हनेउ**–हनन किया; मारा । **सत**–सात ।

(७) **फाटेउ**–फाड़ा । **पिरथीं**–पृथ्वी । **खरभर**–हल चल । **परेउ**–पड़ा । **अकार**–आकाश ।

१३३

(दिल्ली; एकडला)

कुँवरि देखि वह गइ बिसँभारा[१] । जानहु फूल मुरझि[२] गै[३] मारा ॥१
कुँवर सींचि कै पानि जियाई[४] । कहिसि देखु[५] मारेउँ सकताई[६] ॥२
चाँद गहत मारेउँ (भल[७]) जानाँ । नखत मोंति उर तिय कँह[८] आनाँ ॥३
बहुतै मोंति निछावरि कीनसि[९] । राकस मारि हम र जिउ[१०] दीनसि[११] ॥४
जस दंगवै भीम परगाही[१२] । वै[१३] साहस तैं[१४] अउर[१५] निवाही ॥५
तू हम बीर मोह जो पायसु[१६], अब मानों गुन सोइ[१७] ।६
हौं बलि बलि बल[१८] तिहकैं[१९], जिह[२०] पीर पराई होइ[२१] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति–

१–बेसँभारा । २–मुरुझ । ३–गिय । ४–जगाई । ५–कहेसि देखु । ६–सुकुताई । ७–फुर । ८–नेकँह । ९–कीतिसि । १०–हमहिं । ११–दीतिसि । १२–परिगाही; (दि० मार्जिन) जैस भीम कीचक परगाही । १३–तस । १४–× । १५–एंउर । १६–जस पाएस । १७–सोए । १८–× । १९–तोहि कह । २०–जेहि । २१–होए ।

टिप्पणी–(१) **बिसँभारा**–बेहोश; बदहवास । **गै**–गया ।

(२) **सकताई**–शक्तिवाला; बलवान ।

(४) **दीनसि**–दिया ।

(५) **दंगवै**–पुरपट्टन (सम्भवतः अणहिलपट्टन) का राजा । **भीम**–पाँच पाण्डवोंमें-से एक । **परगाही**–(धा० परिगाहना) परिग्रह बनाना; अपना कुटुम्बी बना लेना; सहायता करना । इस पंक्तिका संकेत उस लोक कथाकी ओर है, जो इस प्रकार है—एक समय दुर्वासा ऋषि इन्द्रलोक पहुँचे । उनके सम्मानमें इन्द्रने तिलोत्तमा नामक अप्सराके नृत्यका आयोजन किया । नृत्य करते समय तिलोत्तमाको ऋषि नृत्य-संगीतके प्रति अरसिक जान पड़े । अतः उसने नृत्य बन्द कर दिया और इन्द्रसे बिदा माँगने लगी । यह देखकर दुर्वासा ऋषि अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने शाप दिया कि पृथ्वीपर अवतरित हो

कर दिनमें घोड़ी और रातमें नारीका रूप धारण करे। शाप सुनकर तिलोत्तमा अनुनय विनय करने लगी। तब ऋषिने शाप मोचनकी व्यवस्था दी।

शापवश तिलोत्तमा पृथ्वीपर घोड़ीके रूपमें अवतरित हुई और उसे पुरपत्तनके राजा दंगवैने अपने पास रख लिया। नारदको अपनी विचरण-यात्रामें इस बिचित्र घोड़ीकी बात मालूम हुई और उन्होंने जाकर यह बात द्वारिका नरेश कृष्णसे कही। कृष्णने तत्काल दंगवैसे उस घोड़ीकी माँग की। दंगवैने जब देनेसे इनकार किया तो कृष्णने उसपर आक्रमण कर दिया। दंगवैने जाकर सुभद्रासे फरियाद की। सुभद्राने उसे भीमके पास भेज दिया। वे ही न्यायका पक्ष लेकर कृष्णका सामना करनेमें समर्थ थे।

दंगवै भीमकी शरणमें गया। भीमने उसे अभयदान दिया। फल स्वरूप कृष्ण और भीममें घोर युद्ध हुआ। युद्ध हो ही रहा था कि दुर्वासा ऋषिकी व्यवस्थाके अनुसार अप्सरा शापमुक्त होकर इन्द्रलोकको चली गयी।

वासुदेव शरण अग्रवालकी धारणा है कि इस लोककथाके मूलमें ऐतिहासिक घटना है। उनका अनुमान है कि इस लोककथाके भीम गुजरात नरेश चालुक्य भीम द्वितीय हैं। उनकी ख्याति भोले भीमके नामसे है। दंगवैसे तात्पर्य चित्तौर नरेशसे है जिसकी सहायता भीमने की थी। भीमकी राजधानी अणहिल्पट्टनको दंगवैकी उक्त कथाका लीलास्थल बनाना इस बातका संकेत करता है कि इस लोककथाके मूलमें ऐतिहासिक तथ्य है। उस ऐतिहासिक तथ्यको भीम और कृष्णके साथ जोड़ दिया गया है।

दंगवै भीमकी इस कथाके आधारपर दंगवै पुराण और डंगवपर्व नामक काव्य लिखे गये हैं। और पदमावतमें जायसीमें इसकी चर्चा कई स्थलोंपर की है। (२६१।२; ५०८।९; ५२६।८; ६२९।६)। कुतुबनके उल्लेखसे ऐसा जान पड़ता है कि इन रचनाओंसे भी पहले यह कथा लोक-प्रचलित थी।
निबाही—निर्वाह किया; पालन किया।

(७) **बलि बलि**—निछावर। **पीर**—दर्द। **पराई**—दूसरोंका।

१२४

(दिल्ली; एकडला)

जो गुन काहू कै[१] मानैं नाहीं। सो कुलवन्त होय जग काहीं॥१
चाँद कहा अब सूरज आवउ[२]। एकँहि रासि बैठि नित धावउ[३]॥२
सूर न आवइ चाँद कै[४] रासी। चाँद गवन तो सूरज[५] पासी॥३
दिन दोइ आउ दुहु रहहिं इक[६] ठाँई। तुम र[७] विरिख[८] हौं र[९] तुम्ह[१०] छाहीं॥४
रुपमनि[११] वहु बिनती जो कही[१२]। उनके[१३] मोह कुँवर चित भई॥५

यहिक दोख कछु नाहीं आहे[१४], जो ई होय मन[१५] सुद्ध ।६
कुँवर बात यह गुनि कै जिय मँह[१६], सेज बैठि वह मद्ध ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–काहे क । २–सुरुज आवहु । ३–धावहु । ४–चाँद न आवइ सूर क । ५–सुरुज । ६–दिन दुइ आए रहहु एक । ७–तोहरे । ८–पुरुख । ९–× । १०–तोहरी । ११–रुपमिनि । १२–कई । १३–उन्ह कै । १४–× । १५–जो पै मन है । १६–× । १७–मुध ।

टिप्पणी—(६) **यहिक**–इसका । **दोख**–दोष । **ई**–यदि । **होय**–हो ।

(७) **गुनिकै**–विचार कर । **मद्ध**–मध्य ।

१३५

(दिल्ली; एकडला)

कुँवरि कहा तूँ जोगि न होही । पूछों बात सपत दइ[१] तोही ॥१
कवन नाँउ[२] घर कहाँ तुम्हारा । किह[३] कारन तुम्ह[४] जोग सँवारा ॥२
हौं जोगी जरमाँसों केरा । सिध होइ[५] कँह फिरि फिरि हेरा ॥३
मनछया बोलहु[६] कहहु[७] न साँचा । सपत[८] ताहि कै[९] जिह कँह[१०] राँचा ॥४
जरम न कहतों[१०] जोग क[११] बाता । तिह कह[१२] सपत दीह[१३] जिह जिउ[१४] राता ॥५
अब फुर कहौं न बोलों मनछया[१५], जो र[१६] सपत तुम्ह दीन्ह[१७] ।६
जिउ लागेउ एक ठाँई[१८], तेहि लग जोगि कया हम कीन्ह[१९] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–दै । २–कौन ठावँ । ३–केहि । ४–तोह । ५–होय । ६–मीथ बोल । ७–सपति । ८–× । ९–जासों चित । १०–कहतेंउ । ११–की । १२–तेहिकी । १३–दियेहु । १४–× । १५ मीथ । १६–रे । १७–तोह दीन । १८–जिउ लगाए काढेइ । १९–कोन ।

टिप्पणी—(१) **कुँवरि**–कुमारी; राजकुमारी । **पूछों**–पूछती हूँ । **सपत**–शपथ । **दइ**–देकर । **तोही**–तुमको ।

(३) **जरमाँसों**–जन्मजात । **केरा**–का ।

(४) **मनछया**–कपट । **राँचा**–अनुरक्त ।

(५) **जरम**–जन्म । **कहतों**–कहता ।

(६) **फुर**–शीघ्र ।

१३६

(दिल्ली; एकडला)

जो वह[१] सपत न देतसि मोही । मरम न जरमहि कहतेउ[२] तोही ॥१
अब सुनु[३] जो पूछइ[४] है बाता । कहौं मरम जा सेउँ[५] चित राता ॥२

पिता मोर राजा बड़वारू। गढ़ चन्द्रगिरि उतंग अपारू ॥३
गनपति देव पिता कर[१] नाऊँ। सुरुजबंस सिध हम ठाऊँ ॥४
कंचनपुर मिरगावति रानी। सो हम देखत[२] दिस्टि भुलानी ॥५
पूछहु कहुँ कइसैं तुम्ह[८] देखी, नियर न तुम सौं[९] आहि।६
सपनैं देखि न राचै कोई[१०], सो त किह देखहु ताहि[११] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–एह। २–जरमहु मरम न कहतेंव। ३–सुन। ४–पूछै। ५–सौं। ६–के। ७–देखी। ८–हौं पूछौं कैसे तोहि। ९–तोह सैं। १०–×। ११–सोतुख देखे चाहि।

टिप्पणी—(३) **बडवारू**–बहुत बड़े। **उतंग**–ऊँचा।
(५) **दिष्टि**–दृष्टि।
(६) **नियर**–निकट।
(७) **राचै**–अनुरक्त होता है। **सो त**–अतः।

१३७

(दिल्ली; एकडला)

दिन एक खेलइ गयउँ[१] अहेरा। हिरनी होइ[२] हम दिहसि[३] अभेरा ॥१
बरन सात होइ दिहसि दिखाई[४]। भूलेउ चित लागेउ तिह धाई[५] ॥२
धायउँ[६] धरै न पायउँ[७] ओही। पैठेउँ[८] सरवर जिउ लै मोही ॥३
सरवर तीर बरिस दिन सेवा। रिखि गन गन्ध्रप परसेउ[९] देवा ॥४
परसन देउ भये तो[१०] आई। आइ सखिन सेउ लागि अन्हाई[११] ॥५
चली नहाइ[१२] परेउँ[१३] खसि तिह ठाँ[१४], आइ उचायो[१५] धाइ।६
दूसरि[१६] बार आइ[१७] फुनि[१८] सरवर[१९], चीर लियौं[२०] तो जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–खेलै गउ। २–भै। ३–दीसि। ४–भै दीसि देखाई। ५–तहँ जाई। ६–धायेंव। ७–पायेंउ। ८–पैठेंव। ९–रसेव। १०–भये देव तब। ११–सौं लगी नहाई। १२–नहाय। १३–परौं। १४–×। १५–आए उठाए। १६–दुसरे। १७–जो आई। १८-१९–×। २०–लेयेंव।

टिप्पणी—(१) **अभेरा**–मुठभेड़; आमने सामने होना।
(३) **धरै**–पकड़नेके लिए। **ओही**–उसे।
(४) **रिखि**–ऋषि। **परसेउ**–(स० स्पर्श) स्पर्श किया; छुआ।
(५) **परसन**–प्रसन्न। **भये**–हुए। **अन्हाई**–स्नान।
(६) **खसि**–गिर। **उचायो**–उठाया।

१३८

(दिल्ली)

चीर लिहों तो आई हाथा। माँस पाँच आहे एक साथा ॥१
औंधि किहिसि हुत रही न वाचा। गयी उड़ाइ देखि चित राचा ॥२
वहि कारन हम जोग सँचारा। जीवन भोजन उहै अधारा ॥३
रुपमनि मन यह बात समानः। सुनि जो सुख कै पिरम कहानी ॥४
अस कुलवन्त न आहै केऊ। नेह लाग जियँ कै परखेऊ ॥५
माँता पिता लोग जन छाड़सि, चढ़ धँस लिहसि अँगार ।६
चार पहर निसि बातिंह गवइँह, फुन र भयउ भिनुसार ॥७

टिप्पणी—(५) केऊ–कोई। नेह–प्रेम।
(७) भिनुसार–प्रातःकाल।

१३९

(दिल्ली; एकडला)

उदिनल भानु भयउ[1] उजियारा। रुपमनि[2] खोज चलेउ सँयसारा[3] ॥१
रोवत राजा भा असवारा। चन्दन काठ संग लिहसि[4] अपारा ॥२
कहति जाइ वहि[5] हाड़ो लेऊँ। जारों लइ क[6] मोंख वहि[7] देऊँ ॥३
भा निरास आवत हुत राजा। दई क कोउ न जानै[8] काजा ॥४
निमिख एक महँ जियतहिं मारे। चाह त माटी लै रू(प)[10] सँवारे ॥५
आवत अहा निरास भा राजा[11], पायसु[12] जियत क[13] चाह ।६
कुँवरि जियत कहि लोगहिं[14], औ दूसर कोउ[15] आह ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति–
१–भएव। २–रुपिमिनि। ३–चला संसारा। ४–लीन्ह। ५–कहिसि जाए अब।
६–लै रे। ७–उहि। ८–दैअ क गरुव न जानी। ९–तौ। १०–रे। ११–×।
१२–पाइसि। १३–कै। १४–कह लोगन्ह। १५–दोसर कोइ।

टिप्पणी—(२) काठ–लकड़ी।
(३) जारों–जलाऊँ। लइ क–ले करके। मोंख–मोक्ष।
(५) माटी–मिट्टी।
(६) पायसु–पाया।

१४०

(दिल्ली; एकडला)

राजैं सुनाँ धाइ[1] कै आवा। राकस हना देखी कै भावा ॥१
फुनि आगैं जो देखी[2] सोई। दूसर[4] फुरहिं वइठ[5] है कोई ॥२

राजहि देखि कुँवरि घभरी[6]। ततखन[7] कुँवरि सेज परिहरी ॥३
राजैं कुँवरि गिंय लै लाये। जानु[8] आजु जननि यहि जाये ॥४
जानहु नौ कै भा औतारा। फिरै[10] काज सोइ दई[11] सँवारा ॥५
फुनि र[12] पूछि रुपमनि[13] कँह राजा[14], कइसे उवरहु[15] धिय।६
को र[16] राम जैं रावन मारा, सिय लाग[17] हन जिय ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति–

१–धाय। २–उबह। ३–देखै। ४–दोसर। ५–बैठा। ६–गहवरी। ७–तेतिखन। ८–जानहु। ९–जाई। १०–बिहरा। ११–जो दैअ। १२–रे। १३–रुपिमिनि। १४–×। १५–कैसे उबरी। १६–रे। १७–सीय लागि।

टिप्पणी—(१) धाइ–दौड़कर। हना–मारा।

(२) फुरहीं–निकट। बइठ–बैठा।

(३) घभरी–(घबड़ी) घबड़ायी। ततखन–तत्क्षण। परिहरी–छोड़ा; त्यागा।

(४) गिंय–कण्ठ। लै लाये–लगाया। जननि–माता। जाये–जन्म दिया।

(५) नौ–नया। फिरै–बिगड़ा हुआ। काज–कार्य।

(६) उबरहु–उद्धार हुआ।

(७) जैं–जिसने।

१४१

(दिल्ली; एकडला)

कहसि राम यह देखहु आही। मारिसि दइत बिधाँससि[1] ताही ॥१
राजैं गिंय लाइ दइ पाना। देखसि खतरी सूर[3] कराँना ॥२
राजा कुँवरिहि पूछइ[4] चाहा। जानहु कुँवरि[5] कउन यह[6] (आहा) ॥३
कुँवरि कहा हम सेंउ[7] वड़वारू। सूरजबंस[8] परस[9] सँयसारू[10] ॥४
यहि[11] कर पिता राउ[11] वड़ आही। चन्द्रागिरिपति बोलहिं ताही ॥५
देवराइ[12] मन अस कहा अपुनैं[13], अव यहि जाइ[14] न देंउ।६
पूत नाहीं घर मोरैं सन्तति[15], (धिय)[16] पलटि कै लेंउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–दवित विधाँसिसि। २–लाय दै। ३–देखिसि खत्री। ४–पूछै। ५–कोरे। ६–कउन एह। ७–सौं। ८–सुरुजबंस। ९–संसारु। १०–एहि। ११–राव। १२–देवराए। १३–×। १४–जाए। १५–×। १६–(दि०) जिउ।

टिप्पणी—(१) विधाँससि–विध्वंस किया। पाना–पान। सूर–वीर।

(७) पूत–पुत्र।

१४२

(दिल्ली; एकडला)

कहसि[1] कुँवर तुम्ह[2] जोग उतारहु। जोग तन्त बैसन्दर जारहु ॥१
आधा राजपाट तोहि[3] देऊँ। जगत जोति पलटि कै लेऊँ ॥२

तूँ राजा राजन्हि बड़ आही। हौं जोगी मोंकह का चाही[४] ॥३
जोगी राजपाट का करई। कढ़े भोग भोग[५] मन धरही ॥४
जोगी जबलगि सिध न होई। आसन मारि ना बइठै[६] सोई ॥५
गोरखपन्थ न पावों जब लगि, जोग न मोकों[७] काउ ।६
जोगी जंगम बापुरा, ना हम लाउ नसाउ[८] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–कहिसि । २–तोह । ३–तोह । ४–हाही । ५–गाढ़े होए जोग । ६–बैस नहिं । ७–मुकौ । ८–लाव नसाव ।

टिप्पणी—(१) **जोग तन्त**–योग साधना । **बैसन्दर**–(सं० वैश्वानर> प्रा० वइस्साणर, वइसाणर> वैसाँदर) अग्नि ; आग । **जारहु**–जलाओ ।

(७) **बापुरा**–दीन; असहाय ।

१४३

(दिल्ली; एकडला)

राजैं जोगी बहु फुसलावा[१]। कैसहिं[२] मान न वह बउरावा[३] ॥१
तो राजहिं रिस[४] मन मँह लागी। बाहौं भकसी[५] जाहु न भागी ॥२
अस कै तिह[६] रखवारी लाऊँ[७]। जाहि न निकस[८] जहाँ व[९] ठाऊँ ॥३
कुँवर कहा यह भई[१०] मँदाई। जो अस करै काह[११] कै जाई ॥४
अब सो मन्त्र करों जिय अपनैं। तिह रिस जानौं[१२] न देखी[१३] सपनैं ॥५
अब तो हाथ परा पाथर तर, कर कर काढ़े जाइ[१४] ।६
मन्त्र इहै[१५] अब मोरैं जिय[१६], मानों कहै जो यह[१७] राइ[१८] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–उसलावा । २–कैसेहु । ३–बौरावा । ४–रिसि । ५–भसकी । ६–तोह । ७–रखवारे लावों । ८–चाहन सुनसि । ९–उहि । १०–एह भएव । ११–कहा । १२–तेहि रस जाव । १३–देखिअ । १४–काढ़ीअ जाए । १५–यहै । १६–X । १७–X । १८–राए ।

टिप्पणी (१) **फुसलावा**–बहकाया ।

(२) **रिस**–गुस्सा; क्रोध । **बाहौं**–जकड़ दूँ । **भकसी**–कारागार, जेल ।

(३) **मदाँई**–बुरी बात । **काह**–क्या । **कै**–किया । **जाई**–जायेगा ।

(६) **पाथर**–पत्थर । **तर**–नीचे ।

१४४

(दिल्ली; एकडला)

अब जो यहि कर[१] कहा न मानों। मूरख कहइओं[२] मन्त्र न जानों ॥१
दिन दस रहउ[३] चाह फिरि लेऊँ। लइ[४] कै चाह बाट पगु[५] देऊँ ॥२

कहिसि राई तुम आयसु[६] जोई। जो मानसा चित पुरवहु सोई[७] ॥३
मुहिं[८] का जो गति[९] मेटै पावों। कहैं तुम्हार[१०] जोग उतारों ॥४
जोग क साज आहा[११] सो उतारा। जोग तन्त बैसन्दर जारा ॥५
कापर सेत आन पहिरायहि[१२], निकसेउ[१३] रूप अपार।६
[बाहि के][१४] हाथी अँबारी, कुँवर कीन्ह असवार ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति–
१–एकर। २–कहिओं। ३–रहौं। ४–लै। ५–जगु। ६–कहिसि राए तोह आएस। ७–जो आयेस हौं मानौं सोई। ८–मोहि। ९–गत। १०–तोहारे। ११–अहा। १२–पहिरावा। १३–निकसा। १४–हाथी वाही।

टिप्पणी—(१) कहइओं–कहलाउँगा।
(३) **मनसा**–इच्छा; विचार। **पुरवहु**–पूर्ण करो।
(६) **कापर**–कपड़ा। **सेत**–श्वेत।
(७) **अँबारी**–हौदा; हाथीपर बैठनेकी व्यवस्था; **असवार**–सवार।

१४५

(दिल्ली)

लोग नगर सब देखै धावा। रावन मार सिय लै आवा ॥१
यहै राम जैं मारेउ बारी। इहै कन्ह जैं नाँथसि कारी ॥२
इहै राम जैं रावन मारा। इहै कन्ह जैं कंस बितारा ॥३
इहै भीम कर कीचक मारी। इहै दुसासन भुजा उपारी ॥४
इहै सिंह हरनाकुस हनाँ। धन सो जननी जैं यह जनाँ ॥५
लोग फूल भू पर ऊपर पूजैं कुँवर कै, अखत फूल तँबोल।६
धन धन जननी रात सपूरन, जिंह यह भयउ अमोल ॥७

टिप्पणी—(२) **बारी**–बाली; सुग्रीवका भाई। **कन्ह**–कृष्ण। **नाँथसि**–नाथा; रस्सी लगाकर बाँधा। **कारी**–कालिया नाग।
(३) **बितारा**–फाड़ा।
(४) **दुसासन**–दुःशासन, जिसने द्रौपदीका चीर खींचनेका प्रयत्न किया था।
(५) **सिंह**–नृसिंह। **हरनाकुस**–हिरण्यकश्यप। **जनाँ**–जन्म दिया।
(६) **अखत**–अक्षत।

१४६

(दिल्ली; एकडला)

चाँद अमावसु के घर बसा। सुरुज साथ आइ[१] परगसा ॥१
लोग कुटुँब सब आगैं आये। देखहिं[२] चाँद अंकों लै[३] लाये ॥२
लोग[४] कुटुँब गा मँदिर[५] भरी। रुपमनि[६] जानु आजु औतारी ॥३

बहुत बधाई दसगुन कीही। बहुत निछावर[7] दुहुँ लग दीहीं[8] ॥४
घोर[9] पटोर सोन बहु रूपा। दाम दीन्हि अगिनित[10] भरि कूपा ॥५
जस निरास आवत हा[11] राजा, अस न हो[12] जग कोउ।६
जइस[13] आस उन्ह[14] पूजी जियकै[15] अस[16] जो होउ[17] तो होउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१—आए। २—देखी। ३—आँकौ गिय। ४—लोगन्ह। ५—मँदिर गा। ६—रुपिमिनी ७—निछावरि। ८—(दि०) कीही; (दि० मार्जिन) दीही। ९—राज। १०—अंगत। ११—हुत। १२—होए। १३—जैस। १४—उहि। १५—×। १६—औस। १७—होए।

टिप्पणी—(२) अंकौं—अंकमें।

(५) **घोर**—घोड़ा। **पटोर**—पटोल अथवा पाटोला नामक वस्त्र; यहाँ सामान्य रूपसे वस्त्रके अर्थमें प्रयुक्त हुआ है। **सोन**—सोना। **रूपा**—चाँदी। **दाम**—ताँबेका सिक्का। सिक्केके इस नामके सम्बन्धमें सामान्य धारणा रही है कि उसे पहले पहल अकबरने प्रचलित किया था। इस कारण अमीर खुसरोके खालिक बारीमें 'दाम' के उल्लेखके प्रमाणसे विद्वानोंने उसे अकबर काल अथवा उसके पश्चात्‌की रचना सिद्धि करनेकी चेष्टा की है। किन्तु यह नाम अकबरसे पूर्व भी प्रचलित था यह इस उल्लेखसे तो स्पष्ट है ही। इसके अतिरिक्त अलाउद्दीन खिलजीके टकसालके टकसाली ठक्कुर फेरूने अपके द्रव्य परीक्षा-में और मौलाना दाउदने अपने चन्दायनमें इसका उल्लेख किया है। द्रव्य परीक्षाके अनुसार चाँदीका एक टंक ६० दामके बराबर होता था। अकबर-के समयमें रुपयेका मूल्य ४० दाम था। आइने-अकबरीसे ज्ञात होता है कि उस समय चाँदी-सोनेके सिक्कोंके बावजूद राज्यका सारा हिसाब-किताब दामोंमें ही रखा जाता था। चन्दायन तथा प्रस्तुत उल्लेखसे यह झलकता है कि दिल्ली सुलतानोंके समयमें भी लेन-देन और व्यवहारमें दामका ही अधिक प्रचलन था। कूपा—कुप्पा; चमड़ेका बना पात्र।

१४७

(दिल्ली; एकडला: बीकानेर)

राजैं[1] कें जिय अनन्द बधाई। कुँवर कै जिय[2] वह[3] चिन्त[4] न जाई ॥१
मनमहँ डरै हँसै औ[5] बोला। हियें आगि जनु[6] परिह[7] भँभूला[8] ॥२
आगि क[9] औखद[10] सबको[11] जाना। यह न मूर औखद कछु माना[12] ॥३
अउर[13] आगि जल सींचि बुझाई। यह न बुझाइ समुँद[14] लै जाई ॥४
सँमुदौ[15] जरै[16] गगन सब जरा। औ बासुकि[17] जरत ऊबरा[18] ॥५
भावता[19] नहि मेंटी[20], उठी[21] जो नख नख[22] आग।६
बसुधा जरै[23] न उबरै, आगि बिरह कै[24] लाग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ–

१–(ए०, बी०) राजा। २–(बी०) चित। ३–(ए०) उवह; (बी०) × । ४–(ए०) चीत; (बी) चिंता। ५–(ए०) मोहि तो डर हँसि; (बी०) मुँह तो डरहि हँसे और। ६–(ए०) जनि; (बी०) जरि। ७–(ए०, बी०) परहिं। ८–(ए०, बी०) मभोला। ९–(ए०) कै। १०–(ए०) औखध; (बी०) ओषद। ११–(ए०, बी०) कोइ। १२–(ए०) एह न को रे औखध कै माना; (बी०) यह रे मूरि ओषद न माना। १३–(ए०, बी०) और। १४–(बी०) जौ समंद। १५–समंद। १६–(ए०) जरी; (बी०) जरा। १७–(बी०) बासुक। १८–(ए०, बी०) उबारा। १९–(ए०, बी०) भावन्ता। २०–(ए०, बी०) मेंटिए। २१–(बी०) उठइ। २२–(ए०, बी०) २३–(बी०) वासुक सिख। जरा। २४–(ए०) की; (बी०) जो।

टिप्पणी—(१) **चिन्त**–चिन्ता।

(२) **परहि**–पड़ा। **भभूला**–राख।

(३) **औखद**–औषधि। **मूर**–जड़ी।

(५) **वासुकि**–सर्प। **ऊबरा**–निकला; बचा।

(६) **भावता**–भवितव्य; भावी।

१४८

(दिल्ली; बीकानेर)

राजा कहि[1] यह[2] गुन परिताऊँ[3]। गुन परिताइ[4] मरम तो[5] पाऊँ ॥१
राजपूत जो साँचहि होई। लखन बतीसों[6] होइहिं सोई ॥२
बड़ निहोराँ र सतुर उदारी। तेवरी खेलैं बहुत जुवारी ॥३
चौपर दाम तेवर[8] भल खेला। नकटा[9] सोरही बूझइ[10] मेला ॥४
बुधि सागर[11] खेले चौपखी[12]। औ[13] खेल[14] जानै दोपखी[15] ॥५
खेलसि खेल सपूरन कुँवरहि[16], देखी[17] सबै खेलाइ[18] ॥६
राजैं कहा और गुन बूझउँ[19], तो हम जिउ पतियाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–कहा २–अब। ३–परताऊँ। ४–परताइ। ५–सब। ६–गुन संपूरन। ७–तिवरी आनि दूसरी डारी। ८–चौपरि राखि तिवरी। ९–सुकठा। १०–बूझै। ११–सगर। १२–चौवधी। १३–और। १४–खैलै। १५–दुवधी। १६–×। १७–देखसि। १८–खिलाइ। १९–पूछौं।

टिप्पणी—(१) **गुन**–गुण। **परिताऊँ**–परीक्षा लूँ; जाँच करूँ। **परिताइ**–जाँचकर। **मरम**–मर्म; भेद।

(३) **बड़**–बहुत। **निहोराँ**–उपकार; एहसान। **सतुर**–शत्रु। **उदारी**–फाड़ डाला। **तेवरी**–जुआ।

(४) **चौपड़**–चौंसर; पाँसोंसे खेला जानेवाला जुआ। **दाम**–सम्भवतः जुएका कोई रूप। **तेवर**–जुआ। **नकटा**–जुएका सम्भवतः कोई भेद। यह नाम हमारे सुननेमें नहीं आया है। **सोरही**–सोलह कौड़ियोंसे खेला जानेवाला प्रसिद्ध जुआ।

(५) **चौपखी**–चौपड़ खेलनेका एक ढंग।[1] **दोपखी**–चौपड़ खेलनेका एक ढंग।[1]

(७) **पतियाइ**–विश्वास आये।

१४९

(दिल्ली; बीकानेर)

हेंगुरि[1] खेलै भये[2] असवारा। हाल गहसि[3] गोटा[4] भल मारा ॥१
रोपहिं[5] बेंझ अँविलि कर पानाँ। मारसि[7] पहिलहिं[8] चूक न[9] जाना ॥२
राजा कहा[10] अहेरें जाई। साउज[11] मारि खेल फुर[12] आई ॥३
साउज उठे लोग सब धावा। कुँवरहि बहुत कर पावा[13] ॥४
पुनि केसरि एक उठेउ अहेरें। मारसि बान राख मूँठ बहुतेरे[14] ॥५
राजा मनहि मन रसहा अपने, दई दीन्ह हम[15] पूत ।६
जस चाहेउँ[16] तस पायेउँ बारक[17], यह उत्तिम जम जूत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–हेंगुरी। २–भा। ३–किहेसि। ४–गोई। ५–रोप। ६–अँविली। ७–मारिसि। ८–पहलै। ९–चूकि नहिं। १०–कहा अब। ११–सावज। १२–घर। १३–जाइ अहेरें खेलै कहा। कुवँर बान गुन पारधी अहा॥ १४–पुनि केहरि उठेउ तेहि बन हीं। मारिसि बान राखि मूड माँही। १५–दइव दिहा मोहि। १६–जसर चहेउँ। १७–वर। १८ काह और।

टिप्पणी—(१) **हेंगुरि**–चौगान। **हाल**–चौगानके मैदानके अन्तमें बने हुए गुमटीनुमा दो खम्भे जिनके बीचसे गेंद निकाली जाती है। खेलोंके आधुनिक शब्दावलीमें गोल। **गोटा**–गोला; गेंद।

(२) **बेंझ**–(सं० वेध्य) लक्ष्य। **आँबिली**–इमली। **पानाँ**–पत्ती।

(५) **केसरि**–(केसरी) सिंह।

(७) **बारक**–बालक।

१५०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पूछसि[1] पढ़ै गुनै कछु[2] जाना। खट भाखा जो सपूरन माना[3] ॥१
सहस पढ़ा औ अरथ पचास क[4]। सूर सरन माकर चौरास क[5] ॥२
भारथ पिंगल[6] अमरू[7] जानाँ[8]। अरथ कहै[9] संगीत बखाना[10] ॥३
सालहुत्र[11] औ कोक पढ़ाई। पाठक पढ़ै[12] न एकौ जाई ॥४
घरी धरै फल[13] सगुन विचारा। कहि[14] कथा[15] आरचा अपारा ॥५

---

१. श्री रामचन्द्र वर्मासे प्राप्त सूचनाके अनुसार।

तिरिया चरित बेद(ा)गम[१६] जाने, औ अति सरबंग **जान[१७]** ।६
गुन गन्ध्रप जानै बहु[१८] विद्या, दस और चारि निदान ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए० बी०) पूछिसि । २–(बी०) तुम । ३–(बी०) आना । ४–(ए०) सहस पढ़ा औ आह बजासक; (बी०) सहस परकीरती आठ पाँच सक । ५–(ए०) सुरसर नाम कली चौरासक; (बी०) सुरसर नीर माँधक चौर संक । ६–(बी०) खांगल । ७–(ए०) अमरौ; (बी०) अमरौती । ८–(ए०) जाने । ९–(बी०) कहै अरथ औ । १०–(ए०) बखाने । ११–(ए०) सावोतर, (बी०) सालहोत्र । १२–(बी०) पढ़इ । १३–(ए०, बी०) भल । १४–(बी०) कहै । १५–(ए०) कासथा । १६–(बी०) वैद गुन । १७–(बी०) औ संगीत सर्वगुन जान । १८–(ए०) सब । १९–(बी०) बिधि ।

टिप्पणी—(१) **खट भाखा**–षट् भाषा । भिखारीदासने षट्भाषाका उल्लेख इस प्रकार किया है—ब्रज मागधी मिलै अमर नाग, यवन भाखानि । सहज पारसीहू मिले षट विधि कहत बखानि ॥ इसके अनुसार (१) ब्रज (२) मागधी (३) अमर (४) नागर (५) यवन और (६) पारसी की गणना षट्भाषा में होती थी । यहाँ अमर से सम्भवतः संस्कृत का, नागर से अपभ्रंश का और यवन से अरबी का तात्पर्य है ।

(३) **भारत**–महाभारत । **पिंगल**–छन्दशास्त्र । **अमरू**–अमरुशतक; संस्कृतका एक प्रसिद्ध काव्यग्रन्थ ।

(४) **सालहुत्र**–(शालहोत्र) अश्वशास्त्र । **कोक**–कोकशास्त्र; कामशास्त्र ।

१५१

(दिल्ली; बीकानेर)

राजैं[१] बूझि देखि मन मँतरी[२] । एक कुल सुद्ध[३] रुपवन्त जो खतरी ॥१
साचहिं[४] राजवंस[५] है कोई । बिन सुवंस कुलवन्त[६] न होई ॥२
राजा कहहिं[७] अब करौं बियाहू[८] । जाति न पूछहु कहो कछु[९] काहू ॥३
राजा चींत[१०] बियाह क[११] लागा । कुँवर ढूँढ़ि पँथ चाहै[१२] भागा ॥४
मनकै[१४] बात न काहू कहई । जोगी जंगम पूछत रहई ॥५
अहिनिसि झुरवइ साँस लइ[१५], दई[१६] सनाँ[१७] अस माँग ।६
क्रितघ्न कोउ न जिह कहै[१८] बाचा मोर न[१९] खाँग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–राजा । २–मंत्रा । ३–एक सुबेध । ४–साँचेहु । ५–राजबंसी । ६–बिनु सुवास गुन बात । ७–कहै । ८–बियाहा । ९–पूछौं है दहु । १०–चिंत । ११–कै । १२–ढूँढै । १३–चहै । १४–मन की । १५–लेर । १६–दइव । १७–से । १८–क्रितघन कोई कहई । १९–न मोरि ।

टिप्पणी—(१) **मँतरी**–विचार किया ।

(३) बियाहू–विवाह ।
(४) चींत–चिन्ता । लागा–लगा ।
(६) अहिनिसि–(अहर्निशि) रातदिन । सनाँ–से ।

१५२

(दिल्ली; बीकानेर)

पसरा काज[1] वियाह कों आवा[2] । नेउता लोग देस सब आवा[3] ॥१
जाचक जन मँगता बहु आये । भाट कपरिया सुन के धाये[4] ॥२
होइ लाग जेउनार अपारा । जेवन कहँ सब लोग हँकारा[5] ॥३
छींपर नेत पटोर बिछाई[6] । पातिंह पाँति जोरि[7] बैठाई[8] ॥४
जेवन जींह[9] भई जेवनारा[10] । करु खट पँचाबिरित अहारा[11] ॥५
फीका मींठा लोन कर खट्टा, अहा कसैला ईंत[12] ॥६
खीर दहिउँ घिउ माँस और अन्न, आए पाँचों अँब्रीत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–काजु । २–गनावै । ३–देसकर आवै । ४–होई लगी ज्योनार अपारा । बिजन चारि छतीसौ परकारा ॥ ५–बावन पूरि हाँडी चौरासी । बहु संधान पकवान गरासी ॥ ६–ओबरी लीपि पटोर बिछाये । ७–लोग । ८–बैसाये । ९–जेवहिं । १०–ज्योनारा । ११–खटरस पंचम अंब्रित परकारा; (दि० मार्जिन) खटरस अंब्रित भये अहारा । १२–मीठा, फीका लोना, खटा, कसैला, तीत । १३–खीर दही पसमसौर, औ सब पंच अंब्रीत ।

टिप्पणी—(१) **पसरा**–फैला । **नेउता**–निमन्त्रण ।
(२) **जाचक**–याचक; याचना करनेवाले । **मँगता**–भीख माँगनेवाले ।
(३) **जेउनार**–ज्योनार; दावत । **जेंवन**–भोजन ।
(४) **छींपर**–छपा हुआ । **नेत**–(सं० नेत्र) बटे हुए सूतका बना वस्त्र । क्षीरस्वामी के कथनानुसार यह जटांशुक है । महीन रेशमी वस्त्र भी नेत्र कहा जाता था पर यहाँ उससे तात्पर्य नहीं है । **पटोर**–एक प्रकारका वस्त्र; पटोल अथवा पटोला ।
(५) **करु**–कटु । **खट**–खट्टा । **पँचाबिरित**–पंचामृत ।
(६) **लोन**–नमक ।
(७) **दहिऊँ**–दही । **घीउ**–घी । **अँब्रीत**–अमृत ।

१५३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

जेइ भोंजि के[1] खरीका लेई[2] । हाथ पखारि पान फुनि देई[3] ॥१
लोग बहोरा[4] बाँभन आये । लइके[5] मँड़ये तर बैठाये ॥२
जो कछु[6] राजन्हि[7] कैं चलि आई । लागि करैं सब जनैं बधाई[8] ॥३

सोन सिंघासन छात[9] सँवारा। मुकुट[10] बाँधि[11] कुँवर बैठारा ॥४
रुपमनि[13] कर[14] जैंमारा[15] गही[16]। आनि कुँअर सिर ऊपर दिही ॥५
बाँभन बेद भनहि जो[17] कुँवर कँह[18], बारी[19] रुपमनि[20] लाइ[21]।६
पत्री[22] जनम देखि गुन[23] बोलहिं[24], सौति साथ जम जाइ[25] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) कर। २–(ए०) किए; (बी०) लिये। ३–(बी०) दिये; (ए०) पानि पियावा। ४–(बी०) वहोहे। ५–(ए०, बी०) लैके। ६–जे किछु। ७–राजहु। ८–(ए०) लागे करै सब जेत बड़ाई; (बी०) लगे करै सब रीति बड़ाई। ९–(बी०) छत्र। १०–(ए०) मटुक। ११–(बी०) बाँधि कै। १२–(ए०, बी०) बैसारा। १३–(ए०) रुपमिनि; (बी०) रुकमिनि। १४–(ए०) के। १५–(बी०) जै माला; (ए०) जपमाला। १६–(ए०) किही। १७–(ए) ×। १८–(ए०) कुवँरहिं। १९–(ए०) बारहिं; (बी०) बरी। २०–(ए०) रुपिमिनि; (बी०) रुकमिनि। २१–(ए०) लाए; (बी०) लाय। २२–(ए०) पतरी। २३–(ए०) गनि। २४–(ए०) × २५–(ए०) जाए।

टिप्पणी—(१) **जेइ** भोंजि–खापीकर। **खरिका**–दाँत साफ करनेका तिनका। **पखारि**–धोकर।

(२) **बहोरा**–गये। **बाँभन**–ब्राह्मण। **लइके**–लाकर। **मँड़ये**–मण्डप। **तर**–नीचे।

(५) **जैंमारा**–जयमाल। **आनि**–लाकर।

१५४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कोई[1] अस कहा कुँवर हा राँधा। गाँठि बोल बाँभन कर[2] बाँधा ॥१
भाखा काम कुराल[3] कै[4] लीजै। जामघर कूचा जो कीजै[5] ॥२
यह तो पण्डित आह सयानाँ। पोथा अरथ बाँच सब[6] जानाँ[6] ॥३
मकु साखा[7] पुरवइ[8] करतारा। कथा[9] पेम[10] रहै सँयसारा[11] ॥४
गाँठि[12] जोरि कै भँवरी[13] दीही। रीत-चार कुल अही[14] सो[15] कीही ॥५
दाइज अस कै दीन्ह[16], जग[17] अइस[18] न दीनहि[19] काहु।६
आधा राजपाट भँडारो[20], बरिस सहस दस खाहु[21] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) एअ; (बी०) येइ। २–(ए०) कै। ३–(बी०) करील। ४–(ए०) क; (बी०) की। ५–(ए०) जानो घर कुजा जो कीजै; (बी०) जयुक ओखर कुच जो गनीजै। ६–(ए०) पोथी माझ देख तौं जाना; (बी०) पोथी बाँच देख भल जाना। ७–(ए०) मकु साका; (बी०) जाकहु अस। ८–(ए०, बी०) पुरवै। ९–एक सथा। १०–(बी०) नेह। ११–(ए०) संसारा; (बी०) सैंसारा। १२–(ए०, बी०) गाँठी। १३–(ए०) अवरी; (बी०) भाँवर। १४–(बी०) आहि। १५–(बी०) सू। १६–

(ए०) दीन्हीं; (बी०) दीतसि। १७–ए० ×; (बी०) जग मँह। १८–(ए०) ऐस; (बी०) अस। १९–(ए०) दीन्हेव। २०–(ए०,बी०) भंडार। २१–(ए०) खाहि।

टिप्पणी—(५) भँवरी–भँवरी;फेरा।

(६) दाइज–दहेज।

१५५

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर[१])

मँदिर सँवारि[१] सेज विछाई[२]। दूनों जनैं[३] बइठे (तिहँ)[४] जाई[५] ॥१
कुँवर न रावइ[६] मनमँह रोवसि[७]। सँवरै[८] तिह[९] जो[१०] हाथसें[११] खोयसि[१२]॥२
कुँवर कहा यह बुधि कछु[१३] नाहीं। बातिह भुरउ जिंह[१४] पतियाही[१५] ॥३
बात जो कर कर कीजइ[१६] सोई। वरु सेउँ[१७] कीजइ[१८] नेह न होई ॥४
हों तो बरिसिक[१९] बातहिं[२०] राखौं। तिरिया चरित[२१]सखिन[२२] सेउँ[२३] भाखौं ॥५
असकै यह बातँहिं[२४] बोरावों, यह जानै मोहि[२५] चाह।६
कँवल जान रस विंधा[२६] भँवरा[२७], भँवर चलै[२८] उड़ि ताह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) सँवारि जो; (बी०) सँवरिके। २–(बी०) ×। ३–(ए०) जन। ४–(ए०) तहँ। ५–(बी०) दुवौ सेज पर बैसे जाई। ६–(ए०) रावै; (बी०) ×। ७–(ए०,बी०) रोइसि। ८–(ए०) सौंरि; (बी०) सोंरिसि। ९–(ए०,बी०) तेहि। १०–(ए० बी०) जेहि। ११–(बी०) सौं। १२–(ए०,बा०) खोइसि। १३–(ए०) कुछु, (बी०) किछु। १४–(ए०) बातन्ह भोरवों जें; (बी०) बातन भोरँऊ जेहि। १५–पतियाई। १६–(ए०) कीजै। (बी०) करियै। १७–(ए०,बी०) बर सों। १८–(ए०) कीजै; (बी०) किये जो। १९–(ए०,बी०) बरिस एक। २०–(ए०) बातन्ह; (बी०) बातन। २१–(बी०) चत्र। २२–(ए०) कहहु; (बी०) सिखै। २३–(ए०) सो; (बी०) से। २४–(ए०) बातन्ह; (बी०) बातन। २५–(बी०) हम। २६–(ए०; बी०) वेधा। २७–(ए०बी०) ×। २८–(ए०) भौंर जाय; (बी०) जाय भौंर।

टिप्पणी—(१) दूनों–दोनों। जनैं–व्यक्ति।

(३) **भुरउँ**–भुलवा दूँ।

(५) **बरिसिक**–(बरिस इक) एक वर्ष।

१५६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर रसारस बात सँचारी[१]। कहसि[२] सुनहु तुम[३] प्रानअधारी ॥१
वहि[४] सों मैं[५] तों[६] दसगुन[७] पाई। अब चितमन लागेउ तिह[८] धाई ॥२

---
१. एकडला और बीकानेर प्रतिमें पंक्ति ४,५ क्रमशः ५ और ४ हैं।

अँबली ढूँढ़त हौं [इन्ह] आवा[9]। पायउँ आँब जइस[10] मन भावा ॥३
चाहत भर[11] अहारैं[12] पायउँ। भाग हमार जो ईहाँ[13] आयउँ ॥४
तिह[14] अस तिरी[15] न देखेउ काऊ। जिउ[16] आपु[17] लागि करौं बहु चाऊ ॥५
बातहिं[18] अस बोरायसि[19] भोरयसि[20] कुँवरि जानु कहि[21] साच।६
मन कपटी मुँह भीतर भोरा[22], चित र[23] तहाँ जिह राच ॥७

पाठान्तर—एकडला, और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) समाँरा। २–(ए०,बी०) कहिसि। ३–(ए०) तोह। ४–(ए०) उहि। ५–(बी०)× । ६–(ए०) तुह; (बी०) तुमैं। ७–दस गुनी। ८–(ए०) तोहि लागेव; (बी०) लागेव तोहि। ९–(बी०) अँविली ढूढ़ँत मैं इह ठाँ आयेउँ। १०–(ए०; बी०) जैस। ११–(ए०) फुर रे; (बी०) फर। १२–(ए०, बी०) सोहारी। १३–(ए०,बी०) एहि ठाँ। १४–(ए०,बी०) तोहि। (बी०) त्रिया। १६–(बी०) जी। १७–(ए० बी०) अब। १८–(बी०) बातन; (ए०) बातन्ह। १९–(ए०, बी०) बोराइसि। २०–(ए०,बी०)× । २१–(ए०) जान कह; (बी०) जान कहत है। २२–(बी०) सूधा। २३–(ए०,बी०) रे।

टिप्पणी—(३) अँबली–इमली। आँब–आम।
(६) बोरायसि–बहकाया। भोरयसि–भुलावा दिया।

१५७

(दिल्ली; बीकानेर)

खेलि गई निसि भा भिनुसारा[1]। कुँवर करै असनान सिधारा ॥१
कइ असना[न] पहिराइँह[2] बागा। पान हाथ लै चला (सुभागा[3]) ॥२
सभा जाइ कै बइठ सुजानाँ। जस[4] उजिआर चाँद[5] जग मानाँ[6] ॥३
कुँवर गैं बैठे सभा सँवारी। राजपूत भल रूप मुरारी[8] ॥४
धरमसाल[9] एक कहसि[10] उचावहु। पन्थी आवत[11] पानि पियावहु ॥५
जोगी जंगम तपसी जती[12] सन्यासी [जो] आउ[13]।६
जो र आउ ईंह ठाँई[14], भोजन सब कोउ पाउ[15] ॥७

पाठान्तर—बीकनेर प्रति—

१–भुनिसारा। २–फिराइसि। ३–सभागा। ४–जस रे। ५–चदँ ६–माना। ७–के। ८–मुरारी। ९–धर्मसाल। १०–कहिसि। ११–आवन्हि तिन्ह। १२–जोगी जगी तपसी जंगम। १३–आव। १४–जो रे आवै इहि ठावँ। १५–केउ पाव।

टिप्पणी—(१) असनान–स्नान।
(२) बागा–वस्त्र।
(४) गैं–जाकर।

१५८

(दिल्ली; बीकानेर)

धरमसार[1] एक नीक उचावा। जोगी जंगम पन्थी[2] आवा ॥१
पुन्न धरमसारे कर लेई। बहु भोजन[4] सब कहँ वह[5] देई ॥२
जोगी जती सन्यासी[6] आवा। देस देस कर[7] पूछे भावा ॥३
गोंठ करै उँह बैठा ठाँऊँ[8]। कनकनगर कै पूछै[9] नाऊँ ॥४
निहचों[10] चाहि[11] न कोई[12] कहई। पीर हियें कहँ चित मँह रहई[13] ॥५
धरम मानते रुपमनि कै टाँई, मँहि उहँ कहि बोराउ[14] ।६
चित मुरकाइ[15] पौन सँग देतेसि, चाँद लीन्ह उड़ाउ ॥७

पठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–धर्मसाल। २–पन्थी जो। ३–सब। ४–भोजन पाव। ५–×। ६–सन्यासी जो। ७–के। ८–गोस्टी कै बैठे उहि ठाँऊ। ९–कर पूछे। १०–निस्चै। ११–चाह। १२–कोऊ। १३–पीर हियें गहि कैसे रहई। १४–धरमाँटी रुकुमिनिके ठाँऊ, मुँह बातनि बोराइ। १५–मुकरावै। १६–×। १७– दिस्टि चन्द पंथ जाइ।

टिप्पणी—(१) नीक–अच्छा।

(२) **पुन्न**–पुण्य।

(४) **गोंठ**–गोष्ठी। **कनकनगर**–कंचनपुर।

(५) **निहचों**–निश्चय। **चाहि**–जानकारी।

१५९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कै गियान[1] रुपमनि[2] चित गुना[3]। कुँवर क[4] मन नाहीं[5] हम सना ॥१
मुँह बातहिं[6] हमकहँ बोरावइ[7]। चित अनतैं[8] अधरन[9] फुसलावइ[10] ॥२
लइ खटवाटि परी वहि[11] रानी। कुँवर सुनाँ वहि जिय[12] सुखानी ॥३
सभा बटोरि[13] मंदिर[14] मँह आवा। देखत फिरकै[15] अनों चलावा ॥४
औ खटवाटि पाटि[16] ले परी। कुँवर देखि चिर मँह रिस चढ़ी ॥५
तपसप सै[17] रुपमनि[18] रोई[19], धवर[20] कुँवर[21] गहा जो[22] चीर।६
उर फाटै कँह[23] चाहै, खिनक न बाँधे धीर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) गेआन। २–(ए०) रुपिमिनि; (बी०) रुकमिनि। ३–(बी०) अपना। ४–(बी०) कर। ५–(बी०) नहिं। ६–(बी०) बातन; (ए०) बातन्ह। ७–बौरावै। ८–(बी०) अनत। ९–(ए०) धर इह; (बी०) धर हम। १०–(बी०) फुसिलावै; (ए०) फुसलावै। ११–(ए०) उवह; (बी०) वह। १२–(ए०, बी०) मुँह जीभ। १३–(ए० बी०) बहौरि। १४–(बी०) महल। १५–(बी०) कुँवर कहँ। १६–

(ए०, बी०) पाटी। १७–(ए०, बी०) निससै। १८–(ए०) रुपिमिनि; (बी०) रुकमिनि। १९–(ए०, बी०) रोवै। २०–(ए०,बी०) ×। २१–(ए०) कुँवर क। २२–(बी०) जो खोंचा। २३–(बी०) चहे बरि।

टिप्पणी—(१) **गियान**–ज्ञान। **नहिं**–नहीं। **सना**–अनुरक्त।

(२) **अनतैं**–अन्यत्र।

(३) **खटवाटि**–(सं० खट्वपट्टिका >खटपट्टिआ>खटपाटी>खटवाटी) मान करके बिना कुछ खाये-पीये खाटकी पट्टी पकड़कर पड़े रहना।

(४) **बटोरि**–विस्तृत करके।

(५) **रिस**–क्रोध।

१६०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा कस रोवहु नारी[१]। तुम्ह हौ मोरी[२] प्रान अधारी ॥१
मैं अपनैं जिउ तुम्ह कँह लावा[३]। तुम्ह छाड़ैं[४] मुहि[५] और न भावा ॥२
तुम्ह[६] लाग[७] मैं जिउ[८] वरछेवा[९]। भंवर मरै पै छाड़ि न केवा[१०] ॥३
हौं परदेसी आह[११] भिखारी। तुम्ह[१२] न करहु मुहि[१३] पर जिउभारी॥४
कहिसि कुँवरि हम सेंउ[१४] चतुराई। जो र चरायहु[१५] तै[१६] हम काई[१७] ॥५
धूतचार हौं बूझौं[१८], औ कछु कछु[१९] चतुराइ।६
धर[२०] तुम्हार[२१] यहि ठाँई आहै[२२], चित मन अन्त[२३] उड़ाइ[२४] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ —

१–(ए०, बी०) बारी। २–(दि०) मोपत; (ए०) तोह हुत मोरी; (दि० मार्जिन) तुम हो। ३–(ए०) मैं अब चितमन तोह कह लावा; (बी०) अब चित मन मैं तोहि मिलावा। ४–(ए०, बी०) तोहि छाड़ि। ५–(ए०, बी०) मोहि। ६–(ए०) तोहहीं; (बी०) तोहि। ७–(ए०, बी०) लागि। ८–(बी०) जी। ९–(ए०, बी०) परछेवा। १०–(ए०, बी०) दैअ दीही सिध्र मारेव देवा; (दि० मर्जिन) दीन दई सिध मारों देवा। ११–(बी०) अहौं। १२–(ए०) तोहि। १३–(ए०) मोह; (बी०) मोहि। १४–(ए०, बी०) सौं। १५–(ए०) चराएहु; (बी०) परायेहु। १६–(बी०) सो। १७–(ए०, बी०) खाई। १८–(बी०) दूत चरित हौं जानों। १९–(ए०) कुछु कुछु; (बी०) किछु किछु। २०–(बी०) धरा। २१–(ए०) तोहार। २२–(ए०, बी०) ×। २३–(ए०) अनतै; (बी०) अननेहि। २४–(बी०) जाइ।

टिप्पणी—(३) **बरछेवा**-अर्पण कर दिया। **केवा**–कमल।

(५) **चरायहु**–बहकाया। **काई**–को।

(६) **धूतचार**–धूर्ताचार।

१६१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहहु[1] तो दीप[2] हाथ कर[3] लेऊँ। कै र[4] जगाइ साँप उर[5] देऊँ[6] ॥१
कहहु तो डाँप[7] कुँवाँ मँह[8] मेलौं[9]। तयँउ[10] जरत पर पाँवहि[11] बेलौं[12] ॥२
रुपमनि[13] मन बहु[14] भाँति मनावा। खर उचारि[15] कै पान खियावा ॥३
पान खियाइ[16] लै र[17] उर लाई। मैं वहि सेउँ[18] दसगुन तों[19] पाई ॥४
आप थाप[20] कर बाहर आवा। आयसु[21] बार बैठि[22] इक[23] पावा ॥५
पूछसि कवन देस सों आयहु[24], को[25] गोरख को[26] चेल[27] ।६
पुरुखनाथ[28] गुरु आह हमारेउ[29], गोरखपुर सेउँ[30] खेल[31] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कहौं। २–(बी०) दीवा। ३–(बी०) कै। ४–(ए०, बी०) रे। ५–(बी०, ए०) कर। ६–(बी०) लेऊँ। ७–(ए०, बी०) डभ। ८–(ए०) कुआँ म; (बी०) कुँवर महिं। ९–(ए०) मैलौउ। १०–(ए०) तपों; (बी०) चीड ११–(ए०) पाँवन; (बी०) बावन पर। १२–(ए०) मेलौंउ; (बी०) पेलौं। १३–(ए०) रूपमिनि; (बी०) रुकमिनि। १४–(बी०) एहि। १५–(ए०) धरी चारि; (बी०) धरा चारि। १६–(ए०) खवाइ; (बी०) खियाय। १७–(ए०, बी०) रे। १८–(ए०, बी०) सैं। १९–(ए०) तूँ; (बी०) तू दसगुनी। २०–(ए०, बी०) कै। २१–(ए०) आऐस; (बी०) आयस। २२–(ए०) बैठै कै। २३–(ए०) आऐहु; (बी०) से आवा। २४–(बी०) केहि। २५–(बी०) का। २६–(बी०) चेला। २७–(बी०) त्रिख-नाथ। २८–(ए०, बी०) हमारे। २९–(ए०, बी०) सों। ३०–(बी०) खेला।

टिप्पणी—(२) **मेलों**–डालूँ। **तयँउ**–तवा। **जरत**–जलता हुआ। **बेलों**–रक्खूँ।

(३) **खर**–खरिका, पानमें खोंसा गया तिनका। **उचारि**–(क्रि० उचारना) हटाकर।

(५) **आप थाप कर**–तुष्ट कर। **आयसु**–आगन्तुक। **बार**–द्वार।

(७) **खेल**–चले।

१६२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

एह संगाढ़[1] जोगिंह[2] कै आई। छाला उठै[3] गुदावरि[4] जाई[5] ॥१
हौं जानौं[6] गोरख सँग लागा। को[7] बिधि[8] होइ[9] काह कँह[10] भागा ॥२
कुँवर गोस्टि[11] कै पूछी[12] वाता। कंचनपुर जोजन सै साता ॥३
यह[13] ठाँ[14] हुतै अलप[15] कछु होई। अन्तर सँमुद एक[16] आहै[17] कोई ॥४
तिह सेउ[18] कजली बन एक[19] आही। अन्धकूप औ[20] पन्थ न[21] ताही ॥५

चलत चलत पन्थ पैहसि[23], जोहत[24] जो सत सैं जाब[25] ।६
सत सेउँ[26] सतै[27] सँघाती होइह[28], बाघ सिंघ नहिं खाब ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०) [ब]हु संगधी । २-(ए०, बी०) जोगिन्ह । ३-(ए०) बैठ; (बी०) उठाइ; (दि० मार्जिन) उत्तम । ४-(ए०) गोदावरी; (बी०) गोदावरिन्हि । ५-(दि० मार्जिन) छाई । ६-(ए०) × । ७-(बी०) केहि । ८-(बी०, ए०) सुधि । ९-(ए०) होए; (बी०) होय । १०-(ए०) कह किह; (बी०) कहे को । ११-(ए०, बी०) गोस्टी । १२-(ए०, बी०) पूछै । १३-(ए०) ×; (बी०) एहु । १४-(ए०) ठाहुँ; (बी०) ठाँव । १५-(ए०) ते अधिक; (बी०) से अधिक । १६-(बी०) एक सँमुद । १७-(ए०, बी०) है । १८-(बी०) सोई । १९-(ए०) [-]हि से; (बी०) केहि ठाँव से । २०-(बी०) × । २१-(बी०) और । २२-(बी०) नहिं । २३-(बी०) पायेसि । २३-(ए०, बी०) × । २४-(ए०) जो तैं सत सौं लाव; (बी०) जो तैं सत सौं जाब । २५-(ए०, बी०) सौं । २६-(बी०) सत । २७-(ए०) ×; (बी०) होइहि ।

टिप्पणी-(१) **एह**-यहाँ । **संगाढ**-संघटन; समूह । **गुदावरि**-गोदावरी ।

(२) **गोस्टि**-गोष्ठि; वार्तालाप । **कै**-करके ।

(४) **ठाँ**-स्थान । **हुतै**-से । **अलप**-अल्प; थोड़ा । **अन्तर**-बीचमें ।

(५) **कजली बन**-वासुदेवशरण अग्रवालका कहना है कि कदलीवनका ही लोकमें कजरीवन हो गया है । महाभारतमें ऋषिकेशसे बद्रिकाश्रमतक का वन प्रदेश कदलीवन कहा गया है (वनपर्व १४६।७५-७९) । किन्तु यहाँ यह किसी वन्यप्रदेश विशेषके लिए प्रयुक्त नहीं जान पड़ता । इसका तात्पर्य ऐसे सघन बनसे है जिसमें प्रकाश कठिनतासे पहुँच पाता है या बिल्कुल नहीं पहुँच पाता । **अन्धकूप**-घोर अन्धकार ।

(६) **पैहसि**-पाओगे । **जोहत**-टटोलते हुए । **जाब**-जाओगे ।

(७) **सतै**-सत ही । **सँघाती**-साथी । **होइह**-होयेगा । **सिंघ**-सिंह । **खाब**-खायेगा ।

१६३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा हम कन्था देहू । जो कछु[1] चाहहु[2] हम सेंउ[3] लेहू ॥१
कुँवर आन बहु भिखा देहीं[4] । जोगी सनाँ[5] साज सब लेहीं[6] ॥२
कै मिस घर सैं चला अहेरैं । खेलै जाइ[7] आन बन[8] मेरैं ॥३
खेलत सब सेउँ[9] बेगर होई । सँग मँह मानुस[10] रहा न कोई ॥४
तुरिय[11] छाड़ि कै कापर[12] काढ़िसि । जोगी भयउ[13] भोग फुनि[14] छाड़िसी ॥५

आगें[16] जाइ[17] पाछु[18] फिरि देखै, जनि[19] कोउ मानुस[20] आउ ।६
पहुँचा जाइ तीर सायर के, घाट चलै इक[21] नाउ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कुछ; (बी०) किछु। २–(बी०) चही। ३–(ए०, बी०) सैं। ४–(ए०, बी०) भिखेआ दीही। ५–(ए०) सन; (बी०) सैन। ६–(ए०) लीही; (बी०) लिही। ७–(ए०) जास; (बी०) जाय। ८–(ए०) सों; (बी०) से। ९–(बी०) मानस। १०–(ए०) तुरी। ११–(बी०) कपरा। १२–(ए०) भएेव; (बी०) भवा। १४–(ए०) मन; (बी०) पुनि। १५–(ए०, बी०) छाँड़िसि। १६–(बी०) आगू। १७–(ए०, बी) चलै। १८–(बी०) पाछे। १९–(ए०, बी०) जनु। २०–(ए०) मानुस कोइ; (बी०) पाछे कोइ। २१–(ए०) एक।

टिप्पणी—(१) कन्था–चीथड़ोंसे बना वस्त्र।

(२) भिखा–भिक्षा। सनाँ–से।

(३) मिस–बहाना।

१६४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[1])

साँठ अधारी[1] सेंउँ[2] कछु[3] काढ़सि[4]। दइ[5] खेवट कहँ फाँड़[6] जो[7] बाँधसि[8] ॥१
कहिसि[9] मोख भल पायउँ[10] जाई[11]। अरुझ[12] बाँध[13] हुत[14] दई[15] छुड़ाई ॥२
पैले पार नाव गै लागी। मन मँह कहि[16] भल आयउँ[17] भागी ॥३
चलत चलत रवि अस्त जो[18] होई। घन[19] कै निसि भादों छठ होई ॥४
पंखि जो[20] लघु दीरघ जग[21] आहे[22]। लइकै[23] कोर[24] बइठ[25] घर रहे ॥५
यहि[26] न कोर[27] न बैठक[28], नहि तिल एक जियँ[29] सुक्ख ॥६
बिरह सँताप आगि जरि[30], नख सिख गहेउ पेम[31] कै दुक्ख ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) धारी। २–(ए०, बी०) सौं। ३–(ए०, बी०) कुछु। ४–(ए०, बी०) काढ़िसि। ५–(ए०, बी०) दे। ६–(ए०) फींड़ा; (बी०) फेंडए। ७–(बी०) ×। ८–(ए०, बी०) बाँधिसि। ९–(बी०) कहेसि। १०–(ए०) पाएव; (बी०) भाव। ११–(बी०) गुसाई। १२–(बी०) अरुझा। १३–(ए०) छाड़; (बी०) फाँद। १४–(ए०) हुती; (बी०) हुतै। १५–(ए०) दैअ; (बी०) दैव। १६–(ए०) कह; (बी०) कहिसि। १७–(ए०) आएव; बी० आयेव। १८–(बी०) थल। १९–(ए०) कहँकै; (बी०) खन खन। २०–(ए०) पंक जो; (बी०) जो पंक। २१–(बी०) ×। २२–(बी०) रहे। २३–(ए०, बी०) लैके। २४–(बी०) कूर। २५–(ए०) बैठि। २६–(ए०, बी०) अेहि। २७–(ए०) कोरि। २८–(ए०) नहिं बैसे। २९–(बी०) जिउ। ३०–(ए०) जरी; (बी०) परा। ३१–(बी०) खन खन।

१–इस प्रतिमें पंक्ति ४-५ क्रमशः ५-४ है।

टिप्पणी—(१) **साँठ**–सुरक्षित धन। **अधारी**–झोली। **काढ़सि**–निकाला। **खेवट**–केवट, मल्लाह, नाविक। **फाँड़**–कमरमें बँधे वस्त्रका वह भाग जिसमें लोग रुपया-पैसा रखते हैं।

(२) **मोख**–(मोक्ष) छुटकारा। **अरुझ**–उलझा हुआ। **बाँध**–बन्धन।

(३) **पैले**–परले, दूसरे। **गै**–गई।

(५) **कोर**–(क्रोड) गोद। यहाँ तात्पर्य घोंसलेसे जान पड़ता है।

१६५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

लोग कुँवर के साथ[1] जो आहे। कहहिं कुँवर साउज[2] संग रहे ॥१
पूछत चलहु हम[3] तिंह[4] जाहीं। कुवरहिं विलम्ब लागि दहुँ काहीं ॥२
ढूँढ़त आए तुरिय[5] पै पावा। कहहिं कुँवर बाघ[6] [लै[7]] खावा ॥३
बाघ सिंघ जो खायेउ होई। चीन्ह न[8] जाइ पाउ[9] ये[10] कोई ॥४
ढूँढ़त[11] चहु दिसि फिरि के आये। लाग[12] तँवाये कुँवर नहि पाये ॥५
झुरवत चले सबै[13] जन, कहहि काह कै लेब[14] ।६
देउराइ[15] जो पूछै[16] हमकों[17], कवन[18] उतर हम[19] देब ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) संग। २–(ए०) सावज। ३–(ए०) हमहिं; (बी०) हमहुँ। ४–(ए०) तोह; (बी०) तँह। ५–(ए०) तुरी। ६–(ए०) सिंह। ७–(दि०) पाठ स्पष्ट नहीं है; (बी०) नहीं। ८–(बी०) नहिं। ९–(ए०, बी०) पाव। १०–(ए०, बी०) पै। ११–(ए०, बी०) ढूँढ़ि। १२–(बी०) लोग। १३–(बी०) सब। १४–(ए०) काह गै; (बी०) कहाँ गै। १५–(ए०) देवराए; (बी०) देवराय। १६–(ए०) पूछिह; (बी०) पूछहिं। १७–(ए०) ×; (बी०) हम कहँ। १८–(ए०) काह। १९–(ए०) तो।

टिप्पणी—(४) **चीन्ह**–पहचान।

(५) **लाग**–लगे। **तँवाये**—चिन्तित होने।

१६६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

लोगहिं[1] बात आइ[2] अस कही। रानीं[3] सुनाँ रुपमनि[4] तिह[5] अही ।१
राजहिं अजगुत[6] बकति न आवा। गा सुख[7] वह[8] जो परा हुत पावा[9] ॥२
रुपमनि[10] सुनि तुसार जनु[11] मारी। जस[12] पुरइन हेंवँत रितु[13] जारी ॥३
के जनु[14] घाम फूल कँह[15] लागा। सूखि कुइँ[16] परिमल सब[17] भागा ॥४
जस[18] पानी बिनु कँवल सुखाई। सुनतहि[19] रुपमनि[20] गै[21] कुँवलाई[22] ॥५

मालति[२३] परिहरि[२४] भँवरा[२५], गयउ[२६] बेलि[२७] अवराँह[२८] ।६
दोखन आह न लागेउ[२९], काहे तजहु[३०] हमाँह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) लोगन्ह; (बी०) लोगन । २–(ए०, बी०) आय बात । ३–(ए०) राउ; (बी०) राजा । ४–(ए०) रुपमिनि; (बी०) रुकमिनि । ५–(ए०, बी०) तँह । ६–(बी०) अचंभो । ७–(ए०) सो । ८–(ए०) उवह । ९–(बी०) गा सुख जो होत परावा । १०–(ए०) रुपिमिनि; (बी०) रुकमिनि । ११–(ए०) जनि; (बी०) जनौ । १२–(बी०) जनौं । १३–(ए०) हेमंत रवि; (बी०) हेत रवि । १४–(ए०) कै रे; (बी०) जानौ । १५–(बी०) कहुँ । १६–(ए०) गई; (बी०) गएउ । १७–(बी०) × । १८–(ए०) × ; (बी०) जनि । १९–(ए०, बी०) सुनितेंहि । २०–(ए०) रुपिमिनि; (बी०) रुकमिनि । २१–(बी०) गई । २२–(बी०) कुँभिलाई । २३–(ए०) कही; (बी०) मालती । २४–(ए०) परिहरी । २५–(ए०, बी०) भौरा । २६–(बी०) जाइ; (ए०) केहि गुन । २७–(ए०) बेइल । २८–(ए०, बी०) औराह । २९–(ए०) रुपमिनि कहि लागेव; (बी०) दोखन आहि न लागेउ परगट । ३०–(ए०, बी०) तजिसि ।

टिप्पणी—(२) **अजगुत**–(सं० अयुक्त) अनहोनी । **परा**–पड़ा ।

(३) **तुसार**–तुषार; शीत; पाला । **पुरइन**–पुटिकिनी, कमल-बेल । **हेवँत**–हेमन्त । **रितु**–ऋतु ।

(४) **घाम**–धूप । **कुइं**–कुमुदिनी । **परिमल**–सुगन्धि ।

(५) **कँवल**–कमल । **कुँबलाई**–कुँभलाई ।

(६) **परिहरि**–त्यागकर । **भँवरा**–भ्रमर । **अवराँह**–अन्यत्र; दूसरेके पास ।

(७) **काहे**–क्यों । **हमाँह**–हमको; मुझको ।

१६७

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर[२])

जोगी भँवरा थिर न रहाई । यह[१] सेंउ जरम न करहु[२] मिताई ॥१
भँवर फिरि[३] परिमल कँह रहई । जोगी जोग तन्त मँह[५] अहई[६] ॥२
ई र[७] क्रितघ्न जग मँह गुनें[८] । ईंह न मोह काह कर भनें[९] ॥३
कहै कौन मत[१०] पितैं जो कीन्ही । वरवस ठेलि कुँआँ मँह दीन्ही[११] ॥४
परेउँ कुण्ड धरै मुँहिं आई[१२] । कछु हो आपु[१३] हम सिर आई[१४] ॥५
हौं जिउ देउँ लागि पिय कारन, जो भावइ[१५] सो होउ ।६
अब जरिहौं जिउ घट महँ, फुन सींचो जल कोउ[१६] ॥७

---

१. एकडला प्रति में पंक्ति ३ नहीं है और पंक्ति ४–५ क्रमशः ३–४ है । पाँचवीं पंक्ति के रूप में बीकानेर प्रति की पंक्ति ४ है जो दिल्ली प्रति मे नहीं है ।

२. बीकानेर प्रति में पंक्ति ५–७ सर्वथा नवीन प्रक्षिप्त पंक्तियाँ हैं ।

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) इन्ह; (बी०) इन । २-(ए०) करिय; (बी०) कीजै । ३–(ए०, बी०) फिरत । ४–(बी०) रहै । ५–(ए०) मन । ६–(बी०) रहई । ७-(बी०) ए । ८–(बी०) दुवौ जग गने । ९–(बी०) माना; (ए०) पूरी पंक्ति नहीं है । १०–(ए०) मति । ११–(बी०) तरुवर मीचु गिरही होई । जोगी सीस सँकल्पो कोई ॥ १२–(ए०) परी कुँवा अब निकसि न जाई । १३–(ए०) अब । १४–(ए०) ता करि मंछ कीर रहि होई । जो कर सिर कर पी कोई । १५-(ए०) भावै । १६–(ए०) हौं जरिहौं घट माँह, जल सींचौ फुनि कोउ ।

टिप्पणी—(१) **थिर**–स्थिर । **मिताइ**–मित्रता ।

(२) **जोगतत्र**–योग-साधना ।

(४) **बरबस**–जबर्दस्ती । **ठेलि**–ढकेलकर ।

१६८

(दिल्ली; बीकानेर)

रैन[१] काल कै[२] भेस भरावा[३] । भैरों[४] काल रूप रबि आवा ॥१
दिनयर पै[५] संग अउर[६] न कोई । बात कहै जो मानुस[७] होई ॥२
घट मँह बिरह भयउ[८] जर छारा । ऊपर भानु अधिक यह[९] जारा ॥३
संग[१०] जो आह[११] सुख कँह सँग लीजै । साथी दगध[१२] सो का लै कीजै ॥४
काल क गहन[१३] फुनि[१४] आगैं[१५] आवा । कुँवर बैठि[१६] सूरज मुँह नावा[१७] ॥५
पन्थी सिरज लिहा[१८] संग साथी, सोउ रहा संग[१९] छाड़ि ॥६
हाथहिं हाथ मारग न[२०] सूझै बन महँ, रह अँधियार जो[२१] गाढ़[२२] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–रैनि । २–कर । ३–फिरावा । ४-भोर । ५– × । ६–और । ७–मनसा । ८-भवा । ९–कै । १०–संगी । ११–आहि । १२–दगधि । १३–कर घर । १४– × । १५–आगे बन । १६–पैठि । १७–बहुरावा । १८–पंथी आहि सुरज । १९–सेउ रहा पंथ छाड़ि । २०–(दि० मार्जिन) मारग न । २१–अँधियारा । २२–गाडि ।

टिप्पणी—(२) दिनयर–दिनकर; सूर्य ।

(६) **सोउ**–वह भी ।

१६९

(दिल्ली; बीकानेर[१])

पन्थ न सूझै किंह खँ[१] जाई । फिरि फिरि बन लागेउ[२] बउराई ॥१
बाघ सिंघ हाथी बन रोझा । तिंह सेंउ[३] मारग पूछै सोझा ॥२

१. बीकानेर प्रति में पंक्ति ५ की अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित है ।

कोउ न मारग देइ देखाई। औ कोउ न[4] हियार जो कहाई[5] ॥३
पेम भुअंगम है विस भरा। करमहिं पै अँकुर नीसरा[6] ॥४
बाउर[7] पै अँगुरि[8] मुँह हेला[9]। सोइ सरेख[10] जो[11] पेम न खेला ॥५
पेम कियें दुख पाइ[12], पेम न करियउ[13] कोइ। ६
जै सुख चाहहि[14] पेम कै[15], मूरख[16] कहहिं[17] सोइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–केहि दिसि। २–लागा। ३–तेन्हसे। ४–न कोई। ५–फर तोरि कै खाई। ६–अँगुरिन सरा। ७–बावर। ८–अंगुरी। ९–मेला। १०–सयान। ११–×। १२–पाइयै। १३–करियो। १४–चाहै। १५–कर। १६–मूरिख। १७–कहिये।

टिप्पणी—(१) खैं–ओर।

(२) **रोझा**–(सं० ऋश्य > प्रा० रोज्झ)–नील गाय। **सोझा**–सीधा, भोला।

(३) **हियार**–हृदय की बात।

(५) **हेला**–ठूँसा; डाला। **सरेख**–चतुर।

१७०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

अब जो दई[1] करै सो होई। चला जाँउँ पूछैं नहिं[2] कोई ॥१
पेग[3] न वन मँह हेठे[4] जाई। घन अँधियार रहै[5] बहु[6] छाई ॥२
निसि वासर कछु चीन्हें नाँही[7]। चाँद सुरुज जो देखै ताही[8] ॥३
वन मँह तीस देवस दुख किये[9]। ई[10] दुख जग मँह काहू[11] न भये ॥४
नल हूँ अइसी परी न[12] अवस्था। औ न सुनी सो[13] भरथरि कस्था ॥५
रचन सवै अयान वैन, विरंचै सो लाहु। ६
करम पुसैं सें निकसै, अँगुरि संप गयाहु[15] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) दैअ; (बी०) दइय। २–(ए०) नहि पूछो। ३–ए० ×; (बी०) पैग। ४–(ए०) हीठे; (बी०) हादे। ५–(ए०) रह; (बी०) रहा। ६–(ए०) वन; (बी०) तहँ। ७–(ए०) निसि बासर तँह चीन्हिय नाहीं; (बी०) निसि बासर किछु चीन्ह न जाई। ८–(बी०) चन्द सुर्ज सौं देखि न जाई। ९–(ए०) भए; (बी०) गये। १०–(ए०) अस; (बी०) ए। ११–(ए०, बी०) काहु। १२–(ए०) [न]लहि अैस न परी; (बी०) नलहु न ऐसी परी। १३–(ए०, बी०) ×। १४–(ए०) कासथा; (बी०) कथा। १५–(ए०) दोनों पंक्तियाँ रिक्त; (बी०) रचना सवै अयनपन, विरंच न सो लही। करम विस मैनिक से, अँगुरी साँप क एहि ॥

टिप्पणी—(२) **पेग**–पग। **हेठे**–नीचे।

(३) **नाँही**–नहीं।

(५) कस्था—कष्ट ।

(७) पुसें—पुष्ट । गयाहु—गया हुआ ।

१७१

(दिल्ली; बीकानेर)

चलत चलत बन गये[१] ओरानाँ[२] । भा उजियार देस जस जानाँ[३] ॥१
मेढ़ा छाँगर देखिसि आगैं । कहिसि कोउ[४] होइहि इँह लागे ॥२
आगे आइ जो देखी[५] काहा । एक गड़रिया है[६] चरवाहा ॥३
मन मँह कहि[७] भल भयउ[८] गुसाँई[९] । रहौं[९] दिन एक[१०] माँनुस[११] ठाँई ॥४
पहिले सुख पाछैं दुख होई । दुख किये सुख पाछे सोई[१२] ॥५
देखिसि फिरि कै जो गड़रिया[१३], मानुस कोउ[१४] एक आउ[१५] ।६
दौरि आउ[१६] आगैं कै[१७] कपटी, पाहुन कह र[१८] बुलाउ[१९] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर—

१–गै । २–ऐ` `ना । ३–जग बना । ४–कोई । ५–देखिसि । ६–आहै । ७–कहिसि । ८–भवा । ९–रहिहौं । १०–दोइ । ११—मनसे । १२–पूछि कंचनपुर मारग लेऊँ । जेहि रे दीप तेही पगु देऊँ । १३–बहुरि जो देख गड़रिया फिरि कै । १४– × । १५- आव । १६–आव । १७ कह । १८–कै । १९–बुलाव ।

टिप्पणी—(१) ओरानाँ—समाप्त ।

(२) मेढ़ा—मेष । छाँगर—बकरी । लागे—पास; निकट ।

(७) पाहुन—अतिथि ।

१७२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहसि आजु तुम्ह[१] पाहुन मोरें । भुगुति देउँ पाँ लागों तोरे ॥१
बहु दिन ऊपर जोगी आयउ[२] । करम मोर[३] आयसु मैं[४] पायउ ॥२
आजु बसे[५] घर आइ[६] हमारे । कालिह कहहु[७] जो जियैं[८] तुम्हारे[९] ॥३
जो पंथ चहहु दिहों दिखाई[१०] । अगुवा देब तहाँ[११] लेजाई ॥४
पंथ क[१२] नाँव कुँवर जो सुनाँ । भा अनन्द मन मँह दस गुना ॥५
चला लिवाइ[१३] साथ[१४] अपनैं, आगैं भा[१५] वह जाइ[१६] ।६
जिय[१७] बिस्वास करै किंह[१८] ताकर[१९], बातहिं लेतस लाइ[२०] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) तोहि; (बी०) तुम । २–(ए०) बहु दिन ऊपर पाहुन आवा; (बी०) बहुत दिना पर पाहुन आवा । ३–(ए०) हमार । ४–(ए०) जो आयस; (बी०) आइस पै । ५–(ए०) बसहु; (बी०) बसउ । ६–(ए०) आए; (बी०) आय ।

७–(ए०) कहेहु; (बी०) कहेउ। ८–(ए०) जीअ; (बी०) जीउ। ९–(ए०) तोह[रे]। १०(ए०) जो चहिहहु देहौं देखाई; (बी०) जेहि पथ जाहु सै दैउँ दिखाई। ११–(ए०) नहीं। १२–(बी०) कर। १३–(ए०) लेवाए; (बी०) लेवाय। १४–(ए०) साथ लै; (बी०) साथकै। १५–(बी०) आगु भवा। १६–(ए०) जाए। (बी०) जाय। १७–(ए०) कीव; (बी०) जिव। १८–(ए०, बी०) कहँ। १९–(ए०, बी०) तकिसी। २०–(ए०) बातन्ह लीतीन्हि लाए; (बी०) बातन्ह लिहिम संग लाय।

टिप्पणी—(१) **भुगुति**–भोजन। **पाँ**–पैर। **लागौं**–लगूँ।

(२) **आयसु**–आगन्तुक।

(४) **अगुवा**–पथप्रदर्शक। **देब**–दूँगा। **लैजाई**–ले जायेगा।

१७३

(दिल्ली; बीकानेर)

आगै जाइ दूत कै[1] कला। पाछैं निभरम जोगी[2] चला ॥१
लइके[3] खोह एक मँह पइठा। देई पिहान[4] बाहर होइ बैठा ॥२
कुँवरहि अचकर का यह कीतसि[6]। काहे कहँ र चाक मुँह दीतसि[7] ॥३
लौटि देखि जो[8] मानुस[9] तहाँ। पूँछसि[10] कौन इहाँ तुम्ह कहाँ[11] ॥४
विपरित मोंट न रेगैं[12] जाई। काह[13] खाइ[14] तुम्ह[15] रहहु[16] मुँटाई ॥५
पूछहु काह मुँटाई हम कँह, लै आयउ बोराई।६
औखद एक खियाइसि मूरी[17], तिंह रेगैं[18] न जाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–की। २–जोगी निर्भम। ३–लै कै। ४–मैं। ५–पिहना। ६–कुँवरहिं अचंभो केहि किहा। ७–काहे कहँ पिहना मुँह दिहा। ८–जो देखै। ९–मानुस है। १०–पूछिसि कौन रहहु तुम कहाँ। ११–बिपरीत। १२–रेंगा। १३–कहा। १४–खाइकै। १५–×। १६–रहेहु। १७–मूरि। १८–तेहिसे रेंग।

टिप्पणी—(१) **दूत**–(धूत) धूर्त। **कला**–कुशल। **निभरम**–निभ्रम; निःशंक।

(२) **खोह**–गुफा। **पिहान**–ढक्कन; अवरोध।

(३) **अचकर**–आश्चर्य चकित। **का**–क्या। **कीतसि**–किया।

(४) **चाक**–ढक्कन।

(५) **विपरित**–असाधारण। **मोंट**–मोटा। **रेगैं**–चल। **काह**–क्या।

(७) **मूरी**–जड़ी।

१७४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुनतहि[1] रुधिर[2] कुँवर क[3] सूखा। सुख कँह आए[4] पड़ा बड़ दूखा ॥१
भल पहुनाई कँह लै आवा। भुगुति न देतसि[5] चाहै[6] खावा ॥२

अस पहुनाई नित नित जाई। गाँठी कर[८] जीउ उहो[८] गँवाई ॥३
जिह[९] कँह साध होइ[१०] पहुनाई। सो रे[११] गडरिया के घर जाई ॥४
खाइ न देइ[१२] चाहि[१३] तिह[१४] खावा। सरग जाइ[१५] कँह पन्थ दिखावा ॥५
अस[१६] यह कैं जिय अरकहुँ[१७] आगैं[१८], आवइ[१९] यहि[२०] विस्वास[२१] ।६
जस यह पन्थिह[२२] पन्थ दिखावइ[२३], तस यह[२४] जाइ[२५] अकास ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) सुनतेहि। २–(ए०, बी०) रुहिर। ३–(ए०) कै; (बी०) का। ४–(बी०) आयेउ। ५–(ए) दीतसि; (बी०) दीहिसि। ६–(बी०) चाहिसि; ७–(ए०) गाँठी कै; (बी०) गाँठिहु करे। ८–(ए०) सोउ; (बी०) ×। ९–(ए०) जा; (बी०) जेहि। १०–(ए०) होए; (बी०) होय। ११-(ए०, बी०) रे। १२–(ए०) देए; (बी०) देय। १३–(ए०) चाह; (बी०) चहै। १४–(ए०) तेहि; (बी०) पै। १५–(ए०) जाए; (बी०) जायँ। १६–(बी०) यह। १७–(ए०, बी०) ×। १८–(ए०, बी०) आगे आवों। १९-२०–(बी०) ×। २१–(ए०) जस से किय बिस्वास। २२–(ए०) ×। २३–(ए०) देखाइसि; (बी०) देखावै। २४–(बी०) या। २५–(ए०, बी०) जाव।

टिप्पणी—(२) **पहुनाई**–आतिथ्य।
(३) **गाँठी**–गाँठका; पासका। **उहो**–वह भी।
(४) **साध**–इच्छा; अभिलाषा।
(५) **अरकहुँ**–रोक लगाऊँ।
(७) **अकास**–आकाश; स्वर्ग।

१७५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[१])

कहि के यह[१] झुरवइ[२] मन[३] लागा। एको मन्त्र न[४] चित मँह जागा ॥१
सँमुद लहर[५] सेंउ[६] दई[७] उबारा। साँप मोख दीन्हेउँ करतारा ॥२
दई[८] दिही सिधि राकस मारेउँ[९]। राजपाट छाड़[१०] सब जारेउँ[११] ॥३
फुनि अँधियारी[१२] बन मँह आयउँ[१३]। मानुस देखि कहेउँ[१४] जिय[१५] पायउँ[१६] ॥४
तैं मानुस अस किय बिसवासू[१७]। मूँदसि[२०] तहाँ न आवइ साँसू[२१] ॥५
ते[२२] जिउ[२३] लियेउ[२४] आइ[२५] सो[२६] बेरा[२७], उबरै कै नहिं आस ।६
जम सों भेंट भई अब, यहि[२८] ठाँ, कहा न मानै कास[२९] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) तौ यह। २–(ए०, बी) झुरवै। ३–(बी०) ×। ४–(बी०) नहिं। ५–(ए०, बी०) लहरि। ६–(ए०, बी०) सौं। ७–(ए०) दैअ; (बी०) दइव। ८–(ए०) दैअ; (बी०) दइव। ९–(बी०) मारा। १०–(ए०) छोड़व; (बी०) छोडैंव। ११–(बी०) जारा। १२–(१२) अँधियारे; (बी०) कदली। १३–(ए०) आवा;

१–इस प्रति में यह कड़वक १७६ के बाद है।

(बी०) आयेंउ । १४–(ए०,बी०) कहेव । १५–(ए०) जिउ; (बी०) जिव । १६–(ए०) पावा; (बी०) पायेंव । १७–(ए०) ते; (बी०) अब तेइ । १८–(ए०) कै; (बी०) कियेउ । १९–(ए०,बी०) बिसवासा । २०–(ए०, बी०) मूंदिसि । २१–(ए०, बी०) साँसा । २२–(ए०) अें; (बी०) हौं । २३–(बी०) जिव । २४–(ए०) लिअेव; (बी०) लियेव । २५–(ए०) आय; (बी०) × । २६–(बी०) × । २७–(बी०) एह वार । २८–(बी०) एहि; (ए०) तेहि । २९–(ए०, बी०) कस ।

टिप्पणी—(१) **मन्त्र**–उपाय ।

(३) **जारेंउँ**–जलाया ।

(५) **बिसवासू**–(अरबी बसवास, बिसवास) विश्वासघात; छल । (यह संस्कृत के 'विश्वास' शब्द का अपभ्रंश रूप नहीं है ।

(६) **बेरा**–बेला; घड़ी । **उबरैकै**–निकलनेका । **आस**–आशा ।

(७) **जम**–यम; काल; मृत्यु ।

१७६

(दिल्ली; बीकानेर[1])

दुख के गाँग तैरि हौं[1] आवा । मैं जानेंउ[2] अब तीर[3] जो[4] पावा ॥१
परेउँ कुण्ड गहरें मँह आई । भँवर बहुत[5] अब[6] निकसि न जाई ॥२
यह बड़ मँगर न छाड़ै[7] मोहीं । मूँदि दुआर बैठि है रोहीं[8] ॥३
बाट न आहै कै खें[9] जाऊँ । राम लखन जस सीता ठाऊँ[10] ॥४
सिय रावन जो[11] [लइगा][12] हरी । वहइ अवस्था यह[13] हम[14] परी ॥५
वैं जमकातर काढ़ी मार क[15], इन दीन्हों[16] बड़ चाक ।६
वै हनिवन्त छुड़ाए कर पर[17], हम्ह आपु सो भाग[18] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–गंग पैरिकै । २–जानों । ३–तीर अब । ४–× । ५–बहुत भँवर । ६–तहँ । ७–छोड़हि । ८–अवरोही । ९–किधं । १०–राम लखन कहँ जैसे ठाऊँ । ११–× । १२–लैगा; (दि०) लंका । १३–× । १४–हम कहँ । १५–वोहि जमकत गडरिया । १६–इन्ह दीन्हा । १७–बार कै । १८–हम नहिं सेवक एक ।

टिप्पणी—(१) **गांग**–गंगा ।

(३) **रोही**–(स० रोध) रोककर ।

(४) **कै खें**–किस रास्ते ।

(५) **लइगा**–ले गया । **वहइ**–वही ।

(६) **जमकातर**–यमकी कटारी या तलवार ।

(७) **हनिवन्त**–हनुमान ।

१–इस प्रति में यह कड़वक १७५ के पहले है ।

१७७

(दिल्ली; बीकानेर)

कौरा[1] दानौ पण्डो[2] हरी[3] । उनकहँ[4] जाइ भींउँ उपकरी[5] ॥१
सेवक द[ा*]स[6] बन्धु नहिं मोरें । सँतुरों[7] जिह[8] आवहिं[9] कर जोरें ॥२
हौं र[10] विनती दइ सेंउ करँउ[11] । दई छाड़ि[12] न अउरहिं[13] सँवरउँ[14] ॥३
दइयहि[15] सँवरत[16] होइ स होई[17] । और न सँवरों[18] का कार कोई[19] ॥४
कै सँवरों मिरगावति नेहाँ । जिह[20] दुख[21] लग सहेउ सिर महाँ ॥५
जिय महँ सदन[22] समाधि कै, लागेउ अहा जो[23] चित्त ।६
जो जिउ दीजै मिन्त[24] लगि, सेउ[25] जिउ[26] आह[27] पवित्त ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—
१–कबीर। २–पाण्डो। ३–हरेउ। ४–उन्ह। ५–उपकारेउ। ६–अस। ७–सुमिरों। ८–तोहि। ९–दुवो। १०–×। ११–दइव से करऊँ। १२–दइव छोड़ि। १३–और न। १४–सँभरऊँ। १५–दइवहि। १६–सुमिरत। १७–होउ क जोऊ। १८–सुमिरों। १९–कह कोऊ। २०–जेहि। २१–दगाध। २२–सुदिन। २३–जो अस। २४–मीन। २५–से। २६–जीअ। २७–हो।

टिप्पणी—(१) **कौरा**–कौरव। **पण्डो**–पाण्डव। **भींउ**–भीम। **उपकरी**–उद्धार किया।
(५) **नेहाँ**–स्नेह।
(७) **मिन्त**–मित्र। **पवित्त**–पवित्र।

१७८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मरें क डर[1] महँ कछू[2] न लागै । नेह[3] पन्थ मुँए पाप सब भागै ॥१
यहि[4] पंथ[5] लाग[6] जो र जिउ देई । दुहुँ[7] जग धरम मोल सों[8] लेई ॥२
वहि[9] सब कँह रखें[10] सुर देवा । जा जिउ भीत लागि बरछेवा[11] ॥३
जो पै सत हैं तो सिधि होई । दुरजन[12] दूत[13] काह[14] करि[15] कोई ॥४
संग[16] सँगाधि[17] साथ हो[18] जाही । सत संघाति[19] साथी[20] [बड़ आही[21]]॥५
सतकै[22] संग[23] साथ जो[24] आयउँ[25], सत सेंउ[26] लिह[27] छुड़ाइ[28] यदि ठाउँ ।६
सो[28] सत आह साथ बड़ मोरे, जपो[30] ताहि कर नाँउँ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—
१-(बी०) मेरे किये। २–(ए०,बी०) मोहि कुछु। ३–(ए०) अहिं; (बी०) येहि। ४–(ए०, बी०) नेंह लागि। ५–(ए०, बी०) ×। ६–(ए०, बी०) लागि। ७–(बी०) दुवौ। ८-(बी०) से। ९–(ए०) उहि। १०–(ए०) राखे; (बी०) देखहिं। ११–(ए०, बी) परछेवा। १२–(बी०) दुरिजन। १३–(ए०) दवन; (बी०) दुवा। १४–(ए०) कह; (बी०) कहा। १५–(बी०) करै। १६–(ए०) सत; (बी०) संत।

१७–(ए०) संघती; (बी०) संघाती। १८–(ए०) होए; (बी०) होय। १९–(ए०) संघती; (बी०) संघाती। २०–(ए०, बी०) साथ। २१–(दि०) भल होई। २२–(ए०) क; (बी०) के। २३–(ए०, बी) ×। २४–(ए०, बी०) हौं। २५–(ए०) आएँव; (बी०) आयेंव। २६–(ए०) × ; (बी०) सतौ। २७–(ए०) लेहु; (बी०) लीन्ह। २८–(ए०) छोडए; (बी०) छोडाय। २९–(बी०) अबहु सो। ३०–(बी०) जपत।

टिप्पणी—(३) **बरछेवा**–परित्याग कर दिया; अर्पण कर दिया।

(४) **दूत**–(धूत) धूर्त।

(५) **सँगाधि**–साथी।

१७९

(दिल्ली; बीकानेर)

मानुस बैठ जो भीतर आहे[१]। राजकुँवर कहँ देखत रहे[२] ॥१
कहँहि[३] एक बुधि सुनहु हमारी। जियँ[४] यह कैसे[५] जाइ न मारी ॥२
जौ लहि नाहिं खियायसि मूरी। जोगी सीख गहउ बुधि मोरी[६] ॥३
आइ[७] कै अवहिं एक कँह लेइह[८]। खाई भूँज न काहू[९] देइह ॥४
खाइ अघाइ फिर[१०] परि सोवा[११]। बिधि[१२] सेउ[१३] जाइ वह कै[१४] जिउ खोवा[१५] ॥५
सोवत जो वहि[१६] पावसु[१७] देखसि, लै सँडसी[१८] दगधाउ ।६
हरुवैं हरुवैं जाइ कै, वहँ आखिन महँ लाउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–मानुस भीतर जो बैठा अहा। २–रहा। ३–कहिनि। ४–जो। ५–कैसेहु। ६–जोगी सिखहु कहौं बुधि पूरी। ७–आइहि। ८–लेई। ९–(बी०; दि० मार्जिन) हाड़ो। १०–बहुरि। ११–सोवै। १२–बुधि। १३–×। १४–बोहिकर। १५–खोवै। १६–वोहि। १७–×। १९–सँड़सी लै। १९–दुहुँ।

टिप्पणी—(२) **जियँ**–जीवित।

(४) **भूँज**–भूनकर।

(५) **अघाइ**–तृप्त होकर। **परि**–पड़कर। **विधि**–तरकीब।

(६) **दगधाउ**–गर्म करो।

(७) **हरुवैं हरुवैं**–(सं० लघुक > लहुअ > लहुव > हलव > हरुव) धीरे धीरे।

१८०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

यह[१] बुधि कुँवर कै[२] मन मँह[३] छाई[४]। बात कहत हा[५] वह[६] गा[७] आई ॥१
एक जनहिं[८] धरि पटकसि[९] पुहुमीं। कुँवर देखि यह बैठउ[१०] सहमी ॥२
आगि लाइ[११] जारसि[१२] वहि[१३] काँठी[१४]। माँस भोंजि[१५] औ चावैं काँठी ॥३

हाड़ गोड़ औ खायसु माँसू। कुँवर देखि भरि आये आँसू ॥४
दिन एक हमहूँ खाइहि भूँजी। जो आगें कै निघटिह पूँजी ॥५
खाइ अघाइ पेट भरि डकरै[17], फुनि सोए[18] परि लाग ।६
ताहि[19] आगि मँह सँडसी दगधी[20], कुँवर बैठ तिंह[21] जाग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(बी०) यह रे। २–(ए०) क; (बी०) के। ३–(बी०) जिय। ४–(ए०, बी०) भाई। ५–(ए०, बी०) खुटानी। ६–(ए०) वह रे। ७–(बी०) रँगा। ८–(ए०) जबेहि; (बी०) जना। ९–(ए०) पटकिसि; (बी०) पटिकिसि। १०–(ए०) जीउ आहे। ११–(ए०) लाए; (बी०) जारि। १२–(ए०) औ जारिसि; (बी०) औ जोरसि। १३–×। १४–(बी०) काठा। १५–(ए०) भूंजि; (बी०) खाइ। १६–(ए०) चापिसि; (बी०) चाबिसि। १७–(ए०)×; (बी०) डिकरा। १८–(ए०, बी०) सोवै। १९–(बी०) वाहि। २०–×। २१–(ए०) तव; (बी०) तहँ।

टिप्पणी—(१) गा–गया।
(२) जनहि–व्यक्तिको। पुहुमी–पृथ्वी।
(३) काँठी–शरीर।
(४) हाड–हड्डी। गोड़–पैर।
(५) निघटिह–समाप्त।

१८१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सँडसी[1] दगधि आग जस[2] भई। लइकै[3] दुहूँ आँखि[4] मँह दई ॥१
लोयन[5] फूट टपक[6] दइ[7] सुनाँ[8]। जानु आगि मँह[9] पतिरा[10] भुनाँ[11] ॥२
उठा कोप कर[12] चाहिसि धरा। तौलहि कुँवर भागि कै परा ॥३
ढूँढ़ै[13] फिरि फिरि धापैं[14] देई। कुँवर क नाउँ न पाथर[15] लेई ॥४
फिरि फिरि चारेउ[16] कोन ढँढोरा। अति कै रिस[17] दाँत[18] कर तोरा ॥५
जो जस करै सो तइसै पावइ[19], बुरहा बुरहीं बात[20] ।६
जस बिसवास किये[21] मनुसैं कर[22], तस कै होउ[23] निरजात ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०) चँडसी। २–(बी०) अस। ३–(ए०, बी०) लैके। ४–(बी०) आँखिन्ह। ५–(ए०, बी०) लौतहिं। ६–(ए०, बी०) पटक। ७–(ए०, बी०) दै। ८–(बी०) सूनाँ। ९–(बी०) आगी मँह जानौं; (ए०) जनु आगी मँह। १०–(बी०) बटुरा। ११–(ए०, बी०) भूना। १२–(ए०, बी०) कै। १३–(ए०) चढ़ै। १४–(ए०) ठापा, (बी०) ढापा। १५–(ए०) आगि नहि; (बी०) पथर नै। १६–(ए०; बी०) चारों। १६–(ए०) रोस। १८–(ए०) दाँतेन्ह; (बी०) दसन। १९–(ए०,

बी०) तस पावै। २०-(ए०) बुरहे बुरही बाट; (बी०) बुरहि बुराही बाट। २१-(बी०) किये बिसुवास। २२-(ए०, बी०) कहँ। २३-(ए०) तै होहि।

टिप्पणी—(२) लोयन-लोचन; आँख।

(४) ढँढोरा-टटोला। रिस-क्रोध।

(७) बिसवास-(अरबी—वसवास) छल; कपट।

१८२

(दिल्ली; बीकानेर)

चारेउ[1] कोन ढूँढ़ि कै आवा। बौरी[2] जानु[3] धतूरा खावा॥१
कै बाउर जस बिच्छी[4] मारा। चढ़े देहि[5] बिस जै[6] कोउ झारा॥२
कुँवर कहा कछु[7] खायहु[8] मिन्ता[9]। पहुनैं कै[10] कस करहु न चिन्ता॥३
भलि[11] कै भूखहिं[12] पाहुन मारा। अब तुम्हरे कोउ आउ न[13] बारा॥४
पाहुन आन देहु झुटकाई[14]। पहुनहिं कियत तोर[15] पहुनाई॥५
पहिलैं जो पाहुन आनहु[16], पै राखहु मोंटाइ[17]।६
हमहिं आनि के भूखेहिं मारेहु[18], कछूँ[19] न दीनहु[20] खाइ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-चारिउ। २-बाउर। ३-जनौ। ४-जानौ बीछू। ५-देहु। ६-जनि। ७-किछु। ८-खोइहु। ९-मीता १०-पाहुनै की। ११-भल। १२-भूखन। १३-अब न कोइ तुम्हरे आवै। १४-आन दीन्ह छिटकाइ। १५-पाहुने की तोरी। १६-पहिले पाहुन जे आनेहु धरिके। १७-ते राखेहु मुटाइ। १८-मारेहु। १९-किछुवै। २०-दीन्हेउ।

टिप्पणी—(१) बौरी-बावला; पागल।

(२) बाउर-बावला। बिच्छी-बिच्छू।

(३) मिन्ता-मित्र।

(४) बारा-घर।

१८३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बोलि क[1] सबद कुँवर तन धावा[2]। कुँवर भागि उहि पाछैं आवा[3]॥१
धरै न पाइसि[4] हाथ मरोरा। का अब करों करम जो तोरा॥२
लै दुआरि आपु बैठेउ[5] जाई। जइहइ[6] कउने[7] बाट पराई॥३
भितरहिं सारि[8] जो[9] मारों[10] तोही। लै दुआर अब बैठों रोही॥४
जाइ दुआर सजग होइ[11] बइठा[12]। अस कै मूँदसि[13] चाँट[14] न पइठा॥५
जाहु पुरुख जो आहहु जोधा[15], कँवन[16] बाट तैं[17] जाब।६
छाड़ों तोहि न जियत[18] निगलौं[19], काँचे[20] मैं तिह[21] खाब॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) कै। २–(बी) धावै। ३–(बी०) आवै। ४–(बी०) पावै। ५–(ए०) अब बैठेव; (बी०) बैठों। ६–(ए०) जैहहु। ७–(ए०, बी०) कौने। ८–(ए०) सही। ९–(बी०, ए०) ×। १०–(बी०) मारों मैं। ११–(ए०) मै। १२–(ए०, बी०) बैठा। १३–(ए०, बी०) मूँदिसि। १४–(बी०) चाँटि। १५–(ए०, बी०) ×। १६–(ए०, बी०) कौन। १७–(बी०) तुम; (ए०) दहुँ। १८–(ए०) जियतै। १९–(बी०) धरै पाउँ नहिं छाड़ौं। २०–(बी०) काँचा। २१–(ए०, बी०) तोही।

टिप्पणी—(३) दुआरि–द्वार। जइहइ–जायेगा। कउने–किस। बाट–रास्ता। पराई–भाग।

(४) भितरहिं–भीतर ही।

(५) चाँट–चींटा।

(६) जोधा–योद्धा; वीर।

(७) काँचै–कच्चा ही।

१८४

(दिल्ली; बीकानेर)

नाँउ हमारे आग[1] न खाई[2]। अब अस मारों जियँ न जाइ[3] ॥१
पुरुख सेंउ[4] तिह[5] काज न परा। मेहरीं संउ[6] तैं खेलै खरा[7] ॥२
अब पुरुख सेंउ[8] परेउ[9] जो काजू। मारों तोहि न छाड़ों आजू ॥३
मारें हौं तो[10] मरों न तोर। कपट किहे[11] अनजानत मोरे ॥४
छाड़ों तोंही न जियत[12] खावों[13]। तब लग कितहु[14] न आओं जाओं[15] ॥५
कुँवर कहा फिर इहें[16] जिय[17] मँह[18], कवन बाट हम जाब।६
धरै पाउ न छाड़ै जियत, अलख निकर न जाब[19] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–पथर। २–(बी०; दि० मार्जिन) खाहू। ३–जी पै जाहू। ४–पुरिखन्ह सैं। ५–तौहि। ६–मिहरिन्ह से। ७–से कीन्हें खिड़करा। ८–पुरिखन्ह सौं। ९–परा। ते हौं। ११–किहेसि। १२–जियत धै। १३–खाऊँ। १४–कतहु। १५–आऊँ जाऊँ। १६–यह फुर। १७-१८ ×। १९–धरै पावै नहिं छाड़िहि, जियतिहिं हम धरि खाब।

टिप्पणी—(२) मेहरीं–स्त्री।

(४) अनजानत–अनजान में।

(७) अलख–(अलक्ष्य); बिना देखे। निकर–निकला।

१८५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

देवस[1] तीनि[2] एक बइठै[3] रहा[4]। फुनि अपुनैं[5] जिय महँ अस कहा ॥१

छागरि[1] काढ़ि देउँ[7] चरि आवँहिं । हम सेंउ[8] जाइ[9] कहाँ यहि[10] पावँहि ॥२
चाक उसास[11] जाँघ[12] दइ बइठा[13] । एक एक छागरि काढ़ै पइठा[14] ॥३
कुँवर कहा यह आहै दाऊँ । अइस[15] दाउ न पइहौं[16] काऊ ॥४
छागरि[17] मारि चाम बड़ काढ़ा । ऐंचसि[18] बहुत जो बानन्ह[19] बाढ़ा ॥५
पहिरि चाम मिलि छेरिंहि आवा[20], कहिसि निकसि अब जाँउँ ।६
दइ[21] करिह[22] सो होइह[23] निहचो[24], अबका जियहिं डराउँ[25] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) देवस । २–(बी०) तीन । ३–(ए०) वैठ; (बी०) बैठा । ४–(बी०) अहा । ५–(ए०, बी०) अपने । (बी०) छेगरि । ७–(ए०, बी०) देंव । ८–(ए०) मोहि सों; (बी०) हम से । ९–(ए०, बी०) जाय । १०–(ए०, बी०) ये । ११–(ए०) उसासि; (बी०) उठाइ । १२–(ए०) जंघा । १३–(ए०, बी०) दै बैठा । १४–(ए०) ऐंठा; (बी०) बैठा । १५–(ए०) अैस; (बी०) पुनि अस । १६–(ए०) नहिं पैहों; (बी०) न पैहै । १७–(बी०) छेरी । १८–(ए० बी०) ईंचिसि । १९–(ए०) पालहि; (बी०) पाँव लहु । २०–(ए०, बी०) × । २१–(ए०) दैअ; (बी०) दइव । २२–(बी०) करिहि । २३–(बी०) होइहि । २४–(ए०, बी०) × । २५–(बी०) डेराउँ ।

टिप्पणी—(२) छागरि–बकरी ।
(३) उसास–खोलकर ।
(५) एंचसि–खींचा ।
(७) निहचों–निश्चय ही ।

१८६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दई[1] गुसाँई[2] सिरजनहारा । येहि सेउँ मोख देहु करतारा ॥१
मिलि कै छेरिंहि[4] वहि[5] ठाँ आवा । निकसै चाह हाथ वैं[6] लावा ॥२
टोइसि कहिसि छेरि[7] न[8] होई । चाहिसि धरै निकसि गा[9] सोई ॥३
कहिसि जाहु भल[10] भाग तुम्हारी[11] । पउतेउ तैं धरै तो खातेउ सारी[12] ॥४
घर सेंउ[13] सगुनहि आहहु[14] चला । कोउ किन्हि[15] भल लागै[16] कला ॥५
कुँवर कहा अब वैसहु[17] थाकिह[18], जस र बुयउ[19] तस खाहु ।६
जस र कीह[20] तस पायहु[21], कलजुग[22] घर घर भीख मँगाहु ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) दैअ; (बी०) दइव । २–(ए०, बी०) गोसाईं । ३–(ए०) अेहिसों; (बी०) एहिसौं । ४–(ए०) छेरिअन्ह; (बी०) छेरिह । ५–(ए०, बी०) उहि । ६–(ए०) उए; (बी०) उह । ७–(बी०) छेगरि । ८–(ए०, बी) नहिं । ९–(बी०) गवा । १०–(बी०) बड़ । ११–(ए०) तोहारे; (बी०) तुम्हारा । १२–(बी०) पौतेंव धरै न छड़तेंव बारा; (ए०) पौतेव धरै तो जीअतेव बारे । १३–(बी०) सौं ।

१४–(ए०) आहै; (बी०) सगुन अहा तैं। १५–(बी०) किहेसि; (ए०) कुसल भअेव। १६–(बी०) भलि लागी; (ए०) भल लागेव। १७–(ए०) बैठहु; (बी०) बैठे। १८–(ए०) ×; (बी०) थाकहु। १९–(ए०,बी०) जस बोयेहु। २०–(ए०,बी) रे किअेहु। २१–(ए०, बी०) पायेहु। २२–(ए०) ×।

टिप्पणी—(२) **छेरिंह**–बकरी।

(३) **टोइसि**–टटोला। **छेरि**–बकरी।

(४ **पउतेउ**–पाता। **तैं**–तुझको।

(६) **बुयउ**–बोआ।

१८७

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर[१])

इहै[१] बोल कुँवर कहि चला। मगु अमगु न पूछै भला॥१
मानुस देखत[२] नियर न[३] जाई। ओहट ओहट[४] लागि[५] पराई॥२
मही न पीयइ[६] खीर जो जरा। फूँकै पाछहिं[७] अधरहिं[८] धरा॥३
जस यह मोख दयी[९] करतारा। तस अब मिरवउ[१०] पेम पियारा॥४
यह[११] बड़ कुसल दई[१२] हम[१३] किहीं[१४]। नौ कै आउ दई हम[१५] दिहीं[१६]॥५
बिबि कर बन्दों[१७] जोरि कै[१८], हौं[१९] बिधि मंगों[२०] तोहि[२१]।६
जिह[२२] कारन यह दुख सहे, सो सेइ[२३] मिरवहु[२४] मोहि॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) अेहइ; (बी०) यहइ। २–(बी०) देख। ३–(बी०) नहिं। ४–(ए०) उहरेहि उहर; (बी०) ओहरे ओहरे। ५–(ए०,बी०) लाग। ६–(ए०) पीअै; (बी०) पीवै। ७–(ए०) बाछु; (बी०) बाझ। ८–(ए०,बी०) अधर नहिं। ९–(ए०) दिहे; (बी०) दियेहु। १०–(ए०) मेरवहु; (बी०) मिरवहु। ११–(ए०) येह। १२–(ए०) दैअ; बी० दइव। १३—(ए०) मोहि; (बी०) जो। १४–ए० किहे। १५–(ए०) आजु मोहि; (बी०) बहुरि हम। १६–(ए०) दिहे। १७(बी०) ×। १८–(बी०) ×। १९–(बी०)×। २०–(ए०) मांगो बिधि; (बी०) माँगों मैं। २१–(बी०) तोही। २२–(ए०,बी०) जेहि। २३–(बी०) सहा। २३–(ए०,बी०) ×। २४–(ए०) मेरवहु अब; (बी०) रे मिलावहु।

टिप्पणी—(१) **मगु अमगु**–मार्ग कुमार्ग।

(२) **नियर**–निकट। **ओहट ओहट**–बच बचकर; दूर-दूर रहकर। **पराई**–भागना।

(३) **मही**–छाछ; दही।

(४) **मिरवहु**–मिलाओ; मिलाप कराओ।

(५) **नौ**–नया। **आउ**–आयु।

---

१. एकडला प्रति में यह कड़वक दो बार अंकित है। एकडला और बीकानेर प्रतियों में पंक्तिय ४-५ क्रमशः ५ और ४ हैं।

१८८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

करसायल[१] जनु[२] केसरि[३] पेखा। आगों[४] भाग[५] पाछों[६] फिरि देखा ॥१
कै र[७] कुरंगिन संग सेउँ[८] चौंकी[९]। कै र[१०] फँद[११] पारध[१२] कर[१३] मोंकी[१४] ॥२
सजग भयउ[१५] खिन[१६] थिर न रहाई। मानुस देखत[१७] नियर न[१८] जाई ॥३
चला जाइ[१९] सँवरत[२०] मन भावा। आगों भवन[२१] दिस्टि एक आवा ॥४
दिनियर सघन अस्त फुनि[२२] कीन्हा। चाँद[२३] परेउ[२४] उदवै[२५] मन दीन्हा[२६] ॥५
देखिसि रात सुहावन[२७] सीतल[२८], कहिसि[२९] रहौं इँह[३०] ठाँउ।६
चारि पहर दुख सुख निसिकै[३१], ओखाँ[३२] पंथ चलाउँ[३३] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) करसकेल; (बी०) करसाऐल। २–(ए०) जनि; (बी०) जनौ। ३–(बी०) केहरि। ४–(ए०) अगे; (बी०) आगू। ५–(बी०) जाइ। ६–(ए०,बी०) पाछु। ७–(ए०,बी०)रे। ८–(ए०,बी०)सै। ९–(ए०,बी०)चूकी। १०–(ए०,बी०) रे। ११–(ए०, बी०) फाँद। १२–(बी०) पारधी। १३–(बी०) ×; (ए०) कै। १४–(ए०,बी०) मूँकी। १५–(ए०) भहेव; (बी०) भा। १६–(ए०, बी०) खन। १७–(बी०) देख। १८–(बी०) न। १९–(ए०) चलत हे। २०–(बी०) सुमिरत। २१–(ए०) आगु भौन; (बी०) आगे भुअन। २२–(बी०) अस्थ बन; (ए०) दीठि फुनि। २३–(ए०) चारि। २४–(बी०) परगास; (ए०) परेवा। २५–(ए०) उदै। २६–(ए०) कीन्हा। २७–(बी०) सोहावनि; (ए०) अँधेरी। २८–(ए०)×। २९–(बी०) कहेसि। ३०–(ए०) येह; (बी०) यहि। ३१–(बी०) रात बिरम पवरी परतु। ३२–(ए०) उख; (बी०) खसख। ३३–(ए०,बी०) मिलाव।

टिप्पणी–(१) **करसायल**–मृग। **केसरि**–सिंह। **पेखा**–देखा। **आगों**–आगे। **पाछों**–पीछे। **फिरि**–घूमकर।

(२) **कुरंगिन**–हिरणी। **फँद**–जाल। **पारध**–शिकारी। **मोंकी**–खोली।

(४) **दिस्टि**–दृष्टि।

(५) **दिनियर**–दिनकर; सूर्य।

१८९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

इँहवा[१] आइ[२] जो देखी[३] काहा। मानुस पंखि[४] न एको[५] आहा ॥१
कहिसि अचम्भो यह[६] कछु[७] आही। बइठों[८] छुपि[९] कै देखउँ[१०] ताही ॥२
काकर घर आहै इँह[११] कोई[१२]। बैठि[१३] लुकाइ[१३] रहौं फुन[१४] सोई ॥३

चरचै लाग खोज यह[२५] पाये[२६]। चार परेवा अपुरुब आये[२७] ॥४
चहूँ लोटि[२८] कै भेस फिरावा। रूप इस्तिरी[२९] धरहिं[३०] सुहावा[३१] ॥५
फुनि र[३२] मन्त्र[३३] बोल[३४] दोइ[३५] बोला, सेज सौंर भल आइ[३६] ।६
अइस न[३७] जानी[३८] को[३९] लइ[४०] आवा, दहुँ को[४१] गयउ बिछाइ[४२] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) भौन; (बी०) भुअन। २–(ए०) आअे; (बी०) आय। ३–(ए०,बी०) देखै। ४–(ए०बी०) पंखी। ५–(बी०) कोई। ६–(बी०) ×। ७–(ए०,बी०) कुछु। ८–(ए०) बैठौं; (बी०) देखों। ९–(ए०,बी०) छपि। १०–(ए०,बी०) देखौं। ११–(ए०) अेह; (बी०) इह है। १२–(ए०) कोऊ। १३–(ए०) लुकाए; (बी०) लुकाय। १४–(ए०) सुनि; (बी०) पुनि। १५–(ए०) अेह; (बी०) नहिं। १६–(ए०) पाई; (बी०) पावा। १७–(बी०) आवा। १८–(ए०,बी०) लौटि। १९–(ए०, बी०) असतिरी। २०–(ए०,बी०) धरिन्हि। २१–(ए०,बी०) सुभावा। २२–(ए०) भर; (बी०) बहुरि। २३–(ए०) मता २४–(बी०) बोलिन्ह। २५–(ए०, बी०) दुइ। २६–(ए०) आए; (बी०) आय। २७–(ए०) अैसन; (बी०) आस न। २८–(बी०) जान। २९–(ए०, बी०) को रे। ३०–(ए०, बी०) लै। ३१–(ए०) को दहुँ। ३२–(बी०) गयेव बिछाय।

टिप्पणी—(१) इँहवा–यहाँ। काहा–क्या। मानुस–मनुष्य। पंखि–पक्षी। एको–एक भी।

(३) काकर–किसका।

(४) परेवा–कबूतर। अपुरुब–अपूर्व।

(५) लोटि–भूमिपर लेट इधर उधर घूमकर। फिरावा–बदला। इस्तिरी–स्त्री।

(६) सेज-सौंर–गद्देदार शय्या। भल–सुन्दर।

(७) अइस–ऐसा। जानी–जान पड़ा। लइ–ले।

१९०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मन्त्र बोल सुनकारि[१] बोलाये। चारि मोर नाचत भल[२] आये ॥१
चारों लोटि भये मनसेरू। सेज बैठि अधरन[३] गिय[४] मेरू ॥२
उर[५] कुच लाइ भुअन सेउ[६] गहहीं। आलिंगन अलवँहन रहहीं[७] ॥३
खेलहिं[८] कुरलहिं हँसहिं हँसावँहि। चारि पहर सुख रैनि[९] बिहावँहि[१०] ॥४
खेलत[११] हँसत रैनि वँह[१२] गई। कुँवरहि सब निसि डर मँह गई[१३] ॥५
भोर भये उँह धावन आवा[१४], कहिसि[१५] बैठि तुम[१६] काह ।६
वह[१७] जो[१८] गड़रिया छेरि[१९] चरवाहा, आँधर किये केहुँह[२०] आह ॥७

पाठान्तर—

१–(ए०) सिंगा जो; (दि० मार्जिन) हंकार। २–(ए०) फुनि; (बी०) पुनि नाचत। ३–(ए०) अध्रन; (बी०) अधरन्ह। ४–(ए०) कै। ५–(ए०) औ। ६–(बी०) से; (ए०) भुव दुहुँ सौं। ७–(ए०) दै आलिंगन बीरी खँडही; (बी०) आलिंगन अलौ दलमलहीं। ८–(ए०) फूदहिं; (बी०) खाडहिं। ९–(बी०) निसि रंग। १०–(बी०) पोहावहिं। ११–(बी०) बोलत; (ए०) तलत (?)। १२–(ए०) उन्हि; (बी०) उन्ह। १३–(बी०; दि० मार्जिन) भई। १४–(ए०, बी०) आए। १५–(ए०) कह; (बी०) कहेन्हि। १६–(ए०) बैठे तोह; (बी०) तुम बैठे। १७–(ए०) उवह। १८–(बी०) रे। १९–(ए०) है; (बी०) होत छेरी। २०–(ए०) कै कहै; (बी०) कियेहु काहू।

टिप्पणी—

(१) **सुनकारि**–संकेत द्वारा।

(२) **मनसेरू**–पुरुष। **गिंय**–कण्ठ।

(४) **कुरलहिं**–मनोविनोद करते हैं।

(६) **धावन**–दूत।

(७) **आँधर**-अन्धा। **केहुँह**–कोई। **आह**–है।

१९१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुनिकै यहि र[1] उड़िह[2] वै जाहीं[3]। राजकुँवर यहि[4] सुनत डराहीं[5] ॥१
वहि ठाँउ सेउँ कियउ पयाना[6]। राजकुँवर जिउ लै र[7] परानाँ[8] ॥२
फुनि वैसहिं वह[9] भागै लागा। जस र[10] गड़रिया कैं डर भागा ॥३
आगों[11] पाछैं देखत जाई। बहुरि न आवहिं[12] लाग पराई ॥४
बहुत दूरि जो आयउ[13] भागा[14]। सूरज[15] तपा[16] घाम बहु लागा[17] ॥५
तरुवर[18] एक सुहावन[19] देखिसि, बैठउँ[20] खिन[21] एक[22] छाँह।६
छाँह बैठि तरुवर कैं[23], पवन झरकि[24] फुनि[25] ताँह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) अेहरे। २–(ए०) उड़हिं। ३–(बी०) देखि उत सै कीजै खाई। ४–(ए०) अेह। ५–(बी०) कुँवरहिं अधिक बात मन भाई। ६–(ए०) उहि ठाँ सौं उन्ह किअेव पयानाँ; (बी०) निमख एक महँ किछु न जाना। ७–(ए०) रे। ८–(बी०) मर्म ठाउँ वह छाँड़ि पराना। ९–(बी०) वैसे ही। १०–(ए०, बी०) रे। ११–(ए०, बी०) आगे। १२–(बी०) आवै। १३–(ए०) आअेव; (बी०) आवा। १४–(बी०) भागी। १५–(बी०) सूर्ज। १६–(बी०)ताप। १७–(ए०) तापक हाथ यहि लागा; (वि०) लागी। १८-(ए०,बी०) तरवर। १९–(ए०,बी०) सोहावन।

२०–(ए०) कह बैठों। २१–(ए०) खन। २२–(ए०) ×। २३–(ए०) तरवर के; (बी०) तरवर की। २४–ए० पौन झरक; (बी०) पौन झुरकै। २५–बी० ×।

टिप्पणी—(२) **पयानाँ**–प्रयाण। **परानाँ**–भागा।

(५) **घाम**–धूप।

(६) **तरुवर**–वृक्ष।

(७) **ताँह**–वहाँ।

१९२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति[1] जो उहाँ[2] सेउ[3] आई। सखी सहेली पूछै[4] धाई॥१
पूछत[5] सखी कवन[6] वहि[7] आही। जैं र[8] चीर[9] तुम्ह[10] लेंउ[11] जाही[12]॥२
किह[13] कारन कहुँ[14] लेतसि[15] चीरू। बिनु संबन्ध[16] कोइ गहै न खीरू॥३
किहैं[17] खोज[18] हम सेउँ तुम रहेउ[19]। सपत आह[20] जो फुर न[21] कहेउ[22]॥४
हँसि कै[23] कहिसि सुनहु यह[24] बाता। अब न छुपाओं[25] कहउँ[26] निराता॥५
जिंह[27] दिन तुम्हरे[28] साथ होइ[29], सरवर गइउँ[30] नहाय[31]।६
तिंह[32] अगुमन[33] घर आयँहु[34] महि[35] तज[36], हौं उँहि[37] परेउ[38] भुलाय[39]॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) मिरगावती। २–(ए०) इहाँ। ३–(ए०) सौं; (बी०) तैं। ४–(ए०) पूछहिं। ५–(ए०) पूछहिं; (बी०) पूछै। ६–(ए०, बी०) कौन। ७–(ए०) उवह; (बी०) वह। ८–(ए०) रे; (बी०) जेइ रे। ९–(बी०) खीरू। १०–(ए०, बी०) तोह। ११–(ए०) लीन्हेव; (बी०) लिहेसि। १२–(ए०, बी०) चाही। १३–(ए०, बी०) केहि। १४–(ए०, बी) कह। १५–(ए०, बी०) लीतिसि। १६–(ए०, बी) सनमंध। १७–(ए०) किहि। १८–(ए०) कोंछ; (बी०) ओझ। १९–(ए०) तोह हम सौ रहहु; (बी०) हमसे तुम रहहु। २०–(बी०) आहि। २१–(ए०, बी०) नहिं। २२–(ए०, बी०) कहहु। २३–बी ×। २४–(ए०) अेह; (बी०) हम। २५–(ए०, बी०) छपावों। २६–(ए०, बी०) कहौं। २७–(ए०, बी०) जेहिं। २८–(ए०, बी०) तोहरे। २९–(ए०, बी०) हौं। ३०–(ए०) खोरैं गइउँ। ३१–(बी०) अन्हाइ। ६२–(ए०, बी०) तोह। ३३–ए० अगमनि; (बी०) अगमनहिं। ३४–(ए०) आइहुँ; (बी०) आयेहु। ३५-३६–(ए०, बी०) ×। ३७–(ए०, बी०) उँह। ३८–(ए०, बी०) परिउँ। ३९–(ए०) भुलाए; (बी०) भुलाइ।

टिप्पणी—(५) **निराता**–सविस्तार।

(७) **अगुमन**–पहले। **हौं**–मैं। **उँहि**–वहाँ।

१९३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आवत उहँउ[१] कुँवर एक देखा। जिउ वहि[२] लाग चित्र चित रेखा[३] ॥१
मिरिग छया धरि देखै लागेउ[४]। वहि[५] देखाइ[६] आगैं होइ[७] भागेउ[८] ॥२
वैं[९] मुहि[१०] देखि[११] कियउ[१२] गुहनारा[१३]। धरै न दियेउँ[१४] वियोग सँचारा[१५] ॥३
वहि र[१६] मान हौं गयउँ[१७] बिलाई। जिह[१८] सरवर तुम्ह[१९] गँइह[२०] नहाई[२१] ॥४
जिउ न रहै लुवधी हौं[२२] भई। कै मिस[२३] तुम्ह[२४] साथ लइ[२५] गई ॥५
खोरत **तुम्ह[२६] जो कहा मुहि[२७] आगै, मँदिर आह यह काह[२८]।६**
उहै[२९] मँदिर उन्ह साजा[३०], निसि दिन वैठ पन्थ हम[३१] चाह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) अहिउँ; (बी०) ही। २-(ए०) उहि; (बी०) ही। ३-(ए०) चित चितरेखा; (बी०) चित चिन्ता राखा। ४-(ए०) लागेव; (बी०) लागिव। ५-(ए०, बी०) अहि। ६-(ए०) देखाए; (बी०) देखाय। ७-(ए०, बी०) भै। ८-(ए०, बी०) भागिव। ९-(ए०) उए; (बी०) वहि। १०-(ए०, बी०) मोहि। ११-(बी०) देख। १२-(ए०) कीन्ह; (बी०) कीहि। १३-(ए०) गोहनारा; (बी०) गोहारी। १४-(ए०) देउ। १५-(बी०) संचारी। १६-(ए०, बी०) उहि रे। १७-(ए०) गइउँ; (बी०) गई। १८-(ए०, बी०) जेहि। १९-(ए०, बी०) तोह। २०-(ए०) गइहु; (बी०) गई। २१-(बी०) अन्हाई। २२-(ए०, बी०) लुबुधी। २३-(ए०) मिसि; (बी०) मिसु। २४-(ए०) तोहहि; (बी०) तुम्हहि। २५-(ए०, बी०) लै। २६-(ए०) तोहि; (बी०) तो तुम। २७-(ए०) मोहि; (बी०) हम। २८-(बी०) मँदिर जो वह आह। २९-(बी०) वहरे। ३०-(बी०) रचाया। ३१-(ए०) मम।

टिप्पणी—(१) उहँउ–वहीं।

(२) छया–छद्मवेश। धरि–धारण कर।

(३) गुहनारा–साथ। धरै–पकड़ने। सँचारा–संचार किया।

(४) बिलाई–लुप्त। गँइह–गयी थीं। नहाई–स्नानार्थ।

(५) मिस–बहाना।

१९४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

हम नहाइ[१] [उठि घर[२]] कहँ आई। वहि[३] कहँ मन्त्र दीन्हि[५] यह[६] धाई ॥१
जो र[७] गगन चढ़ि सातौं[८] धावहु[९]। चीर लिहैं विनु[१०] वहँ नाहिं[११] पावहु ॥२
वहि कैं मन्त्र गहसि[१२] हम चीरू[१३]। आपुन[१४] आनि दिहसि[१५] हम[१६] खीरू[१७] ॥३
लइके[१८] चीर छुपायसि[१९] तहाँ। ठाँव न देखौं[२०] पावौं[२१] जहाँ ॥४

पुनि रस बात किहिसि[23] रंग[24] कीजै। नारंग[25] बेऊ[26] बास[27] रस लीजै ॥५
मैं[28] वहि[29] सों अस बोला[30] यह[31] कहँ[32], जीह[33] खाँडि मरि जाउँ[34] ।६
जो यह[35] बात सँचारहु[36] परसेउ[37], तो हौं खिन न जिआउँ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—
१-(बी०) अन्हाइ। २-(दि०) घर उठि। ३-(ए०) वोहि; (बी०) उह। ४-(बी०) कहुँ। ५-(ए०) दीन; (बी०) दीन्हेउ। ६-(ए०) अेक, (बी०) ×। ७-(ए०, बी०) रे। ८-(बी०) धावा। ९-(बी०) धावसि। १०-(बी०) बाजु। ११-(ए०) उनहि न; (बी०) वहि न। १२-(बी०) लिहिसि। १३-(बी०) चीरा। १४-(ए०, बी०) आपन। १५-(ए०) दिहिसि। १६-(ए०) एक। १७-(बी०) आनि दिहिसि मोहि आपन खीरा। १८-(ए०, बी०) लैके। १९-(ए०, बी०) छपाइस। २०-(बी०) देखैं। २१-(बी०) जाई। २२-(ए०) बिन। २३-(ए०) कहेसि। २४-(बी०) रस। २५-(बी०) नार। २६-(ए०) बेइल; (बी०) बेलि। २७-(बी०) बासु। २८-(ए०) मइ। २९-(ए०) वोहि; (बी०) उन्ह। ३०-(ए०) बोल; (बी०) बोली। ३१-(ए०) ×, (बी०) एहि। ३२-(ए०) ×; (बी०) खन। ३३-(ए०) जीभ; (बी०) जीभि। ३४-(बी०) जाँव। ३५-(ए०) असि। ३६-(ए०, बी०) सँचारसि। ३७-(ए०) ×; (बी०) बरसै। ३८-(बी०) जियाँव।

टिप्पणी—(१) **मत्र**—सलाह।

१९५

(दिल्ली; बीकानेर)

फुनि मैं एक[2] बात[3] वहि[4] कही। तैं अबहीं बिरसेउँ हौं[5] वही ॥१
[जो] पर[6] करसु[8] तो र[9] जीउ दिवाऊँ[10]। रस पिय मिलौं[11] हौं र[12] तुम्ह[13] सेऊँ ॥२
कहिसि कहा न मेटौं[14] तोरा। यह र कहसि[15] औं हाथ सँकोरा ॥३
तो मैं कहा सुनहु एक[16] बाता। आवइ[17] देहु हमार सँघाता ॥४
उन्ह सेउ[18] माँग लेहु तो पावहु। तो[19] हम सेज रवन[20] रस रावहु ॥५
जो मैं कहा सो मानसि[21] हरका[22], फिर[23] न माँगसि[24] सेज ।६
माँस पाँच एक ठाँइँ अहै[25], जस सूरज दर पेज[26] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—
१-पुनि। २-×। ३-बात तो। ४-वोहि सै। ५-तौ। ६-हाँ बर सेउ। ७-बर। ८-करहु। ९-रे। १०-देऊँ। ११-रस पेमी लो। १२-×। १३-तुम। १४-मेटों नाहिं। १५-यहै कहिसि। १६-यह। १७-आवै। १८-उन। १९-तोरे। २०-रवनि। २१-मानिसि। २२-×। २३-बहुरि। २४-माँगिसि। २५-ठाउँ आये हैं। २६-जस मन दिया तेल।

टिप्पणी—(३) **मेटों**–मिटाऊँ । **सँकोरा**–संकुचित कर लिया; खींच लिया ।
(४) **सँघाता**–साथी ।
(५) **रवन**–रमण ।
(६) **हरका**–पीछे हटा ।

१९६
(दिल्ली)

फुनि बैठि कहँ वतैं बढ़ावा। गयउ छाड़ि छिन एक पावा ॥१
धाइ एक हम राखसि राँधा। मैं उहिं सों बातहिं जिउ बाँधा ॥२
बातहिं लाइ मैं र बोराई। काज करै कै अन्त पठाई ॥३
तौलहि चीर ढूँढ़ मैं लिया। पहिर चीर धारेउ नौ तिया ॥४
नाउँ धाइ सों पिता क लीन्हों। अउर चिन्ह कंचनपुर दीन्हों ॥५
औ अस कहेउँ जो कुँवर सेंउ, जो लुबधी हम पेम।६
कंचनपुर आवइ हम लग, उहै औधि इह नेम ॥७

टिप्पणी—(१) **बतैं**–बातैं ।
(२) **राँधा**–पहरेदार ।
(३) **अन्त**–अन्यत्र । **पठाई**–भेजा ।
(४) **तौलहि**–तबतक ।
(७) **नेम**–संकल्प ।

१९७
(दिल्ली)

जो कुछ अहा मरम सो कहा। लुबुधा जिउ अब जाइ न रहा ॥१
जेहि का मरम कहेउँ तुम्ह आगे। आइहि इहाँ हमरेउ लागे ॥२
कहा सहेलिंह जो अस आहा। तवहीं काह न हम सेउ कहा ॥३
उन्ह मँह एक जो अही सयानाँ। खेलसि पेम कहै भल जानाँ ॥४
कहिसि पेम का जानसि भोली। हौं तिह कहौं पेम रस घोली ॥५
घिरत खाँड सेउ करहु मेरावा, अमिय महारस लेहि।६
पेम भुअंगम कसि हिय कह, गई छाड़ न देहि ॥७

टिप्पणि—(२) हमरेउ–मेरे । लागे–निकट ।

१९८
(दिल्ली)

जो तुम्ह आह पेम कै साधा। आपु खाँड करहु दोइ आधा ॥१
पेम सवाद सोइ लै बूझा। आपु मींत अहै ये सूझा ॥२

वहँ हरख वस पेम न होई। जिउ जो देइ पावइ सोई ॥३
पेम उतंग ऊँच कर आहा। बाउर सोइ जो बिनु दुख चाहा ॥४
पेम खेल जो चाहै खेला। सर सेंउ खेल जिउ पर हेला ॥५
कुतुबन कंगूरा पेम का, ऊँचा अति र उतंग।६
सीस न दीजै पाउ तर, कर न पहुँचै खंग ॥७

टिप्पणी—(१) साधा–इच्छा।
(३) उतंग–उत्तुंग, ऊँचा।

१९९

(दिल्ली; बीकानेर)

पिरिति[१] किही तिंह[२] करै न जानीं। पेम लाइ कस भयसि[३] अयानी ॥१
जो र मिरग[४] बाउर[५] पर[६] फाँदै। छाड़ि बहेलिया[७] बिनु वह बाँधै[८] ॥२
बाउर सोइ जो हाथ[९] से छाड़ा[१०]। पेम भँवर[११] थिर रहै न गाढ़ा[१२] ॥३
पेम जो आह बहुत दुख पाई। दुख कै मिलै सो संपत उड़ाई[१३] ॥४
अबहूँ खोज परहुँ[१४] वह केरैं[१५]। जिय न[१६] जाइ सो[१७] मिलै[१८] सोबेरैं[१९] ॥५
ऐसहिं आगि जरत हैं[२०] उर मँह,[२१], मैं मेलेउ घिउ तेल[२२]।६
पेम गहँन[२३] सब खेल सेंउ, जो र सँभालै[२४] खेल ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–प्रीति। २–तुम। ३–भइहु। ४–म्रिगा। ५–बाव। ६–परै। ७–बहेली। ८–तेहि बिनु छाँडे। ९–हाथै। १०–छाँड़ै। ११–भाव १२–गाड़े। १३–पूरी पंक्ति नहीं है।[१] १४–करहु। १५–वोहि केरा। १६–जीवन। १७–फुनि। १८–मेलै। १९–सबेराँ। २०–अही। २१–महि। २२–तुम्ह मेलेउ दिया तेल। २३–कठिन। २४–सँभारै।

टिप्पणी–(१) अयानी–अज्ञानी।

२००

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पेम आइ किंह[१] रहै सँभारा[२]। गहे नेह आपु नाँहि सँहारा[३] ॥१
कै[४] उपकार करहु[५] जो पारहु। प्रान पयान करत र[६] संभारहु ॥२
भई[७] असाध जो र[८] उपचारा[९]। रुगिया तिह र[१०] बैद का करा[११] ॥३
मिरगावत सेउँ[१२] कहहिं सहेलीं। देवस चार एक रहहु दुहेलीं ॥४
भूखैं अम्ब[१३] न पाकै बारा। दिन दस बूझि[१४] करहु सहारा[१५] ॥५

१—सम्मेलन संस्करणमें इस पंक्तिके लुप्त होने की बात कही गयी है। किन्तु माताप्रसाद गुप्त-का कहना है कि बीकानेर प्रति में यह पंक्ति है। (भारतीय साहित्य, वर्ष ८ अंक ३, पृ० ९०)

दिन दस तुम र[16] सहारहु[17] हम उटवहिं उपकार ॥६
हँस दमावति सेउँ नल[18] मिरवहि,[19] करकर होइ[20] उजियार[21] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) प्रेम आय कहँ। २–(बी०) पेम आय मन परेउ खभारा। ३–(ए०) किहे नेह अब नाहि सहारा; (बी०) यह जिउ मैं अब तुम्हहिं उभारा। ४–(ए०, बी०) कुछु। ५–(बी०) करै। ६–(ए०) जो; (बी०) ×। ७–(ए०) भैअ; (बी०) मुये। ८–(ए०,बी०) रे। ९–(ए०, बी०) उपचारा। १०–(ए०) रोगिया तेहि रे; (बी०) सो रोगिया। ११–(बी०) करई। १२–(ए०,बी०) मिरगावती सौं। १३–(ए०) आँब; (बी०) अब। १४–(ए०) बूझहु। १५–(ए०) सभाँरा; (बी०) अहारा। १६–(ए०, बी०) तोह रे। १७–(बी०) सहरहु। १८–(ए०) सौं नल; (बी०) नल जेउँ। १९–(ए०,बी०) मेरवहि। २०–(ए०) होए; (बी०) होय। २१–(ए०,बी०, दि० मार्जिन) अधार।

टिप्पणी—(३) **असाध**–असाध्य।

(३) **दुहेलीं**–दुःखी।

(५) **अम्ब**–आम। **पाकै**–पके। **बारा**–बाग। **बूझि**–समझकर।

२०१

(दिल्ली; बीकानेर)

रूप मुरारि[1] भइ पुरि[2] आसा। कीत[3] पयान गये कबिलासा ॥१
वै तो सुरपति सभा सिधारे। मंती[4] लोग मतैं बैठारे[5] ॥२
पूत नाहिं[6] जिह[7] राज उभारी। कहहु काह[8] किह[9] तिलक सँवारी[10] ॥३
मंती[11] लोग मतैं[12] अस आवा। मिरगावतिह[13] राज बैठावा[14] ॥४
तिलक सारि[15] कै कियउ जुहारू[16]। मिरगावतिह[17] राज दइ भारू[18] ॥५
आन[19] भई सब देस नगर[20] मँह, मिरगावति कर[21] राज ।६
महतैं नेगी आइ[22] जहवाँ लहि[23], लागि सँवारैं[24] काज ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति–

१–रूपमुररिंह। २–परि। ३–किता। ४–महते। ५–बैसारे। ६–न आहि। ७–जेंहि। ८–केहि। ९–कैंह। १०–सारी। ११–महतै। १२–मता। १३–मिरगावती कह। १४–बैसावा। १५–साजि। १६–कियेउ जुहारा। १७–मिरगावती। १८–दिय भारा। १९–आनि। २० ×। २१–मिरगावती का। २२–अहे। २३–जहाँ लहु। २४–लगे चलावै।

टिप्पणी—(१) **भइ**–हुई। **पुरि**–पूरि। **कीत**–किया। **पयान**-प्रयाण। **कबिलासा**–स्वर्ग।

(२) **वै**–वे। **सुरपति**–इन्द्र। **मंती**–मन्त्री।

(३) उभारी–ऊपर उठायेगा ।
(५) सारि–सजाकर । जुहारू–अभिवादन ।
(६) आन–ख्याति, प्रसिद्धि ।
(७) महतैं–(महत्) बड़ा, श्रेष्ठ । माताप्रसाद गुप्तने मधुमालतीमें इसको महामात्य (महँत> महँता> महामात्य) बताया है और शिवगोपाल मिश्रने इसका अर्थ प्रधान मंत्री किया है । किन्तु इसका तात्पर्य किसी पद विशेषसे न होकर राज्यके उच्च कर्मचारियोंसे है । नेगी–साधारण कर्मचारी । जहवाँ लहि–जहाँ तक ।

२०२

(दिल्ली; बीकानेर)

पुन धरम सब देस चलावा । धरमसार[1] बहु नगर[2] उचावा ॥१
अग्या पौ भोजन कै[3] भई । जोगी जंगम जो आवई ॥२
पन्थी जो ईंह पँथ चल आई[4] । हम कहँ गुदर[5] देह तो जाई[6] ॥३
जती सन्यासी जो कोउ[7] आवइ । बात सुने कहँ पास[8] बुलावइ ॥४
पहिलैं पूछहि अउर कछु[9] बाता । पुनि[10] चन्द्रागिरि[11] कुसल नवाता[12] ॥५
दुनि[13] कै चाह लेत दिन कह[14], पूछै[15] कोइ[16] आइ को जाइ ।६
आसा[17] लुबुधीं पूछइ सो वहँ,[18] मकुँह मिलै वह आइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–धर्मसार । २–एक नीक । ३–अन भोजन पौ की । ४–जती सन्यासी जोगी जो आवइ । ५–गूदर । ६–जावइ । ७–जोगी जो । ८–कहुँ राध । ९–और किछु । १०–पुनि । ११–चंदागिरि । १२–कुसलाता । १३–दिन । १४–रहई । १५–× । १६–को । १७–अस । १८–पूछै पंथ कहुँ । १९–मकहुँ ।

टिप्पणी(१) पुन–(पुन्न) पुण्य । धरमसार–धर्मशाला । उचावा–निर्माण कराया ।
(२) अग्या–आज्ञा । पौ–पय, पानी । भई–हुई ।
(३) गुदर–सूचना ।
(६) दुनि–दुनिया । चाह–जानकारी ।
(७) मकुँह–कदाचित् ।

२०३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर जो छाँह बिरिख तर[1] आहा । कहसि जाँउँ[2] बैठों अब[3] कहाँ ॥१
उठत दीठि[4] ऊपर कहँ गई[5] । डालिंह पंखि दोइ बोलई[6] ॥२
पेम कथा उन्ह सुरस[7] सँचारी । कुँवर कान दइ[8] बात उन्हारी ॥३
दोउ[9] आपु मँह बकतहिं बाता । कुँवर एक मिरगावति राता ॥४

अबलहिं वैं र[१०] बहुत दुख देखी[११] । गागर[१२] मसि न जाहिं लेखी[१३] ॥५
अब र[१४] अलप दिन आहहि[१५] दुखकै[१६], सुख देखिह[१७] बहु भाँत[१८] ।६
बहुरे बिबि घर[१९] चलि गये[२०], अब होइहि मन साँत[२१] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) की । २–(ए०, बी०) चलौं । ३–(ए०, बी०) अब बैठों । ४–डीठि । ५–(बी०) चलै जो ऊपर परि गई डीठी । ६–(ए०) डारी पंखी दुइ बोलै लई; (बी०) डारि पंखि दुइ बोलैं बैठी । ७–(ए०) उन्हि सुरस; (बी०) रसारस । ८–(ए०,बी०) दै । ९–(ए०, बी०) दुवौ । १०–(ए०) उए रे; (बी०) उइँ रे । ११–(ए०) देखे; (बी०) देखा । १२–(बी०) कागर । १३–(बी०) जाइ नहिं लेखा; (ए०) पैहे पेंम प्रान सरेखे । १४–(ए०, बी०) रे । १५–(बी०) अहहिं । १६–(ए०) × । १७–(बी०) देखी । १८–(ए०, बी०) भाँति । १९–(बी०) बहुत बिब खर; २०–(ए०) बहुत दुख उन्ह देखे । २१–(ए०,बी०) साँति ।

टिप्पणी—(१) **बिरिख**–वृक्ष । **तर**–नीचे ।

(२) **दीठि**–दृष्टि । **डालिंह**–डालीपर । **बोलई**–बोलते हुए ।

(५) **गागर**–घड़ा । **मसि**–स्याही ।

(६) **अलप**–(अल्प) थोड़ा ।

२०४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर बात यह सुनी सुहाई[१] । भा अनन्द अस कही[२] न जाई ॥१
मरत पियास पानि जनु[३] आवा[४] । पेम घाइ[५] उन्ह औखद[६] पावा[७] ॥२
जनु[८] दालदि[९] लछ[१०] बहु पाई । खिन खिन[११] रहसै अंग न समाई ॥३
फुनि[१२] तरुवर सेउँ पंखि[१३] उड़ानी । कुँवर कहा अपनैं मन जानी ॥४
अब[१४] जिह[१५] दिसि ये[१६] जाहिं उड़ाई । हमहु पाछु[१७] उन्ह लागहु[१८] धाई ॥५
चला पाछु[१९] उन्ह[२०] केरे धावत[२१], सरग नैन दोइ[२२] लाइ ।६
काम दगध[२३] साँचे[२४] जन भौं[२५], तिह[२६] गये[२७] सो पन्थ दिखाइ[२८] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) सोहाई । २–(ए०, बी०) कहा । ३–(ए०) जनि; (बी०) जनौ । ४–(ए०, बी०) पाव । ५–(ए०) घाव । ६–(ए०) उन्हि औखद; (बी०) औखद जनौ । ७–(ए०, बी०) लावा । ८–(बी०) जानहु । ९–(ए०) दारिद्री; (बी०) दलिद्री । १०–(बी०) लंछ । ११–(ए०, बी०) खन खन । १२–(ए०) अभी; (बी०) पुनि । १३–(ए०,बी०) सौं पंखी । १४–(ए०) जोव अे । १५–(ए०, बी०) जेहि । १६–(ए०) × । १७–(बी०) पाछू । १८–(ए०) लागहि । १९–(बी०) पाछू । २०–(बी०) उन्हि । २१–(ए०, बी) × । २२–(ए०, बी०) दुई । २३–

(ए०, बी०) दगधि । २४-(ए०) साचहिं; (बी०) जरि । २५-(ए०) जन गये; (बी०) फूटहिं । २६-(ए०, बी०) × । २७-(बी०) गई । २८-(ए०, बी०) देखाय ।

टिप्पणी—(३) दालदि-दरिद्र । लछ-लक्ष; लाख ।

(५) **हमहु**-मैं भी । **पाछु**-पीछे ।

(६) **धावत**-दौड़ते हुए । **सरग**-स्वर्ग; यहाँ तात्पर्य है—ऊपर ।

२०५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चला जाइ मारग इक[1] पावा । कहिसि जाँउ यँहि मारग धावा ॥१
आगों[2] दिस्टि परी लखराऊँ । कहिसि गाँउ[3] होइहि यहि ठाँउँ ॥२
गहगहाइ खिन खिन जिउ रहई[4] । कहसि कंचनपुर इहवै अहई ॥३
गैठि देखि लखराउँ सुहाई[5] । पाँत[6] बराबर चहुँ दिसि लाई ॥४
पात घास[7] कै चिन्ह[8] न पाई[9] । भात बखीर[10] जानु तिह[11] खाई[12] ॥५
रूपा[13] ढारि जानु[14] भुइ राखी, ऊँच न कितहू[15] खाल ।६
एक एक रूख सँवारहि बैठे[16] चँर-चँर[17] पँच-पँच माल ॥७

पाठान्तर-एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०) एक । २-(ए०) आगू; (बी०) आगे । ३-(बी०) गाँऊँ । ४-(ए०, बी०) उठई । ५-(ए०, बी०) सोहाई । ६-(ए०, बी०) पाँति । ७-(ए०, बी०) घास पात । ८-(ए०, बी०) चिन्ह । ९-(ए०) पाइय । १०-(ए०, बी०) बखेरि । ११-(बी०) तहाँ जनौ । १२-(ए०) खाइय । १३-(ए०, बी०) रूप । १४-(ए०) जनु; (बी०) जनौ । १५-(ए०, बी०) कतहू । १६-(बी०) × । १७-(ए०) चरि चरि; (बी०) चारि चारि ।

टिप्पणी—(२) **लखराऊँ**-लक्षाराम; ऐसा बगीचा जिसमें लाख वृक्ष हो ।

(३) **गहगहाइ**-गद्‌गद् । **खिन खिन**-क्षण-क्षण । **इहवै**-यही । **अहई**-है ।

(५) **भात**-चावल । **बखीर**-खीर ।

(६) **रूपा**-चाँदी । **ढारि**-ढालकर । **खाल**-नीचा ।

(७) **रूख**-वृक्ष । **चँर-चँर**-चार-चार । **पँच पँच**-पाँच-पाँच । **माल**-माली ।

२०६

(दिल्ली; बीकानेर[1])

जँह लग बिरिख[1] जगत मँह आहे[2] । देखी सभै जाइ न[3] कहे ॥१
जो हम स्रवन[4] सुने न[5] काऊ । नाँउ कहाँ लहि[6] कहाँ सुभाऊ ॥२

---

१. इस प्रतिमें आरम्भकी तीन पंक्तियोंके साथ चार सर्वथा भिन्न पंक्तियाँ हैं जो हमारी दृष्टिमें प्रक्षिप्त हैं । इस प्रतिका पाठ दिल्ली प्रतिके मार्जिनमें भी है ।

फुनि[7] माली[8] फुलवारि सँवारी। बहुत फूल फूलीं[9] फुलवारी ॥३
भँवर कुसुभँ पर केलि कराहीं। मालति बेलि नेवारिन जाईं[10] ॥४
कुन्द सेवती जूही रावइ। बाला चम्पा बारि मनावइ[10] ॥५
सिरखँड सरबत बनो पकारू, मो इत **दौनहि** लाउ[10] ।६
मारो झरै हँसाइ हिय, **नाँहुत मनहि** सराउ[10]॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—
१–ब्रिख। २–अहे। ३–नहिं। ४–स्रवन। ५–नहिं। ६–लहु। ७–पुनि। ८–मालिहु। ९–फूले। १०–परिशिष्ट १ मे देखिये।

टिप्पणी—(१) **बिरिख**–वृक्ष। **सभै**–सभी।
(२) **सवन**–श्रवण। **काऊ**–कोई। **नाँउ**–नाम। **सुभाऊ**–स्वभाव।
(४) **कुसुभँ**–कुसुम। **मालती**–सफेद रंगका फूल। **बेलि**–(बेइल–बेला) सफेद रंगका सुगन्धियुक्त फूल जो गरमीमें फूलता है। इसकी अनेक किस्म होती हैं—मोतिया, मोगरा, रामबेल। मोतियाको माधवी भी कहते हैं। इसकी बाला लोगोको विशेष प्रिय हैं। बेलिका तात्पर्य बेलीसे भी हो सकता है जो लाल फूलोंवाली एक लताका नाम है। **नेवारिन**–(नेवारी) श्वेत फूल जो चैतमें फूलता है। सम्भवतः यह बेलाका एक किस्म है।
(५) **कुन्द**–सफेद रंगका छोटा सुगन्धियुक्त फूल जो अगहन-पूसमें फूलता है। कवियोंने प्रायः दांतोंके उपमानके रूपमें इसका उल्लेख किया है! इसका झाड़ होता है। **सेवती**–(सं० सेमन्ती अथवा शतपत्रिका>सयवत्तिया>सइउत्तिया>सेउत्तिया>सेवती) सफेद गुलाब। अबुलफज्लने इसे रायबेलसे मिलता-जुलता एक पत्तेका फूल बताया है। इसके पौधेमें एक साथ इतने फूल आते हैं कि वह ढँक जाता है। **जूही**—(स० यूथिका; यूथी) यह भी सफेद रंगका फूल है। अबुलफज्लका कहना है कि यह तीन सालपर फूलती है। यह पेड़से लिपटकर बढ़नेवाली लता है। **चम्पा**—सुनहले रंगका तेज सुगन्धवाला फूल जो चैत्रमें फूलता है। इसका १०-१२ फुट ऊँचा वृक्ष होता है। कवियोंने नारी शरीरके रंगके उपमानके रूपमें प्रायः इसका उल्लेख किया है। कवि प्रसिद्धि है कि भौंरा इस फूलपर नहीं बैठता। यह भी कवि प्रसिद्धि है कि यह स्त्रियोंके हाथसे पुष्पित होता है।
(७) **दौनहि**—(दौना) तुलसीकी जातिका पौधा जिसकी पत्तियोंमें सुगन्धि होती है।
(७) **नाहुँत**—नहीं तो; अन्यथा। **मनहि**–मनमें।

२०७

(दिल्ली; बीकानेर)

चुनहिं[1] केतकी पाँडर[2] करनाँ[3]। केवइ हेत[4] वाजहिं[5] जनु वरनाँ[6] ॥१
कहै चँवेली भँवरहिं पाऊँ[7]। नागेसर पर फूल चढ़ाऊँ ॥२
भुइँचम्पा[8] भुँइ रहा लजाई। जो गुलाल को जाकी[9] आई ॥३
पाँच बान कामथ कर तहाँ[10]। कनकबेल[11] फूली है जहाँ[12] ॥४
कुसुम[13] फूल कहँ[14] कोइ न मानै[15]। भसल कीर सोर तिंह सानै[16] ॥५
कौतुक देखि भुलानेउ कुँवरा[17], नित बहार[18] फुलवारि ।६
धनि जिउ मधुकर कै[19], बिरसै बास माँत बिकरार[20] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–जहाँ। २–पंडर। ३-कर्ता। ४–केवहिं हेतु। ५–बाजु। ६–जेहमर्ना। ७–राऊ। ८–चम्पक। ९–कुंजल। १०–चम्प नगर मधुकर है जहाँ। ११–कनिक पियरि। १२–तहाँ। १३–कुसुभी। १४–कर। १५–जाना। १६–भसल कीरत रहा जो माना। १७–कुँवर। १८–अस्तल भइ। १९–कर। २०–बासु मालती करारि।

टिप्पणी—(१) **केतकी**–सफेद रंगका भीनी सुगन्धि वाला फूल जो आश्विनमें फूलता है। यह तलवारकी आकृतिका मोटा और नुकीला होता है। भ्रमरका केतकीके काँटेमें फँसना कवि-समय रहा है। **पाँडर**–(पाँडल) यह कोई अप्रसिद्ध फूल है। यद्यपि इसका उल्लेख सूरसागरमें मिलता है (३५२१)। अबुलफ़जल-के कथनानुसार यह पाँच-छ लम्बी पंखुड़ियोंवाला फूल है जिससे जलको सुगन्धित करते हैं। यह हर मौसममें फूलता है। **करनाँ**–हिन्दी शब्दसागरके अनुसार सफेद फूलोंवाला पौधा जिसके पत्ते केवड़ेकी तरह लम्बे किन्तु बिना काँटोंके होते हैं; सुदर्शन। आइने अकबरीमें इसे बसन्तमें फूलनेवाला सफेद फूल बताया गया है।

(२) **चँबेली**–चमेली। सफेद रंगका फूल। इसे संस्कृत में जाती अथवा मालती कहते हैं। **नागेसर**–(सं० नागकेसर) बसन्तमें फूलनेवाला लाल फूल जिनमें पाँच पंखुड़ियाँ होती हैं।

(३) **गुलाल**–अबुलफ़जलके कथनानुसार बसन्तमें फूलनेवाला फूल।

(४) **पाँचबान**–पंचबाण; कामदेवका अस्त्र। **कामथ**–कामदेव।

(७) **मधुकर**–भ्रमर। **बिकरार**–(फा० बेकरार) विकल।

२०८

(दिल्ली; बीकानेर)

ऐसी[1] फुलवारी आह[2] सुहाई। देखत रहा[3] कहे[4] न[5] जाई ॥१
सबै फूल परिमल[6] कै कहैं[7]। औ परिमल बिनु ते सब अहैं[8] ॥२

सदल[1] सरूप फूल[10] वहु[11] फूले। भँसल बास रस जिह कँह[12] भूले ॥३
वहुत पुहुप को जानै नाऊँ। देखत रहा अपूरब ठाऊँ ॥४
जे र[13] फूल देखे औ सुने। कवि जो सुहानी[14] ते सब कहे ॥५
जे[15] कवि आइ समानी जातो[16], सरबस कहेउँ बिरवान[17]।६
और फूल बहु आहहिं[18] जग महँ; तिंह क[19] नाँउ को जान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–अस। २–अही। ३–रहै। ४–कहै। ५–ना। ६–अमिय। ७–कर अहै। ८–कहे। ९–सुदल। १०–फूल सरूप। ११–सब। १२–जेही। १३–जोरे। १४–समाने। १५–जो। १६–समाने जाने। १७–(दि० मार्जिन) सरबस बरन के ते बिरवान; (बी०) सो सराहे परवान। १८–अहे। १९–तिन्ह कर।

टिप्पणी—(२) **परिमल**–सुगन्ध।

(३) **भँसल**-बसा हुआ। **बास**–गन्ध।

(६) **सरबस**-सभी। **बिरवाँन**–पौधे।

२०९

(दिल्ली; बीकानेर)

आगों[1] आइ जो देखी[2] बाईं। रहँट चलहिं सींचहि अँबराईं ॥१
कूँआ पानि गुन बाच[3] न देहीं। जिह कर गुन ते भरि भरि लेहीं ॥२
सरब सुनै कर देखिसि कोटा। कहिसि कंचनपुर इहवै[4] खोंटा ॥३
चित कै[5] चोर आहँहिं[6] यहिं[7] गाँऊँ। पायेउ खोज सोइ[8] यहिं[9] ठाऊँ ॥४
पूछउँ लोगहिं दइ पहुँनाई[10]। घरों जाइ जैसहिं नियराई[11] ॥५
कहिसि पूछि कै[12] लोगहिं देखउँ[13], नगर कउन इह आह[14]।६
जो हो यह कंचनपुर को कोटा, फिरउँ लेउँ वह चाह[15] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–आगे। २–देखै। ३–बाजु। ४–यहवै। ५–का। ६–अहै। ७–इहि। ८–सोरे। ९–×। १०–देस पताई। ११–जैसे न पराई। १२–×। १३–देखउँ लोगन्ह कहँ। १४–कवन नाउँ एहि गाँउ। १५–जो इह होइहिं कंचनपुर साँचेहु, खोज लेउँ उहि जाइ।

टिप्पणी—(१) **आगों**–आगे। **बाईं**–वापी; कुआँ। **रहँट**–पानी निकालनेका यन्त्र। **अँबराईं**–आम्राराम; आमका बगीचा।

(३) **सरब**–सर्व; सभी। **सुनै**–सोना। **कर**–का। **कोटा**–कोट। **खोंटा**–दुर्गुणी।

२१०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँआ तीर आही[1] पनिहारी। पूछों नगर को र पतिभारी ॥१
कुँआ तीर आयउ र[2] सुजाना। पनिहारिंह[3] कँह देखि भुलाना[4] ॥२

जिह र गाँउ मँह[4] अइस[5] पनिहारीं। राजकुँवरि कस[6] होहिंह[7] बारीं[8] ॥३
सिंघल दीप इहँहि जनु[9] आवा[10]। पदुमिनि रूप बिसेखहिं[11] भावा ॥४
पूँछिसि कवन नगर इह[12] आही। राजपति[13] यहि[14] बोलहिं काही ॥५
कहहिं[15] राज मिरगावति कर[16], औ[17] कंचनपुर जग भान।६
जोगी जती संन्यासी[18] आवइँ[19], तिहि क[20] इहाँ बड़ मान ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) अही। २–(ए०) आयेव रे; (बी०) आयेव। ३–(ए०) पनिहारिन्ह। ४–(ए०) लोभाना। ५–(ए०) जेहि रे गाँव हहि अस; (बी०) जेहि रे गाँव महिं ऐसी। ६–(बी०) कसि। ७–(ए०) होइ; (बी०) होइहि। ८–कुआरी। ९–जनु इहँवै। १०–(ए०, बी०) छावा। ११–(ए०) बिसेखी; (बी०) बिसेखैं। १२–(ए०) कौन नगर यह; (बी०) नगरु कौन वह। १३–(बी०) राजापति। १४–यह। १५–(ए०, बी०) कहिन्हि। १६–(ए०) केर; (बी०) केरा। १७–×। १८–(बी०) सन्यासी जो। १९–(ए०) आवैं; (बी०) आवहिं। २०–(ए०) तेहि क; (बी०) तिन्ह कर।

टिप्पणी—(१) पति–स्वामी।

(२) बारीं–बाला।

(४) सिंघल दीप–सिंहल द्वीप। पदुमिनी–पद्मिनी जाति की स्त्री। बिसेखहिं–विशेष; अधिक।

(५) राजपति–राजा।

(६) भान–प्रकाशमान।

२११

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

मिरगावँति सुनि जिउ[1] रहसाई। कामाँ जनु[2] माधोनल[3] आई[4] ॥१
बिहसा[5] नाउँ[6] सुनत मिरगावति[7]। नल[8] जानो[9] भेंटी र[10] दमावति[11] ॥२
कहिसि[12] जाउँ अब नगर मझारीं। मकुहि[13] चाह कोउ[14] कहै हमारी[15] ॥३
चलिके कुँवर पँवरि नाँघि[16] जो आवा। कनकपात[17] सब रतन[18] जड़ावा[19] ॥४
फुनि जो आयउ[20] नगर मँझारी। बैठि[21] नरिन्द महाजन भारी[22] ॥५
छतीस कुरी बनजार खुदाई, औ छाई बैपारि[23]।६
मण्डप[24] देखि धौराहर देउर[25], पाप झरें सब छारि[26] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(का०) जिअ। २–(बी०) जनौ। ३–(का०) माधवानल। ४–(का०, बी०) पाई। ५–(का०) बिहँसि। ६–(का०) नाम। ७–(बी०, का०) सुनि मिरगावती। ८–(का०, बी०) नलु। ९–(का०) जनु। १०–(का०, बी०) ×। ११–(का०, बी०) दमावती। १२–(का०, बी०) कहेसि। १३–(बी०) मकहु। १४–(बी०)

कोई। १५–(का०) बैसे नरिंद महाजन भारी। १६–(का०, बी०) ×। १७–(बी०) कनिक ईंट; (का०) कनक पत्र। १८–(का०) जनु। १९–(बी०, का०) जरावा। २०–(बी०) आवै। २१–(बी०) बैठे। २२–(का०) पूरी पंक्ति का अभाव। २३–(बी०) बहु बनिजारे खाँभइ छाये, छत्तीसौ कुरी व्यौपारि; (का०) छत्तिस कुलि बनिजारा, बैसे करहिं बैपार। २४–(का०,बी०) मंदिर। २५–(बी०) देव; (का०) ×। २६–(बी०) देखत पाप झरि जाइ; (का०) पाप हरइ सब झार।

टिप्पणी—(१) काँमा–कामकन्दला। माधोनल–माधवानल। कामकन्दला–माधवानल एक प्रसिद्ध प्रेम-कथा है। यह कथा इस प्रकार है—पुष्पावती नगरमें कामसेन (गोपीचन्द)के राज्यकालमें माधव नामक एक सुन्दर ब्राह्मण रहता था। उनके रूप सौन्दर्यपर वहाँकी सभी नारियाँ मुग्ध थीं। इस कारण राजाने उसे अपने राज्यसे निकाल दिया। वह घूमता-घामता अमरावती (कामावती) पहुँचा। वहाँ वह प्रवेश द्वारपर ही रोक दिया गया। द्वारपर ही खड़ा-खड़ा भीतर बजनेवाले मृदंगमें दोष निकालने लगा। तब राजा उसके गुणोंके प्रति आकृष्ट हुआ और उसे अपने दरबारमें रख लिया। एक दिन सुप्रसिद्ध वेश्या कामकन्दला राज-दरबारमें नृत्य करने आयी। कामकन्दलाके नृत्यपर मुग्ध होकर माधवानलने उसे राजासे प्राप्त पानका बीड़ा दे दिया। कामकन्दला माधवके प्रति आकृष्ट हुई और दोनों एक-दूसरेपर अनुरक्त हो गये। राजाने इससे अपमानित अनुभव किया और उसे अपने राजदरबारसे निकाल दिया। माधव वहाँसे निकाले जाने-के बाद उज्जैन पहुँचा और अपनी प्रेम-कहानी एक मन्दिरके दीवालपर लिख दिया। राजा विक्रमने उसे देखा और पढ़ा और उसके लेखकको ढूँढ़ निकाला। माधव-कामकन्दलाके प्रेमकी बात जानकर विक्रमने कामसेन (गोपीचन्द) को कामकन्दलाको माधवको दे देनेके लिए लिखा। जब उसने देनेसे इनकार किया तो उसके विरुद्ध युद्ध ठान दिया। पश्चात् उन्होंने दोनोंके प्रेमकी परीक्षा ली। कामकन्दलासे कहा कि माधव मर गया और इसी प्रकार माधवसे कामकन्दला-के मृत्युकी बात कही। दोनों अपने प्रेमीकी मृत्यु सुनकर चेतनाहीन हो गये। वैतालने आकर उन्हें जिलाया और उन दोनोंका विवाह करा दिया।

इस कथाके आधारपर १३०० ई० में आनन्दधरने कामकन्दला नाटक लिखा। पश्चात् १५२८ ई० में गुजरातीमें माधवानलदोग्धक प्रबन्ध लिखा गया। तदनन्तर कुशलाभने माधवकामकन्दला-रास और शालिकविने माधवानल नामसे काव्यकी रचना की। १६६० ई० में आलम कविने इस कथाके आधारपर हिन्दीमें एक काव्य लिखा। इस कथापर आश्रित हरनारायण और बोधा नामक कवियोंने भी काव्य रचे हैं।

(२) **नल**–निषध देशका राजा। **दमावती**–दमयन्ती; विदर्भ नगरकी राजकुमारी। नल-दमयन्तीकी कथा नलोपाख्यान नामसे महाभारतके वनपर्वमें पायी जाती

है। कथा इस प्रकार है—प्राचीन समयमें निषध देशका राजा नल था। एक दिन जब वह सरोवरमें स्नान कर रहा था तो उसे एक हंस दिखायी पड़ा जिसे उसने पकड़ लिया। हंसने नलसे विदर्भ नगरके राजा भीमसेनकी पुत्री दमयन्तीके सौन्दर्यकी प्रशंसा की। सौन्दर्य सुनकर नल दमयन्तीके प्रति आकृष्ट हुआ। हंसने जाकर दमयन्तीसे नलकी प्रशंसा कर उसके प्रति अनुराग उत्पन्न कर दिया। इस प्रकार दोनों एक दूसरेको प्रेम करने लगे। भीमने जब दमयन्तीके स्वयंवरका आयोजन किया तो नल उसमें सम्मिलित हुआ। मार्गमें नलको इन्द्र, अग्नि, वरुण और यम मिले और उन्होंने उसे (नलको) दमयन्तीके पास दूत बनाकर भेजा कि वह उनमेंसे ही किसीका वरण करे। नल दूतके रूपमें दमयन्तीसे मिला और उनका सन्देश उससे कहा। किन्तु स्वयंवरके अवसर पर दमयन्तीने नलका रूप धारण किये हुए उन चारों देवोंको छोड़कर वास्तविक नलका ही वरण किया। पश्चात् नल दमयन्तीका विधिवत विवाह सम्पन्न हुआ और वह बारह वर्ष तक सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते रहे।

तदन्तर नलके हृदयमें कलिने प्रवेक्ष किया और उसकी मति भ्रष्ट हो गयी। वह अपने भाईके साथ जुआ खेलते हुए अपना सारा सर्वस्व खो बैठा। इस दयनीय अवस्थाको देखकर दमयन्ती ने अपने बच्चों को नानिहाल भेज दिया। नल और दमयन्ती घर छोड़कर जंगलकी ओर चल पड़े। रास्तेमें नलने चिड़ियोंको पकड़ने के लिए अपना एकमात्र वस्त्र फेंका। उसे लेकर चिड़ियाँ उड़ गयी। तब छद्मवेशमें एक दिन नल दमयन्तीको जंगलमें सोता हुआ छोडकर भाग गया और जाकर राजा ऋतुपर्णके यहाँ रसोइयेके रूपमें नौकरी करने लगा।

दमयन्ती जब जगी तो नलको न पाकर वह रोती बिलखती किसी प्रकार पिताके घर विदर्भ पहुँची। उसके पिताको जब सारी दुरवस्था ज्ञात हुई तो उसने नलका पता लगानेके लिए गुप्तचर भेजे। उन्होंने आकर नलके राजा ऋतुपर्णके यहाँ होनेकी सूचना दी। तब दमयन्तीके पिताने कुछ सोच-समझकर ऋतुपर्णको अगले ही दिन दमयन्तीके पुनर्स्वयंवरमें आनेके लिए निमन्त्रण भेजा। इतने शीघ्र विदर्भनगर पहूँचा देनेकी क्षमता नलके अतिरिक्त किसीमें न थी। अतः ऋतुपर्णका सारथी बनकर नल विदर्भ आया।

वहाँ नल और दमयन्ती पुनः मिले। कुछ दिनों तक विदर्भ रहकर नल सपत्नीक अपने देशको लौटा और भाईके साथ पुनः जुआ खेलकर अपना राज्य वापस ले लिया।

(३) **मंझारी**—मध्य। **मकुहि**—कदाचित्।

(४) **पँवर**—ड्योढ़ी; प्रवेशद्वार। **कनकपात**—कनकपत्र, सोनेकी पत्ती।

(६) **कुरी**—कुल । **बनजार**—(सं० वाणिज्यकारक > वाणिज्यारक > बनिजारक > बनजार)—प्राचीन सार्थवाहके लिए यह मध्यकालीन पारिभाषिक शब्द था; व्यापारी समूह, जो व्यापारके निमित्त अपने नगरसे बाहर जाते थे, बनजार कहे जाते थे ।

(७) **देउर**—देवल; मन्दिर । **छारि**—छार; क्षार; भस्म ।

२१२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

फुनि[१] जो राजदुआरिन्ह[२] जाई । कुँवरहिं[३] के भल[४] पन्थ[५] अथाई ॥१
सुरपति सभा सौन[६] जो[७] सुनी[८] । सोइ[९] बिसेख[१०] बैठे[११] बहु गुनी ॥२
पण्डित औ बुधवन्त सरूपा । फूलि रही फुलवारि अनूपा ॥३
पण्डुर[१२] पान अदा[१३] कर[१४] **खाहहिं[१५] । खानि[१६] सुगन्ध सबै[१७] मँहकाहहिं[१८] ॥४**
भोग बात[१९] पै[२०] सभा चलाई[२१] । दुख कै[२२] बात न सँचराई[२३] ॥५
एक एक देस कै[२४] ठाकुर [बैसे[२५]], आयसु[२६] जोवहि बार[२७] ।६
प्रतिहारि सों[२८] गुजरहिं[२९], तिल एक[३०] छाड़[३१] करहुँ जुहार[३२] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(का०, बी०) पुनि । २–(ए०, बी०) दुवारेहिं; (का०) दुआरे । ३–(बी०, का०) कुवरन्ह; (ए०) कुवरन्हि । ४–(ए०, बी०) भलि; (का०) जहँ । (ए०, बी०) बैठ; (का०) बैसु । ६–(बी०, का०) स्रवन । ७–(ए०, बी०) हम; (का०) पें । ८–(का०) सुने । ९–(का०, ए०) सो; (बी०) तेहु । १०–(ए०, बी०) सरेख; (का०) सेइ । ११–(बी०) बिसेखे । १२–(ए०, बी०) पंडर । १३–(ए०, बी०) आड; (का०) सबै । १४–(का०) कोइ । १५–(ए०, बी०, का०) खाहीं । १६–(ए०, का०) घानि । १७–(का०) सभै । १८–(ए०, का०) महकाही; (बी०) अंग बास बहु महकाहीं । १९–(ए०) भोग पान; (बी०, का०) भोग कै बात । २०–(बी०, का०) × । २१–(बी०, का०) चलई । २२–(ए०, बी०, का०) की । २३–(ए०, बी०) सँचरे आई; (का०) नहीं सँचरई । २४–(ए०) दीप क । २५–(दि०, का०) × । २६–(ए०) आऐस; (बी०) आयेस । २७–(का०) आइह जोहारेहिं पार । २८–(बी०) कहँ । २९–(ए०, बी०, का०) गोचरहिं । ३०–(ए०) × । ३१–(बी०) छाड़हु तिलक एक । ३२–(ए०, बी०, का०) जोहार ।

टिप्पणी—(१) **राज दुआरिन्ह**—राज द्वारपर । **भल**-अच्छा । **अथाई**—समाप्त हुआ; अन्त हुआ ।

(२) **सुरपति**—इन्द्र । **सौन**-श्रवण । **बिसेख**—विशेष ।

(४) **पण्डुर**—पीला ।

(७) **प्रतिहारि**—द्वारपाल । **गुजरहिं**—निवेदन करते हैं । **तिल एक छाड़**—तनिक देरके लिए जाने दो । **जुहार**—अभिवादन ।

२१३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

कुँवर देखि यह[1] चिन्ता गहई[2]। मोरि चाह कैसें पहुँचई[3] ॥१
राजा राइ[4] जुहार[5] न[6] पावहिं। हमरि गिनति[7] केहिके[8] मन[9] आवहिं ॥२
बहुरि बियोग भयउ[10] सिर सेतीं। कही[11] जो[12] बातें[13] अही जो ऐतीं[14] ॥३
किंगरी लिहिसि[15] बियोग बजावा[16]। सबैं[16] सुनाँ देखे[17] तिंह[18] आवा[19] ॥४
सुनत[20] बियोग सब रहे[21] अबोला[22]। इहैं[23] राग आसन हर[24] डोला ॥५
जैं र[25] सुना सो[26] भूलेउ[27], देखत[28] चिंता रही[29] न काहि ।६
बज्र करेज[30] हिया[31] जिह केरा[32], भया[33] बियोग उर[34] ताहि[35] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(का०) कै। २–(ए०, का०) भई; (बी०) मन भई। ३–(का०) पहुँचै जाई। ४–(ए०) राय; (का०) राउ। ५–(ए०, बी०, का०) जोहारि। ६–(बी०) नहीं। ७–(बी०, का०) गनती; (ए०) गनत। ८–(का०) केकरे; (ए०) केहि लेखे। १०–(ए०, बी०, का०) भयो। ११–(का०) कहेसि। १२ (ए०) × । १२–१३ (बी०) बात जो; (का०) नहि आवै। १४–(ए०, बी०, का०) जेती। १५–(का०) तिहे। १६–(का०) बजावइ। १६–(ए०, बी०, का०) जेरे। १७–(ए०, बी०, का०) सो देखै। १८–(ए०, बी०, का०) × । १९–(का०, बी०) धावा। २०–(ए०, बी०, का०) सुनि। २१–(का०) हिये न। २२–(का०) बोला। २३–(ए०) यही; (बी०) इहइ; (का०) भाइहु। २४–(ए०) हरि आसन; (का०) हरि; (बी०) अस हरिना। २५–(ए०, बी०) जो रे; (का०) जेइ रे। २६–(का०) से। २७– (ए०) भूला। २८–(ए०, का०) ×; (बी०) रहेउ। २९. (बी०) रहेउ। ३०–(बी०, ए०, का०) करेजा। ३१–(बी०) आह; (का०) ×। ३२–(ए०) जेहि केरा; (बी०) जिन कर; (का०) जाहि कर। ३३–(ए०, का०) भा; (बी०) भयेउ। ३४–(बी०, का०) सुनि। ३५–(बी०) ताहु।

टिप्पणी—(१) **मोरि**–मेरी।
(२) **केहिके**–किसके।
(५) **अबोल**–अवाक्।
(७) **केरा**–का।

२१४

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

नगरी सबै[1] बियोग सताई[2]। घर घर यहि[3] बात चल[4] आई[5] ॥१
जोगी एक कितहुँत[6] आवा। बिरह बियोग सँताप बजावा ॥२
यही[7] बात मिरगावति सुनी। आयसु[8] एक आउ[9] बहु गुनी ॥३

अग्या भई बुलावहु[10] ताही । पूछौं[11] कवन देस कर आही ॥४
जनैं तीस[12] एक आगैं धायें[13] । आयसु[14] बार बुलावइ आयें[15] ॥५
अग्या भई राज[16] कै आयसु[17], चलहु बुलायहि[18] धाइ ।६
एत[19] बोल सुन रहसा मन महँ[20], कन्था मँह न समाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(का०) सगरी । २–(का०) सतावइ । ३–(का०, बी०) यहइ । ४–(बी०, का०) फिरि । ५–(का०) जनावइ । ६–(बी०) कतहु से; (का०) कतहुते । ७–(का०, बी०) यहरे । ८–(बी०) आइसु; (का०) आयेसु । ९–(का०, बी०) आव । १०–(का०, बी०) बोलावहु । ११–(का०) पूछहु; (बी०) पूछउ । १२–(का०) चेरी तीस; (बी०) जनी बीस । १३–(का०, बी०) उठि धाई । १४–(बी०) आइस; (का०) आयेसु । १५–(बी०) बोलावैं आईं; (का०) बोलवन आई । १६–(का०, बी०) राजा । १७–(बी०) आइसु; (का०) आयेसु । १८–(का०, बी०) बोलाये । १७–(का०) एतनी । २०–(बी०) जिय महाँ; (का०) जोगी रहसा; (दि० मार्जिन) रहसा जोगी ।

टिप्पणी—(२) किंतहुँत–कहीं से ।

(३) आयसु–आगन्तुक ।

(४) अग्या–आज्ञा ।

२१५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

करम आजु[1] मकु आह[2] हमारेउ[3] । सिध होइ कँह[4] गुरु हँकारेउ[5] ॥१
ससि र सरद मुख देखै पायों । जरे नैन वहि अमिय सिरायों[7] ॥२
सातों पवँरि[8] नाँघि[9] जो[10] आवा । बेकर बेकर सातउ[11] भावा ॥३
आगों[12] आइ[13] जो देखी[14] ताही । चाँद बैठि तारे सब आही[15] ॥४
के जनु[16] सरग [कचपची[17]] उईं । ताल माँझ फूलसि जनु[18] कुईं ॥५
सोन सिंघासन ऊपर[19] आछत[20], तिहा[21] बैठि ओं[22] देखि ।६
झार लाग[23] जइस कहँ, एको भरिसि[24] न पेखि ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(बी०) आज; (ए०) आह; (का०) अहइ । २–(ए०) आज । ३–(ए०) हमारेव; (का०, बी०) हमारा । ४–(ए०, का०) कै; (बी०) कहुँ । ५–(ए०) हंकारेव; (का०, बी०) हँकारा । ६–(ए०) दुइ । ७–(बी०) जरे नैन वोहि दरस बुझावों; (का०) जरे पेम वोहि आरि सिराऊँ । ८–(बी०, का०) पँवरी; (ए०) पौरी । ९–(का०) लाँघि । १०–(बी०) कै । ११–(बी०) सातौं; (ए०) सातहुँ । १२–(का०, बी०, ए०) आगू । १३–(का०) जाइ । १४–(बी०) देखिसि; (ए०,

का०) देखै। १९–(का०) तारन माँझ चाँद जनु आही। १६–(ए०) जनि; (बी०) जनौं; (का०) रे। १७–(दि०) कचकचीं; (का०, ए०, बी०) कचपचि। १८–(ए०) फूली जनि; (बी०) फूली जनौं; (का०) फूली जस। १९–(बी०) पर। २०–(ए०, बी०, का०) X। २१–(का०, ए०, बी०) भान। २२–(बी०) उन्हि; (का०) मैं; (ए०) उइ। २३–(ए०) भा आसेस। २४–(का०) परग; (बी०) पैग भरि।

टिप्पणी—(१) **हँकारेउ**—बुलाया।

(५) **कचपची**—कृतिका नक्षत्र। **उई**—उगीं। **माँझ**—मध्य। **कुई**—कुमुदिनी।

(६) **आछत**—होते हुए। **ओं**—उसे।

(७) **आर**—अग्निकी लपट।

२१६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

मुरछा देखत[१] अइस[२] कहँ आई। मिरगावति[३] मन माँझ[४] सँकाई[५] ॥१
कहसि[६] जोगि[७] यह जनम[८] न होई। राजकुँवर यह आहै सोई ॥२
देखत मुरछा वहि[९] पै आवइ[१०]। विरह वियोग लाग हम गावइ[११] ॥३
तारहिं[१२] कहसि[१३] उचावहु[१४] जोगी। मुरझि परेउ[१५] कह आहँहि[१६] रोगी ॥४
तारहिं[१७] आयसु[१८] धाइ[१९] उचावा। सींचि[२०] नीर[२१] जीउ घट मह[२२] आवा ॥५
साँप डसा जस समुझि[२३] न समुझै, लहर[२४] आउ[२५] बिकरार ।६
खिन[२६] अचेत खिन चेत[२७], विसँभर गौ[२८] न सँभार ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०, का०) गति। २–(बी०) आइस; (ए०,का०) आयेसु। ३–(ए०, बी०, का०) मिरगावती। ४–(का०) माँह; (ए०) मँह; (बी०) माँहिं। ५–(ए०, बी०, का०) सुगाई। ६–(ए०, बी०) कहिसि; (का०) कहेसि। ७–(ए०,का०, बी०) जोगी। ८–(का०) जन्म; (ए०,बी०) जरम। ९–(ए०, बी०, का०) वोहि। १०–(ए०, बी०, का०) आवै। ११–(ए०, बी०, का०) गावै। १२–(बी०, का०) तारेन्हि; (ए०) तारिनि। १३–(ए०, का०) कहिसि; (बी०) कहा। १४–(का०) उठावहु। १५–(ए०,का०,बी०) परा। १६–(बी०) कस आहै; (ए०) कस आह न; (का०) कस अहइ निरोगी। १७–(ए०) तारिनि; (बी०,का०) तारेन्हि। १८–ए० आयेसु; (बी०, का०) आइस। १९–(बी०) धाय; (का०) जाइ। २०–(ए०) सीचेन; (बी०) सीचा; (का०) सीचिन्हि। २१–(ए०) अमिय। २२–(ए०, बी०, का०) X। २३–(बी०) समुझाये। २४–(ए०, बी०) लहरि। २५–(ए०, बी०) आव; (का०) आँवइ लहरि। २६–(ए०, बी०, का०) खन। २७–(दी०, मार्जिन) चेत कछु; (ए०) खन अचेत खन चेत न चेते; (बी०) खन चेतौ खन अचेतै; (का०) खन अचेत खन चेतै। २८–(ए०, बी०, का०) कुछु।

टिप्पणी—(१) सँकाई—शंकित हुई।
(२) लाग—के लिए; निमित्त।

२१७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

भा [सनिपात*][१] कै मिरगी यहि[२] आई। तिरदोखा[३] ऊदक[४] बौराई ॥१
के र[५] देउ दानो[६] यहि[७] छरा[८]। कै र[९] चक्र जोगिन्ह[१०] मँह[११] परा[१२]॥२
कै[१३] यहि[१४] राकस भूत सतावा। भरम न जाइ साथ जनु[१५] आवा[१६] ॥३
कै[१७] देवी कालिका[१८] तपाई[१९]। सुरा पान बिनु चेत न जाई ॥४
मरम[२०] जानि कै औखद[२१] कहहीं[२२]। वैद सयान जहाँ लह[२३] अहहीं[२४] ॥५
पूँछहि नारी आयसु[२५] कँह, कस मुरछा तुम्ह[२६] आइ।६
कै[२७] जर जाड़[२८] कै र[२९] झँई[३०] आई, तिंह र[३१] परहु[३२] मुरुझाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१-(दि०, बी०) भा सन; (ए०) रा सन; (का०) भा सन्यपात। २-(ए०) ओहि मिरिगी; (बी०, का०) यहि मिरिगी। ३-(बी०,का०) तिरदोषा। ४-(बी०) ओद कै। ५-(बी०, का०) के रे; (ए०) म ?। ६-(ए०) देवो; (बी०, का०) देव। ७-(ए०, बी०, का०) एहि। ८-(का०) लागा। ९-(ए०, बी०, का०) रे। १०-(ए०) जोगिनी; (बी०, का०) जोगिनि। ११-(बी०, का०) कै। १२-(का०) भागा। १३-(ए०) × । १४-(ए०) ओहि; (का०) रे। १५-(बी०) जनौ; १६-(का०) भर्म न जाइ साप जनु खावा। १७-(ए०) ×; (बी०) कै एहि; (का०) कै इन। १८-(का०) कालिका देवी। १९-(बी०) सताई। २०-(ए०) कर। २१-(बी०, का०) औखद। २२-(बी०) देहीं। २३-(ए०, बी, का०) गुनी बहु। २४-(बी०) अही। २५-(ए०, का०) पूछहु तारे आऐस; (बी०) पूछहिं तू रे आइस। २६-(ए०) तो; (का०) तोर; (बी०) तोहि। २७-(ए०) ×; (का०) की। २८-(का०) जूड़ी। २९-(ए०) रे; (बी०, का०) री। ३०-(ए०) झैं; (बी०, का०) झइ। ३१-(ए०) तेहि रे; (बी०, का०) तिहि रे। ३२-(ए०, बी०, का०) परेहु।

टिप्पणी—(१) **सनिपात** (सन्निपात) शीत प्रधान एक रोग। **मिरगी**—मूर्च्छाके प्रकारका रोग। **तिरदोखा**—(त्रिदोष) बात, पित्त और कफका विकार।
(२) **देउ-दानो**— देव-दानव। **छरा**—छला। **जोगिन्ह**—जोगियोंके।
(३) **राकस**—राक्षस।
(५) **सयान**—झाड़ फूँक करनेवाले; ओझा।
(६) **आयसु**—आगन्तुक।
(७) **जर**—(ज्वर) बुखार। **जाड़**—जाड़ा। **कै**—का। **झँई**—सिरमें चक्कर आना। **परहु**—पड़े।

२१८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

मुरुछ क[1] बात कहै नहिं पारों[2]। सो देखो जिह[3] कहत[4] न सँभारों[5] ॥१
भौंह धनुख[6] नैन सर साँधी[7]। लागी[8] बिखम हियैं[8] विस[9] बाँधी[10] ॥२
गुन बिनु धनुक[11] कहाँ इँह[12] साधा। हौं मिरगा जस हनेउ[13] बियाधा ॥३
जहिया[14] हनिवँत[15] लंक[16] गढ़ दहा[17]। यहै[18] धनुक राघो[19] पँह[20] [अहा[21]] ॥४
जो पण्डो कौंरो दर[22] जीता। यहै धनुक अरजुन कर लीता ॥५
सोइ जावस[23] परसुराम कर[24], सोइ[25] पारुध[26] सोइ बान ।६
यह[27] रे कहत महि[28] दूभर लागै[29], तुम्ह[30] पति हनी[31] परान ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१-(बी०, का०) की। २-(का०) जाई। ३-(ए०, बी०, का०) जो। ४-(ए०, बी०, का०) घट। ५-(का०) समाई। ६-(ए०) धनुक; (बी०, का०) धनुष। ७-(बी०, ए०, का०) साँधे। ७-(बी०, ए०, का०) लागे। ८-(का०) हिये विषम। ९-(बी०, का०) विष। १०-(ए०, बी०, का०) बाँधे। ११-(बी०, का०) धनुष। १२-(ए०) अँ; (का०) यह। १३-(ए०, बी०) हनेव; (का०) हना। १४-(ए०) कहिया। १५-(बी०) हनेउ। १६-(बी०, का०) लंका। १७-(ए०, बी०, का०) डहा। १८-(ए०) अहै; (बी०, का०) एहे। १९-(बी०, का०) राघव। २०-(का०) कर। २१-(दि०) आहा। २२-(बी०, का०, दि० मार्जिन) दल। २३-(ए०) चाउस। २४-(बी० का०) यहै धनुक परसुराम कै। २५-(का०) सो। २६-(बी०, का०) पारधी। २७-(का०) इहइ। २८-(ए०, बी०, का०) मोहि। २९-(बी०) लाग; (ए०, का०) ×। ३०-(बी०) तुम। ३१-(ए०, का०) हनेव: (बी०) हने।

टिप्पणी—(१) **पारों**—(क्रि० पारना) जीतूँ।

(२) **सर**—(शर) बाण।

(३) **गुन**—रस्सी; प्रत्यंचा। **हनेउ**–हत्या की। **बियाधा**–व्याध; शिकारी।

(४) **जहिया**–जब। **हनिवँत**–हनुमान। **राघो**–राघव, राम। **पँह**–पास।

(५) **पण्डो**–पाण्डव। **कौंरो**–कौरव। **दर**–दल।

(७) **दूभर**–कठिन। **हनी**–हनन किया। **परान**–प्राण।

२१९

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

तारहिं[1] कहा जोगि[2] मति हीनी[3]। अइस बोल तिह सोह न कहनी[4] ॥१
गन गन्धरप सुर नर औ[5] नागा। बार बैठि सब अहि निसि जागा[6] ॥२

जिहकै[८] भाग औ करम लिलारा। तिनकँह[८] होइ निमिख इक[९] बारा[१०] ॥३
तूँ र[११] नीच जो बोलइसि[१२] पासा[१३]। काहँहि[१४] बिगनसि[१५] ऊँच अकासा ॥४
तूँ भुँइ सरग कै[१६] बातैं कहही[१७]। जरत आग करपालौं[१८] गहही[१९] ॥५
मान बिहूनै हेतु बिन, रोवइ जिय राजन्त[२०]।६
मूरख दिया पतंग जेउँ[२१], फिरि फिरि ते [दगधन्त*] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(बी०) तारेहु; (का०) तारेन्ह। २–(बी०, का०) जोगी। ३–(का०, बी०) हीना। ४–(बी०) अस बोलत तोहि सोभा न दीना; (का०) ऐसी बोल तोहि केउ न चीन्हा। ५–(का०) औ सुर नर; (बी०) सुर औ। ६–(बी०) बार बैठ अहनिसि सब जागा; (का०) बार बैस बैठ सभ द्रिज जागा; (दि० मार्जिन) बार बैठ सब आयसु चाहा। ७–(बी०, का०) जेहि कर। ८–(बी०) तेहि कर। ९–(बी०) एक। १०–(का०) यह पंक्ति नहीं है। ११–(बी०) रे। १२–(बी०) बोलायेसि। १३–यह पंक्ति नहीं है। १४–(बी०, का०) कहेन। १५-(बी०, का०) बकनसि। १६–(बी०, का०) की। १७–(बी०) कहसि। १८–(बी०, का०) पल्लौ। १९–(बी०) गहसि। २०–(बी०) रूपहि जे रचंति; (बी०) रूपहि जो रचंति। २१–(बी०) जेंव; (का०) जिमि। २२–(दि०) दधन्त; (बी०, का०) दगधंति।

टिप्पणी—(१) सोह–शोभा देती है।

(२) **गन गन्धरप**–गन्धर्व गण। **नागा**–नाग। **बार**–द्वार।

(३) **बोलइसि**–बुलाया। **पासा**–पास; निकट। **बिगनसि**–(क्रि० बीगना–फेंकना) फेंकते हो; यहाँ तात्पर्य आसमान पर चढ़नेसे है।

(५) **भुँइ**–भूमि; पृथ्वी। **करपालौं**–(कर-पल्लव) हथेली।

(६) **बिहूनै**–परित्याग करे। **हेतु**–उद्देश्य।

२२०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

हँसा कहिसि[१] तुम्ह[२] पेम न खेला। जुआ पैंत तुम्ह[३] बूझि न[४] मेला ॥१
जो[५] वह[६] जोति[७] नहिं[८] देखि[९] भुलाई। ताकर माँस[१०] काग नहिं खाई ॥२
दाधा[११] होइ[१२] सो जानै पीरा। दिया जान[१३] कै[१४] दगध सरीरा ॥३
जरि जरि[१५] मरे[१६] सो[१७] मरि मरि जीयै[१८]। सोइ[१९] पेम सुरा रस पीयै[२०] ॥४
बिरला[२१] यह रस पावइ[२२] कोई। जो यह राउ[२३] अमर होइ सोई ॥५
समुँद तरत[२४] [चढ़त*][२५] गिरि, झम्प[२६] हुतासन लिहन्त[२७]।६
पेम सुरा[२८] जिह[२९] अचयेउ[३०], सो[३१] किय किय न[३२] करन्त[३३] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(बी०) हँसा कहेसि; (का०) बिहँसि कहेसि; (ए०) दे उधरी। २–(ए०) तोह;

(बी०) तुम; (का०) तैं। ३-(बी०, का०) तै; (ए०) ×। ४-(ए०) नहिं। ५-(ए०) ×। ६-(ए०) उवह; (बी०) वोहि; (का०) रे एह। ७-(का०) जोतिहि। ८-(ए०) न; (का०) ×। ९-(बी०) देखिन। १०-(ए०, बी०, का०) मासु। ११-(ए०, बी०) दाध; (का०) देखा। १२-(बी०, का०) होय। १३-(बी०, का०) जानै १४-(ए०, बी०, का०) जेहि। १५-(ए०) पापी। १६-(बी०) मरइ; (का०) ×। १७-(ए०) जो। १८-(ए०) जीअइ; (बी०) जियई; (का०) जाई। १९-(ए०, का०, बी०) सो पै। २०-(ए०, बी०, का०) पीयई। (२१)-ए०(- -) ला; (बी०, का०,बिरुला। २२-(ए०, बी०, का०) पावै। २३-(ए०, बी०, का०) पाव। २४-(बी०) तरंगित; (ए०) तरथि, (का०) तीर। २५-(दि०) परँत; (ए०) चढ़ीय; (बी०) चढ़ति; (का०) चहुत। २६-(ए०) अरु झम्प। २७-(ए०, बी०) लीथि; (का०) लेत। २८-(का०) सुरंग। २९-(बी०) जिनि; (ए०, का०) जिन्हि। ३०-(ए०, का०) अँचयो; (बी०) मुचिया। ३१-(ए०, का०) ते। ३२-(बी०, ए०, का०) ×। ३३-(ए०, बी०, का०) करंथि।

टिप्पणी—(३) दाधा—दग्ध।

(५) हुतासन—अग्नि।

(७) **अचयेउ**—आचमन किया; पिया। **किय किय**—क्या क्या।

२२१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

सुध[१] बातैं उन सेतैं[२] कहीं। ये र खाइ[३] ठग लाडू[४] रहीं ॥१
फुनि आपुन[५] मँह कहहिं[६] बिचारी। जोगिह भोगिह काह[७] दोवारी[८] ॥२
जाकर[९] बात कहत दिन रानीं। मकु वह कुँवर आह[१०] यँहि[११] बानी[१२] ॥३
आइ[१३] कहहिं[१४] अस बकत भिखारी[१५]। हम बत[१६] पूछँहि[१७] कहहि[१८] हियारी ॥४
अँब्रित कुण्ड छुबुकि[१९] भर राखी[२०]। सो र[२१] काग चाहसि[२२] रस चाखी[२३] ॥५
सिखर ऊँच बड़ तरुवर, औ फर[२४] लाग अकास।६
करह[२५] करील **न पहुँचै** मनसा[२६], **वै[२७] फर[२८] चाह बेरास[२९] ॥७**

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१-(ए०) सीधी; (दि० मार्जिन) सबही। २-(ए०) अैस वहि; (का०) बात उइ सभ; (बी०) वै निजु। ३-(ए०, बी०, का०) ६इ रे खाय। ४-(ए०) ढक लाडू; (का०) ढक मूरी। ५-(का०) आपुस। ६-(बी०) करहि; (का०) कहेन्हि। ७-(बी०) कहा; (ए०) कौन। ८-(बी०) दवारी; (ए०) कवारी; (का०) इस उत्तरार्धके स्थान पर पंक्ति ४ का उत्तरार्ध है। ९-(ए०) जेकरी; (बी०) जाकरि। १०-(बी०) ×; (ए०) आव। ११-(बी०) येहि; (ए०) ओहि। १२-(का०) पूरी पंक्ति नहीं है। १३-(ए०) आए; (बी०) आय। १४-(बी०) कहन्हि। १५-

(का०) पूरी पंक्ति नहीं है। १६-(बी०) पति; (ए०) बाति। १७-(ए०, बी०) बूझहु; (का०) पूछहिं। १८-(ए०, बी०) कहत; (का०) कहा। १९-(ए०) चुभुकि; (बी०) चमक; (का०) भरि। २०-(ए०, बी०, का०) राखा। २१-(ए०) सो रे; (बी०, का०) से। २२-(ए०, बी०, का०) चहै। २३-(ए०, बी०, का०) चाखा। २४-(का०) फल। २५-(ए०) क[- -]। २६-(ए०, बी०) ×। २७-(बी०, का०) से; (ए०) उह। २८-(का०) फल। २९-(ए०, बी०) चहै बिरास; (का०) चहै बेलास।

टिप्पणी—(१) **सुध**–शुद्ध; स्पष्ट। **सेतैं**–से। **ठग लाइू**–आश्चर्य चकित।

(२) **आपुन मँह**–आपसमें। **काह**–क्या।

(३) **जाकर**–जिसकी। **बानी**–वेश।

(४) **अस**–ऐसा। **बत**–बात। **हियारी**-पहेली।

(५) **छुबुकि**–लबालब

(७) **बेरास**–विलास; भोग।

२२२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

मिरगावति निहचौं[1] कै जानाँ। वहै[2] कुँवर जा मन[3] कर भानाँ[4] ॥१
मन रहसी[5] आपु[6] आयउ[7] सोई। भुगुति देउँ जइसैं[8] सिधि होई ॥२
फुनि मिरगावति[9] नियर[10] बुलावा[11]। पूँछिसि कउन[12] देस सेंउ[13] आवा ॥३
आपुनि[14] बात कहसु[15] दहुँ[16] मोही। जोगी रूप न देखौं तोही ॥४
कहसि जीउ हम[17] काँहु चुरावा[18]। तिह[19] ढूँढे कँह भेस भरावा[20] ॥५
खोज करत हौं आयउँ, ढूँढत[21] सो र[22] चोर इँह[23] गाँउ।६
औ[24] बहुतहि[25] कह[25] चुराइसि[26] पायसु[27], लेंउ तिंह क[28] हौं[29] नाँउ ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१-(बी०, का०) निस्चै। २-(ए०) उहइ; (बी०) यहइ। ३-(ए०) मुनि; (बी०) राजमनि। ४-(ए०) माना। ५-(बी०) रहस। ६-(ए०, बी०, का०) अब। ७-(ए०, का०) आयेव; (बी०) आवा। ८-(ए०, का०) जैसे; (बी०) जो पै। ९-(ए०, बी०, का०) मिरगावती। १०-(बी०, का०) नियरे। ११-(ए०, बी०, का०) बोलावा। १२-(ए०, बी०, का०) कौन। १३-(ए०, बी०) सों; (का०) ते। १४-(ए०, बी०, का०) आपन। १५-(ए०, बी०, का०) कहसि। १६-(बी०) नहिं; (का०) जै। १७-(का०) हमार। १८-(ए०, बी०, का०) चोरावा। १९-(का०) तेहि; (बी०) ताहि। २०-(बी०, का०) फिरावा; (ए०) पूरी पंक्ति नहीं है। २१-(बी०) आयेंव एहि ठाँव; (ए०, का०) ×। २२-(का०, ए०, बी०) रे। २३-(ए०, बी०, का०) येहि। २४-(बी०, का०) और; (ए०) रे।

२४–(ए०) बहुनन्ह; (बी०, का०) बहुतन्ह । २५–(ए०) क; (बी०, का०) केर । २६–(ए०, बी०, का०) चोराइसि । २७–(ए०, बी०, का०) × । २८–(ए०) तिन्ह; (का०) ताकर; (बी०) तिन्हकर । २९–(बी०) × ; (का०) अब ।

टिप्पणी—(१) **निहचौं**–निश्चित रूपसे । **भानाँ**–(भानु) सूर्य ।

(५) **भेस भरावा**–रूप धारण किया । छद्मवेश धारण करनेके सम्बन्धमें यह प्रसिद्ध मुहावरा है ।

२२३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

नैन[1] कुरंगिनि केर चुराई[2] । औ फुनि पंचम बैन गँवाई[3] ॥१
लंक सिंघ कै[4] लिहिसि[5] चुराई[6] । उहो[7] खोज इँह[8] नगर बुझाई[9] ॥२
चाल गयन्द मराल[10] कै[11] लीन्ही । खोजत आइ[12] नगर मँह[13] चीन्ही ॥३
उहै[14] चोर हम जीउ चुरावा[15] । जैं एतहिं[16] कर[17] लीन्हि सुभावा[18] ॥४
खोज[19] आइ इँह[20] नगर बुझानेउ[21] । देखेउँ[22] चोर तबहि[23] पहिचानेउ[24] ॥५
चोर बरै[25] अति आहै दारुन,[26] लिहिसि जो चाह न देइ[27] ।६
एक हाथैं[28] उबारहु[29] हरहा, जो र[30] गहै सो लेइ ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१–(ए०) × ; (का०) रैन । २–(ए०, बी०) चोराए; (का०) चोरावा । ३–(ए०, बी०) गँवाये; (का०) गँवावा । ४–(ए०, बी०) कर । ५–(ए०, का०) लीन्ह । ६–(ए०, का०, बी०) चोराई । ७–(ए०, बी०) वहइ; (का०) उहइ । ८–(ए०) येहि; (बी०) यहि । ९–(का०) बताई । १०–(बी०, का०) मलार । ११–(ए०, बी०, का०) क । १२–(ए०, बी०, का०) आय । १३–(बी०) हम । १४–(ए०) उही; (बी०) वोही; (का०) वहिरे । २१–(ए०, का०) बुझानेव; (बी०) बुझाना । २२–(ए०, का०) देखैव; (बी०) दारुन । २३–(ए०, बी०, का०) तबहि । २४–(ए०) पछिआनेव । (बी०, का०) पहिचानेव । २५–(ए०) बरिअ; (का०) बरी; (बी०) बरिय । २६–(ए०, बी०, का०) × । २७–(ए०) लैके चाह न देय; (बी०) लिहिए चहै न देय; (का०) लिहिस जाइ नहि देय । २८–(ए०, बी०, का०) हाथी । २९–(ए०, बी०, का०) औ । ३०–(ए०, बी०, का०) रे ।

टिप्पणी—(१) **कुरंगिनि**–हिरणी । **केर**–का । **पंचम**–कोयल । **बैन**–वाणी ।

(२) **लंक**–कमर; कटि । **सिंघ**–सिंह ।

(३) **गयन्द**–हाथी । **मराल**–मयूर ।

(४) **एतहिं**–इतनोंका । **सुभावा**–स्वभाव ।

(६) **बरै**–किन्तु ।

२२४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

सरजन[1] सूर आइ[2] परगासा। मिरगावति[3] मन कँवल बिगासा ॥१
मुसुकुराइ[4] सहेलिहिं[5] कहा[6]। देखहु इहै[7] कुँवर वहि[8] आहा[9] ॥२
हौं जो कहति तुम्ह सेंउ[10] दिन वाता। इहै[11] कुँवर हमरैं मदमाता ॥३
इहैं[12] चीर हम लीन्हेउ आहा[13]। हम लग[14] यैं[15] अगिनित[16] दुख सहा ॥४
जिह लग[17] परसेंउ[18] गँधरप[19] देवा। सो[20] अब आइ[21] करौं बड़ सेवा ॥५
कहा सहेलिहिं[22] सो[23] यह, जोगि मया[24] तुम्ह[25] लाग ।६
हम तो कहा सोइ[26] आपुन मँह, दिप[27] लिलार[28] बहु भाग ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१-(ए०, बी०, का०) सुरजन। २-(ए०, बी०, का०) आय। ३-(ए०, बी०, का०) मिरगावती। ४-(का०) मुसुकिआय। ५-(ए०, का०) सहेलिन्ह। ६-(का०) कहई; (बी०) अधरन्ह अलप हँसी अस कहा। ७-(ए०) अहै; (बी०,का०) एहै। ८-(ए०) उवह; (बी०, का०) वह। ९-(बी०, का०) अहई। १०-(ए०, बी०, का०) तोह सैं। ११-(ए०) एहै; (बी०, का०) एहै। १२-(ए०) अेहीं; (बी०, का०) यहे। १३-(दि०) आहा। १४-(ए०, का०) लगि; (बी०) निति। १५-(ए०, का०) अेरे; (बी०) एइ। १६-(ए०) अंगन; (बी०) अगनिति: (का०) बड़ा। १७-(ए०, बी०, का०) जेहि लगि। १८-(ए०, बी०, का०) परसेव। १९-(ए०, बी०, का०) गंध्रप। २०-(बी०) से। २१-(ए०) आए: (बी०, का०) आय। २२-(ए०, बी०, का०) सहेलिन्ह। २३-(ए०, का०) सोइ। २४-(ए०, बी०, का०) जोगी भयेव। २५-(ए०, बी०) तोह; (का०) हम। २६-ए० ×; (बी०) तबही; (का०) सो। २७-(ए०, बी०, का०) दिपै। २८- (ए०) लिलारहि; (बी०) लिलारहु।

टिप्पणी—(१) **बिगासा**-विकसित हुआ; विकसित किया।
(२) **परसेंउ**-स्पर्श किया।
(७) **लिलार**-ललाट।

२२५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

हम आपुन[1] मँह तबहीं[2] कहा। जो[3] उठाइ[4] बैठारेउ[5] आहा[6] ॥१
कुँवर आह यह जोगि[7] न होई। लखन बतीसो उत्तिम[8] कोई ॥२
कहहि[9] सहेली[10] मरम यहि[11] लेहू। कै निरास असरो फुनि[12] देहू ॥३
काह कहै कस ऊतर देई[13]। कहा सहेलिह[14] बोली[15] सेई[16] ॥४
मिरगावतीं वचन मुँह[17] खोला। कहिसि जोगि[18] तैं समुझि न बोला ॥५

जस आपुन तस बात न बोलै[19], धाय चढ़स र[20] अकास ।६
हत्या क[21] डर आहै चित मँह,[22] नाँही[23] करतेऊँ[24] नास ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१–(का०) आपुस । २–(बी०) तहिया; (का०) तहियै । ३-(बी०, का०) जब रे । ४–(ए०) उठाए; (बी०) उचाय; (का०) उएेउ । ५–(ए०, का०) बैसारेव । ६–(दि०) आहा । ७–(ए०, बी०, का०) जोगी । ८–(ए०) उत्तम । ९–(ए०) कहा; (का०) कहइ । १०–(बी०) सहेलिहु । ११–(ए०) अेह; (बी०) येहि; (का०) अब । १२–(ए०) फुनि आसरो; (बी०, ए०) आस पुनि । १३–(बी०) देऊ । १४–(ए०) सहेलिन्ह; (बी०) सहेलिहु; (का०) सहेली । १५–(ए०, बी०) बोलै; (का०) बोलावह । १६–(बी०, का०) सोई । १७–(ए०, बी०) मुख । १८–(ए०, बी०, का०) जागी । १९–(बी०) बोलिसि; (का०) जस आपुन तस बोल । २०–(ए०) चढ़ेहु; (बी०) चढ़िसि; (का०) चाहेसि । २१–(ए०, बी०, का०) कै । २२–(ए०, का०) × । २३–(ए०) नाहीं तौ; (का०) नाहि त; (बी०) नतरुक । २४–(बी०) करतिंउ; (का०) करति जिव कर ।

टिप्पणी—(३) **असरो**—आशा ।

(७) **नाहीं**—नहीं तो । **करतेंउँ**—करती ।

२२६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

नास क[1] डर जो पै चित होई । आरन[2] बनखँड आउ[3] न कोई ॥१
जो को[4] मार[5] तो मोंख[6] पावों । पेम पिरीति[7] लै सरि[8] पहुँचाओं ॥२
मुहि[9] अपने जिय कर[10] आह न[11] छोहू । जो जीवइ तो करै[12] मरोहू[13] ॥३
मैं आपुन[14] जिउ तवहीं[15] काढ़ा । पिरित पेम[16] रस[17] जिह[18] दिन बाढ़ा ॥४
पेम लागि मैं जिउ वरछेवा[19] । भँवर[20] मरे पै छाड़[21] न केवा[22] ॥५
कै[23] वह काँटैं जीउ[24] गँवावइ, कै र[25] बास रस लेइ[26] ।६
केवइ[27] [भँवर][28] न[29] परिहरै, [बास][30] लुबुधि जिउ देइ[31] ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१–(का०) की । २–(बी०) अरन; (का०) दारुन । ३–(का०) आवै । ४–(ए०, बी०, का०) कोई । ५–(बी०, का०) मारै । ६–(ए०, बी०, का०) मोखै । ७–(ए०,बी०,का०) प्रीति । ८–(ए०,बी०) सिर; (का०) सिरह । ९–(ए०,बी०,का०) मोहि । १०–(ए०) केर । ११–(बी०, का०) नहिं । १२–(ए०) जो जिउ होए तो करौं । १३-(ए०) मुरोहू; (का०) मरोहा; (बी०) अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं । १४–(ए०, बी०, का०) आपन । १५–(ए०) तैहइ; (बी०) तइहइ; (का०) तेहि दिन । १६–(ए०) प्रीति पेम; (बी०, का०) प्रेम प्रीति । १७–(का०) × ।

१८–(ए०, बी०, का०) जेहि । १९–(ए०, बी०,का०) परछेवा । २०–(ए०,बी०) भौंर । २१–(बी०) छाड़ै नहिं । २२–(का०) भँवरा मरइ छाड़ै नहिं सेवा । २३–(ए०,का०) उहि; (बी०) वहि । २४–(बी०, का०) जिव । २५–(ए०) रे । २६–(ए०,बी०,का०) लेय । २७–(ए०) केव; (बी०, का०) कवहिं । २८–(दि०) कँवल; (ए०, बी०, का०) भौंर । २९–(का०) भँवरा कँवल; (ए०, बी०) नहिं । ३०–(दि०) कहाँ; (ए०) धानि । ३१–(ए०, बी०, का०) देय ।

टिप्पणी—(१) आरन–अरण्य, जंगल ।

(२) **मोंख**–मोक्ष । **सरि**–चिता ।

(३) **मरोहू**–ममता; मोह ।

२२७

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

मिरगावति[1] कहि[2] देखहु रीती । दीपक[3] पतंगहिं[4] कवन[5] परीती[6] ॥१
नीच जो[7] ऊँचै सेउ[8] संग करई[9] । सूर क[10] पेम कँवल जेउ[11] मरई[12] ॥२
तोहि मरै कै लागी[13] साधा । पंखि[14] दिया जेउँ[15] आपुहि दाधा[16] ॥३
यह[17] हमसेउ[18] कस नेह क दाई[19] । तिह[20] अस जोगी लाख दस छाई[21] ॥४
भीख माँग कछु [भुगति][22] दिवावों[23] । पुन होइ परतर कहुँ पावों[24] ॥५
तू[25] सो बात कहत[26] हँसि[27] मूरख, जिंहि रिस लागे मोहि ।६
पाप किहैं[28] पुन[29] जाइहि हँम क[30], तिंह न[31] मारों[32] तोहि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१–(बी०, का०) मिरगावती । २–(का०) कहा; (बी०) कहै । ३–(का०) दीवा । ४–(बी०) पाँखिहि । ५–(बी०) कौन; (का०) कवनी । ६–(का०) प्रीती । ७–(बी०, का०) से । ८–(बी०) करै । ९–(का०) ऊँच जाइ नीच संग करई । १०–(बी०, का०) के । ११–(बी०, का०) ज्यों । १२–(बी०) मरै । १३–(का०) तुह भैअ मखे कै । १४–(बी०) पंखी । १५–(बी०) जिमि । १६–(का०) तोहि हमहिं कस सनेह कै हाथा । १७–(बी०) तोह । १८–(बी०) हम सन । १९–(बी०) कहाये; (का०) तोहि अस जोगी लाख दुइ छावा । २०–(बी०) तोहि । २१–(बी०) आये; (का०) भीखि माँगु किछु भुगति दियावा । २२–(दि०) जुगत; (बी०) किछु भुगुति । २३–(बी०) दियाऊँ; (का०) कानि होइ परतर के पावउँ । २४–(बी०) पावों; (का०) जस लाइक तस बात कहावउ । २५–(बी०) तैं; (का०) तुम । २६–(बी०) कहसि; (का०) का । २७–(बी०) × । २८–(बी०, का०) होइ । २९–(का०) कन्या । ३०–(बी०, का०) × । ३१–(बी०) तेहि न; (का०) नाहि त । ३२–(बी०) मारउँ; (का०) मरवती ।

टिप्पणी—(४) **दाई**—भागीदार ।

(७) **पुन**–पुन्न; पुण्य । **तिंह**–इस कारण ।

२२८

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर, काशी)

राजा मुयहिं[१] न मारै[२] काऊ[३] । मुयें के[४] मारैं कछु न पाऊ[५] ॥१
तिहि[६] दिन मुयउँ[७] पेम जिह[८] खेलेउँ[९] । साँप के[१०] मुँह जो अँगुरी[११] मेलेउँ ॥२
जो जिउ[१२] होइ[१३] तो मरै[१४] डराऊँ । साँस जीह[१५] लहि[१६] कुहुक[१७] भराऊँ[१८] ॥३
नैन रहे जिह कर[१९] उपकारा[२०] । अधर साँस तिल रहेउ[२१] अधारा[२२] ॥४
उठा मरोहु[२३] हँसत[२४] यें[२५] बोला । मिरिगावतीं बचन रस घोला[२६] ॥५
पूछसि को र[२७] कउन तूँ देस क[२८], नाँउ तोर का आह[२९] ।६
भुगुति देउँ बहु[३०] भीख[३१] भोजन[३२], ले र अब जाह[३३] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१–(ए०, बी०, का०) मुयेहिं । २–(बी०, ए०) मारिय । ३–(का०) कोई । ४–(ए०) क । ५–(ए०) न नसाऊ; (बी०) नहिं साऊ; (का०) नहिं होई । ६–(बी०, ए०, का०) तेहि । ७–(ए०, बी०, का०) मुयेंव । ८–(ए०, बी०) जो । ९–(बी०, ए०, का०) खेलेंव । १०–(ए०) क । ११–(ए०) अंगुरी जब; (बी०) अँगुरी जो । १२–(बी०, का०) जिय । १३–(ए०) होए; (बी०) होय । १४–(बी०, का०) मरैहिं । १५–(ए०) जीभि; (बी०, का०) जीभ । १६–(ए०, का०) लगि; (बी०) लै । १७–(ए०) खनक; (बी०) खिनक; (का०) खन एक । १८–(बी०) रहाऊँ; (का०) मारूँ । १९–(ए०) जेहि कै; (बी०) जेहि किय; (का०) जे करै । २०–(का०) अपकारू । २१–(ए०) रहेव; (बी०) रही । २२–(का०) आधर सासाटे केर अधटोला । २३–(ए०) मुरोहु; (बी०) मरोह । २४–(बी०) इन्हहि नति; (का०) × । २५–(का०) यह; (बी०, ए०) × । २६–(ए०) मुँह खोला; (बी०) मुख खोला; (का०) पूरी अर्धाली नहीं है । २७–(ए०) पूछिसि को रे; (बी०) पूछिसि के तू । २८–(ए०) कौन तै; (बी०) कवन देस कर । २९–(बी०) आहि । ३०–(का०) तोहि । ३१–(ए०) भिखेया; (बी०) भिछया; (का०) भिछ्या । ३२–(ए०, का०) × । ३३–(ए०) लै रे इहाँ सौं जाह; (बी०) लै रे इहहुँ ते जाहु ।

२२९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

जो[१] पै[२] भुगुति भीख[३] तुम्ह[४] देहू । जरमहुँ[५] और न माँगौं केहू[६] ॥१
इहै[७] भीख कहँ इँह ठाँ[८] आयउँ[९] । बहुतँहि[१०] दिही भुगुति[११] न[१२] खायउँ[१३] ॥२
भँवर[१४] करीलहिं[१५] जरम[१६] न खाई । अधिक बास[१७] रस[१८] मालति जाई[१९] ॥३
चातक[२०] अउर[२१] पानि न[२२] पीया[२३] । बूँद सवाती[२४] पाउ त[२५] जीआ[२६] ॥४
केहरि भूँखैं तिन[२७] न[२८] चराई[२९] । पाउ[३०] गयन्द[३१] तबहि पै[३२] खाई[३३] ॥५

हम बाचा वहँ आइ पुरी[३४], औधि किये तिंह देस[३५] ।६
हम आपुन पतिपारी[३६], दुख सुख[३७] आइ आन कै भेस[३८] ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(ए०) × । २–(बी०, का०) रे । ३–(का०) भिछा भुगुति । ४–(का०) मोहि; (ए०) तोह । ५–(बी०) जरमहिं । ६–(का०) जन्म न माँगउँ अवरउ केहू । ७–(ए०) ही । ८–(ए०) अेही मँ । (ए०, बी०, का०) आयेंव । १०–(बी०, ए०) बहुतन्ह । ११–(बी०) भुगुति दिहि न । १२–(ए०, बी०) नहिं । १३–(ए०, बी०) खायंव; (का०) बहुत दिन भा भुगुति न पायेंउ । १४–(ए०, बी०, का०) भौंर । १५–(का०) कली । १६–(का०) जन्म । १७–(बी०) बासु । १८–(बी०) मन । १९–(ए०, बी०) मालती भाई । २०–(ए०) चातिक; (बी०) चात्रिग । २१–(ए०,बी०,का०) ओर । २२–(ए०,बी०, का०) पानी नहिं । २३–(बी०) पियई । २४–(ए०) सेवाती । २५–(बी०) पाव जा; (ए०) पाव तौ । २६–(बी०) जिअई; (का०) पूरी पक्ति नहीं है । २७–(ए०, बी०) तिनु । २८–(बी०) ना । २९–(ए०) राई; (बी०, का०) चरई । ३०–(ए०) पाव; (बी०) पावै । ३१–(बी०) गयंदम । ३२–(बी०) लै । ३३–(का०) भरई । ३४–(ए०) हमही बाचा उइ आइ परी; (बी०) हमरे बाचा पुरई; (का०) हम बाचा उन्ह कीन्ही । ३५–(ए०) आधि देहि देस; (बी०) अवधि किही जेहि देस; (का०) जेहि रे देस । ३६–(ए०) अपनो पति पारी; (बी०) हम आपनि प्रति पाली । ३७–(ए०, का०, बी०) × । ३८–(ए०) आए आनि किय भे ; (बी०, का०) आये आन के भेस ।

टिप्पणी—(१) **जरमहुँ**–आजन्म । **केहू**–किसीसे ।

(२) **ठाँ**–जगह ।

(३) **करील**–रेतीली भूमिमें उत्पन्न होनेवाली झाड़ी; टेंटी ।

(४) **चातक**–पपीहा । **सवाती**–स्वाती नक्षत्र ।

(५) **केहरि**–सिंह । **तिन**–तृण; घास ।

(७) **पतिपारी**–प्रतिपालन किया ।

२३०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

अबहूँ ढीठ बात[१] तूँ[२] कहई[३] । अवँक[२] होइ[४] न चुप कै[५] रहई[६] ॥१
अस मैं ढीठ न देखि[७] भिखारी । मारि नै जाइ[८] न दीनहिं[९] गारी ॥२
जोगी न होइ मनचल[१०] है कोई । हत्या दइ[११] बइठा[१२] जिउ खोई ॥३
दोखँ मोर जो इहाँ बुलायउ[१३] । उठि कै[१४] जाहु वहुत सँझायउ[१५] ॥४
कहिसि जाउँ जो तन जिउ होई । माटी[१६] लै र[१७] आडारो[१८] कोई ॥५
मिरगावती कहा अपनें जिय[१९] महँ[२०], वहुतै कियउ[२१] निरास ।६
जो फुरहिं[२२] मरि जाइ[२३] निरासा[२४], तोर दिहेउँ यहि आस[२५] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(बी०, का०) बातैं। २–(ए०, बी०, का०) तैं। ३–(ए०) कहही; (का०) कहसी। ४–(ए०) उवंग होए; (बी०) अवंग होय। ५–(बी०) कै चुप नहि। ६–(ए० बी०) रहही; (का०) औगुन होसि चुप मै रहसी। ८–(ए०, बी०, का०) देख। ८–(ए०) मारि न जाय; (बी०) मारे जाहि। ९–(ए०, बी०, का०) दीन्हें। १०–(ए०) होए मचल; (बी०) भा मचला। ११–(ए०, बी०, का०) दै। १२–(ए०, बी०) वैठा; (का०) बैसा। १३–(ए०) बोलाऍव; (बी०) बोलावा। १४–(बी०) तै। १५–(ए०) समुझायेंव; (बी०) समुझावा। १६–(का०) माटा। १७–(ए०, बी०, का०) रे। १८–(का०) लँडावहु; (बी०, ए०) अडारो। १९–(बी०) जिय अपने; (का०) अपने जीव। २०–(ए०, बी०, का०) ×। २१–(ए०, बी०, का०) कियौं। २२–(बी०, का०) जो फुरहुँ। २३–(ए०) जाइह; (बी०) जाही निस्चै; (का०) जाई। २४–(ए०, बी०, का०) ×। २५–(ए०) तौ का दिहे एहि आस; (बी०) तौ देहौं एहि आस; (का०) तब को देबेउ आस।

टिप्पणी—(१) अवँक—अवाक्; मूक।
(२) **नै**—न; नहीं। **गारी**—गाली।
(३) **मनचल**—मनचला।
(४) **दोखन**—दोष। **जाहु**—जाओ।
(७) **तोर**—तोड़। **आस**—आशा।

२३१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

कहिसि कुँवर मैं तबही जाना। परेसि मुरझि जो[1] उठेसि[2] भुलाना ॥१
मरम लेइ[3] कँह[4] कियेउँ[5] निरासा। जोग उतारु[6] पुजै[7] मन[8] आसा ॥२
चेरिहिं[9] आयेसु[10] रानि[11] जो दीन्हा। जोगी क भेस[12] उतारी[13] लीन्हा ॥३
कहिसि नहाइ[14] पहिरावहु[15] बागा। साथ[16] लाइ कै[17] चली सुभागा[18] ॥४
जोग उतारि नहावहिं[19] चेरीं। मिरगावती कहीं[20] जिय केरी[21] ॥५
वलम[22] बिरंच[23] परखहिं[24], आतम[25] जनाँ[26] जे हन्त[27] ।६
तेता[28] राजें[29] नाँ करहिं, जेता[30] बिरंचि[31] करन्त[32] ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(बी०) औ; (का०) जब। २–(का०) उयेसि। ३–(ए०, का०, बी०) लेय। ४–(का०) कै। ५–(बी०, ए०) किएव; (का०) कियेहु। ६–(बी०) उतारहु। ७–(ए०) पूज; (बी०, का०) पूजि। ८–(का०) तोरि। ९–(ए०, बी०, का०) चेरिन्ह। १०–(ए०) आएस; (बी०) आयेस; (का०) आइसु। ११–(ए०, बी०, का०) रानी। १२–(ए०) जोग क साज। १३–(ए०, बी०, का०) उतारै। १४–(ए०) नहाहु; (का०) नहाइ; (बी०) अन्हाय। १५–(ए०, का०, बी०) फिरावहु। १६–(का०) खंथा। १७–(ए०, बी०, का०) लाय। १८–(ए०, बी०,

का०) सभागा । १९-(बी०, का०) अन्हवावहिं । २०-(ए०, बी०, का०) कहा । २१-(बी०) म्रिगावती मनभावते केरी । २२-(बी०, का०) बालम । २३-(ए०, बी०, का०) बिरंच । २४-(ए०) परिखिअहिं; (बी०) परखिये । २५-(ए०, बी०, का०) उत्तिम । २६-(ए०, बी०, का०) जन । २७-(ए०, बी०) जो हंथि: (का०) जे होन । २८-(ए०) जेता । २९-(ए० बी०) राचे; (का०) राये । ३०-(ए०) तेता; ३१-(ए०, बी०, का०) विरंथि । ३२-(ए०) करन्थि; (बी०) करन्ति ।

टिप्पणी—(४) **नहाइ**—नहलाकर । **बागा**—वस्त्र ।

२३२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

सुनके सूर मढ़ी तब जाई[1] । पारबती ससि रति **कँह आई[2]** ॥१
मिरगावती सिंगार जो भयई[3] । बारह अभरन पहिरिसि तिहई[4] ॥२
धौराहर वहु भाँत सँवारा[5] । रतन मनि[6] दीपक[7] उजियारा[8] ॥३
अगर चन्दन बेना कस्तूरी । मलयागिरि[9] कचोरन्ह[10] भरी ॥४
कुँकू[11] मेद[12] अरगजा किया[13] । ठाँव ठाँव लौ[14] बरै[15] तेलिया[16] ॥५
चोवा मेद[17] सिलार[18] रस[19], फुलेल[20] भींवसेनी[21] बहु तूल ।६
सबै बास[22] बहु[23] बिरसै[24], परिमल फूल[25] तँबोल ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(बी०) संकर सूर मढ़पती जाई; (ए०) पतियर अपने मँदिर सँचारा; (का०) दिनियर अपने मंदिर सिधारा । २-(बी०) राति कराई; (ए०) रैन सेत आइ पहँचारा (का०) सुरज साथ जाइ उघारे । ३-(बी०) भई; (ए०) जो ठये; (का०) जे ठयेउ । ४-(ए०) नये; (का०) सोलह आभरन पहिरै लयेऊ; (बी०) बारह आभरन कहियहि सोई । ५-(बी०) सँवारे । ६-(का०) महि । ७-(ए०, का०) दीप । ८-(बी०) उजियारे । ९-(ए०) मलयागिरि जो । १०-(ए०) कचोरिन्ह । ११-(ए०, बी०) कुकुह; (का०) कुंकुम । १२-(बी०) मेलि । १३-(का०) करीबा । १४-(ए०, बी०, का०) × । १५-(बी०) बरै खर; १६-(दि० मार्जिन) बरै बहु दिया; (का०) बरै बहुतै दीवा । १७-(का०) अगर । १८-(बी०) सील । १९-(का०) सिर भरि । २०-(ए०, का०) × । २१-(ए०, बी०, का०) भीमसेनि । २२-(बी०) वासु । २३-(ए०, बी०, का०) × । २४-(बी०) बिलसहि; (का०) वेलसइ । २५-(ए०) बहुल ।

टिप्पणी—(४) **बेना**—(स० वीरण) खस । **कचोरन्ह**—कटोरोंमें ।

(५) **कुंकु**—कुंकुम; केसर । **मेद**—आइने-अकबरीके अनुसार एक प्रकारकी सुगन्धि जो किसी पशुके नाभिसे बनायी जाती है । **अरगजा**—केसर, चन्दन, कपूर आदिके मिश्रणसे बनी सुगन्धि । **लौ**—दीपक । **बरै**—जरै ।

(६) **चोवा**—एक प्रकारकी सुगन्धि। इसके तैयार करनेकी विधिका आइने-अकबरीमें उल्लेख है। **सिलार**—शिलाजीत। **भींवसेनी**—भीमसेनी कपूर।

२३३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

चन्दन दिया जारहिं बहु[1] चेरीं[2]। बाती मैन[3] जरैं बहुतेरीं ॥१
बासर निसि न जाइ[4] बराई[5]। देवस कहै[6] को[7] राति कहाई ॥२
तिह ठाँ[8] पलँग[9] सेज सँवारी[10]। मिरगावती बैठी[11] धनबारी ॥३
सखी[12] सहेलिन्ह[13] कहिमि बुलाई[14]। कुँवर हँकारु[15] दइ र[16] बड़ाई ॥४
सब उठि धाइ[17] कुँवर पँह गईं[18]। जाइ ठाढ़ि आगीं वै[19] भईं ॥५
मया करहु[20] पग[21] धारहु[22] राजा[23], पदुमिनि तुम्ह र बुलाउ[24]।६
उटा तँबोल[25] हाथ लै रहँसत[26], हँसत[27] मँदिर मँह[28] आउ[29] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(ए०) सब; (का०) चहुँ। २–(का०) फेरी। ३–(बी०) मैन। ४–(ए०) नहिं जाय; (बी०) जाइ न। ५–(ए०) बिराई; (बी०) बेराई; (का०) पराई। ६–(का०) कोइ देवस। ७–(ए०) कोउ; (बी०) कोइ। ८–(बी०) ठाँव। ९–(ए०) पालक। १०–(बी०) बिछाई; (का०) तेहि भीतर लेइ पलंघ बिछाई। ११–(ए०) बैठ; (का०) बैसी। १२–(बी०) सखिन्ह। १३–(का०) सहेली। १४–(ए०, बी०, का०) बोलाई। १५–(ए०, बी०, का०) हँकारहु। १६–(ए० बी०) रे; (का०) देहु। १७–(ए०) कै। १८–(का०) जे ठाढ़ी आगे भइँ जाई। १९–(ए०) आगु होए; (बी०) वोहि आये; (का०) सेवा करत साथ भइँ आई। २०–(बी०) करिये। २१–(ए०, बी०, का०) पगु। २२–(ए०) ढारहु; (का०) धारिये; (बी०) ढ़ारि। २३–(ए०, का०) ×। २४-(ए०) तोहरे बोलाए; (बी०, का०) तुम्हहिं बोलाव। २५–(का०) तँबोर। २६–(ए०, का०) ×। २७–(बी०) ×। २८–(बी०) कहँ। २९–(ए०) जाए; (बी०) आव।

टिप्प०—(१) **जारहिं**—जलाती हैं। **बाती**—बत्ती।

(२) **बासर**—दिन। **बराई**—बिलग; अलग। **देवस**—दिवस।

(४) **हँकारु**—बुलाओ। **बड़ाई**—सम्मान।

२३४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

रानी देखि[1] कुँवर गा आई। उतरी सेज सौं ठाढ़ सोहाई[2] ॥१
पेग[3] चारि चलि किहिसि[4] जुहारू[5]। आवहु[6] सामी[7] करहु अहारू ॥२
तहिया भुगुति न दीन्हेउ[8] तोही। सेज बइठि[9] बिरसहु[10] अब मोही ॥३

हम लगि गंजन मरन[११] **तुम्ह**[१२] **सहा। हौं कस मानों तोर न**[१३] **कहा** ॥४
जो कोउ[१४] **काहु लागि दुख देखै। मिलै सोइ**[१५] **अगिनत**[१६] **सुख पेखै**[१७] ॥५
राज पाट जहवाँ लहि[१८] **सामी, औ**[१९] **हौं**[२०] **दासि**[२१] **तुम्हारि**[२२] ।६
चलहु [सेज] परुवहुँ बैटहु[२३], **तूँ र**[२४] **पुरुख हौं**[२५] **नारि**[२६] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(का०) देखु। २–(का०) सइ परु सोहराई। ३–(ए०) पग। ४–(का०) किहेसि; (बी०) कियेउ। ५–(ए०, बी०, का०) जोहारू। ६–(ए०, बी०) आव। ७–(बी०) सामि अब; (ए०) सामी अब। ८–(ए०) दीनेव। ९–(ए०, बी०, का०) बैठि। १०–(ए०) अब बिरसहु; (बी०) अब बिलसहु; (का०) अब भुगुतहु। ११–(ए०, बी०) मरन गंजन; (का०)×। १२–(बी०) तुम; (ए०) जो; (का०) जग। १३–(ए०) तोर न मानों। १४–(ए०, बी०, का०) कोइ। १५–(ए०, बी०, का०) सोव। १६–(ए०) अंगत; (बी०, का०) अगनित। १७–(ए०) ऐखै। १८–(बी०) लगि है; (का०) लगि। १९–(ए०, का०) ×। २०–(का०) अरु २१–(ए०, बी०, का०) दासी। २२–(ए०) तोहारि। २३–(बी०, का०) चलहु सेज पर बैसहु; (ए०) कुबरहु सेज पर बैठहु। २४–(ए०, बी०) रे; (का०) तुम्ह। २५–(का०) मैं। २६–(बी०) नारि तुम्हारि।

टिप्पणी—(२) **सामी**—स्वामी।
(३) **तहिया**—उस दिन। **बिरसहु**—बिलास करो।
(४) **कस**—कैसे।
(६) **जहँवा लहि**—जहाँ तक।
(७) **पसवहुँ**—लेटो।

२३५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

दुवउ[१] **सेज पर बइठे**[२] **जाई। मिरगावति**[३] **फुनि**[४] **बात चलाई** ॥१
आपन बिरित[५] **कहौं तिह आगे**[६]**। आयेउ तो चित कै रिस लागे** ॥२
आवत आयउ[७] **भा**[८] **पछतावा। कैसहुँ रहै न जिउ**[९] **वउरावा**[१०] ॥३
निसि वासर तिह[११] **सँवरत**[१२] **रहेउँ**[१३]**।खिन**[१४] **न बिसारों अब सत**[१५] **हौं**[१६] **कहेउँ**[१७]॥४
तो[१८] **गुन हियैं**[१९] **[अइस**[२०]**] कै छाई**[२१]**। चित्र लिखी**[२२] **पुनि उतर**[२४] **न जाई**[२५] ॥५
मजा न विसरी तो गुन, कीन्हि गूथिम माला[२६] ।६
तो नाम मो भजैं, वासर रैनि [होइ उजाला[२७]**]** ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०, का०) दुऔ। २–(ए०) बैठे; (बी०, का०) बैसे। ३–(ए०, बी० का०) मिरगावती। ४–(बी०) फिरि। ५–(ए०, बी०, का०) निरति। ६–(ए०)

हौं ताके; (बी०) तुम आगे; (का०) कहु मोहि आगे। ७-(का०) आयेहु। ८-भवा। ९-(ए०, बी०, का०) जीउ न रहै। १०-(ए०, बी० का०) बौरावा। ११-(ए०, बी०, का०) तोहि। १२-(ए०, का०) सौंरत; (बी०) सुमिरत। १३-(ए०, का०) रहऊँ; (बी०) रहौं। १४-(ए०) खन। १५-(का०) फुर। १६-(ए०, बी०, का०) ×। १७-(ए०) कहउ; (बी०) कहौं। १८-(ए०, बी०) तुव; (का०) तोर। १९-(ए०) हम हिय; (बी०) हम कहँ; (का०) हम। २०-(दि०) आइस; (बी०, ए०, का०) अस। २१-(ए०, बी०) छाऐ; (का०) छावा। २२-(ए०) लिही; (बी०, का०) लिखे। २३-(ए०, बी०, का०) फुनि। २४-(ए०) मैंट। २५-(ए०, बी०, का०) जाये। २७-(ए०) मजा नहु बिसरी औ तुव गुन, गुन गथिम माला; (बी०) मम जनि बिसरिय आह तुव गुन, गनि गूंथी जिय माला; (का०) मंझन यह बिसरिय कैंव गुन, गांथिम पुहुप कै माल। २६-(ए०) तुव नाम मनि जवौ, जपन बासुर रैनि हो बाला; (बी०) तुव नाम निज मंत्र किय, जपत रैनि बासुराय; (का०) तुम नाम निजु मंत्रेन, जपत नयन बिसाल।

टिप्पणी—(१) दुवउ—दोनों।

(२) आपन—अपना। बिरित—(वृत्त) समाचार। रिस–क्रोध।

(३) भा–हुआ।

२३६

(दिल्ली; बीकानेर)

कुँवर कहा अब हम दुख सुनहू। हौं रे कहौं तुम्ह[१] चित मँह[२] गुनहू ॥१
तू र[३] छाँड़ि जिह[४] दिन मुँहि[५] आई। तिह[६] दिन सेउ[७] मैं भुगुति न खाई ॥२
जोग[८] पन्थ होइ भेस भरायेउ[९]। आरन[१०] बनखँड माँझ[११] धसायेउँ[१२] ॥३
फुन र[१३] समुँद मँह परेउ[१४] जो आई। लहरि उठै कछु[१५] कहीं[१६] न जाई ॥३
माँस देवस वँह डर[१७] मँह[१८] रहा। फुनि[१९] लहरहिं[२०] सेउ जो तिर बहा[२१] ॥५
आइ परेउ तिह ठाँई[२२] औघट[२३], जहाँ न आहै घाट ।६
सिखर ऊँच न मारग पेखैं[२४], चाँटहि चढ़ै न पाँत[२५] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१-तुम। २-महि। ३-रे। ४-जेहि। ५-सै। ६-तेहि। ७-छिनसे। ८-जोगी। ९-फिरायेंउ। १०-अँरन। ११-महँ। १२-धस लायेंउँ। १३-पुनि। १४-परा। १५-किछु। १६-कहै। १७-वोहि। १८-महिं। १९-पुनि। २०-लहरि। २१-दइव निरबहा। २२-तेहिं ठाउँ। २३-×। २४-नहिं मार्ग जाइ कहँ। २५-चढ़ी चढ़ै नहिं बाट।

टिप्पणी—(३) धसायेउँ—घुसा।

(५) तिर—तीर; किनारे।

(६) औघट—बेराह, बिना रास्ता।

(७) चाँटहि—चींटा।

२३७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

फुनि रे[1] साँप एक बिपरित[2] आवा। जिय मँह[3] कहेउ[4] ये र[5] हौं[6] खावा ॥१
एक और सठ[7] आयउ[8] भारी। दुहूँ आपु[9] मँह जूझ[10] पसारी ॥२
दुँहु सायर[11] मँह खाँइ पछाड़ा। तो हम कहँ दइ[12] जीउ उबारा ॥३
उन्हिकैं परैं[13] तरंग जो आई[14]। सिखर नाँघि बोहित बहिराई[15] ॥४
भागेंउ उतर सुबुध्या आयेउँ। अचरज[16] सुनेउ[17] सो देखै धायेउँ ॥५
सुवन[18] अचम्भो सुनि के अचरज[19], धायों देखी सेइ[20] ।६
कुँवरि सेज एक[21] बैठी[22] अपछरि[23], राकस आयउ लेइ[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) पुनि। २–(ए०, बी०) बिपरीत। ३–(बी०) मैं। ४–(ए०) कहेंव। ५– ए०) ये रे; (बी०) ×। ६–(बी०) हौ एहि। ७–(ए०) सुठि। ८–(बी०) आयउ सुठि। ९–(बी०) आपुस। १०–(ए०, बी०) जूझि। ११–(बी०) दुवउ आपु। १२–(बी०) बिधि हम कहँ; (ए०) सिउ हम कहँ। १३–(ए०) परत; १४–(ए०, बी०) लहरि बड़ि आई। १५–(ए०) बोहिअ बिहराई; (बी०) बोहिथ बहराई। १६–(बी०) अचरिज। १७–(ए०, बी०) सुना। १८–(ए०) सोन: (बी०) स्रवन। १९–(ए०, बी०) ×। २०–(ए०) देखै धायेउँ सोए; (बी०) धायेउँ देखै सोय। २१–(ए०, बी०) ×। २२–(ए०) वैठे; (बी०) बैठ। २३–(बी०) अपछरा। २४–(बी०) लेय।

टिप्पणी—(१) बिपरित—असाधारण।

(२) जूझ—युद्ध। पसारी—फैलाया।

(३) सायर—सागर।

(४) तरंग—लहर। सिखर—शिखर। बोहित—नाव।

२३८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

राकस अधिक[1] अहा बरिवण्डा। मारेउँ[2] चक्र किहेउँ[3] नौखण्डा[4] ॥१
राजा सुनि विधि[5] देखै आवा। नगर मोख राकस सेंउ[6] पावा ॥२
राजा कहीं[7] वियाहिय[8] सेई[9]। आधा राजपाट हम देई ॥३
[बरज][10] करों तो नीक[11] न होई। कर कर निकसेउँ[12] छाड़ेउ सोई ॥४
आइ परेउँ कजलीवन[13] महाँ[14]। सिंघ सिंदूर छिकारहँ[15] तहाँ ॥५

बन अँधियार न सूझे मारग[16], भूलेउँ कैं खैं[17] जाउँ।६
कैसहुँ महँ न बिसारेउँ[18] कैसहुँ[19], जपत[20] तुम्हारेउ[21] नाँउ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) अति रे। २-(ए०, बी०) मारेंव। ३-(ए०, बी०) किहेंव। ४-(ए०, बी०) दस खण्डा। ५-(ए०) एह; (बी०) वह। ६-(ए०) सै; (बी०) सौं। ७-(ए०) कहै; (बी०) कहा। ८-(बी०) बियाहौं। ९-(ए०, बी०) सोई। १०-(बी०, ए०) जो बर; (दि० मार्जिन) बरजो। ११-(बी०) नर्क। १२-(बी०) निसरेउँ। १३-(बी०) कदलीबन। १४-(ए०, बी०) माँहाँ। १५-(ए०) झिकरहिं, (बी०) चिघारहिं। १६-(ए०) ×। १७-(ए०) किधी; (बी०) केहि दिसि। १८-(ए०) उइ सो हम्ह न बिसरेउ। १९-(ए०, बी०) ×। २०-(ए०) हिय; (बी०) चिहिं। २१-(ए०) तोहारहि; (बी०) तुम्हारा।

टिप्पणी—(१) **बरिवण्डा**—बलवान।
(२) **बियाहिय**—व्याहूँ। **सेई**—उसे।
(५) **छिकारहँ**--चिग्घाड़ करते हैं।
(६) **कैं खैं**--किस ओर।

२३९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

नाँउँ लेत एक मारग पावा। बन ओरान[1] हौं वाहर आवा॥१
बाहर[2] मिलेउ[3] जो[4] छेरि[5] चरवाहा। बहु अलाप कीतसि बहु चाहा॥२
पाहुन क'ह[6] ले गयउ बुलाई[7]। भुगति न देतसि[8] चाहिसि खाई॥३
चरि[9] भागी[10] एक तिह[11] लै पैठा[12]। पाट दिहिसि[13] वाहर होइ[14] बैठा[15]॥४
चरि[16] भीतर मानुस बहु आहे[17]। वै[18] हमकँह सिख बुधि दइ[19] रहे॥५
पुनि वहि भीतर आयेउ[20] चढ़ी[21], उन्ह मँह मारिसि एक।६
तोरि कै भूँजसि[22] खाइसि, बार न लागेउ[23] नेक॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति।

१-(ए०) उरान। २-(बी०) बहुरि। ३-(ए०, बी०) मिलेव। ४-(ए०, बी०) ×। १५-(ए०, बी०) छेरी। ६-(बी०) कै। ७-(ए०, बी०) गयेव बोलाई। ८-(बी०) देतिसि; (ए०) दीतिसि। ९-(ए०, बी०) चूर। १०-(बी०) ×। ११-(ए०) तँह; (बी०) तहाँ। १२-(ए०) बैठा। १३-(बी०) दिहेसि। १४-(ए०) भै। १५--(बी०) बैसा। १६-(बी०) तेहि। १७-(दि०) आहे। १८-(ए०) उए। १९-(ए०, बी०) दै। २०-(ए०, बी०) आएव। २१-(ए०) चरपट (?); (बी०) चोरटा। २२-(ए०, बी०) ×। २३-(ए०, बी०) लागी।

टिप्पणी—(१) ओरान—समाप्त हुआ।

(२) **छेरि**—बकरी।

(४) **चरि**—गुफा। **पैठा**—घुसा। **पाट**—पट्ट; दरवाजा।

(७) **बार**—देरी। **नेकु**—तनिक भी।

२४०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मानुस खाइ बहिरि[१] परि सोवा। यह र[२] देखि मैं जिय[३] मँह रोवा ॥१
औ जिय के मैं[४] डर न[५] रोवा। जिय मँह सँवरेउँ[६] तोर बिछोवा ॥२
फुनि उन्हि कै[७] बुधि जिय[८] मँह आई। सँडसी दगधि[९] आँख मँह[१०] लाई ॥३
फोरेउँ आँख निकसि के भागेउँ। बहिरि[११] परेउ[१२] दुख सब निसि जागेउँ ॥४
तिह[१३] ठाँ[१४] कैर सुनहु दुख भारी। बैसहुँ मँह मैं तों[१५] न बिसारी ॥५
पँदमपत्र[१६] बिसालाछी[१७], गजकुम्भ पयोहरी[१८] ।६
हिरदैं बससि मों तिह, साखा[१९] बीलोचन[२०] जथा ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) बहुरि। २–(ए०) अेह रे; (बी०) वह रे। ३–(ए०) जिउ; (बी०) चित। ४–(ए०) औ मैं जिअ; (बी०) औ मैं जिउ। ५–(बी०) के डर नहि। ६–(ए०, बी०) सुमरेंव। ७–(ए०, बी०) की। (ए०) जिअ; (बी० जिउ। ८–(बी०) सँडसी दगाध। १०–(बी०) आँखिहु; (ए०) आगी। ११–(ए०) बहुरि; (बी०) पुनि रे। १२–(ए०) वरा। १३–(ए०, बी०) तेहि। १४–(बी०) ठाँव। १५–(ए०, बी०) तू। १६–(ए०) पदुम पुत्रि; (बी०) कँवल पत्र। १७–(ए०, बी०) बिसाल किये। १८–(ए०) पयोहरे; (बी०) पयोहरि भरि। १९–(ए०) हिरदै बास काँती साखा: (बी०) हृदै बास कन्या साख; (दि० मर्जिन) हिरदै बसति कामनी साखा। २० (ए०, दि० मर्जिन) वैलोचन; (बी०) सबै लोचन।

टिप्पणी—(१) परि–पड़कर।

(२) बिछोवा–बिछोह; वियोग।

(६) बिसालाछी–(विशालाक्षी) बड़े नेत्रोंवाली। **गजकुम्भ**–हाथीका गण्डस्थल; स्तनकी उपमाके निमित्त कवि प्रायः इस शब्दका प्रयोग करते रहे हैं। **पयोहरी**—पयोधरी; स्तनवाली।

(७) **मों**–मेरे। **तिह**–तुम। **साखा**–डाल। **बीलोचन**–देखिये पीछे १२१।७।

२४१

(दिल्ली; बीकानेर)

इत[१] दुख सुनि जिउ[२] घबरावा[३]। मिरगावतीं गिय भरि कै लावा[४] ॥१
हम लग[५] अति[६] दुख देखिहु[७] नाहाँ। बिरसु सिरफल राखेउँ[८] छाँहाँ ॥२

पवन न लागि[10] सूर पँह राखी[10]। वास नाँउ भँवर न चाखी[11] ॥३
दारिउँ दाख असक जँभीरी[12]। बिरसहुँ तुम्ह आगें हम[13] नेरीं[14] ॥४
आलिंगन आलो[15] कुच धरई। कर कुच गहे सहत[16] रस बढ़ई[17] ॥५
उरहिं लागि[18] कै दलमलै, अधर घूँट रस लेइ[19] ।६
कन्दै हँसै मान कर बाला[20], अधर अलिंगन देइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–एत । २–जिव । ३–गहबरि आवा । ४–भरि गीव लगावा । ५–लागि । ६–एत । ७–सहेहु । ८–बिरहसहु सो फल राखे । ९–लागेउ । १०–राखेउ । ११–बासु न अवर भँवर चाखेउ । १२–दारिव नारंग दाख जँभीरा । १३–× । १४–नीरा । १५–अलौ । १६–सुरति । १७–करै । १८–लाइ । १९–दलि कै रैनि सेज रस लेइ । २०–हँसइ मान करै बालम ।

टिप्पणी—(१) इत–इतना । गिय–गले । नाहाँ–पति ।

(२) सिरफल–श्रीफल; बेल ।

(४) दारिउ–दाड़िम; अनार । दाख–अंगूर । जँभीरी–नींबू । बिरसउ–बिलास करो । नेरी–निकट ।

२४२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

भँवर[1] बास परिमल सब[2] लिया[3]। औ सब अमिय महारस पिया[4] ॥१
तिस्नाँ काम सान्त मन भई। दुख बेदन[5] उर कै[6] सब गई ॥२
पाँचभूत[7] कया जो आहीं[8]। ते र[9] सिरान[10] अवँक[11] होइ रहीं[12] ॥३
कँवल किहाँ[13] भँवर[14] निसि रहा। जाय न जाइ[15] पेम रस गहा ॥४
चित चिहटेव[16] निकसि[17] न जाई। पंकहि जिमि[18] गयन्द मिलाई ॥५
हिया सरोवर[19] मन कँवल, सज्जन बहुल[20] बईठ ।६
बास लुबुधेउ पेम को[21], भीतर न आवइ दीठ[22] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०) भौंरा; (बी०) भौंर । २–(ए०) रस । ३–(बी०) लेई । ४–(बी०) पिवई । ५–(बी०) बेदना । ६–(ए०, बी०) की । ७–(ए०, बी०) पाँचो भूत । ८–(ए०, बी०) अहे । ९–(ए०) तेरे; (बी०) ते । १०–(ए०) सेरान । ११–(ए०) उवंग; (बी०) अवाग । १२–(ए०, बी०) होय रहे । १३–(ए०, बी०) थानि । १४–(ए०, बी०) भौंरा । १५–(ए०, बी०) जाय । १६–(बी०) उलझा । १७–(बी०) निकेसि । १८–(ए०) जिमि रे; (बी०) जेउँ । १९–(बी०) सरवर । २०–(ए०) मेसल । २१–(ए०बी०) के । २२–(ए०, बी०) बहुत उडंत न दीठ ।

२४३

(दिल्ली; बीकानेर)

रैन सबै [बिगरह[1]] मँह गई। धरहर[3] करै सूर उवई[4] ॥१
धरहर करै[5] सूर दुहुँ मानै। मोर भयउ [बिगरह[8]] बिहराने ॥२
जामिनि [बिगरह[9]] भयउ अपारा। कुंजर साजे[10] और तुखारा ॥३
तातर[11] कुरिल कराएउ[12] केसा। कंचूकी पहिरि सनाह[13] के भेसा ॥४
पहिन जो बिरिया[14] कंगन कलाई। सारी कसिसि रकावल ठाँई[15] ॥५
रिपु सत बान जो लोइनहि[16], भौंह धनुक बैठाँह।६
चक्र पयोधर कीन्ह गिय[17], तिह[18] वर जीतेउ[19] नाँह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–(बी०) बिग्रह; (दि०) परिगह। २–मैं। ३–धरहरि। ४–गा उगई। ५–धरहर किही। ६–मानी। ७–भयेउ। ८–(दि०) परिगह; (बी०) बिग्रह। ९–(दि०) परिगह; (बी०) बिग्रह। १०–साजेउ। ११–टाटर। १२–कराये। १३–सनेह। १४–बाँह जो बरया। १५–सारी कस रंगावली थाई। १६–रविसुत बाहन जो लोइनहु। १७–कान्ह कै। १८–तेहि। १९–जेतेउ।

टिप्पणी—(१) **बिगरह**—(विग्रह) युद्ध। **धरहर**–रोक-थाम। **उवई**–उगा।

(२) **दुहुँ**–दोनों। **बिहरनि**–समाप्त।

(३) **जामिनि**–(यामिनी) रात्रि। **कुंजर**–हाथी। **तुखारा**–घोड़ा।

(४) **तातर**–तातारी तलवार। **कुरिल**–कुटिल; टेढ़ा। **सनाह**–कवच।

२४४

(दिल्ली; बीकानेर)

तिलक [खड्ग*][1] तातर तिंह माँगा[2]। कुरिल [बार][3] उधियानेउ[4] माँगा ॥१
नह सत साँग सनाह कै[5] लागी। कँचुकी तार तार[6] होइ भागी ॥२
बिरी[7] फूटि कर गही जो नाहाँ। पहुँचो[8] जो टूटि उपरि[9] गइ बाहाँ ॥३
कसी रकावल[10] अही[11] जो सारी। मैंमन्त भिरे[12] उहो धरि फारी ॥४
दूनों उनै[13] माँझ रन रहे। [दिनियर आइ बीच होइ गहे[14]] ॥५
जो न[15] आवत सूरज[16] धरहर[17] को, को जानै कस होत।६
दुहु[18] मैंमत कर [विग्रह][19] दलमलि, निकसेउ धरहुत सोत[20] ॥७

पाठान्तर—बीकनेर प्रति।

१–(बि०) कुहका। २–तिलक जो लिलाट टाटर मँह लागा। ३–(दि०) हर। ४–उघसी। ५–नहसुती संगी सनाहु। ६–तर तर। ७–बरया। ८–बाँह। ९–उबरि। १०–रँगावली। ११–हुती। १२–मैंमत भिरेउ। १३–दुवौ आइ। ४१–

(दि०) दिनियर आइ बीच होई। १५–नहि। १६–सूर्ज। १७–घरहरि। १८–दुबौ। १९–(दि०) बरकर। २०–निकसे धार हुतै सोत।

टिप्पणी—(२) **नह**–नख। **सत**–शत। **साँग**–लोहेका छोटा भाला। **सनाह**–कवच।

(३) **बिरी**–चूड़ी। **पहुँचो**–पहुँची; एक आभूषण। **उपरि**–उखड़।

२४५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[१])

भोर भयउ[१] दिनकर[२] उजियारा। चेरी पानि[३] लै आयउ[४] बारा ॥१
बदन पखारहिं पान चबाहीं। हँसहिं[५] सेज पर केलि कराहीं ॥२
महतै[६] [नेगी[७]] सुनी यह बाता। वह आयउ[८] ज[९] सुना हुत[१०] राता ॥३
जैं[११] का नेहा[१२] राखी[१३] अही[१४]। आयउ[१५] सोइ कुँवरि जैं[१६] चही ॥४
उत्तम[१७] उतंग राजपुत आही[१८]। सूरुजबंसी[१९] ऊँच इन्ह चाही[२०] ॥५
मिरगावती राज उन्ह[२१] दीन्हो[२२], औ आपुन सब[२३] जीउ ।६
चलहु जोहारै जाहि भेंट लै[२४], मिरगावती कर[२५] पीउ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) भयेव। २–(बी०) दिनियर। ३–(ए०) चेरि पानी; (बी०) चेरी पानी। ४–(बी०) आई; (ए०) आयेव। ५–(बी०) हँसि हँसि। ६–(ए०) महथे। ७–(दि०) नगर। ८–(ए०, बी०) आयेव। ९–(ए०, बी०) जो। १०–(बी०) होत। ११–(बी०) जेइ, (ए०) जे। १२–(ए०, बी०) गहि तहिया। १३–(ए०, बी०) राखेव। १४–(दि०) आही। १५–(ए०, बी०) आयेव। १६–(ए०) जो; (बी०) वोहि। १७–(बी०) अति। १८–(ए०, बी०) आही। १९–(ए०) सुरुज बस; (बी०) सूर्य बस। २०–(बी०) इन्हि चही। २१–(बी०) उन; (ए०) सब। २२–(ए०, बी०) दीन्हेव। २३–(ए०) आपन उन्ह। २४–(बी०) जाहि भेटेल। २५–(बी०) ×।

टिप्पणी—(१) **दिनकर**–सूर्य। **चेरी**–दासी।

(२) **बदन**–मुँह। **पखारहि**–(स० प्रच्छालन) धोते हैं। **केलि**–क्रीड़ा।

(३) **महतै**–श्रेष्ठ जन; उच्च कर्मचारी। माताप्रसाद गुप्तने मधुमालतीमें इसे महामात्य बताया है। **नेगी**–सामान्य कर्मचारी।

(४) **जैं**–जिसका। **नेहा**–स्नेह; प्रेम।

(५) **उतंग**–(सं० उत्तुंग) अत्यन्त ऊँचा।

---

१. इस प्रतिमें यह कड़वक दो कड़वकोंमें बँटा है। पहले कड़वकमें प्रथम दो पंक्तियोंके साथ पाँच अन्य पंक्तियाँ हैं। दूसरे कड़वकमें मध्यकी तीन पंक्तियाँ और उनके बाद दो पंक्ति रिक्त और तब अन्तकी दो पंक्तियाँ है।

२४६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावतीं कहा[१] सुनु राया। नगर लोग कँह[२] बोलहु माया ॥१
सभा बैठि परधान हँकारहु। कापर[३] दइके[४] देस अभारहु[५] ॥२
नेगी अउर[६] अहहिं बहुतेरे। सभै[७] बुलावहु[८] पठवहु चेरे ॥३
आन होइ[९] सब देश मझारी। तुम्ह[१०] राजा हौं नारि तुम्हारी ॥४
सभा जाइके[११] बैठेउ[१२] सयाना[१३]। भा उजियार नगर[१४] सब जानाँ ॥५
महता[१५] तुरिय भेंट लै आवा[१६], औ[१७] नेगी सब आय।६
दण्डवत[१८] भेंट कीनिह जो[१९] कुँवर कँह[२०], धाइ[२१] लागि[२२] फुनि[२३] पाय ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) कहै। २–(बी०) कहुँ। ३–(बी०) कपरा। ४–(ए०, बी०) दैके। ५–(बी०) उभारहु। ६–(ए०, बी०) और। ६–(ए०) सबही; (बी०) सबै। ८–(ए०, बी०) बोलावहु। ७– (ए०) होहिं; (बी०) होय। १०–(ए०) तोह। ११–(बी०) जाय कै। १२–(बी०) बैठ; (दि०) बैठउ। १३–(बी०) सुजाना; (ए०) माना। १४–(बी०) राजनीति चरचै। १५–(बी०) महथे; (ए०) महथ। १६–(बी०) आये। १७–(ए०) औव; (दि०) ×। १८–(ए०, बी०) डण्डवत १९–(ए०) जो कीन; (बी०) जो कोन्ह। २०–(ए०) से; (बी०) कै २१–(बी०) धाय। २२–(ए०) लागहु; (बी०) लगे। २३–(ए०) सुनि।

टिप्पणी—(१) **राया**–राजा। **माया**–मया; प्रेम।

(२) **परधान**–प्रधान। **हँकारहु**–बुलाओ। **कापर**–कपड़ा; वस्त्र। **दइके**–देकर। **अभारहु**–आभारी बनाओ।

(३) **सभै**–सभीको। **चेरे**–दास।

(४) **आन**–ख्याति। **मझारी**–मध्य।

(५) **सयाना**–चतुर।

(७) **दण्डवत**–अभिवादन। **पाय**–पैर।

२४७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मया बोलि कै कुँवर उचाये। नेगी कै[१] कापर[२] नेगिहँ[३] पाये ॥१
औ परसाद बहुत कै दीन्हाँ। सीस चढ़ाइ[४] सो रानहिं[५] लीन्हाँ ॥२
राइ राउ उरगान[६] जो अहे[७]। आयसु भयउ बुलावइ कहे[८] ॥३
प्रतिहार कहँ अज्ञा भई। देउ जोहारी[९] जो आवई ॥४
नींचहिं[१०] कोउ[११] न छेड़ै[१२] आजू। देखइ देहु हमारेउ साजू ॥५

कुंडर[15] कान मुकुट[16] सिर सोहै, कर कटार सोन सन[17] मूँठि ।६
प्रीति [इ]नहिं साँची कै जानहु[18], अउर[19] प्रीति सब झूठि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०, बी०) क । २–(बी०) कपरा । ३–(ए०) नेगिन्ह; (बी०) नेगिहु । ४–(ए०) चढ़ाए; (बी०) चढ़ाय । ५–(बी०) सो रे उन्ह ; (ए०) जो रानन्हि । ६–(ए०) राए रान उरगान; (बी०) राय रान ओरगान । ७–(दि०) आहे । ८–(ए०) आऐस भई बोलावै कहे; (बी०) आये सबै जो बोलावन कहे । ९–(ए०, बी०) जोहारै । १०–(बी०) नीचेहु; (ए०) काहू । ११–(ए०, बी०) कोइ । १२–(ए०) छेरै; (बी०) छेकै । १३–(ए०, बी०) देखै । १४–(ए०, बी०) हमारेव । १५–(ए०) कोंडर; (बी०) कुण्डल । १६–(ए०) मटुक । १७–(ए०, बी०) × । १८–(ए०) प्रीति इन्हहि की साची; (बी०) प्रीति इन्ह की गनियै साँची । १९–(ए०, बी०) और ।

टिप्पणी—(२) **परसाद**–(प्रसाद) अनुग्रह; कृपा ।

(३) **राइ राउ**–राजा लोग । **उरगान**–जायसीके पदमावतमें यह शब्द ओरगानके रूपमें प्रयुक्त हुआ है (९९।९; १२८।२) । वासुदेवशरण अग्रवालने इन स्थलोंपर अरबी शब्द रुक्न (=खम्भ)के बहुवचन अरकानको मूलमें मानकर अमीर-उमरा, प्रधान, सामन्त, माण्डलिक (पृ० १४५), मुख्य, प्रधान व्यक्ति (पृ० ११३) आदि अर्थ किये हैं । किन्तु इसके मूलमें न तो अरबी शब्द है और न इसका वह अर्थ है जो अग्रवालजीने अनुमान किया है । सम्भवतः यह संस्कृतका उरुगाय है । वेदोंमें सूर्यकी गतिशीलताके लिए अनेक स्थलोंपर इस शब्दका प्रयोग हुआ है । उरगानके मूलमें उरुगाय होनेका सम्भावना नरपतिके बीसलदेव-रासमें प्रयुक्त उलिगण, उलिगणा, उलगाणा शब्दोंसे प्रकट होता है—

हस-वाहन मिग लोचन नारि ।
सीस समारइ दिन गिणइ ॥
जिन सिरजइ उलिगण घर नारि ।
जाइ दिहाडाउ झूरित ॥

(हंस जैसी चालवाली मृगलोचनी नारि बाल सँवारते हुए वियोगके दिन गिनते हुए कहती है—भगवान् किसीको उलगानेकी पत्नी न बनाये जिसका जीवन ही बिसूरते बीतता है ।

इणी भव उलिगाणौ हुवौ ।
आवतइ भव होइ कालो हो साँप ॥

इस जन्ममें उलगाना हुआ; अगले जन्ममें वह काला सर्प (अर्थात् घरबार हीन प्रवासी) होगा । इनसे ऐसा जान पड़ता है कि उरगानका प्रयोग ऐसे

व्यक्ति या समाजके लिए होता था जो जीविकोपार्जनकी दृष्टिसे स्थिर नहीं रहते थे। इसी अर्थमें उरगिया शब्द आज भी बुन्देलखण्डीमें प्रचलित है—

सबरे उरगिया उरग जात हैं।
हमहूँ उरग खों जाएँ।
भैया मोरी लागी है उरगकी चाकरी।

गुजरातीमें आज भी ओलग शब्द सेवाके अर्थमें प्रयोग होता है और वहाँ कुछ जगहोंपर भंगीको ओलगाणा कहते हैं। इनके प्रकाशमें देखनेपर उरगान या ओरगानका तात्पर्य या तो सार्थवाह (बनजारों) से है जो व्यापारके निमित्त सदैव घरसे बाहर रहते थे; या फिर उन लोगोंसे है जो अन्यत्रसे आकर सेना आदिमें चाकरी करते थे। प्राचीन कालमें शासन-व्यवस्थामें वणिक् समाजका काफी हाथ रहता था और वे राज-दरबारमें प्रतिष्ठित होते थे। सम्भवतः उन्होंको ओर यहाँ संकेत है। किन्तु पदमावतमें इस शब्दका उपयोग सैनिकोंके प्रसंगमें हुआ है।

(५) **नींचहिं**—निम्न वर्गके व्यक्ति। **साजू**—ठाटबाट।
(६) **कुंडर**—कुण्डल, कानमें पहननेका आभूषण। **सन**—समान।

२४८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[1])

राने राइ[1] कुँवर जो बुलाये[2]। बनि बनि सबै जोहारे आये॥१
माँडखण्डो[3] जगती[4] के नाँऊँ। बैठी सभा अपूरब ठाँऊँ॥२
कुँवर थवैतहिं[5] दीन्हें[6] सानाँ। आइ थवाइत आफुहिं पानाँ[7]॥३
तिस तिस[8] पान कह आफुहिं[9] बीरा[10]। पान[11] कपूर गुना मँह नीरा॥४
खैर[12] माँझ[13] कस्तुरी[14] मेराई। मोति क चून सभा सब खाई॥५
राइ[15] नरिन्द नर[16] नरवई[17], सेवा सभै[18] कराँहि।६
आयसु[19] जोवँहि खिन खिन[20], अज्ञा होइ त जाँहि[21]॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) राए; (बी०) राय। २–(ए०, बी०) बोलाये। ३–(ए०) मानखण्डी; (बी०) तरमंडर। ४–(बी०) भुअन। ५–(ए०) थवैतन्ह; (बी०) थवतन्ह। ६–(ए०) दीन्हेव; (बी०) दीन्ही। ७–(ए०) आऐ थवादेर आछहिं पानी; (बी०) आइ थवई तव दीन्हा पाना। ८–(बी०) सठि सठि। ९–(बी०) आफैं। १०–(ए०) सब कहँ आफुहि पान क बीरा। ११–(ए०, बी०) पानी। १२–(ए०)

१. इस प्रतिमें यह कड़वक दो कडवकोंमें बँटा है। आरम्भकी तीन पंक्तियोंके साथ चार अन्य पंक्तियाँ है। दूसरे कड़वकमें तीसरी-चौथी पंक्तियाँ प्रथम दो पंक्तियोंके रूपमें और अन्तिम दो पंक्तियाँ अन्तमें हैं। बीचमें तीन नयी पंक्तियाँ हैं। ये पंक्तियाँ प्रक्षिप्त स्वीकार कर अन्यत्र दी गयी हैं।

खीर । १३-(बी०) माँह । १४-(ए०) कसतुरी; (बी०) कसतूरी । १५-(ए०) रास । १६-(ए०) कुवर नभ (?) । १७-(ए०) नखै; (बी०) राउ राना राउत । १८-(ए०, बी०) सबै । १९-(ए०) आऐस; (बी०) आयेस । २०-(ए०, बी०) खन खन । २१-(ए०, बी०) बिनु अग्या नहिं जाहिं ।

टिप्पणी—**बनि बनि**-बन ठनकर; साज-सँवर कर ।

(३) **थवैतहि, थवाइत**-पनवाड़ी; बरई; पान लगानेवाले । **साँना**-संकेत । **आफुहिं**-तैयार करते हैं । **पानाँ**-पान ।

(४) **तिस तिस**-तीस तीस । **गुवा**-सुपारी ।

(५) **मेराई**-मिलाई । **मोंति क चून**-सीपीका बना चूना ।

(७) **जोवँहि**-जोहते हैं; प्रतीक्षा करते हैं ।

२४९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सभा जानु[१] फूली फुलवारी । कुँवर बैठि[२] खाँडै रन[३] भारी ॥१
सुन्दर खतरी[४] बीर अपारा । गजपति बैठे भौंह निहारा ॥२
हैंवरपति बैठे बहु भारी[५] । नरपति गिनत न[६] आउ[७] उन्हारी ॥३
औ भूपति[८] बहु बैठे[९] ताहीं[१०] । आपु आपु मँह बाद कराहीं[११] ॥४
झगरांह नरपति[१२] पाँयहि लागे[१३] । कहहिं न काहू भागहिं[१४] आगे[१५] ॥५
कुँवर चक्कवइ खतरी[१६] जोधा[१७], सूरन[१८] मँह बड़ सूर ।६
पँवरि बारि[१९] तिन्ह[२०] बाजै अहिनिसि[२१], दान जूझ कर तूर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) जनु; (बी०) जानहु । २-(ए०, बी०) बैठ । ३-(ए०) पति । ४-(ए०, बी०) खत्री । ५-(दि०) भाँती । ६-(बी०) गनत न; (ए०) गनपति । ७-(ए०, बी०) आव । ८-(ए०, बी०) भुवपति । ९-(बी०) बैठे हैं । १०-(बी०) तहाँ । ११-(बी०) आपु आपु कहुँ बादै कहा । १२-(ए०, बी०) नै पति । १३-(ए०) पतन्ह लागे; (बी०) बानैत बान लागी । १४-(बी०) भाजहिं । १५-(ए०, बी०) आगी । १६-(ए०, बी०) खत्री । १७-(ए०, बी०) × । १८-(ए०, बी०) सूरन्ह । १९-(ए०, बी०) पँवरी बार । २०-(ए०) उठि; (बी०) । उन्ह । २१-(ए०) × ।

टिप्पणी—(२) **गजपति**-मध्यकालीन, राजाओंकी एक उपाधि (देखिये नीचे ३) ।

(३) **हैंवरपति**-अश्वपति । अश्वपति, गजपति, नरपति, इन उपाधियोंका उल्लेख प्रायः मध्यकालीन शिलालेखों और ताम्रपत्रोंमें मिलता है । यथा—परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर परममाहेश्वर-त्रिकलिंगाधिपति निजभुजोपार्जिताश्वपति गजपति नरपति राजत्रयाधिपति कर्णदेव (चेदिनरेश कर्णका

१०४७ ई० का गुहरवा लेख)। इन उपाधियोंका प्रयोग चन्देल, गहड़वाल, हैहय और सेनवशी राजाओंके लेखोंमे भी मिलता है। किन्तु इनका मूल तात्पर्य क्या था इसपर किसीने अबतक प्रकाश डालनेका प्रयास नहीं किया है।

(४) वाद-विवाद; बहस।

(५) झगरहिं-लड़ते हैं। पाँयहि लागे-पैर छूनेके लिए।

(६) चक्कवइ-चक्रवर्ती। खतरी-क्षत्रिय। जोधा-योद्धा। सूरन मँह-शूरोंमें।

(७) पँवरि बारि-प्रवेश द्वार। अहि-निसि-दिनरात। तूर-एक प्रकार का उद्घोषक वाद्य; तुरही।

२५०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर पान दै सभा बहोरी। चुनि चुनि राखिसि आपन जोरी ॥१
कँहाहि[1] नाच तुम्ह[2] देखहु आजू। माँगिसि[3] सब नटसार का[4] साजू ॥२
नटुवा पतुरी[5] नायक[6] आये। आये[7] पखाउजि[8] सबद सुहाये[9] ॥३
आय[10] उपांगी नाद जो देहीं। ताल गंभीर नाँउँ[11] सा[12] लेहीं ॥४
जन्त्रकार[13] गर सुर[14] जो गावहिं। ब्रह्मबीन[15] सुरबीन[16] बजावहिं ॥५
सबदसुरा सुरमण्डल[17] ओधूती[18], रुद्रबीन[19] लै आइ[20] ।६
बाँस पिनाक[21] सारंगी[22], मांदर[23] काहल सबद सुहाइ[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) कहिसि। २-(ए०) तोह। ३-(बी०) माँगहिं ४-(ए०) क; (बी०) के। ५-(ए०) पतरै; (बी०) पत्रै। ६-(बी०) कछिके। ७-(बी०) आय। ८-(ए०) पखाउज; (बी०) पखाउजी ९-(ए०, बी०) सोहाये। १०-(बी०) आय। ११-(बी०) ताउ। १२-(बी०) सेंउ; (ए०) सिंउ। १३-(ए०) जंत्रकाल। १४-(ए०) कर सुसर; (बी०) औ सुसर। १५-(ए०, बी०) बर्मवेनु। १६-(बी०) सर बैनु; (ए०) सर बीनु। १७-(ए०) सरासर मण्डल; (बी०) सरिसर मन्द्र। १८-(ए०) अधुती; (बी०) अधौटी। १९-(ए०) रुद्रबेनु; (बी०) रुद्रबैन। २०-(ए०) आए; (बी०) टंकारि। २१-(ए०) उपांग। २२-(ए०) सरंगी। २३-(ए०) ×; गहुली बाँस पिनकि सरंगी। २४-(ए०) काह लगा सोहाय; (बी०) औ सब बाजन झारि।

टिप्पणी—(१) **बहोरी**-विसर्जित किया। **जोरी**-जोड़ी; साथी।

(२) **मांगिसि**-माँगा। **नटसार**-नाट्यशाला। **साजू**-सज्जा।

(३) **नटुवा**-नट; अभिनेता। **पतुरी**-वेश्या। **नायक**-नाट्य-नृत्यके प्रधान। **पखाउजि**-पखावज बजानेवाले। पखावज मृदंगका एक रूप है जो आकृतिमें उससे कुछ लम्बा होता है। इसका चलन उत्तर भारतमें है। मृदंगका प्रचार दक्षिणमें है।

(४) **उपांगी**–उपांग बजानेवाले। उपांग नभतरंगका नाम है। यह तुरहीके आकारका होता था और गलेपर लगा कर नसोंको फुलाकर बजाया जाता था। मथुरा-वृन्दावनकी ओर इसका विशेष प्रचार था। (टी० ए० मुखर्जी, आर्ट मैन्यूफैक्चरर्स आव इण्डिया, पृ० ९५)।

(५) **जन्त्रकार**–जन्त्र नामक वाद्य बजानेवाले। जन्त्र नामक वाद्यमें गज भर लम्बी लकड़ीकी खोखली नलीके दोनों सिरोंपर तूँबेके अधकटे भाग लगे होते हैं और गर्दनपर सोलह खूँटियाँ होती हैं जिनमें लोहेके पाँच तार लगे होते हैं। खूँटियों द्वारा स्वरोंका उतार-चढ़ाव किया जाता है। **गर**–गला। **ब्रह्मबीन**–वीणाका एक प्रकार। **सुरबीन**–वीणाका प्रकार।

(६) **सबदसुरा**–कोई वाद्य। **सुरमण्डल**–(स० स्वरमण्डल) यह प्राचीन कात्यायनी वीणा या शततन्त्री वीणाका रूप है। कल्लिनाथके कथनानुसार स्वरमण्डल मत्तकोकिला वीणाका नाम है। संगीत-रत्नाकरमें २१ तारोंवाली वीणाको मत्तकोकिला कहा गया है। पोपलीकी धारणा है कि कानून नामक ईरानी वाद्य, जिसमें ३७ तार होते हैं, स्वरमण्डलका ही रूप है। वे अंगरेजी पियानोंको भी स्वरमण्डलका ही विकसित रूप मानते हैं। (म्यूजिक आव इण्डिया, पृ० ११६)। चित्रावलीमें सुरमण्डलमें बत्तीस तार कहे गये हैं (सुरमण्डल तहँ अपुरुब दीसा। एक सरासन पइँच बतीसा॥ ७२।५)। यह मिजराब द्वारा बजाया जाता है। **औधूती**-कोई वाद्य। **रुद्रबीन**–प्राचीन रुद्रबीनका आधुनिक नाम रवाब है। (मुखर्जी, आर्ट मैन्यूफैक्चर्स आव इण्डिया, पृ० ८२) जो स्पेनमें रेबेक कहलाता है। वायलिनका विकास भी इसीसे हुआ है। रुद्रवीणामें सात तार तथा बाइस पर्दे होते हैं; यह दो तूँबीवाली वीणा है। इसमें किनारेकी ओर मयूरकी आकृति होती है।

(७) **बाँप**–बाँसुरी। **पिनाँक**–यह अत्यन्त प्राचीन वाद्य है। कहा जाता है कि इसका आविष्कार शिवने किया था। यह तारोंवाला बाजा है जो चाप या धनुहीसे बजाया जाता है। **सारंगी**–लोक-प्रसिद्ध वाद्य जो धनुष द्वारा बजाया जाता है। **माँदर**–एक प्रकारका मृदंग। **काहल**–वाद्य विशेष।

२५१

(दिल्ली; बीकानेर)

बाजे साज[1] सबद सब[2] थापे। छवो सपूरन राग अलापे ॥१
औ [जो तीसो][3] भारजा अहीं[4]। एक एक रागहिं[5] पँच पँच[6] गहीं ॥२
प्रथम[7] नाद एक उन्ह[8] किया। भैरों बहुरि अलापैं लिया ॥३
मधुमाधो[9] मँधुरा[10] अलापी। बंगला बैराटिक[11] थापी ॥४
औ गुनकरी सँपूरन गाई[12]। यहि[13] भारजा भैरों आई[14] ॥५

भैरो पंच बरंका[१५], गार्योहं[१६] सबै सपूर[१७] ।६
फिर[१८] मालकोस क अलापहिं, जिह क नाँव[२०] [बड़ि दूर[२१]] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–× । २–जहाँ लहु । ३–(दि०) छत्तीस । ४–(दि०) आहीं । ५–राग । ६–पाँच पाँच । ७–प्रथमहिं । ८–उन । ९–मधुमाधवी । १०–ऐसोधरी, ११–बंगाल वर त्रोटक । १२–भई । १३–यहै । १४–अई । १५–भैरौ पाँच बार गन । १६–गाइन्हि । १७–संपूरी । १८–बहुरि । १९–अलापिन्ही सुधिसै । २०–जिन्ह कान है । २१–(दि०) बड़वार ।

टिप्पणी—(१) **साज**—वाद्य । **सबद**—नाद । **थापे**—चोट किया । **सपूरन**—सम्पूर्ण । **छवो राग**—छ राग । भारतीय संगीत शास्त्रमें रागोंका सर्वप्रथम उल्लेख मातगमुनि कृत बृहद्देशीमें मिलता है । इसकी रचना कालके सम्बन्धमें निश्चित रूपसे कुछ कहा नहीं जा सकता । कुछ विद्वानोंका अनुमान है कि यह चौथी और सातवी शताब्दीके बीच किसी समय लिखा गया; पर कुछ लोग उसे नवीं शताब्दीसे पूर्वकी रचना नही मानते । इस ग्रन्थमें सात प्रकारके गीतोंका उल्लेख है और उनमें एक प्रकारके गीतका नाम राग-गीत बताया गया है । बारहवीं शताब्दीमें मानसोल्लासके सुविख्यात रचयिता सोमेश्वरने संगीत-रत्नावली नामसे एक संगीत-ग्रन्थ लिखा था । उसमें आठ रागोंका उल्लेख है । इनमे इन रागोंके अतिरिक्त संगीतके अन्य बहुतसे रूपोंकी चर्चा है जो आगे चलकर रागिनियों अथवा रागोंके भार्यायोके नामसे पुकारी गयीं । राग-रागिनियों सरीखा भेद सर्वप्रथम संगीत-मकरन्दमे प्रकट होता है । इसे नारद रचित कहा जाता है । अनुमान है कि यह सातवी और ग्यारहवी शतीके बीच किसी समयकी रचना है । इस ग्रन्थमें रागोंके तीन भेद कहे गये हैं–पुलिंग-राग, स्त्री-राग और नपुंसक-राग । बताया गया है कि रौद्र, अद्भुत और वीर रसके उद्बोधनके लिए पुलिंग-राग, शृंगार, हास्य और करुण रसके उद्बोधनके लिए स्त्री-रागका और भयानक, वीभत्स तथा शान्त रसके उद्बोधनके लिए नपुंसक-रागका उपयोग किया जाना चाहिए । इस भेदके साथ इस ग्रन्थमें २० पुलिंग, २४ स्त्री और १३ नपुंसक रागोंकी सूची दी गयी है । इनके अतिरिक्त, संगीत-मकरन्दमें राग-रागिनियोंकी उस परिपाटीकी भी चर्चा है जिसमें छ राग माने गये हैं । इनके सम्बन्धमें कहा गया है कि इनकी उत्पत्ति शिव और शक्तिसे हुई है । शिवके पाँच मुखोंसे श्रीराग, बसन्तराग, भैरवराग, पंचमराग, और मेघरागकी तथा पार्वतीके मुखसे नटनारायण-रागकी उत्पत्ति हुई । रागोंकी यह नामावली सोमेश्वर देवके राग-दर्पण (बारहवी शताब्दी) में भी उपलब्ध है । किन्तु इसके बादके संगीत-ग्रन्थोंमें रागोंकी नामावलियोंमें काफी भेद पाया जाता है । उदाहरणतः चौदहवीं शतीमें रचित रागार्णवमें छ रागोंके नाम हैं–भैरव, पंचम, नट,

मलार, गौड़मालव और देशाख। पन्द्रहवीं शतीके पूर्वार्द्धमें रचित नारद कृत पंचम-संहितामें इनके नाम मालव, मल्लार, श्रीराग, बसन्त, हिंडोल, और कर्णाट बताये गये हैं। उसी शतीके उत्तरार्धमें हुए संगीत-शास्त्री कल्लीनाथके अनुसार रागोंके नाम हैं—श्रीराग, पंचम; भैरव, मेघ, नटनारायण और बसन्त। सोलहवीं शतीके आरम्भकी रचना मेषकर्ण कृत रागमालामें रागोंकी नामावली इस प्रकार है-भैरव, मालकौशिक, हिंडोल, दीपक, श्रीराग और मेघराग। कुतुबनने रागोंके नामके लिए मेषकर्ण की सूची अपनायी है और उसीके क्रमसे रागोंकी इस तथा आगेके कड़वकोंमें उल्लेख किया है।

(२) **तीस भारजा** (भार्या)—उपर्युक्त प्रत्येक रागकी पाँच-पाँच भार्याओं, इस प्रकार तीस रागिनियोंका भी उल्लेख कुतबनने किया है। उन्हींकी तरह अधिकांश संगीत-ग्रन्थोंमें तीस रागिनियोंका उल्लेख मिलता है पर कहीं-कहीं छत्तीस रागिनियोंकी भी चर्चा पायी जाती है। संगीत ग्रन्थोंमें रागोंकी तरह ही रागोंके साथ रागिनियोंके भार्या-सम्बन्धमें भी काफी मतभेद पाया जाता है। एक ही रागिनीको लोगोंने एक दूसरेसे भिन्न राग की भार्या बताया है। कुतबनने संगीत-शास्त्रकी किस परम्पराके अनुसार अपनी भार्या-सूची प्रस्तुतकी की है, नहीं कहा जा सकता। उनकी सूची संगीत-शास्त्रोंकी किसी ज्ञात सूचीसे मेल नहीं खाती। यही नहीं, उनके कहे भार्या सम्बन्धमेंसे अनेकका किसी सूत्रसे समर्थन भी नहीं होता। इस प्रकार उन्होंने किसी अज्ञात परम्पराकी नयी सूची प्रस्तुत की है।

(३) **भैरों** (भैरव)—इस रागका सम्बन्ध शैव सम्प्रदायसे माना जाता है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह मूलतः आश्विन मासमें शैव सम्प्रदायके किसी विशेष उत्सवके अवसरपर गाया जानेवाला संगीत था। संगीतज्ञ अब इसे शरद ऋतुका संगीत मानते हैं। रागोंका सम्बन्ध ऋतुके साथ तो माना ही जाता है; साथ ही उनका सम्बन्ध समयके साथ भी जोड़ा गया है। तदनुसार भैरव राग ब्राह्म मुहूर्त (सूर्योदयसे पूर्व) का राग है। किन्तु कुतुबनके उल्लेखसे इस प्रकारकी कोई बात प्रकट नहीं होती।

(४) **मधुमाधो** (मधु-माधवी)—भैरवकी भार्याके रूपमें मधुमाधवीका उल्लेख अन्यत्र हमें सर्वप्रथम राधाकृष्ण कवि रचित रागकुतूहल (१८५३ वि०–१७९१ ई०) में प्राप्त होता है। इससे पूर्व किसीने इसे भैरवकी भार्या बताया है, हमें ज्ञात नहीं। यों इस रागिनीका सर्वप्रथम उल्लेख सोमेश्वरदेव कृत रागदर्पण (११३१ ई० के लगभग) में मिलता है। वहाँ इसे श्रीरागकी भार्या कहा गया है। यह रागिनी सूर्योदयके उपरान्त प्रारम्भिक तीन पहरोंमें गेय कही गयी है। **मँधुरा** (मधुरा)—इस नामकी रागिनीका उल्लेख भैरवकी भार्याके रूपमें हमें कहीं प्राप्त न हो सका। मधुराका उल्लेख कल्ली-

नाथ (१४६० ई०) ने मेघरागकी भार्याके रूपमें किया है। यह रागिनी किस समय गायी जाती है, इसका उल्लेख भी हमें कहीं नहीं मिला। **बंगला**—अधिकांश संगीतशास्त्रियोंने इसका उल्लेख भैरवकी भार्याके रूपमें किया है; और इस आशयका प्राचीनतम उल्लेख सोमेश्वरदेवके रागदर्पण-में है। किन्तु कल्लीनाथने इसे मेघरागकी भार्या कहा है। यह प्रातःकालीन रागिनी है। **बैराटिक**–इसका उल्लेख बराटी अथवा बैराटीके रूपमें संगीत-शास्त्रमें मिलता है। भैरवकी भार्याके रूपमें बैराटीका उल्लेख हनुमान–सम्प्रदायके संगीतकारोंने किया है। हनुमानके समयके सम्बन्धमें कुछ कहा नहीं जा सकता। आंजनेय (हनुमान) नामक संगीत-शास्त्रीका उल्लेख अभिनवगुप्त (१०३० ई०), सारंगदेव (११४७ ई०), शारदा-तनय (१२५० ई०) और कल्लीनाथ (१४६० ई०) ने किया है; किन्तु इनका कोई ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है। सम्भव है कुतुबनने इसी सम्प्रदायका अनुकरण करते हुए इसे भैरवकी भार्या कहा हो। अन्यथा बैराटीका उल्लेख आचार्य मम्मट (सम्भवतः ग्यारहवीं शतीके प्रख्यात काव्यमर्मज्ञ काव्य-प्रकाशके रचयिता) के संगीतरत्नमालामें देशाखकी, सोमोश्वरदेवके राग–दर्पणमें बसन्तरागकी, रागार्णवके साक्ष्यसे शारंगधर-पद्धति (१३६३ ई०) में पंचमकी और मेघकर्ण कृत रागमाला (१७६१ ई०) में श्रीरागकी भार्याके रूपमें मिलता है। पुण्डरीक विट्ठलने अपनी रागमालामें इसे सदा गेय बताया है।

(५) **गुनकरी**–भैरवकी भार्याके रूपमें इसका उल्लेख ·गीतशास्त्रोंमें बारहवीं शताब्दीसे ही पाया जाता है। किन्तु सर्वत्र इसका उल्लेख भैरवकी भार्याके रूपमें ही हो, ऐसा नहीं है। पुण्डरीक विट्ठलने इसको श्रीरागकी भार्या कहा है। यह प्रातःकालीन (प्रथम पहर) की रागिनी है।

(७) **मालकोस**–यह राग है और इसका प्राचीन नाम मालव-कौशिक है। इसका सम्बन्ध मालव देशसे समझा जाता है। यह किस ऋतु अथवा किस समय-का राग है इसका स्पष्ट उल्लेख किसी संगीत ग्रन्थमें मुझे प्राप्त न हो सका। मातंग (५-७ शताब्दी ई०) ने बृहद्देशीमें इसका उल्लेख मालव-कौशिक नामसे भाषा गीतके रूपमें किया है। मालव रागका उल्लेख मम्मटने संगीत रत्नमाला, नारद और दत्तिलने राग-सागर, नारदने पंचमसंहितामें और कौशिक नामक रागका उल्लेख नारदने चत्वारिंशत्रागनिरूपणम्में किया है। सम्भवतः इन सबका तात्पर्य मालकोससे ही है। मालकौशिक नामसे इस रागका उल्लेख सर्वप्रथम मेघकर्णकी रागमालामें है जो सोलहवीं शतीके आरम्भकी रचना है। इनके अनन्तर परवर्ती संगीत शास्त्रोंमें इसकी प्रायः चर्चा है पर कुछ ही ने इसकी गणना छ रागोंमें की है।

२५२

(दिल्ली; बीकानेर)

[वहि*[1]] अलाप भारजा अलापी[2] । वइ[3] पाँचो[4] सुद्ध सेउँ[5] थापी[6] ॥१
गौरी देवकली[7] औ टोड़ी । कँकुभ[8] खंभावती[9] न[10] छोड़ी ॥२
फिर[11] हिंडोल क[12] आयउ बारा[13] । पाँच भारजा साथ उभारा[14] ॥३
बैरारी विचित्र अलापी । औ देसाख नाँटाँ वै[15] थापी ॥४
सहजकथा औ देसी[16] जो गाई । पाँचहु साथ हिंडोल[17] कराई ॥५
एक न दीपक[18] गायहिं[19] जानत[20], जिह[21] गाये है दोख ।६
गायहिं[22] पँच[23] बरंका[24] जिह कहँ आहे[25] मोख ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–वाहि । २–अलापिन्हि । ३–औ । ४–पाँचो ऊ । ५–सुधि सै । ६–थापिन्हि । ७–गुन करी । ८–गुनकह । ९–(दि०) कंभावती । १०–नहिं । ११–बहुरि । १२–कर । १३–आयेउ पारा । १४–उचारा । १५–नटी क । १६–साजक तार नट । १७–हिंदोल । १८–दीपग । १९–गाइन्हि । २०–जन तेहि । २१–जेहि । २२–गाइन्ह । २३–पाँच । २४–भारजा । २५–जेहि गाये है ।

टिप्पणी—(२) **गौरी**–सम्भवतः यह गौड़ीका रूप है और इसका सम्बन्ध गौड़ देशसे है। आरम्भकालिक प्रायः सभी संगीत शास्त्रियोंने इसे श्रीरागकी भार्या बताया है। मालकोशकी भार्याके रूपमें गौरीका सर्वप्रथम उल्लेख भावभट्ट (१९७४ वि—१७०१ ई०) के अनूपसंगीतांकुशमें मिलता है। परवर्ती संगीत ग्रन्थोंमें प्रायः मालकोशके भार्याके रूपमें ही इसका उल्लेख हुआ है। किन्तु पुरुषोत्तम मिश्र (१७३० ई०) ने संगीतनारायणमें इसे मेघरागकी भार्या बताया है। यह सन्ध्याकालीन रागिनी कही गयी है। **देवकली**–संगीतशास्त्रोंमें सम्भवतः इसके ही देवगिरि, देवक्रिया, देवश्री रूप पाये जाते हैं। भैरव, मेघ, बसन्त, हिण्डोल, अथवा शुद्धनाटकी भार्याके रूपमें इसका उल्लेख विभिन्न संगीत शास्त्रोंमें पाया जाता है। इसे कहीं भी मालकोसकी भार्या नहीं कहा गया है। अतः इसके अपपाठ होनेका अनुमान किया जा सकता है। बीकानेर प्रतिमें इसके स्थानपर गुनकरीका नाम दिया हुआ है और कुछ परवर्ती ग्रन्थामें गुनकलीका नाम मालकोशकी भार्याके रूपमें आया है। इससे इस धारणाकी पुष्टि भी होती है। किन्तु गुनकरीका नाम कुतुबनने भैरवकी भार्याके रूपमें पहले ही किया है। अतः इस पाठान्तरको स्वीकार करना कठिन है। ऐसी अवस्थामें यही मानना होगा कि देवकली ही कुतुबनका मूल पाठ है। वे देवकलीको मालकोशकी भार्या कहनेवाले एकाकी है। **टोड़ी**–इसके टुण्डी, टुडिका, टोड़िका, टुड़ी आदि अनेक नाम देखनेमें

आते हैं। मालकोशकी भार्याके रूपमें इसका उल्लेख सर्वप्रथम नारद कृत चत्वारिंच्छत्रागनिरूपणम् (१५२५-१५५० ई०) में मिलता है। इससे पूर्वके संगीतग्रन्थोंमें यह विविध रागों, यथा—पटमंजरी, नाट, वसन्त, दीपक, हिंडोलकी भार्या बतायी गयी है। इसकी गणना प्रातः कालीन रागिनियोंमें की जाती है। कँकुभ (ककुभ)–ओ० सी० गांगुली का अनुमान है कि इस रागिनीके नामके मूलमें ककुभ नामक वह ग्राम है, जो देवरिया (उत्तरप्रदेश) में सलेमपुर-मझौलीके निकट स्थित था और आज कल कहाँव कहलाता है। वहाँसे सम्राट् स्कन्दगुप्तका एक स्तम्भ-लेख प्राप्त हुआ है जिसमें इस ग्रामको "ख्यातेस्मिन् ग्रामरत्ने ककुभ इति जनैः साधु संसर्ग पूते" कहा गया है। इससे अनुमान होता है कि गुप्त-काल में यह ग्राम अवश्य ही महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्र रहा होगा। यदि उस कालमें वहाँ इस रागिनीका विकास हुआ हो तो कोई आश्चर्यकी बात न होगी। यों भी, यह रागिनी काफी प्राचीन है, यह मातंग (५-७ शती ई० के बीच) कृत बृहद्देशीसे सिद्ध है। उसमें ककुभका उल्लेख साधारण गीतिके रूपमें किया गया है। तदनन्तर ककुभा नामसे इसका उल्लेख सन्धिरागके रूपमें नाट्यलोचन (८५०-१००० ई०) में हुआ है। सारंगदेव (१२१०-१२४७ ई०) ने संगीत-रत्नाकरमें इसकी गणना साधारित रागोंमें की है और इसका सम्बन्ध षडज और मध्यम दोनों ग्रामोंसे बताया है। राग-भार्याके रूपमें इसका सर्वप्रथम उल्लेख कल्लिनाथ (१४६० ई०) ने किया है। उन्होंने इसे पंचम रागकी भार्या बताया है। इसे मालकोसकी भार्या माननेवाले संगीत-शास्त्री एक-आध ही हैं। इस रूपमें इसका प्राचीनतम उल्लेख भावभट्ट (१६७४-१७०१ ई०) के अनूपसंगीतांकुशमें जान पड़ता है। **खम्भावती**–इस नामके मूलमें सम्भवतः गुजरातका खम्भात नामक नगर है जो अपनी समृद्धि और व्यवसायके लिए चिरकालसे प्रसिद्ध रहा है। इस रागिनीका सर्वप्रथम उल्लेख नाट्यलोचनमें, सन्धिरागके रूपमें हुआ है। तदनन्तर पार्श्वदेव (१२५० ई०) कृत समयसारमें उपांगोंकी सूचीमें षाडवके अन्तर्गत इसका नाम आया है। लोचन-कवि (१३७५ ई०) ने अपने रागतरंगिणीमें १२ मेलो (मूल रागों) की जो चर्चा की है, उसमें केदारके अन्तर्गत जन्यरागके रूपमें खम्भावतीका उल्लेख किया है। राग-भार्या के रूपमें इसका सर्वप्रथम उल्लेख चतुर्विंशच्छत्-रागनिरूपणम् में मिलता है। वहाँ उसे पंचमरागकी भार्या कहा गया है। मालकौशिककी भार्याके रूपमें पहला उल्लेख भावभट्टके अनूपसंगीतांकुशमें है।

(३) **हिंडोल**—राग-गीतिके रूपमें हिंडोलककी चर्चा सर्वप्रथम मातंग कृत बृहद्देशी-में, जो ४थी ७वीं शताब्दीके बीचकी रचना है, प्राप्त है। तदनन्तर सोमेश्वर कृत मानसोल्लासमें रागोंकी जो सूची है, उसमें आठ रागोंमें हिंडोलका भी

उल्लेख है। इस प्रकार यह प्राचीन रागोंमें है; फिर भी छ रागोंकी जो सूची विभिन्न संगीत-ग्रन्थोंमें मिलती है, उसमेंसे कुछमें ही इसका उल्लेख है। इसके सम्बन्धमें धारणा है कि आरम्भमें यह आदिम अनार्योंके झूलेसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी आनन्दोत्सवका संगीत रहा होगा। पीछे चलकर लोगोंने इसका सम्बन्ध दोलोत्सव अथवा डोल-यात्रा तथा राधा-कृष्ण सम्बन्धी झूलेके उत्सवसे, जो श्रावणके महीनेमें होता है और उत्तर भारतमें अति प्रचलित है, जोड़ लिया।

(४) **बैरारी**–(बैराटी) सम्भवतः इसका सम्बन्ध बरार अथवा प्राचीन विराट्-राज्य से है, जिसका उल्लेख महाभारतमें हुआ है। बराटी नामसे इसका सर्व प्रथम उल्लेख मम्मट कृत संगीत-रत्नमालामें है। वहाँ इसे देशाखकी भार्या कहा गया है। सोमेश्वरदेवने रागदर्पणमें बराटीको बसन्त रागकी भार्या बताया है। तेरहवीं शती रचित रागार्णवके आधारपर उससे कुछ पीछेकी रचना शारंगधर-पद्धतिमें बराटीको पंचमकी भार्या कहा गया है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमें सर्वप्रथम उल्लेख बराड़ी नाम से नारद कृत पंचमसंहिता (१४४० ई०) में हुआ है। बैरारी नामका सर्वप्रथम उल्लेख कल्लीनाथने पंचमकी भार्याके रूपमें किया है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमें इसका उल्लेख अन्यत्र कहीं देखनेमें नहीं आया। **देसाख**–संगीत ग्रन्थोंमें इसका देसाख्य रूप भी देखनेमें आता है। इसके मूलके सम्बन्धमें किसी प्रकारका अनुमान सम्भव नहीं है। देसाग नामसे एक सालंक रागका उल्लेख नाट्यलोचनमें हुआ है। यदि देसाग और देसाख एक ही हैं तो यह इसका प्राचीनतम उल्लेख है। राजा नान्यदेव कृत सरस्वती-हृदयालंकार (१०९७-११५४ ई०) में देशाख्यकी चर्चा मुख्य भाषा-गीतोंमें है। राग-भार्याके रूपमें सर्वप्रथम कल्लीनाथने इसका उल्लेख देवसाग (देवशाख) नामसे किया है और इसे बसन्त रागकी भार्या कहा है। पुण्डरीक विट्ठलकी रागमालामें यह देसाक्षी नामसे शुद्धनाटकी भार्या कही गयी है। चत्वारिंशच्छत्रागनिरूपणम्में इसका उल्लेख कौशिककी भार्याके रूपमें है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमें देशाक्षीका उल्लेख सर्वप्रथम भावभट्टने अनूप-संगीतालंकारमें किया है। इसके अनन्तर ही इस रूपमें इसका उल्लेख कुछ संगीत-ग्रन्थोंमें मिलता है। **नाँटा**–बीकानेर प्रतिमें पाठ नटी है। नट, नाट, नाटनारायण नामके राग और नट तथा नाटिका नामकी रागिनीका उल्लेख संगीत ग्रन्थोंमें मिलता है। रागिनी रूपमें सम्भवतः यहाँ नट अथवा नाटिकासे ही तात्पर्य है। किन्तु राग-रागिनियोंकी किसी भी सूचीमें इन दोनोंकी चर्चा हिण्डोलकी भार्याके रूपमें नहीं है। उसे सर्वत्र नटनारायण, दीपक अथवा भैरवकी ही भार्या कहा गया है।

(५) **सहजकथा**–इस नामकी किसी रागिनीका उल्लेख किसी संगीतग्रन्थमें उपलब्ध

नहीं है। अतः कहना कठिन है कि इस नामकी कोई रागिनी रही है। **देसी**—यह नाम किसी स्थानिक संगीतके लिए प्रयुक्त होकर ही प्रचलित हुआ होगा ; किन्तु इसका अभिप्राय किस स्थानसे है, अनुमान करना कठिन है। इतना ही कहा जा सकता है कि राग-रागिनियोंके प्रसंगमें इस नामका प्रचलन काफी पुराना है। नारद कृत संगीतमकरन्द (७-९ शती ई०) में सर्वप्रथम इसका उल्लेख पड्मंजरीके उपरागके रूपमें हुआ है। मम्मटने इसे मलारकी भार्या कहा है। सोमेश्वरदेव इसे बसन्तकी भार्या मानते हैं। रागार्णवके अनुसार यह पंचमकी भार्या है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमें देसी-का उल्लेख केवल चत्वारिंशच्छत्रागनिरूपणम्में है। यह मध्याह्नकी रागिनी है।

(६) **दीपक**—दीपक-रागका सर्वप्रथम उल्लेख पार्श्वदेव कृत संगीत समय-सार (लगभग १२५० ई०)में रागांगोंके रूपमें हुआ है। तदनन्तर नारद कृत पंचम संहिता (१४४० ई०) में हिडोलकी भार्याके रूपमें दीपिका नामक रागिनीका उल्लेख मिलता है। राग-परिवारमें रागके रूपमें दीपकका उलेख सर्वप्रथम मेषकर्णने रागमाला (१५०९ ई०) में किया है। किन्तु सभी राग-सूचीमें इसका नाम नहीं मिलता। कुतुबनने इसके गानेमें दोष माना है। इससे जान पड़ता है कि इस कालतक यह निषिद्ध राग था। पीछे सम्भवतः यह बात नहीं रही। तानसेन द्वारा इसके गाये जानेका उल्लेख मिलता है।

२५३

(दिल्ली; बीकानेर)

परसिचन्द[१] **कामोदक[२] देसी। पटमंजरी** कराकेसी[३] ॥१
ये[४] दीपक भारजा बखानी। मेघराग से चौकर[५] आनी ॥२
मालसिरी सारंग बरारी[६]**। धनासिरी औ कही गंधारी[७]** ॥३
मेघराग उन्ह[८] पाँचहि माँथा[९]। कीन्ह अलाप[१०] एकहि साथा ॥४
खस्टम स्रीराग उन्ह किया। ऊँच अलापहिं सुध सेउ[११] लिया ॥५
हेमकली[१२] मलार गूँजरी, भीँउपलासी[१३] कीन्ह ।६
स्रीराग कै ये भारजा, कहौं राग कै[१४] चीन्ह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–नीरस चींद। २–कमोदकर। ३–को रे कहेसी। ४–ए। ५–से एकरि। ६–बैरारी। ७–(दि०) आउ यहै अँधियारी। ८–उनि। ९–पंचम थापा। १०–गहि अलापिन्हि। ११–अलापै उनि सुधि सै। १२–हेमकरी। १३–भीमपाली। १४–जो कहि तू गहि।

टिप्पणी—(१) **परसिचन्द**—इस नामकी किसी रागिनीका उल्लेख संगीतग्रन्थोंमें उपलब्ध नहीं है। सम्भव है यह अपपाठ हो। **कामोदक**—इस रागिनीका

नामकरण कुमुद नामक पुष्पपर हुआ जान पड़ता है। इसकी गणना प्रातःकालीन रागिनियोंमें की जाती है। नाट्यलोचनमें इसे सन्धि राग कहा गया है। भार्या-परम्परामें इसका उल्लेख सर्वप्रथम नारद कृत संगीत-मकरन्दमें है। वहाँ इसे पंचम रागकी भार्या कहा गया है। रागदर्पणमें सोमेश्वरदेवने नटनारायणकी, रागार्णवमें देसाखकी, नारदने पंच संहितामें कर्णाटकी, कल्लिनाथने मेघकी भार्या कहा है। दीपककी भार्याके रूपमें सर्वप्रथम उल्लेख मेषकर्णकी रागमालामें प्राप्त है। किन्तु छ रागोंके अन्तर्गत दीपककी गणना करनेवाले संगीतग्रन्थोंमेंसे अधिकांशमें कामोदकका उल्लेख उसकी भार्याके रूपमें नहीं मिलता। **देसी**–इसका उल्लेख पूर्ववर्ती कड़वकमें हिण्डोलकी भार्याके रूपमें हो चुका है। यहाँ दीपकरागकी भार्याके रूपमें पुनः उल्लेख सन्देह उत्पन्न करता है। कुतुबनने कदापि एक ही रागिनीका दो रागोंकी भार्याके रूपमें उल्लेख न किया होगा। किन्तु उन्होंने इसका उल्लेख वस्तुतः किस रागके साथ किया है और कौन-सा पाठ दोषजानत उल्लेख है, कहना सुगम नहीं है। दीपककी भार्याके रूपमें देसीका उल्लेख हनुमानके अनुयायी रुगातज्ञोंने किया है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमें बीकानेर प्रातमें देसीके स्थानपर नट पाठ है। और नटाका भी वहाँ पूर्व पंक्तिमें उल्लेख है। इस कारण नट पाठ यहाँ ग्राह्य न होगा। इस बातकी सम्भावना हो सकती है कि वहाँ कोई भिन्न नाम रहा हो। कराकेसाके साथ देसी का ही तुक होनेसे यहाँ किसी अन्य नामकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। किन्तु कराकेसी पाठ भी संदिग्ध है। **पटमंजरी**–इस नामके सम्बन्धमें धारणा है कि इसका मूल नाम प्रथम-मंजरी था और बसन्त ऋतुके साथ इसका सम्बन्ध था। यह किसी भी समय गेय है। मातंगके बृहद्देशीमें इसकी गणना भाषा गीतोंमें की गयी है और इसका सम्बन्ध हिण्डोलक रागसे बताया गया है। नारदने संगीतमकरन्दमें पदमंजरी नामसे रागके रूपमें इसका उल्लेख किया है। रागिनीके रूपमें पटमञ्जरी नामसे सर्व-प्रथम उल्लेख मम्मटने संगीतरत्नमाला में किया है। उसका सम्बन्ध उन्होंने मलारसे माना है। सोमेश्वरने इसे पंचमकी, पंचमसंहितामें नारदने बसन्तकी, पुण्डरीक विट्ठलने हिण्डोलकी भार्या माना है। ब्रिटिश संग्रहालय, लन्दनकी रागमाला चित्रावलीमें इसका अंकन भैरवकी भार्याके रूपमें हुआ है। केवल मेषकर्ण कृत रागमालामें इसकी चर्चा दीपककी भार्याके रूपमें प्राप्त है। **कराकेसी**–इस नामकी किसी रागिनीका उल्लेख कहीं प्राप्त नहीं है। सम्भवतः यह भ्रष्ट पाठ है।

(२) **मेघराग**–जैसा कि यह नामसे ही स्पष्ट है यह वर्षाऋतु का राग है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख सोमेश्वरदेव कृत रागदर्पणमें है।

(३) **मालसिरी** (मालश्री)–सम्भवतः इसका मूलरूप मालवश्री है। इस रूपमें

यह मम्मट कृत संगीतरत्नमालामें कर्णाटकी रागिनी कही गयी है। सोमेश्वरदेवने मालश्रीका उल्लेख श्रीरागकी भार्याके रूपमें किया है। नारद (पंचमसंहिता) ने इसको मालवकी, मेघकर्णने मालकोशकी, पुण्डरीक विट्ठलने शुद्धनाटकी और चत्वारिंशच्छत्-राग-निरूपणम्ने हंसककी भार्या बताया है। ब्रिटिश संग्रहालयकी रागमाला चित्रावलीमें इसका भैरवकी भार्याके रूपमें अंकन है। इस प्रकार किसी भी संगीत ग्रन्थमें इसका सम्बन्ध मेघरागसे नहीं जोड़ा गया है। पुरुषोत्तम मिश्रने, जो गजपति वंशीय नारायणदेव (१७३० ई०) के राजकवि थे, संगीतनारायण नामक ग्रन्थ लिखा है। इसकी जो उपलब्ध प्रति बंगालके एशियाटिक सोसाइटीमें है, वह काफी भ्रष्ट और अपाठ्य है। इसमें मालवश्री और मालसी नामक दो रागिनियोंका उल्लेख है। उसमें मालवश्रीको श्रीरागकी और मालशीको मेघरागकी भार्या बताया गया है। यदि मालशी मालश्रीका अपपाठ हो तो यही मेघरागकी भार्याका एकमात्र उल्लेख है। पर यह काफी पीछेकी रचना है। सर्वप्रथम कुतुबनने ही इसे मेघरागकी भार्या कहा है। यह सर्व समयमें गेय रागिनी है। **सारंग**—अनेक राग-रागिनियोंका नाम पशु-पक्षियोंपर हुआ है। सम्भवतः उन्हींमेसे यह भी एक है। यह एक प्राचीन रागिनी है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख नारद कृत संगीतमकरन्दमें नाटकी रागिनीके रूपमे हुआ है। और इसी रूपमें इसका उल्लेख अधिकांश ग्रन्थोंमें मिलता है : मेघकर्णको रागमालामें दीपककी भार्याके रूपमें सारंगी (कहेली) का उल्लेख है। उसका तात्पर्य इसी रागिनीसे है अथवा किसी अन्यसे है, कहना कठिन है। मेघरागकी भार्याके रूपमें सारंगका उल्लेख राधामोहन सेन ने अपने संगीत-तरंग (१८१८ ई०) में भरत के उल्लेखसे किया है। यह भरत निस्सन्देह नाट्यशास्त्रके रचयिता भरत नहीं हैं; क्योंकि उनके समयमें रागोंके इस रूपका विकास नहीं हुआ था। अतः कहना कठिन है कि इस परम्पराकी प्राचीनता कितनी है। जो भी हो, जहाँतक सारंगका सम्बन्ध है, कुतुबन उस परम्परासे परिचित थे जिसमें यह मेघरागको भार्या मानी जाती थी। **बरारी**—वैरारी नामसे इसका उल्लेख हिण्डोलकी भार्याके रूपमें पहले हो चुका है। साथ ही यह भी द्रष्टव्य है कि किसी भी परम्परामें वैरारी या वरारी मेघरागकी भार्या नहीं कही गयी है। अतः निस्सन्देह यहाँ इसका उल्लेख भ्रष्ट-पाठ मात्र है। सम्भवतः मूल पाठ मलारी रहा होगा। मल्लारी का उल्लेख अधिकांश संगीत-शास्त्रियों ने मेघरागकी भार्याके रूपमें किया है। यह प्रातःकालीन रागिनी है। **धनासिरी** (धनाश्री)—इसका उल्लेख धन्नासिका रूपमें भी पाया जाता है। अनुमान किया जाता है कि इस नामके मूलमें कोई विदेशी नाम है जिसका निरर्थक परिष्करण कर लिया गया है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख

मम्मट कृत संगीत-रत्नमालामें देशाखकी रागिनियोंमें धानसी नामसे हुआ है। इसे रागार्णवमें भैरवकी, नारद कृत पंचम संहितामें मालवकी, मेघकर्ण कृत रागमालामें मालकौशिककी, चत्वारिंशच्छत्रागनिरूपणम्में बसन्तकी, भावभट्ट कृत अनूप-संगीतांकुशमें श्रीरागकी, ब्रिटिश संग्रहालयकी रागमाला चित्रावलीमें दीपककी भार्या कहा गया है। अकेले कल्लीनाथने इसे मेघरागकी भार्या बताया है। यह प्रातःकालीन रागिनी मानी जाती है। **गन्धारी**–गन्धार देशके नामपर इसका नामकरण हुआ जान पड़ता है। यह प्राचीन रागिनी है। इसका उल्लेख मातंग कृत बृहद्देशीमें भाषा गीतोंके अन्तर्गत सौवीरक रागकी रागिनीके रूपमें हुआ है। नारद कृत संगीत-मकरन्दमें इसे बंगाल रागकी, उसी ग्रन्थमें अन्यत्र देवगान्धारी नामसे श्रीरागको, मेघकर्ण कृत रागमालामें मालकौशिकको, ब्रिटिश म्यूजियमकी रागमाला चित्रावलीमें हिण्डोलकी भार्या कहा है। किन्तु मेघरागकी भार्या माननेवाली परम्परा काफी प्राचीन जान पड़ती है। इस रूपमें उसका उल्लेख सोमेश्वरदेवने किया है। यह सम्भवतः प्रातःकालीन रागिनी है।

(५) **स्रीराग** (श्रीराग)—श्रीके लक्ष्मी, सौन्दर्य, समृद्धि आदि अर्थके आधारपर अनुमान किया जाता है कि इसका सम्बन्ध अन्नोत्पत्ति सम्बन्धित किसी उत्सवसे है। उत्तर भारतमें श्री (लक्ष्मी) की पूजा जाड़में हुआ करती है जब कि खेतोंसे कट, दाँ-ओसा कर अन्न घरमें आ जाता है। इस प्रकार इसका सम्बन्ध जाड़ेसे है और ऋतुओं पर आश्रित प्राचीन मूल रागोंमें से यह एक है। कुतुबनने सब रागोंकी पाँचों भार्याओंका उल्लेख किया है, किन्तु इसकी केवल चार भार्याओंका ही नाम उन्होंने दिया है; एक नाम छोड़ गये हैं।

(६) **हेमकली** (हेमकरी <हेमक्री<हेमक्रिया)—कतिपय प्राचीन संगीत शास्त्रोंमें रागोंके वर्गीकरणमें क्रियांग रागोंकी चर्चा है। अतः समझा जाता है कि क्रिया, क्री, करी, कली नामान्त रागिनियाँ, तत्कालीन रागरूपोंके क्रममें हैं। हेमकली भी उसमेंसे एक है। सन्धिरागोंके रूपमें इसका सर्वप्रथम उल्लेख नाट्यलोचनमें प्राप्त होता है। राग-भार्याके रूपमें इसका उल्लेख अठारहवीं शतीसे पूर्वके किसी संगीतग्रन्थमें नहीं मिलता। महाराज सवाई प्रतापसिंह देवने संगीत-सार नामसे जो ग्रन्थ प्रस्तुत किया है, उसमें उन्होंने हेमकलीका उल्लेख दीपककी भार्याके रूपमें किया है। श्रीरागकी भार्याके रूपमें हेमकलीका उल्लेख कुतुबनके प्रस्तुत उल्लेखके अतिरिक्त कहीं अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। **मलार**–मलार नामक रागका उल्लेख प्रायः संगीत ग्रन्थोंमें मिलता है और लोग प्रायः मेघमलारके नामसे उल्लेख किया करते हैं। पर मलार नामक रागिनीका उल्लेख नहीं कहीं मिलता। मल्लारी नामक एक रागिनी अवश्य है, जिसके पंक्ति ३ के मूल पाठमें होनेकी सम्भावना हमने

प्रकट की है। यदि उसीका उल्लेख यहाँ हो तो पंक्ति ३ के मूल पाठके रूपमें किसी अन्य रागिनीको ढूँढ़ना होगा। कुतुबनके पूर्ववर्ती अथवा समकालिक किसी संगीत ग्रन्थमें मलार अथवा मलारीका नाम श्रीरागकी भार्याके रूपमें प्राप्त नहीं। ब्रिटिश संग्रहालयकी रागमाला चित्रावलीमें सेतमलार नामकी रागिनी श्रीरागकी भार्याके रूपमें अंकित है। अतः हो सकता है कि मलारको श्रीरागकी भार्या माननेवाली कोई परम्परा रही हो और उसका अनुसरण कुतुबनने किया हो। पर पंक्ति ३ को ध्यानमें रखते हुए यह पाठ सन्दिग्ध ही जान पड़ता है। **गूँजरी(गुर्जरी)**—यह गुजरात प्रदेशके नामपर आधारित काफी प्राचीन रागिनी है। मातंग कृत बृहद्देशी-में इसका उल्लेख टक्क और पंचम रागोंके अन्तर्गत भाषा गीतोंके रूपमें हुआ है। संगीत रत्नमालामें मम्मटने इसकी गणना सालंक रागोंमें की है। राग-परिवारमें गूँजरीका उल्लेख सोमेश्वरदेवने भैरवकी, नारद-दत्तिलने राग-सागरमें धुर्जरी नामसे मालवकी, रागार्णवने पंचमकी, नारदने पंचमसंहितामें बसन्तकी, मेषकर्णने दीपककी, पुण्डरीक विट्ठल-ने देशकारकी, भावभट्टने मेघरागकी और पुरुषोत्तम मिश्रने संगीत-नारायणमें नटनारायणकी भार्याके रूपमें किया है। किसी भी संगीत ग्रन्थ मे गूँजरी का उल्लेख श्रीरागकी भार्याके रूपमें उपलब्ध नहीं है। **भाऊँपलासी** (भीमपलासी)—आधुनिक संगीतशास्त्री भातखण्डेने भीम-पलासीको काफीका जन्यराग कहा है। इनसे पूर्व केवल लोचन कविने अपनी रागतरंगिणी (१३७५ ई०) में और हृदयनारायण देव (१६६४ ई०) ने अपने हृदय-कौतूहलमें इसकी चर्चा की थी। दोनों ही संगीत-शास्त्रियोंने इसे केदारका जन्य राग कहा है। राग-परिवारमें इसका उल्लेख एकमात्र राधामोहन सेन कृत संगीत तरंग (१८१८ ई०) में उपलब्ध है। उन्होंने भरत नामक किसी परवर्ती संगीतशास्त्रीके प्रमाणसे इसे हिण्डोलकी भार्या कहा है। अतः कुतुबनका यह उल्लेख रागपरिवारमें सबसे प्राचीन है और किसी अज्ञात परम्परापर आधारित है।

(७) **कै**—को। **चीन्ह**—पहचान कर।

२५४

(दिल्ली; बीकानेर)

खस्टम राग भारजा[१] थापीं। तीसों[२] रागिनी साथ अलापीं ॥१
बाजै सबद जहाँ लहिं आहै[३]। भा झंकार मोहि सब रहै ॥२
फुनि[४] पतुरीं कछनी कै[५] आईं। मान बहुत लावहिं[६] बहु भाईं ॥३
कंवल बदन[७] म्रिगनैनि[८] सुहाईं। वरें[९] लंक जानु[१०] उन्ह[११] लाईं ॥४
हिया[१२] सुभर जनु[१३] कुन्द सँवारी। कदलि[१४] खम्भ पेड़ न सँभारीं[१५] ॥५

चम्पा बरन सुहानी[16] तरुनीं, जो[17] देखत[18] सो मोह ।६
बेगर बेगर भाँ[19] तिंह कै[20], कै आई छोह[21] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–भाजी । २–छतीस । ३–लहकहे । ४–पुनि । ५–जो पतरा एक कछि । ६–लावै । ७–बदनी । ८–म्रिगनैनी । ९–बरलै । १०–जनौ । ११–उनि । १२–हिय । १३–जनौं । १४–कदली । १५–सुभरारी । १६–सोहावनि । १७–सुन्दरि जो । १८–देखा । १९–भाव । २०–तिन्हिकर । २१–बहु जोह ।

टिप्पणी—(२) **सबद**–वाद्य ।

(३) **पतुरीं**–नर्तकी । **कछनी**–घुटनोंतक कसा हुआ अधोवस्त्र । **भाईं**–भाव ।

(५) **कुन्द**–खराद ।

२५५

(दिल्ली; बीकानेर)

कछनी दखिन क चीर कै गहीं[1] । चँदर चोलि उर लेइ रहीं[2] ॥१
अभरन सभै[3] कपूर क कीन्हा । घाँघरि[4] बाँधि आइ पग[5] दीन्हा ॥२
चीहुर गूँद बेनी उरबाईं[6] । चन्दन रूख पर[7] बिसहर छाईं[8] ॥३
देखत मोहि सभा सब रही । काम चेष्टा तन मन गहीं[9] ॥४
कै जुहार उन्ह आयसु[10] लीन्हा । कुँवर नाँच कँह आयसु[11] दीन्हा ॥५
गायन[12] गावहिं काढ़ि[13] सुधांग[14], नाच होइ[15] तिह[16] लाग ।६
माँथा धौरा झूमरा परिबन्ध[17], यइ र गीत[18] वै राग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–कछनी दखिन कर चीर लै कीना । २–चन्दन चोलि उर लेपन दीन्हा । ३–सबै । ४–घाँघर । ५–पगु । ६–उरवाई । ७–पर जनौ । ८–जाई । ९–काम चेष्टन सब कछु जिय गही । १०–इन्ह आइस । ११–आइस । १२–गाइन । १३–गाढ़े । १४–सुध । १५–होन । १६–तहँ । १७–मठधुव झूमर परिबन्ध गीत । १८–एइ रागिनी ।

टिप्पणी—(१) **कछनी**–साड़ी अथवा धोतीको काछ लगाकर पहननेकी विधि; इसमें घुटनोंतक ही वस्त्र होता है और दोनों लाँग पीछे खोंस ली जाती है । **दखिन क चीर**–दक्षिणी वस्त्र । **चन्दर चोलि**–(चन्दन चोली) चँदनके रंगकी बनी हुई कंचुकी ।

(२) **घाँघरि**–घुँघुरू ।

(३) **चीकुर**–चिकुर, केश । **रूख**–वृक्ष । **विसहर**–सर्प ।

(६) **सुधांग**–शुद्ध अंग ।

(७) **माथा, धौरा, भूमरा, परिबन्ध**–ये नृत्यके विभिन्न प्रकार जान पड़ते हैं जो कदाचित् अब प्रचलित नहीं है ।

२५६

(दिल्ली; बीकानेर)

सरब नील रूपक चन्द औ चाली[१] । देसी जित पँवर[२] इकताली ॥१
अठताली पटताली नाची[३] । ताल देन्हि[४] जानहु धर ताँची[५] ॥२
फुनि[६] नाचइ[७] धर पला[८] सँचारा । नाचहिं गीत होइ झनकारा ॥३
सीस नियर[९] कूदहिं[१०], मँह[११] मोती । दहा दिहिंह चक्र भँवहि उरधूनी[१२] ॥४
सरो अकाँच खरगै धारा[१३] । मान लेहिं[१४] पर ताल निपारा[१५] ॥५
नाचै ताल सबै उन्ह, कँटमारग[१६] जहाँ लहि राग ।६
सुरपति सुरहिं[१७] साथ लै, [कौतुक][१८] अवसर[१९] देखै लाग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–सर्वन नील रूपक औ चाली । २–देसी जाति तेवरी । ३–अठतल पटतल ऊ नाची । ४–देहि । ५–ठाँची । ६–पुनि । ७–नाचै । ८–धुरपद । ९–नीर । १०–गूदहिं । ११–मुँह । १२–हाथहि चक्र भँवहि अधौती । १३–संख चक्र खरग कै धारा । १४–देइ । १५–निबारा । १६–मार्ग गीत । १७–सुरन्ह । १८–(दि०) कौकत । १९–अखर ।

टिप्पणी—(१) **सरब नील, रूपक, चन्द, चाली, देसी, नित पँवर (?), इकताली**—ये नृत्यों के विभिन्न रूप जान पड़ते हैं । चेष्टा करनेपर भी इनके सम्बन्धमें कोई जानकारी उपलब्ध न हो सकी ।

(२) **अठताल, पटताल**—पखावज और मृदंग बजानेके अनेक तालोंमें मुख्य ताल हैं । इन तालोंपर गायन-वादन तो होते ही हैं, विशुद्ध नृत्य भी इन तालोंपर होते हैं ।[१] **धर**—धड़ । **ताँची**—खींचा ।

(३) **धर पला**—धड़ और पल्लव (हथेली) (अनुमान मात्र) ।

(४) **दहा**—दस । **दिहिंह**—दिशाओंमें । **भँवहि**—घूमती हैं ।

(४) **खरगै धारा**—खड्ग अथवा तलवारकी धारपर नाचनेका संकेत यहाँ जान पड़ता है । इस प्रकारका नाच काफी प्राचीन है और आज भी कथक-शैलीमें प्रचलित है ।

२५७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

उत्तिम नाच कुँवर मन भावा । नीक महन्दरी[१] नाव दिखावा[२] ॥१
परसन भये[३] मया मन आयी । बहु[४] परसाद महन्दरी[५] पाई ॥२
तुरिय सहस कर[६] पायँड़[७] पावा । मुँदरी[८] टोडर गिनति[९] न आवा ॥३
पाट पटोर चीर बहु पाई[१०] । टाँका कोरि एक[११] रोक देवाई[१२] ॥४
कर नौकड़ी[१३] दीन्हि[१४] उतारी । सीस[१५] मुकुट[१६] औ[१७] गिय कँठहारी[१८] ॥५

---

१. यह सूचना हमें श्री रामचन्द्र वर्मासे प्राप्त हुई है ।

अलंकरन दई[१९] कुँवर आपुन[२०], पहिरे आहे[२१] जो आँग[२२] ।६
पतुरिंह[२३] अभरन पायउ[२४], पा लहि नेउर लग सर माँग[२५] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर ।

१–(ए०, बी०) महेंदरे । २–(ए०, बी०) नचावा । ३–(बी०) भवा । ४–(बी०) बहुर । ५–(ए०, बी०) महेंदरे । ६–(ए०) कै; (बी०) का । ७–(ए०) पायड; (बी०) पायेंड । ८–(बी०) मुंदर । ९–(बी०) गनती । १०–(ए०, बी०) पाए । ११–(ए०) कोरिक । १२–(ए०, बी०) देवाए । १३–(ए०) कर तौ करही; (बी०) कर नौ ग्रिह । १४–(बी०) दिहिस । १५–(ए०) सीस क; (बी०) सीसकर । १६–(ए०) मडुक; (बी०) मुकट । १७–(ए०, बी०) × । १८–(ए०, बी०) कँठ-मारी । १९–(ए०) आलंकरन दै; (बी०) ते सब दीन्ह । २०–(ए०, बी०) आपन । २१–(ए०) अहा; (बी०) अहे । २२–(ए०, बी०) अंग । २३–(ए०, बी०) पतरन्ह । २४–(ए०) पाएव; (बी०) पायेन्हि । २५–(ए०) मंग; (बी०) पाँव लहि सिर मंग ।

टिप्पणी—(१) **नीक**—अच्छा; सुन्दर ।

(२) **परसन**–प्रसन्न ।

(३) **पायँड़**–मार्ग की सुविधा । **मुँदरी**–अँगूठी ।

(४) **पाट-पटोर**–सूती-रेशमी वस्त्र । **चीर**–वस्त्र । **टाँका**–टंक; चाँदीका सिक्का दिल्ली सुल्तानोंके समयमें उत्तर भारतमें प्रचलित था । उसका वजन १६७-१७० ग्रेन था और मूल्यमें रुपये के बराबर था । **रोक**–पारिश्रमिक ।

(५) **नौकड़ी**–सम्भवतः हाथका कोई आभूषण । **गिय**–कण्ठ । **कँठहार**–कण्ठा; गलेका हार ।

(६) **अलंकरन**–अलंकरण । **आँग**–अंग; शरीर ।

(७) **अभरन**–आभरण; आभूषण । **पा**–पैर । **लहि**–तक । **नेउर**–नूपुर । **माँग**–सिरपर केशोंके बीच पहना जानेवाला आभूषण ।

२५८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[१])

कुँवर तो र[१] सभा कहँ जाई । मिरगावती एक चेरि बुलाई[२] ॥१
कहिसि बुलावहु जाइ[३] सहेलीं । मिरगावति[४] हँहि[५] मंदिर अकेलीं ॥२
चेरीं जाइ[६] सखिन सेउ[७] कहा । चलहु तुमहि[८] मिरगावति चहा ॥३
सुना सहेलिंह[९] सब उठि चलीं । इन्द्र अपछरन सेउँ[९] वै[१०] भलीं ॥४
पान खात आई सब सखीं । मिरगावती हँसत वै[११] लखीं ॥५

---

१. इस प्रतिमें यह दो कड़वकोंमें बँटा है । पहिले कड़वकमें प्रथम चार पंक्तियाँ अन्य तीन पंक्तियोंके साथ हैं । इसके बाद एक सर्वथा नवीन कड़वक है । तदन्तर शेष तीन पंक्तियां एक तीसरे कड़वक की पंक्ति २, ६, ७, के रूप में हैं ।

बैठीं[१२] आइ सहेलीं[१३] सब, मिलि[१४] पूछहिं निसि कै[१५] बात ।६
कहहु कौन बिधि रावइँ[१६] साइँ,[१७] मान किहहु र[१८] मिलात[१९] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०)तोरे; (बी०)बहुरि। २–(ए०,बी०) चेरी बोलाई । ३–(ए०,बी०)बोलावहु जाय। ४–(ए०,बी०) मिरगावती। ५–(ए०,बी०) जाय ६–(ए०,बी०) सखिन्ह सों। ७–(ए०,बी०) तुम्हहिं। ८–(ए०,बी०) सहेलिन्हि। ९–(ए०,बी०) अपछरन्ह सों)१०–(ए०) उए; (बी०) उइ। ११–(ए०) उए; (बी०) हँसतै वै। १२–(बी०) बैसी। १३–(बी०)× । १४–(ए०)× । १५–(ए०) की। १६ (ए०) रावै; (बी०) रायेहु । १७–(बी०)×। १८–(ए०) कीन्ह रे। १९–(बी०) पूछेंहि सबै संघात ।

टिप्पणी—(२) हँहि–है ।

(३) **रावइँ**–रमण करता है। **साइँ**–स्वामी । **किहहु**–किया। **मिलात**–मिलने के समय।

२५९

(दिल्ली; बीकानेर[१])

हँस मिरगावति[१] चुपकै रही। कही[२] न जाइ लाज मँह[३] गही ॥१
पूछहिं फिर[४] सपत दई[५] बाता । फुर न कहहु तिह[६] सपत सै साता ॥२
आपुन मँह कछु[७] आहि न लाजा। हम जो कहहिं तुम्ह सेउ[८] सब काजा ॥३
कहहु कवन[९] बिधि भुखवइ खाई[१०] । सपत आहि जो फुर न कहाई[११] ॥४
छैल[१२] आहि वह की र[१३] गँवारू। [सेज कर][१४] भाउ[१५] बूझहिं कै खारू[१६] ॥५
हँसि र कहा मिरगावति[१७] उँहि[१८] सों,[१९] सुघर आहि नहिं खार[२०] ।६
चतुर सुजान छैल हिय[२१] ताकर,[२२] बूझे भाउ[२३] अपार ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–हँसी म्रिगावती । २–कहै । ३–भन । ४–सवै । ५–दै। ६–× । ७–किछु । ८–तुमसे । ९–न कवन । १०–भोगयेहु। ११–कहहू । १२–छैल। १३–दहु कैरे। १४–(दि०) सजग; (बी०) सेजकर। १५–भाव। १६–बूझै दहु घारू। १७–रे कहिसी मिरगावती। १८-१९–×। २०–घारू। २१–२२ है रसिया। २३–भाव।

टिप्पणी—४–**भुखवइ**–भूखा ।

(५) **खारू**–मूर्ख; अज्ञान् ।

(७) **हिय**–हृदय। **ताकर**–उसका ।

२६०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर;)

कोकसास्त्र[१] केर[२] जो भावा। वइ[३] सब जान[४] अउर[५] बहु आवा[६] ॥१

१. इस प्रति में पंक्ति १ और २ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

हमहि[७] कोक बाँचे फुनि आवै। उह[८] र[९] भाउ हम सेउँ[१०] बहु लावै ॥२
मीन कॉंम[११] जिह ठाउ[१२] सो जानै। एक एक आखर कोक बखानै ॥३
नागर छैल सुभागैं[१३] भरा। बहु गुनवन्त भोज कै[१४] करा ॥४
जस चाहेउँ[१५] तस दयी[१६] मिरावा[१७]। अँवरित[१८] कुण्ड सपूरन पावा[१९] ॥५
मन मनसा चित पूजी मोरे,[२०] मिलेउ[२१] सुघर हम जोग ।६
जोगहिं जोग मिरायउ बिधि,[२२] अब मानौं[२३] रस भोग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) कोक सासतर। २–(बी०) रे। ३–(ए०) उऐ; (बी०) वै। ४–(बी०) जानै; ५–(ए०, बी०) और। ६–(बी) भावा। ७–(ए०) हमहु;(बी०) हम कहँ। ८–(ए०) उवह। ९–(ए०, बी०) रे। १०–(ए०) हमसौं;(बी०) हमसैं। ११–(बी०) मनक मन। १२–(ए०, बी०) जेहि ठाँ। १३–(ए०) सभागै; (बी०) सुभागहिं। १४–(बी०) कर। १५–(ए०) चाहेव। १६–(ए०) दैअ। १७–(ए०) मेरावा। १८–(ए०) अम्रीत। १९–(बी०) पूरी पंक्ति लुप्त[१]। २०–(ए०) ×; (बी०) मोरी। २१–(ए०, बी०) मिलेव। २२–(ए०) मेराऐव विधनैः; (बी०) मिलायेउ बिधनै। २३–(बी०) नौ।

टिप्पणी—(४) **भोज कै करा**—भोग की कला।

२६१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुनिके सखी[१] बात यह भाई। घर घर मेउँ[२] निछावरि[३] आई ॥१
मिरगावती निछावरि लिही[४]। बहु पहिराउ[५] सखिह[६] कर[७] दिही ॥२
फुनि नहाइ[८] कै चीर पहिरावा[९]। सब अभरन[१०] [पहिरें][११] कह आवा ॥३
अभरन पहिरि बैठि फुनि बारी। चतुर सुजान बिचाखन[१२] नारी ॥४
अउसा नाच कुँवर[१३] घर आवा। मिरगावति अमिय रस[१४] पावा ॥५
सखी बहुरि[१५] कै आई घर कहँ[१६], वे[१७] रस केलि कराँहि ।६
भोग करहिं पँचाँब्रित[१८] पियहिं[१९], मधुर[२०] [खजहजा][२१] खाँहि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) सखिन्ह; (बी०) सखिहु। २–(ए०) सौं रे; (बी०) सौं। ३–(बी०) न्योछावरि! ४–(ए०) लीही। ५–(ए०) पहिरौन; (बी०) पहिरावनि। ६–(ए०,बी०) सखिन्ह। ७–(ए०, बी०) कहँ। ८–(ए०) नहाए; (बी०) नहाय। ९–(बी०) फिरावा। १०–(ए०, बी०) अभरन उत्तिम। ११–(ए०) पहिरन;

१—सम्मेलन संस्करण में यह पंक्ति नहीं दी गयी है। अतः ऐसा अनुमान होता है कि एकडला और बीकानेर दोनों प्रतियों में यह नहीं है। पर यह वस्तुतः छूट है। एकडला प्रति हमें उपलब्ध है इससे उसके पठान्तर दिये गये हैं। बीकानेर प्रति मे भी यह पंक्ति है, यह माता प्रसाद गुप्त के कथन से ज्ञात होता है (भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ९०)।

(दि०) × । १२-(बी०) चत्रु सयान बिचछिन; (ए०) बिजखन । १३ (ए०) अरसा कुवर; (बी०) उठा सो नाँच कुँवर । १४-(ए०, बी०) जस; (दि०) जस रस १५-(ए०) पहिरि । १६-(ए०,बी०) घर घर आई । १७-(ए०) उइ । १८-(ए०) पंच अप्रीत । १९-(ए०, बी०) ×। २०-(बी०) मधुकर । २१-(ए०) खजहँजो; (दि०) खाजा; (बी०) व्याजहिं ।

टिप्पणी—(४) **विचाखन**—विलक्षण ।

(५) **अउसा**—(अवसान) समाप्त हुआ ।

(७) **खजहजा**—उत्तम फल; मेवा ।

२६२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सखी एक घर कछु र[1] बधाई। उह चलि मिरगावति पँह आई ॥१
कहिसि हमरें घर मंगलचारा[2]। तुम[3] आवहु तो जाइ[4] सँवारा ॥२
को आदर दिया जिन्ह तुम देइ[5]। को र[6] सँवारि बाति हम लेई ॥३
पगु ढारियहु[7] हम होइ वड़ाई। सासु ननद मँह पत[8] जो रहाई[9] ॥४
मिरगावति[10] कहि[11] सुनहु सहेली। मों तू तो हौं[12] एक अकेली ॥५
हम तुम्ह[13] नाहीं विच[14] सखी[15] कछु[16], जिउ एक[17] दुन्हु गात[18] ।६
राजकुँवर कँह पूँछउँ[19] पहिलें,[20] फुन र[21] चलउँ तुम्ह[22] साथ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०,बी०) कुछु रे । २-(बी०) मंगरचारा । ३-(ए०,बी०) तोह । ४-(ए०,बी०) जाए । ५-(ए०) को आदरो बाझ तोह देई; (बी०) को आदर बाज तोह देई । ६-(ए०,बी०) रे । ७-(ए०) ढारिय; (बी०) ढारहु । ८-(ए०) पति । ९-(बी०) जो पति पाई । १०-(ए०,बी०) मिरगावती । ११-(बी०) कहै । १२-(ए०) हों तूँ तू हौं; (बी०) तुम हम हैं एक । १३-(ए०) तोह । १४-(ए०, बी०) बीच । १५-(ए०,बी०) × । १६(-ए०,बी०) कुछु । १७-(ए०,बी०) एकै । १८-(ए०) दुई गात; (बी०) दुहुँ गाथ । १९-(ए०,बी०) पूछौं । २०-(ए०,बी०) × । २१-(ए०) तोरे; (बी०) अज्ञा जाउँ । २२-(ए०) चलों तोह; (बी०) चलों तुम्हरे ।

टिप्पणी—(४) **ढारियहु**-डालोगी । **पत**-इज्जत ।

२६३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति कुँवर पँह आई । आइ[1] ठाढ़ि[2] भई[3] लाग कहाई ॥१
कहिसि बात एक सुनहु न राजा । सखी एक कछु[4] उटयेउ[5] काजा ॥२
सो हम कँह र[6] बुलावइ[7] आई । आयसु[8] होई[9] जाइ[10] तो[11] जाई ॥३
कुँवर कहा अस[12] पेम[13] पियारी । मो जिय बिनु जियत **परान अधारी[14] ॥४**

बरजों तो अपमंगल[15] होई । गवन[16] कहउँ[17] तो प्रीति न होई[18] ॥५
मन भावन्ता सो करहु[19], यह मुहि[20] कही[21] न जाय ।६
बिरत[22] पेम न सहि सकों मैं, मानों कहेउ[23] सत भाय ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(ए०) आए; (बी०) आय। २-(बी०) टाढ़। ३-(ए०) मै; (बी०) होइ। ४-(ए०) कुछ; (बी०) घर। ५-(बी०) उटयेहु; (ए०) उटयेव। ६-(ए०, बी०) रे। ७-(ए०, बी०) बोलावै। ८-(ए०) आएस; (बी०) आइस। ९-(ए०) होय; (बी०) होइतो। १०-(ए०, बी०) जाय। ११-(बी०) ×। १२-(ए०) सुनु; (बी०) सुन। १३-(बी०) प्रान। १४-(ए०) मो जिउ जिउ पति प्रान अधारी। १५-(बी०) अपमंर। १६-(ए०, बी०) गौन। १७-(ए०,बी०) रहौं। १८-(बी०) नहिं सोई। १९-(बी०) करु। २०-(ए०, बी०) मोहि। २१ (ए०,बी) कहै। २२-(ए०,बी०) बिहरत। २३-(ए०) × ; (बी०) जो कहा; (ए०) कभि कहौं।

टिप्पणी—(१) ठाढ़-खड़ी।
(२) उटयेउ-आयोजित किया।
(३) जाइ-जाओ। जाई-जाऊँ।
(६) भावन्ता-अच्छा लगे ।
(७) बिरत-विरह ।

२६४

(दिल्ली; बीकानेर)

मिरगावति कहि[1] सुनहु बिनाती[2]। बरजा करै न[3] पुरुख कै जाती ॥१
हौं तुम्ह कहँ अस बरजों नाँहाँ। ओवरी यह जो अहै घर माँहाँ ॥२
पुरुखा[4] सात गये न[5] डोली। तुमहू यह जनि[6] देखहु खोली ॥३
यहि कर[7] मरम[8] न जानै कोई। कै भल मन्द कछु तिह मँह होई[9] ॥४
बरिज बहुत[10] कै चली सोनारी[11]। चढ़ी जाइ हुत[12] डाँडि[13] सँवारी ॥५
खात तँबोल अदाकर[14] पण्डुर, कोड़ करत वै जाँहि।६
खेलत हँसत आपु मँह मिलीं,[15] जिउ[16] अंग अंग न समाहि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१-मिरगावती कहै। २-बिनती। ३-न करै। ४-पुरिखा। ५-नहिं। ६-जनि यहि। ७-जेहिका। ८-मर्म। ९-भला मन्द एहि मँह किछु होई। १०-बहु भाँति। ११-सुनारी। १२-होति। १३-डाँडी। १४-आड़ करि। १५-×। १६-×।

टिप्पणी—(१) पुरुख-पुरुष।
(२) बरजों-बर्जित करूँ ; मना करती हूँ। नाँहाँ-पति। ओबरी-गर्भागार; एकान्त कमरा।

(३) पुरुखा–पूर्व पुरुष । जनि–मत ।
(५) डाँडि–डण्डी; एक प्रकारकी पालकी ।
(६) पण्डुर-पीला । कोड़–क्रीड़ा ।

२६५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

हँसत सखी घर पैठी आई । जानु चाँद चौदस आई[१] ॥१
उदिनल चाँद नखत कै जोती । मोंति माँझ जानहु गज मोती[२] ॥२
सोरह करा जो सुरुज बखानी । यह त सँहस इँदरासन मानी[३] ॥३
तेहि ऊपर कछु[४] वचन सुहाई[५] । खेलत हँसत रैन[६] दिन जाई ॥४
यह तो उहाँ[७] कोड़ लपटानी । उँहा कुँवर बरजा[८] किय[९] जानी ॥५
जिय भरम मन[१०] अस कहि[११], इह[१२] मँह[१३] आहे[१४] काह ।६
जाइ[१५] उघारों उबरी[१६], भीतर[१७] देखों वँह[१८] का आह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०) आइ सखी घर कीत उँजोरा । चाँद चहु दिसि भयउ न भोरा ॥ (बी०) आय सखी घर कियेउ अँजोरा ॥ चाँद चौदस भयेव न मोरा । २–(ए०, बी०) घर आँगन भरि रही अँजोरी । दिन कै (कर) काज करहि निसि भोरी ॥ ३–(ए०) ससि रे बरन कै उजोर पावै । जो रे परगट मिरगावति आवै ॥ (बी०) ससि तरइनु के जोर न पावै । जोरे परगट मिरगावती आवै ॥ ४–(ए०) मुख; (बी०) जो मुख । ५–(ए०, बी०) सोहाई । ६–(ए०, बी०) रैनि । ७–(ए०) ऐतो इहाँ । ८–(बी०) अनबरन । ९–(ए०, बी०) कै । १०–(ए०) भरमाना; (बी०) चित । ११–१२–(ए०) दहु एहि; (बी०) एहि । १३–(ए०) मन । १४–(बी०) का । १५–(ए०, बी०) जाय । १६–(ए०, बी०) ओबरी । १७–(ए०) × । १८–(ए०) दहुँ का, (बी०) का दहुँ ।

२६६

(दिल्ली; एकडला: बीकानेर)

उबरी[१] जाइ[२] उघारे काहा[३] । एक खटहरा[४] उहि मँह[५] आहा ॥१
तिह मँह भा कोउ[६] करै गुहारी[७] । को पुनवन्त[८] देइ[९] निस्तारी[१०] ॥२
जो कोउ[११] खोल देइ[१२] बँद[१३] मोरी । सेउँ[१४] कुटुँब सेंउ[१५] कर जोरी ॥३
को र बैठि[१६] मींज[१७] कर[१८] मोरी[१९] । चेर[२०] हौं[२१] सेवों[२२] कर जोरी ॥४
जस हनिवन्त सामि[२३] कै काजा । वस हौं[२४] करौं छाँड़ मुहि[२५] राजा ॥५
जइसे सेउ विक्रम कै, जिय सेंउ किय बैताल[२६] ।६
वइसै हौं फुन करिहों ताकर[२७], जो र[२८] मोख दइ[२९] घाल ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) ओबरी। २–(ए०) जाए; (बी०) जाय। ३–(दि०) कहा। ४–(ए०) कटहरा; (बी०) कठेरा। ५–(बी०) तेहि भीतर। ६–(ए०) भागै। ७–(ए०,बी०) गोहारी। ८–(बी०) पुनिवन्त। ९–(ए०) देए; (बी०) देय। १०–(ए०,बी०) निसतारी। ११–(ए०,बी०) रे। १२–(ए०) देय खोलि; (बी०) खोल देय। १३–(ए०,बी) बन्दी। १४–(ए०) सेवों।१५–(ए०) सेव; (बी०) सेवा करौं कटभ सै। १६–(ए०, बी०) कोरे पीठि। १७–(बी०) मीडे। १८–(ए०, बी०) गुरु। १९–(ए०) मोरे। २०–(बी०) चेरा। २१–(ए०) होउ; (बी०) होइ। २२–(ए०) सौंरो; (बी०) सेऊँ। २३–(बी०) राम। २४–(ए०) तस मैं। २५–(ए०) छाड़ मोहि। २६–(ए०) जैसे सेव बिक्रम कै जिअ सै कै अगिआ पतिपाल; (बी०) जस सेवक विक्रम जिय सेउँ अगिया बैताल। २७–(ए०) उइसी सेव हौं करिहौं; (बी०) वस सेवा हौं करिहौं। २८–(ए०, बी०) रे। २९–(ए०) दै; (बी०) मोंहि।

टिप्पणी—(१) खटहरा-कटघरा। उहि–उस।

(२) गुहारी–पुकारा। पुनवन्त–पुण्यवान्। निस्तारी–छुटकारा।

२६७

(दिल्ली; बीकानेर)

पूछइ[1] कुँवर को र[2] तू आही[3]। किह[4] औगुन तिह राखिन[5] साही[6] ॥१
फुर कहु तिह र छुड़ावउ[7] बेगी। कहिसि इन्हकै हौं[8] पिता कह[9] नेगी ॥२
देस [कोस][10] औ अरथ भंडारू[11]। सबै हैतो[12] मोरे[13] सर भारू[14] ॥३
सामि[15] काज दुरजन[16] सब केरा। काहू केर[17] न मैं मुँह[18] हेरा ॥४
ठाकुर जाकहँ मया कराहीं[19]। ताकर सत्रु मीत[20] औ[21] भाई ॥५
रूपमरारि मरत सतुरहि[22], लाइ बँधायेउ मोहि[23]। ६
काज सामि कै सँवारौं[24], कहौं साच यह दोह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–पूछै। २–रे।३–अही। ४–केहि। ५–तोहि राखिनि। ६–सही। ७–तोहीं छाड़ो। ८–×। ९–कर। १०–(दि०) लोग। ११–ग्रर्थ भंडारा। १२–सब होत। १३–मोरेहिं। १४–मारा। १५–सामी। १६–दुरिजन। १७–कर। १८–मैं मुँह नहिं। १९–करई। २०–मित्र। २१–×। २२–सत्रन। २३–लई बँध इन्हि मोहि। २४–सँवारेउँ। २५–(बी०) कियेव न काहू दोह; (दि०मार्जिन) न काहू सन दोह।

टिप्पणी—(१) औगुन–अपराध। राखिन–रक्खा। साहि–बन्दी।

(३) कोस–कोष। हैतो–था। मोरे–मेरे।

(४) केर–का। हेरा–देखा; जोहा।

(५) ठाकुर–स्वामी। मया–स्नेह। मीत–मित्र।

(७) दोह–द्रोह; अपराध।

२६८

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

अउर बात बहुत कहिसि[१] सुहाई[२]। कुँवरहि मोह मया मन आई ॥१
कहसि उघारि देउँ[३] यह मोखू। काज सामि[४] कछु[५] लाग न[६] दोखू ॥२
कुँअर कटहरा[७] दीन्हि[८] उघारी। निकसि ठाढ़ भौ[९] बिपरित[१०] भारी ॥३
पाउ रहा धरती उहि[११] केरा। सीस जाइ भयउ[१२] सरग अभेरा ॥४
बिपरित[१३] रूप सराहौं काहा[१४]। किसन[१५] बरन रीछ जनु आहा[१६] ॥५
दाँत[१७] बड़े बड़[१८] सुठि भारी,[१९] कहँ दुख कहौं मँडाइ[२०] ।६
ले र[२१] कुँवर कहँ काँधे ऊपर,[२२] लइ गै सरग चढ़ाइ[२३] ॥७

पाठान्तर–एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) कही। २–(बी०) सोहाई; (ए०) सुनाई। ३–(ए०, बी०) देव। ४–(म०) सामि काज; (बी०, ए०) सामी काज। ५–(ए०) कुछु; (बी०) ×। ६–(बी०) न लागै; (म०) हरख न। ७–(म०) कोटँहरा; (ए०) केटहरा; (बी०) कठहरा। ८–(बी०) दिहेउ। ९–(ए०, बी०) भा। १०–(ए०,बी०) बिपरीति। ११–(बी०) वोहि। १२–(ए०, बी०) भाउ; (म०) भिर। १३–(म०) इत; (बी०) अति बिटार। १४–(ए०) साहस बढ़ा भो पर मारा। १५–(बी०) केस। १६–(ए०) रकत बीज कलंकी संघारा। १७–(बी०) दसन; (म०) दन्त। १८–(ए०, बी०, म०) ×। १९–(ए०) भयावन; (बी०) भुअन। २०–(ए०) कहँ लगि कहौं मँझाय; (म०) कहँ धरि कहौ मन लाय; (बी०) कहँ लगि कहौं बड़ाइ। २१–(म०,बी०) रे। २२–(बी०) धरि; (ए०) वोहि कुँवर के काँधे। २३–(म०) सरग लग लाइ; (ए०,बी०) लागा सरग चढ़ाइ।

टिप्पणी–(२) उघारि–खोलकर।

(३) ठाढ़–खड़ा। भौ–हुआ।

(४) किसन–कृष्ण। बरन–बर्ण; रंग।

२६९

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कुँवर कहा यह परी[१] बलाई। बरजन किहेउँ[२] लागि पछताई ॥१
जस र जलमदेव[३] बरज न कीन्हा। बस[४] पछताव दई मँह[५] दीन्हा ॥२
सुवा मारि राजा पछताना[६]। तस भा[७] पछताव निदाना ॥३
जस[८] भोज बिक्रम पछताना[९]। औ भैरौंनन्द हुत[१०] सयाना ॥४
वइस[११] पछताव भयउ यह[१२] आई। जिउ[१३] पछताव एक[१४] संग जाई ॥५

[कन्तें[१५]] बचन साल[१६] उर मोरें, जिमि सालै कर रुख ।६
एक[१७] सालै अरु[१८] पलुहै, यह रे घनेरा दुख ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(म०) बड़ेउ । २–(म०) किहों; (ए०,बी०) किया । ३–(म०) जगमदेव; ४–(म०, ए०, बी०) तस । ५–(ए०) देअ हम; (म०) दई हम; (बी०) दैव हम । ६–(बी०) पछिताव; (म०) पछताई । ७–(म०) इह भा; (बी०) यह भवा; (ए०) अइ हम । ८–(म०) जस र; (ए०, बी०) जस रे । ९–(बी०) पछिताना । १०–(ए०) हुते जो; (बी०) जो होत । ११–(म०, बी०) बस; (ए०) तस । १२–(म०)भई मोहि; (ए०) भअेव अेहि; (बी०) भवा हम । १३–(बी०) जिब । १४–(म०) यक । १५–(ए०) कन्ति; (बी) कन्त; (दि०) कीन । १६–(बी०)सालहि । १७–(म०) यक; (बी०) इक । १८–(ए०,बी०) और ।

टिप्पणी—(१) **बलाई**–बला । **बरजन**–वर्जित कार्य ।
(२) **जलमदेव**-जनमेजय ।
(३) **सुवा**–तोता ।
(६) **साल**–कचोटता है; टीसता है ।
(७) **पलुहै**–(क्रि० पलुहना) पल्लवित होता है । **घनेरा**–घना; अत्यन्त ।

२७०

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कहिसि[१] दर्यी[२] बिधि[३] सिरजनहारा । बहुतै कठिन तैं र[४] निस्तारा ॥१
यह तो घण्ट[५] पड़ा[६] बड़ मोही । हाथ जोरि के सँवरों[७] तोही ॥२
तोहि छाड़ किह करउँ[८] पुकारा । माँगों बिधि यहि सों[९] निस्तारा ॥३
जोजन सौ[१०] ले गयउ[११] उड़ाई । तहाँ कुँवर सों[१२] यह र[१३] कहाई ॥४
प्रीतम मोर तुम रे[१४] सुखरावहु[१५] । भोग करहु नित[१६] मोहे[१७] [सतावहु][१८] ॥५
मोर जीउ वहि[१९] लुबुधा[२०], वह[२१] गइ लुबुधी[२२] तोहि ।६
अब रे पुहुमि तोहि[२३] पटकों[२४] धरि कै,[२५] रहे[२६] पछताव न मोहि ॥८

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१– (बी०) कहेसि । २–(ए०) दैय; (बी०) दइव । ३–(बी०) बिहाता । ४–(म०, ए०) तैं रे; (बी०) तेहि । ५–(म०, ए०, बी०) कठिन । ६– (बी०, म०) परी । ७– (म०) विनवँउँ; (ए०, बी०) बिनवौं । ८–(ए०, बी०) केहि करौं । ९–(म०, बी०) सेंउ । १०–(बी०) सेउ । ११–(ए०, बी०) गयेउ । १२–(बी०) से । १३–(ए०) अेह रे; (बी०) लाग । १४–(म०, बी०) तुम्हरे; (ए०) तोह १५–(म०) सुखलावहु । १६– बी० × । १७–(बी०) मोहि रे । १८–(बी०) तरसावहु; (दि०) तयावहु । १९–(ए०) जीउहि; (बी०) जीउ वोहि । (२०) (बी०) लुबुध

होत। ११-(ए०, बी०) उहि। १२-(बी०) गै लुबुधि; (ए०) लुबुधि गै; (म०) लुबुध गइ। १३-(म०) दइ; (ए०) दै। १४-१५-(बी०) कहौं कह धरि पटकौं। १५-(म०, ए०) × । १६-(म०) रहँहि; (ए०) रह।

टिप्पणी—(१) सिरजनहारा-सृष्टिकर्ता; ईश्वर। निस्तारा-छुटकारा। (५) सुखरावहु-आनन्द मनाओ।

(७) पुहुमि-पृथ्वी।

२७१

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

पण्डों तू र[1] महन्दरी[2] रावसि। अब न जियत वहि[3] देखै पावसि ॥१
माधोनल[4] तौं[5] रावसि कामाँ। जस पिंगला भरथरि[6] कह[7] रामाँ ॥२
अंगवास बहु[8] कहाँ[9] गँधाई[10]। भँवरा लुबधि कितहु[11] न[12] जाई ॥३
पवन लागि जिह[13] दिसि कँह[14] जाई। कोस बीस परिमल रहि[15] छाई ॥४
तूँ[16] रावसि हौं[17] कर मलऊँ। उठे आग[18] सिर पा [लहि][19] जरऊँ ॥५
वरिस गये वहि[20] कारन[21], अभिय न आयउ[22] हाथ।६
सो र[23] सेंत[24] तुम्ह[25] पायउ[26] अरकत, सुख भोंजहु[27] संग साथ[28] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(म०, ए०) न; (बी०) नहिं। २-(म०, बी०) महन्दरिहि; (ए०) मेहदरहि। ३-(ए०,बी०)उहि। ४-(म०,ए०,बी०) माधौ नाहिं। ५-(ए०) तु; (बी०) तू; (म०) जो। ६-(ए०, बी०) भरथरी। ७-(म०, ए०)×। ८-(म०) यह। ९-(ए०, बी०) घानि। १०-(ए०) गँधाही; (म०) देखाई। ११-(ए०,बी०) लुबधै कतहुँ। १२-(बी०) तजि नहिं। १३-(ए०) चहुँ; (बी०) जेहि। १४-(बी०) उड़ि। १५-(बी०) रहै परिमल। १६-(ए०) तू रे। १७-(ए०) हौं उहि। १८-(म०, बी०) आग जर। १९-(बी०) सहिं पा लहि; (दि०) किह। २०-(ए०) उहि। २१-(बी०) कारण जरतेहि। २२-(ए०, बी०) आयेव। २३-(ए०, बी०) रे। २४-(ए०) सेती। २५-(ए०) तोह। २६-(म०) पाई; (ए०) पाअेव। २७-(ए०) भूँजहू। (बी०) २८-(बी०) सो रासै तिअ तुम पाइ; सुखसेज संग साथ।

टिप्पणी—**सेंत**-मुफ्त।

२७२

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कहिसि[1] कुँवर मुँह काहि[2] न बोलसि। मरै कै बार[3] बकत नहिं खोलसि ॥१
हौं[4] न होउँ[5] 'वह[6]' राकस भूता। औ जस वहै गड़रिया दूता ॥२
हाथ धोइ[8] जिय छाड़उ आसा। बोलहु कछु जब लग[10] तन[11] साँसा ॥३
कहिसि काह बोलउ[12] तोहँ[13] सेतीं। मोंकह लेइ कीन्हें[14] बुधि जेतीं[15] ॥४

मैं तोंकों[१६] कछु[१] कियइ[१७] न[१८] मँदाई। नीक कहेउ[१९] यह तोर[२०] बड़ाई ॥५
जो र[२१] करै भल हम कहँ परिकै[२२], ताकर[२३] करहुँ[२४] मँदाइ ।६
टेव आह पुरखन[२५] कर[२६] जो कछु[२७], हमकै मेंटि [न][२८] जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) कहे; २–(ए०) काहे; (बी०) कहे। ३–(ए०) क बेरि। ४–(बी०) मैं। ५–(म०, बी०) हौं। ६–(ए०) उवह। ७–(म०)वह र; (ए०) उवह रे; (बी०) वह रे ८– (म०) धोहि; (ए०) धोए; (बी०) धोय। ९–(ए०, बी०) कुछु। १०–(ए०, बी०) लगि। ११–(ए०) है; (बी०) है तन। १२–(म०) बोलेउँ; (ए०,बी०) बोलौं। १२–(म०) तुम्ह। १३–(बी०) मोहके लिएउ किएउ; (ए०) मोह की लिए किये; (म०) मुहि कँह गिनती कीनें। १४–(बी०) ऐती। १५–(म०) तो कँह; (ए०) तोहि कहँ; (बी०) तोकहुँ। १६–(म०) कही; (ए०) कै; (बी०) कै जै किहु १७–(बी०) न की। १८–(म०) कहौं; (ए०) किहेव; (बी०) कियेउ। १९–(ए०, बी०) तोहि। २०–(ए०, बी०) रे। २१–(ए०, बी०, म०) ×। २२–(ए०, बी०) ताकरि। २३–(म०) करेहु; (ए०) करहि; (बी०) करहि हम। २४–(ए०, बी०, म०) पुरखन्ह। २५–(म०) कै। २६– (बी०) जे किछु; (ए०, म०)×। २७–(म०) हम सौं; (ए०) हम कँह; (बी०) हम पहिं। २८–(दि०) ×।

टिप्पणी—(१) बार–समय; वक्त।

(७) टेव–टेक; आन। मेंटि–मिटा।

२७३

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

तैं[१] न सुनाँ जो बरिस सेवाती। एक एक बूँद अमिय कै जाती ॥१
जइसैं[२] संग रहै[३] गुन सोई[४]। साँप क[५] मुँह[६] र[७] परत[८] बिख[९] होई ॥२
उहै[१०] बूँद सीपीं[११] गजमोती। निरमल[१२] होई[१३] अधिक वह[१४] जोती ॥३
उहै कपूर उदैगिरि[१५] होई। अधिक वास बिरसै सब कोइ ॥४
फुरहिं[१६] नीक हमकहँ तुम्ह[१७] कीन्हा। भल कर[१८] मन्द अगरिंह[१९] हम चीन्हा॥५
अब र[२०] कहो[२१] मँह सेउँ[२२] फिरि कै[२३], किहँ[२४] धरि मारों तोहि ।६
कै र[२५] सिखर कै सायर पुहुमीं[२६], मन रूचत[२७] कहु मोहि ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर, प्रतियाँ।

१–(बी०) त। २–(ए०,बी०) जैसे। ३–(ए०,बी०) रे होय; (म०) बसै। ४–(म०) है कोई। ५–(म०,बी०) के। ६–(ए०) मुहें; (बी०) मुख। ७–(ए०) रे; (म०)×। ८–(बी०) अंब्रित। ९– (बी०) विष। १०–(ए०) उहीं; (बी०) वहै। ११–(ए०, म०) सीप; (बी०) सिपिहँ। १२–(म०) अधिक। १३–(ए०,बी०) होय। १४–(ए०) सो; (बी०) तेहि; (म०) तिह। १५–(ए०) अदीपर; (बी०) उदयवर; (म०) चोआदेइ। १६–(बी०) फुरहु। १७–(बी०) तैं हम कहूँ; (ए०) मोहि कँह

तोह । १८-(बी०) फुरकै । १९-(म०) करतहिं; (बी०) करहि; २०-(म०,बी०) रे। २१-(ए०,बी०) कहहु; (म०) कहु । २२-(म०) दहुँ मोसेउ; (ए०,बी०) दहुँ मोहि सों । २३-(ए०,बी०,म०) × । २४-(ए०) केहि: (बी०) कह । २५-(म०,ए०) रे; (बी०) × । २६-(ए०) × । (बी०) तुम्हैं । २७-(ए०) रुचित; (बी०) रुच ।

टिप्पणी—(१) सेवाती—स्वाती नक्षत्र ।

(५) **अगरिंह**—आगे ही; पहले ही । चीन्हा-पहचाना ।

(६) **धरि**—पकड़ कर ।

(७) **सिखर**—सिखर; पहाड़ीकी चोटी । **सायर**—सागर । **पुहुमी**—पृथ्वी; धरती । **रुचत**—पसन्द ।

२७४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कुँवर बूझि अपने मन देखा । उलटा कहहुँ[1] इहसों[2] सो सरेखा[3] ॥१
पाथर मार बेग जिह मरों[4] । पानीं मँहि दुख मरवहि डरों[5] ॥२
हँसा कहिसि इन[6] काहे[7] न मींता[8] । पाथर हनौं[9] होइ तोर[10] चीता[11] ॥३
अब तोहि पानीं माँझ अडारों । दुख कर[12] मरहु[13] यें र[14] बिधि मारों ॥४
जहाँ मन्छ मँगर घरियारा । तोर[15] खाँहि[16] दुख होहि[17] अपारा ॥५
लिहिसि उतारि काँध सौं[18] वरके,[19] धरि र[20] फिराइसि पाँउ[21] ।६
दिहिसि उतार सँमुद खारी मँह, जो भावइ[22] सो खाउ[23] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०, म०) कहों । २-(म०) × । ३-(म०) सोइ सरेखा; (बी०) र हिस सुसरेखा । ४- (बी०) जिन्ह मारउँ; (म०) मराओं । ५- (बी०) मरिबेहि डारउँ (म०) पान माँहि देखि डराओं । ६-(बी०) अनु । ७-(बी० म०) काहा । ८-(म०) मन्ता । ९-(म०) हनेउँ; (बी०) हन्यो । १०-(म०) तुर; (बी०) तरा ।११-(बी०) चिन्ता । १२-(म०, बी०) कै । १३-(बी०) मरहि । १४-(म०) यहि; (बी०) इहि रे । १५-(बी०) तोहि रे । १६-(म०) खाहहिं । १७-(म०) होइ; (बी०) होय । १८-(म०) सेउ; (बी०) स्यो । १९-(म०) × । २०-(बी०, ए०) × । २१-(बी०) पाँव । २२-(म०) जो र भाउ; (बी०) जो भावै । २३- (बी०) खाव ।

टिप्पणी—(१) सरेखा– श्रेष्ठ; उचित ।

(३) **चीता**–मन चाहा ।

(४) **अडारो**–(क्रि० अडारना) फेकना; गिराना । हेमचन्द्र (पासद्द० ४।३१) के अनुसार संस्कृत क्षिपका एक धात्वादेश अड्डुक है । अतः वासुदेवशरण अग्रवालका अनुमान है कि यह उसीसे निकला है (अडार>अडार) ।

(५) **मन्छ**–मछली । **घरियारा**-घड़ियाल ।

(६) **फिराइसि**–घुमाया ।

२७५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

चला अडाइ[1] लौटि न हेरा। यें र[2] नाँव सँवर[3] विधि केरा ॥१
एकंकार[4] अलख करतारा[5]। जस तैं बिकरम राउ[6] उबारा[7] ॥२
जस र जलन्धर[8] कुएँ[9] उडारा। अँतर न रखा[10] तूँ[11] अधारा[12] ॥३
हौं सकबन्धहि[13] पौन अधारी। विनु[14] अधार विधि लेहु उबारी ॥४
कहत मया बिधि आइ तुलानी[15]। तिह[16] ठाँ परेउ[17] अलप[18] हुत पानी ॥५
जैं उवर[19] सिरपाल[20] कर[21], मँह[22] यह[23] वड़ भयउ[24] बिछोह ।६
बहु पछताव कियै[25] कर[26] बरजा,[27] औ मिरगावति छोह[28] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) लड़ाई। २–(म०) कुँवर; (बी०) एहि रे। ३–(म०) सँवरा; (बी०) सौंरा। ४– (म०) एक उँकार; (बी०) एककर। ५–(म०) करतारू। ६– (म०) बिकरम राय। ७–(म०) उबारू। ८–(बी०, म०) जलमधर। ९–(बी०, म०) कुवाँ। १०–(ए०) नहिं राखेव। ११–(ए०, म०) तैं। १२–(बी०) अँतरहि गा पवन अधारा। १३–(म०) सकबन्धौं; (बी०) सकबंधौ न। १४–(ए०) बिनहिं; (बी०) मोहि; (म०) मुहि। १५–(बी०) तोलानी। १६–(बी०) तेहि। १७–(बी०) परयो; (म०) परेउँ। १८–(बी०) अलत। १९–(म०) उबरा; (बी०) उबरे। २०–(म०) सिरपालहिं; रस पालहिं। २१-२२–(म०, बी०) × । २३–(बी०, म०) दुख। २४–(बी०) भयो। २५–(बी०, म०) × । २६–(म०) करै। २७–(बी०) बरजा कर। २८–(म०) और मिरगावति कर मोह; (बी०) और मिरगावती मोह।

टिप्पणी—(१) अडाइ–गिराकर।
(२) एककार–एक ओंकार।
(३) अलप अल्प; थोड़ा; हुत–था।

२७६

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

पानी पानी चहूँ दिसि सूझा। मग अमग[1] न जाई[2] बूझा ॥१
सूरज[3] गिरिबन[4] होइ[5] थल[6] जाई। सवति[7] कै[8] रूप रैन होइ[9] आई ॥२
रैन डरावन[10] चहुँ दिसि पानी। लहर[11] आउ[12] डर[13] जियहिं[14] सुखानी ॥३
बहु दुख भार परेउ[15] सिर आई। जीउ र[16] कठिन अब[17] निकसि न जाई ॥४
विधि कर[18] लिखा न जानै कोई। कै वह सुख कै यह दुख होई ॥५
रहतहिं[19] एक सथ[20], बोलत बोल बिछोही[21] ।६
अब सपनैं[22] भेंट, दई दिखाउ त[23] देखी[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) मगु अमगु। २–(म०)जाइ नहिं; (बी०,ए०) जाय नहिं। ३–(ए०,बी०, म०) सूर। ४–(ए०) कुरुव; (बी०) कर तपत। ५–(म०) ×; (ए०) मै रे; (बी०) होय। ६–(म०) अस्थल। ७–(ए०, बी०) सुस। ८–(म०) क। ९–(ए०) रैनि होय। १०–(ए०,बी०) डरावनि। ११–(ए०,बी०) लहरि। १२–(ए०,बी०) आव। १३–(ए०) बड़। १४–(ए०,बी०)जीभ। १५–(ए०,बी०)परेव। १६–(ए०,बी०) रे। १७–(बी०) अति। १८–(ए०) कै। १९–(ए०) रहतेहि; (बी०) रहत अहे। २०–(म०, बी०) साथ; (ए०) समीप। २१–(ए०) बिछोहिये; (बी०) बिछोह दिया। २२–(बी०) सपनै बर; (ए०) अब जौ भेंट; (म०) सपने मैं। २३–(ए०) देअ देखाव तो; (बी०) देइव देखाव तो। २४–(बी०) देखिये।

टिप्पणी—(२) सवति–सौत।

२७७

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कुँवरहिं इहाँ[१] परेउ[२] दुख भारी। उहाँ[३] आगि उर उठी[४] जो नारी[५] ॥१
कहिसि[६] सखी[७] सेंउ[८] सुनहु न बाता। सुख महँ दुख र[९] उठेउ[१०] कछु[११] गाता ॥२
जो तुम्ह[१२] कहहु तो र[१३] घर जाऊँ। भरम उठै[१४] जिउ आह न ठाऊँ ॥३
पुरुख जात बरजा न कराई[१५]। ओवरी[१६] जनि[१७] र[१८] उघारै जाई ॥४
जाइ देहु मोर जिउ भरमाँनाँ। अन्त रहै[१९] पछताउ निदाना ॥५
जाइ देहु र[२०] सहेलिंह[२१] घर कँह,[२२] मोर जीउ धसि धसि जाइ ॥६
ततखन[२३] चेरि[२४] पुकारति[२५] रोवति,[२६] धाई[२७] विकली[२८] आइ ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(म०) उहाँ; (बी०)उहाँ रे। २–(ए०) परेव। ३–(ए०,बी०,म०) इहाँ ४–(ए०) उठै। ५–(बी०) उटी उर नारी। ६–(बी०) कही। ७–(बी०) सखिन। ८–(म०) सो; (ए०, बी०) सौं। ९–(ए०, बी०) ×। १०–(ए०, बी०) उठेव; (म०) उठी। ११–(म०) ×; (ए०, बी०) हम। १२–(ए०) तोह। १३–(ए०) रे; (बी०) ×। १४–(ए०, बी०) उठा। १५–(बी०) नहिं करै। १६–(म०, ए०) उबरी। १७–(ए०) जनु। १८–(ए०) रे; (बी०) ×। १९–(म०,बी०) रहहिं। २०–(ए०,बी०) ×। २१–(ए०,बी०) सखि। २२–(म०) ×। २३–(बी०) तेहि खन; (ए०) बिच खन। २४–(बी०) चेरी; (ए०) चीर। २५–(ए०) बिकारत। २६–(ए०) ×। २७–(म०) ×। २८–(बी०) बिलखी।

टिप्पणी—(३) **भरम**–भ्रम; सन्देह।
(५) **भरमाना**–उद्विग्न। **पछताप**–पश्चाताप।
(६) **धसि-धसि**–बैठा।
(८) **ततखन**–तत्काल। **धाई**–दासी। **बिकली**–परेशान।

२७८

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कहसि रानि[१] तुम्ह बैठहु[२] काहा। सूरहि[३] लै[४] र[५] उड़ायउ[६] राहा[७] ॥१
सुनतहि[८] यह[९] वै[१०] चकित भूली[११]। देखत रही आउ[१२] न[१३] बोली ॥२
घरी एक ऊपर[१४] समुझाई। कहसि चेरि तैं का कहि[१५] आई ॥३
चेरी कहा दुदिस्टिल हरा। कबिरा दानौं कै अपकरा[१६] ॥४
सुनतहि जइस[१७] रे[१८] पिंगलहि[१९] कीन्हा। भयउ[२०] चाह ततखन जिउ दीन्हा ॥५
हँस रहा किह[२१] कारन घट मँह[२२], पिउ बिहरेउ[२३] सर सुक्ख[२४] ।६
हा कुठिल[२५] बिरहानल कै[२६] छल[२७], जानहु[२८] पतंग[२९] झरुक्ख[३०] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(ए०, बी०) रानी। २-(ए०) बैठेउ; (म०) वैठि। ३-(ए०, बी०) सुरही। ४-(ए०) लेअ। ५-(ए०,बी०,म०) रे। ६-(ए०,बी०) उड़ानेव। ७-(ए०) काहा। ८-(ए०) सुनत। ९-(ए०) बात; (म०) फिरी (अथवा बहुरी)। १०-(ए०) वोह; (म०) X। ११-(बी०) सुन तेहि रही जनौ चक्रित भूली। १२-(ए०) आव; (बी०) और। १३-(बी०) नहिं। १४-(बी०) पर। १५-(ए०) का कहै। १६-(ए०) उपकरा; (बी०) गै पकरा। १७-(ए०, बी०) सुनतेहि जस। १८-(म०, ए०, बी०) X। १९-(ए०) पिंगलै; (बी०) पिंगला। २०-(म०) उहो; (ए०,बी०) एहौ। २१-(ए०, बी०) केहि। २२-(ए०) मा। २३-(ए०, बी०) बिहरा। २४-(ए०, बी०) सरसक्क। २५-(ए०, बी०) हाकल; (म०) X। २६-(म०) कठिन; (बी०) X। (ए०) खेलन। २७-(ए०, बी०, म०) X। २८-(म०) भानु। २९-(म०) पवन; (ए०) पंक; (बी०) पंख।

टिप्पणी—(३) समुझाई—समुझ आई। का—क्या।
(४) अपकरा—अपकार।

२७९

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

गहि गहि हँस[१] काढ़ि न जाई। पाँख जरै[२] नहिं जाइ[३] उड़ाई[४] ॥१
रोवइ[५] कहै काह सुख[६] करौं[७]। आनि देहु बिस खात[८] जो मरौं ॥२
तोरि तोरि केस पलेटै[९] हाथा। किह[१०] अवगुन[११] हम बिछरेउ[१२] साथा ॥३
ऊभै[१३] होइ धरि[१४] लेइ[१५] पछारा। मरै चाह वहि[१६] दई[१७] उबारा ॥४
सखी सहेलीं धरहिं कर हाथा। रानि[१८] समुझि बिधि मिरियहिं[१९] साथा ॥५
जस र[२०] सिय[२१] कहँ[२२] दिन दस[दुखपरा][२३], राँम क[२४] भयउ[२५] बियोग ।६
वस[२६] र[२७] भयउ[२८] तुम्ह[२९] कलजुग, सो[३०] मिरियहिं फुनि जोग[३१] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) निकसि। २-(ए०, म०) जरी। ३-(म०) उचाई; (ए०, बी०)

जाय। ४-(ए०) अगाई। ५-(ए०) रोवै; (बी०) रोइ रोइ। ६-(ए०) सुखि; (बी०) सखि। ७-(ए०,बी०) करऊँ। ८-(म०, ए०) खाय। ९-(ए० बी०,म०) पलटै। १०-(ए०, बी०) केहि। ११-(ए० बी०) औगुन। १२-(ए०, बी०) बिहरा। १३-(म०) ऊभो; (ए०) ऊभी; (बी०) ऊभि। १४-(म०) होइधन; (बी०) होइधर; (ए०) खरभरि। १५-(बी०) खाइ; (ए०) लेए। १६- (ए०) उहि। १७-(ए०) दैअ; (बी०) दइव। १८-(ए०, बी०) रानी। १९-(बी०) मेरई; (म०) मरिबहि; (ए०) मरबै। २०-(म०,ए०,बी०) रे। २१-(ए०) सीय; (बी०) अर्जुन। २२-(बी०) कै। २३-(दि०, ए०) द्वापर; (म०) ×। २४-(बी०) रामहिं; (ए०) ×। २५-(ए०, बी०) भयेव। २६-(ए०) उस। २७-(ए०, बी०, म०) रे। २८-(ए०) भयेव; (बी०) भयो। २९-(ए०) आइ तोह। ३०-(म०) सेउ; (बी०) सिव। ३१-(बी०) मेरवहिं सँजोग; (ए०) मेरइहि जोग।

टिप्पणी—(१) **पाँख**—पंख।

(३) **पलेटे**—फेकै। **अवगुन**—अवगुण; अपराध।

(४) **ऊभै**—(क्री० ऊभना) उछलै।

(५) **मिरियहिं**—मिलावेंगे।

२८०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर;)

रोवइ[1] कर मलि मलि पछताई[2]। आवइँ[3] नैन पूरि झरि लाई ॥१
घन बरसहिं बहु[4] कहीं[5] न जाई। परलो जइस[6] रहा जग छाई ॥२
गंग तरंग भये[7] ईहँ[8] पानीं। और सलिला[9] र[10] अलप बड़वानी ॥३
पावस उघरि उघरि बरसाई। नैन न[11] उघरहिं झरि न घटाई[12] ॥४
सूर क[13] तपैं घटैं जग पानीं। लोचन भरे सुभर अतिवानीं ॥५
कुतुबन तूँ तो गँभीरा[15], अति रस के अतिवन्त[16] ।६
सुअर नैंन न सूखैं[17] जल भरि भरि आवन्त[18] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(ए०, बी०) रोवै। २-(ए०, बी०) पछिताई। ३-(ए०, बी०) उनये। ४-(बी०) अति। ५-(ए०, बी०) कहै। ६-(ए०) जैस; (बी०) जस। ७-(ए०) भई। ८-(ए०,बी०) एहि। ९-(ए०) सलिलो से; (बी०) सलोल। १०-(ए०,बी०) ×। ११- बी०) नैननि। १२-(ए०) झरहिं घनाई; (बी०) झर न घुटाई। १३-(ए०,बी०) के। (ए०,बी०) तेंव ते गम्भीर। १६-(बी०) सर सूखेउ अनिवन्त (ए०) सर सुकेउ नवन्त। १७-(ए०) सूखहिं नहिं एक खिन; (बी०) सूखहिं। १८-(बी०) उनंत।

टिप्पणी(१) झरि–झड़ी।

(२) परलो–प्रलय।

(३) अलप–अल्प; थोड़ी। बड़वानी–विशाल।

(४) उघरि उघरि–रुक रुककर।

२८१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

यह र[1] बात घर घर[2] बहिराई[3]। उठा अकूत[4] नगर अकुलाई[5] ॥१
आपुहि आपु न कोउ[6] सँभारा[7]। घर घर नगरी परा खभारा ॥२
नगर काहु अन पानि न भावा[8]। मिरगावति[9] निसि रोइ[10] बिहावा[11] ॥३
दिन भा रैनि गई अँधियारी। रोवत पचत मरत[12] **दुख भारी ॥४**
कहिसि कहाँ सुधि पावों[13] नाहाँ। को र[14] करै[15] हम ऊपर छाहाँ ॥५
पिय[16] वियोग भौ[17] सकती बान, जो लागेउ[18] मुहि[19] र[20] अपूर ।६
को आनै हनिवंत[21] जिउँ[22], सजन[23] सजीवन[24] मूर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) रे। २–(ए०) खर। ३–(ए०) भरि आई; (बी०) फिरि आई। ४–(ए०) अकोत; (बी०) अकुताइ। ५–(बी०) कुललाई। ६–(ए०) कोई। ७–(बी०) बाप पूत धिय मन सँभारा। ८– (ए०, बी०) खावा। ९–(ए०, बी०) मिरगावती। १०–(ए०, बी०) राय। ११–(ए०) पोहावा। १२–(ए०) मरना। १३–(बी०) पाऊँ। १४–(ए०, बी०) रे। १५–(बी०) करहि। १६–(बी०) जस। १७–(ए०, बी०) भा। १८–(ए०) लागेव; (बी०) लेइउ। १९–२०–(ए०, बी०) ×। २१–(ए०, बी०) हनिवंत वीर। २२–(ए०, बी०) जेव। २३–(ए०) साजन; (बी०) सजनी। २४–(ए०) साँचेव; (बी०) जीवन।

टिप्पणी—(१) बहिराई–फैली। अकूत–अपार।

(२) खभारा–खलबली।

(३) अन्न पानी–अन्नपानी; खाना-पीना। बिहावा–बिताया।

(६) भौ–हुआ। **सकती बान**–शक्ति बाण; वह बाण जिसके लगनेसे लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये थे। अपूर–गहरा।

(७) हनिवंत–हनुमान। सजन–स्वजन; प्रिय। सजीवन मूर–सजीवनी बूटी जिससे लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर हुई थी।

२८२

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

रोवत नैनहि दिस्टि[1] घटानी[2]। को र राम मिरवइ[3] सिय[4] आनी ॥१

को नल आनि दमावति[5] पासा। मरौं वियोग उरध[6] हम साँसा ॥२
को मिरवइ[7] सारस[8] संग जोरी। कै सराप दै लीन्ह[9] अजोरी ॥३
सखीं[10] कहा रानी का रोवहु। मांगि[11] पानि बैसि[12] मुख धोवहु ॥४
चलउ चहूँ दिसि ढूँढहि[13] जाई। दानौं कँह लै जाइ[14] पराई ॥५
यह र कहत मिरगावति[15] सुनिकै[16], बैठी[17] समुझि सँभार[18]।६
साहन[19] बोलि कीन्हि[20] अस[21] अज्ञा, चहुँ दिसि लागु गुहार[22] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) द्रिस्टि। २-(ए०, बी०) खुटानी। ३-(ए०, बी०) मेरवै। ४-(बी०) सियहिं। ५-(बी०) आनै दमावती; (ए०) को तोलान दमावती। ६-(ए०) आध; (बी०) रामबीग अधिक। ७-(ए०, बी०) मिरवै। ८-(ए०) सारद; (बी०) सारंग। ९-(बी०) लिहा। १०-(ए०, बी०) सखिन्ह। ११-(ए०) मागहु; (बी०) माँगहि। १२-(बी०) बैठि। १३-(ए०) ढूँढ़त। १४-(ए०, बी०) जाय। १५-(ए०, बी०) मिरगावती। १६-(ए०) × । १७-(ए०) बैठेव। १८-(ए०, बी०) सँभारि। १९-(बी०) सानन्ह। २०-(ए०) कीन्हे; (बी०) कहिसि। २१-(ए०) उस; (बी०) यह। २२-(ए०, बी०) लाग गोहार।

टिप्पणी—(२) दमावति—दमयन्ती; राजा नलकी पत्नी। उरध—उर्ध्व; उल्टी साँस।
(३) सराप—शाप।
(५) दानौं—दानव।
(७) साहन—दूत। गुहार—खोज।

२८३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आपु आपु कँह ढूँढै धाई[1]। रानी ढूँढहि करै उँफाई[2] ॥१
ढूँढहि[3] परबत अउर[4] पहारा। जल थल महइर[5] बन[6] जो[7] अभारा ॥२
डंडाकारन[8] बीछ बनाहाँ[9]। जोगी[10] भेस ढूँढ व[हि*][11] नाहाँ ॥३
जस र बिहंगम पूछत डोलै। पिउ कित[12] गेला[13] अउर[14] न[15] बोलै ॥४
मन दोमन[16] झुरवइ[17] बिकरारा। मुख पण्डुर[18] कर पा न सँभारा ॥५
बिधि ये[19] दिन कित[20] निमये[21], जिंह[22] हम पिउ बिहरान।६
ई बिधि आखर मेटेंहु[23], नाँहुत[24] जाहिं[25] परान ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) जाई। २-(ए०) अभाई; (बी०) अपनाई। ३-(ए०, बी०) ढूँढइ। ४-(बी०) और; (ए०) अरुन। ५-(बी०) महि। ६-(बी०) बनखँड। ७-(बी०) × । ८-(बी०) डंडकरन। ९-(ए०) बीझ बनाहा; (बी०) बिझ बनाहू।

१०-(ए०, बी०) जोगिनि। ११-(ए०) उइ; (बी०) तेहि। १२-(ए०, बी०) कतै। १३-(ए०, बी०) गा। १४-(ए०,बी०) और। १५-(बी०) नहिं। १६-(ए०, बी०) दुमन। १७ (ए०) चेहुरा; (बी०) चिहुर। १८-(ए०, बी०) पण्डर। १९-(ए०) ओहि; (बी०) यह। २०-(ए०, बी०) कत। २१-(ए०) निमयेव; (बी०) निरमयेव। २२-(बी०) जेहि; (ए०) नेही। २३-(बी०) अबहूँ बिबघर मेटियो; (ए०) अबहूँ बेखर भीत दै। २४-(ए०, बी०) नहि तौ। २५-(बी०) तजौं।

टिप्पणी--(१) **उँफाई**—उपाय।

(२) **पहारा**—पहाड़।

(३) **डंडकारन**—दण्डकारण्य। **बीछ**—बीच।

(४) **जस**—की तरह। **बिहंगम**—पक्षी। **डोलै**—फिरै। **पिउ**—पी। **कित**—किधर। **गेला**—गया।

(५) **कर पा**—हाथ-पैर।

(६) **निमये**—निर्माण किया। **बिहरान**—बिछुड़ गया।

(७) **नाँहुत**—नहीं तो।

२८४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

चलै परान टेकि नहिं जाई। को बिलँबाउ[1] खिनक[2] बौराई॥१
गयेउ[3] सुहाग भयउँ[4] अब राँडा। जीँह[5] दसन सेंउ[6] चाहसि[7] खाँडा॥२
ततखन धाइ[8] जनाँ इक[9] आवा। राकस कहिसि धरै वह पावा॥३
जीँह[10] जो खांडे चाहति अहीं। हाथ सँकोरि समुँझ कै रहीं॥४
कहिसि काह[11] बिन पूछें[12] मराऊँ[13]। जो कछु[14] भयउ[15] तौं[16] चिय[17] रचि[18] जराऊँ[19]॥५
देवहि लागि जनाँ सौ दोइ एक[20], लै आयहिं[21] घिसियाइ।६
जस र[22] चाँट[23] बड़ भुनगा[24], भार उचाइ न जाइ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(म०) को बिलँवावइ; (बी०) कोंइल नावै; (ए०) कोइल बाउ। २-(बी०) ज्यौं खिन। ३-(बी०) गयो; ४-(बी०) भयो। ५-(बी०) जीभ। ६-(बी०) से। ७-(बी०) चाहै। ८-(बी०) धाय। ९-(म०, बी०) यह। १०-(बी०) जीभ। ११-(बी०) का। १२-(म०, बी०) पूछै बिनु। १३-(म०, बी०) मरों। १४-(बी०) किछु। १५-(म०) होइ; (बी०) भवा। १६-(म०, बी०) ×। १७-(म०) चीव। १८-(बी०) रची। १९-(म०, बी०) जरों। २०-(म०, बी०) ×। २१-(म०) आयउ; (बी०) आयो। २२-(बी०) रे। २३-(म०) चाँटहि; (बी०) चाँदी। २४-(बी०) फँनिगा ऐंचत।

टिप्पणी—(१) **टेकि**—रोक। **बिलँबाउ**—भुलाने की चेष्टा करे। **खिनक**—क्षणमें।
(२) **राँडा**—राँड; विधवा। **जीँह**—जीभ। **दसन**—दाँत। **खाँडा**—काटना।
(३) **ततखन**—तत्क्षण। **धाइ**—दौड़कर। **जनाँ**—व्यक्ति। **धरै**—पकड़ा।
(४) **सँकोर**—संकोच; रोक।
(५) **चिय**—चिता।
(६) **घिसियाइ**—घसीटकर।
(७) **चाँट**—चींटा। **भुनगा**—कीड़ा। **भार**—वजन। **उचाइ**—उठा।

२८५

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

पूछैं लाग न बकतै बाता। तेल अवटि[1] कै छिरकहिं[2] गाता ॥१
पौन बाँधि मुँह चुप कै रहा[3]। जस बनमानुस बकत न कहा[4] ॥२
जस गूँगा बाउर[5] बउराई[6]। बकत न जाइ[7] जीँह[8] लपटाई ॥३
जो कछु बकत तो कहै [कुभासा*][9]। नाँहुत[10] मूँद रहै मुँह[11] साँसा ॥४
बहुत कहहिं यहि मार पबारी[12]। बहुतै कहहिं चियँ रचिकै[13] जारी[14]॥५
अउरहि[15] कहा न मारै[16] यहकहँ[17], भरिये[18] चरी[19] तिरकूट।६
अवहुत[20] बजर जो हो[21] इक ठाँ[22], तो न यह[23] बँदि[24] छूट ॥७

पाठान्तर–एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) औटि। २–(म०) छिरकै; (बी०) छिरकावहिं। ३–(म०) पौन बाँधि मुनि होइ के रहा; (ए०) मौन बाँधि मुनि होए के रही; (बी०) मौन बाँधि कै मुनि होइ रहा। ४–(ए०) चही। ५–(बी०) बौरा। ६–(ए०, बी०) बौराई। ७–(म०) आउ; (ए०, बी०) जाय। ८–(ए०, बी०) जीभ। ९–(दि०) कुबासा; (ए०, बी०) कबासा। १०–(ए०) नाहीं तो; (बी०) नाहिं न। ११–(ए०,म०,बी०) मन। १२–(ए०, बी०) पवारी। १३–(ए०) ×। १४–(म०) पूर्वांश की पुनरुक्ति; (बी०) बहुतैं कहैं चीरि चीरि जारियै। १५–(ए०, बी०) औरन्ह। १६–(ए०,बी०) भारी। १७–(ए०, बी०, म०) ×। १८–(ए०, बी०) बहुरि। १९–(ए०, बी०) चढै। २०–(बी०) अहुट अहुट जउ होइ एक ठाई; (ए०) अहुट वज्र जो होहिं एकठाँ। २२–(म०) तोउ न; (ए०, बी०) तौहु न यहि। २४–(ए०, बी०) बन्दी।

टिप्पणी—(१) **अवटि**—खौलाकर। **छिरकहिं**—छिड़कते हैं। **गाता**—शरीर।
(२) **पौन**—पवन।
(५) **पबारी**—(क्रि० पबारना) नष्ट कर दो। **चियँ**–चिता।
(६) **भरिये**—बन्द कीजिये। **चरी**–गुफा। **तिरकूट**—त्रिकूट।

२८६

(दिल्ली; एकडला; मनेर;[1] बीकानेर)

जब बलि बावन बाँधि अडारा। कैसहु छूट[1] न[2] रहे पतारा ॥१
मिरगावती कहा[3] यहि[4] जारों। यहि कै[5] जात जहाँ लग[6] पारौं[7] ॥२
जस र[8] जलमदेउ साँप[9] पबारी[10]। सबै आन[11] हुतासन जारी ॥३
बाप क[12] बैर[13] जस[14] र[15] वै[16] लीन्हाँ[17]। तस हौं[18] करौं होइ[19] हम चीन्हा ॥४
बहुरि कहिसि इँह[20] अइसहिं[21] जारों। तुरत न[22] मरै बहु[23] दुख सेंउ मारों[24] ॥५
बाँधन जस चाहहु काठ[26], सँकती [जरहु][27] कर पाउ[28]।६
बजर[29] काँठ[30] अस[31] घालहु, इँह[32] जग[33] जैसैं[34] उघर[35] न काउ ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(दि०) झौन (ते के स्थान पर स्पष्ट नून है)। २-(बी०) नहि छूटै। ३-(ए०, बी०) कहै ; (म०) कहि। ४-(म०) यहि ऐसैं। ५-(ए०, बी०, म०) की। ६-(म०, ए०) लहि ; (बी०) तहाँ लौं। ७-(म०, बी०) मारौं। ८-(बी०) रे ; (म०, ए०) ×। ९-(ए०, बी०) जलमदेव। १०-(ए०, बी०) विभारी। ११-(म०) चिंउ रचि सबै; (ए०) जग रचि सबै; (बी०) जगत जहु रचि सबै। १२-(ए०) पारख; (बी०) परीखस। १३-(बी०) राजैं। १४-(ए०) जैस। १५-(म०) रे; (ए०, बी०) ×। १६-(ए०) उए; (बी०) वोहि। १७-(म०, ए०, बी०) कीन्हा। १७-(ए०) मैं। १९-(ए०, बी०) होय। २०-(ए०) ओहि; (बी०) एहि। २१-(ब०) अइसैं; (ए०) औ सय; (बी०) ऐसन। २२-(म०, ए०) ×। २३-(म०) ओहि। २४-(ए०) से। २५-(बी०) तुरित न मरौ दुख कै इहि मारौं। २६-(म०) बाँधहु जस र कहा तुम्ह; (ए०) बाँधहु जसरे जानहु करहु तोह; (बी०) बाँधहु जाइ जसरे तुम्ह जानहु।२७-(दि०) जस; (ए०) सुगढ़ जरे। २८-(ए०, बी०) पाँव। २९-(बी०) वज्र। ३०-(ए०, बी०) गाँठि। ३१-(बी०) तस। ३२-(बी०) एहि; (म०)×। ३३-(म०)×। ३४-(ए०) जी ओ। ३५-(बी०) छूट; (ए०) उघरै।

टिप्पणी—(१) **पतारा**—पाताल।

(२) **जारों**—जलाऊँ। **जात**—जाति। **पारौं**—पाऊँ।

(३) **जलमदेउ**—जनमेजय। **पबारी**—विनाश किया। **आन**—लाकर। **हुतासन**—अग्नि।

(७) **घालहु**—डालो। **उघर**—निकल।

१—इस प्रति में पंक्ति ३ और ४ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

२८७

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कर पाछेउँ[1] कर[2] हथकरि[3] बाही। सँकती[4] लाग किंह[5] अब जाही[6] ॥१
सिंकरी[7] गेरि[8] पाँव उन्ह[9] बाँधे। पाउँ[10] बाँधि मेलहि[11] वह[12] काँधे ॥२
भैंसहि[13] केर चाम जो आनाँ। लाग[14] पलेटै तो अकुताना ॥३
कहिसि कहाँ जो छाड़हु मोही। कहहिं कहसि तौ छाड़हु तोही ॥४
उन्ह मँह एक[15] कहा कित[16] जाई। छाड़ि देहु मकुहिं[17] कहाई ॥५
पाव छोर बैसावहिं[18], देवहि[19] फुसलावइ बोराइ।६
जो र[21] साँच फुर बोलसि[22] हमसेउँ, छाड़ देहि बहिराइ[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(म०) पाछों; (ए०, बी०) पाछू। २-(म०) लै; (ए०) कै। ३-(म०, ए०) हथकरी; (बी०) हथकर। ४-(ए०) सीखै। ५-(बी०) कहै। ६-(बी०) चाही। ७-(बी०) सकरी। ८-(ए०, बी०) लै रे। ९-(म०) पावँहि। १०-(ए०, बी०) पाव। ११-(म०, ए०) मेले; (बी०) मेलिन्ह। १२-(ए०, बी०, म०) उहिं। १३-(ए०, बी०) भैसन्ह। १४-(बी०) लागे। १५-(ए०, बी०) छाँडहि। १६-(बी०) ×। १७-(ए०, बी०) कत। १८-(म०) मकु करै; (ए०) मकुरे; (बी०) मकु कुरहिं। १९-(ए०, बी०) बैसारिन्हि। २०-(ए०) ×। २१-(म०) तूँ; (बी०) तैं। २२-(ए०) जो तौ साज भोरै निसि। २३-(म०, ए०, बी०) ×। २४-(ए०) बिहराय; (बी०) बिगराय।

टिप्पणी—(१) पाछेउँ-पीछे। हथकरि-हथकड़ी। बाही-डाली। सँकती-सख्ती; कठोर व्यवहार।

(२) सिंकरी-जंजीर। गेरि-डालकर।

(३) केर-का। चाम-चमड़ा। लाग-लागे। अकुताना-व्याकुल हुआ।

२८८

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कहसि कुँवर मैं इँहवहिं[1] छाड़ा। हौं रे भागि परेउँ इक[2] गाड़ा[3] ॥१
कुँवर कछु[4] र[5] नहि कीन्हि[6] मँदाई। हौं कस उन्ह[7] लै जाँउ बोराई[8] ॥२
बहु फुसलावहिं ना र[9] पसोजा। पाथर[10] कठिन पानि[11] न भीजा[12] ॥३
कैसो[13] बरसो[14] हरा न जामाँ[15]। वहु बौराइ रही वह रामाँ[16] ॥४
बाँधै[17] जो र[18] कहै कँह[19] कहई[20]। छाड़ै[21] तो र[22] अवाँक[23] होइ रहई ॥५
ताकर हिरदो [वज्रकै][24], कैसहुँ छाड़[25] न रोस।६
हिरद करेज[26] न जाइ मुँहि[27], तिह अवगुन न दोस[28] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(म०) इँहों; (बी०) उँहइ। २-(म०) यक; (बी०) एक। ३-(बी०) खाँडा। ४-(म०) कछू; (बी०) दहु किछु। ५-(म०) ×। ६-(बी०) किई। ७-(बी०) उन्हहि। ८-(म०, बी०) उड़ाई। ९-(म०) नाहिं; (बी०) नाहिं रे। १० (बी०) पथरहु। ११-(बी०) बान। १२-(बी०) बेझा। १३-(ए०) गयो। १४-(म०) बरसै। १५-(बी०) कैसे बरीस हरन जाई। १६-(बी०) बहु फुसलाइ रहै बौराई। १७-(म०, बी०) बाँधहि। १८-(म०, बी०) रे। १९-(म०) को; (बी०) मकु। २०-(म०) हई (?)। २१-(बी०) छाड़ि देहि। २२-(म०, बी०) ×। २३-(बी०) अवाग। २४-(बी०) दोइसै (?) (बी०) तीखर दई हिंदै रोइ यह। २५-(बी०) छाँड़ै। २६-(म०) करेस। २७-(म०) जामै; (बी०) हरेउ जो कुलीसन भय मोही। २८-(ए०) पिय कहँ अवगुन दोस; (बी०) की औगुन दोस।

टिप्पणी—(१) **इँहवहि**—यहीं। **गाड़ा**—गड्ढा।

(२) **ना**—नहीं। **पाथर**—पत्थर। **भीजा**—भीगा।

(३) **कैसो**—किसी भी प्रकार। **बरसो**—बरसै। **जामाँ**—जमै। **रामाँ**—रमणी।

(४) **अवँक**—अवाक्; मूक।

२८९

(दिल्ली; एकडला; मनेर;[१] बीकानेर)

चौदह विद्या भोज निदानाँ। बररुचि एक अधिक यह[१] जाना[२] ॥१
राजैं हार धरै कहँ दीन्हा। लै र[३] छुपायसि[४] दइ न[५] चीन्हा ॥२
धरसि तहाँ[६] जो र[७] बखाना। राइ[८] कोप बूझि नहिं मानाँ[९] ॥३
तस ई[१०] धरी[११] न[१२] मानै काऊ। अँगइसि सबै जिय कन[१३] चाऊ[१४] ॥४
बाँधि बहुरि उन्ह[१६] चाम लपेटा। करै[१७] गुहार[१८] जस[१९] सुवरि क घेंटा ॥५
घाल अस कै खलरी[२०] भीतर[२१], मूद[२२] बजर कै [दीन्ह[२३]] ॥६
दई[२४] पुहुमि जो सैंतहि[२५] आपुन[२६], तौ लोगहि[२७] उन्ह[२८] कीन्ह ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(म०) नहिं; (बी०) ×। २-(बी०) सयाना। ३-(ए०, बी०, म०) रे। (बी०, ए०) छपाइसि। ५-(ए०, बी०) नहिं। ६-(ए०) न चहे (?)। ७-(बी०) लै जीव। ८-(दि०) नाँइ (?)। ९-(ए०) न वै एको पूछै भैए माना; (बी०) नैन कप पूछै नहि माना। १०-(ए०) अे; (बी०) यह। ११-(ए०, बी०, म०) धरा। १२-(बी०) नहिं। १३-(म०) कै; (बी०) कीनि। १४-(बी०) ×। १५-(ए०, बी०) जाऊ। १६-(ए०) उठ। १७-(बी०, म०) कर; (ए०) करा। १८-(ए०, बी०) गोहारि। १९-(म०) जैस। २०-(ए०, बी०, म०) कोठी। २१-(ए०, म०) ×। २२-(बी०) मूँदिसि। २३-(दि०) लीन्ह। २४-(म०, बी०) देव;

१. इस प्रतिमें पंक्ति ३, ४ और ५ क्रमशः ४, ५, ३ हैं।

(ए०) दैय । २५-(म०) होहिंह । २६-(बी०) पुन; (ए०, म०) × । २७-(म०, ए०, बी०) तौलहिं । २८-(बी०) × ।

टिप्पणी--(१) **निदानाँ**—निपुण ।

(२) **चीन्हा**—चिन्ह ।

(५) **चाम**—चमड़ा । **गुहार**—पुकार । **जस**—जैसे । **सुवरि क बेंटा**—सूअर का बच्चा ।

(६) **घाल**—डालकर । **खलरी**—चमड़ा ।

(७) **सैंतहिं**—सुपुर्द करते हैं ।

२९०

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

वहि तो बाँधि पठायउ[1] काँऊँ[2] । ढूँढउ[3] इहाँ तिह[4] आनौं[5] ठाऊँ ॥१
मिरगावती[6] कहै[7] का[8] करऊँ । सग चाह कोउ[9] कहै[10] त[11] चढ़ऊँ[12] ॥२
जो कोउ[13] कहै कि[14] आहि पतारा । हनिवँत जैस करौं उपकारा ॥३
लंक[15] टेक कर[16] रोवइ[17] ठाढ़ी । काह करौं जिउ जाइ[18] न काढ़ी ॥४
[सोंक सूख*] सिर धुन रोवइ[19] । साँरंगि-नैनि[20] रुधिर[21] मुँह[22] धोवइ॥५
पिव वियोग धनि[23] भूली, इँह[24] बर[25] चीर सीस न[26] सँभार ।६
बेनी जानु[27] उरगहि[28], कष्ट न[29] कहैं[30] मँजूर पुकार ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(म०) पठावइ; (ए०, बी०) पठाइन्ह । २-(ए०, बी०) गाऊँ । ३-(ए०,बी०) ढूँढ़हि । ४-(ए०) तो; (बी०) एहि । ५-(ए०, बी०) अनवन । ६-(म०) मिरगावति । ७-(म०) कहहि । ८-(बी०) सखि । ९-(ए०, बी०, म०) कोइ । १०-(म०) × । ११-(म०) तिंह; (ए०, बी०) तो । १२-(म०) चढौं । १३-(म०) को । १४-(म०) किंह; (ए०, बी०) की । १५-(ए०,म०,बी०) डार । १६-(ए०) कै; (बी०) कर टेकि । १७-(म०) रोये; (ए०,बी०) रोवै । १८-(ए०,बी०) जाय । १९-(बी०) सुसर कंठ सु (?) सर रोवै । २०-(ए०, बी०) सारंग नैन । २१-(ए०) रुहिर; (बी०) रोइ; (म०) रोहि । २२-(ए०) मुख । २३-(ए०,बी०) धन । २४-(ए०, बी०, म०) × । २५-(म०) न सीस; (ए०) सीस चीर न । २७-(ए०, बी०) जानों । २८-(बी०) उरगिहिं । २९-(बी०) कीन्ह; (ए०, म०) × । ३०-(बी०) अहि; (म०) कहतैं ।

टिप्पणी—(३) **पतारा**—पाताल ।

(५) **सारंगि-नैनि**—मृगनयनी ।

(६) **धनि**—स्त्री ।

(७) **उरग**—सर्प । **मँजूर**—मयूर; मोर ।

२९१

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कुहुक उठी जनु[1] पंचम बोली। सुनत[2] सबद पावस रितु[3] डोली ॥१
बिहरत अधर भँवर[4] गँध पाई। कँवल किहाँ[5] लागेउ[6] रस आई[7] ॥२
धुमकर डसि[8] बिरहिन अकुलानी[9]। ई[10] र[11] अवस्था[12] तुरत[13] भुलानी ॥३
आइ[14] अखार[15] अम्मर गहिराना[16]। पवन[17] आहा[18] उन्ह[19] आवत[20] जानाँ ॥४
पवन सँदेसा लेहि ले चल[21] भँवर गुन। मालत यह र[22] अवस्था कहियहु[23] तुम बिन[24] ॥५
जप माला कै नाँउँ[25], जिह[26] जिउ रहे।६
निसि बासर बिब तस[27], पिउ गुन हिय[28] दहै[29] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) जनि; (बी०) जनौ। २–(ए०) संप। ३–(बी०) रित; (ए०) रबि। ४–(ए०) भौर। ५–(ए०) धानि। ६–(ए०) लागेव। ७–(बी०) लागी।। ८–(बी०) दसन; (म०) दंस; (ए०) डस। ९–(बी०) अकुलानी। १०–(ए०) ओहि; (म०, बी०) यहि। ११-(ए०, बी०, म०) ×। १२–(ए०) अवसर। १३–(ए०, बी०) तरुनि। १४–(बी०) उये; (ए०) उनै। १५–(ए०) अखर; (बी०) अकर। १६–(बी० ए०) घहराना। १७–(ए०, बी०) पौन। १८–(बी०) आइ; (ए०) आह; (म०) उठा। १९–(बी०, ए०) उन; (म०) तिंह। २०–(ए०, बी०) और न। २१–(ए०, म०) लै रे चला; (बी०) सुनसि न मोरा। २२–(ए०) ओहरे। २३–(ए०) कहे न। २४–(म०) यह अर्धाली नहीं है; (बी०) बन मालती बिरहे मोहि तोरा। २५–(ए०, बी०) नाव; (म०) नाँव तुम। २६–(म०) जपथहिं; (बी०) जपतेहि; (ए०) जावथिर। २७–(म०) तैसहिं; (ए०) बिन तिसि; (बी०) तीसहु। २८–(बी०) छिदै। २९–(ए०, बी०) डहै।

टिप्पणी—(२) किहाँ—के पास।

(३) डसि—दंश।

(४) अखार—आषाढ़। अम्मर—अम्बर।

२९२

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

पवन सँदेसा लै र[1] उड़ाई। ढूँढि भँवर कहँ[2] लीनसि[3] जाई ॥१
देखत भँवर बिपत बड़ परी। बाँधेउ[4] भँवर कँवल कै करी ॥२
भँवर लुबुध तो[5] कँवलहिं[6] आवइ[7]। यह र[8] अवस्था करम बँधावइ[9] ॥३
पवन भँवर सँउ[10] कहेउ[11] सँदेसा। जो र[12] अहा[13] मालति कर भेसा ॥४
मालति[14] नाँउ[15] सुनत[16] जिउ[17] पावा। रोइ दिहिसि मन घबरावा[18] ॥५

बिबिरेता केउ न जानै[१९], दुहुँ चित एकै रत ।६
मालति मन मधुकर बसै, मधुकर मन मालत ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(म०, बी०) रे। २–(बी०) कहु। ३–(बी०) लीतिसि। ४–(म०, बी०) बाँधिसि। ५–(बी०) × । ७–(म०) कँवल कहँ। ७–(बी०) आवै। ८–(बी०, म०) रे। ९–(बी०) बँधावै। १०–(म०, बी०) सों। ११–(बी०) कह्यो। १२–(बी०) रे। १३–(म०) इहाँ; (दि०) आहा। १४–(बी०) मालती। १५–(बी०) नाव। १६–(बी०) सुनी। १७–(बी०) जिव। १८–(बी०) जिउ गहबरि आवा। १९–(म०) बिबि र उचाता किमि जानै; (बी०) बिबि राते किमि जानि नहि।

टिप्पणी—(१) लीनसि–लिया।
(२) करी–कली।
(६) केउ–कोई।

२९३

(दिल्ली; बीकानेर)

तुम्ह बिन ज्ञियँ चैन न[१] लेखा। सिन्दुर[२] सेत माँग मैं देखा ॥१
काजल[३] रात चन्दन भौ[४] ताता। सबै अवस्था कहिसि वहि[५] गाता ॥२
अति बियोग बिकली[६] बहु दूखी[७]। भँवर पाछ मालति पुनि सूखी[८] ॥३
तौं[९] चाह वहि कोउ न कहई[१०]। ऊभि सांस[११] लै मरि मरि रहई[१२] ॥४
कहिसि देउ[१३] हौं तहाँ अडारा। कै सायर कै आह[१४] अकारा ॥५
किह सँदेस कहि पठवउँ, को र बिपत कहि जाय[१५] ।६
सायर[१६] अगम अगोचर, तिह[१७] [ठाँउ पंखी][१८] न आइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–बिनु जिउ जीवन नहिं। २–सेंदुर। ३–काजर। ४–भव। ५–कियै वोहि। ६–बरकुली। ७–दुखी। ८–भँवर बाजु मालती बन सूखी। ९–तेहि। १०–केउ न कहाई। ११–ऊभि ऊभि। १२–जाई। १३–देव। १४–अही। १५–कहै संदेसा किहि पठऊँ पास न कोई, बिपति कहै को जाइ। १६–साइर। १६–तेहि। १८–(दि०) ठिक नाँउँ।

टिप्पणी—(१) सेत–श्वेत।
(२) रात–रक्त; लाल। भौ–हुआ। ताता–गर्म। गाता–शरीर।
(३) पाछ–पीछे।
(५) अकारा–आकार।

२९४

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

आज[1] सुदिन यह[2] आइ तुलाना। करम हमार दई[3] तिह[4] आनाँ ॥१
नाँहुत[5] को र कहत सुधि जाई। यह[6] कहहु[7] जस देखहु आई ॥२
काह सँदेस देउँ वहि[8] भागी। बरजा किये उँ[9] न रहेउँ[10] सँभारी ॥३
जाइ कहेहु[11] जस दई[12] कहावा[13]। काह कहौं कछु कहे न आवा[14] ॥४
सुनि र[15] पवन[16] यह[17] चलेउ[18] सँदेसा। गयउ[19] जहाँ मालति वह[20] भेसा ॥५
अति र[21] बियोग बियापी रामाँ, बिसभँर कछू[22] न सँभार[23] ।६
लाइ नैन दुइ मारग[24] राखिसि[25], भूली पन्थ निहार ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) आजु। २–(बी०) मोर। ३–(ए०) दैअ। ४–(ए०, बी०) तोहि। ५–(ए०) नाहिं तौ; (बी०) नाहिन। ६–(बी०) यहइ। ७–(ए०, बी०) कहेहु। ८–(ए०, बी०) उहि। ९–(ए०) किएव; (बी०) कियो। १०–(ए०, बी०) रहेव। ११–(बी०) किहिसि। १२–(ए०) दैअ; (बी०) दइव। १३–(बी०) कहावै। १४–(बी०) आवै। १५–(ए०, बी०) रे। १६–(ए०, बी०) पौन। १७–(बी०) लै। १८–(बी०) चला। १९–(ए०, बी०) गएव। २०–(ए०) उहि; (बी०) कर। २१– (म०, बी०, ए०) रे। २२–(ए०) कुछु। २३–(बी०) अति रे वियोग व्याकुली पीरम भूली, चीर न सीस सँभार। २४–(ए०) ×। २५–(म०) राखी; (बी०) राखिसि मारग।

टिप्पणी—(१) **तुलानाँ**–निकट आया। **करम**–कर्म, भाग्य। **हमार**–मेरा।
(२) **नाँहुत**–नहीं तो।
(३) **बरजा**–वर्जित कार्य।
(६) **रामाँ**–रमणी।

२९५

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

पौन आइ[1] मालति सों कहा। भँवरहिं[2] विपति कँवल महँ गहा[3] ॥१
सुरजन[4] सूर उदैगिरि[5] आई। दुरजन रैनि भँवर[6] दुख जाई ॥२
सुनतहि[7] चाह बिपति गै भागी। सम्पति आइ[8] गात सुख[10] लागी ॥३
कहिसि[11] बेगि[12] चलु[13] पवन[14] सुहाई[15]। देखौं नैनहिं[16] जाहिं सिराई[17] ॥४
(सिरवै[18]) अमिय सान्त होइ गाता। सेंदुर सेत भयउ[19] सुनि[20] राता[21] ॥५
आनि[22] सजीवनमूर तुम्ह[23], महि[24] दीन्हों[25] अहिवात ।६
परान घटहिं घट राखहु[26], नाँहुत[27] अब न रहात ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) आए। २–(ए०, बी०) मालती। ३–(ए०) भौंरहि; (म०) भौंर। ४–(म०) आहा; (बी०) मँवरा कली कँवल की गहा। ५–(ए०, बी०) सुरिजन। ६–(ए०, बी०) उदैकर। ७–(ए०) भौंर; (बी०) भौंरे। ८–(ए०, बी०) सुनतेहि। ९–(ए०, बी०) आए। १०–(बी०) सख। ११–(ए०) ×। १२–(ए०) खन एक। १३–(ए०) चली; (बी०) चल। १४–(ए०) पौन। १५–(ए०, बी०) सोहाई। १६–(म०, ए०, बी०) लोचन। १७–(ए०, बी०) सेराई। १८–(दि०) सनवै। १९–(ए०) भयेव; (बी०) भयो। २०–(ए०) तब। २१–(म०) निराता। २२–(बी०) आनिसि। २३–(बी०) तुम; (ए०) अमिय सींचेव मोहि तोह। २४–(ए०) तोह; (म०) ×; (बी०) मोहि। २५–(ए०) दीन्हेव; (बी०) दियेहु। २६–(म०) परान घट न राखें; (ए०) परान घटत घट जाई; (बी०) प्रान घट घट राखेहु निसरता। २७–(ए०) नहीं तौ; (बी०) नाँहि तौ।

टिप्पणी--(३) गै–गया।

(४) सिराई–तृप्त।

(५) सिरवै–सराबोर हो। सेंदुर–सिन्दूर। सेत–श्वेत। राता–रक्त, लाल।

(६) सजीवन मूर–संजीवन मूल। (यहाँ रामायण-वर्णित हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण के प्राण बचाने की ओर संकेत है।) महि–मुझे। अहिवात–सुहाग; पति का अस्तित्व।

(१) रहात–रहत।

२९६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चला पौन मालति सँग लाई। भँवर आहा[१] जिह निह[२] लै जाई॥१
मालति[३] सूर कियेउ[४] परगासा। भँवर[५] छूट भयउ[६] कँवल[७] बिगासा॥२
लोचन चार होत मिलि जाहीं। जस पानी मँह बूँद समाँहीं॥३
दोइ[८] न[९] रहे एक[१०] भो[११] गाता। वहि वह[१२]रात[१३]वह र वहि[१४] राता॥४
घरी एक ऊपर[१५] बिहराने। तब[१६]लगि काहूँ न[१७] दोइ कर[१८] जाने॥५
जिउ जिउ एक परान घट[१९], देखौं बूझि समत्त[२०]।
पसरीं पुरई[२१] पिरित कै[२२], छाइ रहे दुहूँ गत्त[२३]॥

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०,बी०) अहा। २–(ए०) जेहि ठाँ; (बी०) तेहि ठाँ;। ३–(ए०, बी०) मालती। ४–(ए०, बी०) कियेव। ५– (ए०, बी०) भौंर। ६–(ए०, बी०) भौ। ७–(बी०) कमल। ८– (ए०, बी०) दुइ। ९–(बी०) ना। १०–(ए०) एकै। ११–(बी०) भै। १२–(ए०) उहि उवह; (बी०) वह वोहि। १३–(बी०) राता। १४–(ए०)

उहि; (बी०) वोह वहि। १५–(बी०) घरी चारि पर। १६–(ए०) तौ। १७–(बी०) नहिं। १८–(ए०, बी०) रे दुइ। १९–(ए०) घट रहै; (बी०) एकै प्रान गति एकै। २०–(ए०) समथ; (बी०) समाँत। २१–(ए०) पुरइनि; (बी०) पुरइन। २२–(ए०) पिरीति की; (बी०) प्रीति की। २३–(ए०) गाथ; (बी०) गात।

टिप्पणी—(२) बिगासा–विकास।
(३) लोयन–लोचन।
(४) भो–हुआ।
(५) घरी–घड़ी।

२९७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बहुरि[1] बिपति कै[2] बकतहिं बाता। जो र[3] अवस्था परी हुत[4] गाता॥१
सुनत नीर लोचन भरि आये। सरिल[5] चुवहिं जस मोंति[6] सुहाये॥२
बिहरन[7] आखर लिहैं[8] न चलहीं[9]। तीनि लोक जो र[10] सब मिलहीं॥३
जो कोउ झाँखि[11] अवटि[12] पचि मरई। बिध रूचत[13] आपन[14] पै करई॥४
कहहिं[15] चलहु आपु घर कँह[16] जाहीं। बहुरि जाइ[17] रस केलि कराहीं॥५
चले दोउ[18] जन रहसत[19] घर[20] कँह, नौ र भयउ[21] औतार।६
नगर रहा हुत[22] निसि होइ[23] कारी, बहुरि[24] भयउ[25] उजियार॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) बउरी। २–(ए०, बी०) की। ३–(ए०, बी०) रे। ४–(ए०, बी०) हुतो। ५–(ए०) सलिल। ६–(ए०, बी०) मोती। ७–(बी०) फिरना। ८–(बी०) लिख न। ९–(बी०) चहहि। १०–(ए०, बी०) रे। ११–(ए०, बी०) झाँखि। १२–(ए०, बी०) औटि। १३–(बी०) रूचता। १४-(ए०) आपन रूचता। १५–(ए०, बी०) कहिन्हि। १६–(बी०) कहुँ। १७–(ए०) जाए; (बी०) जाय। १८–(ए०, बी०) दुऔ। १९–(बी०) रहसत चले दुवौ जन। २०–(ए०) ×। २१–(ए०) रे भयव; (बी०) रे भयेव। २१–(बी०) जो होत रहा। २२–(बी०) जो होत रहा। २३–(ए०, बी०) भै। २४–(बी०) फुनि रे। २५–(ए०, बी०) भएव।

टिप्पणी—(४) **झाँखि**–संताप करके। **अवटि**–अभिलाषा करके; इच्छा करके। **पचि**–पश्चात्ताप करके। **बिध**–ब्रह्मा; सृष्टि कर्ता। **रुचत**–अच्छा लगता है। **आपन**–अपने को। **पै**–किन्तु; लेकिन।
(६) **नौ**–नया।

२९८

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

नगर लोग सब आगे[1] आए[2]। बाजन बाजे लाग सोहाए[3] ॥१
बाजत आइ[4] नगर मँह पैठे[5]। नौ कै पाट[6] सिंघासन बैठे[7] ॥२
बैठि[8] सिंघासन दरब लुटावा। राँकहिं[9] न दारिद बहुरि[10] सतावा ॥३
दइके[11] कुँवर गयउ[12] बतसारा[13]। मिरगावति गै करी[14] सिंगारा ॥४
कय[15] जो[16] सिंगार कुँवर पहँ[17] आई। देखि बिमोहेउ[18] कछु[19] न कहाई[20] ॥५
संझा बन्दन निस भरन[21] पियहि पलटेउ[22] दाउ[23] ।६
रविसुत सारथि मन बसेउ[24], तब[25] बढ़ेउ[26] अनुराउ[27] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, म०) आगे सब। २–(बी०) नगर लोग मिलि आगे धावा। ३–(बी०) बधावा। ४–(ए०) आए। ५–(बी०) पैठा। ६–(बी०) राज। ७–(बी०) बैठा। ८–(बी०) बैठ। ९–(ए०) राँक; (बी०) राकन्ह। १०–(ए०,बी०) दारिद बहुरि न। ११–(ए०) अै के; (बी०) दै कै। १२–(ए०) गएउ; (बी०) गयो। १३–(ए०, बी०) पटसारा। १४–(बी०) कियेव; (म०) कियेउ; (ए०) करै। १५–(ए०, बी०) कै। १६–(बी०) जु। १७–(म०) गै। १८–(ए०) बिमोही; (बी०) बिमोह। १९–(ए०, बी०) कुछ। २०–(बी०) कहइ न जाई। २१–(बी०) अभरन। २२–(ए०, बी०) पलटेव। २३–(बी०) दाँव। २४–(म०) बसे; (ए०, बी०) बसेव। २५–(ए०) तुरत; (बी०) त। २६–(ए०) बढ़े; (बी०) बढ़ेव। २७–(बी०) अनुराव।

टिप्पणी—(३) दरब–द्रव्य, धन। राँकहिं–रंकों को; दरिद्रों को। दारिद–दरिद्रता।
(४) बतसारा–बैठक।
(५) कय–करके।
(६) संझा–सन्ध्या। पलटेउ–पलट दिया। दाउ–बाजी।

२९९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

अनग **कवन गुन आई पिउ आसा[1]। रावन कनक लंका हम बासा ॥१**
लंक सहल[2] बन्धो हम सेतीं[3]। औ[4] साँभर आहहिं जग जेती[5] ॥२
(पण्डो पति) सुत देहि न मोही। ऊभि रहौं कहि[7] जाँउ न छोही[8] ॥३
मंदिर वेदन सुनहि नहि वाता। बीरा तिंह[10] सुत लेहि निराता ॥४
रविसुत सारथि उर न समाई। जिंह[11] औगुन पिय रहेउ[12] लुकाई[13] ॥५
रावन कनक आह तुम्ह पासहिं, औ साँभर[14] नख साँस ।६
लंक सहल[15] बन्धो फुनि, आहि[16] पाप देखि तुम्ह पास ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) विवासा। २–(बी०) सो लाइ; (ए०) सैल। ३–(बी०) बन्ध (ए०) बन्धु। ४–(बी०) तेती; (ए०) सुने। ५–(बी०) और। ६–(बी०) जेतने। ७–(बी०) की। ८–(बी०) बिछोही। ९–(बी०) मनु बँदन। १०–(बी०) बैरट ही; (म०) बीरापति। ११–(बी०) तेहि। १२–(बी०) रहेउ; (म०) रहँहि। १३–(म०, बी०) रिसाई। १४–(म०) सँभर; (बी०) सँभरि। १५–(म०, बी०) सैल। १६–(म०, बी०) आहहिं।

३००

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कूप[1] नीर जिंह[2] काढ़ो[3] नारी[4]। ते तुम्ह सेंउ बहुतै असँभारो ॥१
सरबस दइ तुम्ह[5] परेउ भुलाई। पिय पति लेहि[6] बैठि[7] समुझाई ॥२
मोहन बान काम कर लागा[8]। औखद मूरि होहि[9] तो जागा[10] ॥३
सुर मोहहिं नर आहहिं काहा[11]। बसीकरन सिर पालहिं आहा[12] ॥४
हनू[वन्त] मूर सकती कँह आनी[13]। तुम्ह र[14] मूर मोहन निज[15] जानी ॥५
तुम्ह गन्धरवहि[16] चक्कवइ, तु र भौं मुदिरा सार[17]। ६
लोचन जिंह[18] दुव दिष्टि होइ[19], तुम्ह सेउ बरक पुहुमि विकरार[20] ॥७

पाठान्तर--मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) कुआँ। २–(बी०) जेहि। ३–(बी०) काढ़िये। ४–(बी०) बारी। ५–(बी०) बरबस देखि तुम्हैं। ६–(म०) लिह; (बी०) लेहु। ७–(बी०) पियहिं। ८–(बी०) कै लागै। ९–(म०) होइ; (बी०) होय। १०–(बी०) जागै। ११–(बी०) कहा। १२–(म०) यह अर्धाली पंक्ति ५ की पहली अर्धाली के रूप में है। १३–(म०) यह अर्धाली पंक्ति ४ की दूसरी अर्धाली के रूप में है। १४–(बी०) रे। १५–(म०) शब्द अस्पष्ट। १६–(म०) गन गन्धरप। १७–(बी०) तुम्ह गंध पहुँच हुक वैसी, भुअन मुंडसार। १८–(म०) जासों। १९–(बी०) लोयन चहूँ, दुदिस्टिल। २०–(बी०) औ सुर नर फुनि बिकरार; (म०) सुर नर फुनि बिकरार।

टिप्पणी--(२) सरबस–सर्वस्व।

३०१

(दिल्ली; मनेर; बीकनेर)

हँसी कहिसि दीपक[1] सुनु[2] बाता। गयउ[3] उचाइ जाइ[4] जिय माँता[5] ॥१
रामाँ किंह बिधि[6] पियहि उचावइ[7]। मान भाव कर भाव न[8] पावइ ॥२
साखि[9] होहि[10] इँह[11] जूझ[12] उचावउँ[13]। आप अगरग[14] सरसती बुलावउँ[15] ॥३
आइ सुनवाइ[16] दीपक[17] गाई। दीया[18] अगिन[19] बिनु सर[20] जो[21] जराई ॥४

यह र[२२] काम मुरझागति आई । मन्त्र जपसि अगरख[२३] जो बुलाई ॥५
आइ जो दीपक गायसि बिथ सेंउ,[२४] सुनत देह अँगरान[२५] ।६
दिया पठावइ[२६] अस्तुति वहि,[२७] धन धन मद्ध[२८] सुजान ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१– (बी०) दीपग । २–(बी०) सुन । ३–(बी०) क्यों रे । ४–(बी०) जाय । ५–मैंमाता । ६–(बी०) केहि भाँति । ७–(बी०) उचाऊ । ८–(बी०) सावन । ९–(म०) साखी; (बी०) सखी । १०–(बी०) होइ । ११–(म०) आवहि; (बी०) इहि । १२–(म०) जूज़ (जीम, वाव, जीम); (बी०) चोज । १३–(बी०) उचाऊँ । १४–(बी०) अंक रखि । १५–(बी०) बुलाऊँ । १६–(म०) सुनाइ जो; (बी०) सुनाइसि । १७–(बी०) दीपग । १८–(बी०) दीप । १९–(बी०) आगि । २०–(बी०) बिन जो; (म०) बत (बे, ते) सत (सीन, ते) । २१–(बी०) जोरे । २२–(बी०) फिरे; (म०) यह रे । २३–(म०) अगरग । २४–(बी०) सुधि सै । २५–(म०) फिरी सुनत अँगरान; (बी०) सुनत इह रे अँगरान । २६–(बी०) पठावै । २७–(म०) अस्त अस्त । २८–(बी०) मुध ।

३०२

(दिल्ली; एकडला[१]; मनेर; बीकानेर)

अँगरानेउँ **चिन्ता[१] मन[२] आई । उठा कुँवर यह चलेउ[३] कुहाई ॥१**
मान भाव सेउँ[४] चली सुनारी[५] । दौरि कुँवर कर गही पियारी[६] ॥२
कहिसि बिरचि[७] **कस चलहु[८] कुहाई । सुनतहि[९] निरति मुरछा जिह[१०] आई ॥३**
तो देखि जियँ रही न पारा[११] । जीउ तो पँह गा हों[१२] बिसँभारा[१३] ॥४
परेउँ जाइ दँहु कठिन मँझारी । अपै र[१४] पयोहर अति[१५] बल[१६] नारी[१७] ॥५
बहुत चरित[१८] के छूटेउ छँद कै[१९], तो आयउ[२०] मुहि गात ।६
कहेउँ[२१] निरत फिर आपुन[२२], यह अवगुन[२३] यह बात ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(म०) चिन्त; (बी०) चेतना । २–(बी०) ×; (म०) मन मँह । ३ (ए०, बी०) चली । ४–(बी०) के; (ए०) से । ५–(म०, ए०, बी०) सोनारी । ६–(बी०) सुप्यारा । ७–(बी०) विरंचि । ८–(ए०,बी०) चलिहु । ९–(म०,ए०,बी०) सुनहु । १०–(ए०) मन; (बी०,म०) मोहि । ११–(बी०) तोहि देखि मैं रहै न पारौं; (ए०) तोहि देखि जिउ रहै न पारा; (म०) जोहि देलि जिउ गा बिसँभारी । १२–(बी०) हौंगा । १३–(म०, बी०) बिसँभारी; (ए०) काहू न सँभारी । १४–(ए०) × । १५–(ए०) × । १६–(ए०) बलदै; (म०) भल । १७–(बी०) आप आप जो हारि अति लुनाई । १८–(बी०) चरित्र । १९–(म०,ए०,बी०) × । २०–(म०,ए०) हम ।

१—इस प्रतिका फोटो हमें उपलब्ध न हो सका । सम्मेलन संस्करणपर आश्रित ।

२१–(ए०,म०) कहों। २२–(म०) सब आपुन; (ए०) तोहसों; (बी०) सुनहु निरत सब मोरी। २३–(ए०, बी०) औगुन।

टिप्पणी—(१) कुहाई–रूठकर।

३०३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर गहै वहि[1] चाहि[2] छुड़ावा। मान करै नहि नैन मिरावा[3] ॥१
तो यहि बुधि[4] कै कुँवर डराई[5]। कहसि राहु ससि[6] कैं घर आई[7] ॥२
तो र बेगि चलि मँदिर छपाही[8]। ससि[9] कलंक[10] तू निरमर[11] आही ॥३
तिह[12] जो देखि तो[13] वहि[14] न कहाई[15]। वहि र[16] छाँड़ि तिह[17] छाड़ि न जाई ॥४
हँसि[18] कहिसि हम सेंउ[19] चतुराई। कुँवर बूझि मन[20] उर न[21] समाई ॥५
मिरगावति[22] मन ही मन[23] रहसी[24], मिलेउ जो जरम[25] न होइहि भंग ।६
यह मन गाढ़[26] उँहरेउ[27], जो[28] चढ़ै न दूसर[29] रंग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) उवह। २–(बी०) चहै। ३–(बी०, ए०) मिलावा। ४–(ए०) बिधु। ५–(ए०, बी०) डेराई। ६–(ए०) सन। ७–(ए०, बी०) जाई। ८–(ए०) तोरे वेगि जनु मदन छपाई; (बी०) तू रे बेगि चलु मंदिर पाही। ९–(बी०) ससि रे। १०–(ए०) तो। ११–(बी०) निर्मल। १२–(ए०) उह। १३–(ए०) तु। १४–(ए०) उह। १५–(ए०) वहई; (बी०) तोहि देखें तो वहि न गहई। १६–(ए०) उहरे; (बी०) वोहिरे। १७–(ए०) तु; (बी०) तोहि। १८–(ए०, बी०) हँसी। १९–(ए०, बी०) हम से। २०–(ए०) मान। २१–(ए०) उरै; (बी०) उरहिं। २२–(ए०, बी०) मिरगावती। २३–(ए०, बी०, दि०) मन मन ही। २४–(ए०, बी०, दि०) ×। २५–(बी०) जरमहिं। २६–(बी०) कलही। २७–(ए०) उन्ह हरेव; (बी०) उन्हरउ। २८–(ए०, बी०) ×। २९–(ए०) दोसर।

३०४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

यह रंग जरम कुरंग न होई। सात समुँद जो धोवै[1] कोई ॥१
वैसहिं[2] मिली[3] सेज पर आई। ततखन कुँवर गिय लै लाई[4] ॥२
पेम सुरा रस[5] दुउ[6] जन राते। पेम सुरा जुग चार न माते[7] ॥३
इहउ[8] जरम क[9] कवन[10] सँदेहू[11]। रचेउ नेह[12] दुहुँ जग कँह एहू[13] ॥४
बिहर[14] मिले रस केलि कराहीं। अमिय सुफल[15] बिरसहिं वई[16] खाँहीं ॥५

अमिय पयोहर दलमले[१७], अधर घूँट रस लेइ[१८] ।६
नौ सता[१९] सासिवदनी अबला[२०], अस[२१] धन भोग करेइ[२२] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(बी०) धोवै । २–(बी०) वैसेहि । ३–(बी०) मिलि । ४–(म०) ततखन कनक गियें पहिराई; (बी०) टंक न कनक के रे बिहराई । ५–(म०) सँमुद सरिव; (बी०) सुमन सरित । ६–(बी०) दुवौ । ७–(बी०) पेम सुरा दुओ जन माते । ८–(म०) यहे । ९–(बी०, म०) कर । १०–(बी०) कौन । ११–(बी०) सँदेहा । १२–(म०) तिह; (बी०) इनहि । १३–(म०) नेहू; (बी०) कर नेहा । १४–(दि०, बी०) सेज । १५–(बी०) फल । १६–(म०, बी०) सब । १७–(बी०) दलिके । १८–(बी०) सेज रस लेई । १९–(बी०) नौ । २०–(म०) × । २१–(म०) अइस । २२–(म०) कराइ; (बी०) कराय ।

टिप्पणी—(५) बिहर–बिछुड़ ।

(६) **पयोहर**–पयोधर; स्तन ।

(७) **नौ सता**–(नो सात) सोलह; तात्पर्य सोलह कलाओं वाली । **ससिबदनी**–चन्द्रबदनी । **अबला**–स्त्री ।

३०५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

यइ[१] र[२] इँहाँ रस भोग कराहीं । रुपमनि[३] कँह दुख महँ दिन जाहीं[४] ॥१
बरिसा सै बरु निमिख गँवावई[५] । वासर निसि क[६] अन्त किमि पावइ[७] ॥२
अहि निसि पन्थ निहारै बारी । मकुहि[८] चाह कोउ कहै उन्हारी ॥३
करपालो[९] **नित असुवइ[१०] काढ़ै । बिरह सँताप कया तन डाढ़ै ॥४**
काक उड़ावइ[११] पन्थि[१२] जो आई । तिभुवन[१३] कहँ सँदेस लै जाई ॥५
सँदेसा गुन बिस्तरों[१४], जो कोउ कहँहि[१५] समत्थ ।६
कर कौन गढ़ेउ जो मुदरा,[१६] बिवि र समानै हत्थ[१७] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(म०, बी०) ये । २–(बी०) रे । ३–(बी०) रुकमिनि । ४–(म०) रुपमनि कह दिन दुख बड़ जाही । ५–(बी०) बरिसा सै पर नीमख··· । ६–(म०) कँह; (बी०) कर । ७–(म०) न जाई; (बी०) न पावै । ८–(बी०) मकहुँ । ९–(म०) करपलो; (बी०) करपल्लो । १०–(बी०) दिन आँसुइ; (म०) असुवइ दिन । ११–(बी०) उड़ावै । १२–(बी०) पन्थ । १३–(बी०) पन्थी । १४–(म०) बिस्तरेउँ; (बी०) बिस्तर्‌यो । १५–(म०, बी०) कहै । १६–(बी०) अँगुरी कहँ मुदरी गढ़ी; (म०) करवारी कहँ तरक महँ । १७–(म०) बिबि समानी हत्थ; (बी०) सब समानेउ हत्थ ।

टिप्पणी—(२) बरिस सै—सौ बरस। किमि—किस प्रकार।
(३) उन्हारी—उनका।
(४) असुवइ—आँसू। कया—शरीर। डाढ़ै—जलावै।

३०६

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

सूखि सुपारि[1] भयउ[2] विनु नाहाँ। रंग पिय दिपौ और धनि[3] काहाँ ॥१
हौं पिय विन डोलौं जस पानूँ[4]। चून न भयउ चित भाउ न आनू[5] ॥२
बिरिया[6] पहिरि दिखाँऔं[7] काही। चोली गहसि जो खोलहि आहीं[8] ॥३
साउ न[9] पायउँ[10] बीरि[11] जो खाई। पिय पखरोटा[12] गै[13] जो उड़ाई ॥४
विरह सरौता खाँडै किया[14]। माँस[15] न रहा सबै लै गया ॥५
गरह नीक दिन रासिह आवहिं,[16] जाड़ धूप बहु सीउ।६
जिय न जाइ[17] अकेलैं,[18] करहँज काढ़ौं[19] जीउ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।
१–(बी०, म०) सुपारी। २–(बी०) भई। ३–(बी०) धन। ४–(बी०) पान। ५–(बी०) चित मानहिं आना। ६–(बी०) बरया। ७–(बी०) दिखँऊँ। ८–(म०) चोली कसन जो खोलै नाहीं; (बी०) चोली कसन खोल न जो अहा। ९–(म०, बी०) सावन। १०–(बी०) पाय। ११–(म०) बीरी। १२–(बी०) पखरोत। १३–(बी०) गयेउ। १४–(बी०) कवा। १५–(म०) पास; (बी०) बास। १५–(म०) X।; (बी०) गरह बाँके दिन दरसहिं। १६–(बी०) जाय। १७–(बी०) अकेलै अबला। १८–(बी०) काढ़े।

टिप्पणी—(३) बिरिया—चूड़ी।
(४) पखरौटा—पक्षी।
(५) गरह—ग्रह। नीक—अच्छा। सीउ—शीत।

३०७

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

पेडहिं छाड़ि कन्त हम गया। बेल हरी सतवाँरि[1] भइ[2] कया ॥१
काँम केयूर[3] कन्त बिनु जरई। भोजौं[4] नाँह जाइ न मरइ ॥२
नोती[5] ढार कियउ[6] हम नाहाँ। मारौं[7] तन काढौं[8] हिय माहाँ ॥३
का करिहौं जिय विनु[9] लै कया। जिउ लै कन्त बिसारसि मया ॥४
मया बहुत महिं[10] बोलत आहा[11]। जानेउ[12] मैं कि[13] पेम हम गहा ॥५
मैं जानेउ पिय[14] डुब्बि रहेउ,[15] नेहाँ ढब[16] दरक्क।६
लिहेउ तरेंडा कै,[17] तिह चढि गयेउ तरक्क॥७

पाठान्तर—१-(बी०) सुतर; (म०) सरौता। २-(बी०) भई हम। ३-(बी०, म०) कपूर; (बी०) भूजिउ। ५-(म०) टूटी; (बी०) सूती। ६-(बी०) गयेउ। ७-(म०) काढो; (बी०) गाडेंउ। ८-(म०, बी०) मारों। ९-(बी०) बिनु पिय। १०-(बी०) मुँह। ११-(बी०) अहा। १२-(बी०) जान्यों। १३- (बी०) मकु रे; (म०) मैं रे। १४-(दि०) ×। १५-(बी०) दुवि रह। १६-(बी०) नेह दहल। १७-(बी०) लहेउ तरेंड कुबैन; (म०) लहो तरेडा को बैन।

३०८

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कया बिरिख बिरहैं दौं जारा। छाँह[1] गये जर भयहु अँगारा[2] ॥१
तिह[3] लग[4] पंखि बिरिख जो आहे। छाड़ि परान[5] कोउ न[6] रहे ॥२
गयउ[7] अनन्द पुछारि[8] के भेसा। सुआ हरख जिह[9] हरियर केसा ॥३
चाउ चित[10] चतुरोख[11] उड़ाना। रहसि परेवा छाड़ि पराना ॥४
कुरला[12] कोड वहीं[13] नहिं रहा। बिरह आगि[14] तन तरुवर दहा[15] ॥५
गयउ[16] अनन्द हरख आहा[17] जो,[18] चाउ[19] रहस औ कोड।६
रहेउ सँताप सेज दुख भारी,[20] बिरह बियोग न जोड़[21] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रति।

१-(ए०, म०) जहाँ। २-(ए०, बी०, म०) सो कारा। ३-(ए०) तेहि। ४-(बी०) थल कर। ५-(ए०) छाड़ेव। ६-(बी०) न एकौ; (ए०) कोउ नहिं। ७-(ए०) कियेव; (बी०) गयेव। ८-(ए०) बुझार। ९-(म०) जो। १०-(म०) चित्र। ११-(बी०) चितरोख; (ए०) मोरपंखी। १२-(बी०) कील; (ए०) करला। १३-(म०) उहो; (ए०) ओहौ। १४-(बी०) अगिन। १५-(ए०) डहा। १६-(ए०, बी०) गयेव। १७-(ए०, म०, बी०) चित। १८-(म०, बी०) ×। १९-(ए०, बी०) चाव। २०-(बी०) भरि; (ए०, म०) ×। २१-(ए०) मोड़; (बी०) छोर।

टिप्पणी—(१) दौं-अग्नि।
(३) पुछारि-मयूर।
(४) परेवा-कबूतर।

३०९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

दुख भुजइल[1] होइ[2] रहे न[3] जाई[4]। कोयल होइ सँताप जिउ खाई[5] ॥१
काकरूद बिरहा होइ रहा। होइ भिंगराज[6] बियोग[7] जो दहा ॥२

ये[८] कितघ्न जरत[९] उड़ाने । वै र[१०] करत[११] सुधि[१२] रहै सयाने ॥३
पंखिम छाड़[१३] बहीर हमारी । मया करहु[१४] फुनि रूपमरारी ॥४
दिन एक आउ बहहि[१५] जो कोई । तरुवर[१६] छाँह बहुरि घन होई ॥५
जो तरुवर दौं र[१७] दहेउ,[१८] पंखिम छाड़[१९] बहीर ।६
बहहि जो कोई पवन बिधि, होइहि छाँह गँभीर ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(बी०) भुलै लहिं । २–(बी०) × । ३–(बी०) ना । ४–(म०) पेड़हिं छाड़ कन्ता हम गया (कड़वक ३०७ की पंक्ति १ की पुनरुक्ति) । (म०) बेलहरी सो आना भइ लिया । ६–(म०) भुजंग; (बी०) भगराज । ७–(बी०) बीग । ८–(म०, ए०) वैरे; (बी०) वै । ९–(बी) दौं जरत । १०–(म०, ए०) ऐ । ११–(बी०) क्रित । १२–(बी०) सुध जो । १३–(म०) छाड़हि; (बी०) छाड़हु । १४–(बी०) करिहि । १५–(बी०) बाव बहिहि; (म०) बहि । १६–(बी०) तरुवन । १७–(म०, बी०) × । १८–(बी०) दधिये । ८९–(बी०, म०) छाड़हु ।

टिप्पणी—(१) भुजइल-सर्प ।

३१०

(दिल्ली;[१] मनेर; बीकानेर)

जो तरुवर फुनि होइहि[१] छाहीं । लाख करहु जो बहुरि फल आहीं[२] ॥१
सुनिकै फरा[३] जो आयहि[४] चाही । किमिकै मुख दसराइह[५] ताही ॥२
बाँके देवस जो छाड़ पराई । सो फुनि मुख दरसाइह[६] आई ॥३
गयउ निकर[७] फर खायहि वहि केरा । छायहि तिह[८] फुनि[९] करहि[१०] बसेरा ॥४
लाज न आवइ पंखि[११] उन्हाहीं[१२] । बैठि[१३] छाँह बहुरि फर खाँहीं ॥५
दवाँ ददेरीं जियकै,[१४] बहलिया[१५] सुनि आवन्त ।६
ते पंखी तिह[१६] तरुवरहिं[१७], किमि कर मुख जोवन्त[१८] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(बी०) फिरि । २-(बी०) लागिहि करह बहुरि फर ताहीं । ३–(बी०, म०) फर । ४–(बी०) आवहि । ५–(बी०) दरिसावहि । ६–(बी०) दरिसावै । ७–(म०) कर; (बी०) किमिकर । ८–(बी०) डार बैठि । ९–(म०) फिर । १०–

१—इस प्रतिके मार्जिनमें निम्नलिखित चार पंक्तियाँ हैं जो पक्ति ६–७ के क्रममें कुण्डलियाँका रूप धारण करती हैं । स्पष्टतः ये प्रक्षिप्त हैं ।

किमि कर मुख जोवन्त, किमि क भर लोचन देखहिं ।
जो मुक्ती राजन्त बरु जिह, सुनिके ते भजहिं ॥
विपति छाड़ेउ नहीं मैमन्त, सम्पत के बेरीं ।
बेगि नहिं फटेउ हिय, कै जिय दवाँ दरेरीं ॥

(बी०) करै। ११-(बी०) पाँखिन्ह। १२-(म०) उन्हाँई; (बी०) काही। १३-(बी०) बैठहि। १४-(बी०) दवना डरप रे जिय गये। १५-(बी०) फर। १६-(म०) तस। १७-(बी०) ते तरवर ते पंखी। १८-(म०) दरसावन्त।

टिप्पणी—(३) बाँके-अच्छे।

३११

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

चाउ तो जाइ हमँहि सिराई[1]। निसि बासर[2] दुख खिनक न जाई ॥१
बाँभन पण्डित पूछइ[3] बारी। निति कनसुई पठावइ[4] नारी ॥२
नैन बरुनि दिन मारग बाढ़ै। एक एक साँस सौ सौ दुख काढ़ै ॥३
हियँ समुझि समुझावै जीऊ। कथा[5] न समुझै चाहै पीऊ ॥४
मारग पन्थ निहारै ठाढ़ी। बिरह सँताप हियँ दौं डाढ़ी ॥५
ऊभैं[6] होइ[7] मग जोवइ[8] बाला, खिनखिन बारम्बार[9]।६
जिमि जल कूपहिं बिछुरे, रोवइ धारहिं धार[10] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) जाव जु जाई हम सिर आई। २-(बी०) बासुर। ३-(बी०) पूछै। ४-(बी०) पठावै। ५-(बी०) गुन। ६-(बी०) ऊभि। ७-(म०) ×। ८-(बी०) जोवै। ९-(बी०) बाँह पसार। १०(बी०) धरनी धार।

टिप्पणी—(५) डाढ़ी-जली।

३१२

(दिल्ली; एकडला)

अमरबेल चित भयउ बियोगू। सूख गयउ तरुवर बड़ भोगू[1] ॥१
माली चींत मूँगे अँवराई[2]। दिन दिन अमरबेल[3] अधिकाई ॥२
पसरी बेल रूख कुँबलानाँ। गयेउ सूख[4] रहेउ न पाना ॥३
बिपति परी जो भयउ बिछोहू। जिह दिन पिय छाड़ेंउ मन मोहू ॥४
सम्पति अहै[5] जो कन्त मिलाई। कै को[6] चाह कहै पिय[7] आई ॥५
सुखिये[8] सम्पति पिय मिलन, बिपत बिछुड़न[9] बियोग। ६
सम्पति बिपति जो हम कहैं[10], अउर कहउ कछु लोग ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति-

१-सोगू। २-चीत मगु अमराई। ३-अमर। ४-तोरि। ५-यहि। ६-कोइ। ७-लै। ८-सखी अे। ९-बिचल। १०-कही।

३१३

(दिल्ली)

सम्पति बिपति उहौ फिर आही । और कहूँ एक बूझहि ताही ॥१
पूछहि सखी कहहु सो काही । यह सेउ अधिक आह र कछु नाही ॥२
यह सेउ अधिक गँहन औ आऊ । आउ वहै जो बिछुर नहिं पाऊ ॥३
कठिन बियोग जिह र दिन होई । हम यह कहा अउर कहो कछु कोई ॥४
हम चित भये गियान घटाई । अउर खोज काकहि कछु जाई ॥५
कठिन जीवन पै मिलन, कठिन न चद न वियोग ।६
हम चित मै गियान है, अउर कहो कछु लोग ॥७

३१४

(दिल्ली)

यह सेउ अउर न आह जो कहई । कहै जाई तो अवँक न रहई ॥१
तुम्ह पिय बान दुबउ फिर कहही । इन्ह बियोग अधिक अउर न अहही ॥२
लेबरी फिरी न जिउ आही । सो गयउ जिय बास न जाई ॥ ३
धार अकार गा तुम्ह पीऊ । पाउ न वैस तिरी यह सेऊ ॥४
सखी र सगुन ना होइ पिउ आही । रहेउ छाइ पिउ बगतों र काही ॥५
सारे अंग समाइ न मारे, पंचवान सर लाग ।६
जग जोबन दोइ पंथ बियापहि, दोइ लै अहै जो भाग ॥७

टिप्पणी—(१) अवँक–अवाक् ।

३१५

(दिल्ली)

जोग जाउ हम पै किंह कीन्हा । सरपसात हिय पिंजर लीन्हा ॥१
घर कै दिपक उजारेउ नाहाँ । ऊ र बसायसि पिंजर माहाँ ॥२
पागेउ हिया दोउ दिसि काँची । दोइ पै रहैं जो बेदन साँची ॥३
सूरज तपै कँवल दिन जरै । पति बिनु सुरुज रैन जस करै ॥४
वदन सूख साँवर होइ रहा । दिनयर सब कँवल कर गहा ॥५
सूर न कँवल निकराई, होइह कुल कर हानि ।६
जोबन कया तिह जान दइ, तूँ जनि छाढ़हु कानि ॥७

टिप्पणी—(५) साँवर—साँवला; काला । दिनयर–दिनकर, सूर्य ।

३१६

(दिल्ली)

साईं बसत आउ हम पासा । सर दहीं अब निकसै साँसा ॥१
जीउ अव आइ अधर होइ रहा । सर निकन्दी दिन र हम दहा ॥२
करब काह लै मुएँ जो आवइ । जियतैं बिलँबहि गिय लै लावइ ॥३
बरिस नाँह पुरइन कुँबलानी । जियइ न जबलग बरसै पानी ॥४
गहरें मेघ होइ बरसहु आई । रामाँ अधिक बियोग सताई ॥५
साँस आइ अधरहिं होइ रही, अबहूँ न आवहि साँई ।६
पुरइन कुण्ड निकुण्ड कै, फुनि बरसेउ तो काँई ॥७

टिप्पणी—(१) साईं–स्वामी ।
(३) करब–करूँगी । बिलँवहि–विलास करे ।
(५) रामाँ–रमणी ।

३१७

(दिल्ली; मनेर)

ऊँच उतंग भवन एक आहा । रुपमनि तिंह चढ़ि मारग चाहा ॥१
ऊभै पन्थ निहारत अही । मान अहा एक देखत रही ॥२
वह मँह कँवल मुकुन्द बहु आही । ऊँ संख्या जनु देखत रही ॥३
कहँहु बचा हम जो केउ अही । रैन आइ ससि थिर होइ रही ॥४
बिछुरे मिले जो आउत आहे[१] । जीउ भरमानेउ[२] चिन्ता गहे[३] ॥५
कहहिं एक ससि अथयैं[४] पिय[५] हिय[६], दूसर कित[७] हूँ आइ ।६
जो पिय ससि बाहर होइहि, होइहि नखत सुहाइ[८] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति–
१–चाहुत अहा । २–भरमान । ३–जो देखत रहा । ४–अथयेउ । ५–६ × ।
७–हुत । ८–(दि०) दुहो गह जननि ।

टिप्पणी—(१) उतंग–उत्तुंग; ऊँचा ।
(२) ऊभै–उचक-उचककर ।

३१८

(दिल्ली; मनेर)

देखत वह[१] जो निरख निहारी । उरहिं हार तारे हँहि[२] भारी ।१
[जिय] मँह कहहि विहरहि ससि आही । बिहरे बहुरि मिलत हिय[३] जाही ॥२

कँवल देखि वह संपुट रहा। लइ बिकास जो चाहुत रहा[४] ॥३
कुन्दन[५] सम्पुट जो[६] बाँधे चही। देख चाँद किंह भूली रही ॥४
अस रूप हम सुनेउ न काऊ[७]। आछर सम किमि होइ न ताहू ॥५
अस[८] रामाँ पिय मग कै[९], कियेउ चाह औराँह ।६
यह पिय पन्थ निहारे ठाढ़ी[१०], ऊभै कर कर बाँह ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति।

१–जो वह। २–तारि तिंह। ३–मिलिहैं किंह। ४–अहा। ५–मुकुन्द। ६–×।
७–काहू। ८–अस सरूप। ९– पेमै किये। १०–×।

टिप्पणी—(६) औराँह–दूसरेका।
(७) ठाढ़ी–खड़ी होकर।

३१९

(दिल्ली; मनेर)

देखत एक आउ बनजारा। कहा दुकन्त नहिं आउ उबारा ॥१
उतरेउ आइ सरोदक तीरा। देख सुझर औ निरमर[१] नीरा ॥२
रुपमनि मानुस पठयो जाई[२]। पूछसि[३] कवन देस कर आही ॥३
मानुस आयउ नायक ठाऊँ। पूछसि नायक का तुम्ह[४] नाऊँ ॥४
देस कवन[५] सेंउ लादेउ टाँडा। कवन देस[६] कँह मारग खाँडा ॥५
चन्द्रगिरि[७] सेंउ लादेउ टाँडा, जइहों कंचन देस।६
गनपत देउ क बाँभन[८] पुरोहित, लादेउ तिन्ह क सँदेस ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति।

१–निरमळ। २–जाही। ३–पूछो। ४–तिह। ५–कवन देस। ६– दीप।
७–चन्दरा गिरि। ८–×।

टिप्पणी—(२) सरोदक–सरोवर; तालाब।
(५) टाँड़ा–व्यापार सामग्रीसे लदा बैलोंका समूह; कारवाँ।

३२०

(दिल्ली; मनेर)

कंचनपुर का सुनसि जो नाँऊ। कहिसि चलहु रुपमनि कर[१] ठाँऊ ॥१
रुपमनि राजा कै धिय आही। उहाँ[२] सँदेस कहै कुछ चाही ॥२
बाँभन भेंट कुँवरि कै लिही। आइ जुहार अस कहा वही ॥३
रुपमनि नेगिहिं पूछसि बाता। नाऊँ काह किंह[३] बोलहि माँता ॥४
मानुस कहा आइ हम आगे। जइहहुँ कंचन नगर सुभागे ॥५

रानी हम कहँ दूलँभ नाँऊँ, लादेउँ बनिज सँदेस ।६
राजकुँवर जिह देस भुलानाँ, हौं जइहौं तिंह देस ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१–के । २–वहो । ३–के ।

३२१

(दिल्ली; मनेर;)

कुँवर नाँउ सुनि रोवइ नारी । जस गजमोति टूँटि गिंयमारी ॥१
कुवाँ सनाँ जस बिछुरै पानीं । आँसु[1] बहु ढारहि रोवहि[2] रानीं ॥२
नायक वैठि सुनहु दुख मोरा । दुख दइ गयउ कुँवर मँहि तोरा ॥३
पितैं बियाहि[3] वारी हौं वही । छाड़ि गयेउ चित मोह न गही ॥४
दूसर समो आइ अब लागा । हमहि छाड़ि के गयउ सुभागा ॥५
पावस उर[4] घन गजेउ, हम तन काम सँदेह ।६
दूँलभ कहियहु कन्त[5] सेंउ, किमि न मुंकैं[6] नेह ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१–तस । २–रोए । ३–वियाही । ४–उरद । ५–पिय । ६–मुकेउ ।

टिप्पणी—(१)–गिंयमारी–गले की माला ।

(२) सनाँ–से ।

(४) बारि–बाला; युवती ।

(५) समो–समय, वर्ष ।

(७) मुँके–(मोकैं) मेरा ।

३२२

(दिल्ली; मनेर)

फुनि सावन आयउ हरियारा[1] । पुहुमि हरे विरहा हम जारा ॥१
धरती हरख चीर जनु पहिरा । विरहा सेज हम दुख गहिरा ॥२
निसि दूभर मुहि[2] पिय विनु लागै । नारी नैन फुनि[3] जिउ भागै ॥३
जिउ हिंडोल भयउ तरुनिह केरा । विरह झुलाइ देइ सै बेरा[4] ॥४
जलहर जगत रहा भर पूरी । दूँलभ मरों आस लै झूरी ॥५
पावस काल बिदेस पिउ, हौ तरुनी कुल सुद्ध ।६
सरंग सिंघ कै[5] सबद सुनि कहँ, जिउ मरत[6] हिय मद्ध ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१–हरीरा । २–मोहि । ३–नाहँ पिय नैन बहै । ४–महि घेरा । ५–सिंघद ।
६–मर ।

टिप्पणी—(३) दूभर—कठिन ।
(४) हिंडोल—झूला । तरुनिह—तरुणीका । सै—सौ । बेरा—बार ।
(५) झूरी—कोरा; छूछा, झूठा ।

३२३

(दिल्ली; मनेर)

भादौं सघन धार बरसाई । बीजु लवइ आधर[1] होइ जाई ॥ १
निसि अँधियारी भरम डर भारी । हिय दरकै हौं कन्त बिसारी ॥२
पीउ न आह जिह सरन लुकाऊँ । सेज भुअंगम फुरे डराऊँ ॥३
दादुर ररै[2] औ मोर पुकारा । जिउ निकसै अब खिन न सँभारा ॥४
जीऊ पपीहा चख मघा सरेखा । दूँलभ कहहु जो र तुम्ह देखा ॥५
लोयन गंग तरंग भइ,[3] सेज भई खर नाउ ।६
करिया गुन बिन डूबा[4], कन्त पहिलै आउ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।
१—अन्ध फिर । २—रर्र । ३—भयउ । ४ डूभों ।

टिप्पणी—(१) बीजु—बिजली । लवइ—चमकती है । आधर—अन्धा ।
(२) दरकै—कसक उठै ।
(४) दादुर—मेढ़क ।
(५) मघा—मघा नक्षत्र । सरेखा—श्रेष्ठ ।
(६) करिया—नाविक । गुन—रस्सी ।

३२४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

आसिन दरस काँस बन फूले । खिंडरिज[1] आये सारस बोले ॥१
उवै अगस्त घटा[2] जग नीरू[3] । हौं भरि गाँग[4] न पायउँ[5] तीरू ॥२
तिह ऊपर बिरहा भौं[6] हाथी । करज[7] झकोर कहाँ पिउ[8] साथी ॥३
गरजत घन पिउ उरहिं छिपायउँ[9] । सेज सून हौं भरम डरायउँ[10] ॥४
जो डर डरेउ[11] भयेउ[12] निरजासी । ममँता बिन कया बिधाँसी ॥५
कुंजर बिरह सरीर बन, दले बिधासै[13] खाइ ।६
पिय गलगजेउ सिंह होइ, कुंजर बिरह पराइ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।
१—(बी०) खँडरिच । २—(बी०) घटै । ३—(म०) पानी; (बी०) नीरा । ४—(बी०) गंगा । ५—(बी०) न पाऊँ; (दि०) नेउ नेउ । ६—(बी०) भया । ७—(बी०) गरज ।

८–(बी०) पाऊँ। ९–(म०) छिपावहि; (बी०) छिपाऊँ। १०–(बी०) डराऊँ; (म०) सेज भवन किमि फिरी डराऊँ। ११–(बी०) डरी। १२–(म०) होइ; (बी०) ऊभि। १३–(बी०) बिधंसै। १४–(बी०,म०) गलगजहु।

टिप्पणी—(१) आसिन–अश्विन, कुँआर। दरस–देखकर।
(२) गंग–गंगा।
(३) भौ–हुआ।
(४) भरम–भ्रम।
(५) निरजासौं–निराश।
(६) कुंजर–हाथी।

३२५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कातिक सरद रैन[1] उजियारी। ससि सीतल हौ बिरहै मारी[2] ॥१
सेत सुपेती सेज न भावइ। अमिय तेज[3] ससि बिख[4] बरसावइ ॥२
पल दुइ दौं अनन्द[5] मकु बरसा[6]। सो हम कँह[7] दुरजन होइ[8] दरसा ॥३
सीतल सेत रैन जग भावइ[9]। हम्ह[10] अँधियार पाछु[11] पिउ[12] आवइ ॥४
दुइज पिरिति मुँहि[13] हयैं समानी। ससि पूनेउ पिय[14] पिरिति गवानी[15] ॥५
मैं जानेउ पिउ दुइज[16] ससि, बढ़हि[17] पिरीति निमग्ग।६
दूलभ कहहु[18] कन्त सेंउ[19], पूनेउ[20] भै हम लग्ग ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१–(बी०) रैनि सरद। २–(म०, बी०) जारी। ३–(म०) तज। ४–(बी०) विष। ५–(म०) अन्ध। ६–(बी०) बलि दै दुवन इन्द मकु रसी। ७–(म०) तिह हम लग; (बी०) तेहि लगि हम। ८–(बी०) भै। ९–(बी०) भावै। १०–(बी०, म०) हम। ११–(बी०) बाजु। १२ (बी०) पिव। १३–(बी०) द्वैज प्रीति मोहि। १४–(बी०) प्रिय। १५–(म०) घटानी। १६–(बी०) द्वैज। १७–(बी०) बाढ़हि प्रीति। १८–(बी०) कहियहु। १९–(बी०) सौं। २०–(बी०) पून्यो।

टिप्पणी—(२) सेत–श्वेत। सुपेती–बिस्तरा। सेज–शय्या।
(६) निमग्ग–निमग्न।
(७) भै–हो। लग्ग–निकट; पास।

३२६

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

अगहन कहँ जग सीउ जनावा। हेंव आइ[1] पै कन्त न आवा ॥१

दुख बाढ़ेउँ निसि सँग किह[2] पाई । सुख र[3] खीन[4] हम दिन बरजाई ॥२
जोबन छाँह निमिख मँह जाइहिं[5] । गये बार फुनि बहुरि न आइहिं[6] ॥३
विरहैं तन पण्डुर[7] जो होई । जोगीं[8] भसम करत है सोई ॥४
आहर[9] जरम[10] जात है नाँहाँ । बिरसु आइ भर जोबन माहाँ[11] ॥५
दूलभ जिमि जल अँजुली, तिमि जोबन कर नेम[12] ।६
खिन खिन गहै जाइ दिन, गहहु नेम क पेम[13] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।
१–(बी०) हेंवत आये । २–(बी०) संगत; (म०) संगन । ३–(म०,बी०) रे । ४–(म०,बी०) खिन । ५–(बी०) जाई । ६–(बी०) आई । ७–(बी०) पंडेरेउ । ८–(बी०) जोगिनि । ९–(म०) बिहर; (बी०) आइर । १०–(बी०) जनम । ११–(बी०) बरसु आय भर जोबर माहाँ । १२–(म०) जेम; (बी०) जेमु । १३–(दि०) गहियइ मुकै नेम कै पेम; (बी०) खन खन खन जाइहि दिन, न कहु न मुकै पेमु ।

टिप्पणी—(१) सीउ–शीत । हेंव-हेमन्त ऋतु ।
(४) पण्डुर–पीला ।
(५) आहर–व्यर्थ । जरम–जन्म । जात है–जा रहा है । बिरसु–बिलास करो । जोबन–यौवन । माहाँ–मेरा ।
(६) जिमि–जिस प्रकार । तिमि–तिस प्रकार । नेम-नियम ।

३२७

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

दूलभ पूस तुलानेउ आई । पिय बियोग आवस[1] र सताँई ॥१
परै तुसार खीर जस जामाँ । सेज हींउ अरकत है रामाँ[2] ॥२
सेज अकेल कहाँ पिउ पावऊँ[3] । उर कुच भवो पुरुख किह लावऊँ[4] ॥३
जाड़ सौर भौ बिरह सुपेती । दुहुँ दुरजन बिच भयउँ अचेती ॥४
जीउ अचेत कछु कही न जाई । यहि कहहु[5] दूँलभ समुझाई ॥५
हारहिं बीचहिं[6] सँचरत, अँतर कपट न दिय[7] ।६
कर पिय सायर [गहै][8], ते पिय अन्तर किय ॥७

पाठान्तर—१–(म०) अैसस; (बी०) असस । २–(बी०) सेज कंवत कर रिहौ रामा । ३–पाऊँ । ४–(बी०) उर कुच भुव बर गहि गहि लाऊँ । ५–(बी०) मुखहिं कहेहु; (म०) इँह कहँ कहहु । ६–(बी०, म०) हार बीच । ७–(बी०) दीय । ८–(दि०) गहन; (बी०) गिरि परबत सायर बन घने ।

टिप्पणी—(२) अरकत–कसकता है ।

३२८

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

अब र माँह[1] आयउ[2] दुख भारी। काह करौं[3] नहिं[4] जाइ सँभारी ॥१
झरकै पवन मरौं धुधुआई[5]। तपौं अकेल[6] जाड़ न जाई ॥२
कपँहि दसन सीउ घन लागै। सूर होइ पिय तपै[7] त[8] भागै ॥३
तपहु आइ मँहि[9] ऊपर नाहाँ। सात पतार जाइ दुख छाँहा[10] ॥४
रितु[11] वहुरी[12] पिय फेरि[13] न कीन्हाँ। विरह सँताप सेज भरि[14] दीन्हाँ ॥५
बिरह तुम्हारें सुख हरा, जिमि रावन हर सिय ।६
निसियर पति हनु[15] आइ कै[16], जस[17] रघुनन्दन किय ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१-(बी०) माघ। २-(बी०) आयो। ३-(बी०)कहौं। ४-(बी०) दुख नहिं। ५-(दि०) धँवाई। ६-(बी०) अकेली; (म०) अकेलैं। ७-(बी०) ताप। ८-(म०) तबहि; (बी०) तो। ९-(बी०) मोहि। १०-(म०) जहाँ। ११-(म०) पिरित। १२-(बी०) फिरी। १३-(बी०) फेर। १४-(म०) दुख। १५-(बी०) निसि हरि हनुपति। १६-(म०) ×। १७-(म०) जस कै।

टिप्पणी—(१) काह—क्या।
(७) निसियर पति—निशिचर पति; रावण। हनु—हनन करो। रघुनन्दन—राम।

३२९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

फागुन फाग[1] जगत सब खेला। होरी माँझ मैं र[2] जिउ[3] मेला ॥१
जरि कै भसम हौं यहि[4] आसा। मकुँहि उड़ाइ[5] जाँउ पिय[6] पासा ॥२
बिरह आइकै[7] चाँचरि पारै[8]। रकत रोवइ[9] सेदुर रतनारै[10] ॥३
तिह ऊपर मुहि आँधि सँतावइ[11]। आँगन[12] सेज मँदिर न भावइ ॥४
अहर गयेउ[14] वसन्त सुहावा। रहेउ छाइ पिउ बिगोतिह काहा[15] ॥५
फाग[16] वसन्त सुहावनाँ, यह जोवन मैंमन्त ।६
तरुवर पात जो झरि परै, अवहु[17] न आयउ[18] कन्त ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१-(बी०) फागु। २-(बी०, म०) रे। ३-(बी०) जिव। ४-(म०) नहिं; (बी०) होउँ उहि। ५-(बी०) मकहु उड़ाय। ६-(म०) पिउ। ७-(म०, बी०) अस। ८-(बी०) पारी। ९-(म०, बी०) रोई। १०-(बी०) रतनारी। ११-(म०) तिंह पर और दहि पवन सँताई; (बी०) तेहि ऊपर दहि पौन सतावै। १२-(बी०)

अंगन। १३-(म०) भाई; (बी०) भावै। १४-(बी०) आइ रंग गयो। १५-(म०) रहेउ छाइ पिउ सँवर नहिं आवा; (बी०) रहो छाइ पिउ भयो परावा। १५-(बी०) फगुवा। १७-(बी०) अजहूँ। १८-(बी०) आयो।

टिप्पणी--(३) औधि-बचन; प्रतिज्ञा।
(५) बिगोतिह-सौत।

३३०

(दिल्ली; मनेर;[१] बीकानेर[१])

चैत चहूँ दिसि करहि सँहारा[१]। बिरहा हम तन खोइ खोइ[२] जारा ॥१
मौली बनस्पति[३] जग फूला। पिउ मकरन्द औंर कँह भूला ॥२
काकल[४] फिरि कै[५] पंचम बोला[६]। जोबन कली बिगस मुँह खोला[७] ॥३
यहौं[८] जरम बिरथहिं[९] जाई। आरन[१०] जेउँ मालती[११] कुँबलाई ॥४
दरसत परिमल पियै[१२] बिसारी। सइल[१३] सरूप फूली फुलवारी ॥५
भँवर बिसार[१४] न मालती, औगुन आह न[१५] कीत। ६
पिय पीरी[१६] कै बोल रे[१७], सौन[१८] सुनइ[१९] धरि चीत[२०] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।
१-(बी०) करह सँभारा। २-(बी०) खै खै; (म०) खोर खोर। ३-(बी०) बनसपती। ४-(म०, बी०) कानन। ५-(बी०) पिक। ६-(बी०) बोली। ७-(बी०) मुख खोली। ८-(म०) एउ। ९-(बी०) निरतहिं। १०-(बी०) अरँन; (म०) अर। ११-(बी०) जैंव माल्ती। १२-(बी०) पियहिं। १३-(बी०) सुदल। १४-(बी०) बिहार। १५-(बी०) क। १६-(म०) बौरी; (बी०) बैरी। १७-(बी०) री। १८-(बी०) सुवन। १९-(म०) सुनेउ; (बी०) सुन्यो। २०-(म०, बी०) चीत।

टिप्पणी--(२) मौली-मुकुलित हुई।
(३) काकल-कोयल। बिगस-विकसित होकर।
(४) आरन-अरण्य; जंगल।
(५) कीत- किया।

३३१

(दिल्ली; बीकानेर)

वैसाखैं[१] फर तरुवर लागे। बिरसु आइ कन्त सुभागे[२] ॥१
अमिय सुफल[३] राखेउ[४] तुम जोगू[५]। बेग आइ[६] रस मानहु भोगू[७] ॥२

---

[१]. इन प्रतियोंमें पंक्ति ४, ५ क्रमशः ५ और ४ हैं।

अबलँहि मैं राखी अँबराई । अब दुरजन[८] पँह राखि न जाई ॥३
बिरह सुवा फर चाहै खावा । अब बूतें नहिं जाइ उड़ावा ॥४
कब लग[९] बिरह उड़ावों[१०] नाहाँ । अलप बयस सत रहै नहिं बाहाँ[११] ॥५
रीस परे वहि नारि लगि, देखि हाथ औराँहि[१२] ।६
हम पिय[१३] हरख बिसारेउ[१४] दीतसि बिरह गराहँ[१५] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–बैसाख । २–सभागे । ३–सुफर । ४–राखे । ५–जोगा । ६–आउ । ७–भोगा ।
८–दुरिजन । ९–लगि । १०–उड़ाऊँ । ११–अलप बयसि सुत रहेउ न बाहाँ ।
१२–देखिसि बाँह ओरहाइ । १३–पिउ । १४–बिसारी । १५–हँकराइ ।

टिप्पणी—(४) सुवा–शुक; तोता । बूतें–शक्ति ।

३३२

(दिल्ली; बीकानेर)

जेठ मास सूरज[१] दों लाई[२] । लोवें लवँहि जनु आग जराई[३] ।१
तपै पचास[४] बरहिं[५] अंगारा । तिह[६] पर मदन[७] तवै बिकरारा ॥२
सुरज सनां[८] [कंचु][९] औ चीरू[१०] । काम दगध अति[११] बिकल सरीरू[१२] ॥३
पिय सीतल आवहु हम पासा । तपत[१३] जाइ खँडवान पियासा ॥४
गिर मलया होइ[१४] आवहु नाहाँ । गिरखम[१५] जरत करहु मुहि[१६] छाहाँ ॥५
दूलभ कहियहु कन्त सेंउ, उनै आउ घनथट्ट[१७] ।६
नाहुत[१८] सूर बिरह मुहि[१९], दुरजन[२०] जारि करहि दहिघट्ट[२१] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–सुरिज । २–लावै । लोइन लावहिं जो आगि जरावै । ४–बज्रसिनि । ५–परै ।
६–तेहि । ७–मन्दिर । ८–सनेहा । ९–(दि०) कचू ; (बी०) कुचु । १०–चीर ।
११–दगधि औ । १२–सरीर । १३–पियत । १४–होइ मलयागिरि । १५–ग्रीषम । १६–हम । १७–गजवट्ट । १८ नातरु । १९–मोहि जारिहि । २०–X ।
२१–दहवट्ट ।

टिप्पणी—(५) गिरिमलया–मलयागिरि; चन्दन । गिरखम–ग्रीष्म ।
(६) उनै–घिर । थट्ट–समूह ।
(७) नाहुत–नहीं तो ।

३३३

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

[गरजत][१] गगन असाढ़ जनावा । कुँजर जूह मेघ होइ आवा ॥१
चहुँ जग[२] उनै बीज चमकाई । पिय[३] सँवरहुँ पावस रितु आई ॥२

ऊखम रितु बन जारेउ आई[४] । हम पिउ फुनि[५] परदेसहिं छाई ॥३
मारग रहा पन्थ न चलाई[६] । अब जीउ घरी न धीर बँधाई[७] ॥४
मारग चलत न आयउ[८] नाहाँ । अब जलहर छायउ[९] जग माहाँ ॥५
दूलभ सावन लाग फिर[१०], औ[११] जग जलहर भर बाँह[१२] ।६
सुरपति-बाहन भानु[१३]-सुत[१४], मिल कियेउ रौराँह[१५] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(दि०) गजत; (म०) गजम; (बी०) जगमहँ । २–(बी०) दिसि । ३–(बी०) पिउ । ४–(बी०) औ खमुरचु बनिजारे आये । ५–(बी०) पुनि पिउ । ६–(म०) नहिं पंथ; (बी०) न पंथ । ७–(बी०) धराई । ८–(बी०) आयो । ९–(बी०) छायेउ । १०–(म०) फिर लाग; (बी०) फिर लगा । ११–(म०) अरु । १२–(म०) आह । १३–(बी०) भान । १४–(म०) पति । १५–(म०) मिलि कपोल अरु बाँह; (बी०) मिलि कपोल रु बाँह ।

टिप्पणी—(१) कुंजर जूह–कुँजर जूथ; हाथियों का समूह ।

३३४

(दिल्ली;[१] मनेर; बीकानेर)

मैं तुम्ह आगें सब दुख टेरा । भरि गंग बूड़ेउ[१] लाउ को तीरा[२] ॥१
पिय[३] गुनवन्ती[४] गुन दै तोरी[५] । परी नाउ भरि[६] गंग[७] मँह मोरी ॥२
तीर न लागै बिन गुनधारा[८] । करिया[९] कहाँ जो टेकि सँभारा ॥३
अब रै कुण्ड गहिरे मँह परी । बेग आउ[१०] सब जलहर भरी ॥४
नेह क सायर अति अवगाहा[११] । बोहित बूड़ न पावहिं[१२] थाहा ॥५
यह दुख पेमहिं[१३] संग रहौं[१४], खिन खिन सुख कै[१५] हानि ।६
सायर नेह अमोघ जल, बड़ पन्थिह तुमहिं जानि[१६] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(बी०) बूड़ि । २–(बी०) को लावै तीरा; (म०) न लागेउ तीरा । ३–(बी०) जिय । ४–(बी०) गुनवन्तै । ५–(बी०) टोरी । ६–(बी०) गहिरे । ७–(बी०) × । ८–(बी०) कंडहारा । ९–(बी०) करिय । १०–(बी०) आव । ११–(बी०) औगाह । १२–(बी०) बूडै न पावै । १३–(बी०) हम नहिं । १४–(बी०) रह्यो । १५–(बी०) की । १६–(म०) औ बड़ पंथिह मान; (बी०) बिधि मुयेहि पै जानि ।

टिप्पणी—गुनवन्ती–रस्सी धारण करनेवाला नाविक । गुन–रस्सी ।

(३) गुनधारा–रस्सी पकड़नेवाला मल्लाह । करिया–पतवार सम्हालनेवाला नाविक ।

(६) अवगाहा–अगाध । बोहित–नाव ।

१—इस प्रतिमें पंक्ति ३-४ क्रमशः ४ और ३ है ।

३३५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

देख नायक बनिज चलावा । दन्द उदेक उचाट लदावा ॥१
बिरह बिऊग सँताप[1] जो लीन्हा[2] । दुख रुपमनि[3] खाँड़ो भर दीन्हा[4] ॥२
औ मिरगावति कँह[5] अस कहा । ताहि[6] बा सरन[7] छाड़ पिउ गहा ॥३
देखि बूझहु[8] तुम्ह[9] हिय[10] सामाँ[11] । पीउ न सेज कस बेदन रामाँ[12] ॥४
बेदन दीह[13] जाइ नहिं सही । काँम दगध चूनाँ[14] होइ रही[15] ॥५
करवट सीस दइ कोउ[16] सहे,[17] यह दुख बहुत हमाँह[18] । ६
तिरिया यह नहिं[19] सहि सकै, पिय निरखै[20] औराँह ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(बी०) संताप वियोग । २–(बी०) दीन्हा । ३–(बी०) रुकमिनि । ४–(बी०) लीन्हा । ५–(बी०) सौं । ६–(म०) तो । ७–(बी०) परसन । ८–(बी०) बूझि । ९–(बी०) तुम । १०–(बी०) अहौ । ११–(बी०) समाना; (म०) समान । १२–(बी०) पिउ नहिं सेज जीवै न तिमि रामा । १३–(म०) दीस; (बी०) दिहेहु । १४–(म०) चून । १५–(बी०) दही । १६–(म०) देइ जो कोई; (बी०) देइ कोई । १७–(बी०) सहिये; (म०)–× । १८–(बी०) हमाँहि; (म०) यह सह जाइ हमाँह । १९–(म०, बी०) नहिं यह । २०–(म०) पिउ देखै; (बी०) न कहै ।

टिप्पणी—(१) दन्द–द्वन्द । उदेक–उद्रेक । उचाट–खिन्नता ।

(३) बा–है ।

(६) करवट–करपात्र; आरा ।

(७) निरखै–देखै । औराँह–दूसरे को ।

३३६

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

सँखा जिह दूभर निसि होई[1] । सेज गवेझ नींद न सोई[2] ॥१
औ चकोर कँह जिउ निकराई[3] । निमिख निमिख जुगजुग बर जाई[4] ॥२
यह दुख बरसि क आइ[5] तुलानाँ । अब न रहहिं घट जाहिं पराना ॥३
नव तिय देखहिं[6] आदरस[7] खाई[8] । मरिहौं तिह परहत्यै लगाई[9] ॥४
दई[10] क डर चित करहु बिचारी । हत्या निबहें किये[11] हुत भारी[12] ॥५
हिया न समुझै बाउरेउ[13], जिह[14] समुझावउँ[15] चित्त ।६
देखन चाहौं[16] पिय[17] कहँ, लोहू रोवौं[18] नित्त ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(म०) सँखा जन जिंह बिछुरे होई; (बी०) सखा जन जौ दूभर होई । २-(बी०) सेज के ओछे नींद नहिं खोई; (म०) होई । ३-(म०) जोन कराई ; (बी०) जोन्ह कराई । ४-(बी०) निमिख निमिख मँह जुग जुग जाई । ५-(बी०) आय । ६-(बी०) तरुनी देखि । ७-(म०) अदारसि । ८-(बी०) कहई । ९-(बी०) मरिहौं तोहि परहत्या लाई । १०-(बी०) दइव । ११-(म०) बिरह किये । १२-(बी०) हत्या चढ़िहि गऊ छुत भारी । १३-(बी०) बाउर । १४-(म०, बी०) जो । १५-(बी०) समझाऊँ । १६-(म०) चाही; (बी०) । चाहै । १७-(बी०) पिउ । १८-(म०) रोवइ; (बी०) रोवैं ।

३३७

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

बरद[1] सहस एक[2] भयउ[3] सँदेसा । नायक लादि चलेउ[4] वँह[5] देसा ॥१
राजकुँवर जिंह[6] देस लुभाना[7] । तिंह र[8] देस कर किहसि[9] पयाना ॥२
मारग पूँछि लिहिसि वह जाई । कुँवर बाट जिंह गयेउ[10] सो पाई ॥३
वह र[11] बाट सब हाँकिसि टाँडा । रुपमनि[12] बिरह अगिनि[13] कर खाँडा ॥४
आगै भा वह बिरह चलाई । पाछैं टाँड[14] चला सब जाई ॥५
कटक बहुत बिरहैं संग, बाट न छेड़ै कोइ[15] ।६
दानीं दान जो माँगैं [आवइ],[16] जर भँसमन्त सो होइ[17] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(म०) बरध । २-(म०, बी०) दस । ३-(बी०) भयो । ४-(म०) चला; (बी०) चलेव । ५-(म०) वहि; (बी०) तेहि । ६-(बी०) जेहि । ७-(बी०) लोभाना । ८-(बी०) तेहिरे । ९-(बी०) किहेसि । १०-(बी०) गयेव । ११-(म०, बी०) रे । १२-(बी०) रुकुमनि । १३-(म०, बी०) आग । १४-(बी०) टाँडा । १५-(बी०) छेकै कोय । १६-(दि०) ×। १७ (बी०) होय ।

टिप्पणी—(१) बरद-बैल ।

(२) पयाना-प्रयाण; गमन; यात्रा ।

(७) दानीं-दान माँगनेवाले; भिखारी ।

३३८

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

घर[1] तन बन सब जारत चला[2] । आगैं परे सोइ[3] सब जला ॥१
समुँद एक आयउ बन तीरा[4] । बिरह आग वह जनत सरीरा[5] ॥२

फुनि[१] कजली[७] बन आगें आवा। काँम आग[८] सेउँ उहौ जलावा[९] ॥३
वहै गड़रिया हुत वहि[१०] ठाँऊँ[११]। पूछा उन्ह रे[१२] कहा[१३] तिह[१४] नाऊँ ॥४
गाँव ठाँव आहै[१५] इँह[१६] कोई। कहाँ रहहु तूँ पूछहुँ कहु सोई[१७] ॥५
कंचनपुर[१८] कै बाट जिह र[१९] दिसि,[२०] तिंह[२१] मारग हम लाउ[२२] ।६
कै जोजन आहै[२३] इहवाँ हुत, पूछौं कहु सु भाउ[२४] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१–(म०) गिरि। २–(बी०) घर बन तीर जरत सब चला। ३–(म०, बी०) सो रे। ४–(बी०) आये बड़वानी। ५–(म०) बिरह लग दहहि जरत सरीरा; (बी०) बिरह कि आगि सुखानेउ पानी। ६–(बी०) पुनि। ७–(बी०) कदली। ८–(बी०) अगिनि। ९–(म०, बी०) वहौ जरावा। १०–(बी०) वोहि। ११–(दि०) ठाँई। १२–(बी०) इनहि। १३–(म०, बी०) काह। १४–(बी०) तुम्ह। १५–(बी०)×। १६–(बी०) इँहवा नहिं; (म०) इँह न। १७–(म०, बी०) कहाँ रहहु तूँ इकसर होई। १८–(दि०) कंचपुर। १९–बी० जेहि। २०–(बी०) मारग; (म०) कंचनपुर गै जिह दिसि। २१–(बी०) तेहि। २२–(बी०) तेहि हम कहँ लाउ। २३–(म०) है। २४–(म०) सत भाउ; (बी०) कै जो अहइ जन इहाँ हुतै, तेहि तो पूछौ सति भाउ।

टिप्पणी—(७) इहवाँ हुत–यहाँ से।

३३९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कंचनपुर जोजन सौ आही। जोगीउ एक गयेउ वह जाही[१] ॥१
दिन दुइ तीन आहा[२] घर मोरीं[३]। पहुनाई कीनों कर जोरीं[४] ॥२
भेंट[५] भुगुति मैं वह कहँ[६] कीनीं[७]। जोगी केरि यहै[८] मँद रीती ॥३
एक दिवस हौं सुवत आहा[९]। साँठ लिहिसि औ आँखिउ दहा[१०] ॥४
साँठ वस्तु[११] भल जो कछु पाइसि[१२]। लइके[१३] भाग न फेरि[१४] दिखाइसि[१५] ॥५
जोगी जात कितघ्नि आहे[१६], जो वोरे घिउ[१७] खाँड ।६
आपुन होय न कैसहुँ[१८], ताकर[१९] मारै विसहैं काँड ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१–(बी०) जोगियो एक गयो वहि चाही। २–(म०, बी०) रहा। ३–(बी०) मोरे। ४–(म०) बहु पहुनाइ कियेउ कर जोरे; (बी०) पहुनाई कियौं दुवौ कर जोरे। ५–(बी०) जेति। ६–(म०) कै। ७–(बी०) वोहि की कीतिसि। ८–(म०) जोगी जात आह। ९–(बी०) मैं सोवत अहा। १०–(म०) दाहा। ११–(बी०) लीन। १२–(बी०) पाइस; (म०) पास। १३–(बी०) लैके। १४–(बी०) बहुर।

१५-(म०) देखास; (बी०) देखाइस। १६-(बी०) अहै। १७-(बी०) बोरिये घी। १८-(बी०) कैसेहु। १९- (म०) ताखर; (बी०) ×।

टिप्पणी—(१) जाही-जगह।

(४) सुवत-सोता। आहा-था।

(६) बोरे-डुबोये। घिउ-घी। खाँड-चीनी।

(७) ताकर-उसका।

३४०

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

बात कहिसि फुनि पन्थ देखावा। मारग यहै लोग सब[1] आवा ॥१
वहैं बाट बरदै हँकवाई[2]। जो र गड़रियें बाट दिखाई[3] ॥२
माँस यक दूसरें मग[4] घटाना[5]। नगर कंचनपुर आइ[6] तुलाना ॥३
उतरेउ[7] आइ एक अंबराई। अपुरुब नारा[8] पोखर बाईं[9] ॥४
नगर सुहावन देखत भावा। लोग उत्तिउँ[10] मुख बचन सुहावा[11] ॥५
लोगहि[12] पूछसि बात नगर कै, राजा इहाँ[13] को आह।६
राजकुँवर अहै[14] इँह[15] राजा, मिरगावति[16] धनि ताँह ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१-(म०) सभ। २-(बी०) वोहि बाट सब बरदी हँकरावा। ३-(बी०) देखाये। ४- (म०, बी०) बाट। ५-(म०) घटाई; (बी०) खुटाना। ६-(बी०) आय। ७-(बी०) उतरेव। ८-(बी०) तारा। ९-(बी०) पाई। १०-(बी०) उत्तिम। ११-(म०, बी०) सुनावा। १२-(बी०) लोगन। १३-(बी०) इहँ राजा। १४-(म०) है; (बी०) इहाँ। १५-(म०) ×; (बी०) आहें। १६-(बी०) मिरगावती।

टिप्पणी—(४) नारा-नाला। पोखर-तालाब। बाईं-वापी, कुँआ।

(५) उत्तिउँ-उत्तम।

(७) धनि-पत्नी। ताँह-उसकी।

३४१

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

राजकुँवर कर सुनसि जो नाँऊँ। औ मिरगावती है वहि[1] ठाँउँ ॥१
कहिसि दयीं[2] भल भयउ गुसाँईं[3]। दोउ सुनेउँ बारें[4] एक ठाँईं ॥२
जिह लगि आयउ पायउ[5] सोई। मोर जनाउ[6] किंह[7] र[8] बिधि होई ॥३
मारग कुसल जैं[9] बिधि कीन्हीं[10]। सो र[11] मिराइहि[12] होइहि चीन्हीं[13] ॥४

भागवन्त अब लाग सन्देहू[१४] । **जिह घर खाँड सो पाउँ[१५] मछेहू** ॥५
उँहहि[१६] राजपूत आह सुलाखन,[१७] इन्ह पँह[१८] दइ दइ[१९] राज ॥६
सिरीवन्त कहँ कोदों[२०] अबला[२१], **दिन दस भलहि[२२] बिराज** ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(बी०) वोहि । २–(बी०) दइव । ३–(बी०) भयेव गोसाई । ४–(बी०) इनौ बर आहै । ५–(बी०) जेहि लगि आयों पायेंव । ६–(म०) जनावन; (बी०) चिन्हावन । ७–(बी०) केहि । ८–(बी०) रे; (म०) × । ९–(म०) जिंह र; (बी०) जेहि रे । १०–(बी०) कीन्हा । ११–(म०, बी०) सोइ । १२–(बी०) मिराय । १३–(बी०) चीन्हा । १४–(बी०) भागवन्त कह अपदस देहू । १५–(बी०) पाव । १६–(म०) इँहवहि; (बी०) वहौ । १७–(बी०)–सुलखन । १८–(म०) ईँहहि । १९–(बी०) यह फुनि दइव दीन्ह । (म०) करो । २१–(बी०) मिरगावति कहँ क्रत अपदस । २२–(बी०) भयेव ।

टिप्पणी—(३) जनाउ–सूचना ।

३४२

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कंचनपुर जो[१] आहे बैपारी[२] । सुनतहि टाँड एक आयउ[३] भारी ॥१
कहहिं जाके[४] बनिज बिसाही[५] । लइके[६] चलहु जो र[७] कछु चाहीं[८] ॥२
मिलिके[९] सब आये बैपारी[१०] । भेंट घाँट कै बैठि[११] जुहारी[१२] ॥३
फुनि[१३] कछु[१४] लइ दइ कै चाली । कहहिं तो कोउ[१५] करै बिस्थाली[१६] ॥४
एकहि ठाइँ[१७] बनिज हम देहू । माझी कहै[१८] सो हम सेउ[१९] लेहू ॥५
हँस बोला अस नायक उन्ह[२०] सेउ[२०], तुम्ह कँह दई[२१] न जाइ ।६
यह र[२२] बनिज तो पै[२३] बनिजा, जो आपुहि[२४] आवइ[२५] राइ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(म०) × । २–(बी०) अहे व्यौपारी । ३–(बी०) सुनिन्ह टाँडा आयेव एक । ४–(म०) जाइके । ५–(बी०) चलहु लेंय जो रे किछु चहियै । ६–(म०) लेइ । ७–(म०) रे । ८–(बी०) कहिन्हि जायकै बनिज बिसहियै । ९–(बी०) मिलकै । १०–(बी०) व्यौपारी । ११–(बी०) बैठ । १२–(म०, बी०) जोहारी । १३–(बी०) पुनि । १४–(म०, बी०) उन्ह । १५–(म०) कोई । १६–(बी०) कहिन्हि कोरे करै बिसठाली । १७–(बी०, म०) ठाँउ । १८–(बी०) चाहि १९–(बी०) हमसे । २०–(बी०, म०) × । २१–(बी०) देइ; (म०) देउ । २२–(बी०, म०) रे । २३–(म०, बी०) हौं । २४–(म०, बी) इँह । २५–(बी०) आवै ।

टिप्पणी—(२) बनिज–व्यापारकी वस्तु । बिसाही–खरीद करें ।

(३) भेंट-घाट—(भोजपुरी मुहावरा) मिलना-जुलना।
(४) लइदइ—लेन-देन की बात। कै—का। चाली—बात आरम्भ की।
(५) माँझी—मूल्य निर्धारित करनेवाला मध्यस्थ।
(७) पै—लेकिन।

३४३

(दिल्ली; मनेर; एकडला; बीकानेर)

बैपारिहँ[1] रे सुनी यह बाता। नायक बाउर कै मतमाता ॥१
बाउर नायक राइ[2] बुलावा[3]। ठाकुर तुरिय लै आगे[4] आवा ॥२
बनजारे सेंउ[5] काह दुवारी[6]। राजा जिंह लग आवइ[7] भारी ॥३
यह कहि सब बहुरे[8] बैपारी। आपुन आपुन लागि दुँवारी[9] ॥४
चलत बात[10] राजा पहँ गई। बनजार[11] एक अइस[12] बोलई ॥५
ठकुरहिं[13] कै अस अहै[14] करथा,[15] अचरज[16] सुनहु हँकार[17] ।६
वँह रे बनिज का आहे[18] अपुरुब, जिंह[19] लग हमहिं दवार[20] ॥७

पाठान्तर—मनेर, एकडला और बीकानेर प्रति।

१–(ए०) [बै] पारिंह। २–(ए०) राव; (बी०) राय। ३–(ए०, म०, बी०) बोलावा। ४–(म०) लै; (ए०, बी०) लेए पै। ५–(ए०, बी०) सौ। ६–(म०) दँवारी; (ए०, बी०) डँवारी। ७–(ए०) जेहि लगि आऐव; (बी०) जेहि लगि आवै। ८–(ए०) बहुरे सब। ९–(ए०) आपन आपन लाग डँवारी; (बी०) आपन आपन कहु लगे डँवारी। १०–(ए०) चलत। ११–(म०) बनजारा। १२–(म०) आउ अस है; (बी०, ए०) अैस। १३–(ए०, बी०) ठकुरन्ह। १४–(म०) आहै। १५–(ए०) कथा। १६–(ए०) अचर; (बी०) अचरज कसथा। १७–(ए०) हँकारि। १८-(म०) अहै। १९–(ए०, बी०) जेहि। २०–(म०) दँवार; (ए०) डवारि; (बी०) डँवारि।

टिप्पणी—(१) बाउर–बावला।

३४४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर;)

धावन[1] एक जनाँ सो धाये[2]। चलु[3] नायक तुम्ह राय बुलाये[4] ॥१
कहिसि ठाढ़ तूँ खिन एक होई[5]। भेंट लेवँ[6] संग आवौं तोही ॥२
जौ लग ई र[7] बार हुत ठाढ़ी[8]। तौलहि तिलक दुआदस काढ़ी ॥३
धोती पहिरि जनेउ जो देई[9]। पतरी पौ काँख पौथी लै सेई[10] ॥४
जिंह मँह बारह मास क बाता। छाड़सि अउर भेस[11] से साता ॥५

दन्द उदेक उचाट विरह दुख, बहुत थाल भरि लीन्ह ।६
जिह ठाँ राउ बैठ हुत,[१२] इकसर भेंट जाइ कै कीन्ह[१३] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(बी०, म०) धावत । २–(म०, बी०) धावा । ३–(बी०) चल । ४–(बी०) तोहि राय बोलावा । ५–(म०, बी०) होहीं । ६–(म०) लेउँ; (बी०) लैंव । ७–(बी०) तौ लहि यह रे । ८–(बी०) ठाढ़ा । ९–(बी०) धोती पहिरि पुनि काँध जनेऊ । १०–(म०) पटली गाँग पोथि लै सेई; (बी०) पहुली काँख पोथी लिहे सेउ । ११–(म०) सहस । १२–(बी०) जेहि ठाँव राव बैठे हुत । १३–(बी०) भै इकसर भेंट तहँ जाइ कीन्ह ।

टिप्पणी—(१) **धावन**–दूत । **जनाँ**–व्यक्ति ।

(२) **ठाढ़**–खड़ा ।

(३) **तिलक दुआदस**–वैष्णव सम्प्रदायके कतिपय लोग बारह तिलक–मस्तक, नासिका, दोनों कपोल, वक्षस्थल, दोनों भुजा, नाभि, दोनों जाँघ और पीठके त्रिक्‌स्थानपर लगते हैं। इस प्रकारके तिलक लगानेका उल्लेख चन्दायन (४२०।२), पदमावत (४०६।३) और बीसलदेव रासो (छन्द १०२) में भी हुआ है।

(४) **पतरी**–पादत्राण । **पौ**–पाँव । **काँख**–बगल ।

(५) **इकसर**–अकेले ।

३४५

(दिल्ली;[१] बीकानेर)

फुन आसिखा[१] लाग[२] वह देई । जो कछु बँहभन[३] बूझी सेई ।१
देत आसिख्या[४] कुँवर जो चीन्हा । घर क पुरोहित चरचै लीन्हा ॥२
कुँवर जो[५] निरख[६] नीक कै देखा । दूलभ पण्डित जानु[७] बिसेखा ॥३
फुनि पूछसि पण्डित कर[८] नाँऊ । नाँव कहउ[९] औ आपन ठाऊँ ॥४
कहिसि राइ[१०] हम दूलभँ नाऊँ । चन्दागिर जो हमारेउ[११] ठाँऊ ॥५
गनपत देव क[१२] पुरोहित बाँभन,[१३] पठयें तुम्हरे पास[१४] ।६
बहु दुख देखत आयउ[१५] मारग, मकु[१६] पूजी मन आस ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–असीस । २–लागा । ३–बँभनहुँ । ४–असीस । ५–× । ६–नायक । ७–जनौ । ८–कै । ९–कहौ । १०–राउ । ११–हमारा । १२–कर । १३–× । १४–पटयउ । १५–बहुत देखि दुख आयेउ । १६–मिलेहु ।

१—इस प्रतिमें पंक्ति ४ और ५ की अर्धालियोंका क्रम १, ४, २, ३ है।

टिप्पणी – (१) आसिका–आशीर्वचन ।
(२) आसिख्या–आशीर्वचन ।
(३) निरख नीक कै देखा–ध्यानपूर्वक देखा ।

३४६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पिता नाँउ सुनि जिउ घबरावा[1] । फुर कहु दूलँभ[2] पितैं[3] पठावा ॥१
अउर[4] इहाँ मुहि काउ न काजा[5] । बिनु पठये आँवउँ जिह[6] राजा ॥२
कुसल पिता कै पूछउ[7] तोही । माता कुसल[8] कहहु सब[9] मोही ॥३
अउर[10] कुटुँब कै पूछउ[11] बाता । सब कै कुसल कहहु निरबाता[12] ॥४
खेम कुसल सबकै है राया[13] । बहुत भेंट तुम्ह कँह मन माया[14] ॥५
यहि सँदेस लिखि पठयें,[15] कहहु तो सो सब देउँ ।६
जो र कहा उन्ह सो कहु मोसंउ[16], माथ परिछि कै लेउँ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति ।
(१) (बी०) गहबरि आवा; (ए०) सीव सुनी गहबरी आवा । २–(ए०) सभ । ३–(बी०) तोहिं पिता । ४–(ए०) औरो; (बी०) और । ५–(ए०, बी०) इहाँ दहु का मोहि काजा । ६–(बी०) जेहि आवों । ७–(ए०, बी०) पूछौं । ८–(बी०) कुसर । ९–(ए०) दहुँ । १०–(ए०, बी०) और । ११–(ए०, बी०) पूछौं । १२–(बी०, ए०) निराता । १३–(ए०) राजा । १४–(ए०) बहुतन्ह बैठि बोलहु मन माया; (बी०) बहुत तपहिं तुम्ह कहुँ दिन माया । १५–(ए०) अेह संदेस लिखि पठइन्हि; (बी०) बहु संदेस कहि पठइन्हि । १६–(बी०, ए०) × ।

टिप्पणी –(७) माथ परिछि कै लेउँ–स्नेह की अभिव्यक्तिके निमित्त स्नेहीके सिरपर विशेष रीतिसे हाथोंकी परिक्रमा ।

३४७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पहिले पिता क[1] सुनहु सँदेसा । जिह[2] दिन संउ र[3] चलहु[4] परदेसा ॥१
तिह[5] दिन संउ[6] उन्ह[7] छाड़उ राजू । नेगी सबै चलावहिं[8] काजू ॥२
रोवत नैनहि दिस्टि[9] घटानी[10] । अन न खाहि पियहिं नहिं पानी ॥३
औ अस[11] कहँहि कि कहियहु[12] जाई । नदी तीर कर बिरिख गिराई[13] ॥४
खसैं[14] जो आहु[15] कहिहु काहा । बिरध भयेउँ[16] जर छाड़ेउ आहा[17] ॥५
तुम्ह[18] बिनु कहहिं[19] अस यह आहै[20], जस दिन सूर बिहून ।६
चाँद तराइन[21] बिनु निसि[22] गहन[23], जगत चहूँ[24] दिसि सून ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति।

१-(बी०) कर। २-(ए०, बी०) जेहि। ३-(ए०, बी०) सो रे। ४-(ए०, बी०) चलेहु। ५-(ए०, बी०) तेहि। ६-(ए०, बी०) सौं। ७-(ए०) उन। ८-(ए०, बी०) चलावै। ९-(ए०) आखिनि दीठि; (बी०) आँखिन्ह डीठि। १०-(ए०, बी०) खुटानी। ११-(दि०) आस। १२-(ए०) कहिअवहु; (बी०) कहियौ। १३-(ए०) नदी तीर कै बरगुन आई। १४-(ए०) गये। १५-(ए०) अैहौहु; (बी०) आवहु। १६-(ए०, बी०) भये। १७-(बी०) छाडै चाहा; (ए०) छवौ चाहा। १८-(ए०) तोह; (बी०) तुम। १९-(ए०) कहहि; (बी०) कहेहु। २०-(ए०) अैस मोहि अहौ; (बी०) अस अहै मोहि। २१-(ए०, बी०) तरैयन। २२-(ए०) निसु; (बी०) कुल। २३-(ए०, बी०) ×। २४-(ए०) चौंह।

टिप्पणी—(५) खसैं–गिरनेपर। आहु–आओ। करिहहु–करोगे। बिरध–वृद्ध। जर–जड़।

(६) बिहुन–बिना।

३४८

(दिल्ली; एकडला)

जस र[1] मँदिर चाहै भहराई[2]। वस हौं भयउँ[3] देखु मोहि आई ॥१
टेकहु मँदिर खाँभ दइ[4] आई। नाँहुत[5] अबहि परिह भहराई ॥२
चाँद सतायस हौं होइ[6] रहा। चाहै खिनक अमावस गहा ॥३
अँजुरि पानि जस[7] जिउँ मोरा। बेग आउ मुख देखउँ[8] तोरा ॥४
जियतैं मुख[9] दिखरावहु आई। मुऐं रहहि[10] पछताउ[11] न जाई ॥५
यह सँदेस तुम्ह दीतन्हि[12], सौंत मन सुन लेहु[13] ।६
चित उचाइ[14] यहि ठाँउँ सेंउ[15], सुदिन पयाना देहु[16] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–जो रे। २–(दि०) बहराई। ३–मैं भएव। ४–दे। ५–नाहीं तौ। ६–होए मैं। ७–जैस। ८–देखौं। ९–जियत मोहि। १०–रहे। ११–पछताव। १२–तोह दीतीन्हि। १३–सौन सुनिअ कै लेहु। १४–उचाव। १५–सौं। १६–पयानेव देहु।

टिप्पणी—(१) भहराई–गिरना। वस–वैसी। हौं–मैं।

(२) देवहु–सहारा दो। खाँभ–खम्भा। परिह–पड़ेगा।

(३) चाँद सतायत–कृष्ण पक्षकी चतुर्दशीका चाँद।

(४) अँजुरि–अँजली।

(६) सौंत–स्थिर।

३४९

(दिल्ली)

मातैं यह सन्देस पठावा। एकहि ठाँउँ दुहौं गिर आवा ॥१
अउर सँदेस सुनहु एक भारी। राजकुँअरि जिह बिहयहु बारी ॥२
वहिक सँदेस लेत हिय फाटा। जानु करज कटारिंह काटा ॥३
नगर सुबुध्याँ उतरउँ आई। माँस एक लै गयउ बिलाई ॥४
पूछसि नायक किंह हुत आवा। मैं आपुन बोलेउँ सब भावा ॥५
धाइ पाउ दोइ मोरे धारि क, आइ परी सहराय।६
कहै हियों संग आवौं तोहे, मोहि ऊपर बिस खाइ ॥७

टिप्पणी—(७) हियो–यहाँ भी ।

३५०

(दिल्ली)

गिर परि के राखेउ बोराई। रहहु देवस दस आनौं जाई ॥१
तो यह हम कहँ कहिसि सँदेसा। अइहाँ कार जोगिन कर भेसा ॥२
बिरह बियोग संताप बखानी। पान फूल कछु साथ न मानी ॥३
दन्द उदेग उचाट सँताई। रोवइ झुरवइ कछु न सुहाई ॥४
सीस रूख वैं तेल बिसारा। निसि बासर जोवइ तुम्ह बारा ॥५
जो कोउ पंथी आउ बिदेसी, आस लुबुध तिंह पूछ।६
माँसा नास रकत न राती, पिंजर रहउ जो छूछ ॥७

टिप्पणी—(५) जोवइ–जोहती है। बारा–रास्ता।

३५१

(दिल्ली)

सखी सहेलिंह बैठहिं आई। बोरावहिं बोराइ न जाई ॥१
बात कहत तो उतर न देई। खिन खिन मर मर साँसैं लेई ॥२
नाच कोड कछु नगर जो होई। सखी मँदिर चढ़ि देखैं सोई ॥३
उवहु बुलावहिं देखहु आई। कहियो देखै तहाँ न जाई ॥४
पिय बिन अउर न देखौं काहू। देखें बोलैं जासेंउ लाहू ॥५
फूटहिं नैन तरक कै, जो देखौं औराँह।६
रसना थकेउ है सखी, बिनु पिउ बोलाहँ ॥७

टिप्पणी—(४) कहियो–किसी भी दिन।

३५२

(दिल्ली)

निस वासर यहि भाँत गँवावइ । औ बहु दुख मुँह कहत न आवइ ॥१
दिया मंदिर न जारै काऊ । उजियारे पिय बिन का पाऊ ॥२
उजियारा कै काह करंजी । पिय बिन जीवन कछु न गुंजी ॥३
पिय बिन सेज जगत अँधियारा । दिया क जार न होइ उजियारा ॥४
सखी काउ समुझावइ गई । उतर तिह सहलिह दई ॥५
पिय बिन दिया न जारहों, बरु अँधियारहिं सुक्ख ।६
क उजियार राहै सखी, काकर देखों मुक्ख ॥७

टिप्पणी—(७) काकर–किसका ।

३५३

(दिल्ली; बीकानेर[1])

औ बहु दुख कैसहिं न घटाहा[1] । देखहु आइ बूझ मन माहीं[2] ॥१
दौं क परम पतिह[4] एक जानी । एकहिं देखे[5] सबहिं[6] बखानी ॥२
जो चित होइ सो करै[7] विचारी । तिह[8] सेउ और काउ[9] बुधि भारी ॥३
कुँवर कहा दूलभ सुनु बाता । चालहों देवस पाँच कै साता[10] ॥४
इँहाँ क[11] समाँधान[12] कछु कीजै । तो[13] पयान वह देस कहँ[14] दीजै ॥५
महते लोग बुलाइ[15] कै, करों इहाँ क समाधान[16] ।६
उवइ अगस्त घटै जग पानीं, तुरियहिं[17] देउँ पलान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–औ बहुत दुख मोहि कहै न जाई । २–देखहु बूझि अपने जिय माहीं । ३–दहु । ४–सुनहु । ५–देखि । ६–सबै । ७–करहु । ८–तुम्ह । ९–को रे । १०–इस पंक्ति का पाठ उपलब्ध नहीं है । १०–इहँका । ११–समधान । १३–तो रे । १४–वहि दिसि दीजै । १५–बोलाइ । १६–समधान । १७–तुरियन ।

टिप्पणी—(५) समाँधान–व्यवस्था ।

(६) तुरियहिं–घोड़ोंको । पलान–जीन ।

३५४

(दिल्ली; बीकानेर)

पगी चपटी कछु[1] न सुहाई[2] । बाँभन[3] कहेउ सँदेस जो आई ॥१

१—सम्मेलन संस्करणमें पंक्ति ४ नहीं है । उसमें बीकानेर प्रतिमें केवल ६ पंक्ति होनेकी बात कही गयी है ; किन्तु माताप्रसाद गुप्तका कहना है कि इस प्रतिमें यह पंक्ति है । (भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ९०) ।

बहु[4] मरोह मन[5] पिता क[6] आवइ[7] । सुनि[8] सँदेस रुपमनि[9] सत भावइ[10] ॥२
गयेउ[11] मँदिर मँह पैठेउ जाई[12] । मिरगावति[13] सेंउ बात चलाई ॥३
आजु पिता कर मानुस[14] आवा । कुसल खेम पिताकर[15] पावा ॥४
माँ पितैं[16] बहुत कै कहा । मींचु नियर अब आयउ अहा[17] ॥५
बिरध भयहुँ अब आवहु कूसर[18], पँडुर[19] भये ते केस ।६
लोयन दिस्टि घटी न सूझ,[20] देखु आइ[21] हम भेस ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–किछु । २–सोहाई । ३–दूलभ । ४–हियै । ५–×। ६–कर । ७–आवै । ८–पुनि । ९–रुकुमिनि । १०–क सतावै । ११–कुँवर । १२–बैठेउ जाई । १४–मिरगावती । १४–बाँभन । १५–कुठाव कै । १६–माता पिता । १७–(दि०) आहा । १८–ब्रिध भयेउ आवहु । १९–पंडर । २०–खुटानी सूझै न । २१–आइ देखु ।

टिप्पणी—(२) मरोह–मया, ममता ।
(५) मींचु–मृत्यु ।
(६) पंडुर–श्वेत; सफेद ।

३५५

(दिल्ली;[1] बीकानेर)

इह[1] कहि मातैं पितै बुलावा[2] । जा तुम्ह कहहु सोइ हम भावा ॥१
मिरगावतीं कहा[3] सुनु[4] सामीं । तू[5] प्रभुता हो र[6] तुम्ह[7] कामीं ॥२
जो चित मन रूचत[8] तुम्ह[9] होई । जो पिय[10] कहहु सर ऊपर सोई ॥३
राइभान कँह[11] दीजै[12] राजू । बिलँब न लाइ कीजै आजू[13] ॥४
सब नेगिंह कँह कहइ[14] बुलाई । जब लगि आउँ ईंह[15] पितहिं मिलाई॥५
काज राज कै सँवारहु[16], जब लग राइभान है[17] बार ।६
अलप दिनँह[18] मँह[19] आउब मिलिकै[20], छाड़ि देह जिय घार[21] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–यह । २–माता पिता बोलावा । ३–कहै । ४–सुनहु तुम । ५–तुम । ६–रे । ७–तुम । ८–रुचिता । ९–तुम । १०–रे । ११–कहुँ । १२–दीजियै । १३–लाइयै गवनियै आजू। १४–कहौ । १५–आवहिं । १६–कर सँवरहु । १७–हहि । १८–दिवस । १९–महँ फिर । २०–× । २१–छाँड़ि जाहिं जीय अधार ।

टिप्पणी (२) प्रभुता–स्वामी । कामीं–कर्मी; सेवक; काम करनेवाला ।

१—इस प्रतिमें पंक्ति ३–४ क्रमशः ४–३ हैं ।

(३) रूचत–अच्छा लगता हो ।
(७) अलप (अल्प)–थोड़ा । आउब–आऊँगा ।

३५६

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर[१])

चारि बरिस कंचनपुर भये । राजकुँवर कहँ सुख महँ गये[१] ॥१
दोइ[२] पूत मिरगावति जाई[३] । राइभान कह रानि बुलाई[४] ॥२
करनराइ छोटहिं[५] कर नाँऊँ । राइभान सेंउ[६] दूसरें[७] ठाँऊँ ॥३
राइभान[८] कहँ दीन्हेउँ[९] टीका । आनि भई जस राम कली का[१०] ॥४
राघोबंस राम औतरा । जानहु उहै सपूरन करा[११] ॥५
महतै लाग समुँद गै[१२] देस क[१३], दाम दई[१४] बहु घोर ।६
बेगर बेगर सब कहँ कापर[१५], नेत बँधाइ[१६] पटोर[१७] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति ।
१–(ए०) सुख सौं राजकुँवर कह गये । २–(ए०, बी०) दुइ रे । ३–(ए०) के भये; (बी०) जाये । ४–(ए०) रायभान बलराजो ठाये; (बी०) देखत लोयन जाहि सिराये । ५–(ए०, बी०) छोटे । ६–(ए०, बी०) सौं । ७–(ए०) दूसरी; (बी०) दूसरि । ८–(बी०) रायभान । ९–(ए०, बी०) दीन्हेव । १०–(बी०) कि लीका । ११– (ए०) सोन कै करा । १२ (ए०, बी) समदी कै । १३–(ए०, बी०) × । १४–(ए०) दिये; (बी०) दिहे । १५–(ए०) कपरा; (बी०) × । १६–(बी०) बँधावा; (ए०) बँधाये । १७–(ए०) थोर ।

टिप्पणी—(४) राम कलीका–कलियुगका राम ।
(६) गै–गये । देस क–सारे देशके । दाम–एक सिका (देखिये पीछे १४६।५ की टिप्पणी) । घोर–घोड़ा ।
(७) बेगर-बेगर–अलग-अलग । कापर–कपड़ा; वस्त्र । नेत्र–रेशमी वस्त्र । पटोर–सूती वस्त्र ।

३५७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

उवे[१] अगस्त घटा[२] जग पानी । पाखर तुरियहिं भयउ[३] पलानी ॥१
पँवरि[४] बारि बाहर कै तानां । नगर देस महँ परेउ[५] भँगानाँ ॥२
राजकुँवर[६] चन्द्रगिरि[७] जाई । पूतहिं कंचनपुर बैठाई[८] ॥३
आधा[९] राजपाट सँग लीन्हा । आधा राइभान[१०] कहँ दीन्हा ॥४

१—इन प्रतियोंमें पंक्ति ४–५ क्रमशः ५ और ४ हैं ।

घाउ[११] निसान अमर [घहराना*][१२]। दर परिगह[१३] सब साज बुलाना ॥५
सुदिन पूछि बाँभन कहँ, सुघरी[१४] बाहर मेलेउ[१५] जाइ ॥६
करनराइ मिरगावति[१६] रानी[१७], ये[१८] संग लीनहि[१९] राइ[२०] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति।

१–ए० ×; (बी०) उयेउ। २–(बी०) घटेउ। ३–(ए०) भये; (बी०) भयेव। ४–(बी०) पवरी; (ए०) ×। ५–(ए०) परेव; (बी०) परा। ६–(ए०) ×। ७–(बी०) चन्द्रागिरि। ८–(ए०, बी०) बैसाई। ९–ए० ×। १०–(ए०, बी०) रायभान। ११–(ए०) अ। १२–(दि०) गहराना; (ए०) घरहाना; (बी०) फहराना। १३–(ए०) बिरगह; (बी०) बिग्रह। १४–(ए०) ×। १५–(ए०, बी०) मेलेव। १६–(ए०) मिरगावती। १७–(ए०) ×। १८–(ए०) अपने; (बी०) ए। १९–(ए०) लीन; (बी०) लिहेसि। २०–(ए०) लाइ; (बी०) लगाई।

टिप्पणी—(१) उवै–उगे।

(२) **भगाना**–भगदड़।

(३) **घाउ**–चोट। **निशान**–डंका। **दर**–दल, सेना। **परिगह**–वासुदेव शरण अग्रवालने पदमावतमें एक स्थलपर (१२९।८) इसका अर्थ राजाके ठाट-बाटकी सामग्री—छत्र, चँवर आदि किया है और कहा है कि इसे परिच्छद भी कहते हैं। अन्यत्र (४९६।८) कहा है कि हिन्दी परगई (सं० परिग्रह) का एक अर्थ निवास, अन्तःपुर, घर भी है। यह अर्थ उनके अनुसार १२९।८ में ठीक बैठता है। किन्तु प्रस्तुत तथा पदमावतके ४९६।८ के प्रसंगोंको देखते हुए दोनों ही अर्थ संगत नहीं जान पड़ते। संस्कृत और हिन्दी कोशोंमे परिगह और पतिग्रहका अर्थ सेनाकी सुरक्षित टुकड़ी अथवा पिछला भाग भी पाया जाता है। हमारी समझमें दर-परिगहसे तात्पर्य सेनासे है।

(६) **मेलेउ**–निकल पड़ा।

३५८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति[१] सब सखीं बुलाई[२]। अहीं[३] जहाँ लहि[४] भेटैं आई ॥१
भेंटी बहुतैं समुँद बहु देई[५]। गिंय लाइ कै रोवइ सेई[६] ॥२
दई[७] मिराउ[८] त[९] होइ[१०] मिरावा[११]। दूरि देस कहँ चित्त उचावा ॥३
बिछुरीं[१२] रानी मिलत दुहेला[१३]। वह[१४] सुख गा जो एक संग खेला ॥४
जरम सुहागिनि होयहु[१५] रानी। जब लग गाँग जवन[१६] मँह[१७]पानी ॥५
समुँदै सबै सहेली दइके[१८], दोमन घर कहँ जाइ[१९] ।६
मिरगावति[२०] अब बिछुरीं हम सेंउ[२१], मिलहिं कि मिलिहैं नाइ[२२] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(ए०, बी०) मिरगावती। २-(ए० बी०) बोलाई। ३-(बी०) रही। ४-(बी०) लहु। ५-(ए०) भेंटे बेरि समद तेहि देई; (बी०) भेंटे जो रे समद तेहि देई। ६-(ए०) सोई; (बी०) गीय लगाय बहु रोवै सोई। ७-(ए०) दैअ; (बी०) दइव जो। ८-(ए०) मेरावै; (बी०) मेरवै। ९-(ए०, बी०) तो। १०-(ए०) होअ। ११-(ए० बी०) मेरावा। १२-(ए० बी०) बिछुरत। १३-(ए०) आइ देवस दुहेला। १४-(ए०) उवह। १५-(ए० बी०) सोहागिनी होइहु। १६-(ए०) जोन; (बी०) जमुन। १७-(बी०) ×। १८-(ए०) दैके; (बी०) ×। १९-(बी०) बहुरि दुमनि भै जाहि; (ए०) है कै बहुरि दुमनि जाहि। २०-(ए०, बी०) मिरगावती। २१-(ए०) हमसे; (बी०) ×। २२-(ए०, बी०) नाहिं।

टिप्पणी—(१) भेंटै-मिलने।
(२) सेई-वह।
(३) मिराउ-मिलावे। मिरावा-मिलाप।
(५) गाँग-गंगा। जवन-यमुना।
(६) दोमन-उदास।
(७) नाइ-नहीं।

३५९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा[1] कछु[2] साँठो[3] लेई। बाट घाट कोउ माँग त[4] देई ॥१
बाँवन कोरि[5] भँडार लिवावहिं[6]। गाड़िहि[7] भरि कै साथ चलावहिं[8] ॥२
कंचनपुर सेउ कियउ[9] पयाना। कोस पाँच एक भयउ[10] मिलाना ॥३
राइभान[11] पहुँचावइ[12] आये। दोउ जनहिं अंको[13] लै लाये ॥४
कुँवर नैन डबडब[14] भरि आये। परहिं[15] आँसु जस[16] मोंति सुहाये ॥५
मिरगावति[17] रोवइ[18] गिय लाई[19], कस कै[20] जीहौं[21] माइ।६
राइभान[22] के बिछुरें खिन एक[23], मोकँह[24] जुग वर जाइ[25] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(ए०) कही। २-(ए०, बी०) कुछु। ३-(बी०) साँठा। ४-(ए०) माँग तो; (बी०) माँगै तेहि। ५-(ए०) कोटि। ६-(ए०) लेवावा; (बी०) लदावा। ७-(बी०) खाडहु। ८-(ए०) माल लेवावा; (बी०) साथ चलावा। ९-(ए०) सौं कीन्ह; (बी०) सौं कीय। १०-(ए०) भई; (बी०) भा। ११-(ए०, बी०) राय-भान। १२-(ए०, बी०) पहुँचावै। १३-(ए०, बी०) दुहू जनै आँको। १४-(ए०) डुबिडुबि; (बी०) डबडबाइ। १५-(बी०) चुँवहि। १६-(ए०) जनि। १७-(ए०,

बी०) मिरगावती। १८-(बी०) रोव; (ए०) दुवौ। १९-(ए०, बी०) लाइकै। २०-(ए०, बी०) कैसे। २१-(बी०) जीऊँ। २२-(ए०) कुँवरान। २३-(ए०) बिछुरी एक तिल। २४-(ए०, बी०) ×। २५-(ए०) पर जाय; (बी०) भरि जाय।

टिप्पणी—(१) साँठ–अर्थ, द्रव्य, धन। त–तो।
(२) कोटि–कोटि, करोड़।
(३) मिलाना–पड़ाव।

३६०

(दिल्ली; बीकानेर[1])

कुँवर कहा सब लोग बुलाई[1]। राइभान कै सेउ न चुकाई[2] ॥१
मोसेंउ अधिक इँह कै जानहु[3]। जो र[4] कहहि[5] सो[6] सब परवानहु[7] ॥२
महतैं लोग कँह[8] कहा गुसाईं[9]। यइ तो[10] रूपमुरारि कै ठाँई ॥३
नेगी हमहिं चलावहिं काजू[11]। बावन साख[12] इन्ह कर राजू[13] ॥४
इनहि के साख पै करहि जुहारू[14]। इन्ह सेउ[15] को र और[16] बड़वारू[17] ॥५
इहवइ[18] बात कै चिन्ता[19] न कीजइ[20], गवनइ आपुन[21] देस। ६
ई[22] राजा हम नेगी जरम क[23], ई सिर हम इँह केस[24] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१-बोलाई। २-रायभान कै सेवा न चुकई। ३-मोहि सेंउ अधिके जानेहु। ४-रे। ५-कहै। ६-से। ७-परिवानेहु। ८-महथै लोगन। ९-गोसाई। १०-एतौ। ११-काजा। १२-सखा। १३-राजा। १४-औ इन्ह हम करब जोहारा। १५-सै। १६-और कोरे। १७-बड़वारा। १८-एहि। १९-चिन्ता। २०-कीजै। २१-गवनियै आपने। २२-ए। २३-जनम कै। उन्ह सिर हम वेस।

टिप्पणी—(१) सेउ–सेवा। चुकाई–कमी।
(२) परवानहु–प्रमाणित करना; पूरा करना।
(६) इहवइ–इस। गवनइ–गमन कीजिये।
(७) केस–केश; बाल।

३६१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

यहि[1] रे बात कहि वै[2] बहुरे[3]। कुँवर पलान माँग[4] बहु घोरे ॥१
घोरहि[5] बहुतै चेरि[6] चढ़ाई। औ बहुतहिं कहँ डाँडि फँदाई ॥२
मिरगावति[7] चौडोल चढ़ाई। फाँद सिंहासन[8] चढ़ी जो[9] धाई ॥३

१–इस प्रतिमें पंक्ति ४ की अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

करनराइ[१०] धाइहि[११] कै कोरीं[१२] । दूध पियावत[१३] चली कचोरीं[१४] ॥४
नदी तीर एक[१५] मेलेउ[१६] जाई । जाँत पन्थ बहु साथ चलाई[१७] ॥५
एक देवस जो[१८] मेलान कर[१९] उहैं[२०], और[२१] देवस र[२२] चलाहिं[२३] ।६
जिह दिन[२४] राजुकुँवर क[रै*] पयानाँ,[२५] गाँव सहस मिलि जाहिं[२६] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०) येह; (बी०) यह । २–(ए०) ये । ३–(ए०, बी०) बहोरे । ४–(बी०) कहे । ५–(बी०) घोरेन्हि । ६–(ए०) चीरि । ७–(ए०, बी०) मिरगावती । ८–(ए०, बी०) सुखासन । ९–(बी०) सो । १०–(ए०, बी०) करनराय । ११–(बी०) धाई । १२–(बी०) कोरा । १३–(बी०) पियावति । १४–(बी०) कचोरा । १५–(बी०) गै । १६–(ए०, बी०) मेलेव । १७–(ए०) हाट पटन सब साथ चलाई; (बी०) हाट बाटन सब साथहिं नाई । १८–(ए०) रे; (बी) ×। १९–(बी०) करै । २०–(ए०, बी०) ×। २१–(ए०, बी०) दोसरे । २२–(ए०, बी०) ×। २३–(बी०) चल जाइ । २४–(ए०, बी०) जेहि दिन । २५–(बी०) कर मिलान; (ए०) कर पंथान । २६–(बी०) मिलै जाइ ।

टिप्पणी—(१) बहुरे–लौटे ।

(२) **डाँडि** (डाँडी)–डोली; एक आदमीको ढोनेवाली पालकी । **फँदाई**–व्यवस्था की ।

(३) **चौडोल**–चार कहारों द्वारा ढोई जानेवाली पालकी । **सिंघासन**–एक प्रकारकी पालकी । इसका सुखासन पाठ भी सम्भव है; पदामावत, मधुमालती आदि प्रेमाख्यानक काव्योंकी नागरी-कैथी प्रतियोंमें सुखासन पाठ ही मिलता है । तदनुसार माताप्रसाद गुप्तने स्व-सम्पादित ग्रन्थोंमें सुखासन पाठ ही ग्रहण किया है । किन्तु अन्यत्र कहीं भी पालकीके अर्थमें सुखासन शब्द का प्रयोग नहीं मिलता । वासुदेव शरण अग्रवालने स्वसम्पादित पदमावतमें इस बातकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है कि आइने-अकबरी (ब्लाखमैन कृत अनुवाद, पृष्ठ २६४) में अबुलफजलने पालकी, सिंघासन, चौडोल और डोली, चार प्रकारके यानोंका उल्लेख किया है जिन्हें कहार (पालकी बर-दार) कन्धेपर उठाकर चलते हैं । अतः आइने-अकबरीके अनुसार हमने यह पाठ चन्दायनमें स्वीकार किया है । यहाँ भी वही पाठ ग्रहण किया गया है ।

(४) **कोरीं**–(स० क्रोड) गोद । **कचोंरी**–कटोरी ।

(५) **मेलेउ**–ठहरा ।

(६) **मेलान**–पड़ाव ।

३६२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

एक मेलान[१] भयउ[२] वँह[३] आई। जहाँ गड़रियें[४] किय[५] पहुँनाई[६] ॥१
राजकुँवर वहि[७] चीन्हेउ[८] ठाउँ। कहिसि गड़रियहि[९] देखै जाऊँ ॥२
जाइ[१०] गड़रियहि देखे काहा। आँधर भयउ[११] बैठि वह[१२] आहा ॥३
दूबर भा[१३] सठि[१४] मरि कै रहा। कुँवर पूछि[१५] वह[१६] बातैं कहा[१७] ॥४
जे बातैं नायक सेंउ[१८] कही। कहिसि आँख हम जोगियेउ दही[१९] ॥५
कुँवर कहा सब लोगहिं[२०] आगे, औगुन केरी बात[२१] ।६
बाट माँझ कै जादु[२२] पसारिसि, पंथहि रहा लै खात[२३] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(बी०) मिलान। २–(ए०) भएेव; (बी०) भवा। ३–(ए०, बी०) तहँ। ४–(बी०) गड़रिया। ५–(बी०) की; (ए०) बाट। ६–(ए०) देखाई। ७–(ए०) अेह; (बी०) वह। ८–(ए०) चीन्हेव; (बी०) चीन्हिसि। ९– बी०) गडरियै। १०–(ए०) जाए; (बी०) जाय। ११–(ए०) भएव; (बी०) भवा। १२–(ए०) अेह। १३–(बी०) ×; (ए०) भवा। १४–(ए०, बी०) सुठि। १५–(बी०) कहा। १६–(ए०) उवह। १७–(बी०) कहाँ। १८–(ए०, बी०) सौं। १९-(ए०, बी०) जोगी डही। २०–(ए०, बी०) लोगन्ह। २१–(ए०) जो हुती उकरी बात; (बी०) जो होत ऊकरि बात। २२–(ए०, बी०) जाल। २३–(ए०) रोकि रहा लै घाट; (बी०) जो बाँझत तेहि खात।

टिप्पणी—(४) दूबर–दुर्बल; दुबला। सठि–शठ; दुष्ट।

३६३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा जो वहि कहँ[१] पावसि। काह करहु[२] वहि मार उड़ावसि ॥१
कहि[३] मानुस मानुस नहिं खाई। हौं वहि खावउँ[४] नहिं[५] हाडौ जाई[६] ॥२
कुँवर कहा तैं बहुतै खाये। मरै क मन्द दिन अब तिह आये[७] ॥३
छाड़उ वहि[८] बिसवास कै[९] बाता। खायउ[१०] बहुतै[११] [कइकै][१२] घाता ॥४
हमहु[१३] परे हुत फाँद[१४] तिहारे[१५]। उबरे[१६] तो[१७] बिधि केर उबारे ॥५
हौं अहौं उहि[१८] जोगी पाहुन,[१९] जैं लीन्हों[२०] सब[२१] साँठ ।६
काह[२२] चलै अब[२३] तोरेउ[२४] यहि ठाँ,[२५] मारौं खाँडैं काँठ[२६] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(बी०) का। २–(ए०, बी०) करसि। ३–(ए०, बी०) कह। ४–(ए०, बी०) उहि खाँव। ५–(बी०) न। ६–(बी०) देऊँ। ७–(ए०) मरहु भले ही अब मन्द

दिन आये; (बी०) मरबेहु भलेहिं मद दिन आये। ८–(ए०) उए; (बी०) अब। ९–(ए०, बी०) की। १०–(ए०) खाये, (बी०) खायेव। ११–(बी०) बहुत। १२–(दि०) लइके; (बी०) जो लै लै; (ए०) किए नि··· १३–(बी०) हमहूँ। १४–(बी०) फन्द परे हुते। १५–(ए०) तोहारे; (बी०) तुम्हारे। १६–(बी०) उबरेंउ। १७–(ए०) सो। १८–(ए०) उबह; (बी०) वह। १९–(ए०) ×। २०–(ए०) लीन्हेव; (बी०) जो तोरतेहेहु। २१–(बी०) ×; (ए०) तोर। २२–(बी०) कब। २३ (बी०) ×। २४–(बी०) तोर; (ए०) तोरा। २५–(ए०) ×; (बी०) एहि ठाँव। २६–(बी०) काढ़ि।

टिप्पणी—(४) बिसवास—विश्वासघात।

(५) फाँद—फन्दा। तिहारे—तुम्हारे। उबरे—निकले। केर—के।

३६४

(दिल्ली; बीकानेर)

अबहूँ झूठ न बोलब[१] छाड़सि। पिछली[२] बात कुदन्तहि काढसि[३] ॥१
चीन्हसि बोल फुरहिं[४] वह जोगी। सूख गयेउ जनु[५] बरिस क रोगी ॥२
हिय मँह कहिसि मीचु अब आई। आँख नाँहिं[६] किहँ[७] जाउ पराई ॥३
कुँवर कहा जनि[८] जिय कहँ डरही[९]। वै[१०] सब छाड़[११] जो राखी गिरही[१२] ॥४
कुँवर जो चर देखै जाई[१३]। साथ गड़रिया लीन्हि[१४] धराई ॥५
चले जो चर देखे कुँवर[१५], हाड़ रहै लै साँख[१६]।६
खाइसि एक न छाड़सि इँह[१७] मँह[१७] मानुस नाँहि न पाँख ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—बोलिब ना। २—पाछिलि। ३—मडत महिं गाडसि। ४—फुरहु। ५—जस। ६—न आहि। ७—कहँ। ८—जिनि। ९—जियहिं डरासी। १०—वैइ। ११—छाँडु। १२—रखे गरासी। १३—कुँवर रहा चूरि गै देखौं जाई। १४—लिहिसि। १५—जाइ चूरि देखै कहा। १६—पै संख। १७—×। १८—नाउँ न पंखि।

टिप्पणी—(१) बोलब—बोलना।

(४) गिरही—कैद।

(७) पाँख—पक्षी।

३६५

(दिल्ली; बीकानेर[१])

कुँवर कहा यह बड़ेउ[१] वलाई। मारी[२] वाट कै जाइ मँडाई ॥१

१—दोनों प्रतियोंमें पंक्ति ३-४ परस्पर स्थानान्तरित जान पड़ती हैं। साथ ही दोनों पंक्तियोंकी उत्तरवर्ती अर्धालियाँ प्रायः एक-सी हैं, जिनकी कोई संगति नहीं है। पंक्ति ४ का मूल पाठ निश्चय ही भिन्न रहा होगा।

दूलँभ कहा दयी यह[2] मारा । आँख नाँहि[4] अब कइसेंउ[5] पारा ॥२
चरकै[6] मानुस लै[7] उदराई । बहुरि आपु रे[8] भिलानहिं जाई ॥३
बोलि पथरिया चर उदराई । कुँवर हँसत भिलानहिं जाई ॥४
भिनुसारैं फुनि[10] कियेउ[11] पयाना । दिन दिन नगर[12] आइ नियराना ॥५
कोस तीस एक तिह ठाँ[13] सेंउ, नगर सुबुद्धया आहि ।६
कुँवर[14] दूलँभ पठये अगुमन[15], तूँ[16] रुपमनि[17] ठाँ[18] जाहि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—बड़ी । २—मारै । ३—यहि दइकै । ४—न आहि । ५—कैसे । ६—चूरि पै । ७—लाई । ७—आप बहुरि । ९—चूरि । १०—पुनि । ११—किये । १२—मारग । १३—तेहि ठाऊँ । १४—कुँवर जो । १५—पठावा अगमन । १६—× । १७—रुबुमिनि । १८—पहुँ ।

टिप्पणी—(१) भिनुसारैं–प्रातःकाल ।
(५) अगुमन–आगे ।

३६६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

खरभर परेउ[1] सुबुध्या गढ़ा[2] । राजा एक नगर कहँ चढ़ा ॥१
साजहिं कोट सँवारहि खाई । ठाँउ ठाँउ[3] सब मता कराहीं[4] ॥२
बहुतै लोग निकरि[5] कै भागे[6] । सूर जो आहे[7] सिंघ जिमि[8] गाजे ॥३
देवराइ[9] सब लोग हँकारे[10] । मन्त्री सबै[11] मतै बैसारे[12] ॥४
कीजै कहा[13] मन्त्र[14] सब देहू । भरमैं मन्त्र[14] न आवइ[15] केहू ॥५
भूपति आहे[16] जो खतरी[17] उन्ह[18] महँ[18], बोलहिं[19] परे अपान[20] ।६
राजा बैठ रहहु तुम्ह[21] गढ़[22] महँ, हम जानहिं वह[23] जान ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१—(बी०) परा । २–(ए०) सारि भरी परी सुबुधेया गढ़ा । ३–(ए०, बी०) ठाँव-ठाँव । ४–(ए०) सब पौरि बँधाहीं । ५–(ए०, बी०) निकसि । ६–(ए०, बी०) भाजे । ७–(ए०, बी)० अहे । ८–(बी०) होइ । ९–(ए०, बी०) देवराय । १०–(बी०) हँकराये । ११-(ए०) बुधि । १२–(बी०) बैसाये । १३–(ए०) काह । १४–(ए०) मता । १५–(ए०, बी०) आवै । १६–(ए०, बी०) अहे । १७–(ए०, बी०) खत्री । १८–(ए०) × । १९–(बी०) बोलैं । २०–(ए०) बरमे अपार ; (बी०) बर रे अपान । २१–(बी०) तोह; (ए०) घर । २२–(ए०) × । २३–(बी०) वै ।

टिप्पणी—(१) खरभर—हलचल ।
(२) ठाउँ ठाउँ–स्थान-स्थानपर । मता–परामर्श ।

(३) निकरि–निकल। सूर (शूर)–वीर। जिमि—समान। गाजे—गरजे।
(४) हँकारे—बुलाया।

३६७

(दिल्ली; बीकानेर)

भयउ मन्ता[1] सब लोग बहोरा। खरभर गाँव[2] परा अँहडोरा[3] ॥१
नगर लोग अन पानि न भावइ[4]। रुपमनि[5] कर जीउ गहिगहि आवइ[6] ॥२
सखी सहेलीं बैठी आहीं[7]। कहहिं आजु[8] तुम्ह[9] का गहिगहीं[10] ॥३
जिह दिन सेंउ तुम्ह[11] बिछरेउ साँई। कहियेउ[12] न देखिहु[13] आजुकै[14] नाईं ॥४
कै र चाह कछु पिय के पाई[15]। यह[16] अनन्द जिय माँझ न जाई[17] ॥५
सो दिन सखी होई का[18], जिह[19] पावउँ[20] पिय चाह।६
तन मन जीवन बलि करौं, अउर वस्तु का आह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—भा मन्त। २–नगर। ३–अँदोरा। ४—खावा। ५—रुकुमिनि। ६—गहगहाइ आवा। ७—सखि पास उनि बैसी अही। ८—कहिसि। ९—तुम। १०—गहगही। ११—जेहि दिन हुतै तुम। १२—कहियो। देखेंउ। १४—आजकी। १५—कै किछु चाह पीय कै आई। १६—तेहि। १७—मँहि चह-चहाई। १८—होइहिं कस। १९—जेहि। २०—पाऊँ। २१—और बस्त है काह।

टिप्पणी–(१) बहोरा—लौटे। अँहडोरा—हाहाकार।
(२) अन पानि—अन्न-पानी। गहिगहि—गद्‌गद।

३६८

(दिल्ली, बीकानेर)

बहुत देवस चिन्ता[1] मँह गयई[2]। इह दिन कछु अगुमन भयई[3] ॥१
सुख निंदरा दुहुँ लोयन लागी[4]। सपनाँ देखै लागि सुभागी[5] ॥२
जानु चहूँ जग उनै जो आवा[6]। चंचल चमक असाढ़ जनावा ॥३
बक पाँतीं[7] बादर मँह आई। सारंग मधुर बैन चलाई[8] ॥४
दादुर बोलहिं सबद सुहावा[9]। पपीहैं[10] चहु दिस पीउ बोलावा[11] ॥५
आईं[12] वीरबहूटी बन कचुआ, राता चीर सँवारि[12]।६
अस सपनाँ रितु बाहर[13], सूत[14] देखै लागि सुनारि[15] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—चित। २—गयो। ३—किछु आगमन भयो। ४—सुख निद्रा लोइनहु

लागी। ५-सभागी। ६-चहु दिसि उनै मेघ जनौ आवा। ७-बग पाँति। ८—सारंग मजूर बजन चिल्लाई। ९—सोहावा। १०—पपिहा। ११-पिउपिउ लावा। १२—आई बीरबहूटी रतक (?) चुव × × सँवारि। १३—बहार। १४—×। १५—लाग सोनारि।

३६९

(दिल्ली; बीकानेर)

फुनि जनु[1] सघन धार[2] बरिसाई। धरती हरियरि भयउ[3] सुहाई ॥१
बोलहिं मोर कोलाहर[4] होई। रितु अनूप बिरसै सब कोई ॥२
बनखँड पलुहे सायर भरे। उखठे[5] रूख तेउ ऊभे[6] हरे ॥३
रहस उठा[7] जीउ बिहसति जागी। झँरकीं[8] सेज दोमन भइ[9] लागी ॥४
पूछहिं सखी कुँवरि कहु[10] बाता। रहसति उठी दोमन कस[11] धाता ॥५
सखी हम इह सपनाँ[12] सोवत[13], देखेंउ[14] अस र[15] अनूप।६
सेज सूत[16] हौं झरकी[17] फिर[18] मैं[18], तिंह रे भरेउँ यह[19] रूप ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-जो। २-[धार*] सघन। ३-भई। ४-कोराहल। ५-उकठे। ६-सेउ भये। ७-रहसति उठि। ८-छरगी। ९-दुमनि मुख। १०-कह। ११-उठेउ दुमनि केह। १२-सखी हे हम सपना। १३-×। १४-देखा। १५-रे। १६-सूनी। १७-छरकी। १८-×। १९-तेहिरे फिरेउ हम।

टिप्पणी—(२) **कोलाहर**-कोलाहल।

(३) **पलुहे**-पल्लवित हुए। **सायर**-सागर। **उखठे**-सूखे। **रूख**-वृक्ष। **तेउ**-वे भी।

३७०

(दिल्ली; बीकानेर)

कहै विचार सखी एक लागी। सपनाँ अस को पाउ सुभागी[1] ॥१
उनै जानु तुम्ह आयउ साईं[2]। चन्दन माँग[3] बक पाँत[4] जो आई[5] ॥२
सारंग पपिहा दादुर मोरा। बाज[6] बधावा मन्दिर तोरा[7] ॥३
बीरबहूटि कर[8] सपन अमोला। राता[9] चीर पहिरिहहु[10] चोला ॥४
[सघन देखेउ औ भुँइ हरी। सेज पिरम रस तुम कहँ धरी][11] ॥५
सूख पलुह[12] जस बनखँड बरखा[13], ऐस[14] सपन जो पाउ[15]।६
बीजु जो देखी[16] सपनैं, फेरि सौत साथ पिय आउ[17] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–कोइ देख सभागी। २–उनै जो आइहि तुम्हार। ३–भग। ४–बग पाँति। ५–सोहाई। ६–बजै। ७–तूरा। ८–बीरबहूटी कर। ९–रत। १०–पहिरि हौ; (दि० इतर पाठ) पहिरि तन। ११–(दि०) पंक्ति लुप्त। १२–पलुहा। १३–×। १४–अस। १५–सपना कोइ पावइ। १६–देखेहु। १७–सौरि साथ लै आवइ।

३७१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहिसि दई[1] वह[2] देवसो कोई। पिउ आवइ[3] सपना फुर होई ॥१
वहै बात[4] कहत हुत[5] बागी। बाँभन[6] आयउ[7] पँवरि[8] दुवारी ॥२
प्रतिहार कहँ[9] कहिसि जो[10] जाई[11]। कुँवरिहिं जाइ[12] सँदेस कहाई[13] ॥३
अस[14] कहु जाइ कुँवर फुनि आवा। सुना[15] पँवरियँ उठि कै धावा ॥४
ततखन[16] रुपमनि[17] काग उड़ावइ[18]। उड़हु काग जो साँई[19] आवइ[20] ॥५
दूध भात तिंह[21] देहौं[22] भोजन[23], औ सोने कै[24] पाग।६
आजु साँई[25] जो आवइ फुनि जैं[26], उड़ि[27] र जाहु तुम्ह[28] काग[29] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) अै दैअ; (बी०) कहिसि दइव। २–(ए०) उवह। ३–(ए०, बी०) आवै। ४–(ए०) जो है; (बी०) वह रे। ५–(ए०) कहती है; (बी०) बहुत हुती। ६–(बी०) दूलभ। ७–(ए०, बी०) आअेव। ८–(बी०) पौरि। ९–(बी०) सैं। १०–(ए०) तु; (बी०) तू। ११–(ए०, बी०) जाही। १२–(ए०; बी०) जाए। १३–(ए०, बी०) कहाही। १४–(ए०) ×। १५–(बी०) सुनि। १६–(ए०) लीखन। १७–(बी०) रुकुमिनि। १८–(ए०, बी०) उड़ावै। १९–(बी०) साईं जो। २०–(ए०, बी०) आवै। २१–(ए०, बी०) तोहि। २२–(ए०) दीहौं। २३–ए० ×; (बी०) भोजन देहौं। २४–(ए०) की। २५–(ए०) सामी। २६–(ए०, बी०) ×। २७–(ए०) रे। २८–(ए०) तोह। २९–(बी०) उड़हु सभागे-काग।

टिप्पणी—(१) देवसो–दिवस भी।

३७२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बाँह[1] उभै[2] कै काक उड़ानाँ। ततखन आइ[3] सँदेस तुलाना ॥१
सुना[4] सँदेस कुँवर गा आई। कंचुकी[5] तड़क तड़क[6] उड़[7] जाई ॥२
साँवर बरन भयउ[8] सुनि राता। दुख भगान[9] मुख आयउ[10] गाता ॥३

सूखि रही हुत जानु[11] बिचारी[12]। सुनतहि हुती[13] जइस हुत[14] बारी ॥४
बरिया[15] कछु रे काग गल गयीं। अउर[16] तरकि चूना सब भईं ॥५
काग उड़ावत[17] धन[18] घरी[19], आइ[20] सँदेस भरकि।६
आधी बरिया[21] काग गल, आधी गई तरकि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) जाह। १–(ए०) ऊभि। ३–(ए०) आए; (बी०) आय। ४–(बी०) सुनत। ५–(बी०) कंचुकि। ६–(बी०) तरकि तरकि; (ए०) तरकि। ७–(बी०) उर। ८–(ए०, बी०) भयेव।। ९–(ए०) त दुख भागा; (बी०) दुख भागेव। १०–(ए०, बी०) आयेव। ११–(बी०) जनौ। १२–(ए०, बी०) सुपारी। १३–(ए०, बी०) भई। १४–(ए०) जैसी हुती; (बी०) ×। १५–(ए०) बलया; (बी०) बरया। १६–(ए०) और; (बी०) औरु। १७–(ए०, बी०) उड़ावति। १८–(ए०, बी०) धनि। १९–(बी०) खरी। २०–(ए०) आए; (बी०) आयेउ। २१–(ए०) बलया; (बी०) बरया।

३७३

(दिल्ली; एकडला[1]; बीकानेर)

कुँवरि कहा[1] वह[2] दूलँभ आवा। दइ[3] बुलाइ[4] वहि परसों[5] पावा ॥१
पाउ खेह आँखिह लै आँजों। जीह[6] काढ़ि तरुआ वहि[7] माँजों[8] ॥२
धाइ[9] पँवरियें[10] दीन्हि[11] बुलाई[12]। पूछइ[13] लाग सँदेस अघाई[14] ॥३
कहिसि सँदेस[15] जो र[16] कछु[17] आहा[18]। मिरगावति[19] साथ फुनि[20] कहा ॥४
सखी कहा[21] मैं सपन[22] बिचारा। मोर कहा सपनैं[23] पतिपारा[24] ॥५
रुपमनि[25] कहा जाहु तुम्ह[26] दूलभ, पितहि देहु इह[27] चाह।६
नगर न कछु[28] भौ मानै जिय महँ[29], राजकुँवर वह[30] आह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कहे। २–(ए०) उवह। ३–(ए०, बी०) देहु। ४–(ए०, बी०) बोलाय। ५–(ए०, बी०) परसों वोहि। ६–(बी०) जीभ। ७–(बी०) तरवा वोहि। ८–(ए०) पूरी पंक्ति नहीं है। ९–(ए०) धाय। १०–(ए०) पँवरिआ; (बी०) पौरिये। ११–(ए०) दीन्ह; (बी) दीन। १२–(ए०, बी०) बोलाई। १३–(ए०, बी०) पूछै। १४–(ए०, बी०) कहाई। १५–(ए०) सँदेसा। १६–(ए०, बी०) रे। १७–(ए०) कुछु; (बी०) किछु। १८–(ए०, बी०) अहा। १९–(ए०, बी०) मिरगावती। २०–(ए०) साथहु सुनि। २१–(बी०) कही काह। २२–(ए०, बी०) सपनु।

१—इस प्रतिमें दूसरी पंक्ति नहीं है। इसमें पंक्ति ३, ४, ५ क्रमशः २, ३, ४ के रूपमें हैं और पंक्ति ५ के रूपमें सर्वथा नयी पंक्ति है।

२३-(ए०, बी०) सपना । २४-(ए०) पाँचवीं पंक्तिके रूपमें—रूपमनि कहा कहत है कोई । आवत आह कुँवर वह सोई ॥ २५-(बी०) रुकुमिनि । २६-(बी०) तोह । २७-(ए०, बी०) यह । २८-(ए०, बी०) कुछु । २९-(ए०) × । ३०-(ए०) सो ।

टिप्पणी—(१) **परसों**—स्पर्श करूँ ।

(२) **पाउ**—पैर । **खेह**—धूलि । **आँजों**—अंजनकी भाँति लगाऊँ । **जीह**—जीभ । **तरुआ**—तालू । **भाँजों**—साफ करूँ ।

(३) **पँवरिये**—द्वारपाल ।

३७४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूँलँभ[1] जाइ[2] राइ[3] सौं कहा । सभा लोग सब बैठेउ[4] आहा ॥१
नगर जो परा हुतेउ[5] अहँदोरा[6] । सान्त[7] भई मन का[8] वह[9] रोरा[10] ॥२
राइ कहा उन्ह आगे[11] जाई[12] । गारो दै कुँवर[13] लै आई[14] ॥३
इहाँ[15] बात बहु[16] कुँवर जो कही । मिरगावती सों जो कछु[17] अही ॥४
कहसि बिहाहि[18] न छाड़ी जाई[19] । औ जो कछु[20] कहहु सो किये सिराई[21] ॥५
मिरगावती बूझि मन देखा[22], अब न चली[23] कछु[24] मोर ।६
कहिसि सोइ सिर ऊपर मोरें, जो रुचत हिय[25] तोर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) सभ । २-(ए०) जाए; (बी०) जाय । ३-(ए०, बी०) राय । ४-(ए०) बैठेव; (बी०) बैठा । ५-(ए०) हुतेव; (बी०) परा जो होत । ६-(ए०) आहि डोरु; (बी०) अँदोरा । ७-(ए०, बी०) सान्ति । ८-(ए०, बी०) गा । ९-(ए०, बी०) वहि । १०-(ए०) रोरू । ११-(ए०) आगे उन्ह । १२-(बी०) जइयै । १३-(ए०, बी) कुँवरहि । १४-(बी०) अइयै । १५-(बी०) इहाँ रे । १६-(ए०, बी०) × । १७-(ए०, बी०) कुछ; (बी०) किछु जो । १८-(ए०, बी०) बियाही । १९-(ए०) न छाडै; (बी०) छाड़ि न । २०-(ए०, बी०) × । २१-(ए०) सेराई । २२-(ए०) देखी । २३-(ए०, बी०) चलै । २४-(ए०) कुछु; (बी०) किछु न चलै अब । २५-(बी०) है ।

टिप्पणी--(१) **रोरा**—परेशानी ।

(२) **गारो दै**—गले लगाकर ।

(६) **मोर**—मेरा ।

(७) **तोर**—तुम्हारे ।

३७५

(दिल्ली; बीकानेर)

राजा इहाँ भयउ असवारू[१]। दर परिगह संग भयउ अपारू[२] ॥१
कुँवर इहाँ सेउ कियउ[३] पयानाँ। राजो[४] आइ संगति[५] नियरानाँ ॥२
राजा देख कुँवर [ऊतरा*][६]। राजा[७] भयउ[८] उतरि कै[९] खरा ॥३
कुँवर पायहि[१०] कहँ बाँह पसारी। राइ उठाइ दीन्हि अँकवारी ॥४
भये असवार दोउ[११] जन चले। खेम कुसल[१२] पूछहिं दोउ[१३] भले ॥५
बातें[१४] करत नगर मँह पैठे[१५], सब काई देखै लाग।६
साह महाजन करहिं निछावर[१६], धन धन कुँवार[१७] कै भाग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–राय इहाँ सै भवा असवारू। २–लिहेहि अपारा। ३–सैं कीय। ४–राजा। ५–सगित। ६–(दि०) अतूरा; (बी०) उतरा। ७–राजा। ८–पुनि। ९–भा। १०–पाइ। ११–दुवौ। १२–कुसर। १३–दहुँ। १४–बात। १५–आये। १६–न्योछावरि। १७–धन रुकुमिन।

टिप्पणी—(२) राजो–राजा भी।
(३) खरा–खड़ा।

३७६

(दिल्ली; एकडला;[१] बीकानेर[१])

मारग नेत पटोर बिछाये[१]। पँवरहिं[२] गरगज बाँधि सुहाये[३] ॥१
चढ़ि[४] धौराहर देखहिं रानी। राजकुँवर आवहिं[५] किह[६] बानी ॥२
कर पसारि वहि वहि दिखरावइ[७]। राजकुँवर सुन्दर वह [आवइ*][८] ॥३
राजकुँवर पर चँवर[९] ढराहीं। छात[१०] मेघडम्बर तिह[११] छाहीं ॥४
धनि रुपमनि[१२] जैं यह[१३] वर पावा। दई[१४] गुसाइँ[१५] जोग मिरावा[१६] ॥५
पैठेउ[१७] आइ[१८] मँदिर मँह गाजत[१९], बाजै लाग बधाउ[२०]।६
रुपमनि[२१] मनसा पूजी मनकी[२२], राजकुँवर घर आउ[२३] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) बिछाई। २–(ए०) पटोरन्हि। ३–(ए०, बी०) सोहाये। ४–(ए०) चहि। ५–(ए०, बी०) आवै। ६–(ए०, बी०) केहि। ७–(ए०) उहि उहि देखरावै; (बी०) वोहि वह देखरावै। ८–(ए०, बी०) आवै; (दि०) आहै। ९–(ए०, बी०) चौर। १०–(बी०) छत्र। ११–(बी०) बहु। १२–(बी०) रुकुमिनि। १३–(ए०) जे अस; (बी०) जो यह। १४–(ए०) दैअ; (बी०) दैव। १५–(ए०, बी०) गोसाईं।

१—इन दोनों प्रतियोंमें पंक्ति ३-४ क्रमशः ४,३ हैं।

१६-(ए०, बी०) मेरावा। १७-(ए०, बी०) पैठे। १८-(ए०) आए। १९-(ए०, बी०) ×। २०-(ए०) बाधाए; (बी०) बधाव। २१-(बी०) रुकुमिनि। २२-(ए०, बी०) ×। २३-(ए०) आए; (बी०) आव।

३७७

(दिल्ली; बीकानेर)

बिरह सुरुज[1] कर आउ घटानी[2]। अस्त भयउ किंह जाइ[3] न जानी[4] ॥१
भोग चाँद आयउ[5] उजियारा। सैन[6] मँदिर बहु भाँति सँवारा ॥२
रुपमनि[7] कै सिंगार तहँ आई। ठाढ़ भई बहु मान कराई ॥३
कुँवर कहा कस नियर[8] न आवहु। कहिसि कुरंगिन धनिह बुलावहु[9] ॥४
बोलत लाज न आवइ[10] ताहीं। नैन सौंह कै वालहि मोहीं ॥५
बरया **भंजन कर गहन, कुच मंडन भौ ढीठ।६**
तरल बीजु भौ सौं बन्धों,[11] **दै जे गयउ ह**म[12] **पीठ ॥७**

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१-सूर। २-आव खुटाना। ३-भयेउ केहु जात। ४-जाना। ५-चन्द आयेउ। ६-(बी०) सबै। ७-रुकुमिनि। ८-नियरि। ९-कहिसि चक्रित घन डाढ़ि मिरावहु। १०-आवै। ११-त्रिभुवन बीच बाँधि हौं। १२-गये मोहि।

टिप्पणी—(१) आउ-आयु।

३७८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

हँसि[1] कै कुँवर चीर[2] कर गहा। बाँह[3] मोरि कै[4] मुकै[5] चहा ॥१
पिता[6] सपत सो छाड़ न[7] चीरू[8]। जाइ[9] गहहु मिरगावति खीरू[10] ॥२
अब जिउ मोर तोहिं न[11] मिलाई। काह[12] करौं हौं सखिह[13] पठाई ॥३
राजकुँवर[14] चौदह बुधि[15] जानै। मान करै वह[16] हँसि हँसि मानै ॥४
तिरी[17] सुभाउ मान कर[18] भाऊ। नहिं नहिं[19] करै न मानै काऊ ॥५
नहिं नहिं[20] करत भा[21] ऊपर[22] कुँवर[23], गहि आन सेज बैठाइ[24]।६
तिह[25] तिरी[26] पसँगै[27] कवन[28] गुन, मान भाव न कराइ[29] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) असि। २-(बी०) चीर कुँवर। ३-(ए०) पाव; (बी०) पुनि। ४-(ए०) कर। ५-(ए०) मोके; (बी०) मूकै। ६-(ए०) बिना। ७-(बी०) तुम्ह छाड़हु। ८-(बी०) चीरा। ९-(ए०) जाए; (बी०) जाय। १०-(ए०) चीरू; (बी०) खीरा। ११-(बी०) न तोहि। १२-(बी०) कब। १३-(ए०, बी०) सखिन्ह। १४-(ए०, बी०) कुँवर चतुर। १५-(बी०) बिधि। १६-(ए०) जो। १७-(बी०)

त्रिया। १८-(ए०) कै; (बी०) गुन। १९-(बी०) ना ना। २०-(बी०) ना ना। २१-(ए०) कुँवर भौ बिरहाह; (बी०) कुँवर आनि। २२-(ए०) आनि सेज बैठाए; (बी०) भुजवर गहि बैसाइ। २३-(ए०, बी०) तेहि। २४-(बी०) त्रियहिं। २५-(ए०) अखते; (बी०) बिसमौं का। २६-(ए०) कौन। २७-(ए०) कराय।

३७९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

जोबन[1] साँजैउ[2] गही[3] दुसारी। जीउ बहलाइ[4] कण्ठ सेंउ धारी[5] ॥१
खोलि चौक दोइ बात कहाई[6]। दुनिया रेन यह तर[7] हम आई ॥२
एती[8] बात सुनु[9] पिय[10] भारी। बिनु जिय रही पिरित न तारा[11] ॥३
दसयें दाउ[12] [दई*][13] सत राखा। बाँउ[14] चार होउ[15] हम साखा ॥४
बेदनों[16] बात छाड़[17] जिय करी। अति[18] चतुराई निभायहि करी[19] ॥५
जो र जिह जग जानै बात[20], दूतचार[21] तुम्ह[22] पास ।६
बहुत चरित चतुराई सर[23] बासा[23], सौ सौ एक एक साँस ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) चापट। २-(ए०) साज; (बी०) साजि। ३-(ए०) गहै; (बी०) किही। ४-(ए०) जीव बर लाये; (बी०) जो पर लाइ। ५-(ए०) कन्त सौं ठारी; (बी०) कन्त सों दारी। ६-(बी०) कहाही। ७-(ए०) अहेरे; (बी०) बहुरि। ८-(ए०) बीती; (बी०) बीता। ९-(बी०) सुनहु। १०-(ए०) अेह। ११-(ए०) पचती अहिहि प्रीति नहिं तोरी; (बी०) बाचति रही प्रीति नहिं तोरी। १२-(ए०, बी०) दाँव। १३-(ए०) दैअ; (बी०) दइय। १४-(ए०) नाव; (बी०) बाँव। १५-(ए०, बी०) रहेव। १६-बेदु; (बी०) बेद। १७-(ए०) छाड़; (बी०) छाँड़ु। १८-(बी०) अब। १९-(ए०) पठाइन्ह केरी; (बी०) फबहि न तोरी। २०-(ए०) चौर जाह जग जानै; (बी०) चौर चाहि जग जानियै बातैं। २१-(बी०) चरित्र। २२-(ए०) तोह; (बी०) तुम। २३-(ए०) ×; (बी०) सीखेउँ।

टिप्पणी—(२) चौक—दन्त-पंक्ति। दुतिया—द्वितिया।
(६) दूतचार—धूर्ताचार।

३८०

(दिल्ली; बीकानेर)

अब तो मैं[1] निहचो[2] कै बूझा। येहि जग दूसर अउर[3] न सूझा। १
दू औ एक न छाड़सि[4] नाहाँ। तो गुन अब बूझेउँ मन[5] माँहाँ ॥२
तेवरी[6] जुआ सरि[7] जिह[8] आवइ। दून किये र तुम्ह नीकैं लावइ[9] ॥३

खेल कियहु तू मैं[10] न सँभारा। भयउँ अमोली टूटि हारा[11] ॥४
तौ[12] मैं मरम न जानेउँ तोरा। अब रे खेल दिन[13] घटवँहु[13] मोरा ॥५
अब रे चीर[14] चर करों, खेल पिय की नहिं गौं[15] ।६
बिबि भुज बंधन बाँधहु[16], कुचहि[17] बीच राखों[18] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–मैं तू। २–निहचै। ३–और। ४–दुनै कियै न छाँड़ौ। ५–हिय। ६–तिउरी। ७–सारी। ८–जेहि। ९–दुनै कियै इतौ तुव गुन पावै। १०–खेलि गयेहु पै मैं। ११–रहेउ अमूलि तौ बी तुम्हारा। १२–तब। १३–देखहु तुम। १४–चपरि। १५–खेलि गहि आपहि लेउँ। १६–बाँधि के। १७–फुनि कुच। १८–रखौंउ।

टिप्पणी—(१) निहचों–निश्चय।

३८१

(दिल्ली; बीकानेर)

कियेउँ चीर चर[1] कन्त जोहारा। छाड़ न देउँ बाँत को मारा[2] ॥१
दुहुँ भुववर[3] बीच परहु जो[4] आई। छाड़ों तोहि न[5] सपत हम खाई ॥२
छाड़ छैल कीनहु[6] छरि मोहि। चलै[7] न देउँ सपत हम तोही ॥३
कुँवर कहा सुनु उतर हमारा। झागा[8] छोर गहु[9] हम[10] बारा ॥४
सेज पिरम रस मानै भोगू[11]। रस अहार अब दइ हम जोगू[12] ॥५
सूर उवहि[13] दिन होइहिं[14] रुपमिनि[15], जाइ रंग रस सार[16] ।६
कुँवर हाथ उर मेले, कर पल्लवँ[17] सो बार ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–गयेउ चपरि। २–छाड़हु नाट करहु अब सारा। ३–दुहु भुअ। ४–परेहु जु। ५–न तोहि। ६–गयेहु। ७–जाइ। ८–छग। ९–किहेहु। १० बड़ि। ११–मानहिं भोगा। १२–रस अहै हम देइब जोगा। १३–उयेहिं। १४–होइहैं। १५–X। १६–रुकुमिनि चउदरु सारु। १७–(दि०) बारन। १७–सेंउ मारू।

३८२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

अनपट[1] खोंटै[2] उर मेलहि[3] हाथा। गहहु जाइ[4] आनहु जिन्ह[5] साथा ॥१
कुँवर माँग[6] वह[7] सेज न देई। चिहुर खेलि[8] अधरन्ह रस लेई ॥२
करपल्लों नख सेंउ[9] कुच गहा[10]। उरध[11] साँस कै छाड़ै कहा[12] ॥३
सन्धि[13] गहै कुँभस्थल आई। आहै पुरुब कर मेंट[14] न जाई ॥४
सिंघ कै भयँ हम उरहिं छुपानी[15]। इनहि बिखम लागहिं अँकुतानी[16] ॥५

गहे कुँभस्थल सिंह भै, कामिनि उरहिं आबद्ध[16] ।६
लिहे पुरबकम न चलहि, बिलबैं निकरहिं कर हद्द[17] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) आव; (बी०) अब न । २–(ए०) खोंटि । ३–(बी०) मेलहु । ४–(ए०) जाय; (बी०) जाइ गहहु । ५–(ए०, बी०) जेहि आनेउ । ६–(बी०) माँगे । ७–(ए०) उवह । ८–(बी०) चिहुर गहे; (ए०) चीर गहसि । ९–(ए०) सै; (बी०) सौं । १०–(बी०) गहे । ११–(ए०) ऊध; (बी०) आध । १२–(ए०) गहा; (बी०) छाड़ेउ अहा । १३–(बी०) सिंघ । १४–(बी०) लिखे पुब्बखर मेंट; (ए०) अहे पखर मैंमत । १५–(ए०) सिंघ के भौं रही छपानी छाती ; (बी०) सिघन्ह कै भई आरहि छाती । १६–(ए०) हेटहि लाग तेहि बिखम काँती; (बी०) लगे बिखम तबहीं अकुतानी । १७–(ए०) कै कुँभस्थल सिंघकै, कमिनि उरही उवँ न । लिहे बीबवर नच लहि, बल भु नख कर मन ॥ (बी०) गहेउ कुभंस्थल सिंह होइ, उरहि समानी मुध । लिखे पुब्बखर चलहीं, बालम न खर जुध ॥

३८३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूत[1] रवन[2] निसि रंग रस[3] रहा[3] । पीउ मकरन्द पेम कर गहा ॥१
मधुकर केवइ[4] कँवल[5] बिसारा । मालति[6] परिमल कियउ[7] अहारा ॥२
भँवँर[8] पुरुख अपनेउँ न[9] होई । चाँड़ि[10] परै पै[11] मिलै न[12] सोई ॥३
रुपमनि[13] कर[14] मन पूजी[15] आसा । सौ सौ दुख काढ़ै एक साँसा ॥४
आसा लागि सहै दुख[16] कोई । पूजइ[17] आस[18] बिरथ[19] न होई ॥५
आसा सहन्त[20] दुखौं[21] गरु[22], भाव बन्धन अरम्भो[23] ।६
तो[24] इन्ह[24] उत्तिम संगेउ[25], जा कारन सहन्त[26] दुखो[27] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कुच; (बी०) रैनि । २–(ए० बी०) रॉव । ३–(बी०) तरंग निसि; (ए०) अस रंग उर । ४–(ए०) केंव; (बी०) केवहि । ५–(बी०) कमल । ६–(बी०) मालती । ७–(ए०) किएव; (बी०) कियेव । ८–(ए०, बी०) भौंर । ९–(बी०) आपन नहिं । १०–(दि०) चाड । ११–(ए०, बी०) बिनु । १२–(बी०) नहिं । १३–(बी०) रुकुमिनि । १४–(ए०, बी०) कै । १५–(बी०) पूजी मन । १६–(बी०) दुख सहै जो । १७–(ए०, बी०) पूजै । १८–(ए०, बी०) आस । १९–(बी०) न अबिरथा । २०–(ए०) सहहि । २१–(बी०) दुख । २२–(ए०) × ; (बी०) गरुवा । २३–(ए०) भार बीधनारंभो; (बी०) मा बिधना अरु भोग । २४–(बी०) होई । २५–(ए०) उन्ह; (बी०) × । २६–(बी०) संगत: (ए०) संगो २६–(ए०) सहिअै; (बी०) सहन्ति । २७–(बी०) दुख ।

३८४

(दिल्ली; बीकानेर)

रैन सपूरन सगुनहि भई[१]। तरुवर छाँह बहिरि[२] घन भई ॥१
पंखि जो तरुवर छाड़ेउ आहा[३]। आई बहुरउ नहिं किछु कहा[४] ॥२
उत्तिम सो जोन्ह मुँह पर आना[५]। बूझि रही मन बिलग न मानाँ ॥३
वै बंके दिन[६] चलि गये। जिह दियसहिं सुरजन[७] रिपु भये ॥४
एक निमिख वर[८] दोइ जग देवौं[९]। सो कहे मोल पइ दिन लेवौं[१०] ॥५
मोल नाँहि इह[११] दिन कर दोइ[१२] जग[१३], जिह[१४] दिन दुख[१५] तन तज्ज ।६
कुंजर बिरह परानेउ जीउ लै, पिउ केहरि हो[१६] गज्ज ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–सुख मँह गई। २–बहुरि। ३–अहा। ४–आयेउ बहुरि किछू नहिं कहा। ५–उत्तिम सजन मुँह पर न आना। ६–वै जो बाँके दिन तबके। ७–जिन देवसन सुरिजन। ८–पर। ९–देऊँ। १०–सौंधे माल न ए दिन लेऊँ। ११–न आहि एहि। १२–१३–×। १४–जेहि। १५–बिरह। १६–भे।

३८५

(दिल्ली; बीकानेर)

दन्द उदेग उचाट वियोगू[१]। इँह कै जींह परेउ वर सोगू[२] ॥१
करहिं मन्ता[३] अब कीजै काहा। सेउ किही तिह भयेउ न दाहा[४] ॥२
चलहु जहाँ मिरगावति[५] राँधा। सबई साँभर सकलहि बाँधा[६] ॥३
आई मिलि[७] मिरगावति[८] ठाँऊँ। आयसु[९] होइ बसहि[१०] तुम्ह गाँऊँ ॥४
मिरगावति[११] उन्ह आयसु[१२] दिया। गरहँहि कया गाँउ सब लिया[१३] ॥५
सुख अनन्द दोइ बहुमूली[१४], उनहि र निकासहि मारि[१५] ।६
गरहँहि कया गाँव सब ढूँढ़े[१६], खेलै लाग[१७] धमारि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–वियोगा। २–उन्ह कै जीय परा बड़ सोगा। ३–मता। ४–सेवा किही बहु भवा न लाहा। ५–मिरगावती। ६–सब लेहु बहु सँवर बाँधा। ७–मिले। ८–मिरगावती। ९–आइस। १०–बसियै। ११–मिरगावती। १२–आयस। १३–गरहिन्हि कया रङ्ग कुहलिया। १४–सुख आनन्द दुवौ रस बरसहिं। १५–जो उन्हहि निकारिन्हि मारि। १६–ढूँढ़हि। १७–लागि।

टिप्पणी–(१) जींह–जी। बर–बड़ा। सोगू–शोक।

३८६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुख अनन्द दुऔ रस[1] चले[2]। करै पुकार कुँवर सेंउँ चले[3] ॥१
कुँवर सभा बैठ हुत[4] जहाँ। कीन्हि पुकार लूट[5] कै[6] तहाँ ॥२
कुँवर कहा कस करहु पुकारा। बिरह वियोग[7] परी हम बारा[8] ॥३
हम तुम्हरे[9] पुर[10] बसहि[11] जो[12] आये[13]। तुम्हरे इहाँ उन्ह अवसर[14] पाये[15] ॥४
कुँवर कहा सँग आवहु मोरें। मार निपारों[16] उन्ह कँह[17] भोरे ॥५
राति गयी[18] रुपमनि[19] संग, भोर भयउ[20] उजियार ।६
भोग अनन्द रहस उन कहँ सँग[21], कुँवर भयेउ असवार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०) रिसि। २–(बी०) भले। ३–(बी०) पहँ चले; (ए०) सौं मिले। ४–(बी०) महँ बैठे। ५–(ए०, बी०) लौटि। ६–(बी०) गये। ७–(ए०) बिउग; (बी०) बिवोग। ८–(ए०) बरिअ हम मारा; (बी०) परा हम नारा। ९–(ए०) तोहरे। १०–(बी०) बर। १०-११–(ए०) परोसहि। १२–(ए०)×। १३–(बी०) आई। १४–(ए०, बी०) औसर। १५–(बी०) पाई। १६–(ए०, बी०) पवारौं। १७–(बी०) कहुँ। १८–(ए०) गए। १९–(बी०) रुकुमिनि। २०–(ए०) भएेउ; (बी०) भयेउ। २१–(ए०) रहस लै कै संग; (बी०) रहसि कै लिये।

३८७

(दिल्ली; बीकानेर)

जहाँ बैठि मिरगावत आही[1]। कुँवर कयउ पीठि दइ[2] रही ॥१
मनमँह[3] बूझि कुँवर अस कहा। मिरगावती कुहानेउ आहा[4] ॥२
तिंह[5] रस यह सेउ[6] बकतों बाता। एको दुख न रहै[7] जिंह[8] गाता ॥३
कहसि पौन पाहुना जो मैनी[9]। बदन[10] फिरेउ कस पंचम बैनी ॥४
हम देखत कस दीनहु[11] पीठी। चकित सोंह न[12] लावहु दीठी ॥५
कया जीउ मन मानिक मोरैं, हौं तूँ तूँ[13] हौं सोइ ।६
दूसर[14] को अस आहे यह[15] जग, जो र बराबर[16] होइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–अही। २–दै। ३–मनहिं। ४–कुहानी अहा। ५–तेहि। ६–इह सैं। ७–रहै न। ८–एहि। ९–कहेसि पवन वाहन जो नैनी। १०– बर्न। ११–दीन्ही। कहे न चक्रित धन। १३–×। १४–दोसर। १५–येहि। १६–बराबरि।

टिप्पणी—(२) कुहानेव–रूठी।

३८८

(दिल्ली; बीकानेर)

ईंह र[1] बात इह[2] कारन आवा। देस क ओरहन आइ मिटावा ॥१
उहो चेरि[3] एक सेउ कराही[4]। पाइ पखारी[5] पानि भराई[6] ॥२
सुनी बात यह चकित[7] हँसी। बदन बिरचि बोली[8] ससी ॥३
कहिसि[9] कुँवर वह बारि[10] बियाही। तूँ तो[11] रहिसि[12] रोझ कै ताही ॥४
कुँवर कहा वह[13] साँच न कोहू[14]। नैन देखि बूझउ इह मोहू[15] ॥५

वदन बिरचै रामाँ मुह सों, जियैं न वरजों नाँह[16] ।६
देखसि निरखि निहारि कै, जगत साखि[17] भराँह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१—यह रे। २—ऐहि। ३—एहउ चेरी। ४—सेवा करई। ५—पाँव पखारै। ६—पानी पियावई। ७—चक्रित। ८—बन्दन बिरचै बोलै। ९—कहेसि। १०—बरी। ११—तौ तूँ। १२—रहेसि। १३—दहु। १४—साँचहु कोही। १५—देखिके बूझहु मोहीं। १६—बदन बिरचेउ राम पिय, पिय जिय बिरचेउ नाहि। १७—चक्रित सखी भराहिं।

टिप्पणी—(१) **ओरहन**—उपालम्भ; शिकायत।
(२) **पखारी**—धोयेगी।

३८९

(दिल्ली; बीकानेर)

कुँवर बाँह गही कर बारी। ऊपर सेज आनि बैसारी ॥१
इह का[1] मन ऐसहिं यह[2] राखी[3]। अहो सेउ ऐसहि मुँह भाखी[4] ॥२
मिरगावति[5] जानैं हम चहा। रुपमनि[6] जान[7] कि[8] पेम हम[9] गहा ॥३
वेगर वेगर दुहों कर तोखू[10]। ऐसहि राखहि[11] न लागै दोखू[12] ॥४
एक देवस दूलभ हँकरावा। राजा सनाँ[13] कहाइ[14] पठावा ॥५

आयसु[15] होइ त गवनी,[16] कुसल जाउँ पिता कर[17] ठाँउ ।६
देवस बरस बर[18] जानों तबलग, जबलग उँहि[19] न मिलाँउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१—एहिका। २—इनि। ३—राखा। ४—वोहि सै फुनि एहि मुख भाखा। ५—मिरगावती। ६—रुकमिनि। ७—जानै। ८—×। ९—कर। १०—तोखा। ११—अैसे रखे। १२—दोखा। १३—सैनि। १४—कहै। १५—आइस। १६—तो गवनौ। १७—कै। १८—दिन कै वारिस पर। १९—जब लग पितहिं।

३९०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूलँभ[1] जाइ राइ सेंउ[2] कहा। कुँवर बिनति[3] अस कीन्हेउ[4] आहा[5] ॥१
पितैं[6] बहुत कै पठै बुलाई[7]। तुम्हहुँ[8] कहउ त[9] वेगि चलाई ॥२
राइ[10] कहा हौं कहै न पारउँ। जो इ[11] कहहिं[12] सीस[13] पर धारउँ[14]॥३
पितैं बुलाइन्ह[15] बरजि[16] न जाई। राजकुँवर कहुँ चाल कराई[17] ॥४
जो कछु[18] दायज दीतसि[19] आहा[20]। दूगुन दीतसि[21] औ अस कहा ॥५
राजा गनपतदेउँ सेंउँ[22] दूँलँभ, अस[23] गुजरहु[24] हम लागि।६
एक यहौं जस चेरी राजा,[25] करिहि रसोंई आगि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) जुलभ। २–(ए०, बी०) राय सो। ३–(ए०, बी०) विनती। ४–(ए०, बी०) कीन्हीं। ५–(ए०, बी०) अहा। ६–(बी०) पिता। ७–(ए०) पठए राई; (बी०) पठयेउ बुलाई। ८–(ए०) तोहउ। ९–(ए०, बी०) तो। १०–(ए०) राय। ११–(ए०) जो रे; (बी०) जो वै।१२–(ए०) कहहु सो;(बी०) कहहिं सो। १३–(ए०, बी०) सिर। १४–(ए०) बारौं; (बी०) ढारौं। १५–(ए०) बुलाएबि; (बी०) पिता बोलाये। १६—(बी०) बिलम। १७–(ए०) राजा कुल का चार कराई; (बी०) राजा गौने क चार कराई। १८–(ए०, बी०) कुछु। १९–(बी०) दीन्हेव; (ए०) दीतिसि। २२–(ए०, बी०) सौं। २३–(दि०) औ। २४–(ए०) गोजरहु; (बी०) गुचरयेहु। २५–(ए०) एहौ एक जस चेरी राजा कै; (बी०) एहउ चेरी एक राजा कै।

टिप्पणी—(४) बरजि–मना।
(७) गुजरहु–निवेदन करना।

३९१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूलँभ बोलि जननि[1] अस कहा[2]। मोरे जनम यहै धिय[3] आहा[4] ॥१
रानी सेंउ[5] अस करहु बिनाती[6]। हीन आहि यह[7] धिय कै जाती ॥२
दुखियार[8] होइ[9] न पावै मोरी। दुलभ कहिहु[10] चेरि हौं तोरी ॥३
औ जस जानहु कहिहु[11] सँवारी। एहिकै[12] बात मैं तुमहि[13] उभारी ॥४
जाति कै[14] दई[15] गोसाई मोरी। और किह[16] पूजहिं[17] उन्ह कै[18] जोरी॥५
इहै कुलवन्ति सुलाखन सरूप,[19] और[20] किह[21] पूजै कोइ।६
बारि[22] बियाही उत्तिम[23] सुबंस, अरु वह किह[24] सरवरि होइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) जतन। २–(ए०) कही। ३–(ए०) दुख। ४–(ए०) अही; (बी०)

अहा। ५–(ए०, बी०) सों। ६–(ए०, बी०) करेहु बीनती। ७–(ए०) बहु। ८–(ए०) दुखीअ। ९–(ए०, बी०) होय। १०–(बी०) कहेहु। ११–(बी०) जानहु तस कहेहु।१२–(ए०) येहि की; (बी०) यहिकै। १३–(बी०) तोहि; (ए०) तोहही। १४–(बी०) की; (ए०) क। १५–(ए०, बी०) धीय।१६–(ए०, बी०) कि। १७–(ए०) पूजिह; (बी०) पूजै। १८–(ए०) अेहिकी; (बी०) इन्हकी। १९–(बी०) ए कुलवन्ती सरूप सोलखिनि ; (ए०) अे कुलवन्ती सुलाखिनो। २०–(बी०) रूप। २१–(ए०) की ; (बी०) कि। २२–(ए०, बी०) बरी। २३–(ए०) उत्तिउँ। २४–(ए०, बी०) अरुधीकी।

टिप्पणी—(२) बिनाती-विनती ; निवेदन।

३९२

(दिल्ली; बीकानेर[1])

दूलभ जो आइ वचन सुनावा। राइ बहु दइ भला मनावा॥१
पुनि धिय कँह रोवइ गिय लाई[1]। बुधि बहु दइ के समुँद[2] चलाई॥२
कुँवर ठाँउ दूलभ लै आवा। चली बजाई सगुन भल पावा॥३
कुँवर कहा तिंह[3] मारग जाई। जिंह मारग कछु[4] अनों[5] न[6] पाई॥४
दूँलभ अगुवा होइ[7] जों[8] चलाई। जिंह[9] मारग सुख सेउ लै जाई॥५
दोउ चले जो दल सुहावन, सौ सौ लाग गुहार[10]।६
दिन बूड़इ जाइ मग खीन्हा, कुसल कहै करतार[10]॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–यह कहि रोवै गीय लाई। २–बहु विधि दैके समदि। ३–तेहि। ४–किछु। ५–अनवन। ६–×। ७–भै। ८–×। ९–जेहि। १०–ये पंक्तियाँ नहीं हैं।

३९३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चन्द्रागिरि नियरानेउ[1] आई[2]। दूलँभ पठये अगुमन[3] जाई[4]॥१
पठये[5] दूँलँभ राइ[6] के ठाऊँ। कुँवर इहाँ उतरे[7] एक गाँऊँ॥२
राजा मारग देखत अहा[8]। दुलँभा[9] जाइ[10] छाइ के रहा[11]॥३
बँभनहिं[12] कै कछु[13] चाह न पाई। मिलेउ आह कै नाँ र[14] मिलाई॥४
राजा यहै बात कहि रहा। दूलँभ आयउ[15] लोगहि[16] कहा॥५

---

१. इस प्रतिमें यह तीन कड़वकोंमें बँटा है। पहली पंक्तिके साथ ६ नयी पक्तियाँ मिलाकर एक कड़वक ; दूसरी-तीसरी पंक्तिके साथ ५ नयी पक्तियाँ मिलाकर दूसरा कड़वक और चौथी पाँचवां पंक्तिके साथ ५ नयी पंक्तियाँ मिलाकर तीसरा कड़वक है। और इन तीन कड़वकोंके साथ २ सर्वथा नये कड़वक भी है। ये सभी प्रक्षिप्त हैं और परिशिष्ट में संकलित किये गये हैं।

राजकुँवर लइ आयउ बाँभन[17], सौन[18] परी यह[19] बात ।६
दूँलभ आइ[20] राइ[21] के ठाँई, धाये[22] जन[23] सै सात ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(ए०, बी०) नियरानेव । २-(ए०) जाई । ३-(ए०, बी०) अगमन । ४-(ए०) धाई । ५-(बी०) पठयेव । ६-(ए०, बी०) राय । ७-(ए०, बी०) उतरेव । ८-(ए०, बी०) अहा । ९-(ए०, बी०) दूलभ । १०-(ए०, बी०) जाय । ११-(ए०) जोहारे कहा । १२-(बी०) बाँभन; (ए०) कुँवर । १३-(ए०, बी०) कुछु । १४-(ए०, बी०) कै नाहिं । १५-(ए०) आएव; (बी०) आवा । १६-(ए०, बी०) लोगन्ह । १७-(बी०) राजकुँवर पुनि आयेउ । १८-(बी०) स्रवन ; (ए०) सेव । १९-(बी०) यहु । २०-(ए०) आए ; (बी०) आय । २१-(ए०) राए । २२-(बी०) धाइ । २३-(बी०) जने ; (ए०) जना ।

३९४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूलँभ कहँ[1] लइ आइ[2] बोलाई । राजा कूसल पूछ सँकाई[3] ॥१
दूलँभ काह[4] बहुत दिन लाये । कुँवरहि कहाँ छाड़ि कै आये ॥ २
राजा कुँवर[5] संगति[6] नियराने[7] । जोजन[8] दस एक[9] आइ तुलाने ॥३
कियहि[10] मेलान एक हुत[11] गाँऊँ । मोहि पठयहिं[12] रउरे[13] कर[14] ठाऊँ ॥४
दर परिगह संग बहुत अपारा । दूरि[15] बयान[16] करै तो हारा ॥५

राउ पूछि दर परिगह[17] साहन[18], कित कर पायिसि[19] एत ।६
कहिसि दई उन्ह दीन्हों[20], करमहिं[21] तुम्हरे[22] आह[23] न[23] तेत[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) कहा । २-(ए०, बी०) लै आए । ३-(ए०) संगाई ; (बी०) पूछेनि कै आई । ४-(बी०) कहाँ । ५-(ए०, बी०) राजकुँवर । ६-(ए०, बी०) संगित । ७-(बी०) नियराना । ८-(ए०) जोजन । ९-(बी०) है । १०-(ए०) कीहे ; (बी०) आपु । ११-(ए०) है ; (बी०) कीन्हेउ एक । १२-(ए०, बी०) पठइन्हि । १३-(ए०, बी०) रउरे । १४-(बी०) × ; (ए०) के । १५-(ए०) दूर । १६-(ए०, बी०) पयान । १७-(ए०) बिगरह । १८-(बी०) कहाँ से । १९-(बी०) करकर पायेस । २०-(ए०, बी०) दीन्हेव । २१-ए० × ; (बी०) पुंनहि । २२-(ए०) तोहरेव ; (बी०) तुम्हारे । २३-(बी०) × ।

टिप्पणी—(१) सँकाई–शंकित होकर ।
(६) **साहन**–सैनिक । **ऐत**–इतना ।
(७) **तेत**—जितना ।

३९५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

फुनि[1] वह[2] बात[3] कहेउ[4] लागा। जिंह[5] बिधि कुँवर कै[6] जागेउ[7] भागा ॥१
मारग देवराइ[8] इक[9] राजा। बार तूर[10] राघो कर बाजा ॥२
तैं[11] सब राज दइ[12] धिय दीन्हीं। बात जो आही[13] कही[14] सब लीन्हीं ॥३
औ मिरगावनि[15] कै[16] सब कही। सुख दुख कै न कही किंह रही[17] ॥४
सुनि के राजहि बहु सुख होई। लोयन जोति भयउ[18] फुन सोई ॥५
रहा जो हींउ[19] अमावस[20], होइके[21] पूनेउ[22] भा तिंह[23] वेग ।६
बहिरात मढ़ि मण्डप आउ, द्रुत आइ देइ वै नेग[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) जो। २-(ए०) उह; (बी०) बै। ३-(बी०) बातैं। ४—(ए०, बी०) कहै सब। ५-(ए०,बी०) जेहि। ६-(ए०) क। ७-(बी०) जागे; (ए०) जागेव। ८-(ए०, बी०) देवराय। ९-(ए०, बी०) एक। १०-(ए०) तोर। ११-(बी०) तेइ। १२-(ए०) देए; (बी०) देइ। १३-(ए०) अही; (बी०) आहि। १४-(ए०, बी०) कहै। १५-(ए०, बी०) मिरगावती। १६-(बी०) की। १७-(ए०) सुख दुख की कहै नहिं रही; (बी०) दुख सुख केरि कहै सब लिही। १८-(ए०, बी०) भई। १९-(ए०) होतेव; (बी०) होत। २०-(दि०) अमास। २१-(ए०) कह। २२-(ए०) पूनिव। २३-(ए०, बी०) तेहि। २४-(ए०) भरहरात मढ़ि मण्डप, आए दिही उऐ टेक; (बी०) उदरत मंडप भरहरत, अएनि दीन्हि उन्ह थेग।

टिप्पणी—(२) बार-द्वार। तूर-(सं० तूर्य) तुरही; वाद्य-विशेष।

३९६

(दिल्ली; बीकानेर)

फाँद सिंघासन[1] राइ मँगावा। आगे[2] लइ[3] कुँव[र] कहँ आवा ॥१
कुँवर सुनाँ आवत है राजा। आयसु भयउ[4] बजावहु बाजा ॥२
बाजन बाजै लाग[5] निसाना। जानु[6] असाढ़ दइउ[7] घहराना ॥३
कुंजर बहुत[8] आहे[9] सइ[10] साता। चिंघरहिं[11] चलत जुरै[12] मैंमाँता ॥४
कटक साज कै भयउ[13] जो ठाढ़ा। बासुकि[14] डरहिं सीस न काढ़ा ॥५
राउ देख मन[15] रहसा, कहसि[16] कि[17] हम घर आहे पूत ।६
बायँ जाइ [अस*][18] आवइ[19], गाजत[20] और कोउ[21] जमजूत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१-सुखासन। २-आगू। ३-लेइ। ४-अइस भया। ५-लगे। ६-जानहु।

७–दैव । ८–हस्ति । ९–अहे । १०–सै । ११–चिंघरत । १२–आये । १३–मये । १४–बासुक । १५–कै । १६–X । १७–(दि०) आस । १८–पयज कै जो ऐसे आवइ । २०–X । २१–कवन ।

टिप्पणी—(३) निसाना–डंका । दइउ–मेघ ।

३९७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

राइ सिंघासन[1] नियर जो आवा । उतरा[2] कुँवर तुरिय पकरावा ॥१
पिता कै[3] पायहिं[4] परेउ[5] जो धाई । राइ[6] उठाइ रहा गिय लाई ॥२
करनराइ फुनि[7] पायन[8] लागे[9] । राइ[10] गोद लै उरहि चढ़ाये ॥३
कुँवरहि लिये सिंघासन बैठे[11] । कुँवर साथ नगर महँ पैठे[12] ॥४
जनँ पुरँगन बैठे अहें[13] । तेउ आपुँ उठि[14] देखै[15] गहें[16] ॥५
राजकुँवर मिरगावति[17] रानी[18], बैठी रुपमनि[19] आइ ।६
बहुत सिंघासन डाडी घोरहि, पलंकिह चढ़ी जो धाइ[20] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) वे गुजासन ; (बी०) राय सोखासन । २–(ए०, बी०) उतर । ३–(ए०) क । ४–(ए०, बी०) पाँव । ५–(ए०, बी०) परेव । ६–(ए०) राए ; (बी०) राय । ७–(बी०) फुनि ; (ए०) X । ८–(ए०, बी०) पायेन्ह । ९–(ए०, बी०) लाये । १०–(ए०, बी०) राय । ११–(ए०) गोदहि लिहे सुखासन बैठे ; (बी०) कुँवर के कहे सोखासन बैठा । १२–पैठा । १३–(ए०) जनि वरांगना बैठी अहीं ; (बी०) जननी बैरगिनी बैठी अहीं । १४–(ए०, बी०) आय उन्ह । १५–(बी०) देखत । १६–(ए०) गईं ; (बी०) रहीं । १७–(ए०) मिरगावती ; (बी०) मृगावती । १८–(ए०) X । १९–(बी०) रुकमिनि । २०–(बी०) बहु सुखासन डाँडी पलंकिह, चढ़ी जो आईं धाइ ; (ए०) हँसत सुखासन डाँडो पलगन्ह, चढ़ी जो धाय ।

३९८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

झमकत आइ[1] दुवउ[2] चौडोला[3] । चेरि[4] सहस दोइ[5] साथ अमोला[6] ॥१
दुवउ[7] आनि कै मंदिर उतारीं[8] । भेटै सब आयउ[9] परिवारी[10] ॥२
बहुतै[11] निछावरि भई[12] बधाई । अउर[13] बधाई ननद लै आई ॥३
कुटुँब जहाँ लहि[14] सब पहिरावा[15] । जाचक जन कहँ[16] बहुत[17] दिवावा ॥४
समुदि[18] सबै घरहि घर आये[19] । परवल अखर[20] लिहे ते पायें[21] ॥५

खेलैं हसैं दुहूँ सेंउ[22], रवन रंग रसपान[23] ।६
दुख त्रिसारि सुख भोजैं[24] कुल[25] महँ, दूसर[26] घटा[27] न जान[28] ॥

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) आये । २–(ए०) दुऔ ; (बी०) दुवौ । ३–(ए०) चौडोली । ४–(ए०,बी०) चेरी । ५–(ए०, बी०) दस । ६–(ए०) अमोली । ७–(ए०) दुऔ; (बी०) दुवौ । ८–(बी०) उतारा । ९–(ए०) सब आइ ; (बी०) आये सब । १०–(ए०) परिवारा । ११–(ए०) भेंट । १२–(ए०) होए ; (बी०) होइ । १३–(ए०, बी०) और । १४–(बी०) लहु । १५–(बी०) बहुरावा । १७–(बी०) कहुँ । १७–(बी०) बहुतै । १८–(ए०, बी०) समदि । १९–(ए०, बी०) आईं । २०–(ए०) पुरुव क आँखर ; (बी०) नौ निधि अखर । २१–(बी०) धाई । २२–(ए०, बी०) सैं । २३–(ए०) फिरि रा रंग रस मान; (बी०) रैनि राग रस मान । २४–(ए०, बी०) भूजैं । २५–(ए०, बी०) × । २६–(ए०) दोसर; (बी०) दोसरि । २७–(ए०) भय ; (बी०) कथा । २८–(बी०) मान ।

३९९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर[1] अहेरैं दिन एक जाई । मिरगावति[2] पँह ननद जो आई ॥१
कहिसि[3] कालिह रुपमनि[4] कर[5] ठाँऊ[6] । वात चलत है[7] तुम्हरैं[8] नाऊँ ॥२
मिरगावति[9] पूछसि[10] कस वाता । भौजी कहत[11] चढ़िह रिस[12] गाता ॥३
वैठी कहत संगि[13] सो आहीं[14] । मिरगावति[15] हम पूजैं नाहीं ॥४
हौं[16] वियाही कुलवन्ति[17] जो आही[18] । वह[19] रे उढ़रि[20] हम सरवरि नाहीं[21] ॥५

जो[22] यह वात सुनी मिरगावति[23], उठेउ कोह सिर पाउ ।६
वह रहे वरी[24] हम ऊपर वर कै[25], वात[26] जात[27] त्रिनुसाव ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०) अरुधि । २–(ए०, बी०) मिरगावती । ३–(ए०) रहिसि । ४–(बी०) रुकुमिनि । ५–(ए०, बी०) के । ६–(ए०) गाँऊ । ७–(बी०) हुती । ८–(ए०) तोहरी ; (बी०) तोहरे । ९–(ए०, बी०) मिरगावती । १०–(ए०, बी०) पूछै । ११–(बी०) पूछहु काह । १२–(ए०, बी०) जरिह तोह । १२–(ए०, बी०) सखिन्ह । १०–(ए०, बी०) अही । १५–(ए०, बी०) मिरगावती । १५–(ए०) मैं ; (बी०) हम । १७–(ए०, बी०) कुलवन्ती । १८–(ए०, बी०) अही । १९–(ए०) ओह । २०–(बी०) उढ़री ; (ए०) अरुधी । २१–(ए०, बी०) नहीं । २२–(ए०) अहै ; (बी०) × । २३–(ए०, बी०) मिरगावती । २४–(ए०, बी०) परी । २५–(बी०) जो यह । २६–(ए०, बी०) बाट । २७–(बी०) जाव ।

टिप्पणी—(३) **भौजी**–भाभी ; भाईकी पत्नी । **चढ़िह**–चढ़ेगा । **रिस**–क्रोध ।
(४) **उढ़रि**–अपहृता । **सरबरि**–बराबरी ।
(६) **कोह**–क्रोध ।

४००

(दिल्ली; बीकानेर)

चेरी सुनत रुपमनि[1] कै अही । कहिसि जाइ ऊहो[2] रिस दही[3] ॥१
रुपमनि[4] कहा कहति है साँचू । भेस भराइ[5] मुहिं सै गहि[6] नाँचू ॥२
बारक[7] भोरवनि ओकर[8] नाउँ । भोरवसि[9] लइ गइ आपन[10] गाऊँ ॥३
नारि छतीसी वहि मैं देखी । तिरिया[11]चरित न अउर बिसेखी ॥४
जालि नारि कै वह सेउ[12] लाजै । देस देस औ खँड खँड बाजै ॥५
मोहि सरि होइ न पाई[13], जो[14] वहि[14] सरग चढै[15] धस लेइ ।६
मिरगावति इँह सुन अनउतर, आइ ऊतर देइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।
१–सुनति रुकुमिनि । २–वहो । ३–डही । ४–रुकुमिनि । ५–फिराइ । ६–हमगै । ७ बालक । ८—वोकर । ९–भोरएसि । १०–लैकै अपने । ११–त्रिया । १२–से । १३–पावै । १४–× । १५–चढ़ि । १६–मिरगावती यह सुनि कै ।

टिप्पणी—(१) **अही**–थी । **उहो**–वह भी । **रिस**–क्रोध । **दही**–दग्ध हुई ।
(३) **बारक**–बालक । **भोरवनि**–भुलावा देनेवाली । **ओकर**–उसका । **भोरवसि**–भुलावा दिया ।
(४) **छतीसी**–मक्कार । **बिसेखी**–विशेष ।

४०१

(दिल्ली; बीकानेर)

कहिसि काह मैं सुनै न पावा[1] । यह रे कहत तिह[2] लाज न आवा[3] ॥१
कौन लाइ मुँह बोलसि नारी । बरबस पितै तों[4] मेलि उडारी[5] ॥२
राकस कह जो दीजै आनीं । सो बोलै आपुन[6] कँह रानी ॥३
सोवत छाड़ि[7] बात न पूछी[8] । अकलै बोलहिं[9] हम सेउ[10] जूझी ॥४
तू जो किह र सुहागिन[11] नाऊँ । मैंकें ससुरें कितहुँ[12] न ठाँऊँ ॥५
हों मैंकें सुठि मनयेउ[13] आदर, औ[14] ससुरे बहु चाउ ।६
तूँ बिलखै[15] नहिं गारो दुहुँ ठाँ, मान कितहु न साउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।
१–पाई । २–जिय । ३–आई । ४–बारि बैसि पिता । ५–अडारी । ६–से बोलवै

आपन । ७–छाँडिसि । ८–बूझी । ९–अबकै बोलसि । १०–सै । ११–तोहु कहाँ रे सोहागिनि । १२–कतहूँ । १३–मानियौ । १४–सौं । १५–बिलखी । १६–ठाऊँ । १७–कतहूँ नहि सॉउ ।

४०२

(दिल्ली; बीकानेर)

रुपमनि कहि[1] तोसेउ[2] को पारा[3] । जगमिलि आउ त[4] सो[5] सब हारा[6] ॥१
जिह[7] कँह वै सब आवहिं[8] काजा । जो वह करै सोइ वह[9] छाजा ॥२
काँदो कँह जो मेलेउ[10] ईंटा । दोख न मोर बहिरेउ थों[11] छींटा ॥३
लाख टकै कर मण्डप[12] जो[13] आहै[14] । काग बैठि तो फोरियहि[15] ताहै ॥४
तैं जो अवखर[16] मोकैं[17] कहा[18] । खाट भयउ मुहिं तिहसौं[19] बोला ॥५
राघोवंस सुद्ध कुल, परसहिं जे जगत सब पाँउ[20] ।६
धूरि जो कोउ[21] चाँद कहँ मेले, बहुरि आउ वहि[22] ठाँउ ॥८

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–कहा । २–तोमों । ३–पारै । ४–आवै । ५–से । ६–हारै । ७–जेहि । ८–आवहि वै सब । ९–सब । १०–मेली । ११–जो भरिये । १२–मण्डफ । १३–×। १४–आही । १५–फोरी । १६–ओखर । १७–मोहि कहँ । १७–बोला । १९–खाट भयेउ मुँह तोहि सै । २०–जपै जगत सब नाँउ । २१–कोइ । २१–आवै तेहि ।

टिप्पणी—(३) काँदो–कीचड़ । मेलेउ–डाला ।
(४) फोरियहि–फोड़ेगा ही ।
(५) अवखर–अनुचित बात । खाट–बुरा ।

४०३

(दिल्ली; बीकानेर[1])

और होइ तो रहै लजाई । रुपमनि[1] कहँ ढँग[2] करहु वड़ाई ॥१
पाउ परहु[3] महिं देइ[4] असीसा । पिता कै जो किरत दिन दिन बीसा[5] ॥२
मोर कहत[6] लै आयउ[7] तोही । सोइ फर अब देहि तूं[8] मोही ॥३
नीक कहौं[9] तो अवखर[10] पाई[11] । लागिसि करै सौत कर दाई[12] ॥४
मोहि[13] लगि गा[14] जोजन सैसाता । तोहि छाड़िसि पूछसि नहिं बाता ॥५
खरभर सुना[15] सासु गंगा,[16] आई उन्ह ठाँ[17] धाइ ।६
बहुवहिं[18] जूँझ बिसरिगा,[19] फेकरत[20] सास जो पहुँचसि[21] आइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–रुकुमिनि । २–धरि । ३–परसि । ४–देहु । ५–पिता गृह दिन करति पीसा ।

---

१. इस प्रतिमें पंक्ति ५ की अर्धालियाँ परस्पर हस्तान्तरित हैं ।

६—मोरे कहे। ७—आयेउ। ७—सेइ फल देतिहसि। ९—कियेउँ। १०—औखर। ११—पाये। १२—कै दाये। १३—हम। १४—गये। १५—सुन। १६—बहुवन कै। १७—तेहि ठाँउ। १८—बहुवन। १९—बिसरि गई। २०—×। २१—पहुँची।

टिप्पणी—(४) दाई—बराबरी।
(७) फेकरत—गरजती।

४०४

(दिल्ली; बीकानेर)

सासु जो आइ[१] दोउ[२] चुप रहीं। आपु आपु कहँ लाजहिं[३] गहीं ॥१
सास कहा तुम्ह किह अस बूझी[४]। आपुन[५] मँह अस जूझ जो[६] जूझी[६] ॥२
आस पास कर लोग जो सुनई। तुम्ह कँह सो कुलवन्ति न गुनई[७] ॥३
जात नीच अकुली[८] पै जूझा[९]। तुम्ह कुलवन्ति[१०] जूझ न बूझा[११] ॥४
जूझ तुम्हार मोह सेउ[१२] जानी। नेन न मिलिहिं तवहिं[१३] पहिचानी ॥५
सास दोउ वरजी हरकी,[१४] घर घर रहीं कुहाइ।६
कुँवर खेल अहेरा, ततखन घर मँह आइ समाइ[१५] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।
१—के आये। २—दुवो। ३—लाजन। ४—तुम जुझन बूझिये। ५—आपुस। ६—न जूझियै। ७—गनइ। ८—अकुलीन। ९—जूझै। १०—कुलवन्ती। ११—बूझै। १२—सै। १३—तबहीं। १४—सासु दुवौ जनि वरजी। १५—कुँवर जो खेलत अहा अहेरा, ततखन आइ तुलाइ।

४०५

(दिल्ली; बीकानेर)

लै खटवाट परीं दुइ[१] रानी। चूल्हीं आगि न गागर पानी[२] ॥१
कुँवर देखि यह मनहि सकाई[३]। इन्ह[४] आपुन[५] मँह कीन्ह[६] लराई ॥२
कहिसि कवन बिधि करउँ मनावा[७]। दुहुँ मँह कोउ जाइ न पावा ॥३
उतरि जननि घर पैठेउ[८] जाई। बहुवहिं[९] कस राखु रुठवाई[१०] ॥४
जननि[११] कहा मैं रुठवाई[१२]। दोउ लरतें जाइ छुड़ाई[१३] ॥५
कहिसि चलहु सब मिलि कै, रूठी दोउ मनावहु आइ[१४]।६
सास ननद मिलि कुटवाँ लइके,[१५] दुहूँ मनावइ[१६] आइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।
१—वै। २—आगि न चूल्हे गगरी नहीं पानी। ३—सोगाई। ४—ए। ५—आपुस। ६—कहँ। ७—करै मिरावा। ८—वैसेउ। ९—बहुअन्ह। १०—रखेहु रुठाई। ११—

जननी। १२–मैं कत रे रुठाई। १३–दुवौ लरत मैं जाइ छुराई। १४–दुहुँ मिलाइ जाइ। १५–सासु ननद मिलि कुटुँब सब। १६–मिलावँ।

४०६

(दिल्ली; बीकानेर)

पहिलैं मिरगावति[1] घर आई। जिहकै[2] चाह करत है साईं॥१
मिरगावति[3] जो देखेउ[4] सासू। ढारे लागि नैन भरि आँसू॥२
सा[स][5] पोछेहि मुँख आँचर लीन्हें[6]। चोलि चीर आँसू मँह कीन्हें[7]॥३
जनु[8] अभरन सेउँ[9] गाँग[10] नहाई[11]। कै र[12] मेंह ऊपर बरसाई॥४
कहै मरौं मुहिं[13] जिय[14] न जाई। देखतेउँ[15] बोल बराबर आई[16]॥५
सासु कहा यह रोस न बूझेउ,[17] गरूई भई[18] रहाहु।६
तुम्ह साई कै[19] पियारीं, हियें[20] छाजै जो र[21] कराहु॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-पहिलेहि मिरगावती कै। २–जेहि। ३–मिरगावती। ४–देखी। ५–(दि०) सा। ६–लीन्हा। ७–चोला चीर सँवारि कै दीन्हा। ८–जानौं। ९–सै। १०–गंग। ११–अन्हाई। १२–रे। १३–मोहि। १४–जियै। १५–देखहु। १६–वार बरिआई। १७–बूझिये। १८–आपु गरुई भइ। १९–केरि। २०–×। २१–रे।

टिप्पणी—(३) **आँचर**—आँचल।
(६) **गरुई**—गम्भीर।

४०७

(दिल्ली; बीकानेर)

अबहीं तो वह साईं पियारी। सुनिउ नहीं यहै देत है गारी[1]॥१
मैं ओकँह[2] का अवखर[3] कहा[4]। ननद साखि तू बैठी आहा[5]॥२
ननद कहा इन्ह कछू[8] न बोला। पहिलहिं अवखर उन्ह मुँह खोला[9]॥३
सास दई[10] रुपमनि कर दोसू[11]। मिरगावती कह[12] बुझायसि रोसू[13]॥४
सासु कहा ओहू[14] समुझावौं[15]। दुहौं[16] सौति कहँ गियँ लगावौं[17]॥५
सास आइ रुपमनि[18] घर पैठेउ,[19] उहो मनावइ[20] लागि।६
घालसि[21] पानि बुझाइसि रिस, जरत अहै[22] उर आगि॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–सोहैं भई दे गई है गारी। २–वोहि कहँ। ३–ओखर। ४–कही। ५–तो। ६–अही। ७–तुम। ८–किछुए। ९–पहिलेहि ओखर उह मुख खोला। १०–दियेउ। ११–रुकुमिनि कहँ दोसा। १२–जो। १३–बुझानेउ रोसा। १४–वोहि गै। १५–

समझाऊँ । १६–दुवौ । १७–आनि मिराऊँ । १८–रुकुमिनि । १९–बैठी । २०–दुहूँ मनावै । २१–घालि । २१–जरति होति ।

टिप्पणी—(७) घालसि–डाला ।

४०८

(दिल्ली; बीकानेर)

सास न होहु माइ तुम्ह[1] मोरी । यहु दोख ओकर[2] अगिनित कोरी ॥१
हिया फाटि इक दिन[3] मरि जइहौं । तोरैं जानों इहाँ[4] दुख पइहौं ॥२
सासु कहा रूठैं न जाई[5] । रूठि कै कियैं[6] साईं न पाई[7] ॥३
साईं कै सेउ[8] करहु चित लाई । परसन होइ बहु[9] मया कराई ॥४
यह र[10] बुधि कै देखहु[11] मोरी । पिय सेवइ[12] बुधवन्ति जो[13] गोरी ॥५
अउर को र मोर कहा प्रतिपारे[14], सुनहु[15] एक बात ।६
चलहु मिलहु मिरगावति सेतीं[16], सान्त[17] होइ हम गात ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–तुम । २–बहु दुख उहिके । ३–दिन एक । ४–नैहर जाउँ बहुत । ५–नहिं जइयै । ६–रूठै गये । ७–नहिं पइये । ८–साईं सेवा करहु । ९–तो । १०–×। ११–देख मुँह । १२–पिउ सेवै । १३–सो । १४–और कहा को प्रतिपालै । १५–मोरि सुनहु । १६–मिरगावती सौं । १६–साँति ।

टिप्पणी—(१) ओकर—उसका । कोरी—करोड़ अथवा बीस ।
(२) हिअ—हृदय ।
(४) परसन—प्रसन्न । मया—स्नेह; दुलार ।

४०९

(दिल्ली; बीकानेर)

कहा तुम्हार मेंट न[1] जाई । जो कछु कहहु[2] सो कियें सिराई ॥१
देउता जो बड़ आवत राऊ[3] । यहि[4] जग जरम[5] न मिलतेउ[6] काऊ ॥२
देवतहिं सानाँ[7] सासु बड़[8] मानौं । जो कछु कहै सो र[9] परवानौं ॥३
कर गहि बाँह[10] सासु यह[11] लीन्हें[12] । दोउ मिराई भेंट कर कीन्हें[13] ॥४
मुँह तो हँसी वैरि[14] बिनसाऊ[15] । सौति साल उर जाइ न काऊ ॥५
खिन[16] एक बैठि रहीं इक ठाँई[17], फुनि[18] उठि घर कहँ[19] जाहिं ।६
राजकुँअर मानै रस[20] रलियाँ[21], नित उन्ह[22] भोग कराहिं ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–न मेटै । २–किछु कहौ । ३–जो अउत बड़राऊ । ४–इहि । ५–जनम । ६–

मिलतिउ । ७–देउता सेंउ । ८–बड़ि । ९–जो किछु कहेहु सोइ । १०–×। ११–यहि । १२–लीन्हीं । १३–दुऔ आनि भेंट अंकम दीन्हीं । १४–मिली । १५–बिनुसाऊ । १६–खन । १७–बैठी रहीं एकटइ । १८–पुनि । १९–घर घर । २०–(दि०) रस मानैं । २१–रली । २२–अहिनिसि ।

४१०

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर[२])

कुँवरहिं बहुत अहेर जो भावइ[१] । अहेर खेलि निसि[२] नींद न आवइ[३] ॥१
सपनहिं[४] भीतर खेल[५] अहेरा । जो जिह[६] मँह रहे[७] सो तिह[८] केरा ॥२
भोर[९] पारुधि एक आवा । प्रतिहार रुचि बात[१०] जनावा ॥३
कुँवर कहा वहि[११] देहु हँकारी । कहात[१२] भई है आनि मारी[१३] ॥४
आइ पारुधी कही जो बाता । साउज[१४] बनहिं किहाँ किय घाता[१५] ॥५
जिह[१६] डर गाँर[१७] बन तजहिं, औ सब जन्तु[१८] [पराइ][१९] ।६
बाघ नाँहि सरवर करि सक, सो आयउ बन राइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०, बी०) अहेरा भावै । २–(ए०, बी०) अहिनिसि खेलै । ३–(ए०, बी०) आवै । ४–(ए०, बी०) सपनेहु । ५–(बी०) खेलै । ६–(बी०) जो जेहि; (ए) जूझै । ७–(ए०) × । ८–(ए०) तिन्ह; (बी०) तेहि । ९–(ए० बी०) भोर भवा । १०–(बी०) गै कही; (ए०) रजवार । ११–(ए०, बी०) वोहि । १२–(ए०, बी०) घात । १३–(ए०) अनिय मारी; (बी०) आहि हमारी । १४–(ए०, बी०) सावज । १५–(ए०) कहा है; (बी०) घनी कै । १६–(ए०,बी०) जेहि । १७–(ए०, बी०) गैयर । १८–(बी०) जात । १९–(दि०) पराहिं ।

४११

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सारदूल[१] जाकर[२] है नाऊँ । बन महँ आइ[३] रहा इक[४] ठाऊँ ॥१
कल्ह[५] खेलै गयउ[६] अहेरैं । एक बन छाड़ि आन बन हेरैं[७] ॥२
तहाँ अचम्भो अचरज[८] देखा[९] । गज मैमत परे नहिं लेखा[१०] ॥३
निकट जाइ जो[११] देखेउ[१२] काहा[१३] । मस्तक माझ गूद नहिं आहा[१४] ॥४
कुम्भ बिदार गूद सब खाइसि[१५] । अउर गात नख एक न लाइसि[१६] ॥५
अउर[१७] बहुत साउज[१८] सब[१९] बन महँ, मुये परे[२०] बिनु साँस ।६
जानहु गलगजैं[२१] उहि केरैं, तरपैं[२२] मुये तरास ॥७

१–यह पृष्ठ हमें उपलब्ध न हो सका । अतः इसका पाठ सम्मेलन संस्करणपर आश्रित है ।
२–इस प्रति में पंक्ति २ की अर्धालियाँ परस्पर हस्तान्तरित हैं ।

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) सादूल; (ए०) अंगल। २-(ए०) जाकरि। ३-(ए०, बी०) आय। ४-(बी०) कै; (ए०) एक। ५-(बी०) काल्हि हौं; (ए०) कालि हौं। ६-(ए०) गएव; (बी०) गयेंव। ७-(ए०) मेरें; (बी०) समेरे। ८-(बी०) अचिरिज। ९-(ए०) पेखा। १०-(बी०) परे बहु नहिं लेखा; (ए०) आहि परे न लेखा। ११-(ए०, बी०) कै। १२-(ए०, बी०) देखौं। १३-(बी०) कहा। १४-(ए०) अहा; (बी०) रहा। १५-(बी०) खायेसि। १६-(ए०) लेइसि। १७-(ए०, बी०) और। १८-(ए०, बी०) सावज। १९-(ए०) तेहि; (बी०) ×। २०-(ए०) अहे। २१-(बी०) गलिगज; (ए०) कलकजली। २२-(बी०) बहुतै।

टिप्पणी—(२) आन—अन्य।

(५) बिदार—विदीर्ण करके; चीर करके। **गूद**—गूदा।

(७) तरास—त्रास; भय।

४१२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[1])

अइसा[1] चरित देखि जिउ मोरा[2]। तिमिर[3] भयानेउ[4] भा बन घोरा[5]।१
भरम पाउ[6] मोर सुध न परई[7]। जनु[8] पाछैं[9] आवत है धरई॥२
कल[10] करतार मोहि लै आवा। बन छाड़ेउँ तिह कहेउ[11] जिउ पावा॥३
हँस कै कुँव[र] काह रिस[12] बाजा। तरपा अमर बढ़ी फुनि[13] गाजा॥४
कै परबत परबत धर मारा। कै चलि आयेउ सँयसारा[14]॥५

राजा सपत[15] आजु वहि मारौं, जानौं परहि खेलाइ[16]।६
जीवन कहै घरी घिर हाई[17], अब मो पँह कित[18] जाइ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-ए० ×; (बी०) अस। २-(ए०) उहि केरे। ३-(बी०) तब रे। ४-(बी०) भयावन। ५-(ए०) भये घोरा; (बी०) भवा बन छोरा। ६-पाँउ। ७-(ए०) बहुरि न पाव सुध मोर परई। ८-(बी०, ए०) जनौ। ९-(बी०) पाछू। १०-(ए०) कालि; (बी०) काल्हि। ११-(ए०) निकसेउँ; (बी०) तो हौं। १२-(बी०) सिर। १३-(ए०) तरप अंमर परी जनु गाजा; (बी०) तरप जनौं अम्बर परि। १४-(ए०) संसारा; (बी०) सैंसारा। १५-(ए०) बिपत। १६-(ए०) जेंव घर घर थर अहे; (बी०) जौ खंखर खरह भागिहि। १८-(ए०) जियत कि मो पह; जियत न मो पहँ।

१-इस प्रतिमें पंक्ति २ और ३ क्रमशः ३ और २ हैं।

४१३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर मिरायउ हैंवर हीया[1]। औ मिराइ [असिवर][2] कर लिया[3] ॥१
वान सान दइ पानी धरी[4]। जावस[5] साथि लै उपकरी[6] ॥२
औ पारुधि आगैं कै लीन्हा[7]। चलु दिखाउ वह जिह वन[8] चीन्हा[9] ॥३
रेंगि पारुधी आगे भया[10]। सारदूर[11] जिह[12] बन लै[13] गया[14] ॥४
साचहिं[15] साउज[15] औ कुंजरा। मुये वाघ जो नर आगें करा[16] ॥५
फिरिकै[17] सारदूर[18] एह वन मँह आहे[19], अब मो पँह कित[20] जाय।६
मारौं आजु संघारौं[21] भूपर[22], सपत पिता कै खाय ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) कुँवर मिराइ हेवरहिं लिया ; (ए०) गज से वह सारे हिया। २-(दि०) आसव ; (ए०) असि। ३-(ए०) किया। ४-(ए०) दै पानी धरई ; (बी०) दै पानी धरावा। ५-(बी०) चवस ; (ए०) सावज। ६-(बी०) वेगर न आवा ; (ए०) से आय विलंब अेह करई। ७-(ए०) लीन्ही। ८-(ए०,बी०) जेहि बन है। ९-(ए०) चीन्ही। १०-(ए०, बी०) भयउ। ११-(बी०) सारदूल ; (ए०) सार डाले। १२-(बी०) जेहि। १३-(बी०) तहै लै। १४-(ए०, बी०) गएउ। १५-(बी०) साँचेहु सारदूल। १६-(बी०) मुये बाज जोर केहि केरा ; (ए०) मुए बाघ जीउ रल कै करा। १७-(बी०) फुर कै। १८-(बी०) सरदूल; (ए०) सारडोल। १९-(ए०, बी०) × । २०-(ए०, बी०) कत। २१-(बी०) विघाँसौं। २०-(ए०) भुववर ; (बी०) × ।

टिप्पणी—(१) हेंवर–घोड़ा।
(२) जावस–जितने भी।
(६) कित–कहाँ।

४१४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर[1] पारुधी का मुख चहा। तौं चढ़ रूख देख अस कहा ॥१
पारुधि[2] आई[3] रूख एक चढ़ा। कुँवर मार मन[4] भीतर कढ़ा ॥२
जावस[5] वान फोंक धरि[6] लीतसि[7]। फिरि फिरि ढूँढै बरबर[8] कीतसि ॥३
देखत[9] सूत[10] हिय विनु संका[11]। जैं[12] सिरजा ताहू सेउ बंका[13] ॥४
कुँवर[14] कहा जो सोवत मारौं। पुरुखन्ह मँह[15] पुरुखारथ हारौं ॥५
अब जगाइ कै हनौं विचारी[16], करौं सात दुइ खण्ड।६
नौ खँड[18] नौ खँड पठावँउँ[19], जीउ पठवौं[20] ब्रभण्ड[21] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) कह। २–(बी०) पारुधी ; (ए०) सुधी। ३–(ए०, बी०) जाय। ४–(बी०) मारि रिस। ५–(बी०) चवस। ६–(बी०) भरि। ७–(ए०, बी०) लीतिसि। ८–(ए०) तरुवर ; (बी०) वान तर ऊपर। ९–(बी०) देखै। १०–(बी०) सोवत। ११–(बी०) बन निःसंका (ए०) पत सेठ फिरे सिगारा। १२–(बी०) जेहि। १३–(ए०) तेहू से बाँका वलौं जेहि मारा। १४–(ए०) जो रे। १५–(ए०) सौं। १६–(बी०) अब जाइ कै हतौ पचारी ; (ए०) आनज देएह विचारहु। १७–(ए०) नौ ; (बी०) सै। १८–(बी०) खण्ड कै। १९–(ए०) पठवौं ; (बी०) पठावौं। २०–(बी०) पठाऊँ; (ए०) महि औ। २१–(बी०) ब्रम्भंड; (ए०) बरभंड।

टिप्पणी—(२) **रूख**–वृक्ष।

(३) **जावस**–जितने भी ; **फोंक**–नुकीला ; तीक्ष्ण। **धरि लीतसि**–रख लिया। **बरबर**–बर्बर। **कीतसि**–कहाँ।

(४) **सूत**–सोया।

(५) **पुरुखारथ**–पुरुषार्थ।

(७) **ब्रभण्ड**–ब्रह्माण्ड।

४१५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर बान गुन[१] फोंक सँभारी[२]। कालिह सोवत **हनौं बिडारी[३]** ॥१
तुरिय मँदर[४] फुनि मेलसि भुइँ हाल[५]। नींद गयेउ[६] जागेउ जमकाल[७] ॥२
दुहुँ[८] जम सौं भौ दीठ[९] मेरावा। कालहिं काल गाल चँहि खावा[१०] ॥३
गरजा[११] पूँछि पुहुमि धरि मारिसि[१२]। पुहुमि मार सिर ऊपर तारिसि[१३] ॥४
गरज[१४] के सबद पूरि बन भरा[१५]। जनु[१६] अरराय अम्मर खसि परा[१७] ॥५
उठा[१८] अकूत[१९] अँदोर प्रिथमी, सात दीप नौ खण्ड ।६
[सरग[२०] पतार] सेस खरभरेउ[२१], इन्द्र, डरा[२२], ब्रहमण्ड[२३] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कर ; (बी०) × । २–(बी०) सँभारा। ३–(ए०) गालहि सोत हनौ तरुवारा ; (बी०) कालहिं सौं वह हनेउ पचारी। ४–(ए०) जीउ मंडर ; (बी०) मंडल। ५–(बी०) घालिह भुइँ हता। (ए०) मेलिसि भरी। ६–(बी०) गई ; (ए०) बन्द कियेव। ७–(बी०) जमकला; (ए०) जागेव संभरी। ८–(बी०) जस। ९–(ए०) डीढ़ि ; (बी०) द्रिस्टि। १०–(ए०) चाह फुनि खावा ; (बी०) जो काल सतावा। ११–(बी०) गरज। १२–(बी०) मारी। १३–(बी०) सारी ; (ए०) आनिसि। १४–(ए०) गरजत ; (बी०) गरज कै। १५–(ए०) पौरे रह।

१६–(ए०) जनि ; (बी०) जनौ। १७–(ए०) चहा। १८–(ए०) परा। १८–(बी०) अकुताइ ; (ए०) × । २०–(बी०) सपत। २१–(बी०) खरभरे ; कुँवर भरि परेव। २२–(बी०) डरिय ; (ए०) मही औं।

टिप्पणी—(५) अरराय–टूटकर। **अम्भर**–अम्बर ; आकाश। **खसि**–गिर।

४१६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

[तमकि तरपि बिजुली वर[१] धावा]। [भौंह के मटकै[२] तुरिय सिर आवा][३] ॥१
तब[४] लगि कुँवर गहेउ कर खाँडा[५]। मारसि टूटि भयउ दुस[६] खाँडा[७] ॥२
सर गिय[८] सेउ[९] गिर बेगर भये[१०]। धर सेउ[११] पाव टूटि कै गय[१२] ॥३
कर सर[१३] तरकि कुँवर उर लागा। हियें समान सुई जउ[१४] तागा ॥४
आउ घटा[१५] जस सुनत[१६] कहानी[१७]। कलिजुग भई[१८] यहेउ तिह[१९] बानी ॥५
सिंघिनि वन मँह लागि बियाये[२०], सुनि गयन्द[२१] न चाह।६
कुंजर जूह जोरि कै आये[२२], आयसु[२३] दाउ[२४] न आह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) पर। २–(ए०) मटक। ३–(दि०) पूरी पंक्ति नहीं है। ४–(बी०) तौ। ५–(ए०) खण्डा। ५–(ए०, बी०) भयेव दुइ। ७–(ए०) खण्डा। ८–(दि०) गुन। ८–(ए०) सौं ; (बी०) सै। ९–(ए०, बी०)। १०–(बी०) होई। ११–(ए०, बी०) से। १२–(बी०) गये सोई। १३–(ए०, बी०) सिर। १४–(ए०) जैंव; (बी०) जनौ। १५–(बी०) आदि कथा ; (ए०) आध गहा। १६–(ए०) सपत। १७–(ए०) कीनी। १९–(बी०) भयेउ ; (ए०) भौ। १९–(बी०) एहि एहि ; (ए०) एहि। २०–(ए०) बे आपै ; (बी०) बियाँइ। २१–(ए०) गयन्दिन्ह; (बी०) गयन्द मँह। २२–(बी०) × । २३–(बी०) अव अस ; (ए०) आऐस। २४–(ए०) दाव।

टिप्पणी—(६) बियाये–प्रसव करने।
(७) जूह–जूझ ; झुण्ड।

४१७

(दिल्ली; बीकानेर)

आगे भा मींगल[१] मैमन्ता। सूँड़[२] उदारत आवइ[३] दन्ता ॥१
ततखन कर सों[४] सर[५] थर्राना[६]। हाथिउ[७] आइ संगित नियराना ॥२
सूँड़[८] पसार कहिसि पा[९] धरउँ। निकंटक तोर [......][१०] करउँ[११] ॥३
तरका कर सेंती सर टूटा[१२]। नागा जानु उर अगिन छूटा[१३] ॥४

गै कुँभस्थल मँह[१४] अस[१५] लागा। चिंघरत हस्ति[१५] जिउ[१६] तजि भागा॥५
सिंघिनि[१७] एकै पूत जनि[१८], वन मण्डन[१९] रन घत्थ[२०]।६
कुम्भ बिदारन सापुरुस[२१], सुँठि[२२] गरुव कलत्थ[२३]॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–मैगल। २–सूंडि। ३–आवै। ४–सै। ५–सिर। ६–बिहगाना। ७–हस्ती। ८–सूंडि। ९–लै। १०–(दि०) सम्भवतः शब्द की छूट। ११–काट तोरि निकट का करों। १२–उर तरकी सिर सेती टूटा। १३–तरक जनो उरग नग छूटा। १४–अस होइ। १५–हस्ती। १६–जुझ। १७–सिंघनी। १८–जनै। १९–मण्डल। २०–दीठ। २१–सपरुस। २२–सुठिहि। २३–गल अहीठ।

४१८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दोउ सिंह दोउ[१] जम भारी[२]। दोउ काल कालहिं सेउँ[३] भारी॥१
दुँहु धरि[४] ऊपर[५] खाइ[६] पछारा। दूनों जिय काल सँतारा[७]॥२
जो[८] सिरजा मरिवै कँह[९] आवा। सो किंह[१०] नहिं[११] काल[१२] सतावा॥३
मुये पाछु[१३] कोई न[१४] रहई[१५]। सो [झूठा][१६] जिउ न जो[१७] गहई[१८]॥४
कहाँ सो बल[१९] जिंह[२०] सायर मँथा[२१]। कहाँ सो धुन्धमाल[२२] कै कथा[२३]॥५
कहाँ सो हरिचन्द है सतवन्ती[२४], कित[२५] रावन कित[२६] राम।६
कित कौरो पँडवा[२७] बली[२८], नाँ थिर छाँह न[२९] घाम॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) दुवौ सिंघ दुवौ। २–(ए०) गरजा मचा सिंह जिमि भारी। ३–(ए०, बी०) काल सों। ४–(ए०) दुओ धरनि; (बी०) दुवौ धरा। ५–(ए०, बी०) पर। ६–(ए०, बी०) खाँय। ७–(बी०) दुऔ जिय मिलि गये अकारा; (ए०) दुऔ जिय मिलि किये अकारा। ८–(ए०) जेअ। ९–(बी०) कहुँ। १०–(ए०) को; (बी०) कहु। ११–(ए०) इन्हि। १२–(ए०) कलि न। १३–(ए०) वझ; (बी०) बाजु। १४–(बी०) ना; (ए०) नहिं। १५–(ए०) रहे। १६–(ए०) झुग; (दि०) जूठा। १७–(बी०) जो जीवन। १८–(ए०) कहै; (बी०) कहई। १९–(बी०, ए०) बली। २०–(बी०) जिहि; (ए०) जे। २१–(ए०) मथा परमथा। २२–(ए०) मालधुंध। २३–(बी०) गाथा। २४–(बी०) सतवति। २५–(बी०) कत। २६–(बी०) कत। २७–(ए०) ×; (बी०) कित पँडवा। २८–(ए०, बी०) अबला बली। २९–(बी०) रहइ।

४१९

(दिल्ली; बीकानेर)

कहाँ सूर[1] विक्रम[2] सकबन्धी। कित अरजुन बाना उर सन्धी[3] ॥१
कहाँ सो तिरिया[4] सीता सती[5]। कहाँ दुरपदी पाँचहु रती[6] ॥२
कहाँ भोज दसचार[7] निदाना[8]। परकाया परवेस[9] जो जाना ॥३
सँकर बचा सिध[10] जो करता। कर पसार जिह कै[11] सिर धरता ॥४
चालिस[12] लाख बरिस सो जिया। ताहूँ आउ[13] अमर नहिं किया ॥५

सो बाउर दोख[14] चित बाँधै[15] हरिचन्द परहि[16] भुलाइ।६
जाकर भुवन पौंन[17] पानी, वरु तिह का करत गराइ[18] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–सो। २–(दि०) बिकम। ३–अर्जुन जिन्हि बनवारी संधी। ४–असत्री। ५–सती सीता। ६–सरता। ७–चारि दस। ८–निधाना। ९–परवेसु। १०–बचा सूर। ११–जेहिका। १२–चारिस। १३–तेहुह आपुहि। १४–सो बावर धोखेंहि। १५–बँधे। १६–पुरी। १७–पावन औ। १८–पर तेहि ककर कलाइ।

टिप्पणी—(१) **बिक्रम**—विक्रमादित्य; उज्जैनका एक प्रसिद्ध नरेश। **सकबन्धी**—वासुदेवशरण अग्रवालने पदमावत (४९१/४) में इसका अर्थ साका बाँधने या चलनेवाला किया है। इस पर उनकी टीका है—'साका-का मूल अर्थ शक संवत था। पीछे केवल संवत्‌के लिए भी वह प्रयुक्त होने लगा।' 'विक्रम साका कीन्ह' में वही अर्थ और मुहावरा है। आगे चलकर किसी अलौकिक यश या कीर्तिके कामके लिए साका शब्दका प्रयोग होने लगा। सकबन्धी उस युगका पारिभाषिक शब्द ज्ञात होता है। जो स्त्रियोंसे जौहर करवाकर युद्ध-में लड़ते हुए प्राण देनेका व्रत लेता था वह सकबन्धी कहलाता था।' हमारी दृष्टिमें इसका सीधा-सादा अर्थ है—शकोंको बाँधने-वाला और यह शकारिके पर्यायवाचीके रूपमें प्रयुक्त हुआ है। शकारि के रूपमें विक्रमादित्यकी जगत् ख्याति है। **सन्धी**—भेदने-वाला।

(२) **तिरिया**—त्रिया; स्त्री। **दुरपदी**—द्रौपदी; पाण्डवों की पत्नी। **रती**—अनुरक्त।

(३) **भोज**—परमार नरेश भोज, जिनकी ख्याति विद्वत्ताके लिए है। **दस-चार**—चौदह, यहाँ तात्पर्य चौदह विद्यासे है। **निदाना**—निष्णात। **परवेस**—प्रवेश।

४२०

(दिल्ली; बीकानेर)

कुँवरहिं परत पारुधी धावा। ततखन उतरि रूँख सेंउ[1] आवा ॥१
कुँवरहि जो देखीं[2] टखटोरी[3]। पुरुब[4] लिखा विधि लाउ[5] न खोरी ॥२
इकछत राज बहुत कै गये। बिधि क[6] चरित न एक पर[7] भये ॥३
ई[8] अकास भुई को न कहावा[8]। जो[9] उतरि पिरथमीं[10] मँह[11] आवा ॥४
हमहूँ कँह आहे यहि[12] पंथा। रावल[13] चलहि रहहि[14] पै कन्था ॥५
अवन्ता सभै भला[15], एक न आउ घटन्त।६
धन जोबन सँग[16] साथ सैं[16], घरी माँझ[17] विहरन्त ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–से। २–देखै। ३–टकटोरी। ४–पूर्व। ५–लगै। ६–कै। ७–चरित्र आन पै। ८–आपुहिं अकसर दोसर न भावा। ९–जो रे। १०–प्रिथिमी। ११–×। १२–एह। १३–खल। १४– रहै। १५–आवत सब भल। १६– परिवार सेंउ। १७–घरी एक मैं।

टिप्पणी—(१) **परत**—गिरते ही। **ततखन**—तत्क्षण।
(२) **टखटोरी**—टटोल कर। **पुरुब**—पूर्व।
(३) **इकछत**—एकछत्र।

४२१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर क जीउ इँद्रासन गया। इहाँ रहै कस्ठा कै[1] कथा ॥१
मरबे कँह[2] का तरुन तरेसा[3]। काल फिरै कर गहे जो केसा ॥२
तरुनाई केर[4] पछतावा। मर तरेस[5] पछताउ[6] न आवा ॥३
कुँवर अकेला[7] बन[8] कँह[9] जाई। राजा सेंउ[10] काहू कह[11] आई ॥४
जो[12] कछु[13] बात इहाँ कै[14] अही। राजा सेंउ[15] एक एक[16] तैं[17] कही ॥५
सीस धुनत पाना कैं[18], ततखन[19] राजा[20] लाग गुहार[21]।६
दौर परे[22] घर बाहर, जानहु[23] सरग क[24] आयी धार[25] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) इह राही का साथ की; (बी०) रही कथा की। २–(ए०) मरावै क;(बी०) मरिबै कहुँ। ३–(बी०) तरुनाप तेरस; (ए०) तरुना नरेस। ४–(ए०) तरुने कर आवै; (बी०) तरुनापै कर। ५–(ए०) नरेस। ६–(बी०) पछिताव। ७–(ए०, बी०) अकेल। ८–(बी०) आपुन। ९–(ए०) मर। १०–(ए०) आवत। ११–(बी०) कहा कोइ; (ए०) केहु कह। १२–(ए०) जस। १३–(ए०, बी०)

कुछु । १४–(ए०,बी०) की । १५–(ए०) ×; (बी०) सै । १६–(ए०) सो । १७–(ए०) लागै; (बी०) कै । १८–(बी०) पनगति; (ए०) वपकै । १९–(ए०) × । २०–(बी०) राना । २१–(ए०, बी०) गोहारि । २२–(बी०) रोर परा; (ए०) सोच करत । २३–(ए०) ×; (बी०) जनौ । २४–(बी०) कै । २५ (ए०, बी०) धारि ।

टिप्पणी—(१) **इन्द्रासन**—स्वर्ग । **कस्टा**—काष्ठ; शरीर ।
(२) **मरबे कहँ**—मरने का । **का**—क्या । **तरेसा**—वृद्ध ।

४२२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आपु आपु कहँ लाग गुहारी । हाथिन[1] ऊपर परी अँबारी ॥१
जो जिंह सो तिंह[2] धावा । बार बूढ़ कोउ[3] रहा[4] न आवा[5] ॥२
घोरहिं[6] बाखर पाखर परे[7] । लइके धाइ[8] हाथिन्ह धरे[9] ॥३
सुनिके छल[10] उर उठी[11] जो[12] आगी[13] । भीतर जनु[14] बहिराइ[15] जो[16] लागी ॥४
धावत राजा पेग पचास्ना । उढकि परा निकसि गइ[17] साँसा ॥५
ततखन लै चौंडोल तुलानी[18], राजा लीनहिं[19] बाँहि ।६
पुन जे कह[20] धरम संग साथी[21] सरगहुँ राज कराहि[22] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०, बी०) हाथिन्ह । २–(बी०) जो जैसेहि तैसेहिं उठि; (ए०) [जे] जैसे थी तैसे । ३–(ए०, बी०) कोइ । ४–(बी०) रहै । ५–(बी०) पावा । ६–(ए०) घोरन्ह; (बी०) घोरेहु । ७–(ए०, बी) परी । ८–(ए०) लैके धाए; (बी०) लैने आये । ९–(ए०) धरी; (बी०) हाथहिं धरी । १०–(बी०) राउ । ११–(बी०) उठी उर । १२–(बी०) × । १३–(ए०) कै अ ऐजन झी लगी । १४–(बी०) जारि; (बी०) जरि; (ए०) जनि । १५–(बी०) वहिर होइ; (ए०) भरए । १६–(बी०) × । १७–(बी०) गै । १८–(ए०, बी०) तुलाना । १९–(ए०) राजहिं लीतिन्हि; (बी०) लिहिसि । २०–(बी०) × । २१–(बी०) साथहिं । २१–(ए०) नबी सेख धरम सग, सरगहु रा......... ।

टिप्पणी—(१) **अँबारी**—झूल ।
(५) **उढ़कि परा**—ठोकर लगी ।

४२३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

करनराइ तिंह[1] आइ तुलाना[2] । राउत पाँयक बहु समानाँ[3] ॥१
पारधि चाल कटक कै[4] पाई[5] । किहिसि गुहार तुलानेउ[6] आई ॥२

कुँवरहि तजि कै आगे धावा। देखत करनराइ नियरावा[७] ॥३
सीस फेकारि पुहुमि[८] गा लोटी। कुँवर गयेउ छाड़ि कलखूँटी[९] ॥४
कल[१०] का मरम न जानै कोई। आँख क मँटक काह[११] दहुँ होई ॥५
धम्म करन्ते भोग कर[१२], मनहि परसु[१३] करतार[१४] ।६
लछिमी[१५] होइ[१६] न आपुनी[१७], बिरसि लेहु[१८] सँयसार[१९] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—
१-(बी०) करनराय तँह; (ए०) जब राय फुनि। २-(ए०, बी०) आय तोलाना। ३-(बी०) बहुत संग माना; (ए०) बैठ सुजाना। ४-(बी०) की। ५-(ए०) पारहि झलक गंग लै जाई। ६-(बी०) कहिसि गोहारि तोलानी आई; (ए०) कहै गोहारि तोलानी आई। ७-(ए०) फिरावा; (बी०) पुनि आवा। ८-(ए०, बी०) धरनि। ९-(बी०) कल खोटी। १०-(ए०, बी०) कलि। ११-(बी०) के मटकै का। १२-(ए०) कै। १३-(बी०) मन परसहु। १४-(ए०) पुसप तार का तार। १५-(बी०) लही। १६-(ए०, बी०) होय। १७-(बी०) आपनी; (ए०) आपन। १८-(बी०) बिलसि; (ए०) जोरे परस १९-(ए०, बी०) संसार।

टिप्पणी—(१) राउत—राजपुत्र; श्रेष्ठजन। पाँयक—(सं० पदातिक>पाइक) पैदल सैनिक।

४२४

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर)

करनराइ[१] आपु[२] भुइँ मारा। उर सारै[३] कहँ काढ़ि[४] कटारा ॥१
लोगन्हि[५] करहुत लीन्ह कटारा। धरा पछै चाहै भुँइ मारा[६] ॥२
राउत पाँयक रोवहिं परे। लोटहिं भुँइ महँ माटी भरे[७] ॥३
अइ[८] करतार काह यह भया। हमहूँ कहँ[९] न साथ लै गया ॥४
आन क मीचु उठ तिह मरई[१०]। जो बिधि लिखा सोइ[११] पै करई[१२] ॥५
रोवहि हस्ति घुर आगहि ठाढ़े[१३], रोवइ अमर पुकार[१४] ।६
रोवइ[१५] इँद्र अपछरी[१६] लीहें[१७], बासुकि रोउ[१८] पतार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—
१-(बी०) करनराय; (ए०) लिए। २-(ए०, बी०) आपुहिं। ३-(ए०, बी०) मारै। ४-(ए०, बी०) लीन्ह। ५-(बी०) लोगन; (ए०) आगन्ह। ६-(बी०) धरे पाछै सिर भुइ दै मारा; (ए०) धरा न रहै तोर कर बारा। ७-(ए०) लोटहिं पुहुमी मानुस भरे। ८-(बी०) ऐ; (ए०) त। ९-(बी०) कहे; (ए०) कस।

१—इस प्रतिमें पंक्ति ६-७ परस्पर स्थान्तरित हैं।

१०–(बी०) आन क मीचु आन न मरई। ११–(ए०) सो रे। १२–(ए०) होई। १३–(बी०) रोवहि हस्ती औ घोरा ठाढ़े; (ए०) रोवहिं हसती घोर। १४–(ए०) गहि ठाठ तुरी तुखार; ठाढ़े रोवहिं अबर पुकार। १५–(ए०, बी०) रोवहिं। १६–(ए०, बी०) अपछरा। १७–(ए०, बी०) ×। १८–(ए०) औ बासुकि; (बी०) रोवै।

४२५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आदि अन्त सेउ[1] ईहै[2] बानी। इह महँ जे हुत[3] पुरुख[4] बिनानी ॥१
समुझि सँभार राइ पहँ आये[5]। फेकरे सीस पाय वह लाये[6] ॥२
राइ समुझि करु पिता [उधारो[7]]। कलखूँटी कर काठ बुहारो[8] ॥३
मरि के कोइ बहुरि न आवा[9]। सो करु राज न होइ पगवा ॥४
काकर बाप काहि[10] कर बारा[11]। भया मोह आहै सँयसारा[12] ॥५
महिं होइह सब बिरथैं, रहँहिं बरलो उर संघार[13] ।६
पाँच देवस मन बूझि कै, कछु उटवहु उपकार[14] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) से आह; (ए०) से भई। २–(ए०) अेह; (बी०) यह। ३–(बी०) उन्ह मँह जो होत; (ए०) उई से जीअ हुती। ४–(ए०) लोग ५–(ए०) गये। ६–(बी०) फिकरि सीस पाइ उन्ह लाये; (ए०) जाय ठाढ़ आगे होय भये। ७–(दि०) निवा उर धारो; (बी०) उभारू; (ए०) समुझि की महवार ठारू। ८–(बी०) मुकुती होइ कलि का तेहि भारू; (ए०) महथै कहै कहु कै पारू। ९–(ए०)...त कै बहुरि कोइ आवा। १०–(बी०) कहे। ११–(ए०) जब कोइ देखै चरित अपारा। १२–(ए०, बी०) संसारा। १३–(बी०) अब्रिथा होइहिं सब प्रिथिमी, रहै न कोई पार। १४–(ए०) पंक्ति ६-७ नहीं हैं।

टिप्पणी—(१) **ईहै**—यही। **बिनानी**—विज्ञानी।
(२) **बुहारो**—एकत्र करो।
(५) **काकर**—किसका। **काहि**—किसका।

४२६

(दिल्ली; एकडला;[1] बीकानेर)

वहि[1] समुझाइ कुँवर पँह आए। दोउ[2] सिंघ वरके बिगराए ॥१
कुँवरहि बाहि सिंघासन[3] लीतँहि[4]। चले बेग कै[5] बिलम्ब न कीतँहि[6] ॥२

१—इस प्रति में प्रथम पंक्ति पूरी और पाँचवी, छठी और सातवीं पंक्तिके पूर्वार्ध रिक्त हैं।

रोवत पीटत फेकरत चले[७] । पाँय[८] कमर सीस उर खुले[९] ॥३
ओलँहाँ[१०] नगर सुनी[११] यह बाता । काहू कँह[१२] न रही सुधि गाता ॥४
जब सेउ कुँवर भयउ असवारू[१३] । इँह[१४] दुहुँ[१५] कै जिय परेउ[१६] खभारू[१७] ॥५
मिरगावति[१८] औ रुपमनि[१९] दूनों[२०], बिनु[२१] जिय साँस अधार[२२] ।६
फिरत अहैं[२३] मँदिरा अपनै, मुहिं[२४] का र[२५] करिहु करतार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) वोहि । २–(ए०, बी०) दुवौ । ३–(ए०, बी०) सुखासन । ४–(ए०) लीतिन्हि; (बी०) लीन्हा । ५–(बी०) × । ६–(ए०) कीतिन्ह; (बी०) कीन्हा । ७–(ए०) फुकरत चाले; (बी०) फिकरत चले । ८–(ए०, बी०) बाँधे । ९–(बी०) उघेले । १०–(बी०) उथल । ११–(ए०)......नग मसी । १२–(बी०) काहु कहूँ । १३–(बी०) असवारा । १४–(ए०) उन्ह; (बी०) इन्हि । १५–(बी०) दूनौहू । १६–(ए०) परा । १७–(ए०, बी०) खभारा । १८–(बी०) म्रिगावती । १९–(बी०) रुकुमिनि । २०–(ए०) × ; (बी०) दुवौ । २१–(ए०) × । २२–(ए०) औहार । २३–(बी०) रहीं । २४–(बी०) × । २५–(ए०, बी०) काह । २६–(बी०) करिय ।

४२७

(दिल्ली; ; बीकानेर)

लूक बरीं[१] चेरीं सब धाईं । पँवरि[२] बार पूछै कँह आईं ॥१
मिरगावति[३] मन माँझ सकानीं[४] । करों सोइ रह[५] अकथ कहानी ॥२
वेगा परा सुनेउ हौं केऊँ[६] । जब लगि नाँहि सुनेउ[७] जिउ देऊँ ॥३
चेरीं सुनिके फिर बहुराईं[८] । इँदर के[९] सभा गयेउ तुम्ह साईं ॥४
का कहि हा कहि कहत[१०] जिउ दिया । कलजुग मँह अइसा किन[११] किया ॥५
सरि राँच जरीं पिय लै गवनी[१२], सो साका परवान[१३] ।६
सती सोइ सत नागर[१४] गुनिये, हा कहि देइ परान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–कूक परीं । २–पवरी । ३–मिरगावती । ४–माँहि सुगानी । ५–करौं सोइ जेहि रहै । ६–पूक परी सुनै है केऊ । ७–नहिं सुने । ८–पुनि फिरि आईं । ९–इन्द्र की । १०–का कह का कह हा कहि । ११–ऐस किनि । १२–सरा राचि जरैं साईं लै । १३–अपने सीस के परवान । १४–कर ।

टिप्पणी—(१) लूक–मशाल । बरीं–जली ।
(४) बहुराईं–लौटीं ।
(६) सरि–चिता । साका–वासुदेव शरण अग्रवालके मतानुसार इसका

तात्पर्य विलक्षण पराक्रमसे है। उन्होंने मुहणोत नरसी (२।२८९) के प्रमाणसे इसका अर्थ बडा युद्ध भी दिया है। किन्तु साकाका यह भाव यहाँ घटित नहीं होता। **परवान**—प्रमाण।

(७) **परान**—प्राण।

४२८

(दिल्ली; बीकानेर; चौखम्भा)

रुपमनि[१] फुन[२] वैसहिं मरि गई। कुलवन्ती सत सेंउ[३] सती भई ॥१
बाहर वह[४] भीतर यह[५] रौरो[६]। घर बा[हर][७] मँह[८] उठा अँदोरो[९] ॥२
आजु रूँधारत[१०] पुहुमि[११] समेंटहिं[१२]। जो[१३] जो सिरजसि[१४] सो सब मेंटहिं[१५] ॥३
गाँग तीर लइके सरि रचा[१६]। पूजी आवधि[१७] किही हुत बचा[१८] ॥४
राजा संग[१९] रानी चौरासी। लइ सब गवनी वै निरासी[२०] ॥५

मिरगावति[२१] औ रुपमनि[२२] लइके, जरीं कुँवर क साथ[२३] ।६
भसम भई सब[२४] जरि कै[२५], चीन्ह रहा नै गात[२६] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और चौखम्भा प्रति—

१–(बी०, चौ०) रुकुमिनि। २–(बी०, चौ०) पुनि। ३-(बी०) सै; (चौ०) सौं। ४–(बी०) × । ५–(चौ०) वह; (बी०) परिगा। ६–(बी०) रोरा; (चौ०) होई। (दि०) बा। ८–(बी०) × । ९–(बी०) अँदोरा; (चौ०) घर बाहर को रहै न जोई। १०–(बी०) संव रन। ११–(बी०) पुहुमी।१२–(चौ०) विधि वर चरत न जानै आन्। १३–(बी०) × । १४–(बी०) सिरजा। १५–(चौ०) सो सिरजै सो जाहिं निरान्।१६–(बी०) गंग तीर लै सरा रचावा; (चौ०) गंग तीर लै सरा रचा। १७–(बी०, चौ०) अवधि। १८–(बी०) किही होती बाचा; (चौ०) कही जो बाचा। १९–(चौ०) संग जरीं। (बी०) लै सब गौनी वे रनिरासी; (चौ०) ते सब गये इन्द्र कबिलासी। २१–(बी०, चौ०) म्रिगावती। २२–(बी०, चौ०) रुकुमिनि। २३-(बी०) के संघात; (चौ०) लैके जरी कुँअर के साथ। २४–(बी०) वै। २५–कै ऐसेहु। २६–(बी०) जिउ न हुत गात; (चौ०) भसम भई तिल एकमें, चिन्ह न रहा गात।

टिप्पणी— (२) **रौरो**—कोलाहल।

४२९

(दिल्ली; बीकानेर)

छुट बड़ कोउ नहि रहहि अकेला[१]। करना केर[२] चरित इह[३] खेला ॥१
बेगर सरि[४] रचि बारी जरीं[५]। औ नाउनिंहि सरि ऊपर परीं[६] ॥२

जरीं[७] भवायत[८] पान खियावत। औ ते जरीं[९] जो पानि[१०] पियावत ॥३
जरीं[११] जो कापर[१२] देत सँवारी। धोबी जरीं[१३] छाड़ि बरि नारी ॥४
औ ते जरीं[१४] करत जेवनारा[१५]। बाँभन पै न जरी सुनारा[१६] ॥५
आधा नगर अधिक कछु[१७] निखसा, जरि के भये[१८] मँसिवान[१९]।६
बिनु जिय[२०] नगरी के जस[२१] कथा, वांह[२२] लगि सब क[२३] परान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–छोटी विधि कोइ रह न काला। २–करत केरे। ३–सब। ४–सरा। ५–सब जरे। ६–औ नाऊ ते सब जर। ७–जरे। ८–तंबारे। ९–जरे। १०–पानी। ११–जरे। १२–कपरा। १३–जरे। १४–जरे। १५–ज्योनारा। १६–एक न बाभन जरेउ भुआरा। १७–किछु। १८–भा। १९–मसियान। २०–जिउ। २१–कैसी। २२–वाहि। २३–सबका।

पाठान्तर—(१) करना—कता; इश्वर।
(२) बारा—घरलू काम करनेवाली स्त्रियाँ। (२) नाउनिहि—नाइन।
(६) निखसा—निकला। मसिवान—राख।

४३०

(दिल्ली; बीकानेर[१])

महते नेगी जो हे[१] बुधारी[२]। तिंह[३] आपुन[४] मँह कहाँ[५] विचारी ॥१
जो कछु होनी कँह सो भेंटा[६]। बिधि का लिखा जाइ न मेटा ॥२
सो र[७] करहु जिंह[८] राज रहाई। हमरे रोयें[९] जिउ[१०] न जियाई ॥३
वइ कँह चलहु तिरिया कै राजू। हम पर बीस बरस करु राजू[११] ॥४
करन[१२] राइ कँह घर लै आये। आन सिंघासन पर बैठाये[१३] ॥५
सब नेगिंह[१४] मिलि माथा नावा[१५], जुगजुग भोंजहु राज।६
तुम्ह हमरें सिर ऊपर राजा, चलै राज कर काज ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–अहे। २–बुधि भारी। ३–तेन्ह। ४–आपस। ५–कीन्ह। ६–जो किछु भवा जाइ न मेटा। ७–अब सो। ८–जेहि। ९–रोये हमरे। १०–मुवा। ११–पूरी पंक्ति नहीं है। १२–कर्न। १३–बैसाये। १४–नेगिहु। १५–माथ जो नावा।

टिप्पणी—(१) बुधारी—बुद्धिमान।
(२) भेंटा—मिला; प्राप्त हुआ।

१—इस प्रतिमें पंक्ति चार नहीं है। उसके स्थानपर पंक्ति ५ है। पाँचवीं पंक्तिके स्थानपर नयी पंक्ति है—वैठि सिंघासन करहिं जोहारा। हम सब नेगी मुनि वार तुम्हारा ॥

४३१

(दिल्ली[1]; एकडला; बीकानेर[1])

पहिलें हिन्दुई कथा[1] अही। फुनि र काँहि तुरकी लै कही[2] ॥१
फुनि[3] हम खोल अरथ[4] सब कहा। जोग सिंगार वीर रस अहा[5] ॥२
खट भाका जो ईहहिं वाचा[6]। पण्डित बिन बूँझत हो साँचा[7] ॥३
बहुल पाख भाँदों जिह आही[8]। सिंघ रासि संघ तँह निरख[ा*]ही[9] ॥४
जहिया पन्द्रह सै हुत साठी[10]। तहिया ईह चौपाईह[11] गाँठी[12] ॥५
बहुत[13] अरथ हहिं[14] इहँ[15] मँह कोलै[16], जौ सुधि सेउ कोउ बूझ[17] ।६
कहेंउ जहाँ लग पारेउँ[18], जो कछु[19] वहै[20] हियैं[21] मैं[22] सूझ[23] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) प]हिले हिदुई कसथा; (बी०) पहिलेहि ये दुइ कथा। २–(ए०) फुँनि रे काटि करहिं सुनाही; (बी०) जोग सिंगार बीर रस कही। ३–(बी०) पुनि। ४–(ए०) फुनि रे खोल उन्हहिं। ५–(ए०) जोग सिंगार बियोगी लहा; (बी०) लघु-दीरघ कौतुक नहिं रहा। ६–(बी०) खट भाखा आइहिं एहि माँझ; (ए०) खट भाखा आहे एहि मांझी। ७–(बी०) पंडित बिन बूझत होइ साँझ; (ए०) बेद बिनु बूझत होय साँझी। ८–(बी०) पहिले पाख भादों छठि अही;(ए०) पंक्ति अस्पष्ट। ९–(बी०) सिंघ रासि सिंह नीरावही; (ए०) सिंघ रासि सिंह निरखहे। १०–(बी०) जहिया होते पन्द्र सै साठी; (ए०) छायाबन्ध सिर हुत साखा। ११–(बी०) तहिया ऐ रे चौपई। १२–(ए०) तहिया कवि सिरी ऊखा। १३–(बी०) बहुतै। १४–(बी०) अहहिं। १५–(ए०, बी०) यहि। १६–(ए०, बी०) ×। १७–(बी०) जौ कोई सुधि से बूझ; (ए०) जो सुधि सौं कोई बूझि। १८–(बी०) लहु परेउ; (ए०) लगि परेव। १९–(बी०) किछु; (ए०) कुछु। २०–(ए०, बी०) ×। २१–(बी०) हिदै। २२–(ए०) मन। २३–(ए०) सूझि।

टिप्पणी—(१) **हिन्दुई**—भारतीय। **काँहि**—किसी ने। **तुरकी**—तुर्क भाषा; यहाँ तात्पर्य सम्भवतः अरबी से है।

(३) **खट भाका**—षट् भाषा (देखिये १५०।१ की टिप्पणी।)

(४) **बहुल पाख**—कृष्ण पक्ष।

४३२

(दिल्ली; बीकानेर)

वहै एक जब[1] लग तन साँसा। ऊ बिन घटै[2] भई वहि आसा ॥१

१—दिल्ली तथा बीकानेरकी प्रतियोंमें पंक्ति ५ पंक्ति ३ के रूपमें है। किन्तु वहाँ वह असंगत प्रतीत होता है। यह पंक्ति मूलतः पाँचवीं पंक्ति के रूप में ही रही होगी यह एकडला प्रतिके आधारपर अनुमान किया जा सकता है।

नित कर आह रहहि नित ओही[3]। नित परसेउ होउ वह मोही[4] ॥२
अहि निसि जपहु[5] छाड़ि सब काजा। अन्त रहहि ओकर[6] राजा ॥३
प्रथम अन्त[7] काज जिह[8] सेतीं। सो रे जपहु छाड़ बुधि चेतीं[9] ॥४
मोंख न आह[10] और बुधि कीते[11]। बुधि ओकर अस रहु लीते[12] ॥५
अहै जो रे आयसु वहि केरें[13], सो र दोउ जग पाउ[14] ।६
जग दूनों का आहहि जग मँह[15], और बहुत हहिं साउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–है तब। २–औ फुनि घट मँह। ३–नितु क अहार नितु वोह वोही। ४–नितु परसहु सुमिरहु। ५–(दि०)×। ६–अनंत रहहि वोहि करपै। ७–अन्य। ८–जेहि। ९–ऐती। १०–अहि। ११–किये। बुधि वोहि केर आसरहु लिये। १३–जोरे होइहि आइस वोहि केरे। १४–दुवौ जग सो पाउ। १६–दुवौ जग कै आहहि एहि मँह।

टिप्पणी—(२) ओही—वही।
(३) अहिनिसि—दिन-रात। ओकर—उसका।

परिशिष्ट

प्रक्षेप

यहाँ बीकानेर, दिल्ली और मनेर प्रतिके वे अंश संकलित हैं, जिन्हें हमने मूल पाठमें ग्रहण नहीं किया है और पृष्ठ ९२-९८ में प्रक्षित घोषित किया है।

१

(कड़वक ९८ की पंक्ति १ और २ के बीचमें)

(बीकानेर १९।१; दिल्ली मार्जिन)

उघटी काग[१] ररे दिग[२] बाँये। दहिने फेकरि सियार घटाये[३] ॥२
बिनु[४] रितु[५] बीजु चमक[६] घन गरजे[७]। कै कुसुगुन दहिनें घर बरजें[८] ॥३
बाँयें[९] डवरू आइ बजावा। रात बहिर तरहीं[१०] दिखावा ॥४
मारग रोदन रहै बौराई[११]। आगें एक अँवरी बन आई[१२] ॥५
जोगी कापी जोडरी पारी, की सुगती कही न।६
इन्हहिं देखै वड़ कुसगुन, तेली चिकरा मीन ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–[...] क। २–दिसि। ३–दहिंन झिंकरि सियारि कहाये। ४–५—× । ६–चमकै। ७–गराजै। ८–बाजै। ९–× । १०–राति बीहर तरई। ११–पाक रोवै तन रहै बौरावा। १२–आगे कला दिगंबर आवा।

(बीकानेर १९।२)

म्रिगा नाँघि पुनि पंथ फिराई। दहिनै तै वाई दिसि जाई।१

२

(कड़वक ११० और १११ के बीच)

(बीकानेर २१।३)

राजा रोवै बहुत दुख पाई। अरथ दरब बहु दिया लुटाई ॥१
पालि पोसि कै कियेउ सँजोगा। से हम कहँ दै गयेउ बिवोगा ॥२
वहि बियोग मोहि जिया न जाई। कहइ मरौं अवहीं विसु खाई ॥३
बहुत अगिन हम उर दै खेला। जीउ न चेतै राज खर दुहेला ॥४
लोगहु राजा कहँ समुझाई। दिन एक जियत मिलिह तुह आई ॥५

होखी कोई धोहरा, कुँवर मिलिह तुह आइ ।६
तब लग विरस भजहु, करहु दइय चित लाइ ॥७

३

(कड़वक १११ और ११२ के बीच)
(बीकानेर २१।५)

सत सै धर्मपन्थ पगु दीतसि । सत साथी आगै कै लीतसि ॥१
सत संबर सत भोजन लीन्हा । सत ओढ़न सर डासन कीन्हा ॥२
सत अधार सत जीउ पराना । सत किंगरी सत भाउ बखाना ॥३
सत सै जाइ असत न रूपा । पूजै तेंहि जेहि कोइ न पूजा ॥४
सत से सिध सत मन लावा । सतै जपै मन कूर न भावा ॥५
वहै एक चित लाइसि, से और न मन मैं भाउ ।६
भोग अनन्द तेही दिना, जेहि दिन वहि कहँ पाउ ॥७

(बीकानेर; २१।६)

चला जाइ खिन थिर न रहाई । सँवरै तेहि जेहि के पथ जाई ॥१
वहि छाँड़ि और न मन महिं भावइ । तहाँ जाइ जहँ वोहि कहँ पावइ ॥२
जेहि बेधनि सर तेही चहई । जागी रूप ढूँढ़ि तेहि जाई ॥३
हाँडे गिरि साइर वन घना । सो प्रीतम भेंटै केहि बना ॥४
चला जाइ दिन रैनि का करई । रहा हियै धरि खिन न बिसारई ॥५
गिरि परबत वन हाढ़ैं सायर, संक न मानै चित्त ।६
पिरम भुलावा बिरह झर, भवै न बाँधै थित्त ॥७

४

(कड़वक ११३ की प्रथम दो पक्तियोंके बाद)
(बीकानेर २२।३)

केस कर गिय मधु औ भुजा । ऐस बादि घन आहै कुँजा ॥३
अँगुरी पदुम नख रूँम कपोला । कन्धस्थल पहै अमोला ॥४
केस कुटिल औ नाँभि गँभीरा । नैन तरंग पहि भँवर कमीरा ॥५
पनि कन्द्रो सुख उदो रह, जानौ दन्त उदन्त ।६
नैन चरन कर जीभ तालुका, अधर बरुनी सोभन्त ॥७

(कड़वक ११३ की पंक्ति ३ के बाद)
(बीकानेर २२।२)

पा चीकन अस ओराई । जानहु असोग पल्ली लै लाई ॥२

(कड़वक ११३ की पंक्ति ४ के बाद)

बतीसो लखन सो परगट पूरे। झूठे भये न आहहिं फुरे ॥४

५

(कड़वक १६७ की पंक्ति ५-७ के स्थानपर)
(बीकानेर ३१।३)

जो किछु करम लिखा सो भावा। उनहिं कोर छाड़सि मो माया ॥५
जेहि दिन बिधना निरमयेव, तेहि दिन लिखा कपार।६
सात सरग चढ़ धावौ कोई, अंक न मिटै लिलार ॥७

६

(कड़वक २०६ की पंक्ति ३ के बाद)
(बीकानेर; ३७।३ दिल्ली मार्जिन)

मालति[1] बेल[2] गुलाल सुहाई। सेवती औ चम्पा लै लाई[3] ॥४
चाँप नेवारी करना फूला[4]। बास[5] माँत[6] मधुकर रंग[7] भूला ॥५
सोनजरद[8] नागेसर[9] जुही[10], फूले आनों फूल[11]।६
यह[12] सुहाइ देखसि[13] फुलवारी, देखत तिंह[14] जिउ भूल ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—
१–मालती। २–बेलि। ३–सेवती आनि चंबेली लाई। ४–जुही निवारी (औ) कर्न फूला। ५–बासु। ६– मालती। ७–×८।–सोनजरदा। ९–नगेसिरी।१०–जूही ११–फूली अनवनि फूलि। १२–बहु। १३–×। १४–देखतहिं रहा।

(बीकानेर ३७।४, दिल्ली मार्जिन)

बाला[1] दौनाँ[2] मरुवा लावा[3]। केवड़ औ केतकी सुहावा[4] ॥१
सरखण्ड फूलै औ छर बेनाँ[5]। पाडल[6] चम्पा बहुत[7] को गुनाँ[8] ॥२
मौलसिरी[9] कुन्द पँच परका[10]। औ चम्पा जूरी भुँइ तरका[11] ॥३
कूदमनाँ औ माधो सुहावा[12]। जिह क[13] वास मालति जिउ[14] लावा॥४
फूल मझोनाँ[15] सेंदुरबारी। बिनु परिमल कै गहीं[16] सँवारी ॥५
सिंगारहार[17] औ गुड़हल[18], बहुत बेकर पाँत[19]।६
फूल माँझ परिमल के[20], कहै[21] सो भाँतहिं भाँत[22] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—
१–×। २–दवना। ३–लाई। ४–केलिक करै जो फूल सोहाई। ५–सिरखेडी औ उर छुँरेना। ६–पंडर। ७–बहु। ८–गना। ९–बौरसी। ११–चम्पा बागा। ११–और जो चम्प उनै भुँइ लागा। १२–केर भसल मधुमन्त सोहावा। १४–

जेहि कर। १४-मालती मधु। १५-[......]धनी औ। १६-गहेउ। १७-हर सिंगार। १८-बोडहुल। १९-नहसुती पाँतहि पाँत। २०-फूल परिमल चंपच, २१-कहेउ। २२-भाँति।

७

(कड़वक २४५ के पंक्ति २ के बाद)

(बीकानेर ४४।१)

सुनि मिरगावति हँसि कै कहा। एत दुख हम निति केहि गुन सहा ॥३
कुँवर कहा सुनु प्रान पियारी। पटरस कैसे जाइ सँभारी ॥४
जेहि महँ एक वह रे ना होई। रहै न जाई औंटि मरै सोई ॥५
हरिन पतिंगा भौंर जिमि, नग जप कप रस लीखु।६
इनही से वै नहिं जरहिं, तेहि पर पेम बलि सीखु ॥७

८

(कड़वक २४८ की तीसरी पंक्तिके बाद)

(बीकानेर ४४।५)

जेन्ह पानन्ह तेरह गुन पूरे। कडुआ कट मधु औ गूरे ॥४
खरख खरव तस पुनि साना। किम्रि हरन दुरगन्ध बिनाना ॥५
मुख अभरन शोभा भल पावै, काम अगिनि उनमाद।६
सुध सरीर होइ जिहि खाई, सब जो सरूप सवाद ॥७

(कड़वक २४८ की पंक्ति ४ और ५ के बाद और ६-७ से पूर्व)

(बीकानेर ४४।६)

घोरि चत्रसम धरे कचोरा। ठाँउ ठाँउ धरि गये सो खोरा ॥३
करडी चारि चारि एक एक आगे। फूल माल गूँथे बिनु तागे ॥४
सुरपति सुरंग मुनि सुनि धाये। देखि सभा सब पाप गँवाये ॥५

९

(कड़वक २५० और २५१ के बीचमें)

(बीकानेर ४५।३)

पाँच सबद साज सब कहे। भीन भीन कै पाँचों रहे ॥१
एक सबद करहिं सै बाजहिं। औ एक कंठहि से साजहिं ॥२
एक मुख से जो बजावहिं। और एक बाँहि डोरि जो लावहिं ॥३
औ एक नख बजै जो ताँती। सुनत सबदहिं यह रखे मन होइ सांती ॥४
पाँचो सबद कथा मँह कहे। जो ग्रन्थ हम सुने जे अहे ॥५

खर डाँडी मुख जोरि नख, ताँती जो र वजाव ।६
पाँचउ आने जोरि कै, अब जो सरसुती कहाव ॥७

१०

(कड़वक २५८ की प्रथम चार पंक्तियोंके बाद)

(बीकानेर : ४६।५)

औ जो खस्ट नायका कहियहि । ते पइयै जे उन महँ चहियहि ॥५
आठौं कहौं सँभरि कै, एक एक देउँ वुझाइ ।६
आध लेउ नव सात कै, पण्डित लेखै नहिं जाइ ॥७

(बीकानेर ४६।६)

अखट एक ना कहौं बिसेखी । जो जस होइ कहौं तेहि जोरी ॥१
नारी खण्डित सो रे कहावइ । जाकर पिउ अनतहिं बसि आवइ ॥२
बिप्रलुबुध मिलै नहिं काऊ । गुपुत साथ नहिं कामिनि मिलाई ॥३
बसुकी सेज मिलै की आसा । सब निसि जागै पिउ की आसा ॥४
अभिसारी करै जामिनी । कलिहि रति तातें त मनी ॥५
उत खण्डिता पिउ औ विदेसी, विलग होइ रति नहिं पांव ।६
....॥७

(बीकानेर ४७।१)

अनवन भाँति सखी सब आई । रूप सरूप सोहाग सोहाई ।१

(कड़वक २५८ की पंक्ति ५ के बाद)

काहू हाथ चतुर सम घोरा । काहू हाथ पुहुप के जोरा ॥३
कोई कर नौलखी लियै । नौ जोवन औ अभरन किये ॥४
आपु आपु महँ करहिं धमारी । जहाँ वैठी म्रिगावती नारी ॥५

११

(कड़वक २९९ और ३०० के बीच)

(मनेर १६० अ)

दीपक मन मँह कहा विचारी । ईह कहँ लाज मोर हिय भारी ॥१
हौं निघर किंह जाँउ बिछोही । लाज तज रे मनावइ रोही ॥२
यह कह दीपक घर कँह जाई । मिरगावति मन माँझ सँकाई ॥३
दीपक मुहि सेउ किय चतुराई । अन्तस स्याम दइ घर जाई ॥४
उन सो मन्त्र करौं मन माँही । बकनहिं मन्त्र दुउर जिंह पाहीं ॥
अब सो मन्त्र करौं मन भीतर, जिंह दिवइ काज मिराइ ।६
मन्त्र अहे पिय चितयां, पुन र अगिन सत दिया जराइ ॥७

१२

(कड़वक ३७८–३७९ के बीच)

(बीकानेर ६७।३)

वह तो मानिनि मान दिखरावै। अखिट भाव एहि मदन सतावै॥१
सबै दाँव अवसथव भँवई। आइ तो पंचसर भंग कराई॥२
बिपत बिबि असुर बियापा। परा रे सर मारै गहि चापा॥३
बहुत जतन करै नहिं मानै। मान भंग मूरिख कै जानै॥४
अखिट भाव कर सह बिकरारा। रस रस बिरसै बर न सँचारा॥५
मानिनि न मानै कयफर, जो रे चरन परै कन्त।६
सहज भुअंगम जौ नवहिं, कि करियहि तेहि सनमन्त॥७

१३

(कड़वक ३९२ की प्रथम पंक्तिके बाद)

(बीकानेर ६९।५)

बहुरि लागि धिय कहुँ सिख देई। कुल राखै कुलवन्ती सोई॥२
सासु ननद कहुँ उतर दीजै। जो वै कहहिं सो सिर पर कीजै॥३
बिनु पूछै बकत न मुँह खोली। मधुरे बचन परजन सैं बोली॥४
पिउ चाहै सहज इन चलिये। नित नौत नौते सेउ रहिये॥५
केउ बच लाख जो बोलइ, आप गरुवै होइ रहिउ।६
रानी कहै इन आगे, यह कुलवन्ती टेउ॥७

(बीकानेर ६९।६)

साँचेहु सौति करै तुम्ह जानेहु। करुवा बचन खाँड घिउ सानेहु॥१
बोल एक कहुँ उतर न दीजै। वहइ लजाइ हिये मैं छीजै॥२
लाज करेहु जनि करेहु ढिठाई। बाँह उठाइ जनि चलहु धँधाई॥३
सौंहे न हेरेहु नैन पसारी। अँबरइ मुख रखिहहु बारी॥४
कोह मारि मन करिहहु साँती। दुखित न कहै कोइ किहि भाँती॥५
दूनौ कुल हौ निरमल, सत साका परवान।६
करतब सोई कीजियहु, जस सुनियै एहि कान॥७

(कड़वक ३९२ की पंक्ति २-३ के बाद)

(बीकानेर ७०।१)

कलस भरे कन्या कोइ आई। मछरी जो कोई लै जाई॥३
आगी जरी जनौं सुख राती। लटकि चली जनौ पिय मदमाती॥४
कुँसुम जो माली लै आवा। दरिपन आनि पुनि नरपित देखरावा॥५

बाँभन ब्रिध बचन सुभ भाखत, महरि जो दही लै आइ।६
संख भेरि पुनि बाजत, सरस सबद कराइ॥७

(बीकानेर ७०।२)

भई अब टेर रावत जन भले। महते नेगी समदन चले॥१
बाँभन भाट जो माँगन अहे। लगे संग अति जाहिं न कहे॥२
जोजन दोइ करि जाइ तुलाना। तहाँ जाइ कै कीन्ह मिलाना॥३
वोही नदी अमर जल नाऊँ। बाग बगीचा अपूरब ठाऊँ॥४
खिन एक माँह भई जेवनारा। सब केहू कहँ भवा हँकारा॥५
जेइ जूँठ करि उठे, और कर दीन्हेउ पान।६
कंचन तुरिय दै बहोरे, राखिन्हि सब कर मान॥७

(कड़वक ३९२ की पंक्ति ४-५ के बाद)
(बीकानेर ७०।३)

बहुत कटक आगे कै पाछे। मैगल ठाकुर आवहिं काछे॥३
गँइर चलत भवाँ अँधियारा। सर सेत कहँ चले पहारा॥४
उठै खेह दर सुझै न हाथा। एक एक बिहरे संग साथा॥५
जानौ सरग धरती सै होइ लग, मिलवा मिलै न एकहि एक।६
दरमर पंक होइ तहँ जाई, पानी होइँ अनेक॥७

———

२

कड़वक–तुलनात्मक सारिणी

ग्रन्थके सम्पादनमें विभिन्न प्रतियोंके कड़वकोंका किस क्रमसे उपयोग हुआ है, यह इस सारिणीमें स्पष्ट किया गया है, इससे अनुसन्धित्सुओंको विभिन्न प्रतियोंके तुलनात्मक अध्ययनमें सरलता होगी।

दिल्ली प्रतिमें कड़वकोंको न तो अंकबद्ध किया गया है और न उसके प्रत्येक पृष्ठमें कड़वकोंकी समान पंक्तियाँ हैं। अतः हमने उन्हें अपनी ओरसे क्रमांकित किया है और वे ही क्रमांक उस प्रतिके कड़वकोंके लिए यहाँ प्रयुक्त हुए हैं।

एकडला प्रतिके पृष्ठोंपर जो अंक अंकित मिलते हैं, वे अंक कड़वकोंके क्रमका निश्चित बोध नहीं कराते। उसके अंकोंमें तारतम्य न होनेके कारण हमने इस प्रतिके कड़वकोंके लिए भारत कला भवनकी पंजिकाकी संख्याका उल्लेख किया है। जो पृष्ठ भारत कला भवनमें नहीं हैं, उनके अस्तित्व बोधके लिए तारांकनका प्रयोग किया गया है।

बीकानेर प्रतिके लिए पृष्ठ-संख्याका उपयोग सुविधाजनक लगा। उसके प्रत्येक पृष्ठमें समान रूपसे ६ कड़वक हैं। अतः प्रत्येक पृष्ठके कड़वकोंका बोध करानेके लिए कोष्ठकमें १ से ६ संख्याका प्रयोग किया गया है।

मनेर प्रतिके प्रत्येक पत्रमें दो कड़वक (प्रत्येक पृष्ठपर एक) हैं। अतः उनके लिए पत्र संख्याके साथ पृष्ठके लिए क और ख का प्रयोग किया गया है।

चौखम्भा और काशी प्रतियोंके कड़वक थोड़े हैं। मूल ग्रन्थमें उनका क्या क्रम था, ज्ञात न होनेसे उनके लिए किसी प्रकारका संख्या-संकेत सम्भव न हो सका। उनके अस्तित्व बोधके लिए हमने तारांकन का उपयोग किया है।

सम्मेलन संस्करणमें अनेक कड़वकोंका अभाव है और मुद्रित कड़वकोंमें भी अनेक स्थलोंपर व्यतिक्रम है। अतः उनका भी निर्देश इस सारिणीमें किया जा है। उसमें जो कड़वक पाद-टिप्पणीमें दिये गये हैं, उनके लिए तारांकनका प्रयोग किया गया है।

अन्य सूचनाएँ पाद-टिप्पणीके रूपमें दी गयी हैं।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
१					
२		७९९१			८
३					

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	चौखम्भा प्रति	सम्मेलन संस्करण
४	४[१]				
५	५				
६	६	७८५९			१
७	७	*		*	२
८	८	*		*	३
९	९	*		*	४
१०	१०	७९०५			५
११	११				
१२	१२	७७४३			१२
१३	१३			*	*[२]
१४	१४				
१५	१५	७९३७			६
१६	१६	७९५०			१०
१७	१७	७८०३			७
१८	१८	७८३१			११
१९	१९	७९४०			१०८
२०	२०	७८१३			
२१	२१				
२२	२२				
२३	२३	७९६९			१३
२४	२४	७८४१			१४
२५	२५	७७६६			२८
२६	२६	७७८६			१५
२७	२७	७८००			९३
२८	२८	७९२२			१६
२९	२९	७८२४			१७
३०	३०				
३१	३१	७८२१	६ (१)		१८
३२	३२	७७६५	६ (२)		१९
३३	३३	७८५१	६ (३)		२०
३४	३४	७८१९	६ (४)		२१

१. केवल ढाई पंक्ति उपलब्ध।

२. सम्मेलन संस्करण में पृ० २०३ में पाद-टिप्पणीके रूपमें अंकित।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
३५ }	३५[1]		६ (५)		२२
३६ }			६ (६)		२३
३७	३६	७८५०			२४
३८	३७	७८५२			२५
३९	३८	७९४९			२६
४०	३९	७८६९			२७
४१	४०	७८७८			२९
४२	४१	७८७९			*[2]
४३	४२	७८३४			*[3]
४४	४३				
४५	४४				
४६	४५				
४७	४६				
४८	४७	७८४८			५५
४९	४८	७७९०			४१
५०	४९				
५१	५०	७७९६			३०
५२	५१	७८८१			३१
५३	५२	७९१३			३४
५४	५३				
५५	५४	७८४९			३२
५६	५५	७८२९			३३
५७	५६				
५८	५७				
५९	५८				
६०	५९				
६१	६०				
६२	६१				
६३	६२				
६४	६३	*			३५

१—इसमें कड़वक ३५ की प्रथम चार और कड़वक ३६ की अन्तिम ३ पंक्तियाँ हैं।
२—कड़वक ३२३ (सं० स० २७९) के पाठान्तर रूपमें गृहीत।
३—कड़वक ३२८ (सं० स० २८४) के पाठान्तर रूप में ग्रहीत।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
६५	६४				
६६	६५				
६७	६६				
६८	६७				
६९	६८				
७०	६९				
७१	७०				
७२	७१				
७३	७२				
७४	७३				
७५	७४				
७६	७५				
७७	७६				
७८	७७	७८५५			३६
७९	७८	७९७४			३७
८०	७९	७७९४			३८
८१	८०	७८४४			३९
८२	८१	७९८६			४०
८३	८२	७७९२			४२
८४	८३	७८१०			४३
८५	८४				
८६	८५		१७ (१)		४४
८७	८६	७८०४	१७ (२)		४५
८८	८७	७८३९	१७ (३)		४६
८९	८८	७८२७	१७ (४)		४७
९०	८९	७८८५	१७ (५)		४८
९१	९०		१७ (६)		४९
९२	९१	७८८९			५०
९३	९२	७७९५			५१
९४	९३	७८६१			५२
९५	९४	७८८७			*[1]

१—कड़वक ३९४ (स० स० ३५४) के पाठान्तर रूपमें गृहीत।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
९६	९५	७९२५			५३
९७	९६	७७४९			५४
९८	९७		१९ (१)[१]		५६
			१९ (२)[२]		५७
९९	९८	७८९९	१९ (३)		५८
१००	९९		१९ (४)		५९
१०१	१००	७९४८	१९ (५)		६०
१०२	१०१	७८१६	१९ (६)		६१
१०३	१०२	७८६६			६२
१०४	१०३	७९१९			६३
१०५	१०४	७८५४			६६
१०६	१०५	७९२८			६४
१०७	१०६	७९४३			६५
१०८	१०७	७८१८			६७
१०९	१०८	७८३६	२१ (१)		६८
११०	१०९		२१ (२)		६९
			२१ (३)		७०
१११	११०	७८६३	२१ (४)		७१
			२१ (५)[२]		७२
			२१ (६)[३]		७३
११२	१११	७९८७	२२ (१)		७४
११३	*		२२ (३)[४]		७६
			२२ (२)[५]		७५
११४	११२	७९४६	२२ (४)		७७
११५	११३	७७७६	२२ (५)		७८
११६	११४	७७५८	२२ (६)		७९
११७	११५	७७६३	२३ (१)		८०

१—केवल प्रथम पंक्ति ; शेष प्रक्षिप्त ।

२—प्रथम पंक्ति के अतिरिक्त शेष पंक्तियाँ ; प्रथम पंक्ति प्रक्षिप्त ।

३—प्रक्षिप्त ।

४—प्रथम दो पंक्ति ; शेष प्रक्षिप्त ।

५—पंक्ति २ और ४ के अतिरिक्त ; ये पंक्तियाँ प्रक्षिप्त ।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
११८	११६	७९११	२३ (२)		८१
११९	११७	७७९३	२३ (३)		८२
१२०	११८	७८९७	२३ (४)		८३
१२१	११९	७८१२	२३ (५)		८४
१२२	१२०		२३ (६)		८५
१२३	१२१	७९२०			८६
१२४	१२२	७८८३			८८
१२५	१२३	७७७२			८९
१२६	१२४	७८३२			९०
१२७	१२५	७८३७			९१
१२८	१२६	७९७९			९२
१२९	१२७				
१३०	१२८	७९५९			९४
१३१	१२९	७७६९			९५
१३२	१३०	७७९९			९९
१३३	१३१	७७५२			१००
१३४	१३२	७९१६			९८
१३५	१३३	७९१५			९६
१३६	१३४	७९२९			९७
१३७	१३५	७९८५			८७
१३८	१३६				
१३९	१३७	७७४७			१०१
१४०	१३८	७७८४			१०२
१४१	१३९	७७६०			१०३
१४२	१४०	७७७३			१०४
१४३	१४१	७९०१			१०५
१४४	१४२	७७८३			१०६
१४५	१४३				
१४६	१४४	७९६१			१०७
१४७	१४५	७९५८	२८ (१)		१०९
१४८	१४६		२८ (२)		११०
१४९	१४७		२८ (३)		१११

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
१५०	१४८	७७९७	२८ (४)		११२
१५१	१४९		२८ (५)		११३
१५२	१५०		२८ (६)		११४
१५३	१५१	७९३२	२९ (१)		११५
१५४	१५२	७९५३	२९ (२)		११६
१५५	१५३	७९५४	२९ (३)		११७
१५६	१५४	७७७१	२९ (४)		११८
१५७	१५५		२९ (५)		११९
१५८	१५६		२९ (६)		१२०
१५९	१५७	७९५२	३० (१)		१२१
१६०	१५८	७८३५	३० (२)		१२२
१६१	१५९	७८९८	३० (३)		१२३
१६२	१६०	७९००	३० (४)		१२४
१६३	१६१	७८२६	३० (५)		१२५
१६४	१६२	७८५३	३० (६)		१२६
१६५	१६३	७९०२	३१ (१)		१२७
१६६	१६४	७९०६	३१ (२)		१२८
१६७	१६५	७७७८	३१ (३)[1]		१२९
१६८	१६६		३१ (४)		१३०
१६९	१६७		३१ (५)		१३१
१७०	१६८		३१ (६)		१३२
१७१	१६९		३२ (१)		१३३
१७२	१७०	७८०२	३२ (२)		१३४
१७३	१७१		३२ (३)		१३५
१७४	१७२	७७६४	३२ (४)		१३६
१७५	१७३		३२ (५)		१३८
१७६	१७४	७९३५	३२ (६)		१३७
१७७	१७५		३३ (१)		१३९
१७८	१७६	७९०३	३३ (२)		१४०
१७९	१७७		३३ (३)		१४१
१८०	१७८	७८०९	३३ (४)		१४२

१—प्रथम चार पंक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त ।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
१८१	१७९	७८५७	३३ (५)		१४३
१८२	१८०		३३ (६)		१४४
१८३	१८१	७८२५	३४ (१)		१४५
१८४	१८२		३४ (२)		१४६
१८५	१८३	७८३३	३४ (३)		१४७
१८६	१८४	७८४३	३४ (४)		१४८
१८७	१८५	७९३६, ७८४६	३४ (५)		१४९
१८८	१८६	७९५१	३४ (६)		१५०
१८९	१८७	७८९६	३५ (१)		१५१
१९०	१८८	७८१५	३५ (२)		१५२
१९१	१८९	७७५६	३५ (३)		१५३
१९२	१९०	७७८७	३५ (४)		१५४
१९३	१९१	७७६७	३५ (५)		१५५
१९४	१९२	७८०१	३५ (६)		१५६
१९५	१९३		३६ (१)		१५७
१९६	१९४				
१९७	१९५				
१९८	१९६				
१९९	१९७		३६ (२)		१५८
२००	१९८	७९२३	३६ (३)		१५९
२०१	१९९		३६ (४)		१६०
२०२	२००		३६ (५)		१६१
२०३	२०१	७८२०	३६ (६)		१६२
२०४	२०२	७९६७	३७ (१)		१६३
२०५	२०३	७७८२	३७ (२)		१६४
२०६	२०४		३७ (३)[१]		१६५
	*[२]		३७ (४)[२]		१६६
२०७	२०५		३७ (५)		१६७
२०८	२०६		३७ (६)		१६८
२०९	२०७		३८ (१)		१६९

१—प्रथम तीन पंक्ति; शेष प्रक्षिप्त ।
२—प्रक्षिप्त

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
२१०	२०८	७८०७	३८ (२)		१७०
२११	२०९		३८ (३)	*	१७१
२१२	२१०	७९३८	३८ (४)	*	१७२
२१३	२११	७८१४	३८ (५)	*	१७३
२१४	२१२		३८ (६)	*	१७४
२१५	२१३	७९४१	३९ (१)	*	१७५
२१६	२१४	७८७७	३९ (२)	*	१७६
२१७	२१५	७७४६	३९ (३)	*	१७७
२१८	२१६	७८७६	३९ (४)	*	१७८
२१९	२१७		३९ (५)	*	१७९
२२०	२१८	७९५४	३९ (६)	*	१८०
२२१	२१९	७९७५	४० (१)	*	१८१
२२२	२२०	७९४५	४० (२)	*	१८२
२२३	२२१	७८४२	४० (३)	*	१८३
२२४	२२२	७९८१	४० (४)	*	१८४
२२५	२२३	७८२३	४० (५)	*	१८५
२२६	२२४	७९७७	४० (६)	*	१८६
२२७	२२५		४१ (१)	*	१८७
२२८	२२६	७७७०	४१ (२)	*	१८८
२२९	२२७	७९१२	४१ (३)	*	१८९
२३०	२२८	७९४२	४१ (४)	*	१९०
२३१	२२९	७७७७	४१ (५)	*	१९१
२३२	२३०	७९०८	४१ (६)	*	१९२
२३३	२३१	७९४७	४२ (१)	*	१९३
२३४	२३२	७७७९	४२ (२)	*	१९४
२३५	२३३	७८१७	४२ (३)	*	१९५
२३६	२३४		४२ (४)		१९६
२३७	२३५	७९०९	४२ (५)		१९७
२३८	२३६	७९७३	४२ (६)		१९८
२३९	२३७	७७९१	४३ (१)		१९९
२४०	२३८	७७५०	४३ (२)		२००
२४१	२३९		४३ (३)		२०१

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
२४२	२४०	७८३८	४३ (४)		२०२
२४३	२४१		४३ (५)		२०३
२४४	२४२		४३ (६)		२०४
२४५	२४३	७९८२	४४ (१)[1]		२०५
			४४ (२)[2]		*
२४६	२४४	७९१८	४४ (३)		२०६
२४७	२४५	७८८४	४४ (४)		२०७
२४८	२४६	७९११	४४ (५)[3] ४४ (६)[4]		२०८
२४९	२४७	७९६०	४५ (१)		२०९
२५०	२४८	७९६२	४५ (२)		२१०
			४५ (३)		२११
२५१	२४९		४५ (४)		२१२
२५२	२५०		४५ (५)		२१३
२५३	२५१		४५ (६)		२१४
२५४	२५२		४६ (१)		२१५
२५५	२५३		४६ (२)		२१६
२५६	२५४		४६ (३)		२१७
२५७	२५५		४६ (४)		२१८
२५८	२५६	७९८३	४६ (५)[5] ४६ (६)[6] ४७ (१)[7]		२१९
२५९	२५७		४७ (२)		२२०
२६०	२५८	७७८९	४७ (३)		२२१
२६१	२५९	७९७६	४७ (४)		२२२

१–प्रथम दो पंक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त ।

२–दो पंक्तियाँ रिक्त ।

३–प्रथम तीन पंक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त ।

४–प्रथम दो और अन्तिम दो पंक्तियाँ; पंक्ति ३-५ प्रक्षिप्त ।

५–प्रथम चार पंक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त ।

६–प्रक्षिप्त ।

७–केवल पंक्ति २, ६, और ७; शेष प्रक्षिप्त

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	मनेर प्रति	सम्मेलन संस्करण
२६२	२६०	७८९५	४७ (५)		२२३
२६३	२६१	७९७६	४७ (६)		२२४
२६४	२६२		४८ (१)		२२५
२६५	२६३	७९२७	४८ (२)		२२६
२६६	२६४	७७४८	४८ (३)		२२७
२६७	२६५		४८ (४)		२२८
२६८	२६६	७९३४	४८ (५)	१४४ अ	२२९
२६९	२६७	७८४५	४८ (६)	१४४ ब	२३०
२७०	२६८	७८७१	४९ (१)	१४५ अ	२३१
२७१	२६९	७८९१	४९ (२)	१४५ ब	२३२
२७२	२७०	७८६०	४९ (३)	१४६ अ	२३३
२७३	२७१	७७८८	४९ (४)	१४६ ब	२३४
२७४	२७२		४९ (५)	१४७ अ	२३५
२७५	२७३		४९ (६)	१४७ ब	२३६
२७६	२७४	७९२६	५० (१)	१४८ अ	२३७
२७७	२७५	७८४०	५० (२)	१४८ ब	२३८
२७८	२७६	७९१०	५० (३)	१४९ अ	२३९
२७९	२७७	७७६८	५० (४)	१४९ ब	२४०
२८०	२७८	७९८९	५० (५)		२४१
२८१	२७९	७७५४	५० (६)		२४२
२८२	२८०	७७५१	५१ (१)		२४३
२८३	२८१	७९७७	५१ (२)		२४४
२८४	२८२		५१ (३)	१५२ अ	२४५
२८५	२८३	७८९०	५१ (४)	१५२ ब	२४६
२८६	२८४	७८६६	५१ (५)	१५३ अ	२४७
२८७	२८५	७८९३	५१ (६)	१५३ ब	२४८
२८८	२८६		५२ (१)	१५४ अ	२४९
२८९	२८७	७९१४	५२ (२)	१५४ ब	२५०
२९०	२८८	७९८४	५२ (३)	१५५ अ	२५१
२९१	२८९	७८५८	५२ (४)	१५५ ब	२५२
२९२	२९०		५२ (५)	१५६ अ	२५३
२९३	२९१		५२ (६)		२५४

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	मनेर प्रति	सम्मेलन संस्करण
२९४	२९२	७९६४	५३ (१)	१५७ अ	२६७
२९५	२९३	७९५७	५३ (२)	१५७ ब	२६८
२९६	२९४	७९२४	५३ (३)		२६९
२९७	२९५	७९०४	५३ (४)		२७०
२९८	२९६	७७४४	५३ (५)	१५९ अ	२७१
२९९	२९७		५३ (६)	१५९ ब	२७२
				१६० अ[1]	
३००	२९८		५४ (१)	१६० ब	२५५
३०१	२९९		५४ (२)	१६१ अ	२५६
३०२	३००	७९९०	५४ (३)	१६१ ब	२५७
३०३	३०१	७८७२	५४ (४)		२५८
३०४	३०२		५४ (५)	१६२ अ	२५९
३०५	३०३		५४ (६)	१६२ ब	२६०
३०६	३०४		५५ (१)	१६३ अ	२६१
३०७	३०५		५५ (२)	१६३ ब	२६२
३०८	३०६	७८७५	५५ (३)	१६४ अ	२६३
३०९	३०७		५५ (४)	१६४ ब	२६४
३१०	३०८		५५ (५)	१६५ अ	२६५
३११	३०९		५५ (६)	१६५ ब	२६६
३१२	३१०	७९५५			३०५
३१३	३११				
३१४	३१२				
३१५	३१३				
३१६	३१४				
३१७	३१५			१६८ अ	२७३
३१८	३१६			१६८ ब	२७४
३१९	३१७			१६९ अ	२७५
३२०	३१८			१६९ ब	२७६
३२१	३१९			१७० अ	२७७
३२२	३२०			१७० ब	२७८
३२३	३२१			१७१ अ	२७९

१—प्रक्षिप्त

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	मनेर प्रति	सम्मेलन संस्करण
३२४	३२२		५८ (१)	१७१ ब	२८०
३२५	३२३		५८ (२)	१७२ अ	२८१
३२६	३२४		५८ (३)	१७२ ब	२८२
३२७	३२५		५८ (४)	१७३ अ	२८३
३२८	३२६		५८ (५)	१७३ ब	२८४
३२९	३२७		५८ (६)	१७४ अ	२८५
३३०	३२८		५९ (१)	१७४ ब	२८६
३३१	३२९		५९ (२)		२८७
३३२	३३०		५९ (३)		२८८
३३३	३३१		५९ (४)	१७६ अ	२८९
३३४	३३२		५९ (५)	१७६ ब	२९०
३३५	३३३		५९ (६)	१७७ अ	२९१
३३६	३३४		६० (१)	१७७ ब	२९२
३३७	३३५		६० (२)	१७८ अ	२९३
३३८	३३६		६० (३)	१७८ ब	२९४
३३९	३३७		६० (४)	१७९ अ	२९५
३४०	३३८		६० (५)	१७९ ब	२९६
३४१	३३९		६० (६)	१८० अ	२९७
३४२	३४०		६१ (१)	१८० ब	२९८
३४३	३४१	७९३९	६१ (२)	१८१ अ	२९९
३४४	३४२		६१ (३)	१८२ ब	३००
३४५	३४३		६१ (४)		३०१
३४६	३४४	७८६४	६१ (५)		३०२
३४७	३४५	७७५५	६१ (६)		३०३
३४८	३४६	७७५३			३०४
३४९	३४७				
३५०	३४८				
३५१	३४९				
३५२	३५०				
३५३	३५१		६३ (१)		३०६
३५४	३५२		६३ (२)		३०७
३५५	३५३		६३ (३)		३०८

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
३५६	३५४	७८७०	६३ (४)		३०९
३५७	३५५	७८७३	६३ (५)		३१०
३५८	३५६	७८९८	६३ (६)		३११
३५९	३५७	७७४२	६४ (१)		३१२
३६०	३५८		६४ (२)		३१३
३६१	३५९	७८०६	६४ (३)		३१४
३६२	३६०	७८८०	६४ (४)		३१५
३६३	३६१	७८८२	६४ (५)		३१६
३६४	३६२		६४ (६)		३१७
३६५	३६३		६५ (१)		३१८
३६६	३६४	७७८०	६५ (२)		३१९
३६७	३६५		६५ (३)		३२०
३६८	३६६		६५ (४)		३२१
३६९	३६७		६५ (५)		३२२
३७०	३६८		६५ (६)		३२३
३७१	३६९	७७५९	६६ (१)		३२४
३७२	३७०	७९१७	६६ (२)		३२५
३७३	३७१	७९३०	६६ (३)		३२६
३७४	३७२	७९७८	६६ (४)		३२७
३७५	३७३		६६ (५)		३२८
३७६	३७४	७७५७	६६ (६)		३२९
३७७	३७५		६७ (१)		३३०
३७८	३७६	७७६१	६७ (२)		३३१
			६७ (३)[1]		३३२
३७९	३७७	७८८८	६७ (४)		३३३
३८०	३७८		६७ (५)		३३४
३८१	३७९		६७ (६)		३३५
३८२	३८०	७८११	६८ (१)		३३६
३८३	३८१	७९८०	६८ (२)		३३७
३८४	३८२		६८ (३)		३३८
३८५	३८३		६८ (४)		३३९

१. प्रक्षिप्त।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
३८६	३८४	७९३३	६८ (५)		३४०
३८७	३८५		६८ (६)		३४१
३८८	३८६		६९ (१)		३४२
३८९	३८७		६९ (२)		३४३
३९०	३८८	७८६२	६९ (३)		३४४
३९१	३८९	७८२८	६९ (४)		३४५
३९२	३९०		६९ (५)[1] ६९ (६)[2] ७० (१)[3] ७० (२)[4] ७० (३)[5]		३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५०
३९३	३९१	७८३०	७० (४)		३५१
३९४	३९२	७७६२	७० (५)		३५२
३९५	३९३	७७८१	७० (६)		३५३
३९६	३९४		७१ (१)		३५४
३९७	३९५	७९७२	७१ (२)		३५५
३९८	३९६	७८०८	७१ (३)		३५६
३९९	३९७	७९७१	७१ (४)		३५७
४००	३९८		७१ (५)		३५८
४०१	३९९		७१ (६)		३५९
४०२	४००		७२ (१)		३६०
४०३	४०१		७२ (२)		३६१
४०४	४०२		७२ (३)		३६२
४०५	४०३		७२ (४)		३६३
४०६	४०४		७२ (५)		३६४
४०७	४०५		७२ (६)		३६५
४०८	४०६		७३ (१)		३६६
४०९	४०७		७३ (२)		३६७

१. प्रथम पंक्ति; शेष प्रक्षिप्त।
२. प्रक्षिप्त।
३. प्रथम दो पंक्ति; शेष प्रक्षिप्त।
४. प्रक्षिप्त।
५. प्रथम दो पंक्ति; शेष प्रक्षिप्त।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	चौखम्भा प्रति	सम्मेलन संस्करण
४१०	४०८	७९८८	७३ (३)		३६८
४११	४०९	७८४७	७३ (४)		३६९
४१२	४१०	७९३१	७३ (५)		३७०
४१३	४११	७९७०	७३ (६)		३७१
४१४	४१२	७७७५	७४ (१)		३७२
४१५	४१३	७८६७	७४ (२)		३७३
४१६	४१४	७९६५	७४ (३)		३७४
४१७	४१५		७४ (४)		३७५
४१८	४१६	७८९२	७४ (५)		३७६
४१९	४१७		७४ (६)		३७७
४२०	४१८		७५ (१)		३७८
४२१	४१९	७९६६	७५ (२)		३७९
४२२	४२०	७९६८	७५ (३)		३८०
४२३	४२१	७७७४	७५ (४)		३८१
४२४	४२२	७७८५	७५ (५)		३८२
४२५	४२३	७८९४	७५ (६)		३८३
४२६	४२४	७७४५	७६ (१)		३८४
४२७	४२५		७६ (२)		३८५
४२८	४२६		७६ (३)	*	३८६
४२९	४२७		७६ (४)		३८७
४३०	४२८		७६ (५)		३८८
४३१	४२९	७९४४	७६ (६)		३८९
४३२	४३०		७७ (१)		३९०

———

३

शब्द-सूची

भाषा-विज्ञान और व्याकरणकी दृष्टिसे उहापोह करनेवाले पाठकों और कोश-कारोंकी सुविधाकी दृष्टिसे यह शब्द-सूची प्रस्तुत की जा रही है। काव्यमें आये अति प्रचलित शब्दोंको छोड़कर, प्रायः सभी शब्द यहाँ एकत्र किये गये हैं। जहाँ वे प्रयुक्त हुए हैं, उन सभी स्थलों का निर्देशन यथासाध्य किया गया है। यदि कहीं कोई शब्द या निर्देश छूटा प्रतीत हो तो उसे हमारी विवशता मानकर क्षमा करें। कुछ स्लिपोंके खो जानेके कारण हम उन्हें न दे सके हैं।

कोशोंमें प्रयुक्त क्रमसे शब्द संचित किये गये हैं किन्तु शब्दोंके विभिन्न रूपों-को एक ही स्थानपर देनेकी पद्धति अपनायी गयी है। इससे जिज्ञासुओंको शब्दोंके परीक्षणमें सुविधा होगी। अपनी सुविधाके कारण हमने शब्द-क्रममें पहले आने वाले रूपको मुख्य स्थान दिया है। यह क्रम वैज्ञानिक न होनेपर भी ढूँढ़ने-पहचानने-में असुविधा न होगी, ऐसी आशा है।

अ

अइ ४२४।४

अइस ९।६; ११।४; २७।२; ३०।३; ४५।३; ४७।४; ७४।३; ११३।६; १५४।६; १८५।४; १८९।७; २१६।१; २१०।३; २१९।१; २३५।५; ३४३।५; **अइसहिं** २८६।५; **अइसा** ४१२।१; ४२७।५; **अइसी** ६८।२; १७०।५

अइहहिं ९१।५; **अइहौं** ३५०।२

अउतारा ८।४

अउर ११।१; १२।३; १८।२; २३।१; ७९।४; ८४।१,५; ८७।१; ९१।६; १११।३; ११२।२; ११५।५,६; ११६।३; १२३।२; १३३।५; १४७।४; १६८।२; १९६।५; २०२।५; २२९।४; २४६।३; २४७।७; २६०।१; २६८।१; २८३।२,४; ३१२।७; ३१४।१; ३४४।५; ३४६।२,४; ३४९।२; ३५१।५; ३६७।७; ३७२।५; ३८०।१; ३९८।३; ४००।४; ४०८।६; ४११।५,६; **अउरहि** १७७।३; २८५।६

अउसा २६१।५

अकथ ४२७।२

अकलै ४०१।४

अकार १३२।७; ३१४।४,५;

अकास ४६।४; ४२०।४

अँकवारी ३७५।४

अंको १४६।२; ३५९।४

अकुताना २८७।२; **अकुतानी** ३८२।५

अकूत ४१५।६

अकेल २३।१; **अकेलि** १०२।२; **अकेलै** १०३।५

अखर ३९८।५; **अखरहिं** ४२।६

अगया ९६।२; २०२।२; २१४।४, ६

अँग इस २८९।४

अगनित १५।३

अगरख ३०१।५; **अगरग** ३०१।३

अँगरान ३०१।६; **अँगरानेव** ३०२।१

अगरिंह २७३।५

अगाऊ ५०।३

अँगारा ४४।१; ५५।३; ३०८।१; ३३२।२

अगाहू १०२।१

अगिन ७१।५

अगिनमुख ६०।२

अगिनित १४६।५; ४०८।१

अगुमन ३६५।७; ३६८।१; ३९३।१; **अगुमना** ९५।५

अँगुरि १६९।५; १७०।७

अगुवा १७२।४

अवाइ १७९।५; **अवाई** ३७३।३

अचकर १२।२; ९९।४; १७३।२

अचम्भो २१।६; ३३।४; ४७।१; १२३।२; १८९।२; ४११।३

अचँयेउ ११९।६; २२०।७

अचेत ३२७।५; **अचेती** ३२७।४

अछरि ७४।२

अजगुत १६६।२

अँजुरि ३४८।४; **अँजुली** ३२६।६

अटारीं ३९।२

अडाइ २७५।१; **अडारा** २८६।१; **अडारो** २७४।४

अड़उँ ९०।३

अँतर ३२७।६

अति ९४।६

अतिवानी २५।२

अतै ७७।२

अथयँ ३१७।६; **अथा** २०।१; **अथाई** २१२।१

अथरवन ४०।४

अँदोर ४१५।६; **अँदोरो** ४२८।२

अधरन्ह ३८२।२

अधिकाई ३१२।२

अँधियारहिं ३५२।६

अन्तर ३२७।७

अन्हाइ ८०।६; **अन्हाई** १३७।५

अन (अन्न) ३४।४; ८५।६; ३४७।३

अनऊतर ४००।७

अनजानत १८४।४

अनतैं १५९।२

अनन्द ३०८।३, ५; ३६७।५

अनो ३९२।४

अनपट ३८२।१

अनपानि ३६७।१

अनभला ३२।१

अनल ३३।५

अनुसारी १४।२

अपकार ४०।६; ४५।३; **अपकारा** ८१।५

अपछर ५०।१; **अपछरहिं** ४५।५; **अपछरा** ३०।४; ५२।३; **अपछरि** २३७।७; **अपछरीं** ४२४।७; **अपछारी** ७६।२

अपनह ६९।४; **अपनेउ** ३८३।३; **अपनै** २१।३; **अपुनहि** १०।२; **अपुनै** १४१।६; १८५।१

अपान ३६६।६

अपारू १३६।३; ३७५।१

अपुरुब १८९।४; ३४०।४; ३४३।७; **अपूरब** ३३।५; ३७।३; ४६।३; १२७।६; २०८।४; २४८।२,

अपूर २८१।६

अपूरन ५९।६

अपै ३०२।५

अँबराई ३१२।२; ३३१।३; ३४०।४; **अँबराउ** १२७।१

अँबरित २७।२; २८।१; ८५।४; २६०।५

अबलहिं ४७।४; २०३।५; ३३१।३

अबला ३०४।७

अबहिं १२३।५; १७९।४; ३४८।२; **अबहीं** १९५।१; ४०७।१; **अबहुत** २८५।७; **अबहूँ** १९९।५; २३०।१; ३१६।६; ३६४।१

अँबारी १४४।७; ४२२।१

अभरन ६६।५; ७६।१,७; ७७।१; ८०।६; २३२।२; २५५।२; २५७।७; २६१।३, ४; ४०६।४

अभारहु २४६।२

अभोली ३८०।४

अम्बर १०।४; **अम्मर** ४१५।५; **अमर** ३५७।५ ४१२।४; ४२४।६

अम्भु २७।३

अमरबेल ३१२।२

अँमरित ६२।३

अमाई ९३।१

अमिय ४९।४; ५१।५; ६३।२; ६५।४; ७४।७; २७१।६; ३०४।५,६; ३३१।२

अमोलक १२८।५; **अमोला** ६५।५; ३७०।४; ३९८।१
अयान १७०।६; **अयानीं** १९९।१
अरकत ३२७।२; **अरकहुँ** १७४।६
अरथ १५।६; १६।५
अरम्भो ३८३।६
अरराय ४१५।५
अरहे ७।३
अरिला १३।३
अरु २६९।७
अलख १।१; **अलख निरंजन** १।२
अलप ९१।५; १६२।४; २०३।६; २८०।३; ३३१।५; ३५५।७
अवँक २३०।१; ३१४।१
अवखर ४०२।५; ४०३।४; ४०७।२, ३
अवगाह ३३४।५
अवगुन ३०२।७
अवटि २८५।१
अवन्ता ४२०।६
अस्तुति ३०१।७
अस्थिर १२।५
अस ४।७; १६।५; १७।३; १९।२,५; ३०।४; ३१।१; ४५।५; ६३।६; १५७।१; १८४।१; १९६।६; १९७।३; २०१।४; २०४।१; २२१।४; २२७।४; २६३।४; २६५।६; ३०४।७; ३२०।३; ३३५।३; ३४२।६; ३४३।६; ३४७।४,६; ३६८।७; ३६९।६; ३७०।१,४; ३८७।२,७; ३९०।१,५,६; ३९१।१,२; ३९६।७; ४०४।२; ४१४।१; ४१७।५
असँभारी ३००।१
असरो २२५।३
असवार २०।५; ३३।३; ९५।२,५,७; ३७५।५; ३८६।७; **असवारा** १५।३; १४९।१; **असवारू** ९३।२; ३७५।१; ४२६।५
असाढ़ ३३३।१; ३६८।३; ३९६।१
असाध २००।३
असिल्या ३४५।२
असिवर ४१३।१
असीस १८।५; **असीसा** ४०३।२
असुवइ ३०५।४
अहइँ ९।५; २५।३; १६७।२; २०५।३; **अहहिं** २४६।२; **अहहीं** २१७।५; ३१४।२; **अहा** ७८।३; ७९।४; १२०।५; १९७।१; २३८।१; ३५४।५; ३९३।३; ४३१।२; **अहीं** ३०।४; ७९।३; १५४।५; १६६।१; १९७।४; २१३।२; २४४।४; २४५।४; २५१।२; २८४।४; ३५८।१; ३७४।४; ४००।१; ४३०।१; **अहे** २०।७; २४७।३; **अहै** २३।१; १२६।७; १९८।२; २०८।२; २६४।२; ३१२।५,७; ३४०।७; ३४३।६; ४०७।७; ४२६।७; ४३२।५; **अहौं** ३६३।६; **आह** १२।७; ९८।५; ११६।५; १३६।६; १६०।४; १६८।६; १७८।७; १८३।६; १९०।७; १९२।४; १९८।१; १९९।४; २०८।१; २०९।६; २१५।१; २२१।३; २२५।२; २२६।३; २२८।६; २६५।७; २७२।७; २७७।३; २९३।५; २९९।६; ३१३।२; ३२३।३; ३३०।६; ३४०।६; ३४१।६; ३६७।७; ३७३।७; ३९३।४; ३९४।७; ४३२।५
आहहिं १४।३; १८।४; ८५।७; २०३।६; २०८।७; २०९।४; २१६।४; २९९।२; **आहहु** १८३।६; १८६।५; **आहा** १५।५; १६।७; १७।२; २४।१; २७।४; १००।२; १२७।३; १२८।३; १८९।१; १९७।१; १९८।४; २२४।२,४; २२५।१; २६६।१; २६८।५; २९६।१; ३०८।६; ३१७।१; ३३९।२,४; ३४७।५; ३६२।३; ३७३।४; ३७४।१; ३८४।२; ३८७।२; ३९०।१,५; ३९१।१; ४०७।२; ४११।४; **आहि** २५९।३, ४, ५, ६; २९०।३; २९९।७; ३६५।६; ३९१।२; **आही** १४।२, ४; ८९।२; ९९।१; ११४।२; १२५।१; १६२।५; १८९।२; १९२।२; २१०।१,५; २१४।४; २१५।४; २४२।३; २४५।५; २६७।१; ३१३।१; ३१४।३; ३१९।३; ३२०।२; ३३९।१; ३६७।३; ३८७।१; ३९५।३; ३९९।५; ४२१।५; **आहे** २९।५; १२३।४; १३८।१; १६५।१; १७९।१;

२०६।१; २३९।५; २५२।७; २५७।६; २६५।६; ३०८।२; ३३९।६; ३४२।१; ३४३।७; ३६६।३,६; ३८७।७; ३९६।४, ६; ४२०।५; **आहै** ७।२; ९१।४; ११३।१; ११४।५; १२२।७; १३०।४; १३४।६; १६२।४; १७६।४; १८५।४; १८९।३; २१६।२; २२३।६; २२५।७; २३६।६; २५४।२; २३८।५,७; ३४७।६; ३८२।४; ४०२।४; ४२५।२

अँहडोरा ३६७।१; **अँहदोरा** ३७४।२

अहर ३२९।५

अहार ४०।७; ३८१।५; **अहारा** ३८३।२; **अहारू** २३४।२; **अहारैं** १५६।४

अहिनिसि २१९।२; २४९।७; ३०५।३

अहेर २०।६; ४१०।१; **अहेरा** २०।२; २६।१; ४०४।७; ४१०।२; **अहेरैं** २०।३; १६३।३; २९९।१; ४११।२

आ

आइ २०२।६; ३४९।६; ३६५।५; ३९२।१; ३९४।१; ३९७।६; ३९८।१; ४०३।७; ४०५।७; **आइके** ३९२।१; **आइहि** १९७।२; ३२६।३; **आई** ३८२।४; **आईं** ३६८।६; **आउ** १७।३; २२।२; २५।६; ३८।१; ७८।६; ८१।६,७७; ८४।७; १७१।६,७; १८२।४; २१४।३; २१६।६; २२६।१; २३३।७; २४९।३; २७८।२; ३०९।५; ३१३।३; ३१६।१; ३१९।१; ३३२।६; ३३४।४; ३४८।४; ३५०।६; ३७०।७; ३७६।७; ३९५।७; ४०२।१, ७; ४१६।५; ४२०।६; **आउँ** ३५५।५; **आउब** ३५५।७; **आऊ** ३१३।३

आउ (आयु) १२।७; ११०।४; १२५।५; १८७।५; ३७७।१; **आऊ** ९२।५

आँखिउ ३३९।४; **आँखिह** ३७३।२; ६४५।५

आखर १३।४; २६०।३

आँग २५७।६

आँगन ३२९/४

आगि ११०।१; १४७।२; ३०८।५; ३९०/७; ४०५।१; **आगी** १०५।२

आगैं २९।३; १६८।५; २१४।५; **आगों** १८८।१, ४; १९१।४; २०५।२; २०९।१; २१५।४; २३३/५

आँचर ४०६।३

आछत २१५।६

आछर ३१८।५

आछहि १३०।१

आछी ४१।२

आजु १७२।१; ३५४।४; ३६७।३, ४; ३७१।४

आँजों ३७३।२

आँत ७२।२

आथि १०।४

आदरस ३३६।४

आँधर १९०।७; ३२३।१; ३६२।३

आन (लाकर) ६३।४; १६२।२; २८६।३; ३७८।६; ४२४।५; **आनउँ** १५।१; **आनहु** १८२।६; ३८२।१; **आनाँ** १३३।३; २८७।३; २९४।१; **आनि** १८२।७; १९४।३; २७९।२; २८२।२; २९५।६; ३५६।४; ३८९।१; ३९८।१; **आनी** १६।२; २०।४; ८६।५; ८७।४; ४०१।३; **आनै** २८१।७

आन (अन्य) १।७; ३६।६; ११२।१; २२९।७; ४११।२; **आनू** १३।५; ३०६।५; **आनों** ३९।६; ११७।३; २९०।१; ३५०।१

आँपी ६०।१

आपु १६७।५; १७६।७; १८३।३; १९८।१, २; २००।१; २०३।४; २२२।२; २५७।६; २६४।७; २८१।२; २८३।१; २९७।५; ३६५।३; ४०४।१; ४२४।१; **आपुँ** ३९७।५; **आपुन** ३१।२; ४८।६; ६४।७; ७९।४; ८०।१; ८२।४; ८७।२, ४; ९०।१; ९५।१; १९४।३; २२१।२; २२२।४; २२४।७; २२५।१, ६; २२६।४; २२९।७; २३५।२; २४५।६; २५९।३; २८९।७; ३०२।७; ३३९।७; ३४३।४; ३४५।४; ३४९।५; ३६०।६; ४००।३; ४०१।३; ४०४।२; ४०५।२; ४३०।१; **आपुनी** ४२३७।; **अपुहि** २२७।३; २८१।२; ३४२।७

आफुहि २४८।३

आँब ६३।६

आबद्ध ३८२।६

आयउ १७२।२; १७३।६; १९१।५; २१०।२; २११।५; २२२।२; २३५।२,३; २३७।२,५,७; २३९।६; २४५।१,३,४; २५२।३; २७१।६; ३२२।१; ३२८।१; ३२९।७; ३३३।५; ३३८।२; ३४१।३; ३४२।१; ३४५।७; ३५४।५; ३७०।२; ३७१।२; ३७२।३; ३७७।१; ३९३।५,६; ३९८।२; ४०३।३; ४१०।७; **आयँउ** १७८।६; २२२।६; **आयहि** २८४।६; ३१०।२; **आयहु** १६१।६; २२८।२; **आयँहु** १९२।७

आयसु ११।२; १९।१; २९।२; ३७।५,६; ९०।४; १६१।५; १७२।२; २१२।६; २१४।३, ६; २१६।५; २१७।६; २३१।३; २४७।३; २४८।७; २५५।५; २६३।३; ३८५।४, ५; ३८९।६; ३९६।१; ४३२।६

आरन २२६।३; २३६।३; ३३०।४

आरो ८२।३; १२८।१

आवइ ८९।३; ९१।७; १२१।४; १३४।३; १७४।६; १७५।५; १९५।४; १९६।७; २०२।२, ४; २१६।३; २४२।७; २९२।३; २९६।७; ३४२।७; ३४३।३; ३५२।१; ३५४।२; ३६६।५; ३६७।२; ३७१।१,५,७; ३७६।३; ३७७।५; ३८०।३; ४१०।१; **आवइँ** २१०।७; २८०।१; **आवई** २४७।४; **आवउ** १३४।२; **आँवउँ** ३४६।२: **आवत** २४४।६; ३९६।१; ४१२।२; **आवन्त** २८०।७; ३१०।६; **आवहिं** १७७।२; १८५।२; १९१।४; २१३।२; ३१६।६; ३७६।२; ४०२।२; **आवहु** २६२।२; ३३२।४, ५; ३३४।२ ३५४।६; ३७७।४; ३८६।५; **आवा** २९।३; ३४९।५; ३५४।४; ३६८।२; ३७१।४; ३९२।३; ३९६।१; ३९७।१; ४०१।१; ४२५।४; **आवों** ३४४।२; ३४९।७;

आवधि ९२।१; ४२८।४

आसा ७१।७; ३२२।५; ३५०।६; ३८३।४, ५, ६

आसिखा ३४५।१

आसिन ३२४।१

आहर ३२९।५

आहु ३४७।५

इ

इ ३९०।३; **ई** १७०।४; ३४४।३; ३६०।७; **ईं** ४२०।४

इक १६३।७; २०५।१; २१९।३; २८८।२; ३९५।१; ४०९।६; ४११।१

इकछत ४२०।३

इकसर १२८।५; ३४४।७

इत २०६।६; २४१।१

इँदरासन ४२१।१

इन्ह २४५।५; ३४१।४; ३६०।४; ३८३।७; ४०५।२; ४०७।३; **इन्हसेउ** ३६०।५; **इनहि** ३६०।५; ३८२।५

इस्तिरी १८९।५

इह ८७।३; १०१।४; १९६।७; २०९।६; २११।५; २६५।६; ३५५।१; ३६८।१; ३६९।६; ३७३।६, ३८४।६; ३८८।१, ५; ३८९।२; ४२५।१; **इहवइ** ३६०।६; **इहवैं** १२०।३; २०५।३; **इहवैं** २०९।३, **इहसों** २७४।१; **इहै** ११६।३; १४३।७; १८४।६; १८७।१; २१३।५; २२४।२, ३, ४; २२९।२; ३९१।६; **ईहहि** ४३१।३; **ईहै** ४२५।१

ईंह ११।२; २९।७; ३९।६; ८१।७; १२३।७; १६७।३; १७१।२; १८८।६; १८९।३; २०२।३; २१८।३; २२२।६; २२३।२, ५; २२९।२; २८०।३; २८६।५, ७; २९०।६; ३३८।५; ३४०।७; ३५५।५; ३६०।७; ३६४।७; ३८५।१; ३८८।१; ४००।७; ४२६।५; ४३१।५; **इँहकै** ३६०।२ **इँहवहि** २८८।१; **इहवाँ** ९८।७; १८९।१; ३३८।७; **इँहहि** २१०।४; **इहाँ** ६०।४; १५६।४; १७३।४; १९७।२; २१०।७; २३०।४; २७७।१; २९०।१; ३०५।१; ३४०।४; ३४६।२; ३५३।५, ६; ३७५।१,९; ३८६।४: ३९३।२; ४०८।२; ४२१।१; ५; **इहाँहुत** १०१।७

ई

ईंगुर २६।६; ३९।४; ६३।१

ईंछा १६।४

ईंत ८१।५; ८२।७; ९८।१; १५२।६

उ

उआई ६०।४

उईं २१५।५

उखठे ३६९।३

उखम ४४।५; ४४।२;

उगसत ६०।३, ४

उघर २८६।७; **उघरहिं** २५।४; **उघरि** २८०।४

उघार ९२।२; **उघारि** २६८।२; **उघारी** २६८।३; **उघारे** २६६।१; २७६।४; **उघारौं** २६५।७

उचाइ ३७।१; ५१।३; ८४।७; २८४।७; ३४८।७; **उचाई** ३७।३; ३९।१; ३०१।१; **उचाये** ३४७।१; **उचावइ** ३७।२; ३०१।२; **उचावउ** ३०१।३; **उचावत** ३८।५; **उचावहु** १५७।५; २१६।४; **उचावा** २१६।५; ३५८।३

उचारि १६१।३

उचाट ३३५।१; ३४४।६; ३५०।४; ३८५।१

उजारेउ ३१५।२

उजिआर १५७।३; **उजियार** १७१।१; **उजियारा** २३२।३; ३५२।३; **उजियारी** ३२५।१; **उजियारे** ३५२।२

उटयेउ २६३।२; **उटवहिं** २००।६; **उटवहु** ४२५।७

उठाइ ३७५।४; ३९७।२; **उठि** ४०९।६; ३७१।५; ३९७।५; **उठेउ** ३७७।२; ३९९।६; **उठेसि** २३१।१

उड़हु ३७१।५; **उड़ाइ** १३८।२; **उड़ाई** १९९।४; २७९।१; **उड़ानाँ** ३७२।१; **उड़ानी** २०४।४; **उड़ायउ** २७८।१; **उड़ावइ** ३७१।५; ३७२।६; **उड़ावसि** ३६१।१; **उड़ावो** २३।५; ३३१।५

उड़ारा २७५।३; **उड़ारी** ४०१।२

उड़ि ३७१।७; **उड़िह** १९१।१

उढकि ४२२।५

उढ़रि ३९९।५

उत्तिउँ ३४०।५; **उत्तिम** १८।४; १४९।७; २२५।२; २५७।१; ३९१।७; ३८३।७; ३८४।३;

उतंग ३१७।१

उतर २९।१; १६५।७; **ऊतर** २२५।४

उतरउँ ३४९।४; **उतरि** ४०५।४; **उतरे** ३९३।२; **उतरेउ** ३१९।२; ३४०।४

उतरि २३१।५; **उतारी** २३१।३; ३९८।२; **उतारु** २३१।२; **उतारहु** १४२।१

उदराई ३६५।४

उदवै १८८।५

उदिआनी १०९।१

उदिनल ५५।२; १२८।३

उदेक ३४४।६; **उदेग** १०४।१; ११५।४; ३३५।१; ३५०।४; ३८५।१

उदो ८७।७

उन्दिर ९३।६

उन्ह १२।३; १३।१; १८।१; २८।३; ३१।१; ४५।६; ४६।३; ८२।३; १३०।५; १९३।७; १९५।५; २०३।३; २०४।२, ५, ६; २४५।६; २५१।३; २५३।५; २५४।४; २५५।५; २५६।६; २८९।५; २९१।५; ३३८।४; ३४५।६; ३४६।७; ३४७।२; ३६६।६; ३७४।३; ३८५।५; ३८६।४, ५; ३९१।५; ४०३।६; ४०७।३; ४०९।७; **उन्हकै** १२३।५; **उन्हारी** २०३।३; २४९।३; ३०५।३; **उन्हारे** १७।५; **उन्हाहीं** ३१०।५; **उन्हिकै** २३७।४

उनकहँ १७७।१; **उनहि** ३८५।६

उनै २४४।५; ३३२।६; ३३३।२; ३६८।३; २७०।२

उपकरी १७७।१; ४१३।२

उपनाई ६८।२

उपरि २४४।३; **उपारी** १४५।४

उफाँई २८३।१

उबर २७५।६; **उबरा** १२६।५; **उबरे** १४७।७; १७५।६; ३६३।५; **उबरतेंउ** १२५।७; **उबरेंउ** १२६।७; **उबारहु** २२३।७; **उबारा** १७५।२; २३७।३; २७५।२; २७९।४; ३१९।१; **उबारी** २७५।४; **उबारे** ३६३।५

उभारी २०१।३; ३९१।४

उभै ३७२।१

उयेउ ३५५।१,३
उरध २८२।२; ३८२।३
उरबाई २५५।३
उरहिं २४१।६; ३८२।५, ६
उरेहा ४०।१; **उरेही** ३९।६; ४०।६; **उरेहे** ३९।७
उवइ २८।६; ३५३।७; **उवई** २४३।१; **उवहि** ३८१।६; **उवहु** ३५१।४; **उवै** ३२४।२; ३५७।१
उह २६०।२; २६२।१; **उहि** १।३; ३६।४; ८७।७; ८८।१; १८३।१; २६६।१; २६८।४; ३६३।६; ४१०।७; **उहेउ** १९३।१; **उहै** ४०।७; १२४।१; १३८।३; १९३।७; १९६।७; २२३।४; २७३।३; ३५६।५; **उहो** ११७।४; १७४।३; २२३।२; २४४।४; ३८८।२; ३८९।२; ४०७।६; **उहौ** ३१३।१; ३३०।२; ३३८।३
उँह ३२।७; १९०।६; **उँहहि** ३४१।६; **उहाँ** १९२।१; २६५।५; २७७।१; **उँहि** १९२।७; १९६।२; २५९।६; ३८९।७; **उँहै** ३९१।६
उँहरेउ ३०३।७

ऊ

ऊ ३१५।२; ३१७।३; ४३३।१
ऊखम ३३३।३
ऊन्हीं ८७।५
ऊपम ६२।५
ऊवरा १४७।५
ऊभि २९९।३; **ऊभै** २७९।४; ३११।६; ३१७।२; ३१८।७; ३६९।३
ऊहो ४००।१

ए

एइ ३८४।५
एकसर १२८।४
एकहिं १३४।२; ३४२।५; ३५३।२; **एकै** २९२।६; ४१७।६; **एको** १९।४; १६।४, ६; २७।१; ३३।२; १५०।४; १७५।१; १८९।१; २१५।७; ३८७।३
एकादसि ७८।५; ७९।२; ८०।२; ८६।३
एत २१४।७; ३९४।६; **एतहिं** २२३।४; **एती** ४३।३; ३७९।३
एह १६२।१; ४१३।६; **एहाँ** ४४।४ **एहिकै** ३९१।४; **एहू** ३०४।४

ऐ

ऐंचसि १८५।५
ऐती २१३।३
ऐस ३७०।६; **ऐसहिं** १९९।६; ३८९।२, ४

ओ

ओकर ४००।३; ४०८।१; ४३२।३,५; **ओकै** ११७।४
ओकहँ ४०७।२
ओखाँ (?) १८८।७
ओरहन ३८८।१
ओराइ १९।४; **ओरान** ४४।७; २३९।१; **ओराना** १७१।१; **ओरानेउ** ३१३।६
ओलँहाँ ४२६।४
ओसरी १३०।७
ओहट १८७।२
ओही ८८।५; १२५।३; ४३२।२; ४०७।५

औ

औ १५०।२; १८०।३, ४; १९५।३; १९६।६; २०८।२, ५; २१०।६; २११।६; २१२।३; २१५।६; २१९।३; २२१।६; २२२।७; २३४।६; २४२।१; २४६।६; २५७।५; २९९।६
औखद ५१।७; ५५।७; ५६।४; १४७।२; २०४।२; ३००।३
औगुन ३३०।६; ३६२।६
औतरा ३५६।५; **औतरी** १४६।३ **औतारा** ७१।१; **औतारी** ६२।४
औधि १३१।६; १९६।७; ३२९।४
औराँह ३१८।६; ३३१।६; ३३५।७; ३५१।६

क

क (का) १८३।१; ३३४।५; ३३६।३, ५; ३४४।५; ३४५।२, ६; ३४७।१; ३५३।२, ५, ६; ३५४।२; ३५६।६; ३६०।७; ३६३।३; ३७०।४; ३८८।१; ४२४।५; ४२८।६; ४२९।७

कइके ३६३।४

कइसइ ६३।५; **कइसे** ९८।३; १३६।६; १४०।६; **कइसेंउ** ३६५।२

कउन १४४।५; १४१।३; २०९।६; २२२।३; २२८।६; **कउनउ** ३१।७; **कउने** १८३।३

ककाह ९३।५

ककनिया ९४।५

कंकर ७४।३

कंचन ६०।१

कंचु ३३२।३; **कंचुकी** ३७२।२

कचोरन्ह २३२।४; **कचोरीं** ३९१।४

कछु १८।४, ५; १९।५; २५।६; १८९।२; २०२।५; २२७।५; २३६।४; २५९।३; २६२।१, ६; २६३।२; २६४।४; २७२।३, ७; २७७।२; २८५।४; ३२७।५; ३३९।५; ३४२।२; ३४३।४; ३४५।१; ३४६।१; ३५०।३, ४; ३५१।३; ३५२।३; ३५३।५; ३५४।१; ३५९।१; ३६७।५; ३६८।१; ३७३।४, ७; ३७४।४, ५, ६; ३९०।५; ३९२।४; ३९३।४; ४०९।१, ३; ४२१।५; ४२५।७; **कछू** १००।३; १७८।१; १८२।७; २२८।१; २९४।६; ४०७।३

कजलीबन ३३८।३

कटक १५।३; ३३७।६; ३९६।५; ४२३।२

कटि (कट कर) ७१।५

कटारिंह ३४९।३

कँठमाला ६६।५

कढ़ा २४।५

कण्ठन ४६।५

कतरनी ९४।५

कतहू ९९।६

कन्त ३२३।२, ७; ३२५।७; ३२६।१; ३२९।७; ३३१।१; ३३२।६; ३८१।१

कन्था ४२०।५

कन्ह (कृष्ण) ३९।५

कनक ३९।३; ५९।७; ६१।१

कनसुई ३११।२

कपँहि ३२८।३

कमाता ७३।१

कय २९८।५

कया ३३।५; ३४।४; ३६।२; ४१।४; ४४।६; ४९।५; ७१।५; ९०।२; १०३।५; ११८।१; ११९।३; १३५।७; २४२।३; ३०७।१, ४; ३०८।१; ३११।४; ३१५।७; ३८५।५, ७; ३८७।६

कयाह ९३।४

कर २७।३; ३२०।१; ३२६।६; ३३७।१, ४; ३४५।४; ३४७।४; ३५०।२; ३५४।४; ३६०।४; ३६७।३; ३७७।१; ३७८।५; ३८२।४; ३८३।४; ३८४।६; ३८९।६; ३९४।४; ३९५।२; ३९९।२; ४०३।४; ४०४।२; ४०७।४; ४२५।३

करई १४२।४; २२७।२, ४; ४२४।५

करउँ १७७।३; २७०।३; ४०५।३; **करऊँ** २९०।२

करंजी ३५२।३

करत २००।२; ३२६।४; ३७५।६; ४०३।१; ४२९।५; **करतेउँ** २२५।७

करतार १५।७; ४२३।६; ४२४।४; ४२६।७; **करतारू** १।१

करन्त २२०।७; २३१।७; **करन्ते** ४२३।६

करन ७४।७

करना ४२९।१

करपल्लौ ७५।६; ३८२।३; **करपालो** ६७।४

करब ३१६।३

करम १७२।२; २९४।१; **करमहिं** १६९।४; ३९४।७

करवट ३३५।६; **करवत** ७१।४, ६

करवतिया ३८।५

करसि ७१।५; **करसु** १९५।२

करहँज ३०६।७

करहि ३३२।७; ३६०।५; ३८५।१; **करहिं** २३१।७; २६१।७; ३७५।७; **करहु** ९१।७; १६७।१; १९७।६; १९८।१; २००।१, ५; २३३।६; २३४।२; २६३।६; २७२।६; ३३२।५; ३३६।५; ३६३।१; ३८६।३; ३९१।२; ४०३।१; ४०९।४; **करहुँ** २१२।७; **करिहि** ३९०।७

करहुत १०३।३; ४२४।२

करा ५२।३; **कराँ** ७४।६; २६५।३; ३५६।५

कराइ ३७८।७; **कराई** २७७।३, ४; ३९०।४; ४०८।४; **कराएउ** २४३।४; **कराँहि** २४८।६; २६१।६; ४०९।७; **कराही** २०६।४; ३६६।२; ३८८।१; **कराहीं** ३१।२; २४५।२; २६७।५; २९७।५; **कराहु** ४०६।७
करि ३५०।२; ४१०।७; **करिउय** १६९।६; **करियहु** ३४७।५; **करिह** १८५।७; **करिहु** ४२६।७; **करिहौं** २६६।७; ३०७।४; **करेइ** ३०४।७; **करै** २४३।१,२; २६६।२; ३८६।१; ४०३।४; **करों** ३५३।६; ३८०।६; ४७२।२; **करौं** ३२८।१; ३६७।; ३७८।३
करिया ३२३।७; ३३४।३
करी (कली) २९२।२
करीलहि २२९।३
करेज ५५।७; २१३।७; २८८।७; ३४९।३
कल्ह ४११।२
कलखूँटी ४२३।४; ४२५।३
कलत्थ ४१७।७
कली ७७।२
कलाई ६७।१
कवन १२२।५; १२८।४; १३५।३; १६५।७; १८३।६; १८४।६; १९२।२; २१०।५; २१४।५; २२७।१; २५९।४; २९९।१; ३१९।३, ५; ३७८।७; ४०५।३
कँवल २७।४; २८।६; ४९।३; ६०।७; ६५।५; ७०।२; ७४।३, ४; ८१।३; ८७।७; ३१५।४, ५, ६; ३१८।२; ३८३।२; **कँवलघट** ८१।२; **कँवलपत्र** ५८।१
कस्ठा ४२१।१; **कस्था** १७०।५
कस ६।५; ३३।६; ८७।१; ९०।१; १३०।२; १८२।३; १९९।१; २१०।३; २१७।६; २२५।४; २२७।४; २३४।४; २४४।६; २८८।२; ३३५।४; ३६९।५; ३७७।४; ३८६।३; ३८७।४, ५; ३९९।३; ४०५।४; **कसकै** ३५९।६
कसि १९७।७; **कसिसि** २४३।५; **कसी** २४४।४
कह (का) २६७।२
कँह ७४।३; ७८।६,७; ९२।१; १२०।१; १२३।७; १२४।५; १३०।१; १३५।३; १४०।६; १६०।२; १६४।१; १६६।४; १६८।४; १७३।३; १७४।१, २, ३, ५; १७८।३; १७९।४; १९४।१, ६; १९६।१; २०२।३, ४, ६; २०३।२; २०७।५; २०८।१, ३; २१०।२; २१५।१; २१७।६; २२२।५; २२९।२; २३१।२; २३२।१; २४६।१, ७; २४७।४; २५२।७; २५५।५; २५८।१; २६१।६; २६२।७; २६३।३; २६४।२; २६८।७; २७१।४; २७२।६; २७७।६; २७९।६; २८२।५; २८३।१; २८८।५; २८९।२; २९७।५, ६; ३१९।५; ३२५।३; ३२६।१; ३३०।२; ३३५।३; ३३६।२, ७; ३३९।३; ३४१।७; ३४२।६; ३४६।५; ३५०।२; ३५३।५; ३५५।४, ५; ३५६।१,४; ७; ३८७।४,६; ३५८।३, ६; ३६०।३; ३६१।२; ३६३।१; ३६४।४; ३६६।१; ३७०।५; ३७१।३; ३७५।४; ३८६।६, ७; ३९२।२; ३९४।१; ३९६।१; ३९८।४; ४०१।३; ४०२।२, ३, ७; ४०३।१; ४०४।१; ४०७।५; ४२१।२; ४२४।१; ४२६।४; ४२७।१
कहइ ३५५।५; **कहइओं** १४४।१; **कहई** १५१।५; १५८।५; २३०।१; २८८।५; २९३।४; ३१४।१; **कहउ** ३४५।४; ३९०।२; **कहउँ** १५।१; १९२।५; २६३।५; **कहत** २२१।३; २२७।६; २७५।५; २८२।६; ३५१।२; ३५२।१; ३७१।२; ३९९।३,४; ४०१।१; ४०३।३; **कहति** २२४।३; ४००।२; **कहसि** २१।७; ३१।४; १३१।६; १४१।१; १५६।१; १५७।५; १७२।१; १९५।३; २०३।१; २०५।३; २१६।२, ४; २२२।५; २६८।२; २७८।१, ३; २८७।४; २८८।१; २९५।४; ३७४।५; ३८७।४; ३९६।६; **कहसु** २२२।४; **कहहि** २९।२; २२१।४; २२५।३; २९७।५; ३६०।२; ३६७।३; **कहहिं** १६५।३; १६९।७; १७९।२; २००।४; २१०।६; २२१।४; २५०।२; २५९।३; २८५।५; ३४२।२,४; ३४७।४, ६; ३९०।३; **कहहीं** २१७।५; **कहहु** १३५।४; १६१।१; १७२।३; २०१।३; २५८।७; २५९।४; २७७।३;

२९४।२; ३२३।५, ७; ३२७।५; ३४६।३, ४, ६; ३५५।१, ३; ४०९।१; **कहहुँ** २७४।१; **कहाइ** ३८९।५; **कहाई** १६९।३; २३३।२; २५९।४; २७०।४; ३७१।३; ३७९।२; **कहि** १८७।१; ३४३।४; ३५५।१; ३६१।१; ३६३।२; ३९३।५; ४०२।१; **कहिउ** ३७५।३; **कहियहु** २९१।५; ३३२।६; ३४७।४; **कहिसि** २६।३; २९।३; ४९।६; ८०।२; ८१।६; ८३।३; ११६।२; १२७।७; १३३।२; १६०।५; १७१।२; १८५।६; १८६।३, ४; १८८।६; १८९।२; १९०।६; १९२।५; १९५।३; १९७।५; २०५।१, २; २०९।३, ६; २११।३; २२०।१; २२५।५; २३०।५; २३१।१, ४; २३३।४; २४४।२; २५८।२; २६२।२; २६३।२; २६७।२; २६८।२; २७०।२; २७२।१, ४; २७४।३, २७७।२; २८१।५; २८४।३, ५; २८६।५; २८७।४; २९३।२, ५; ३२०।१; ३४०।१; ३४१।२; ३४५।५; ३५०।२; ३६२।२, ५; ३६४।३; ३७१।१, ३; ३७३।४; ३७४।७; ३७७।४; ३८८।४; ३९४।७; ३९९।२; ४००।१; ४०१।१; ४०५।३, ६; **कहिहु** ३९१।३, ४; **कही** ३९५।३; **कहु** २७३।७; २९४।४; ३३८।५, ७; ३४६।७; ३६९।५; ३७१।४; **कहुँ** ३९०।४; **कहेउ** १९२।४; २३७।१; २६३।७; २७२।५; २९२।४; २९४।४; ३५४।१; ३९५।१; **कहेँउँ** १७५।४; १९६।६; १९७।२; २०८।६; २३५।४; ४३१।७; **कहै** ३४९।७; ३७०।१; ४०६।५; **कहौं** २९।४; ९८।२; १३५।६; २०६।२; २३६।१; २५३।७; ४०३।४

कहनी २१९।१

कहा (कहाँ) ३३८।४

कहा (क्या) ३६६।५

कहिं (को) ११९।५

कहियउ २१।३; **कहियेउ** ३६७।४;: **कहिया** १२०।६; **कहियों** ३५९।४

कहिसि १६४।३

कहुँ (कहीं) १९२।३

का (क्या) २९।४; ३०।३; १८३।२; २००।३; ३१९।४; ३५२।२; ३६७।६, ७; ४०७।२

काँई ३१६।७;

काऊ (कोई) २८६।७; ३४६।२; ४०९।५; **काऊ** ११।५; १८५।४; २०६।२; २२८।१; २८९।४; ३५२।२; ३७८।५; ४०९।२

काँऊँ (कहीं) २९०।१

काकर १८९।३; ३५२।७; ४२५।५

काकरूद ३०९।२

काकल ६५।२; ३३०।३

काकहि ३१३।५

काँख ३३४।४

कागल ३२।५

काँची ३१५।३; **काँचे** ७४।३; १८३।७

काजर ५७।५; ६४।२; ७६।३

काजा ४०२।२; **काजू** ३६०।४

काटा ३४९।३

काँटे २२६।६

काठ ४२५।३; **काँठ** ३६३।७

काढ़सि १६४।१; ३६४।१; **काढ़ा** ८३।२; १८५।५; २२६।४; ३९६।५; ४०२।३; **काढ़ि** १८५।२; २५५।६; २७९।१; ३७३।२; **काढ़िसि** १६३।५; **काढ़ी** १७६।६; २९०।४; ३००।१; ३४४।१ **काढ़े** १८५।३; ३०५।४; ३११।३; ३८३।४; **काढ़ों** ३०७।३, ७

कातिक ३२५।१

कानि ३१५।७

कापर १६।२; २३।६; ३१।४; १०३।३; २४७।१; ३५६।७; ४२९।४

काँम ५।६; ३०७।२; ३३५।५; ३३८।३

कामिनि ५६।६

कामीं ३५५।२

कार ७८।१; ९३।४

कारन १८७।७; २७१।६; ३८३।७; ३८८।१

कारुन ११०।४

कालिह १७२।३; ३९९।२

काह (क्या) ३३।५; ३४।१; ५१।५; १०३।७; १४३।४; १६२।२; १६५।६; १७३।५, ६; १७८।४; १९०।६; १९३।६; १९७।३; २०१।३; २२१।२; २२५।४; २६५।६; २७९।२; २८४।५; २९०।४; २९४।३, ४; ३१६।३; ३२०।४; ३२८।१; ३४३।३; ३५२।३;

३६३।१,७; ३७८।३; ३९४।२; ४०१।१; ४२४।४; ४३३।५; **काहा** १२७।३; १२८।३; १३०।३; १७१।३; १८९।१; २६६।१; २६८।५; २७८।१; ३२९।५; ३४७।५; ३६२।३; ३८५।२; ४११।४; **काही** ४७।४; २१०।५; ३१३।२; ३१४।५

काहि (किसी) २१३।६; २७२।१; ४२५।५; **कांहि** ४३१।१; **काहु** ३४।१; ७१।६; ७९।६; २३४।५; २८१।३; **काहुँ** २२२।५; **काहूँ** २९६।५

काँहहि (क्यों) २१९।४; **काँहि** १६५।२

काहीं (कहीं) १३४।१; **काहूँ** २६।२

काहू १३४।१; १५१।५; १७०।४; १७९।४; २४९।५; २६७।४; ३५१।६; ४२१।४; ४२६।४

काहे २७४।३

कि (या) ३५८।७

किछु ३८४।२

कित ११९।२; २८३।६; २८७।५; ४१३।६; ४१८।६, ७; **कित कर** ३९४।६; **कितहु** १८४।५; २७१।३; ४०१।५, ७; **कितहू** २०५।६; **कितहूँ** ३१७।६; **कितहुँत** २१४।२

किन्हि १८६।५

किन ४२७।५

किमि ३०५।२; ३१८।५; **किमिकै** ३१०।२

किय १७५।५; २२०।७; २६५।५; २६६।६; ३२७।७; ३२८।७; ३६२।१; **कियइ** २७२।५ **कियउ** १९१।२; १९३।३; २०१।५; २३०।६; २३१।२; ३५९।३; ३७५।२; ३८३।२; **कियत** १८२।५; **कियहि** ३९४।४; **कियहु** ३८०।४; **कियेउ** २९६।२; ३१८।६; ३३३।७; ३६५।५; **कियेउँ** २९४।३; ३८१।१; **किये** २७५।६; ४०८।३; ४०९।१

किह २६।४; ६९।१; ८६।४; १००।४; ११४।४, ५; १२४।७; १२९।१; १३५।२; १३६।७; १६९।१; १९२।३; २००।१; २६७।१; २७०।३; २७९।३; २९३।६; ३९१।६,७; **किंह** २८।५; ३६।२; ९९।७; १००।७; ११०।५; १२८।७; १७२।७; २७३।६; २७८।६; २८७।१; ३०१।२; ३१५।१; ३२०।४; ३४०।३; ३४९।५; ३६४।३; ३७६।२; ३७७।१; ३९१।५; ३९५।४; ४०१।५; ४०४।२;

किहसि ३३७।२; **किहहु** २५८।७; **किहिसि** ३०।१; ६९।१; १३८।२; १९४।५; २३४।२; ४२३।२; **किही** ९६।१; ३८५।२; **किहीहुत** ४२८।४; **किहे** १८४।४; **किहेउ** ८६।३; **किहेउँ** २३८।१; २६९।१; १८४।४; **किहैं** १९२।४; २२७।७; **किहौं** ८१।५; **किही** १८७।५; १९९।१

किहाँ (के पास) २४२।४; २९१।२

कींज (?) ५६।७

कीजइ ४७।७; ७८।२; ८९।४, ६; १११।४; १५५।४; ३६०।६; **कीजै** १९४।५; ३५३।५; ३५५।४; ३६६।५; ३८५।२

कीत २०१।१; ३३०।६; **कीतसि** १७३।३; २३९।२ **कीतँहि** ४२६।२; **कीता** ४०।३; **कीती** ३३९।३; **कीते** ४३२।५; **कीन्ह** ४७।४; १४४।७; २४३।७; २५३।४,६; २८९।७; ३४४।७; ३९२।७; ४०५।२; **कीन्हा** ८३।३; १८८।५; २५५।२; २६९।२; २७२।४; २७३।५; २७८।५; **कीन्हि** २३५।६; २८२।७; २८८।२; ३८६।२; **कीन्ही** १६७।४; ३४१।४; **कीन्हे** ४०६।३; ४०९।४; **कीन्हेउ** ३९०।१; **कीन्हेउँ** १२४।३; **कीनसि** ६।२; १३३।४ **कीनहु** १००।२; ३८१।३; **किनिहि** २४६।७; **कीनौं** ३३९।२; **कीह** १८६।७; **कीही** १४६।४; १५४।५

कीतसि (कहाँ) ४१४।३

कीर २४।४

कीसन ७५।४

कुचहि ३८०।७

कुछउ २४।७; ३१।५

कुंजर ३२४।६, ७; ३३३।१; ४१६।७; **कुंजरा** ४१३।५

कुटुँब ३४६।४; ३९८।४; **कुटुबाँ** ४०५।७

कुदन्तहि ३६४।१

कुदेरा ३८।५; **कुदेरैं** ६६।१

कुन्द ६६।१; ७४।१

कुन्दन ६०।२; ३१८।३

कुँवलाई १६६।५; ३३०।४; **कुँवलानाँ** ३१२।३; **कुँवलानी** ३१६।५

कुँभस्थल ७०।१, ७; ३८२।४; ३८३।६; ४१७।५

कुम्भ ४११।५

कुमुदिनि ८१।२

कुरंगिन २१।४; ४५।१; ५९।५; ३७७।४; **कुरंगिनि** २२।३, ४; २३।२, ४; २४।२; ३४।३; ४०।६; ४१।४, ५

कुरला ६५।३; ३०८।५

कुरिल ५३।१

कुलवन्ति ८९।२; ३९१।६; ३९९।५; ४०४।४; **कुलवन्ती** ४२८।१

कुवाँ १६१।२

कुसुँभ ७६।४

कुहुकन ६३।३; **कुहुक** २२८।३

कुहाइ ४०४।६; **कुहाई** १००।४; ३०२।१, ३; **कुहानेउ** ३८७।२

कूसर ३५४।६

के ३९३।२

के (कर) ३४९।६; ३९३।३; ३९५।५

के (या) २१७।२

केउ २९२।६; **केउनहि** १०३।६; **केऊ** १३८।५; **केऊँ** ४२७।३

केयूर ३०७।२

केर ६८।५; ७३।३; २२३।१; २६०।१; २६७।४; ३६३।५; ४२९।१; **केरा** २३।२; ३७।४; १३५।३; २१३।७; २६७।४; २६८।४; २७५।१; ३१०।४; ३२२।४; ४१०।२; **केरि** १२।३; ३३९।३; **केरी** २६१।५; ३६२।६; ३७९।५; **केरे** १९९।५; २०४।६; ४११।७

केवइ ३८३।२

केवा २२६।५

केहरि ६९।१; ३८४।७;

केस १०९।१; **केसा** ३०८।३

केहिके २१३।२; **केहुहँ** १९०।७; **केहू** २२९।१; ३६६।५

कै (का, की, के) १६१।१; १६९।७; १७३।१; १७४।६; १७५।६; १७९।५; १८०।१, ५; १८१।७; १८२।३; १८७।५; १९१।३, ७; १९४।३; १९८।१; १९९।४; २०२।२; २०५।५; २०८।२; २०९।४; २१२।५, ६; २१४।६; २१९।५; २२३।३; २२९।७; २३५।२; २५३।७; २५४।७; २७३।१; २७८।७; २८९।६; ३१६।७; ३२०।३; ३३०।७; ३३४।६; ३३८।६; ३४०।६; ३४२।४; ३४३।६; ३४५।३; ३४६।३, ४; ३५२।३, ४; ३५७।२; ३६०।१, ३, ६; ३६१।४; ३६३।४; ३६५।१, ३; ३६७।४; ३७१।६; ३७५।७; ३८५।१; ३८६।२; ३९१।२, ५; ३९३।४; ३९५।१; ४; ३९७।२; ४००।१, ५; ४०६।७; ४०८।३, ४; ४२०।३

कै (कर) ८२।१; ९०।२; ९६।२; १४३।४; १७१।६; १८१।३, ५; १८६।२; १८७।६; १८९।५; १९२।५; १९३।५; २०९।६; २१७।५; २२०।३; २२५।३; २३०।१; २३१।४; २४१।१; २५४।७; २५५।१, ५; २६१।६; ३१२।५; ३२९।२; ३४२।३; ३४४।७; ३४६।७; ३५१।६; ३५२।७; ३५८।२; ३५९।२; ३६२।४, ७; ३६६।३; ३७१।४; ३७२।१; ३७५।३; ३७७।३; ३७७।५; ३७८।१; ३८०।१; ३८२।३; ३८८।४, ७; ३९०।२; ३९८।२; ४०५।६; ४०८।५; ४२१।५; ४२३।२; ४२६।२, ५;

कै (को, के, लिए) १७१।७; १९६।३

कै किस) १७६।४; १७७।५; २३८।६

कै कितना) ३३८।७

कै (क्या) ३६७।५

कै (हो) २२२।१; ३५४।५; ३९०।२

कै (या, अथवा) ५५।६; १८२।२; १८८।२; २००।२; २१७।१, २, ३, ४, ७; ३४३।१; ३५३।४; ४०६।४;

कै (कौन) २८२।३

कै (प्रकार) १८३।५

कैसहिं ७८।७; १०८।६; १४३।१; ३५३।१; **कैसहुँ** ९६।७; २३५।३; २३८।७; २८६।१; २८८।६; ३३९।७;

को २०२।६; २०८।४, ७; २१०।१; ३१२।५;

३४०।६; ३६०।५; ३७०।१; ३८७।१; ४०२।१; **कों** ८२।३, ४
कोउ ८२।६; १३९।७; १६९।३; १७१।२, ६; १८२।२; २११।३; २४७।५; २६६।२, ३; २८१।२; २९०।२, ३; ३०८।२; ३४२।४; ३५०।६; ३५२।५; ३५३।३; ३५९।१; ३९६।७; ४०२।७; ४०५।३
कोंख ७४।२
कोट ३६६।२
कोड ४५।७; ८०।५; ८१।२; १८६।५; २०२।४; २३४।५; ३०८।५, ६; ३५१।३
कोर १६४।६
कोरि (कोटि) ९५।४; ३५९।२;
कोरी ४०८।१
कोरीं ३६१।४
कोलाहर ३६९।२
कोस ३५।५; ३५९।३; ३६५।६
कोह ५।६; ३९९।६; ४१२।६; **कोहू** ३८८।५
कोंह ७२।४
कौ २७०।७
कौंधा ५५।४
कौरा १७७।१
कौरों ४१८।७
कौसीसा २६।७

ख

खटरितु ४४।७; ४५।३
खटवारि १५९।३
खटारस ६५।३
खँड ३९।१
खँडवानि ४४।२; ३३२।४
खतरी १३१।४; १५१।१; ३६६।६
खपर १०९।२
खभारू ४२६।५
खर ५८।३
खरग ५९।७
खरा (खड़ा) ३७५।३
खरदम १०।१
खरभर ३६७।१; **खरभरेउ** ४१५।७
खलरी २८९।६
खसि ८५।३; ४१५।५
खाई ३४९।७; **खाइसि** २३९।७; ३६४।७, ४११।५; **खाइहि** १८०।५; **खाईं** २२९।३; **खाउ** २७४।७; **खात** ३६२।७; **खातेउ** १८६।४; **खाब** १८३।७; **खायउ** ३६३।४; **खायउँ** २३९।२; **खायहि** ३१०।४; **खायहु** १८२।३; **खायसि** १२३।४, ५; **खायसु** १८०।४; **खाव** १६२।७; **खाँवँ** १०३।४; **खावउँ** ३६३।२; **खावा** ३३१।४; **खाहहिं** २१२।४; **खाँहि** २६१।७; २७४।५; **खाँही** ३०४।५; ३१०।५
खाँइ २३७।३; २६६।२
खाँग १६।६; ३६।५; १५१।७; **खाँगा** ४९।२; **खाँगी** १६।४; **खाँगों** १२२।२
खाँड ७७।२; ३३९।६; ३४१।५
खाँडा (अस्त्र) ५३।६; ३३७।४; **खाँडि** १९४।६; **खाँड़े** २४९।१; ३०६।५; ३६३।७
खाँडा (काटा) ३१९।५; ४१६।२; **खाँडेउ** ९१।२;
खानि २१२।४
खारू २५९।५
खाल ६६।७; २०५।६
खिडरिज २३४।१
खिन ४१।३, ५; ४८।४; ९९।५; १८८।३; १९१।६; १९४।७; २१६।७; २३५।४; ३२३।४; ३४४।२; ३५९।७; ४०९।६; **खिनक** १५९।७; २८४।१; ३११।१; ३८४।३; **खिनखिन** २४।५; २५।४; ३११।६; ३३४।६; ३५१।२
खियाइ १६१।४; **खियाइसि** १७३।७; **खियावत** ४२९।३; **खियायसि** १७९।३; **खियावा** १९१।३
खीन ३४।६; ७५।४, ६; ११२।७; ३२६।१
खीर १९।२; ४१।२; ३२७।२; **खीरू** ८२।५; ८७।२; ३७८।२
खुरकहि १२१।७
खूँही ६०।३
खेता ५७।४
खेम ३७५।५
खेलइ ४५।७; **खेलसि** १४८।६; १९७।४ **खेलेउँ** २२८।२; **खेलै** ४११।२

खेह १०।१, ४; **खेहा** ४३।१
खैं १६९।१; १७६।४; २३८।६
खोइ खोइ ३३०।१
खोयँउ १२९।२; **खोयसि** १२९।२
खोरी ४२०।२
खोलसि २७२।१

ग

गइ ४००।३; **गइउँ** १९२।६; **गइँह** १९३।४; **गइसि** ८४।४; **गयई** ३६८।१; **गयउ** २३।५; ३६।२; १६६।६; १८९।७; १९६।१; २३९।३; २७०।४; २९४।५; २८९।४; ३०८।३, ६; ३१०।४; ३४९।४; ३७७।७; ३८७।१; **गयउँ** १३७।१; १९३।४; **गयाहु** १७०।७; **गयेउ** २८४।२; ३२९।५; ३३७।३; ३३९।१; ३५४।३; ३६४।२; ४१५।२; ४२३।४; ४२७।४
गंग ३३४।१, २; **गांग** ३२४।२; ३५८।५; ४०६।४; ४२८।४
गज्ज ३८४।७
गजमैंमत ८८।१
गजमोंति ६४।७
गजेउ ३२१।६
गड़रियहि ३६२।२, ३
गढ़ा ३६६।१; **गढ़ेउ** ३०५।७
गँधरप ९।५
गँधाई ७४।४; २७१।३
गन्धरबहि ३००।६
गँभीरा ६४।१
गयन्द ४१।७; ४१६।६
गर २७।५; ५२।७; ४०९।४
गरगज ३७६।१
गरब ७७।५
गर्रया ९३।५
गरलाई २५।४
गरह १७।६; १८।४; ३०६।६
गराइ ४१९।७
गराहँ ३३१।७; **गरु** ३८४।६; **गरुई** ४०६।६; **गरुव** ४१७।७
गलगजेउ ३२४।७; **गलगजैं** ४११।७
गवन १०।५; ७७।४; १३४।३; २६३।५; **गवनइ** ३६०।५; **गवनी** ३२५।५; ३८९।६; ४२७।६; ४२८।५;
गवइँह १३८।७; **गवाई** २२३।१; **गँवावइ** २२६।६; ३०५।२; ३५२।१; **गवावउँ** ११२।३
गवेंझ ७९।६; ३३६।१
गहाई २४।४; १७९।३; २१३।१; ४१८।५; **गहसि** १४९।१; १९४।३; ३०६।३; **गहाही** १९०।३; २१९।५; **गहहु** ३७८।२; ३८२।१; **गहा** ४५।१; २४२।४; ३०७।५; ३३५।३; ३४८।३; ३७८।१; ३८२।३; ३८३।१; ३८९।३; **गहि** ४४।६; ३७८।६; ४०९।४; **गही** ८२।२; २५५।१, ४; ३०२।२; ३७९।१; ३८९।१; ४०४।१; **गहीं** २५१।२; **गहु** १३२।४; ३८१।४; **गहे** ६८।५; ३१७।५; ३८२।६; ३९७।५; **गहेउ** १६४।७; **गहै** ३०३।१; ३८२।४
गहन ७०।१; ३४७।७; ३७७।६; **गँहन** ३१३।३
गहन (ग्रहण) २४।५; ३३।४; १२९।१; १६८।५
गहर ४२।६; **गहरें** ३१६।५; **गहिरे** ३३४।४;
गहिराना २९१।४
गहिगहि ३६७।२, ३
गा १८०।१; १८६।३; २३४।१; ३०२।४; ३१४।४, ५; ३५८।४; ४०३।५; ४२३।४
गाँउ ९६।६; २०५।२; २१०।३; २२२।६; ३८५।५; **गाँऊँ** ११७।३; १२७।५; २०९।४; ३८५।४; ३९३।२; ३९४।४; ४००।३
गागर ४०५।१
गाजत ३७६।६; ३९६।७; **गाजा** ४१२।४; **गाजे** ३६६।३
गाँठि ६८।४; **गाँठी** ४३१।५
गाड़िहि ३५९।२
गाढ़ १६८।६; ३०३।७;
गात ७५।१; ४०८।७; ४११।५; ४२८।७; **गाता** ३७२।३; ३८७।३; ४९९।३
गाथा १३।३
गायहिं २५०।५; २५१।६; २५२।६, ७
गारी ४०७।१
गारो ३७४।३; ४०१।७

गाल ६१।१; **गालहिं** ६१।२
गिंय ६६।१, २; ७७।३; ८८।७; ९५।६; १४०।४; १४१।२; १९०।२; ३०४।२; ३१६।३; ३५८।२; ३५९।६; ३९२।२; ३९७।२; ४१६।३; **गियैं** ४०७।५
गिंयमारी ३२१।१
गियान ४७।६; ८७।२, ३; १५९।२; ३१३।५
ग्रिहम ४५।२; **गिरखम** ३३२।५
गिरही ३६४।४
गिराई ३४७।४
गिरिमलया ३३२।५
गुजरहिं २१२।७; **गुजरहु** २९०।६
गुंजी ३५२।३
गुन (गुण) १९।४, ५; ३६।६; ७७।५
गुन (रस्सी) ५०।२; ५६।२; ३२३।७; ३३४।२; ४१५।१
गुनधारा ३३४।३
गुनवन्ती ३३४।२
गुनवार ७२।३
गुनहि १८।१; **गुनहु** १७।५; **गुनहू** २३६।१; **गुनि** १८।३; **गुनि-गुनि** १७।५; १८।५; **गुनिये** ४२७।७; **गुने** १८।४; **गुनै** १८।१
गुनाई ७४।१
गुनी ११।२; १८।२; ७८।३; २१२।२
गुनीज ५६।६; **गुनीजइ** १११।४
गुहार २८९।५; ४२१।६; ४२३।२; **गुहारी** २६६।२; ४२२।१
गुसाँई ३४१।२; ३६०।२; ३७६।५; **गोसाई** ३९१।५
गूथिम २३५।६
गूद ४११।४, ५; **गूँद** २५५।३
गेरि २८७।२
गेला २८३।४
गै १३३।१; १५७।४; १६४।३; २६८।७; २९५।३; ३०६।४; ३५६।६; ४१७।५; **गौ** २१६।७
गोंठ १५८।४
गोद ३९७।३
गोरी ६६।७; ४०८।५
गोहन ८०।३
गौर ६४।३
गौरा ६१।२

घ

घट ३६।७; ४१।४
घट (घड़) ६१।३
घटन्त ४२०।६
घटवँहु ३८०।५
घटा ६।२; ३९८।७; **घटाई** ५५।२; **घटाना** ३४०।३; **घटानी** १३२।१; २८२।१; ३४७।३; ३७७।१; **घटाही** ३५३।१
घण्ट २७०।२
घन ३२८।३; ३८४।१; **घनेरा** २६९।७
घनथट्ट ३३२।६
घबर १५९।६; **घबरी** १३२।३; **घभरी** १४०।३
घरी १२३।५; २७८।३; २९६।५; ३३३।४; ४२०।७
घहराना ३५७।५; ३९६।३
घाउ ३५७।५
घाट २६।६; ३५९।१; ४०२।५
घात ४७।५; ५०।७; **घाता** ३६३।४; ३६९।५
घाम ४१८।७
घाल २६६।७; २८९।६; **घालि** २०।४; **घालसि** ४०७।७; **घालहु** २८६।७
घिउ १९९।६; ३३९।६
घिरत १९७।६
घिरा २१।२
घिसियाइ २४८।६
घुर (घोड़ा) ४२४।६
घोटि ६८।१; **घोंटसि** ७७।३; **घोटी** ६१।१
घोड़ २२।१; **घोर** २६।६; ६३।१; ७४।४; ३५६।६; **घोरहिं** ३६१।२; ३९७।७; ४२२।३; **घोरा** १५।६; **घोरे** ३६१।१;
घोरा (घोर) ४१२।१
घोला ७६।४

च

चक्कवइ ३००।६
चख १०।७; ४०।५; ५८।४; ६४।२; ७६।३; **चखत** ५०।५
चगत ५९।१; **चुगत** ६४।४

चटपटी ७९।६; ३५४।१

चढ़ऊँ २९०।२; **चढ़स** २२५।६; **चढ़ि** १९४।२; ३५१।३; ३७६।२; **चढ़िहि** ३९९।३; **चढ़ै** २३६।७; ४००।६

चपल ५८।२

चबाहीं २४५।२

चतुरंग ३९।२

चतुरोख ३०८।४

चन्द्रमाँ २४।५

चर ३६४।५, ६; ३६५।३, ४

चर-चर (चार-चार) २०५।७

चरचै १८९।४; २४५।२

चरन ३६।१

चराई २९०।५; **चरायहु** १६०।५

चरित ४७।४; ४०४।४; ४१२।१;

चलउ २८२।५; **चलउँ** २६२।७; **चलहि** २०९।१; **चलहीं** २९७।३; **चलहु**; २६।३ २१४।६; २३४।७; २४५।७; २५८।३; २९७।५; ३२०।१; ३४२।२; ३४७।१; ३८५।३; ४०५।६; ४०८।७; **चलाई** ३३७।५; ३६८।४; ३९०।२; ३९२।२, ५; **चलाँउ** १८८।७; **चलानसि** २१।६; **चलावहिं** ३४७।२; ३५९।२; ३६०।४; **चलावा** २०२।१; ३३५।१; **चलाहिं** ३६१।६; **चलिहौं** ३५३।४; **चली** ३७४।६; **चलु** ३४४।१; **चलेउ** ३९४।५; ३३७।१; **चलै** ३८१।३

चँवर ९४।४; ३७६।४

चँवरधार ९४।४

चहई ९।५; **चहा** २५८।३; ३७८।१; ३८९।३; ४१४।१; **चही** २४५।४

चहु ३६८।५; **चहुँ** २०५।४; **चहूँ** १८९।५; ३३०।१; ३४७।७; ३६८।३

चाउ ३१।४; ३०८।४, ६; ३११।१; ४०१।६; **चाऊ** १५६।५; २८९।४

चाकर ९४।६; ११३।२

चाखी २२१।५; २४१।३; **चाखों** ७३।५

चाँचर ३२९।३

चाँट ६३।३; २८४।७; **चाँटहि** २३६।७

चाँड़ि ३९३।३

चावैं १८०।३

चारि १९०।४; ३५६।१; **चारेउ** १२१।३; १८१।५; १८२।१

चाल २९०।४; **चाली** ३४२।४

चाह ४५।१; ४९।५; १९३।७; ३१२।५; ३१८।६; ३६७।५, ६; ३७३।६; ३९३।४; ४०६।१; **चाहत** २८४।४; **चाहसि** १२६।१; २२१।५; २८४।२; **चाहहि** १६९।७; **चाहा** २४।१; ३१७।१; **चाहिउँ** ९२।६; **चाहिसि** २४।६; १८१।३; १८६।३; २३९।३; **चाही** २४५।५; ३२०।२; ३४२।२; **चाहुत** ३१८।३; **चाहेउँ** २६०।५; **चाहै** १७४।२; १९८।५; ३४८।१

चिघरत ४१७।५; **चिघरहिं** ३९६।४

चित २९।२; ३५३।३; **चितहिं** ११।७

चितेरा ३८।४

चिनिया ७४।२

चिंय २८४।५; २८५।५

चिर १५९।५

चिंहटेव २४२।५

चिहुर ३८२।२

चीत (चित्त) ११५।७; ३००।७; **चीता** २९।१; २७४।३; **चीतै** २८।७

चींत (चिन्ता) १५१।४

चीता (चित्रित किया) ३९।४

चीन्ह (चिह्न) २५३।७; ४२८।७

चीन्ह (पहचाना) १६५।४; **चीन्हसि** ३६४।२; **चीन्हा** २७३।५; २८९।२; ३४५।२; ४१३।३; **चीन्हाँ** १९।१; **चीन्हीं** २२३।३; **चीन्हीं** ३४१।४; **चीन्हें** १७०।३; **चीन्हेउ** ३६२।२;

चीर ३६८।६; **चीरू** ३३२।३

चुक ६०।५; **चुकाई** ३६०।१

चुनहारू ३८।४

चुनहि २०७।१

चुपकै २५९।१

चुराइसि २२२।७

चुवहिं २९७।२

चूक ५०।५

चून ३०६।२

चूनाँ ३३५।५

चूरा २१।४
चूल्हीं ४०५।१
चेत २८।७; ४९।४
चेरि ३६१।२; ३८८।२; ३९१।३; ३९८।१; चेरी २९०।७; ४००।१; चेरीं ४२७।१,३
चेल ९०।६
चैत ३३०।१
चोखा २७।१
चोला ३७०।४
चोलि ४०६।३
चौक ६४।१, ६; ७५।५; ३७९।२
चौखण्डी ३९।३
चौडोल ३६१।३; ४२२।६; चौडोला ३९८।१
चौदस ४६।१
चौंदी ५२।६
चौंधि ५५।५
चौपाइन्ह १३।३; ४३१।५

छ

छतनारी २८।१
छतीसी ४००।४
छँद ३०२।६
छपानेउ ३२३।५; छपाही ३०३।३
छया ३३।५; ४२।३; ८४।३; १९३।२
छरा २१७।२; छरि ३८१।३
छही ६७।४
छाइ ३९३।३; छाई २७७।४; छाउ २७०।३
छाँगर १७१।१
छाजा ९।३; ९२।४; ४०२।२; छाजै ४०६।७
छाड़ १९७।७; २१२।७; २२६।५; २६६।५; २८७।७; २८८।६; ३०९।६; ३१०।३; ३३५।३; ३६४।४; ३७८।२; ३७९।५; ३८१।१, ३; ३८२।३; छाड़उ २७२।३; ३६३।४; छाड़सि २२।१; १०८।५; १३८।६; ३४४।५; ३६०।१; ३६४।७; ३८०।२; छाड़हु ४७।५; २८७।४; ३१५।७; छाड़ि ३१।२; ११२।१; १२५।१; १३१।३; १६०।३; १६३।५; १६८।६; १७७।३; १९६।१; १९९।२; २३६।२; २८७।५; ३०८।२, ४; ३२१।५; ३९४।२; ४०१।४; ४११।२; ४२३।४; छांड़ि ३०३।४; छाड़िसि १६३।५; ४०३।५; छाड़ी ७२।४; १२५।४; ३७४।५; छाड़े १७६।३; २८८।५; छाड़ेउ २३८।४; ३४७।२, ५; ३८४।२; छाड़ेउँ ४१२।३; छाड़ै १६०।२; १८४।७; छाड़ौं १८३।७; १८४।३, ५
छात ९।१; ३७६।४;
छायउ ८८।५; ३३३।५
छाया ८६।१
छार १०।७; छारा १६८।३; छारि २११।७
छाला १०।१; ७९।१
छाँह ३०८।१; ३०९।७; ४१८।७; छाँहाँ २४१।२; २८१।५; ३२८।४; ३३२।५; छाहीं ३१०।१; ३७६।४
छिंकारहँ २३८।५;
छिन १९६।१
छिपाव १४।६
छिरकहिं २८५।१; छिरकि ८०।३
छींटा ४०२।३
छीन ७५।७
छुड़ाई १७८।६; ४०५।५; छुड़ावउ २६७।२;
छुपाओं १९२।५; छुपायसि १९४।४; २८९।२; छुपि ७९।२; १८९।२
छुपानी ३८२।५
छूछ ३५०।७
छेड़ें २४७।५; छेड़ै ३३३।६
छैल ३८१।३
छोट ६०।१; छोटहिं ३५६।३
छोड़ों २८१।२
छोर २८७।६; ३८१।४; छोरी ३१।४
छोह २७५।७; छोहू २२६।३

ज

जइस १४६।७; १५६।३; २१५।७; २७८।५; २८०।२; ३७२।४; जइसे २६६।६; जइसै २२२।२; २७३।२;
जइहइ १८३।३; जइहहुँ ३२०।५; जइहों ३१९।६; ४०८।२; जइहौं ३६।३; ३२०।७
जगती २४८।२
जंगम ६१।६
जती ६१।६

जन ९५।७; **जनँ** ३९७।५; **जनहिं** १८०।२; ३५९।४; **जनाँ** १४५।५; २३१।६; २८४।३; ३४४।१; **जनीं** ४६।१; ६२।३; **जनैं** १५५।१; २१४।५;
जनत ३३८।२;
जननि ३९१।१; ४०५।४, ५
जनभी ७६।२
जनाउ ३४१।३;
जनावा ३२६।१; ३३३।१; ३३८।३; ३६८।३; ४१०।३
जनि २६।३; १६३।६; २६४।३; २७७।४; ३१५।७; ३६४।४
जनु २४।५; ३३।४; ४४।१; ८८।१; १६६।४; १८८।१; २०४।२, ३; २०७।१; २१०।४; २११।१; २१५।५; २१७।३; २५४।५; २६२।५; २९१।१; ३२२।१; ३२२।२; ३३२।१; ३६४।२; ३६९।१; ४०६।४; ४१२।२; ४२२।४
जनौं १७।२
जबलग ३१६।४; ३५५।६; ३८९।७; **जबलगि** १४२।५
जमकाल ४१५।२
जमजूत ३९६।७
जमु १२।५
जर (जड़) ३४७।५
जर (जल) १६८।३; ३०८।१; ३३७।७; **जरई** ३०७।२; **जरऊँ** २७१।५; **जरत** १९९।६; १६१।२; ३०९।३; ३३२।५; ४०७।७; **जराई** ३३२।१; **जराऊँ** २४८।५; **जरि** ११४।७; ३२९।१; **जरिहौं** १६७।७; **जरीं** ४२९।२; **जरे** २१५।२; **जरैं** २३३।१; २७९।१
जरम ७।७; ११।५; २१।३, ४; १३६।१; १६७।१; ३०३।६; ३०४।१, ४; ३२६।५; ३३०।३; ३५८।५; ३६०।७; ४०९।२; **जरमहुँ** २२९।१; **जरमौं** ४६।२
जरी (जड़ी हुई) २९।४
जरी १२९।६
जलहर ४२।१; ३२२।५; ३३३।५, ६; ३३४।४
जवन (यमुना) ३५८।५
जस १३।७; २५।२; ५७।४; ७४।६; ११२।५; १७१।१; १७४।७; १८१।१; १८७।४; १९१।३; १९५।७; २१६।६; २७५।२; २७९।६; २८४।७; २८६।४; २८९।५; ३१७।३; ३२०।१, २; ३२७।२; ३२८।७; ३४७।६; ३४८।१; ३५६।४; ३५९।५; ३७०।६; ३९०।७; ३९१।४
जहिया २१८।४; ४३१।५
जहिये ११०।७
जँह २०६।१; **जहवाँ** २५।३; ७९।४; २०१।७; २३४।६; **जेहवाँ** ३८।२
जा (जो) २२२।१
जा (जिस) ३८३।७
जाइ १४१।६; १७३।१; ३३५।५; ३४२।६; ३५८।६; ३५९।७; ३६२।३; ३६५।१; ३७१।३, ४; ३७४।१; ३७७।१; ३७८।२; ३८१।६; ३८२।१; ३९०।१; ३९३।३; ३९६।७; ४००।१; ४०५।३; **जाइहि** २२७।७; ३२६।३; **जाई** ३३०।४; ३३१।३; ३३६।२; ३४७।४; ३५०।१ ३५१।४; ३५४।३; ३५६।२; ३५७।३; ३६२।२; ३६४।५; ३६५।३, ४; ३७१।२; ३७४।५; ३८२।४; ३९०।४; ३९२।४, ६; ४०५।३, ४; ४०६।५; ४०९।१; **जाउ** ३१५।१; ३६४।३; **जाउँ** १८५।६; २०३।१; २३०।५; २८८।२; २९९।३; ३२९।२; ३८९।६; **जाओं** १३१।२; **जात** ३२६।५; **जाति** ३९१।५; **जातसि** १३१।५
जाकर ४४।४; २२१।३; ४११।१; **जाकहँ** १०।७; २६७।५ **जाकहि** १३२।१; **जाके** ७०।३; ३४२।२
जागेउ ३९५।१; ४१५।२; **जागेउँ** २४०।४
जाँघ ३९।५
जाचक ३९८।४
जाड़ ३२७।४; ३२८।२
जात (जाति) ६।१; **जाती** ३९१।२
जान ३६६।७; ३८९।३; **जानसि** १९७।५; **जानहिं** ३६६।७; **जानहु** १४०।५; २४७।७; २५६।२; २६५।२; २७८।७; ३५६।५; ३६०।१; ३९१।४; **जानाँ** १५०।३; २४६।५ **जानि** २१७।५; ३३४।७; **जानी**

१८९।७; २०४।७; ३५३।१; ३७७।१; ४०४।६; **जानेउ** १७६।१; ३०७।५, ६; **जानेंउ** ३२५।६; ३८०।५; **जानै** १५०।७; २२०।३; २४४।६; २६४।४; ३७९।६; **जानैं** ३८९।३; **जानों** २११।२; ३८९।७; ४०८।२; ४१२।६; **जानौं** १४३।५

जानु ६१।१; ६३।३; ६८।३; ८०।१; १२१।२; १४३।४; १४६।३; १८२।१; २०५।५, ६; २६५।१; २९०।७; ३४५।३; ३४९।३; ३६८।३; ३७०।२; ३७२।४; ३९६।३

जाव १८३।६; १८४।६, ७

जाँमा २८८।४; ३२७।२

जायसि १२३।५

जारत ३३८।१; **जारसि** १०५।३; १८०।३; **जारहिं** २३३।१; **जारहु** १४२।१; **जारा** १४४।५; १६८।३; ३०८।१; ३२२।१; ३३०।१; **जारि** ३३२।७; **जारी** २८५।५; **जारे** ३५२।४; **जारेउ** ३३३।३; **जारेउँ** १७५।३; **जारै** ३५२।२; **जारों** १३९।३; २८६।५

जावस ४१३।२; ४१०।३

जावों २५।५

जासेंउ ६३।५; ३५१।५; **जासों** ११।३; २७।४;

जाहु (जाओ) २२८।७; **जाहहिं** ४८।२; **जाहि** २४५।७; ३६५।७; **जाहिं** २०३।५; २०४।५; २४८।७; २६४।६; २८३।७; ३३६।३; ३६१।७; ४०९।६; **जाही** १९२।२; **जाही** ३१।२; १९१।१; २९६।२; **जाहु** १८३।६; १८६।४; २३०।४; ३७१।४; ३७३।६;

जाँह (जहाँ) ६६।५; **जाहिं** ८२।७;

जाहि (जिसको) ९२।६

जाही (जगह) ३३९।१

जाही (उसको) ९२।२

जाही (उसकौ) १७८।५; ३१८।२;

जिआँउ १९४।७

जिउ २४।२; ३६।२; ७९।५; ८३।६; ९८।७; ११४।५; ११८।१; १६७।७; १७५।६; १७७।७; १७८।२, ३; १७९।५; १९१।२; १९३।५; १९६।२; १९७।१; १९८।३, ५; २०५।३; २०७।७; २११।१; २२६।४, ५, ७; २२८।३; २३०।३, ५; २३५।३; २४१।१; २६२।६; २६४।७; २६९।५; २७७।३, ५; २७८।५; २८१।७; २९०।४; २९१।६; २९२।५; २९६।६; ३०९।१; ३२२।४, ७; ३२३।४; ३२९।१; ३३६।२; ३४८।१; ३७८।३; ३९१।४; ४१२।१; **जिव** ३४६।१; **जीउ** ९०।१; १०१।२; १०९।७; १७४।३; १९५।२; २१६।५; २२२।५; २२३।४; २२६।६; २३७।३; २७०।६; २७६।४; २७७।६; ३२३।५; ३२७।५; ३३३।४; ३६७।२; ३६९।४; ३७९।१; ३८४।७; ४२१।१; **जीऊ** ११९।२; ३११।४; ३१६।२

जिउ भारी १६०।४

जिन्ह १६।१; २६२।३; ३८२।१;

जिमि २८।७; २४२।५; २६९।६; ३११।७; ३२६।६; ३६६।३

जिय १०।६; २१।२; २२।४; ५३।१; ८०।१; ८१।६; ९०।२; १६४।६; १८४।६; २१९।६; २३०।६; २३१।५; २७२।३; ३१४।३; ३६७।५; ३७३।७; ३७९।३, ५; ४०६।५; ४२६।५; ४२९।७; **जियै** १७२।३; १८४।१; २९३।१; ३८८।६

जियइ ३१६।४

जियकै १४६।७

जियत १३९।६; १८३।७; १८४।५; २७१।१; **जियतहिं** १३९।५; ३१६।३; ३४८।५

जियहिं १५८।७; २७६।३

जियाओ १३१।२; **जियाई** १३३।२; ४३०।३; **जियायउँ** ८५।४;

जिह (जिस) ८१।५; १३५।५; १७४।४; १८७।७; २२४।५; २३६।२; २५१।७; २७१।४; ३४१।३; ३४४।७; ३६७।४, ६; ३७९।६; ४१०।६; **जिहके** ४९।५; २१९।३; ४०६।१

जिह (जहाँ) १०।४; १५।५; ३६।७; ३७।२; ७८।६; ८१।२, ३; ८४।३; ९७।७; ९९।३; ११३।७; १२१।१; १२२।६; १३३।७; १३५।४; १४५।७; १५१।७; १५५।३; १५६।७; १७७।२; १९२।६; १९३।४; २०१।३; २०४।५; २०८।३; २०९।२;

२१०।३; २१३।७; २१८।१; २२०।७; २२६।४; २२८।२, ४; २५२।६, ७; २६०।३; २७४।२; २८३।६; २९१।६; २९६।१; २९९।५; ३००।१; ३०६।२; ३०८।३; ३१३।४; ३२०।१; ३३६।१, ६; ३३७।२, ३; ३३८।६; ३४१।५; ३४३।३, ७; ३४४।५; ३४७।१; ३४९।२; ३६१।७; ३८०।३; ३८४।४, ६; ३८७।३; ३९२।४, ५; ३९५।१; ४०२।२; ४१०।२; ४१३।४; ४२२।२

जिंहिं २२७।६

जीआ २२९।४; **जीयहिं** ३०।५; **जीयै** २२०।४; **जीवइ** २२६।३; **जीवउ** १८।७; **जीहों** ३५९।६

जींउ १०३।६; २४५।६; ३८७।६

जीतेउ २४३।७

जींह (जो) ३८५।१

जींह (जीभ) १९४।६; २२८।३, ४; २८४।४; २८५।३; ३७३।२

जींह (जामे) १५२।५

जुग ९।३; ४०।४; ३०४।३; ३५९।७; **जुग-जुग** ३३६।२; ४३०।६

जुगुति १०९।६

जुरै ३९६।४

जुवत (जोहत)) ४५।४

जुहार २८।४; ३२०।३; **जुहारी** ९५।६; ३४२।३; **जुहारू** २०१।५; २३४।२; ३६०।५; **जोहारा** ३८१।१

जूझ १५।४; २३७।२; २४९।७; ३०१।३; ४०३।७; ४०४।२, ४, ५; **जूझी** ४०१।४; ४०४।२;

जूह ३३३।१; ४१६।७

जे (जो, जितने) २०८।५, ६; २३१।६; २६२।५; ३७७।७; ४०२।६; ४२५।१

जेइ (भोजन करके) १५३।१

जेंउ (जिमि) ८१।४; १०८।७; २२७।२, ३; २१९।७; २३०।४; ४१६।४

जेता (जितना) २३१।७; **जेतीं** २७२।४; २९९।२

जेवनारा ४२९।५

जेहि १९७।२

जै, जैं (जो) ४०।६; १६९।७; १८२।२; १९२।२; २१३।६; २२३।४; २४५।३, ४; ३४१।४; ३६३।६; ३७१।७; ३७६।५

जैमारा १५३।५

जैस २९०।३; **जैसन** १४।३

जोग १०७।७; २६०।६, ७; ३७६।५

जोगियेउ ३६२।५; **जोगीउ** ३३९।१

जोगू ३३१।२; ३८१।६

जोगौटा १०९।३

जोजन २२।६; २६।२; ३२।७; ३३८।७; ३३९।१; ३९४।३; ४०३।५

जोत ६४।१; **जोति** ५५।५; ११२।७; १४२।२; ३९५।५

जोतिखी १८।६

जोन्ह ३८४।३; **जोन्ही** ८७।५

जोबन ३१४।७; ३१५।७; ३२६।३, ५, ६; ३२९।६; ३३०।३; ३७९।१

जोबन बारीं ८०।४

जोय (जोह) ३०।७

जोरत १३।६

जोरि १५२।४; १८७।६; ४१६।७; **जोरी** ६९।१

जोरी (जोड़ी) ३९१।५

जोवइ २५।१; ३११।६; ३५०।५; **जोवहि** २१२।६ **जोवँहि** २४८।७; **जोवन्त** ३१०।७

जोहत १६२।६

जौ (जब) ३४४।३

जौलहि ९९।३

झ

झँई २१७।७

झँकि ६३।७

झनकार ७७।७

झमकत ३९८।१; **झमकि** ८०।४

झरकहि ६०।२; **झँरका** ५१।६; **झरकि** १९१।७; **झरकी** ३६९।७; **झँरकी** ३६९।४; **झरकै** ३२८।२

झरि (झड़) २६।७; ३२९।७; **झँरहि** ६५।५; **झरे** २११।७

झरि (झड़ी) २८०।१, ४

झरुक्ख २७८।७

झरोखा ३९।१

झागा ३८१।४

झार ५२।५

झार (झाड़) ७०।३

झारि ३९।६

झुरवइ २५।६; १०४।६; १५१।६; १७५।१; २८३।५; ३५०।४

झुलाइ ३२२।४

झूरी ३२२।५

ट

टकै ४२०।४

टखटोरी ४२०।२

टटकारी ६७।१

टाँड ३३७।५; ३४२।१; **टाँडा** ३१९।५, ६; ३३७।४

टाप १०।४

टीका ३५६।४

टेक १२।७; ५२।४; ६९।७; **टेकहु** ३४८।१; **टेकि** २५।१

टेरा ३३४।१ **टेरि** ३३४।३

टोइसि १८६।३

ठ

ठकुराहिं ३४३।६; **ठाकुर** ९०।३

ठाँ ८।७; २५।५; २६।४; ७८।६ ७९।२; ८३।७; १२२।५; १३७।६; १६२।४; १७५।७; १८६।२; २२९।२; २३३।३; २४०।५; २७५।५; २८५।७; २४४।७; ३६३।७; ३६५।६, ७; ४०१।७; ४०३।६; **ठाँइ** ४९।६; ५१।२; १९५।७; ३४२।५; **ठाँइँ** ३२।७; ४१।२; ७८।६; ८४।७; ९८।७; १३५।७; १५७।७; १६०।७; १७१।४; २३६।४; २४३।५; ३४१।२; ३६०।३; ३९३।७; ४०९।६; **ठाँउ** ४४।३; ८१।७; ८४।४; ९७।१; १२९।६; १७८।६; १८८।६; १९१।२; २०५।२; २६०।३; २९३।७; ३४८।७; ३४९।१; ३८९।६; ४०२।७; **ठाँउ ठाँउ** ३६६।२; **ठाँऊँ** २०।१; ९७।५; १३६।४; १५८।४; १७६।४; २०८।४; २०९।४; २४८।२; २७७।३; २९०।१; ३१९।४; ३२०।१; ३३९।४; ३४१।१; ३४५।४, ५; ३५६।३; ३६२।२; ३८५।४; ३९३।२; ३९४।४; ३९९।२; ४०१।५; ४११।१; **ठाँव** १९४।४; २३२।५; ३३८।५

ठाट १०।१

ठाढ़ २४।६; २५।१, ६; २३४।१; २६८।३; ३४४।२; ३७७।३; **ठाढ़ा** ८३।२; ३९६।५; **ठाढ़ि** ४३।२; ९४।७; २३३।५; २६३।१; २९०।४; **ठाढ़ी** ३११।५; ३१८।७; ३४०।३; **ठाढ़े** ४२४।६

ठेलि १६७।४

ड

डकरै १८०।६

डबडब ३५९।५

डम्बर २८।३

डरहिं ३९६।५ **डरही** ३६४।४; **डराउँ** १८५।७; **डराऊँ** २२८।३; ३२३।३; **डरायउँ** ३२४।४; **डराहीं** १९१।१ **डराहू** १२०।४; **डरेउ** ३२४।५; **डेराऊँ** १२१।५

डसत ५०।४

डाँड़ ११।१

डाँ डि ३६१।२; **डाँडी** ३९७।७

डाढ़ै ३०५।४

डारैं २८।१

डालिंह २०३।२

डुब्बि २०७।६; **डुबि डुबि** २३।७; **डुबोवइ** ४२।६; **डूबौं** ३२३।७

डुलावइ ३१।३

डेंगा १२०।५

डोल ६९।२; **डोलों** ३०६।२

ढ

ढँग ४०३।१

ढँढोरा १८१।५

ढब ३०७।६

ढराहीं ३७६।४

ढार ८८।२; ३०७।२; **ढारइ** ३८।४; **ढारहि** ३२१।२; **ढारि** २०५।६; **ढारियहु** २६२।४; **ढारी** ३९।३; ६८।१; **ढारे** ४०६।२

ढीठ ३७७।६

ढूँढइ ३१।४, ५; **ढूँढउ** २९०।१; **ढूँढहि** २८२।५; २८३।१, २

त

त (तो) ३२८।३; ३५८।३; ३५९।१; ३८९।६; ३९०।२; ४०२।१
तइसे १८१।६; **तैसहिं** ११।७; ४१।६; **तैसों** ६२।३
तज्ज ३८४।६; **तज** १९२।७; **तजहिं** ४१०।६; **तजि** ४२३।३
तड़क ३७२।२
तत्त ५।४
ततखन १५।४; २३।६; ३६।३; ११०।२; ११६।६; १२३।५; १४०।३; २७७।७; २७८।५; २८४।३; ३०४।२; ३७१।५; ३७२।१; ४०४।७; ४१७।२; ४२०।१; ४२१।६; ४२२।६
तन्त ५६।४; १०८।३; १६७।२
तपहु ३२८।४; **तपाई** २१७।४; **तपै** ३२८।३; **तपौ** ३२८।२
तबलग ३८९।७
तबहिं २२३।५; २२९।५; ४०४।५; **तबही** १९७।३; २२६।४; २३१।१; ४०४।५
तँबोल ७६।३; ८५।५; २३२।७; **तँबोलहिं** ६४।४
तयेंड १६१।२
तर २३।३; २६।५; २८।३; ४५।५; ६८।४; १२१।३; २०३।१; ३७९।२
तरक २२।३; ३५१।६; **तरक्क** ३०७।७; **तरका** ४१७।४; **तरकि** ३७२।५; ४१६।४; **तरक्कि** ३७२।७
तरत २२०।६
तरपै ४११।७
तरल ७०।३
तराइन ३४७।७
तरास ४११।७
तरुआ ३७३।२; **तरुवह** ७३।४
तरुनापा १२९।७
तरुनिह ३२२।४; **तरुनीं** ७६।२
तरुवर ३०८।५; **तरुवरि** २३।५
तरेंडा ३०७।७
तरेसा ४२१।२
तवई ६०।२; **तवाई** ६१।४; **तवै** ३३२।२
तवाँये १६५।५
तस १७४।७; १८१।७; १८६।६; १८७।४; २२५।६; २६९।३; २८६।४; २८९।४; २९१।७
तँह ३७७।३; **तहाँ** २३।१; २६।१; १७२।४; १७३।४; १७५।५; २०७।४; २३८।५; २७०।४; २८९।३; २९३।५; ३५१।४; ४११।३
तहिया २३४।३; ४३१।५
ताकर ५२।४; ८९।७; ११८।७; १७२।७; २२०।२; २५९।७; २६६।७; २६७।५; २७२।६; २८८।६; ३३९।७
ताजन ९४।३
ताता २९३।२
ताप ८८।३
तारिसि ४१५।४
ताँवर ६१।४
तासों ३५।६
ताँह (वहाँ) १९१।७
ताँह (उसका) ३४४।७; **ताहि** ४१।१; १३५।४; १८०।७; २१३।७; **ताही** १४।४; ६५।१; १७०।३; १८९।२; २१४।४; २१५।४; २४९।४; ३१०।२; ३८८।४; **ताहू** ३१८।५; ४१४।४; **ताहै** ४०२।४
तिन्ह १६।१; ३१९।७
तिन २२९।५; **तिनकहँ** २१९।३
तिंभुवन ३०५।५
तिमि ३२६।६
तिय १८।५; १३३।३; ३३६।४
तिर (तीर) २३६।५
तिरदोखा २१७।१
तिरसूल १०९।३
तिरि (स्त्री) १३१।१; **तिरिया** ३३५।७; ४००।४; ४१९।२; **तिरी** १।३; १३१।६; १५६।५; ३१४।४; ३७८।५, ७
तिल ११५।१
तिस्नाँ ५।६; २४२।२
तिह (उस) १६।७; १८।५; २५।१, ५, ७;

२६।३; ३२।२; ६५।६; ७८।६; ७९।२; ८२।६; ८७।३; ९१।४; १०३।७; ११४।५; ११६।४; १३०।५; १३१।१; १५६।५; १६२।५; १६६।१; १७४।५; १८३।७; १८४।२; १९९।१; २००।३; २०४।७; २०५।५; २१९।१; २२२।५; २२७।४; २३३।३; २३५।२, ४; २३६।२, ६; २३९।४; २४०।५; २४३।३; २५५।६; २६६।२; २६७।१, २; २७५।५; २८८।७; २९०।१; २९३।७; २९४।१; ३०८।१; ३३६।४; ३३८।४; ३४७।२; ३५३।३; ३६३।३; ३६५।६; ३७८।७; ३८५।२; ४१०।२; **तिंहकै** १३३।७; **तिहाँ** ११९।६; **तिहि** २३।३; ३४।६; ३९।३; २१०।७; २२८।२; **तिंहि** २६।५; **तिहै** ३५२।५

तिंह (वहाँ) २४।७; २७।४; २८।३; ९८।५; ११३।७; १२२।६; १६५।२; १६९।२; १७३।७; १८०।७; १९२।७; १९७।५; २०७।५; २०८।७; २१३।४; २१७।७; २२२।७; २२७।७; २२९।६; २४०।७; २४४।१; २४९।७; २५४।७; २६४।४; २६९।१; २९९।४; ३२०।७; ३३२।२; ३३७।२; ३३८।६; ३५०।६; ३६९।७; ३७१।६; ३७६।४; ३८७।३; ३९२।४; ३९५।६; ४०१।१; ४२२।२; ४३०।१; **तिंहा** २१५।६

तिहसों (तुमसे) ४०२।५

तिहार ३२।१; **तिहारे** ३६३।५

तिहु (तीन) ७४।५

तीख ७०।३;

तीसर २३।१

तुखार ९३।६

तुम्ह ८९।३; १३६।६; ३३४।१; ३३५।४; ३४२।६; ३४४।१; ३४६।५; ३४७।६; ३४८।६; ३५०।५; ३५५।१, २; ३६७।४; ३७०।२; ३७१।७; ३७३।६; ३७९।६; ४०४।२, ४; ४०६।७; ४०८।१; ४२७।४; ४३०।७; **तुम्हरे** १९२।६; ३४५।६; ३८६।४; ३९४।७; ३९९।२; **तुम्हसेंउ** १०६।३; **तुम्हहँ** ३९०।२; **तुम्हार** ३०।५; ४०४।५; ४०९।१; **तुम्हारेउ** २३८।७; **तुमरैं** ९२।६; **तुमहि** ३३४।७; ३९१।४; **तुमहू** २६४।३

तुर (तोर) १२९।६

तुर (तुरन्त) ८२।७; **तुरत** ७१।५

तुरकी ४३०।१

तुरंग २२।४; **तुरंगम** ९३।३

तुरिय १०।४; २३।६; ३३।१; ३४३।१; ३९७।१; ४१५।२; ४१६।१; **तुरियहिं** ३५३।७; ३५७।१; **तुरिंह** ९३।७

तुलाई २०।३; **तुलाना** ३२।६; ३३।३; २९४।१; ३४०।३; ३७२।१; **तुलानाँ** ३३६।३; **तुलानी** २७५।५; **तुलाने** ३९४।३; **तुलानेउ** ३२७।१; ४२३।२

तुसार ४३।१, ३; १६६।३; ३२७।२

तू ३५५।२; ३८०।३; ४०३।३; ४०७।२; **तूँ** ५१।५; ८५।३; ९०।६; ९१।३; २३४।७; ३३८।५; ३४४।२; ३६५।७; ३८७।६; ३८८।४; ४०१।७

तूर ३९५।२; **तूरा** ९५।३

तूल २३२।६

ते २०८।५; ३००।३; ३५४।६; ३९८।५

तेउ ३६९।३; ३९७।५

तेत ३९४।७; **तेता** २३१।७

तेलिया २३२।५

तेवरी ३१४।३; ३८०।३

तेहि १९।५; २३।४; ३६।२; २६५।४

तै (तूँ) ४८।१; ९१।१; १३३।५; १७५।५; १८३।६; १८४।२; १८६।४; १९५।३; २२५।५; २७०।१; २७८।३; ३६३।३; ३९५।३; ४०२।५; ४२१।५

तैरि १७६।१

तों (तुम्हारा) ८४।१; २३५।७; २४०।५; २७१।२; ३८०।२; **तोंको** २७२।५

तोखू ३८९।४

तोपँह ३०२।४

तोर (तुम्हारा) १२।४; ८६।६; ९०।१; २३४।४; २७२।५; २७४।३, ५; ३७४।७; **तोरहि** १३०।३; **तोरा** ३४८।४; ३७०।३; ३८०।५; **तोरी** ३७९।३; ३९१।३; **तोरेउ** ३६३।७; **तोरैं** ४०८।२

तोर (तोड़) २३०।७; **तोरहि** ८१।२; **तोरि** १२३।५; २३९।७; २७९।३; **तोरी** ३३४।२; **तोरै** १०७।१

तोसेंउ १२२।२; ४०२।१; **तोसों** ८९।६

तोह (तुम्हारा) ९०।१; **तोहँ** २७२।४; **तोहि** १८७।६; २२७।३, ७; २७०।३, ६, ७; २७३।६; ३३५।३; ३७८।३; ३८१।२; ४०३।५; **तोही** ५२।४; १२५।३; १८४।५; २२२।४; २३४।३; २७०।२; २८७।४; ३४४।२; ३४६।३; ३४९।७; ३७७।५; ३८१।३; ४०३।३

तौ (तब) २८९।७; ३८०।५

तौलहि ९१।५; १८१।३; १९६।४; ३४४।३

थ

थकेउ ३५१।७; **थाकिह** १८६।६

थवई ३८।३

थापी २५२।१, ४; २५४।१; **थापे** २५१।१

थाहा २३४।५

थिर ५८।२; १८८।३; १९९।३; ४१८।७

थोरी ३५।१

द

दइ (दिया, देकर) ९।७; १८।६; १३५।१; १४१।२; १६४।१; १८५।३; २०१।५; २०३।३; २०९।५; २३०।३; २३३।४; २३९।५; २६६।७; २८९।२; ३००।२; ३३५।६; ३४१।६; ३४२।७; ३४८।२; ३७३।१; ३८१।५; ३८७।१; ३९२।१; ३९५।३; **दइके** २४६।२; ३५८।६; ३९२।२; २९८।४; **दई** ३२।५; १८१।१; २५७।६; २५९।२; २८९।७; ३४३।६; ३५६।६; ४०७।४; **दयी** १८७।४; ३५५।५

दइ (ईश्वर) १२२।१; २३७।३; **दइउ** ३९६।३; **दइय** १२२।३; **दइयहिं** १७७।४; **दई** १५।३; ४२।७; ८२।१; १२०।४; १२५।१; १२६।२; १२९।४; १७०।१; १७५।२; १८६।१; १८७।५; २६९।२; २७६।७; २७९।४; २९४।१, ४; ३३६।५; ३५८।३; ३७१।१; ३७६।५; ३७९।४; ३९१।५; ३९४।७; **दयी** ९६।३; २६०।५; २७०।१; ३४१।२; ३६५।२

दगध १६८।४; १७९।६; २०४।७; ३३५।५; **दगधि** २४०।३; **दगधी** १८०।७;

दन्द ६७।७; १०४।१; ११५।४; ३३५।१; ३४४।६; ३५०।४; ३८५।१

दप्प ५८।६

दब्ब २८।७

दर (दल) ३५७।५; ३७५।१; ३९४।५,६

दरक्क ३०७।६; **दरकै** ३२३।२

दरब १५।६; १६।५; ९५।४

दरस ३२४।१; **दरसत** ३३०।५; **दरसा** ३२५।३; **दरसाइह** ३१०।२, ३

दरेरीं ३१०।६

दलमले ३०४।६

दलै ३२४।६

दवाँ ३१०।६

दसन ११८।५; ३२८।३

दसयें ३७९।४

दहन्त ५०।७; **दहा** २१८।४; ३०८।५; ३०९।२; ३१६।२; ३३९।४; **दही** ३३।५; ३१६।१; ३६२।५; ४००।१; **दहेउ** ३०९।६; **दहै** २९१।७

दहिघट्ट ३३२।७

दहिनो १७।६

दहुँ २६।४; ३४।३; ४८।२; १२७।७; १६५।२; १८९।७; २२२।४; ४३५।५

दाई (भागीदार) २२७।४; ४०३।४

दाउ (दाँव, अवसर) १८५।४; २९८।६; ३७९।४; ४१६।७

दादुर ४२।४; ३२३।४; ३६८।५; ३७०।३

दाधा २२०।३

दानीं ३३७।७

दानौ १७७।१

दाम ३५६।६

दामिनि ४२।३; ५५।४; ६४।१

दायज ३९०।५

दारिंउ ६४।३

दालदि २०४।३

दाहा ३८५।२

दिखाइसि ३३९।५; **दिखाउ** २७६।७; **दिखराई** ८४।३; **दिखरावइ** ३७६।३; **दिखरावहु** ३४८।५

दिनयर ६०।७; ८७।७; १६८।२; १८८।५; ३१५।५

दिनँह ३५५।७

दिपै १७।४; **दिपौ** ३०६।१; **दीपै** ६८।३

दिय ३२७।६; **दियउ** १०७।६; **दियेंउँ** १९३।३

दियसहिं ३८४।४

दिवाऊँ १९५।२; **दिवावा** ३९८।४; **दिवावों** २२७।५

दिस्टि १७।३; ३४।५; १००।१; १३६।५; १८८।४; २०५।२; २८२।१; ३४७।३; ३५४।७

दिस ३६८।५; **दिसि** २०५।८

दिहसि ६६।४; १३७।१; १९४।३; **दिहिसि** २३९।४; २७४।७; २९२।५; **दिहिंह** २५६।४; **दिही** १५३।५; १७५।३; १८७।५; २२९।२; २६१।३; **दिहेउँ** २३०।७; **दिहों** १७२।४

दीख २३।३; ५५।१; **दीखि** २६।५; **दीखत** २७।१; ६२।७

दीजइ ११८।७; **दीजै** १७७।७; १९८।७; ३५३।५; ३५५।५; ४०१।३

दीठ २४२।७; ४१५।३; **दीठा** २७।२; **दीठि** १३०।२; २०३।२; **दीठी** ३८७।५

दीतन्हि ३४८।६

दीतसि १७३।३; ३३१।७; ३९०।५

दीन्ह १३५।६; १४६।५; १४९।६; **दीन्हा** १८८।५; २३१।३; २४७।२; २५५।५; २६९।२; २८९।२; ३२८।५; ३५७।४; **दीन्हाँ** १९।१; **दीन्हि** १४६।५; १९४।१; २५७।५; २६८।३; ३७३।३; ३७५।४; **दीन्ही** १६।२; १६७।४; ३९५।२; **दीन्हे** २४८।३; **दीन्हेउ** २३४।३; **दीन्हेउँ** ३५६।४; **दीन्हों** १७६।६; १९६।५; ३९४।७; **दीनसि** १३३।४; **दीनहि** १५४।६; २३०।२; **दीनहु** १८२।७; ३८७।५; **दीनिहि** २०।४; **दीह** १३५।५; ३३५।५; **दीही** १४६।४; १५४।५

दीरघ १६४।५

दुआर १७६।३; १८३।४; **दुआरि** १८३।३

दुआदस ३४४।३

दुइ २९४।७; ३३५।३; ४०५।१

दुइज २४।५; ५५।१; ३२५।५, ६

दुऔ ३६८।१

दुकन्त ३१९।१

दुक्ख १६४।७

दुखिया ३९१।३

दुखौ ८३।६

दुगुन ३९०।५

दुतिया ३७९।२

दुदिस्टिल ९२।४

दुन्दु २६२।६

दुव (दो) ३००।७; **दुवउ** ९८।६; २३५।१; ३१४।२; ३९८।१, २

दुवारी ३४३।४; ३७१।२

दुसर (दूसरा) ८५।१; **दुसरहि** १२४।१; **दुसरै** ३५६।३; **दूसर** ६०।४; ८३।७; ३८०।१; ३८७।६; ३९८।७; **दूसरि** ८३।४; १३७।७

दुहुँ १३४।४; १७८।२; २३७।३; २४३।२; २४४।७; २९२।६; ३२७।४; ३६८।२; ३८१।२; ३९८।६; ४०१।७; ४०५।३; ४१५।३; ४२६।५; **दुहूँ** ९२।१ १०५।६; १८१।१; २३७।२; २९६।७

दुहेला ३५८।४

दुहौं १०।५; ६२।२; ३८९।४; ४०७।५

दुसारी ३७९।१

दू ३८०।२

दूतचार ३७९।६

दूनों १५५।१; २४४।५; ४२६।६

दूबर ३६२।४

दूभर ३२२।१, ३; ३३६।१

दूरि १९१।५; ३९४।५

देइ (दे) २९।१; २६२।३; २६६।२; ३२२।४; ३९५।६; ४०३।२; **देइह** १७९।४; **देई** १७३।२; २२५।४; २३८।३; ३४०।४; ३४५।१; ३५१।२; ३५८।२; ३५९।१; ३८२।२

देउ (देव) २९३।५

देउ (दो) २४७।४

देउँ (दूँ) ११।४; ८६।७; १६७।६; १७२।१; १८५।२; २२२।२; २२८।७; २६८।२; २९४।३; ३४६।६; ३५३।७; ३८१।१, ३; **देऊँ** १६१।१
देउता ४०९।२
देउर २११।७
देखँउ १२७।२; १८९।२; २०९।६; ३४८।४; **देखत** १८७।२; १९१।४; ३८७।५; ३९३।३; **देखतेउ** ४०६।५; **देखसि** ४१।१; ४९।५; १४१।२; १७९।६; ३८८।७; **देखहिं** २६।१; ३७६।२; **देखहु** २२४।२; २२७।१; २५०।२; २६४।३; ३५१।४; ३५३।१; ४०८।५; **देखाइ** १९३।२; **देखाई** १६९।३; **देखावइ** १२०।१; **देखावा** ३४०।१; **देखि** १८०।४; २३०।२; ३८८।५; ४०५।२; **देखिसि** ८१।३; ८३।२; ११६।५; १२२।४; १२७।१; १७१।२, ६; १८८।६; १९१।६; २०९।३; **देखिह** २०३।६; **देखिहु** २४१।२; ३६७।४; **देखु** ३४८।१; ३५४।७; **देखेउ** ३७०।५; ४०६।२; ४११।४; **देखेंउँ** ९।६; २२३।५; ३६९।६; **देखेहु** ११७।३; **देखैं** ३५१।३, ४; ३६२।२, ३; ३६४।५; ३६८।२, ७; ३७५।६; ३९७।५; **देखों** ३५१।५; **देखौं** ३५१।६; ३५२।७
देत ३४५।२; ४०७।१; **देतसि** १३६।१; १७४।२; २३९।३; **देतेसि** १५८।७
देन्हि २५६।२
देव १६५।७; १७२।४; **देवा** १००।५;
देवतहिं ४०९।३
देवस १९।२; २०।२, ३; ४७।३; १३०।६; १७०।४; १८५।१; २००।४; २३३।२; ३१०।३; ३५०।१; ३५३।४; ३६१।६; ३६८।१; ३८९।५, ७; **देवसो** ३७१।१
देवाई २५७।४
देवों ३८४।५
देह (दे) २०२।३; **देहि** ४०३।३; **देही** १६३।२; २५०।४; **देहु** १५।७; १८२।५; १८५।४; १८६।१; २४७।५; २७७।५, ६; २७९।२; ३४८।७; ३७३।६; ४१०।४; **देहू** १६३।१; २२५।३; २२९।१; ३४२।५; ३६६।५; **देहों** ३७१।६
देहा (शरीर) ४४।४
देस १७१।१; **देसी** २५३।१
दै २८२।३; ३३४।२; ३७४।३; ३७७।७
दोइ (दो) ९६।२; १८९।६; १९८।१; २०३।२; २०४।६; ३४९।६; ३५६।२; ३७९।२; ३८४।५, ६; ३८५।६; ३९८।१; **दोउ** ९५।७; २०३।४; २९७।६; ३५९।४; ३७५।५; ४०४।१, ६; ४०५।५, ६; ४०९।४
दोख २५२।६; ४०८।१; **दोखँ** १०१।१; २३०।४; **दोखन** १६६।७; **दोखा** २७।१; **दोखू** २६८।२; ३८९।४
दोमन ३५८।६; ३६९।४, ५
दोसू ४०७।४
दोह २६७।७
दोहा १३।३
दौ ३५३।१
दौं ३०८।१; ३०९।६; ३११।५; ३३२।१
दौर ४२१।७; **दौरि** ८५।२; १७१।७; ३०२।२; **दौराए** ११६।६

ध

धत्थ ४१७।६
धन (धन्य) **धन-धन** ३७५।७; **धनि** १७।१; २०७।७; ३७६।५
धनि (स्त्री) ६५।७; ३०६।१; ३४०।७; **धनिह** ३७७।४
धनुक ५६।१
धमार २०।२; ४५।७; **धमारि** ३८५।७; **धमारी** ८१।१
धनबारी २३३।३
धर (धड़) ९८।७; १६०।७; **धरि** २७०।७
धर (रख) ६२।२; **धरसि** २३।६; ३५।६; २८९।३; **धरहिं** ४८।५; १८९।५; **धरही** १४२।४; **धरहु** १७।७; **धराउ** ११३।७; **धरि** ८०।६; १९३।२; २७३।६; २७९।४; ३३०।७; ४१४।३; **धरी** ८६।१; ३७०।५; **धरेउ** ६२।१; **धरैं** २८९।२
धरई (पकड़ता है) ४१२।२; **धरहिं** २७९।५; **धरा** ४२४।२; **धराई** ३६४।५; **धरिके** १२३।७; **धरै** २२।१; १८४।७; १८६।३, ४;

१९३।३; **धरों** २१।७; २०९।५; **धरौं** २२।२, ३

धरब ६१।५

धरम ९२।४

धरहर २४३।१

धस ४००।६; **धसि** २७७।६; **धसायेउँ** २३६।३

धाइ (दाई, सेविका) ४१।२, ३; ५१।४; ५२।१; ५९।५; ६६।७, ७९।१; १३७।६; १९६।२; ३९७।७; **धाइँहि** १९।१, २; ८८।५; ९७।६; ९९।२; ३६१।४; **धाई** ६१।३; ६३।४; ६४।७; ६६।१; ८२।२; ८५।४; ८६।६; १९४।१; ३६१।३; **धाहि** १०४।६

धाइ (दौड़कर) ४९।६; ५५।४; ८३।१ ११७।१ १४०।१; २१४।७; २१६।५; २३३।५; ३४९।६; ३७३।३; ४२२।२; **धाय** २२५।६

धाइ (दौड़ी) ८२।१; १९२।१; २०४।५; २७७।७; २८३।१; ३९७।२; ४०३।६ ४२७।१; **धायउँ** (दौड़ा) ८५।२; १३७।३; **धायेउँ** ७७।६; **धायों** २३७।६; **धाये** (दौड़े) १५२।२; ३४४।१; ३९३।७

धापैं १८१।४

धार ३१४।४

धारी (धारण किया) ३७९।१; **धारउँ** ३९०।३; **धारेउ** १९६।४; **धारहु** २३३।६

धावइ १२१।४; १२५।२; **धावउ** १३४।२; **धावत** २०४।६; ४२२।५; **धावहु** १९४।२; **धावा** १४५।१; १८३।१; २०५।१; ३७१।४; ४२०।१; ४२३।३

धावन ३२।४; ३४४।१

धिय ३२०।१; ३९१।१, २; ३९२।२; ३९५।२; **धिया** १३०।५

धुकचुकी ८१।६

धुधुआई ३२८।२

धुन ७०।५

धूर ५।७; **धूरि** १०।२; ४०२।७

धोवइ २९०।५; **धोवहु** २८२।४

धौराहर ३७६।२

न

नखत १७।५; ४६।४; ८०।७; १३३।३

ननद ३९८।३; ३९९।१; ४०५।७; ४०७।२, ३

नरिन्द १४।२; ४३।३

नरमैं ७४।४

नव ३६६।४

नसाउ १४२।७

नहाइ २६१।३; **नहावहिं** २३१।५

नहिं ४०१।७; ४११।४

नाँ २३१।७; ३९३।४; ४१८।७

नाइ (नहीं) ३५८।७

नाइँ ३६७।४

नाउ (नाव) ३२६।६; ३३४।२

नाउ (नाम) १७।६; १८।३; **नाउँ** ६।३; ९।१, २; १५।५; १७८।७; १८१।४; १८४।१; १९६।५; २०६।२; २०८।७; २११।२; २२२।७; २२८।६; २३८।७; २३९।१; २४१।३; २५०।४; २९१।६; ३२०।४; **नाऊँ** ६।५; २०।१; १०१।५; १२७।५; १३६।४; २०८।४; २४८।२; ३१९।४; ३२०।१, ६; ३३८।४; ३४१।१; ३४५।४, ५; ३५६।३, ३९९।२; ४००।३; ४०१।५; ४११।१; **नाँव** १३०।५; १७२।५; २५१।७; २७५।१; ३४५।४; ३४६।१

नाउनिंह ४२९।२

नाँगहि १६।२

नाँधि २११।४; २१५।३; २३७।४

नाचइ २५६।३; **नाचहिं** २५६।३; **नाँचू** ४००।२

नाँथसि १४५।२; **नाँथि** १२८।१

नायक ३१९।४; ३२०।३; ३३५।१; ३३७।१ ३४२।६; ३४३।१, २; ३४४।१; ३४९।५; ३६२।५

नारा ३४०।४

नारि ४००।५

नावा १६८।५; ४३०।६

नास २२५।७; २२६।१; ३५०।७

नाँह २४३।७; ३०७।२; ३१६।४; ३८८।६; **नाहाँ** ९१।५; ३०६।१; ३०७।३; ३१५।२;

३२६।५; ३२८।४; ३३१।५; ३३२।५; ३३३।५; ३८०।२; **नाँहाँ** २६४।२

नाँहि ८२।६; २००।१; २००।३; ३६४।३, ७; ३६५।२; ३८४।६; **नाहीं** ३०।५; १७०।३; २२५।७

नाहुत ३५।३; २८३।७; ३३२।७; **नाहुँत** २०६।७; २९४।२; **नाँहुत** २८५।४; २९५।७

निकंटक ४१७।३

निकरहि ३८२।७; **निकरि** १८४।७; ३१०।४; ३६६।३; **निकराई** ३१५।६; ३३६।२

निकस ३१।५; १४३।३; **निकसत** ८७।६ **निकसा** २३।५; ८२।१; **निकसि** २४।५; १७६।२; १८५।६; १८६।३; २४०।४; २४२।५; २६८।३; २७६।४; ४२२।५; **निकसी** ८७।८; **निकसेउ** १४४।७; २४४।७; **निकसेउँ** २३८।४; **निकसै** १७०।७; १८६।२; ३१६।१; ३२३।४; **निकासहि** ३८५।६; **निखसा** ४२९।६

निकुण्ड ३१६।७

निगलों १८३।७

निघटहि १८०।५; **निघटे** १२३।६

निचिंत १२१।६

निछावर ३७५।७; **निछावरि** ९५।४; ३९८।३;

नित १२१।७

निंदरा ३६८।२

निदानाँ २८९।१

निपारों ३८६।५

निभरम १७३।१

निभायहि ३७९।५

निमग्ग ३२५।६

निमये २८३।६

निमिख ८।५,७; ८०।५; १२७।२; १३९।५; २१९।३; ३०५।२; ३२६।३; ३३८।२

नियर (निकट) २२।२,३; २८।४; ७०।४; १२०।२; १२६।१; १३६।६; १८७।२; १८८।३; २२२।३; ३५४।५; ३७७।४; ३९७।१

नियराई ९६।४; २०९।५; **नियराना** ३९५।५; ३७५।२; **नियराने** ३९४।३; **नियरानेउ** ३९३।१; **नियरावा** ४२३।३

निरख ३१६।१; ३४५।३; **निरखसि** २१।२; **निरखि** ३८८।७; **निरखैं** ३३५।७

निरजल ७८।५; **निरजला** ७९।२; ८०।२

निरजासी ३२४।५

निरत ५४।७; ३०२।७; **निरति** ३०२।३

निरभौ १३१।४

निरमया ५९।१

निरमर १४।४; ३०३।३; ३१९।२; **निरमरे** ८।२

निरवाही ४३१।४

निराता २९९।४

निरास २२५।३; **निरासा** १६।३; **निरासी** ६८।७; ४२८।५

निस्चल ४।७

निस्तारा २७०।१, ३; **निस्तारी** २६६।२

निसान ३५७।३; **निसाना** ३९६।३

निसिकै १८८।७

निसियरपति ३२८।७

निसिरह १०५।५

निहचो १५८।५; १८५।७; २२२।१; ३८०।१

निहसत ६३।२, ६७।५, ६

निहारत ३४।६; ३१७।२; **निहारा** २४९।२; **निहारि** २३।७; ३८८।७; **निहारी** ३१८।१; **निहारै** ३०५।३; ३११।५

निहोरा १४८।३

नीक ८३।३; ११८।२; १५८।१; २३८।४; २५७।१; २७२।५; २७३।५; ३०६।६; ३४५।३; ४०३।४; **नीकै** ३८०।३

नीसरा १६९।४

नेउर २१।४; २९।५

नेउता १५२।१

नेग ३९५।७

नेगिंह ३२०।४; ३५५।५; ४३०।५; **नेगिन्ह** ३७।३, ७; ९०।४; **नेगी** ९०।३; ३४७।२; ३६०।४, ७; ४३०।१

नेत ३५६।७; ३७६।१

नेभ १९६।७; ३२६।६

नेरा ५।२; **नेरी** २४१।४; **नेरू** १२।५

नेह २९।१; ४९।५; ३३४।७; **नेहाँ** १७७।५; ३०७।६

नै २३०।२; ४२८।७

नैनहि ३४७।३
नैनूँ ७२।१
नौ ८।४
नौसता ३०४।७

प

पइठ २३।७; ३१।५; **पइठा** १७३।२; १८३।५; १८५।३
पइहौं ३६।३; १८५।४; ४०८।२
पउतेउ १८६।४
पकरावा ३९७।१
पखरोटा ३०६।४
पखाउजि ३५०।३
पखारहिं २४५।२; **पखारी** ३८८।२
पंखि १६४।५; ३८४।२; **पंखिम** ३०९।४, ६
पगु २६२।४
पँचकल्यान ९३।५
पंचबान ५६।२; ३१४।६
पँच-पँच २०५।७
पंचमबैनी ३८७।४
पचि २९७।४
पछताउ २७७।५; ३४८।५; ४२१।५
पछयें २२।६
पछार १०३।१; **पछारा** २७९।४; ४१८।२; **पछाड़ा** २३७।३
पछिउँ ७२।१; १२१।४
पटकसि १८०।२; **पटकों** २७०।७
पटोर ३५६।७; ३७६।१
पठयहि ३९४।४; **पठये** ३८।१; २४६।३; ३४५।६; ३४६।२, ६; ३६५।७; ३९३।१, २; **पठयो** ३१९।३; **पठवउँ** १२४।७; २९३।६; **पठाई** १९६।३; ३७८।३; **पठायउ** २९०।१; **पठावइ** ३११।२; **पठावा** ३४६।१; ३४९।१; ३८९।५; **पठैं** ३९०।२
पड़ ६१।३
पँडितहिं १८।५; १९।३
पण्डुर ३२६।४; ३५४।६
पण्डो १७७।१
पढ़ावइ १९।५
पतरा १७।६
पतरी ३४४।४
पतार ५७।७; ३२८।४ ४२४।७
पतिपारहु ८९।१; **पतिपारी** २२९।७; **पतिपारौ** १३१।७
पतियाइ १४८।७; **पतियाही** १५५।३
पतिंह ३५३।२
पतुरिंह २५७।७
पतोहु ९५।४
पथरिया ३६५।४; **पथेरिया** ३९।३
पदुमनि ५२।४
पन्थिह ३३४।७; **पन्थिहि** ३६२।७
पपिहा ३७०।३; **पपीहैं** ३६८।५
पबारी २८५।५; २८६।३
पयान २००।२; ३५३।५; **पयाना** १९१।२; ३३७।१; ३४८।७; ३६५।५; **पयानाँ** ३६१।७; ३७५।२
पयोहर ५२।७; ७०।१; ३०२।५; ३०४।६
परई ४१२।२
परकार ८८।३
परखहिं २३१।६; **परखेउ** १३८।५
परगट ५०।३
परगसा ४६।४; १४६।१; **परगासा** २२४।१
परगाही १३३।५
परजरै ४३।५
परत २७३।२; ४२०।१
परदेसहिं ३३३।३
परन ५४।७
परब ७८।६
परबत ११७।५; १२२।७
परबल ३९८।५
परभातहिं ८७।७
परमेसा १।३
परलो २८०।२
परवान ४२७।६; **परवानउँ** ३५।४; **परवानहु** ३६०।२; **परवानाँ** ३७।५; **परवानों** ४०९।३
परस २६।६; **परसहिं** ११।७; ४२०।६; **परसु** ४२३।६; **परसेउ** १३७।४; १९४।७; ४३२।२; **परसेंउ** २२४।५; **परसों** ३७३।१
परसन २५७।२; ४०८।४
परसाद ११६।२

परहत्यै ३३६।४
परहिं ३५९।५; **परहु** २१७।७; ३८१।२; ४०३।२; **परहुँ** १९९।५
परा २२।६; ४५।६; ५०।१; १२६।५; १४३।६; १६६।२; १८४।२; २१७।१; २८१।२; ३६७।१; ३७४।२; ४२२।५; ४२७।३
पराइ (भाग) ४१०।६; **पराई** २२।३; १२६।४; १८७।२; १९१।४; २८२।५; ३१०।३; ३२४।७; ३६४।३
परान (प्राण) ४।६; ३६।७; ४४।६; ५०।१; २६३।४; २८३।७; २८४।१; २९५।७; ४२७।७; ४२९।७
परान (भागे) ४३।५; ३०८।२; **परानाँ** १९१।२; ३०८।४; ३३६।३; ३८४।७
परावा ४२५।४
परि (पड़) १७९।५; १८०।६; २४०।१
परिगह ३५७।५; ३७५।१; ३९४।५,६
परिचै १११।५
परिछि ३४७।७
परिताऊँ १४८।१
परिवारी ३९८।२
परिह ३४८।२
परिहरन्हि ५०।३; **परिहरै** २२६।७
परी १७०।५; १७६।५; २६९।१; ३३४।२; ३४०।६; ३५४।१; ३८६।३; ३९३।६; ४०५।१; ४२२।१
परीती २२७।१
परे ३२९।७; ३६३।५; ३६६।६; ४११।३;६; **परेउ** ५५।४; १३२।७; १८४।३; १८८।५; १९२।७; २१६।४; २३६।४,६; २४०।४; २७५।५; २७६।४; २७७।१; ३००।२; ३५७।३; ३६६।१; ३८५।१; ३९७।२; ४२६।५; **परेउँ** ५५।५; ८४।४; १३७।६; १६७।५; १७६।२; २३८।५; २८८।१; ३०२।५; **परैं** १०।२; २६।३; ७७।६; २३७।४; ३२७।२; ३८३।३
परेत ११७।६
परेवा ३०८।४
परोसि २३१।१
परौं ४९।६
पल्लवँ ३८१।७
पलकिंह ३९७।७
पलटि १४१।७; १४२।२
पलटेउ २९८।६
पलान ३५३।७; ३६१।१; **पलानी** ९०।५; ३५७।१; **पलाने** ९३।४
पलुह ३७०।३; **पलुहे** ३६९।३; **पलुहै** २६९।७
पलेटै २७९।३; २८७।३
पँवर ७।५; **पँवरि** ३९।२; १२८।१; ३५७।२; ३७१।२; ४२७।१; **पँवरहि** ३७६।१
पँवरिये ३७१।४; ३७३।३
पँवार ६३।४
पसरन्त १२०।७; **पसरा** १५२।१; **पसरीं** २९६।७; ३१२।३
पसवहु २३४।७
पसारि ३७९।३; **पसारी** ३७५।४; **पसारिसि** ३६२।७
पसीजा २८८।३
पँह २६।२; २१८।४; २३३।५; २४१।३; २६२।१; २६३।१; २९८।५; ३३१।३;३४१।६; ३४३।४; ३९९।१; ४२५।२; ४२६।१
पहिचानेउ २२३।५; **पहिचाँनी** ४०४।५
पहिर १९६।४; **पहिरसि** ७६।२; **पहिराइँह** १५७।२; **पहिराउ** २६१।२; **पहिरायहि** १४४।६; **पहिरावहु** २३१।४; **पहिरावा** २६१।३; ३९८।४; **पहिरि** ४९।१; १८५।६; २६१।४; ३४४।४; **पहिरिहहु** ३७०।४; **पहिरिसि** २३२।२; **पहिरे** २५७।६
पहिलेहि ४०७।३; **पहिलैं** ४३१।१
पहुँचइ २३१।१; **पहुँचसि** ४०३।७; **पहुँचाओं** २२६।२; **पहुँचावइ** ३५९।४; **पहुँचै** १९७।४
पहुनाई १७४।२; २०७।५; ३३९।२ **पहुँनाई** ३९२।१
प्रभुता ९०।३,४
पा (पाँव) ८।२; ५२।७; **पाँ** १७२।१; **पाइ** ३५।७; ४९।६; ९४।३; ३८८।२; **पाउ** ८५।२; २६८।४; ३४९।६; ३७३।२; ३९९।६; ४०३।२; ४१२।२; **पाउँ** २९।५; २७४।६; ४०२।६

पाइसि २४।६; १८३।२; ३३९।५; **पाई** ४००।६; ४०३।४; **पाउ** ७८।७; १५७।७; १६५।४; १८४।७; २२९।४,५; ३१४।४; ३४१।५; ३००।१,६; **पाऊँ** २०७।२

पाइक ९३।२

पाकै २००।५

पंखि १८९।१

पाख ४३१।४

पाँख २७९।१; ३९४।१

पाखर २०।४; ९४।७; ३५७।१; ४२२।३

पाग ३७१।६

पागेउ ३१५।३

पाछ २९३।३; **पाछहिं** १८७।३; **पाछु** ३०।३; ८५।४; १६३।६; २०४।५,६; ३२५।४; ४१८।४; **पाछे** २६।३; **पाछेउँ** २८७।१; **पाछैं** १०।२; ८४।३; ८८।१; १७१।५; १८३।१; ३३७।५; ४१२।२; **पाछों** ११०।५; १८८।१

पाट ७२।१

पात (पत्ता) २८।२; ३२९।७; **पाती** ९५।१

पाँत (पंक्ति) ३९।७; ३७०।२; **पातहिं** ३९।७; ७७।५; **पाँति** ५३।२; **पतिंह** १५२।४ **पाँती** ७७।५; ३६८।४

पातर ६१।१; ६६।३; ७२।३; ७५।१

पाती (पत्र) ३७।५; ३८।१; ९२।१,३; ९३।१

पाथर २४।४; २८८।३

पाना ३१२।३; **पानाँ** १४९।२

पानि ३४८।४

पाय (पैर) ४२५।२; **पायन** ३९७।३; **पाँयहि** ११९।५; २४९।५; ३७५।४; ३९७।२;

पायउ १२६।६; १७२।२; २५७।७; २७१।७ ३४१।३; **पायउँ** ९२।६; १३७।३; १५६।३; १६४।२; १७५।४; ३२४।२; **पायेंउ** १४९।७; २०९।४; **पायसि** १६।५; **पायिसि** ३९४।६; **पायसु** २४।१; १३३।६; १३९।६; २२२।७ **पायँहि**१८।६; **पायहु** १८६।७

पाँयक ४२३।१; ४२४।३

पाँयड़ ९३।३; २५७।३

पारइँ १५।४; **पारउँ** ३९०।३; **पारहु** २००।२; **पारा** ९०।४; ३६५।२; ४०२।१; **पारेउँ** ४३१।७; **पारै** ३२९।३; **पारों** २१८।१; **पारौं** ५७।२,३; ८६।६; २८६।२

पारसी ५०।४

पारुधि ५०।७; ५६।५,६; ४१०।३; ४१३।४; ४१४।२; ४२३।२; **पारुधी** ४१०।६; ४१३।४; ४१४।१; ४२०।१

पालहु १९।१

पालो ६७।१; ७३।३

पावइ ९०।७; १२५।२; १९८।३; २२०।५; **पावउँ** २४।२; ३६७।६; **पावसि** ६१।२; २७१।१; ३६३।१; **पावसु** १७९।६; **पावहिं** १८५।२; २१३।२; ३३४।५; **पावहु** १९४।२; १९५।५; **पावा** १९४।४; २८१।५; ३५४।४; ३९१।३; ३९२।३; ४०१।१; ४०५।३

पावा (पैर) ३७३।१

पासहिं २९९।६; **पासा** ५१।४; ३१६।१; ३२९।१

पाहन ६१।३

पाहुन ३६३।६; **पाहुना** ३८७।४

पिउ ३२५।४,६; ३२९।५; ३३५।३; ३५१।७; ३७१।१; ३८४।७; **पिय** ३२७।१; ३५१।५; ३५२।२,३; ३६७।५,६; ३७०।७; ३७९।३; ४०८।५; **पियै** ३३०।५; **पीउ** २४५।७; ३२३।३; ३३५।४; ३६८।५; ३८३।१; **पीऊ** ३११।४; ३१४।४

पिंजर ३१५।१,२; ३५०।७

पितहिं ३५५।५; ३७३।६; **पितैं** ८४।६; १६७।४; ३४६।१; ३५४।५; ३५५।१; ३९०।२,४; ४०१।२

पियत २७।१,२; **पियहिं** २६१।७; ३४७।३; **पियावत** ३६१।४; ४२९।३; **पियावहु** १५७।५; **पियावा** १९।२

पियर ६३।६

पियारी २६३।४; ४०७।१; **पियारी** ४०६।७;

पियास २०४।२; **पियासहि** १६।२

पिरम २४।३; १३८।४; ३७०।५; ३८१।५

पिरत (प्रीति) ८९।४; **पिरित** २२६।४; ३७९।३; **पिरिति** १९९।१; ३२५।५; **पिरीति** २२६।२; ३२५।६; **पिरीती** ९४।३;

पिरवा १३।७
पिरिथ ११।४; **पिरथीं** १३२।७; **पिरथमीं** ४२०।४; **प्रिथमी** ५७।६; ४१५।६
पिहान १७३।२
पीका ७७।३
पीठ ३७७।७; **पीठि** ३८७।१; **पीठी** ३८७।५
पीयइ १८७।३; **पीयै** २२०।४
पीरी ३३०।७
पुकारति २७७।७
पुछारि ३०८।३
पुजै २३१।२
पुन ९२।७; **पुन्न** ११।५; १५८।२
पुनवन्त २६६।२
पुनि ३९२।२
पुर ३८६।४
पुरँगन ३९७।५
पुरबकम ३८२।७
पुरि २०१।१
पुरइन २७।४; ३१६।४,७
पुरवइ १६।३; १५४।४; **पुरवहिं** २९।२; **पुरवहु** १४४।३
पुरुख १।३; ९१।३; २३४।७; २६४।१; ३८३।३; ४२५।१
पुरुखहँ १४।७; ४१४।५
पुरुखारथ ४१४।५
पुरुब १२१।४; ३८२।४
पुरुबलिखा ४२०।२
पुसैं १७०।७
पुहुमि ७।५; १०।४; ४३।५; २७०।७; ३००।७; ३२२।१; ४१५।४; ४२३।४; ४२८।३; **पुहुमी** १८०।२; २७३।७
पूछइ २६।२; १३६।२; १४१।३; २०२।७; २६७।१; ३११।२; ३७३।३; **पूछउ** ३४६।३;४ **पूछउँ** २०९।५; २६२।७; **पूछसि** १२२।५; १५०।१; १६१।६; १७३।४; २१०।५; २२८।६; ३१९।३,४; ३४०।६; ३४५।४; ३४९।५; ३९९।३; ४०३।५; **पूछिसि** २२२।३; **पूछहु** १३६।६; १५१।३; २०२।५; २१७।६; २२१।४; ३३८।५; ३६९।५; ३७५।५; **पूछि** १४०।६; २०९।६; ३५७।६; ३९४।६ **पूछे** १७०।१; १९२।२; २८४।५; ४२७।१; **पूछों** ३३८।७; **पूछौं** २१४।४
पूजइ ३८३।५; **पूजहिं** ३९१।५; **पूजी** २६०।६; ३८३।४; **पूजै** १११।७; ३९९।४
पूत १५।५,७; १९।५,७; १७।१,३; ८९।२; ९२।६; **पूतहिं** ३५७।३
पूनिउँ १७।२; **पूनेउ** ३२५।५,७; ३९५।६
पूर ४२।१; **पूरि** २८०।१
पूरी ७२।३
पूस ३२७।१
पेखना ४०।५
पेखा ८८।२; १८८।१; **पेखी** २१।३; ५९।७: **पेखैं** २३४।५; २३६।७
पेग १७०।२; २३४।२; ४२२।५
पेम २३।२; २४।५; २५।१; २७।४; २९।१; ३१।३; ६५।३; ८४।३; ८८।५; १०४।३; ११४।३; ११५।१; ११९।४; १६९।४,५,७; १९६।६; १९७।४, ५, ७; १९८।१, २, ३, ४, ६; १९९।१, ३, ४, ७; २००।१; २०३।३; २०४।२; २२०।१, ४, ७; २२६।२, ४, ५; २२८।२; २४२।४, ७; २६३।४, ७; ३८३।१; ३८९।३; **पेमहिं** ३३४।६
पै (पर) ७९।५; ९१।४; १६५।३; १६८।२; १६९।५; १७८।४; १८२।६; २१२।५; २२६।१; २२९।५; ३२६।१; ३४२।७; ३६०।५; ३८३।३; ४२४।५
पैठहु ३१।४; **पैठा** ८८।४; २३९।४; **पैठि** २०५।४; **पैठी** ८०।६; २६५।१; **पैठे** २९८।२; ३७५।६; ३९७।४; **पैठेउ** ३५०।३; ३७६।६; ४०५।४; ४०७।६; **पैठेंउ** १३७।३;
पैहसि १९२।६
पौ ३४४।४
पोखर ३४०।४
पोछेहि ४०६।३
पोथा ९।२; १९।५
पौन ४१।४; ७७।१; ९४।३; २९५।१; ३८७।४; ४१९।७

फ

फकावा १०।२

फँदाई ३६१।२

फर १२७।३; २२१।६, ७; ३१०।४,५; ३३१।१, ४; ४०३।३; **फरा** ३१०।२

फाग ३२९।१,६

फाटि ४०८।२; **फाटी** ३६।३; **फाटेउ** १३२।७; **फाटै** १५९।७

फाँद ८४।३; १९९।२; ३६१।३; ३६३।५; ३९६।१

फारा १०३।२; **फारि** १२३।५; **फारी** २४४।४

फाँस ६६।६

फिरउँ २०९।५; **फिरत** ४२६।७; **फिराइसि** २७४।६; **फिरावा** १८९।५; **फिरि** १६७।२, १७१।६; **फिरिकै** ३३०।३; ४१३।६; **फिरी** ३१४।३; **फिरेउ** ३८७।४; **फिरै** १४०।५

फुन १६७।७; १८९।३; २३६।४; २६२।७; २६६।७; ३४५।१; ३९५।५; **फुनि** २१२।१; ७८।६; १६८।५; १७५।४; १८०।६; १८८।५; १८९।६; १९१।३, ७; १९५।१; २०४।४; २०६।३; २११।५; २१२।१; २२१।२; २२२।३; २२३।१; २२५।३; २३५।१; २३६।५; २३७।१; २४०।३; २४६।७; २५४।३; २५६।३; २६०।२; २६१।३, ४; २७९।७; २९९।७; ३२६।३; ३३३।३; ३३८।३; ३४०।१; ३४२।४; ३४५।४; ३६५।५; ३६९।१; ३७१।४, ७; ३७३।४; ३९५।१; ३९७।२; ४०९।६

फुर १९२।४; २५९।२, ४; २६७।२; २८७।७; ३४६।१; ३७१।१; **फुरहिं** २३०।७; २७३।५; ३६४।२; **फुरै** ३२३।३

फुलेल २३२।६

फुसलावइ १५९।२; २८७।६; **फुसलावहि** २८८।३; **फुसलावा** १४३।१

फूटहि ३५१।६; **फूटि** २४४।३

फूलसि २१५।५

फेकरत ४०३।७; ४२६।३; **फेकरि** ११०।६; **फेकरे** ४२५।२; **फेकारि** ४२३।४

फेरि ३२८।५; ३३९।५; ३७०।७

फोंक २११।१; ४१४।३; ४१५।१

फोरियहि ४०२।४; **फोरेउँ** २४०।४

ब

बइठ ३१।५; ७०।२; १४०।२; १५७।३; १६४।५; **बइठा** १८३।५; १८५।३; २३०।३; **बइठि** २३४।३; **बइठे** १५५।१; २३५।१; **बइठै** १४२।५; १८५।१; **बइठौं** १७२।२; १८९।२; **बईठ** २४२।६

बउराई ८३।५; १२१।३; १६९।१; २८५।३; **बउरावा** १०८।४; १४३।१; २३५।३

बकत ६३।५; २२१।४; २८५।२, ३, ४; २७२।१; **बकतहिं** २०३।४; २९७।१; **बकता** १३।७; **बकति** ६।४; १२।२; ६१।३; १६६।२; **बकतां** ७९।५; ११५।२; **बकतेउ** ६९।७; **बकतै** ९९।७; २८५।१; **बकतौं** ३८७।३; **बगतौं** ३१४।५

बंका ४१४।४; **बंके** ३८४।४

बखानी ३५०।३; ३५३।२; २६५।३; **बखानै** २६०।३; **बखानौं** ९।७

बग ५३।३

बचा १३१।७; ४२८।४

बजाइ ३९२।३; **बजावहि** २५०।५; **बजावहु** ३९६।२

बटोरि १५९।४

बड़ १४।४; १८।२; ७४।५; १७६।३; १८७।५; २७०।२; ३३४।७; ४०९।३; **बड़ेउ** ३६५।१

बडवारू १३६।३; ३६०।५

बड़वानी २८०।३

बढ़ावा १९६।१

बढ़ेउ २९८।७

बतैं १९६।१

बदन ३३।४; ४९।३; ५५।३; ३८७।४; ३८८।३, ६

बँधाइ ३५६।७; **बँधायेउ** २६७।६; **बँधावइ** २९२।३

बधाई ३९८।३

बन्धो २९९।२,७

बनखँड ३६९।३; ३७०।६

बनजारा ३१९।१; ३४३।३,५

वनस्पति ३३०।२
बनिज ३२०।६; ३३५।१; ३४२।२, ५, ७; ३४३।७; **बनिजों** ३४२।७
बनाहाँ २८३।३
बँभनहि ३९३।४
बयस ३३१।५
बयान ३९४।५
बर (वरदान) ४८।६
बर (बड़ा) ३८५।१
बर (समान) ३३६।२; ३५९।७; ३८९।७
बरक ३००।७; **बरके** ४२६।१
बरखा ३७०।६
बरछेना १६०।३; २२६।५
बरज २६९।२; **बरजत** ९०।६; **बरजन** २६९।१; **बरजा** १०६।१; २६४।१; २६५।५; २७५।७; २७७।४; २९४।३; **बरजाई** ३२५।२; **बरजि** २६४।५; ३९०।४ **बरजी**; ४०४।६; **बरजेउ** १०७।७; **बरजों** २६३।५; २६४।२; ३८८।६
बरद (बैल) ३३७।१; **बरदै** ३४०।२
बरन २१।३; २९।३; ४५।३; ४६।३; ५८।१; ७०।२; ७४।१, २, ५; ७५।२; ९३।७; २५४।६; ३७२।३
बरबस ४०१।२
बरसावइ ३२५।२; **बरसाई** ३२३।१; ४०६।४;
बरिस (वर्ष) ४७।३; ८३।४, ७; १३०।७; १५४।७; २७१।६; ३३६।३; ३५६।१; ३६४।२; **बरिसा** ३०५।२
बरिस (वर्षा) २७३।१; ३१६।४; **बरिसाई** ३६९।१; **बरिसै** २५।२
बरहिं ३३२।२
बरी (बड़ी) ३९९।७
बरीं (जली) ४२७।१
बरु ३५२।६
बरुनि ५७।१, ३, ५, ७; ३११।३
बरै २३२।५
बलाई २६९।१; ३६५।१
बलोल ८५।२
बवँडरा ५४।४
बसन्ता ४५।२
बससि २४०।७; **बसहिं** ३८५।४; ३८६।४; **बसायसि** ३१५।२; **बसेउ** २९८।७
बसीकरन ३००।४
बहई २५।३
बँहमन ३४५।१
बहलाइ ३७९।१
बहलिया ३१०.६
बहावइ ८८।२
बहिराइ २८७।७; ४२२।४; **बहिराई** १०७।५; १२६।४; २३७।४; २८१।१; **बहिरात** ३९५।७; **बहिरि** २४०।१, ४; ३८४।१; **बहिरेउ** ४०२।३; **बहीर** ३०९।६
बहु २०२।१; ३५६।६; ३६१।१; ३९२।१
बहुतँहि २२२।७; २२९।२; ३६१।२; **बहुतै** २३०।६; ३५८।२; ३६३।३; ३६६।३; ३९८।३; **बहूता** ७८।१
बहुमूली ३८५।६
बहुराई ४२७।४; **बहुरि** २३।५; ३१।३; ३७।७; ८३।१; १९१।४; २१३।३; २५१।३; २६१।६; २८६।५; २८९।५; २९७।७; ३०९।५; ३१०।१, ५; ३१८।२; ३२६।३; ३६५।३; ४०२।१; ४२५।४; **बहुरी** ३२८।५; **बहुरे** १८।६; २०३।७; ३४३।४; ३६१।१; ३८४।२
बहुल ४३१।४
बहुवहिं ४०३।७; ४०५।४
बहोरा १५३।२; ३६७।१; **बहोरी** २५०।१
बा ३३५।३
बाई २०९।१; ३४०।४
बाउ १२४।२
बाउर १६९।५; १९६।३; १९८।४; १९९।२, ३; २८५।३; ३४३।१, २; ४१९।६; **बाउरेउ** ३३६।६
बाँके ३१०।३
बाखर ४२२।३
बाँच (वचन) २०९।२; **बाचा** ९१।४; ९२।१; १३८।२; २२९।६; ४३१।३
बाँच (पढ़कर) ९।२; १९।५; ९२।३; १५४।३; **बाँचे** २६०।२; **बाचे** ९२।२
बाजन ३९६।३; **बाजा** ३९५।२; ४१२।४; **बाजै** ३७६।६; ३९६।३

बाजै (लड़े) ४००।५
बाट ८।५; १८४।६; ३३७।४, ६; ३३८।६; ३४०।२; ३५९।१; ३६२।७; ३६५।१
बाढ़ा १८५।५; २२६।४; **बाढ़ेउ** ३२६।२; **बाढ़ै** ३११।३
बातहिं १५५।५; १९६।२; **बाता** १९२।५; ३६९।५; **बाति** २६२।३; **बातिक** ८३।४; **बातिंह** १५५।३; **बातैं** २६२।४, ५; ३७५।६; **बातो** ३२।५
बाती (बत्ती) २३३।१; **बाँतीं** ५८।३
बादर ५३।३; ३६८।४
बाधँसि १६४।१; **बाँधाहु** ३८०।७; **बाँधा** ३८५।३; **बाँधि** २५५।२; २८५।२; **बाँधेउ** २९२।२
बान (बाण) १९।४; २१।१, ७; ४१।४; ५०।२, ४; ५६।१, ५; १०४।३
बानन्ह १८५।५
बानी ६२।१; ३७६।२
बाँभन १८।१; ३११।२; ३१९।७; ३२०।३; ३४५।६; ३५४।१; ३५७।६; ३७१।२; ३९३।६; ४२९।५
बायँ ३९६।७
बार (द्वार) ३४४।३; ३९५।२; ४२७।१; **बारा** २४५।१; ३५०।५; ३८६।३; **बारि** ३५७।२;
बार (बालक) ३७।६; ३८।२; ३५५।६; ४२२।२
बार (समय) २७२।१; ३२६।३; **बारा** २५२।३
बार (केश) ३८१।७; **बारा** १०७।१; ३८१।४
बारक ४००।३
बारहिं १२८।४
बारा (बाला) ४२५।५; **बारि** ३८८।४; ३९१।७; **बारी** १५३।६; ३०५।३; ३११।२; ३२१।४; ३४९।२; ३७१।२; ३७२।५; ३८९।१
बारि (पारी) ९।५; २०६।५
बारी (जाति विशेष) ४२९।२
बारे ३४१।२
बारौं ३०।६
बावन ३६०।४; **बाँवन** ३५९।२
बास २०७।७
बासर ४१।५; १७०।३; २३३।२; ३०५।२; ३११।१; ३५०।५; ३५२।१
बासुकि ६५।४
बाँह (हाथ) ३७२।१; ३७५।४; ३७८।१; ३८९।१
बाँह ४०९।४; **बाहाँ** २४४।३; ३३१।५; **बाँहि** ४२२।६; **बाही** २८७।१
बिऊग ३३५।२
बिकरार २०७।७; २१६।६; ३००।७; **बिकरारा** २८३।५; ३३२।२
बिकली २९३।३
बिख ३२५।२
बिखम ६८।५; २१८।२; ३८२।५
बिगनसि २१९।४
बिगराये ४२६।१
बिगस ८७।७; ३३०।३; **बिगसत** २८।६; **बिगसा** ८७।६; **बिगसाई** ८१।४; **बिगसाना** ८१।३; **बिगासा** २२४।१
बिगोतिह ३२९।५
बिच २६२।६
बिछराई ७२।३
बिछरेउ २७९।३; ३६७।४; **बिछुड़न** ३१२।६; **बिछुरीं** ३५८।४, ७
बिछाई १५२।४
बिछोवा २४०।२
बिछोह ८३।३; **बिछोही** २७६।६
बिडारी ४१५।१
बितारा १४५।३
बिदार ४११।५; **बिदारन** ४१७।७
बिदराई ४१७।७
बिध (ढंग) ८४।६; **बिधि** ३०१।२; ३४१।३; ३९५।१; ४०५।३; ४२४।५
बिध (ईश्वर) ५९।१; ७४।३; ७९।७; ३४१।४; ३६३।५
बिधाँसा १०५।५; **बिधाँसी** ३२४।५; **बिधासें** ३२४।६; **बिधाँसो** १३१।३
बिन ३५१।५; **बिनु** १९२।३; १९४।२; १९८।४; १९९।२; २०८।२; २१७।४; २१८।३; ३४६।२; ३४७।७; ३५१।७; ३७९।३
बिनति ३९०।१; **बिनाती** २६४।१; ३९१।२

बिनसाउ ४०९।५; बिनुसाव ३९९।७
बिनानी ३८।४; ९४।४, ५; ५०।४; ६२।१; ४२५।१
बिपिरित १२३।२
बिबि ११।७; ४१।६; १८७।६; २०३।७; ३०५।७; ३८०।७
बिमोहहिं ६९।४; बिमोहेउ २९८।५; ३५५।६;
बियापहि ५।६; बियापी २९४।६
बियाहि ३२१।४; बियाहिय २३८।३; बियाही ३९१।७; ३९९।५; बियाहू १५१।३
बियोग ३०९।२; ३२७।१; ४१६।६
बिरत २६३।७
बिरथ ३५।५; ३८३।५; बिरथहि ३३०।४
बिरध ३४७।५; ३५४।६
बिरलो ४२५।६
बिरसहिं ३०४।५; बिरसहु २४१।४; बिरसि ४२३।७; बिरसु ३२६।५; ३३१।१; बिरसेऊँ १९५।१; बिरसे २०७।७; २३२।७; ३६९।२; ३७३।४; बिरसौं ८९।५
बिरहा ३०९।२; ३२२।१; बिरहैं ३०८।१; ३२५।१; ३२६।४; ३३७।६
बिरहानल ३३।५
बिरिख २३।३; २६।५; १३४।४; २०३।१; ३०८।१, २
बिरित २३५।२
बिरिया ३०६।३; बिरियाँ ६७।२
बिलखै ४०१।७
बिलग १४।५
बिलँब ३३५।४; बिलबैं ३८२।७; बिलँबाउ २८४।१
बिलाइ २९।७; ४८।४; ४८।६; बिलाई ७१।५; ८४।४; ८५।३; १९३।४; ३४९।४
बिवान ४८।७
बिस्तरों ३०५।६
बिस्थाली ३४२।४
बिस १०३।६; १०४।३; १६९।४; ३४९।७; बिसा ६९।३; बिसार ५६।५; बिसारीं; ५०।२
बिसँभार ५२।६; बिसँभारा १३३।१; ३०२।४; बिसभारी ५१।५
बिसमौ ११९।४, ७
बिसरा २५।७; बिसरि २४।४; बिसरिगा ४०३।७; बिसरी २४।३; बिसरौ ३५।५; बिसारसि ३०७।४; बिसारा ३५०।५; ३८३।२; बिसारि ३९८।७; बिसारी ३२३।२; ३३०।५; बिसारे ४१।५; बिसारेउँ २३८।७; ३३१।७
बिसवास ३६३।४; बिसवासू १७५।५
बिसहँर १२३।६
बिसाउ १८।६
बिसाही ३४२।२
बिसेख २१२।२; बिसेखहिं २१०।४; बिसेखा ६८।४; ११३।४; बिसेखी ५८।३; ६९।४; ३४५।३; ४००।४
बिहंगम १।५
बिहयहु ३४९।२
बिहर ३०४।५; बिहरन्त ४२०।७; बिहरहि ३१८।२; बिहरान २८३।६; बिहरे ३१८।२; बिहरेउ २७८।६
बिहसति ३६९।४; बिहसन्त १२०।६; बिहँ-सहि ८१।२; बिहसा २११।२
बिहान ८०।२
बिहावँहि १९०।४; बिहावा २८१।३
बिहाहि (विवाही) ३७४।५
बिहून ३४७।६
बींछ २८३।३
बीजु ५२।६; ३२३।१; ३७०।७
बीरहिं ९५।१
बीरा ७७।२;
बीरी ७७।२; ३०६।४
बुझाइसि ४०७।६; बुझायसि ४०७।४;
बुझाई २२३।२; बुझानेउ २२३।५; बुझावहु १९।४
बुद्ध १७।७
बुधवन्त ९।२; ३६।६; ७८।३; बुधवन्ति ४०८।५
बुधारी ४३०।१
बुधि ८२।२; ८७।४; ३७८।४; ३९२।२; ४०८।५
बुयउ १८६।६
बुलाइ ३७३।१; बुलाइन्ह ३९०।४; बुलाई

३५५।५; ३६०।१; ३७३।३; ३९०।२; **बुलाउ** १७१।७; २३३।७; **बुलायउ** २३०।४; **बुलायहि** २१४।६; **बुलाये** ३४४।१; **बुलावइ** २०२।४; २१४।५; २६३।३; **बुलावहि** ३५१।४; **बुलावहु** २१४।४; २४६।३; २५८।२; ३७७।४; **बुलावा** ३४३।२;

बुलाह ९३।६

बुहारो ४२५।३

बूझ ३५३।१; **बूझइ** १४८।४; **बूझउ** १४८।७; ३८८।५; **बूझहि** ३१३।१; **बूझहिं** २५९।५; **बूझहु** ४७।६; ३३५।४; **बूझा** १९८।२; २७६।१; ३८०।१; ४०४।४; **बूझि** १५१।१; २००।५; २२०।१; २७४।१; २८९।३; २९६।६; ३७४।६; ३८४।३; ३८७।२; **बूझी** ४०४।२; ४४५।१; **बूझे** २५९।७; **बूझेउ** ३८०।२; **बूझेउँ** ४०६।६; **बूझौं** १६०।६

बूड़ ३३४।५; **बूड़इ** २९२।७; **बूड़े** १२३।१; **बूड़ेउ** ३३४।१

बूतैं ३३१।४

बेग २७४।२; ३४८।४; **बेगि** २३।७; ३८।१, २; ३९०।२; **बेगी** ९०।३; २६७।२

बेगर १९।७; २१।१, २; २२।७; ७३।६; ६९।२; १४९।२; १६३।४; ३५६।७; ३८९।४; ४१६।३; ४२९।२

बेगा ४२७।३

बेदन ३१५।३; ३३५।४, ५

बेदनों ३७९।५

बेधा ४१।५; ५७।१

बेना २७।२

बेनी ६८।५

बेरहन (?) २०।४

बेर (देर) ३७।४; ३८।५; ७०।४; ८६।३

बेर (बार) ३२२।४

बेरास २२१।७

बेल ९०।७

बैठउ १८०।२; **बैठउँ** १९१।६; **बैठहिं** ३५१।१; **बैठहु** २७८।१; ३३४।७; **बैठाइ** ३७८।६; **बैठार** ५१।५; **बैठारे** २०१।२; **बैठारेउ** २२५।१; **बैठावा** २०१।४; **बैठाँह** २४३।६; **बैठि** १६१।५; १८९।३; १९१।७; २११।५; २४२।३; ४०२।४; **बैठु** १३१।५; **बैठेउ** १८३।३; २४६।५; ३७४।१; **बैठों** २०३।५

बैद ५१।७; ९०।५, ६, ७

बैन ३६८।४

बैपारि २११।६; **बैपारिंह** ३४३।१; **बैपारा** ३४२।१,३; ३४३।४

बैरि ४०९।५

बैस ३१४।४ **बैसहु** १८६।६; **बैसारी** ३८९।५; **बैसारे** ३६६।४; **बैसावहिं** २८७।६; **बैसावा** ६१।१; **बैसि** २८२।४

बैसाखैं ३३१।१

बोराइ ३५१।१; **बोराई** १९६।३; २८८।२; ३५०।१; **बोरायसि** ९९।२; १५६।६; **बोरावहिं** ३५१।१; **बोरावों** १५५।६

बोरे ३३९।६

बोलइसि २१९।४; **बोलई** २०३।२; ३४३।५; **बोलउ** २७२।४; **बोलत** ३७७।५; **बोलब** ३६४।१; **बोलसि** २७२।१; २८७।७; ४०१।२; **बोलहिं** १४१।५; १५३।७; २१०।५; ३६६।६; ३६८।५; ३६९।२; ३७७।५; ४०१।५; **बोलहु** १३५।४; २४६।१; २७२।३; **बोलाई** ३९४।१; **बोलाये** १९०।१; **बोलावा** ३६८।५; **बोलि** ३६५।४; २९०।१; **बोलेउँ** ३४९।५

बोलाह ३५१।७

बोहित ३३४।५

बौराई ४७।५; २१७।१; २८४।१; २८८।४;

बौरी १८२।१

भ

भइ २०१।१; ३२३।६; ३६९।४; ८३।६; १४३।४; २००।३; २०१।६; २०२।२; २१४।६; २३३।५; २४७।४; २६३।१; ३५६।४; ३७२।५; ३७४।२; ३७७।३; ३८४।१; ३९८।३; ४०६।६; **भईं** ८०।३; **भयई** २३२।२; ३६८।१; **भयउ** ११।४; ८३।७; १३८।७; १६३।५; १६८।३; १७१।४; १८८।३; २१३।३; २४३।२,६; २४५।१; २४७।३; २६८।४; २६९।५; २७८।५; २७९।६,७; २८४।५, २९५।५; २९६।२, २९७।६; ३०८।१; ३२२।४; ३३७।१; ३४१।२; ३५७।१; ३५९।३; ३६२।१,

२; ३६७।१; ३६९।१; ३७२।३; ३७५।१,३, ३७७।१; ३८६।६; ३९५।५; ३९६।२,५; ४०२।५; **भयउँ** २८४।२; ३२७।४; ३४८।१; ३८०।४; **भयहुँ** ३५४।६; **भयसि** ११४।४; १९९।१; **भया** २१३।७; **भयी** ३०।३; **भये** ९५।३; १७०।४; १९०।२; ३५४।६; ३७५।५; ३८४।४; ४२९।६; **भयेउ** ३२४।५; ३८५।२; ३८६।७; **भयेउँ** ३४७।५

भकसी १४३।२

भखि १०३।६

भगान ३७२।३; **भँगानाँ** ३५७।२

भंजन ३७७।६

भटभेर २०।७

भँडार १५।६; १६।१; ३५९।२; **भँडारा** ३५।५

भनहि १५३।६; **भनैं** १६७।३

भयानेउ ४१२।१

भरक्कि ३७२।६

भरम ६।५; ३३।५; ६९।४; २१७।३; २७७।३; ३२३।२; ३२४।४; ४१२।२

भरमाँना २७७।६; **भरमानेउ** ११७।५; **भरमैं** ३६६।५

भराइ ४००।२; **भराई** ३८८।२; **भराऊँ** २२८।३ **भरायेउ** २३६।३; **भरावा** १६८।१; २२२।५; **भराँह** ३८८।७; **भरि** १७।३; १८०।६; ३२८।५; ३३४।१; ३४४।६; ३५९।२, ५; ४०६।२; **भरिये** २८५।६; **भरीं** १४६।३; २३२।४; **भरेउँ** ३६९।७

भल १९।७; २०।१; ८७।५; ३३९।५; ३४१।२; ३९२।३

भव १०।४

भँवर २७।४; ५४।१; ६४।३; ७०।२; ३८३।३

भँवहि २५६।४

भवाई ६६।१

भवायत ४२९।३

भसम ४३।४; ४२८।७

भसमन्त ३३७।७

भसँल २०८।३

भहराई ३४८।१,२

भा १७।३; २४।६; ३३।१; ७७।७; १७१।१; १७२।६; २०४।१; २१७।१; २३५।३; २५४।२,७; २६९।३; ३३७।५; ३६२।४; ३९५।६; ४१२।१

भाइँ (भाँति) २९।३

भाई २६१।१

भाउ (भाव) ६।६; ९१।६; २५९।५,७, २६०।२; ३०६।२; ३३८।७; ३९१।६; **भाऊ** ९२।५; ३७८।५

भाक (भाखा, भाषा) ११।३; **भाखा** ९।६; १५४।२

भाखी ३८९।२; **भाखौं** १५५।५

भाग (भाग्य) ३७५।७; **भागा** १२४।२

भागवन्त ३४१।५

भागहिं २४९।५; **भागेउँ** १९३।२; २३७।५; २४०।४; **भागै** १९१।३

भाँत ३९।६; १००।७; २०३।६; १३२।३; ३५२।१

भाँदों ४३१।४

भान २१०।६

भामिनि ६४।२

भाय (भाव) २६३।७

भारत ३९।४; ५७।३

भारू २०१।५; २६७।३

भाव ३०१।२; **भावा** ७८।५; २१५।३; ३४९।५

भावइ ८।७; १३।५; ३४।४; ४८।५; १६७।६; २७४।७; ३२५।२,४; ३२९।४; ३६७।२; ४१०।१ **भावा** ३४०।५; ३५५।१

भावता १४७।६; **भावन्ता** २६३।६

भावना ६।६

भिखा ११२।४; **भीखा** २२८।७

भिंगराज ३०९।२

भितरहिं १८३।४

भिनुसारा १५७।१; **भिनुसारी** ६५।३; **भिनुसारैं** ३६५।५

भिरे २४४।४

भींउ (भीम) ४०।१

भींजा २८८।३

भुअन १९०।३

भुअंगम ५४।५; ६८।५; १६९।४; ३२३।३

भुइ ३७।५; २०५।६; **भुइँ** २८।४; ७३।५; १०७।१; २०७।३; २१९।५; ३७०।५; ४१५।३;

४२४।१,२,३ **भुईं** ८५।३; १०३।२; १२१।६; ४२०।४
भुएँ ४०।१
भुखवइ २५९।४
भुगुति १६।१; १०९।७; १७२।१; ३३९।३
भुजइल ३०९।१
भुजंग ५९।१
भुनाँ १८१।२
भुरउ १५५।३
भुलाई २६।३; २२०।२; **भुलानेउ** २०७।६; **भुलाय** १९२।७; **भूली** १२२।६; **भूलेउ** २१३।६; २३८।६
भुवन ५७।६
भुववर ३८१।२
भूखहिं १८२।४; **भूखैं** २००।५; २२९।५
भूँज १७९।४; **भूँजसि** २३९।७; **भूँजी** १८०।५
भूपर ६७।१
भै ५७।४; ३२५।७; ३८२।६
भेंट ३८२।४; ४०९।१; **भेटइ** ९७।३; **भेंटा** ४३०।१; **भेंटी** २११।२; ३५८।२; **भेटे** ३५८।१; ३९८।२
भेंट घाँट ३४२।३
भेस ४००।२; **भेसा** २४३।४; ३०८।३
भो २९८।४
भोंजहु २७१।७; ४३०।६; **भोंजि** १५३।१; १८०।३; **भोजों** ३०७।२; ३९८।७
भोर ३८६।६; ४१०।३; **भौरे** ३८६।५
भोरयसि १५६।६; **भोरवनि** ४००।३; **भोर-वसि** ४००।३; **भोरा** १५६।७
भौ ५०।२; ५३।४; ११२।२; ११९।२,७; २०४।७; २६८।३; २८१।६; २९३।३; ३२४।३; ३२७।४; ३७३।७; ३७७।६; ३७८।६
भौजी ३९९।३
भौंह ४०४।५

म

म (में) ११।४
मकु ८२।३; २१५।१; २२१।३; ३२५।३; ३४५।७; **मुकुँह** २०२।७; **मकुहि** २११।३; २८७।५; ३०५।३; ३२९।२
मकोइ ६४।४
मग ४५।१; ३११।६; ३९२।७
मगाँहु १८६।७
मंगों १८७।६
मघा ३२३।५
मछेहू ३४१।५
मँजूर २९०।७; **मजूरि** ६६।२
मँझ १०५।२
मझारी २११।३, ५; २४६।४; ३०२।५
मँटक ४२३।५; ४१६।१
मँढाइ २६८।६; २६५।१
मढ़ि ३९५।७
मण्डन ३७७।६; ४१७।६
मण्डप ३९५।७; ४०२।४
मँता ३१।२; ३६६।२; **मतैं** २०१।२, ४; ३६६।४
मँतरी १५१।१
मद्ध ३०१।७
मँद ३३९।३
मदनदीप ५८।४
मदमाता ३४३।१
मँदर ४१५।२
मँदिर १७।१; ३२९।४; ३४८।१, २; ३५१।३; ३५४।३; ४२६।७
मँदाइ २७२।६; **मँदाई** २७२।५
मन्त ५६।४; **मन्ता** ४५।२; ३६७।१; ३८५।२; **मंती** २०१।२; **मन्तैं** ३०।६
मन्त्र ७९।१; ३६६।५
मन्द २७४।५; २६३।३
मनतैं ९०।४
मनमँह ३८७।२
मनयेउ ४०१।६; **मनवहु** ४०५।६
मनसा २९।२; ९२।७; ३७६।७
मनसेरू १९०।२
मनहि ४०५।२
मनावइ २०६।५; ४०५।७; ४०७।६; **मनावा** ३९२।१; ४०५।३
मनु ५५।४
मनुसहिं ८२।३; **मनुसै** १२८।१; १८१।७
ममँता ३२४।५
मयंक २८।६; ५५।१

मया १२०।१; १२२।३; १२६।२; २२४।६; २३३।६; ३०७।४, ५; ३०९।४; ४०८।४; ४१३।५; ४२५।५

मरई ११०।४; २३७।२; २९७।४; ४२४।५; **मरत** ३२२।७; **मरतेउँ** १२५।५; **मरब** ३५।३; **मरबहि** २७४।२; **मरबे** ४२१।२; **मरहु** २७४।४; **मराई** १०७।३; **मराऊँ** २८४।५; **मरि** ३६२।४; ४०८।२; **मरिबै** ४८।३; **मरिह** १००।५; **मरिहौं** ३३६।४; **मरेउँ** ८१।७; **मरै** ३६३।३; **मरों** ३२२।५,६; ४०६।५; **मरौं** ३२८।२

मरताल ६७।१

मरम १६।३; १४८।१; १९७।१, २; २२५।३; २६४।४; ३५३।२; ३८०।५

मरमीं ४६।२

मरोरा १८३।२

मरोह ११८।७; ३५४।२; **मरोहु** २२८।५; **मरोहू** ३२।२; ५२।१; २२६।३

मलँऊ २७१।५; **मलि** २८०।१; **मलै** २२।४

मँसिवान ४२९।६

मँह २९।७; ३९।५; ८३।१; ८४।४; १२२।१; १२३।७; १२६।३; १३४।७; १६७।३, ४, ७; १६८।३; १७०।२, ४; १७१।४; १७२।५; १७३।२; १७५।१, ४; १७६।२; १७७।६; १७८।१; १७९।७; १८०।१, ७; १८१।१, २; १८४।६; १८५।१; १९०।५; १९७।४; १९९।६; २०१।६; २०३।४; २०६।१; २०८।७; २१०।३; २१४।७; २१६।५; २१७।२; २२१।२; २२३।३; २२४।७; २२५।१, ७; २३०।६; २३३।७; २३६।१, ४, ५; २३७।१, २, ३; २३८।७; २३९।६; २४०।१, २, ३, ५; २४३।१; २४८।४; २४९।४, ६; २५६।४; २५९।१, ३; २६२।४; २६४।४, ७; २६५।६; २६६।१, २; २६९।२; २७३।६: २७४।७; २७५।६; २७७।२; २७८।६; २८७।५; २९५।१; २९६।३; २९८।२; ३२६।३; ३३४।२, ४; ३४४।५; ३५४।३; ३५५।७; ३५६।१; ३५७।२; ३५८।५; ३६४।३, ७; ३६६।६, ७; ३६८।१, ४; ३७३।७; २७५।६; ३७६।६; ३९७।४: ३९८।७; ४०४।२, ७; ४०५।२, ३; ४०६।३; ४१०।२; ४११।१, ६; ४१७।५; ४२४।३; ४२८।२, **महाँ** २३८।५; **महिं** ३३।३; २७४।२

महकाहहिं २१२।४

महतैं ३५३।६; ३५६।६; ३६०।३; ४३०।१

महन्दरी २७१।१

महाजन ३७५।७

महावत ४१।७

महावर ७४।४

महिं (मैं) ११८।२; १५८।६; २१८।७; २९५।६; ३०७।५; ३२१।३; ३२८।४; ४०३।२

महोजू ९३।४

माइ ३५९।६; ४०८।१; **माई** ५२।१

माँग ५३।२; ३७०।२; **माँगा** ४९।२

माँग (माँगना) ३६१।१; ३८२।२; **माँगत** ९४।४; **माँगहि** ७९।७; **माँगसि** १९५।६; **माँगिसि** २५०।२; **माँगेसि** १६।६

माँजन ७६।३

माँजों ३७३।२

माँझ २४।४; ३५।२; ४८।१; ५९।१; ६५।२; ९२।३; ९९।५; २१५।५; २१६।१; ३२९।१; २३६।३; २४८।५; २६५।२; २७४।४; ३६२।७; ३६७।५; ४११।४; ४२०।७;

माझी ३४२।५

माटी १२९।५; ४२४।३

माँत (मत्त) २०७।७; **माँता** ३०१।१; **माँती** ७७।५

मातैं ३४९।१; ३५४।५; ३५५।१

माथ ३४६।७; **माथा** ४३०।६; **माँथा** २५३।४

मानभाव ३०१।२; ३०२।२

मानसरोदक २३।३, ४; २६।५; ३७।२

मानसि १९५।६; **मानहु** ९१।६; ३३१।२; **मानी** ३५०।३; **मानै** १७५।७; २४३।२; ३७३।७; ३७८।५; ३८१।५; **मानो** ९१।७; **मानों** २६०।७; ४०९।३

मानुस ९७।१; १२३।४; १६८।२; १७१।४, ६; १८८।३; १८९।१; ३६५।३

माया ३४६।५

मारग १६८।७; २०५।१; २३९।१; २६३।१: ३७६।१; ३९२।४, ५: ३९३।३; ३९५।१

मारसि १४९।२, ५; **मारि** १८५।५; ३८५।६; **मारिसि** १४१।१; २१५।७; २३९।६; ४१५।४; **मारी** ३२५।१; ३६५।१; **मारेउ** १४५।२; **मारेउँ** १३३।३; १७५।३; २३८।१; **मारेहु** १८२।७; **मारों** ३०७।३; ३६३।७

माल २०५।७

माँस (मास) १२२।१; ३४०।३

माँसा (माँस) ३५०।७

माँह (माघ) ४३।१; ३२६।१

माहाँ ३७।३; ९१।५; २६४।२; ३१५।२; ३२६।५; ३३३।५; ३८०।२; **माँही** ३५३।१

मिरगी २३।५; **मिरिग** ५६।५; **मिरिगि** २२।४; २३।१; २६।३; २९।३; ७७।५; **मिरघ** ९४।१

मिरवइ २८२।१, ३; **मिरवउ** १८७।४; **मिरवहि** २००।७; **मिरवहु** १८७।७; **मिराइहि** ३४१।४; **मिराइ** ४०९।४; **मिराउ** ३५८।३; **मिरायउ** २६०।७; ४१३।१; **मिरावा** २६०।५; ३०३।१; ३५८।३; ३७६।५; **मिरियहिं** २७९।५, ७

मिलत ३५८।४; **मिलतेउ** ४०९।२; **मिलहिं** ३५८।७; **मिलहु** ४०८।७; **मिलाइ** ३५५।५; ३७८।३; ३९३।४; **मिलाँउ** ३८९।७; **मिलि** १८५।६; ३८५।४; ४०५।६, ७; **मिलिकै** ३४२।३; ३५५।७; **मिलिहिं** ४०४।५; **मिलिहैं** ३५८।७; **मिलेउ** ८१।५; २३९।२; २६०।६; ३९३।४; **मिलै** २३४।५

मिलानहि ३६५।३; ४; **मिलाना** ३५९।३; **मेलान** ३६१।६; ३६२।१; ३९४।४

मिस ६३।७; ८६।३; १९३।५

मींगल ४१७।१

मींचु १२५।४; ३५४।५; ३६४।३; ४२४।५

मींज २६६।४

मींत १९८।२; **मींता** २७४।३

मुएँ ११०।६; १७८।१; ३१६।३; ३४८।५; **मुयँउ** २२८।२; **मुयहि** २२८।१; **मुयहु** ११०।७; **मुये** २२८।१; ४११।७; ४१८।४; **मुयेउ** १२५।६

मुक्ख ३५२।७

मुकरावा ५४।१

मुकुन्द ३१७।१

मुँकै ३२१।७; ३७८।१

मुँदरा ३०५।७

मुदिरासार ३००।६

मुरकाई १५८।७

मुरझागति ३०१।५

मुरझि ४५।६; ५०।१; २१६।४; २३१।१; **मुरुछ** २१८।१

मुहि ८३।४; १४४।४; १६०।२, ४; १९३।३, ६; २२६।३; २६३।५, ६; २८१।६; ३२२।३; ३२९।४; ३३२।५, ७; ३४६।२; ४०२।५; ४०६।५; ४२६।७; **मुँहि** ४०।५; १६७।५; २३६।२; २८८।७; ३५२।१

मूठ ६९।३

मूद २८९।६; **मूदसि** १७५।५; १८३।५; **मूँदि** १७६।३

मूर २८१।७; ३००।५; **मूरि** ३००।३

मूरत ३३।५

मेखा ८८।२

मेघडम्बर १०।३; ९५।२; ३७६।४

मेघा ४२।१

मेंटहि ४२८।३; **मेटा** ४३०।२; **मेंटि** २७२।७; **मेंटी** १४७।६; **मेटेहु** २८३।७; **मेटैं** १४४।४; **मेटो** १९५।३

मेढ़ा १७१।२

मेराई २४८।५; **मेरावा** १९७।६; ४१५।३; **मेरै** १६३।३

मेल ७५।२; **मेलसि** ४१५।२; **मेलहिं** २८७।२; ३८२।१; **मेला** ३२९।१; **मेलि** ८८।७; ४००।२; **मेलेउ** ३५७।६; ३६१।५; ४०२।३; **मेलेउँ** १९९।६; २२८।२; **मेलै** ३८१।७; ४०२।७

मेहाँ १७७।५

मैं ४३१।७

मैंके ४०१।५,६

मैन ६८।१

मैमत ४११।३; **मैमन्त** ७०।७; ३२९।६; **मैमन्ता** ४१७।१ **मैंमाँता** ३९६।४

मों २०६।६; २३५।७; २४०।७; २६२।५; **मोपँह** ४१२।७; ४१३।६

मोइ ५९।३; ९६।६

मोकँह १४२।३; २७२।४; ३५९।७; **मोकैं** ४०२।५; **मोको** १४२।६
मोंकी १८८।२
मोंख ६।३; १४।७; १२२।२; १८७।४; २२६।२; २३८।२; २६६।७; ४३२।५; **मोखू** २६८।२
मोट ६६।३; **मोंट** १७३।५
मोंति १३३।३; ३५९।५
मोर (मेरा) ५२।१; ९०।२; ९२।४; ३४१।३; ३७३।५; ३७४।६; ३७८।३; ४०२।३; ४०३।३; ४०८।६; ४१२।२; **मोरा** ३४८।४; ३८०।५; ४१२।१; **मोरि** २१३।१; ३७८।१; **मोरिउ** १३१।१; **मोरी** ३३४।२; ३३९।२,३; ३९१।३,५; ४०८।१,५; **मोरे** ३४९।६; ३९१।१; **मोरें** ३७४।७; ३८६।५; **मोरैं** ३८७।६
मोरा (मोर पक्षी) ३७०।३
मोसेंउ ३४६।७; ३६०।२; **मोसों** ९१।६
मोहनबान ३००।३
मोहि (मुझे) १८७।७; २२७।६; २७०।७; २७३।७; ३४८।१; ३४९।७; ३९४।४; ४००।६; ४०३।५; ४१२।३; **मोही** १७६।३; २३४।३; २७०।२; ३४६।३; ३७७।५; ३८१।३; ४०३।३; **मोहें** २७०।५
मोहू ३१२।४; ३८८।५
मौली ३३०।२

य

यइ २५५।७; ३०५।१; ३०७।१; **यै** २२४।४; २५३।२,७
यक ३००।३
यहि १८।२; ३०।३; ८४।७; १४१।५; १८५।२; १९१।१; २०५।१; २०९।४; २१०।५; २१७।१,२,३; २१८।५; २३०।७; २५१।५; २६४।४; २७०।३; २८६।२; ३२७।५; ३२९।२; ३४६।६; ३४८।७; ३५२।१; ३६१।१; ३६३।७; **यँहि** २२१।३; **यहिक** १३४।६; **यहेउ** ४१६।५; **यहै** २०।२; २१८।४; ३३९।३; ३४०।१; ३९१।१; ३९३।५; ४०७।१; **यहो** ४४।७; **यहौं** ३३०।४; ३९०।७; **येहि** ८३।७; १८६।१; ३८०।१
यों ४०२।३

र

रउरे ३९४।४
रकत ६३।५; ६७।३; ११९।३; ३५०।७
रंगरात ८९।७
रचि ४२७।६; ४२९।२; **रचि रचि** २६।६
रजायसु ३७।४
रतनारी ५८।१; **रतनारै** ३२९।३
रमायन ३९।४
ररै ३२३।४
रलियाँ ४०९।७
रवन १९५।५; ३८३।१; ३९८।६
रसना ४३।२; **रसनाँ** ६।३
रसा ४६।४
रसाइ २६।६
रसाल १५।१
रसोंई ३९०।७
रहई २०५।३; २३०।१; २८८।५; २९३।४; ४१८।५; **रहउ** १४४।२; ३५०।७; **रहतहिं** २७६।६; **रहहिं** १३४।४; ३३६।३; ३४८।५; **रहहीं** १९०।३; **रहहु** १७३।५; ३३८।५; ३५०।१; ३३६।७; **रहाई** ४२।१; १६७।१; १८८।३; २६२।४; ४३०।३; **रहात** २९५।७; **रहाही** ५८।५; **रहाहु** ४०६।६; **रहि** २७१।४; **रहिसि** २८८।४; **रहीं** ४०४।६; **रहेउ** १९२।४; २२८।४; २९९।५; ३०८।७; ३२९।५; **रहेंउ** २३५।४; **रहेउँ** २९४।३; **रहेहु** २०४।४; **रहै** १७०।२; **रहौं** २३४।५
रहस ३०८।६; ३६९।४; ३८६।७; **रहसत** २०।६; ८८।४; २३३।७; **रहसति** ३६९।५; **रहसहि** ४५।७; **रहसा** ९३।१; १२६।६; १४९।७; ३९६।६; **रहसि** ९८।६; **रहसी** २२२।२; **रहसै** २०४।३
रहसि ३०८।४
राइ ४९।४; ९५।६; २८९।३; ३४२।७; ३४३।२; ३४५।५; ३५७।७; ३७४।१,३; ३७५।४; ३९०।१,३; ३९२।१; ३९३।२,७; ३९६।१; ३९७।१,२,३; ४१०।७; **राउ** १०।३; १५।४; १८।७; २१।६; २३।१; ३३।४; ९३।१; ९५।२; २२०।५; ३४४।७; ३९४।६; ३९६।६; **राऊ** ४०९।२

राउत २०।३; ९३।२; ४२३।१; ४२४।३

राकस ११७।५; ४०१।३

राखसि १९६।२; **राखहि** ३८९।४; **राखहु** १८२।६; २९५।७; **राखा** १८।३; ३७९।४; **राखि** ३३२।३; **राखिन** २६७।१; **राखिसि** २५०।१; २९४।७; **राखी** २२१।५; ३३१।३; ३६४।४; ३८९।२; **राखु** ४०५।४; **राखेउ** ३३१।२; ३५०।१; **राखेंउ** २४१।२; **राखों** ३८०।७

राघो ३९५।२

राचा ९१।४

राजैं १९।१,३; १७।३; ३३।१; **राजो** ३७५।२

रात (रक्त) ७९।७; **राता** २८।५; ३४।१; ७९।५; १३६।२; २०३।४; ३६८।६; ३७०।४; ३७२।३; **राती** ७७।१; ३५०।७

राति (रात) २३३।२; **राती** ३८।१

राँधा १५४।१; ३८५।३

रानाँ २८।३; **राने** ९५।२

रामाँ ३०१।२; ३१६।५; ३१८।६; ३२७।२; ३३५।४; ३८८।६

राय ३४४।१; **राया** ८३।१; २४६।१; ३४६।५;

रावइ २०६।५; **रावसि** २७१।१,२,५; **रावहु** १९५।५

रावटि २६।७

रावल ४२०।५

रासि १७।५; १८।१,२,३

राहा २७८।१

रिग ४०।४

रितु ६५।३; ७४।६; ७६।४; १६६।३; ३२८।५; ३६८।७; ३६९।२

रिस १५९।५; २२७।६; ३९९।३; ४००।१ ४०७।७

रिसाई ५४।१; **रिसावा** ७९।१

रीझ ३८८।४

रीती २२७।१

रीस ३३१।६

रुगिया २००।३; **रोगिया** ५१।७; ९०।६,७

रुचि ४१०।३

रुठवाई ४०५।४,५; **रूठि** ४०८।३; **रूठी** ४०५।६; **रूठै** ४०८।३

रुद्राख १०९।३

रुहिर ५६।७

रूख २५५।३; ३१२।३; ३५०।५; ३६९।३; ४१४।१,२; **रूँख** ४२०।१

रूच ३४।४; **रुचत** २७३।७; ३५५।३; ३७४।७

रूपमरारी ३०९।४

रेंग ९०।५; **रेंगि** ४१३।४; **रेंगैं** १७३।५; **रेंगत** २१।५

रैन ३२५।१,४; ३७९।५; **रैनि** १०९।५

रोइ २८१।३; **रोउ** १०२।४; **रोवइ** २५।१; १०६।१; १२४।२; २१९।६; २७९।२; २८०।१; २८२।१; २९०।४,५; ३५०।४; ३५९।६; ३९२।२; **रोवत** २८१।४; ३४७।३; **रोवति** २७७।७; **रोवसि** १५५।२; **रोवहु** १६०।१; २८२।४; **रोवों** ३३६।७

रोझा १६९।२

रोपहिं १४९।२; **रोपी** ३९।५

रोरा ३७४।२

रोस ४०६।६; **रोसू** ४०७।४

रोही १८३।४

रौराँह ३३३।७; **रौरो** ४२८।२

ल

लइ (ले, लिया) १६।७; ११७।१; १२३।४; १८९।७; १९३।५; २६८।७; ३९३।६; ३९४।१; ३९६।१; ४००।३; **लइके** १२३।५; १५३।२; १६४।५; १७३।२; १८१।१; १९४।४; ३२९।५; ३४२।२; ४०५।७; ४२२।३; ४२८।४,६; **लइगा** १२४।१; **लइ-दइ** ३४२।४; **लई** ४९।१; **लईं** ८०।३

लंक २५।१

लखन १७।४; १७।७; ११२।७; २२५।२

लखराऊँ २०५।२

लखाई ६६।४

लग्ग ३२५।७; **लग** २५।७; ३७।५; ८१।५; ८४।६; ८६।१; १८४।५; १९६।७; २०६।१; २२४।४; २५७।७; २७२।३; ३०८।१; ३४३।३, ७; ३४४।३; ३५८।५; ४३१।७; **लगि** ८४।१; १०५।५; १७७।७; ३३१।६; ४०३।५

लगाई ३३६।४; **लगायेउँ** ८६।२

लछ (लक्ष, लाख) २०४।३

लछिमी ४२३।७

लज्या ११९।७

लदावा ३३५।१

लवइ ३२३।१; **लवई** ६०।२ **लवँहि** ३३२।१

लपटाई २८५।३; **लपटानी** २६५।५

लये ८२।३, ४

लरतैं ४०५।५; **लराई** ४०५।२; **लरे** १२६।३

ललाट ५५।१

लह २५।३; ७४।४; २१७।५; **लहि** ९।५; ३३।२ ३८।२; ४०।५; ७९।४; ९५।३; १७९।३; २०१।७; २०६।२; २२८।३; २३४।६; २५४।२; २५६।६; २५७।७; ३५८।१; ३९८।४

लहई २४।४

लहर ५४।६; ५७।१

लाइ १९६।३; २३१।४; ३३५।४; ३५८।२; **लाइसि** ४११।५; **लाई** ३३२।१; ३५९।६; ३९२।२; ३९७।२; ४०८।४; **लाउ** ४३।२; १७९।७; २०६।६; ३३४।१; ३३८।६; **लाओं** ६९।१; **लायउँ** ८६।३; **लाये** ३९४।२; **लावइ** ५१।७; ३१६।३; ३८०।३; **लावहिं** ४६।२; २५४।३; **लावहु** ३८७।५

लाग २०।५, ७; ३८।५ ; ४६।५; ६५।७; १४०।७; १६०।३; १६५।५; १७८।२; १८९।४; १९१।४; १९३।१; २१५।७; २१६।३; २२४।६; ३१४।७; ३३३।६; ३४५।१; ३७३।३; ३७५।६; ३७६।६; ३८५।७; ३९६।३; **लागत** ६९।२; **लागहि** ३८२।५; २०४।५; **लागा** २२।४; १९१।५; ३२१।५; ३९५।१; **लागि** ३१।३; १७८।३; १८७।२; २०१।७; २३४।४, ५; २४६।७; २६९।१; २७१।४; २८४।६; ३४१।३; ३५५।५; ३६८।२, ७; ३८३।५; ३९०।६; ४०६।२; ४०७।६; **लागिसि** ४०३।४; **लागी** ७९।६; २१८।२; २२७।३; ३६८।२; ३७०।१; **लागु** २८२।७; **लागे** १९।५; १७१।२; १९७।२; ३३१।१; ३९७।३; **लागेउ** ८३।६; १३७।२; १६७।७; १६९।१; १७७।६; २३९।७; २८१।६; २९१।२; **लागै** ४४।४; १७२।१; १७८।१; २१८।७; ३२८।३; ३८९।४

लाजहिं ४०४।१; **लाजै** ४००।५

लाडू ६६।४

लादि ३३७।१; **लादेउ** ३१७।७; ३१५।५,६; **लादेउँ** ३२०।६

लाँव ६६।३; ७५।१; **लाँबी** ६०।१

लाला ६६।५

लावइ ४२।७

लाहु १७०।६; **लाहू** ३५१।५

लिखि ३४६।६

लियेउ १७५।६

लिलार ५५।५, ६; ६५।७; **लिलारा** १७।४

लिवाइ १७२।६; **लिवावहिं** ३५९।२

लिह १७८।६; **लिहसि** २०।३; ८२।२; १३८।६; १३९।२; **लिहा** १२०।२; १६८।६; **लिहिसि** १०३।२; २१३।४; २२३।२, ६; २७४।६; ३३७।३; **लिही** ७८।४; ९६।१; २६१।२; ३२०।३ **लिहेउ** ३०७।७; **लिहैं** १९४।२; **लिहों** १३८।१

लिहा (**लिखा**) ४०।१; २, ४; **लिहि** ३२।५; **लिहे** ३८२।७; ३९८।५; **लिहै** २९७।३

लीका ७७।३; **लीकैं** ६३।३

लीजै १९४।५

लीतसि ४१४।३; **लीतँहि** ४२६।२; **लीता** २९।१; २१८।५; **लीते** ४३२।५

लीन्ह २८२।३; ३४४।६; ४२४।२; **लीन्हा** २३१।३; २४७।२; २५५।५; ३१५।१; ३४५।२; ३५७।४; **लीन्हाँ** २८६।४; **लीन्हि** २२३।४; ३६४।५; **लीन्ही** ८२।५; २२३।३; ३९५।३; **लीन्हे** ४०६।३; ४०९।४; **लीन्हेउ** २२४।४; **लीन्हेउँ** १२४।३; **लीन्हों** १९६।५; ३६३।७; **लीनसि** ८२।१; २९२।१; **लीनहि** ३५७।७; **लिहन्त** २२०।६; **लीहिसि** १०६।५; ३३९।४; **लीहें** ४२४।७

लुकाइ १८९।३; **लुकाई** ३६।२; ७८।६; ७९।२; २९९।५; **लुकाऊँ** ३२३।३; **लुकानाँ** ८१।३; **लुकायहु** ८६।४

लुटावा २९८।३

लुबुध ५९।२; २९२।३; ३५०।३; **लुबुधा** २३।२; २७।४; १९७।१; २७०।६; **लुबुधी** १९३।५; १९६।६; २७०।६; **लुबुधेउ** २४२।७;

लुबोधा ११५।४

लूक ४२७।१;

ले ३६५।४; **लेइ** २३१।२; २५५।१; २७९।४; ४००।६; **लेइह** १७९।४; **लेई** ६२।६; २६२।३; ३५१।२; ३५९।१; २६२।३; ३८२।२; **लेउँ** ११।५; ८१।६; १९२।२; २०९।७; २२२।७; ३४६।७; **लेऊँ** १६१।१; **लेत** २०२।६; **लेतस** १७२।७; **लेतसि** १२३।७; १९२।३; **लेतै** १२३।३; **लेबा** १००।५; **लेवँ** ३४४।२; **लेवों** ३८४।५; **लेहिं** १९७।६; २५६।५; २९१।५; २९९।४; **लेही** १६३।२; २०९।२; २५०।४; **लेहु** १९५।५; २७५।४; ३४८।६; **लेहू** ३७।१; ८९।३; १६३।१; २२५।३; ३४२।५; **लै** ७८।७; ८०।७; १८३।४; १९१।२; २२६।२; २३०।५; २३३।७; २४६।६; २७८।१; ३१६।३; ३२२।५; ३४४।४; ३६२।७; ३६४।६; ३७३।२; ३७४।३; ३८४।७; ३९२।३, ५; ३९७।३; ३९८।३; ४०३।३; ४०५।१; ४२७।६; **लैलाये** २८।४; ३५९।४

लेखा १७।३; ४११।३; **लेखी** २०३।५

लोइनहि २४३।६; **लोयन** ३४।६; ४३।२; ४४।३; ५८।१; १२०।६; २८०।५; ३२३।६; ३५४।७; ३६८।२; ३९५।५

लोगहिं २०९।५; ३४०।६; ३६२।६; ३९३।५; **लोगन्हि** ४२४।२

लोटि १८९।५; १९०।२; **लोटी** ४२३।४

लोन ७४।५; **लोना** १५।२; **लोनीं** ४६।१

लोवैं ३३२।१

लोहु ५५।७; **लोहू** ३२।२; ३३६।७;

लौ २३२।५

लौकाई ५५।४

व

वइ २५२।१; २६०।१; ३०४।५

वइस २६९।५; **वइसै** २६६।७

वस ३४८।१

वहँ १७९।७; १९०।५; १९४।२; २०२।७; २२९।६; २३६।५; २६५।७; ३६२।१

वहइ १७६।५

वहि १५।४; १६।७; २०।१,२; २२।१; ३१।३; ७४।३; ७८।३; ८३।५; ९०।५; १०४।७; १०५।५; १०६।२; ११४।१; ११५।१; १३९।३; १७८।३; १७९।६; १८०।३; १८४।३; १८६।२; १९१।२; १९२।२; १९३।१,२,४; १९४।१,६; १९५।१; २१४।१; २१५।२; २१६।३; २२४।२; २७०।६; २७१।१,६; २७९।४; २९३।४; २९६।४; ३०३।१; ३१०।४; ३३१।६; ३३८।४; ३४१।१; ३६२।२; ३६३।१,४; ३७३।१,२,३; ४००।४,६; ४०२।७; ४१०।४; ४१२।६; **वहिक** २४९।३; **वहिकै** ७७।६; **वहै** १९८।३; २२२।१; २७२।२; ३३८।४; ३४०।२; ३७१।२; ४३१।७; **वहौ** ३०८।५

विकली २७७।७

विचाखन २६१।४

विधाँसों १०५।३

विपति ३१२।७

विपरित १३२।६; २३७।१

वै ८०।५; १३३।५; १७६।७; १८६।२; १९१।१; १९३।३; २०१।२; २२१।७; २३३।५; २३९।५; २५२।४; २५५।५; २५८।४; २५८।५; २६४।६; २७८।२; ३०९।३; ३५०।५; ३६१।१; ३६४।४; ३८४।४; ३९५।७; ४०२।२; ४२८।५; **वैं** ४७।२; १७६।६; २०३।५

वैसहिं १९१।३; ४२८।१; **वैसहुँ** २३८।७; २४०।५

स

स (सो) १७७।४

सउजँहि २०।१; **साउज** २०।२,७; २१।२; ३९।७; ४१०।५; ४११।६; ४१३।५

सकताई १३३।२

सकति (शक्ति) ६।२; **सकती** ३००।५

सँकती २८६।६; २८७।१

सकबन्धहि २७५।४; **सकबन्धी** ४१९।१

सकलहिं ३०।१; ३८५।३; **सकलेउ** ३७५।१

सँकाइ १४७।२; **सँकाई** २१६।१; ३९४।१; ४०५।२; **सकानीं** ४२७।२

सँकोरा १९५।३; **सँकोरि** २८४।४

सँखा ३३६।१; **सखिंह** ७९।४; २६१।२; ३७८।३
संगति २३।४; ३७५।२; ३९४।३; **संगित** ४१७।२
संगि ३९९।४
सगुन ३९२।३; **सगुनहि** ३८४।१
संगेउ ३८३।७
संघाति १७८।५; **संघाती** ७७।१
संघार ४२५।६; **सँघारत** ४२८।३
सचँराई २१२।५; **सँचारत** ३२७।६; **सँचारहु** १९४।७; **सँचारा** १३८।३; **संचारी** १५६।१
सजग ४७।५
संजम १११।६
सँझर १०।२
सँझायउ २३०।४
सठि ३६२।४
सत्थ ५।७
सत १३२।६; ३७९।४
सतवन्ती ४१८।६
सँताई २१४।१; ३२७।१; ३५०।४; **सँतावह** ३२१।४; **सतावा** २१७।३
सँताप ३०८।७; ३०९।१; ३११।५; ३२८।५; ३५०।३
सतायस ३४८।३
सँतारा ४१८।१
सतुरहि २६७।६; **सतुँरो** १७७।२
सतै १६२।७
सथ २७६।६
सँदेस ३७२।१,२; **सँदेसा** ३४७।१; ३५०।२
सन्धि ३८२।४; **सन्धी** ४१९।१
सना १५९।१; **सनाँ** १५१।६; १६३।२; ३२०।२; ३३२।३; ३८९।५
सनेहू १६।५
सपत १३५।१; १९२।४; ३७८।२; ३८१।२,३;
सपन ३५।२; ३७०।४,६; ३७३।५; **सपनहि** ४१०।२; **सपनाँ** ३६८।७; ३६९।६; ३७०।१; **सपनैं** ३७०।७; ३७३।५
संपुट ३१८।३,४
सपूती ६२।२
सपूनी ४६।१
सपूर २५१।६
सपूरन १३।२; २०।१; ७३।७; ७४।४; १४८।६; २५१।१,५; २६०।५; ३५६।५
सबई ३८५।३; **सबकहुँ** ९३।१; ३४६।५; ३५३।२; **सबै** २६।१; ४५।७; १६५।६; २०८।२; २१२।४; २१४।१; २३२।७; २४३।१; २४८।१; २५६।६; २६७।३; ३४७।२; ३५८।६; ३६६।४; ३९८।५; **सँभ** ७६।१; **सभै** ३६।६; ६२।६; २०६।१; २५५।२; ४२०।६
सबद ८०।५; ९५।३; २५०।७; २५१।१; ३६८।५
सँभरि ८२।१; **सँभरे** ४०।७; १०६।१; **सँभलहु** ४७।६; **सँभार** २१६।७; २९४।६; ४२५।२; **सँभारहु** ८९।१; ९१।५; २००।२; **सभाँरा** ८४।५; १३२।५; २००।१; ३२३।४; ३८०।४; **सँभारी** ५१।५; ३२८।१; **सँभारो** २१८।१
सम्पति ३१२।५,६,७; ३१३।१
समत्थ ३०५।७
समतूल ७।६
समाइ २०४।७; २१४।७; **समाई** २०४।३; २९९।५; **समानी** १३८।४; २०८।६; ३२५।५; **समानै** ३०५।७; **समाहि** २६४।७; **समाँही** २९६।३
समाधान ३५३।६; **समाँधान** ३५३।५
समुँझ २८४।४; **समुझाई** २७८।३; **समुझावइ** ३१।४; ३५२।५; **समुझावउँ** ३३६।६; **समुझावों** ४०७।५; **समुझि** २२५।५; २७९।५; २८२।६
सँमुद ७७।४; ९३।६; ३३८।२; ३५६।६; ३५८।२; ३९२।२; **समुदै** ३५८।६
समुन्द (समुद्र) ११७।५; १२०।३
समेटहिं ४२८।३
समो ८३।७; ३२१।५
सयाना ४०।४; **सयानाँ** ४।६; ९।२; ११।२; ५१।२; **सयानी** ४७।२; ५०।२
सँयसार १।१; २५।७; ६८।६; ४२३।७; **सँय-सारा** ८५।५; १३९।१; १५४।४; ४१२।५; ४२५।५; **सँयसारू** ६।६; ५९।५; १०८।५
सर ५७।३; ३१४।६
सरै १२८।६
सरग ११०।७; **सँरग** ६३।४

सरजन २२४।१
सरजी १४।६
सरसती ३०१।३
सरद ४५।२; ३२५।१
सरन १३२।४; ३२३।३
सरब २०९।३
सरबर ४१०।७; **सरबरि** ०।४; ३९१।७; ३९९।५
सरबस २०८।६; ३००।२
सरभहि ६६।७; ६७।७
सरवर ४५।७, ७९।१
सरवाहा ९३।५
सरसेउ ७३।७
सराउ २०६।७
सराहहिं ६२।३,४; **सराहों** ९३।५; २६८।५
सरि (समान) १८।२
सरि (चिता) २२६।२: ३८०।३; ४००।६; ४२७।६; ४२८।४: ४२९।२
सरिल ३२।२
सरूप ४९।३; ८०।४; ३९१।६; **सरूपा** २१२।३
सरेख १६९।५; **सरेखा** ५९।२: २७४।१; ३२३।५
सरोदक ३१९।२
सलिल ४२।७; **सलिला** २५।३
सवन १२।६; १५।२; ३४।१; ५९।१; २०६।२; **सवनीं** १४।१
सँवर २७५।१; **सँवरउँ** १७७।३; **सँवरत** १२०।४; १७७।४; १८८।४; २३५।४; **सँवरि** **सँवरि** ३३।७; **सँवरसि** ८२।२; **सँवरहु** ३३३।२; **सँवरेउ** २४०।२; **सँवरै** ४१।१; **सँवरों** २७०।२
सवाइ १९।३
सँवाँगा २९।४
सवाद १९८।२
सँवार ६०।१; **सँवारसि** ५३।१; **सँवारहि** २०५।७; ३६६।२; **सँवारहु** ३५५।६; **सँवारा** १५।३; २३२।३; **सँवारि** ४९।१; ३६८।६; **सँवारी** १४।२; २८।१; २०१।३; ३९१।४; ४२९।४
ससहर ७४।६; **ससिहर** १७।२
ससिबदनी ३०४।७
ससी ३८८।३
ससुरें ४०१।५,६
साँसो १०।४
सहँ ९४।१
सहन्त ३८३।६,७
सहल २९९।७
सहस १५०।२; ३३७।१; **सँहस** ९२।५; **सहँस** २६५।३
सहारहु २००।६
सहेउ १७७।५
सहेलिंह ३५।१; ६४।४; ८१।१; ८९।३; ३५२।५; **सहेली** ३५८।६; ३६७।३
साइँ ४०८।३; **साँई** ३१६।१,७; ३६७।४; ३७०।२; ३७१।५,७; ४०६।१,७: ४०७।१; ४०८।४; ४२७।४
साउ ३०६।४; ४०१।७; ४३२।७
साका ४२७।६
साख ३६०।४,५
साँख (शंख) ६८।१
साँख (साँस) ३६४।६
साखा ३७९।४
साखि ३०१।३; ३८८।७; ४०७।२
साँच (सच) २८७।७; ३८८।५; **साँचहि** १४८।२; १५१।२; ४१३।५; **साँचा** ८।१; **साँची** ३१५।३; **साँचू** ४००।२
साँचे (साँचा) ६८।१; **साँचहि** ६८।२
साज ३९६।५; **साजहि** ३६६।२; **साजेउ** ३७९।१
साँठ १६४।१; ३३९।४,५; ३६३।६; **साँठो** ३५९।१
साँत (शान्त) १००।६; २०३।७; **सान्त** ३७४।२; ४०८।७; **साँती** ६४।५
सातउ २१५।३
साधा १९८।१; २२७।३; **साँधी** २१८।२
सान ५६।३; ६२।४
सानाँ (संकेत) २४८।३
सानाँ (समान) ४०९।३
सापुरुस ४१७।७
साँभर २९९।६; ३८५।३

साम (विद्) ४०।४
सामाँ २१।४; ३३५।४
सामि २६६।५; २६७।४,७; २६८।२; **सामी** २३४।२,६; ३५५।१
सायर ३४।७; १२०।५; ३२७।७; ३३४।५,७; ३६९।३; ३७०।३; ४१८।५
सारंग ३६८।४
सारद ८८।६
सारदूर ४१३।४,६; **सारइल** ४११।१
सारि २१।१; १८३।४; २०१।५; **सारैं** ४२४।१
साल ५८।३; ५८।७; ४०९।५; **सालै** २६९।६,७
साँवकरन ९३।४
साँवर २८।५; ३१५।५; ३७२।३
साखी १३।४
सास ४०३।७; ४०४।१,६; ४०५।७; ४०६।३; ४०७।४,६; ४०८।१; **सासु** ४०३।६; ४०४।१; ४०६।६; ४०७।५; ४०८।३; ४०९।३,४; **सासू** ४०६।२
साँसा २७२।३; **साँसैं** ३५१।२
साह ३७५।७
साहन ३९४।६
साही २६७।१
सिखर २२१।६
सिखरावहु १९।३; **सिखरावा** ८७।३
सिंगार ५७।५; **सिंगारू** ५९।४
सिंघ (सिंह) ३९।६; ३६६।३; ३८२।५
सिघासन ८८।४; ३९६।१; ३९७।१,४,७; ४२६।२; **सिहासन** ३६१।३
सिंधिनि ४१७।६
सिध १०९।६; ११८।२; १२०।४; १३६।४; २१५।१
सिरज १६८।६; **सिरजसि** ४२८।३
सिरजनहार ६८।७; **सिरजनहारा** १७।१
सिराइ ४९।४; २९५।४; **सिराई** २९५।४; ३११।१; ३७४।५; ४०९।१; **सिरायों** २१५।२
सिरीवन्त ३४१।७
सिवाती ११५।७
सिसिर ४४।५; ४५।२
सीउ ४३।५; २२८।३; ३०६।६; ३२६।१; ३२८।३
सींचि २८।१
सीतल २७।३; १८८।६; ३२५।४
सीप ६०।१
सु (सो) ३३८।७
सुआ ३०८।३
सुक्ख १६४।६; २७८।६; ३५२।६
सुकुवार २८।२; ८८।२
सुखिये ३१२।६
सुखरावहु २७०।५
सुखानी १५९।३; २७६।३
सुघर २६०।६
सुघरी ३५७।६
सुजान ८१।१
सुझर २७।१; ३१९।२
सुठि ४०१।६; **सुँठि** ४१७।७
सुद्ध १७।६; ४०२।६; **सुध** २२१।१; ४१२।२
सुदिन ३४८।७; ३५७।६
सुनइ ३३०।७; **सुनई** ४०४।३; **सुनउ** ९।७; **सुनत** ४००।१; **सुनतहि** १६६।५; १७४।१; २७८।२,५; २९५।३; ३४२।१; ३७२।४; **सुनसि** ३२०।१; ३४१।१; **सुनहु** १७९।२; १९२।५; १९५।४; २३६।१; २६२।५; २७७।२; ३४७।१; ३४९।१; ४०८।६; **सुनाँ** १८१।२; २७३।१; ३९६।२; **सुनावा** ३९२।१; **सुनि** ३९५।५; **सुनिउ** ४०७।१; **सुनिके** २६१।१; २८२।६; **सुनिकै** १९१।१; **सुनु** ३५५।२; ३७९।३; **सुनेउ** ११।४; २३७।५; ४२७।३; **सुनेउँ** ३४१।२; **सुनै** ४०१।१
सुनकारि १९०।१
सुनवानी २०।४; ९४।७
सुनारा ४२९।५; **सुनारि** ३६८।७; **सुनारी** ८१।१; ३०२।२
सुपेती ३२५।२; ३२७।४
सुफल ३०४।५; ३३१।२
सुबर्न ९३।३
सुबंस ३९१।७
सुबुधि ७७।५
सुभर ६१।१; ६७।१; २८०।५
सुभाउ ३७८।५; **सुभावा** २२३।४
सुभाग ८०।४; **सुभाग** १८।३; ३२१।५;

सुभागी ३४।५; ३६८।२; ३७०।१; **सुभागे** १८।१; ३२०।५; ३३१।१; **सुभागैं** २६०।४
सुरँग ६९।४; **सुरंगी** ६३।१; **सुरंगिनि** ७७।५
सुरजन ३८४।४
सुरुज ३७७।१
सुलाखन ११२।६; ३४१।६; ३९१।६
सुवत ३३९।४
सुवन १०३।१; २३७।६; **स्रवन** २९।१; ३५।६; ६०।१; ७८।१,२
सुवा ३३१।४
सुहर ७३।३
सुहाई ३५४।१; ३६९।१; **सुहाउ** ५९।६, ६५।२; **सुहानी** ६०।३; ९४।५; २५४।६; **सुहावना** ३२९।६; **सुहावा** ३२९।५; ३६८।५
सुहागिन ४०१।५; **सुहागिनि** ३५८।५
सुहारी ७०।१
सूख ३७०।६; **सूखि** १६६।४
सूझा १९८।२; २७६।१; ३८०।१; **सूझे** २३८।१; **सूझैं** १६८।७
सूत ३६८।७; ३६९।७
सून ३४७।७
सूर (सूर्य) ३२८।३; ३४७।६; ३८१।६
सूर (वीर) ३६६।३
सेइ (वह) १८७।७; २३७।६; **सेई** २२५।४; २३८।३; ३४५।१; ३५८।२; **सेउ** १७७।७; ३८५।२
सेई (सेवा) ११९।१; ३४४।४; **सेउ** ३६०।१; ३८८।२; ४०८।४; **सेऊँ** १९५।२; ३१४।४; **सेवइ** ४०८।५; **सेवों** २६६।४
सेउ, सेंउ, सेउँ (से) ८।४; ११।१; १४।१; १८।६; २२।७; २३।६; ३६।७, ४८।३; ८२।६; ८५।२; ८९।५; ९१।२; ९२।१; ९९।१; १००।४; १०१।१; ११४।५; १२१।२; १२२।१; १२४।५; १२६।७; १३२।५; १३६।२; १५५।५; १६१।७; १६७।१; १६९।२; १७५।२; १७७।३; १७८।६; १७९।५; १८४।२; १८५।२; १८६।१, ५; १८८।२; १९०।३; १९१।२; १९२।१, ४; १९५।५; १९६।६; १९७।३, ६; १९८।५; १९९।७; २००।४, ७; २०४।४; २२२।३; २२४।३; २२७।२; २३६।२, ५; २३८।२; २५२।१; २५३।५; २५८।३, ४; २५९।३; २६०।२; २६१।१; २६६।३, ६; २७३।६; २७७।२; २८४।२; २८६।५; २९२।४; ३००।१; ३०२।२; ३१३।२; ३१४।१; ३१९।५, ६; ३२५।७; ३३२।६; ३३८।३; ३४२।५, ६; ३४३।२; ३४७।१, २; ३४८।७; ३५३।३; ३५४।३; ३५६।३; ३५८।७; ३५९।३; ३६२।५; ३६५।६; ३६७।४; ३७५।२; ३७९।१; ३८२।३; ३८६।१; ३८७।३; ३८९।२; ३९०।१, ६; ३९१।२; ३९२।५; ३९८।६; ४००।५; ४०१।४; ४०४।५; ४०६।४; ४१४।४; ४२०।१; ४२१।४; ४२६।५; ४२८।१
सेज ३२७।२; ३२८।५; ३२९।४
सेजी ५७।३
सेत २७।३; ४६।५; ५३।२; ५८।१; ७५।४, ५; २९३।१; ३२५।२, ४
सेंत २७१।७
सेंती १०१।३; २१३।२; २७२।४; २९९।२; ४०८।७; ४१७।४; ४३२।४
सेतैं २२१।१
सेंदुर ७३।२; ७६।३
सै १६२।३, ६; १६३।३; १७०।७; ३०५।२; ३२२।४; ३४४।५; ३९३।७
सैंतहि २८९।७
सैन ३७७।२
सैसांत १०२।७
सौं १५।४; ७९।५; १९६।५; २१२।७; २१८।१; २२०।४; २७०।३, ४; ३४१।४; ३७४।५; ३८१।७; ४०२।१; **सौं** १९४।६; २३४।१; ३७४।१, ६
सोइ ५२।२; ८७।३; १६९।७; १९८।४; २०९।४; २१८।६; २२०।४; २३४।५; २४५।४; ३७४।७; ३८७।६; ४०३।३; ४२४।५; ४२७।२; **सोई** २९।२; १४०।२; १७२।५; १८६।३; १८९।३; १९८।३; २१६।२; २२०।५; २२२।२; ३२६।४; ३३८।५; ३४१।३; ३५१।३; ३५५।१, ३; ३८३।३; ३९५।५

सोउ १६८।६
सोगू ३८५।१
सोझा १६९।२
सोनासी ४९।३
सोबेरें १९९।५
सोमेल ६०।१; ६२।१; ७५।२
सोरठा १३।३
सोरह ७४।६
सोवत ३६९।६; ४०१।४
सोह (शोभा) २१९।१; **सोहै** २४७।६
सोंह ३८७।५
सोहाई २३४।१
सोहाइ ४९।३
सौत ३७०।७; ४०३।४; **सौति** ४०७।५; ४०९।५
सौंत ३४८।६
सौतुक ३५।२; **सौतुख** ४६।६; ५१।६
सौतरी ५।३
सौंन ८९।३; २१२।२; ३३०।७; ३९३।६
सौर ३२७।४
सौंह ३७७।५

ह

हँकरावा ३८९।५; **हकवाई** ३४०।२; **हँकारहु** २४६।२; **हकाँरा** १५२।३; **हँकारी** ४१०।४; **हँकारु** २३३।४; **हँकारे** १७।५; ३६६।४; **हँकारेउ** २१५।१
हत्थ ३०५।७
हतो ८१।२, ३
हथजोर २१।७
हद्द ३८२।७
हन्त २३१।६
हन (?) ७४।५
हन ५६।५; **हनाँ** ५०।२; १४०।१; १४५।५; **हनी** २१८।७; **हनु** ३२८।७; **हनेउ** १३२।६; २१८।३; **हनौं** २७४।३; ४१४।५; ४१५।१
हनिवन्त १०५।३
हम्ह ५।७; १७६।७; ३२५।४; **हमँ** २२७।७; **हमकहँ** १९।१ ; १५९।२; २३९।५; २७३।५; **हमकै** २७२।७; **हमरि** १२३।१; २१३।२; **हमरी** ८९।३; **हमरें** १२।३; ४३०।३; **हमरेउँ** १२४।४; १९७।२; **हमरै** १००।६; २२४।३; २६२।२; ४३०।७; **हमलग** ४७।४; **हमसेउँ** २२७।४; २८७।७; **हमहिं** ४८।४; १८२।७; २६०।२; ३११।१; ३४३।७; ३६०।४; **हमहु** २०४।५; २६३।५; **हमहूँ** १८०।५; ४२४।४; **हमार** ६३।५; ८७।१; १९५।४; **हमारेउ** ६२।७; ८६।७; ९७।२; १०६।५; १६१।७; २१५।१; २४७।५;३४५।५; **हमाँह** १६६।७; ३३५।६
हरक ६७।७
हरख ११९।४, ७; १९८।३; ३०८।३, ६; ३२२।१,२; ३३१।७; ४०४।६
हरिभारजा १२।५
हरियर २३।३; ३०८।३; **हरियरि** ३६९।१; **हरियारा** ३२२।१
हरी १७७।१
हँस २००।७
हसँत २२८।५; २५८।५; **हँसहिं** २४५।२; **हसाँइ** २०६।७; **हँसि** ३७८।१; **हँसे** २४१।७
हसला ९३।४
हहिं ११३।३; २५८।२; ३१८।१; ४३१।६; ४३२।७
हा १८०।१
हाँकिसि ३३७।४
हाट ६३।२
हाड़ ३६३।२; ३६४।६; **हाड़ो** १२३।३
हाथिन्ह ४२२।३
हिउ ३६।३; **हिय** ३१।४; ५९।५, ७; ३१५।१; ३१८।२; ३२२।७; ३२३।२; ३३५।४; ३४९।३; ३६४।३; ३७४।७; **हिया** ३१५।३; ३३६।६; ४०८।२; **हियारी** १६९।३; २२१।४; **हियें** ५६।७; ८४।२; ४०६।७; **हियैं** ५०।३; २१८।२; २३५।५; ३११।४, ५; ३२५।५; ४३१।७; **हींउ** ३२७।२; ३९५।६
हिडोल ३२२।४
हिन्दुई ४३०।१
हियो ३४९।७
हिरद २८८।७; **हिरदै** २४०।७; **हिरदो** २८८।६

हिराई २३।५
हीन ३९१।२; **हीना** २१९।१
हुत ३२।७; ९६।७; १२५।५, ७; १३९।४; १६४।२; १६६।२; २४५।३; २६४।५; २६९।४; २७५।५; २९७।१, ७; ३३६।५; ३३८।४, ७; ३४४।३, ७; ३४९।५; ३६३।५; ३७१।२; ३७२।४; ३८६।२; ३९४।४; ४३१।५; **हुती** ३७२।४; **हुतेउ** ३७४।२; **हुतै** ८३।६; १६२।४
हूँ १७०।५
हे (थे) ४३०।१; **है** ३९९।२; **हैतो** ३६७।३
हेंगुरि १९।७
हेठे १७०।२
हेत २०७।१
हेरा १३५।३; २६७।४; २७५।१; **हेराई** ३५।२; **हेरानी** २४।३; **हेरैं** ४११।२
हेला १६९।५
हेंव ४५।२; ३२६।१;
हेंवँत १६६।३
हेंवर ४१३।१
होइ १७३।२; ३५३।३; ३५८।३; ३८७।७; ३८९।६; ३९१।३; ३९२।५; ४००।६; ४०८।४; **होइके** ३९५।६; **होइह** १६२।७; १८५।७; ३१५।६; **होइहिं** १४८।२; १७१।२; २०३।७; २०५।२; ३०९।७; ३४१।४; ३८१।६; **होई** १८।२; ३२६।४; ३३६।१; ३४१।३; ३४४।२; ३५१।३; ३५५।३; ३६७।६; ३६९।२; ३८३।३; ३९५।२; **होउ** १४६।७; १६७।६; १८१।७; **होउँ** २७२।२; **होय** ३३९।७; **होहि** २७४।५; ३०१।३; **होहिंह** २१०।३; **होही** १३५।१; **होहु** ४०८।१
होरी ३२९।१
हौं १२।६; २१।७; २४।२; २५।५; १०५।७; १०८।२; १३४।४; १३५।३; १६२।२; १६७।६; १७६।१; १८७।६; १९२।७; १९३।४, ५; १९४।७; १९५।१, २; १९७।५; २१८।३; २२२।६, ७; २३४।४, ६, ७; २३५।४; २३६।१; २३७।१; २३९।१; २६२।५; २६६।४; २६७।२; ३०२।४; ३२१।४, ७; ३२३।२; ३२५।१; ३२९।२; ३३९।४; ३४८।१, ३; ३५५।२; ३६३।२, ६; ३६९।७; ३७८।३; ३८७।६; ३९०।३; ३९१।३; ३९९।५; ४०१।६; ४२७।३